भृगु संहिता

फलित प्रकाश



हिन्द पुस्तक भण्डार
खारी बावली दिल्ली - 110006

भृगु-संहिता फलित-प्रकाश

[द्वादश लग्नों के विभिन्न भावों में स्थित नवग्रहों के प्रभाव तथा फलित ज्योतिष सम्बन्धी आवश्यक जानकारी एवं सिद्धान्तों के माध्यम से संसार के किसी भी स्त्री या पुरुष की जन्म-कुण्डली के फलादेश का सहज ज्ञान प्राप्त कराने वाली श्रेष्ठ पुस्तक]

7·3

●

मूल ग्रन्थ के लेखक

भृगु ऋषि

हिन्द पुस्तक भण्डार

खारी बावली, दिल्ली - 110006

प्रकाशक

हिन्द पुस्तक भण्डार, दिल्ली-110006

संबद्ध संस्था

पुस्तक महल, दिल्ली-110006

विक्रय केन्द्र

1. 6686, खारी बावली, दिल्ली-110006...... .... फोन: 2944314, 2911979
2. 10-B, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 .... फोन: 3268292-93, 3279900

प्रशासनिक कार्यालय

F-2/16, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
फोन: 3276539, 3272783, 3272784
फैक्स: 91-11-3260518, 91-11-2924673

शाखा कार्यालय

- 22/2, मिशन रोड (शामा राव कम्पाउंड), बंगलोर-560027 फोन: 2234025, 2240209
- 23-25, जाओबा वाडी, ठाकुरद्वार, बम्बई-400002 फोन: 2010941, 2053387
- खेमका हाउस, पहली मंजिल, अशोक राजपथ, पटना-800004 फोन: 673614

मूल्य : 150/-रूपये

संस्करण : सितंबर, 1997

Printed at : Everest Press, Okhla, New Delhi-110020

दो शब्द

प्रत्येक वस्तु की सूक्ष्म रचना का मूलाधार 'परमाणु' है तथा परमाणु का आकार सौर-जगत् से मिलता-जुलता है। मानव-शरीर चूंकि असंख्य परमाणुओं के समाहार का सम्मिलित स्वरूप है, अतः सौर-जगत् में भ्रमण करने वाले सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों की गति-विधियों का प्रभाव अन्योन्याश्रय सम्बन्ध होने के कारण मानव-शरीर स्थित सौर-जगत् पर भी पड़ता है। फलतः पृथ्वी पर निवास करने वाले सभी प्राणी आकाशचारी ग्रहों से पूर्णरूपेण प्रभावित होते हैं।

आज से सहस्रों वर्ष पूर्व भारतीय मनीषियों ने 'यत्पिण्डे तत्त्रह्मांड' के आधार पर अपनी सूक्ष्म प्रज्ञा द्वारा शरीरस्थ सौरमण्डल का भली भांति पर्यवेक्षण करके तदनुरूप आकाशीय सौरमण्डल की व्यवस्था की थी। साथ ही आकाशीय ग्रहों के मानव-शरीर पर पड़ने वाले प्रभाव का भी अन्वेषण किया था। बाद में देश-काल की सीमाओं को लांघती हुई भारतीय ज्योतिष-विद्या सम्पूर्ण विश्व में प्रचारित एवं प्रसारित हुई। तत्पश्चात् अनेक विदेशी विद्वानों ने भी इस शास्त्र के विभिन्न अंगों को विकसित करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान किया। प्रसन्नता का विषय है कि आज यह विद्या संसार के कोने-कोने में प्रचलित है तथा इसके उत्तरोत्तर विकास के लिए विश्व के प्रायः सभी भागों के विद्वान् अहर्निश प्रयत्नशील हैं।

भारतीय ज्योतिषशास्त्र के अनेक अंग हैं, परन्तु उनमें 'गणित' और 'फलित' का स्थान ही सर्वप्रमुख है। फलित ज्योतिष द्वारा मानव-जीवन पर पड़ने वाले विभिन्न ग्रहों के शुभाशुभ प्रभाव का विचार किया जाता है। मनुष्य जिस समय में जन्म लेता है, उस समय आकाश-मण्डल में विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसका प्रभाव उसके सम्पूर्ण जीवन पर पड़ता रहता है। फलित ज्योतिष का सबसे बड़ा लाभ यही है कि जिस प्रकार दीपक अंधेरे में रखी हुई वस्तुओं को प्रदर्शित करता है, उसी प्रकार जन्मकुण्डली द्वारा जीवन में घटने वाली घटनाओं के ज्ञान का उद्घाटन होता है। भविष्य-ज्ञान कितना लाभकारी है, इस सम्बन्ध में अधिक कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में, जन्मकुण्डली के किस भाव में स्थित कौन सा ग्रह जातक के जीवन पर अपना कैसा प्रभाव प्रदर्शित करता है, इसका संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया गया है। द्वादश लग्नों के द्वादश भावों में स्थित विभिन्न ग्रह अपना भिन्न-भिन्न प्रभाव प्रदर्शित करते हैं। विभिन्न भावों पर पड़ने वाली ग्रहों की दृष्टि तथा एक ही भाव में एक से अधिक ग्रहों की युति होने पर भी फलादेश में अन्तर आ जाता है। इस प्रकार कुछ ग्रह पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों पर अपना भिन्न फल प्रदर्शित करते हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ में ज्योतिष के गणित-अंग का स्पर्श नहीं किया गया है। केवल फलित-अंग को ही इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि इस एक ही पुस्तक की सहायता से संसार के किसी भी स्त्री-पुरुष की जन्मकुण्डली में स्थित विभिन्न ग्रहों के शुभाशुभ प्रभाव की जानकारी सरलतापूर्वक की जा सके। फलित ज्योतिष से संबंधित प्रारम्भिक तथा आवश्यक जानकारियों को प्रथम प्रकरण में तथा ग्रहों की युति, उच्च-नीच, मूलत्रिकोण, मित्र अथवा शत्रुराशिस्थ ग्रहों का प्रभाव, विशिष्ट योग एवं विभिन्न ग्रहों की महादशा से सम्बन्धित फलादेश आदि विषयों का वर्णन तीसरे प्रकरण में करके इस पुस्तक को सर्वसाधारण के लिए अधिकाधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया गया है। आशा है, ज्योतिष विद्या से सर्वथा अपरिचित एवं सामान्य हिन्दी पढ़े-लिखे लोग भी इस पुस्तक द्वारा पर्याप्त लाभ उठा सकेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रणयन में हमें विभिन्न भाषाओं के सैकड़ों ग्रन्थों से जो सहायता प्राप्त हुई है, उन सभी के कर्त्ताओं के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

अन्त में, यह निवेदन कर देना भी परम आवश्यक है कि हमारी परम व्यस्तता, समयाभाव तथा अनुपस्थिति के कारण इस पुस्तक में अनेक स्थलों पर प्रूफ आदि की भूलें रह गई हैं। पाठकों की बेहद मांग पर ग्रन्थ को शीघ्र प्रकाशित करने के प्रयत्न में उन पर ध्यान नहीं दिया जा सका है। आगामी संस्करण में उन सबका निराकरण कर दिया जाएगा, परन्तु इस बार के लिए तो विज्ञ पाठकगण क्षमा ही कर देने की कृपा करें।

इस पुस्तक से सम्बन्धित अथवा ज्योतिष-सम्बन्धी अन्य किसी भी विषय की जानकारी तथा कार्य के लिए हमसे जवाबी पत्र-व्यवहार किया जा सकता है।

विद्वज्जन किंकर

—राजेश दीक्षित

प्रसिद्ध भविष्यवक्ता, प्रकाण्ड ज्योतिषी एवं
हस्तरेखा-विशेषज्ञ

डा० नारायण दत्त श्रीमाली द्वारा लिखित

प्रैक्टीकल हस्तरेखा ज्ञान का
एक अनूठा एनसाइक्लोपीडिया



बृहद् हस्तरेखा शास्त्र

वर्तमान को समझें, और भविष्य को पहचानें !
स्वयं अपना हाथ देखकर, जीवन-भर का हाल जानें !

इस चिर प्रतीक्षित पुस्तक के लेखक हैं देश-विदेश में प्रसिद्ध, भारतीय ज्योतिष अनुसंधान-केन्द्र के अध्यक्ष, प्रकाण्ड ज्योतिषी पण्डित नारायणदत्त श्रीमाली जिनके तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र और ज्योतिष पर ४२ से अधिक प्रामाणिक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं जो हजारों लोगों के हाथ देखकर सभी भविष्यवाणियां कर चुके हैं।

पुस्तक की कुछ अभूतपूर्व विशेषताएं—

० इसमें हस्तरेखाओं के २४० विभिन्न योग दिये गये हैं। जैसे धन-सम्पत्ति योग, सन्तान प्राप्ति योग, मित्र-शत्रु-भाई-पत्नी आदि के व्यवहार का योग। सभी सम्भव योगों का खुला विवरण।

० सामुद्रिक ज्योतिष पर सर्वप्रथम एक सांगोपांग प्रकाशन, जिसमें हस्तरेखा से सम्बन्धित सभी अंगों-उपांगों का ब्यौरा है जो अभी तक दुर्लभ था।

० आपके हाथ की रेखाएं क्या कहती हैं ? कौन-से व्यापार से आपको लाभ होगा ? पत्नी कैसी मिलेगी ? दोस्त धोखा तो नहीं देंगे ? लाटरी खुलेगी या धन-दौलत कहीं से अनायास ही मिल जायेगी—आदि बातों की सही जानकारी आप स्वयं अपना हाथ देख कर जान सकते हैं और लोगों का हाथ देखकर वाहवाही लूट सकते हैं।

० आप डाक्टर बनेंगे या इंजीनियर ? नेता बनेंगे या अभिनेता ? लेखक बनेंगे या प्रोफेसर ? विदेश यात्रा पर कब जायेंगे ? लड़का होगा या लड़की ? किस धन्धे में विशेष लाभ होगा ? सैकड़ों प्रश्नों के जवाब आप स्वयं अपना हाथ देखकर जान सकते हैं।

० आपकी मृत्यु कैसे होगी ? कोई आपका खून तो नहीं करेगा ? कहीं कोई दुर्घटना तो नहीं होगी ? आपको मन चाही वस्तु मिलेगी, मंजिल हासिल होगी या नहीं ? संसार में निरन्तर घात-प्रतिघात, संघर्ष व कशमकश का तूफान चल रहा है और इस तूफान में आपको मंजिल तक पहुंचाना है। 'व्यावहारिक हस्तरेखा-ज्ञान' आपको मनचाही वस्तु को पाने और अपनी मंजिल तक पहुंचाने के लिए बड़ा सहायक सिद्ध हो सकता है।

किसी भी हस्तरेखा का अस्तित्व निरर्थक नहीं होता। आवश्यकता है उसे जानने की, समझने की, परखने की। 'व्यावहारिक हस्तरेखा-ज्ञान' आपका सही मार्गदर्शन करेगा।

बड़ा डिमाई आकार पृष्ठ संख्या २४८

विषय-सूची

विषय | पृष्ठ-संख्या

प्रथम प्रकरण

[आवश्यक जानकारियां]

द्वितीय प्रकरण

[बारह लग्नों की कुण्डलियों का फलादेश]

सिंह लग्न

कन्या लग्न

तुला लग्न

वृश्चिक लग्न

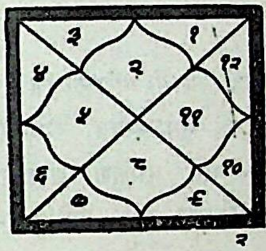
तृतीय प्रकरण

[ग्रहों की युति, उच्च-नीच स्थिति, महादशा, विशिष्ट योग आदि]

स्त्री-जातक

आवश्यक चक्र एवं कोष्ठक आदि

भृगु संहिता फलित प्रकाश



प्रथम प्रकरण

(आवश्यक जानकारियाँ)

विश्वसृड् नारदो व्यासो वसिष्ठोऽत्रिः पराशरः ।
लोमशो यवनः सूर्यश्च्यवनः कश्यपो भृगुः ॥
पुलस्त्यो मनुराचार्यः पौलिशः शौनकोऽङ्गिराः ।
गर्गो मरीचिरित्येते ज्ञेया ज्योतिःप्रवर्त्तकाः ॥

* * * *

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम् ।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते किं पुनर्दैवविद् द्विजः ॥

प्रारम्भिक-ज्ञातव्य

इस पुस्तक की सहायता द्वारा जन्म-कुण्डली स्थित विभिन्न ग्रहों के शुभाशुभ फल की जानकारी करने से पूर्व द्वादश राशि (मेष, वृष आदि) तथा नवग्रहों (सूर्य, चन्द्र आदि) से सम्बन्धित कुछ प्रारम्भिक विषयों का ज्ञान प्राप्त कर लेना आवश्यक है। अस्तु, इस प्रकरण में पहले उन्हीं विषयों का वर्णन किया जा रहा है।

तिथियाँ

ज्योतिषशास्त्र में चन्द्रमा की एक कला को तिथि माना जाता है। तिथियों की गणना शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से आरंभ होती है। अमावस्या के बाद की प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक की तिथियाँ शुक्ल पक्ष की तथा पूर्णिमा के बाद की प्रतिपदा से आरम्भ करके अमावस्या तक की तिथियाँ कृष्ण पक्ष की होती हैं। इस प्रकार एक महीने में दो पक्ष होते हैं—(१) शुक्ल पक्ष और (२) कृष्ण पक्ष। दोनों पक्षों की पूर्णिमा और अमावस्या के अतिरिक्त अन्य तिथियों के नाम एक जैसे होते हैं, वे निम्नलिखित हैं :—

प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी और चतुर्दशी। चतुर्दशी के बाद शुक्ल पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि को 'पूर्णिमा' तथा कृष्ण पक्ष की तीसवीं तिथि को 'अमावस्या' कहा जाता है।

तिथियों को १,२,३ आदि अंकों के रूप में लिखा जाता है। पूर्णिमा तक यह क्रम १५ की संख्या तक चलता है, परन्तु उसके बाद पुनः १, २, ३ आदि लिखा जाता है और जिस दिन अमावस्या होती है, उस दिन अमावस्या तिथि को ३० के अंक के रूप में लिखा जाता है।

निम्नलिखित चक्र में शुक्ल पक्ष तथा कृष्ण पक्ष की तिथियों के अंक प्रदर्शित किये गये हैं :—

तिथिबोधक चक्र

तिथियों के अंक	कृष्ण पक्ष	तिथियों के अंक	शुक्ल पक्ष
१	प्रतिपदा	१	प्रतिपदा
२	द्वितीया	२	द्वितीया
३	तृतीया	३	तृतीया
४	चतुर्थी	४	चतुर्थी
५	पंचमी	५	पंचमी
६	षष्ठी	६	षष्ठी
७	सप्तमी	७	सप्तमी
८	अष्टमी	८	अष्टमी
९	नवमी	९	नवमी
१०	दशमी	१०	दशमी
११	एकादशी	११	एकादशी
१२	द्वादशी	१२	द्वादशी
१३	त्रयोदशी	१३	त्रयोदशी
१४	चतुर्दशी	१४	चतुर्दशी
३०	अमवस्या	१५	पूर्णिमा

तिथियों के स्वामी

प्रतिपदा तिथि के स्वामी अग्नि, द्वितीया के ब्रह्मा, तृतीया की गौरी, चतुर्थी के गणेश, पंचमी के शेषनाग, षष्ठी के कार्तिकेय, सप्तमी के सूर्य, अष्टमी के शिव, नवमी की दुर्गा, दशमी के काल, एकादशी के विश्वेदेवा, द्वादशी के विष्णु, त्रयोदशी के कामदेव, चतुर्दशी के शिव, पौर्णमासी के चन्द्रमा तथा अमावस्या के पितर हैं।

तिथियों के शुभाशुभ का ज्ञान प्राप्त करते समय उनके स्वामियों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। जिस तिथि के स्वामी का जैसा स्वभाव है, वही स्वभाव उस तिथि का भी होता है।

नक्षत्र

आकाश-मण्डल में असंख्य तारिकाओं के समूहों द्वारा जो विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ बनती हैं, उन्हीं आकृतियों, अर्थात् ताराओं के समूह को 'नक्षत्र' कहा जाता है।

जिस प्रकार पृथ्वी पर स्थान की दूरी फर्लांग, मील अथवा किलोमीटरों में नापी जाती है, उसी प्रकार आकाश-मण्डल की दूरी को नक्षत्रों द्वारा ज्ञात किया जाता है।

ज्योतिषशास्त्र ने सम्पूर्ण आकाश-मण्डल को सत्ताईस भागों में विभाजित किया है और प्रत्येक भाग का नाम एक-एक 'नक्षत्र' रख दिया है। नक्षत्रों के नाम इस प्रकार हैं—

(१) अश्विनी, (२) भरणी, (३) कृत्तिका, (४) रोहिणी, (५) मृगशिरा, (६) आर्द्रा, (७) पुनर्वसु, (८) पुष्य, (९) आश्लेषा, (१०) मघा, (११) पूर्वाफाल्गुनी, (१२) उत्तरा-फाल्गुनी, (१३) हस्त, (१४) चित्रा, (१५) स्वाति, (१६) विशाखा, (१७) अनुराधा, (१८) ज्येष्ठा, (१९) मूल, (२०) पूर्वाषाढ़ा, (२१) उत्तराषाढ़ा, (२२) श्रवण, (२३) धनिष्ठा, (२४) शतभिषा, (२५) पूर्वाभाद्रपदा, (२६) उत्तरा भाद्रपदा और (२७) रेवती।

उक्त सत्ताईस नक्षत्रों के अतिरिक्त 'अभिजित्' नामक एक अट्ठाईसवाँ नक्षत्र भी माना जाता है। उत्तराषाढ़ा की अन्तिम पन्द्रह घटी तथा श्रवण के प्रारम्भ की चार घटी—इस प्रकार कुल उन्नीस घटियों के मान वाला नक्षत्र 'अभिजित्' है। सामान्यतः एक नक्षत्र की साठ घटी होती हैं।

नक्षत्रों के स्वामी

अश्विनी नक्षत्र के स्वामी अश्विनी कुमार, भरणी के काल, कृत्तिका के अग्नि, रोहिणी के ब्रह्मा, मृगशिरा के चन्द्रमा, आर्द्रा के रुद्र, पुनर्वसु के अदिति, पुष्य के बृहस्पति, आश्लेषा के सर्प, मघा के पितर, पूर्वाफाल्गुनी के भग, उत्तरा फाल्गुनी के अर्यमा, हस्त के सूर्य, चित्रा के विश्वकर्मा, स्वाति के पवन, विशाखा के शुक्राग्नि, अनुराधा के मित्र, ज्येष्ठा के इन्द्र, मूल के निऋर्ति, पूर्वाषाढ़ा के जल, उत्तराषाढ़ा के विश्वेदेव, अभिजित् के ब्रह्मा, श्रवण के विष्णु, धनिष्ठा के वसु, शतभिषा के वरुण, पूर्वाभाद्रपद के अजैकपद, उत्तराभाद्रपद के अहिर्बुध्न्य तथा रेवती के पूषा हैं। इन नक्षत्रों के स्वामियों का जैसा गुण-स्वभाव है, वैसा ही गुण-स्वभाव नक्षत्रों का भी होता है।

नक्षत्रों के चरण

ज्योतिषशास्त्र ने सूक्ष्मता से समझने के लिये प्रत्येक नक्षत्र के चार-चार भाग किए हैं, जिन्हें प्रथम चरण, द्वितीय चरण, तृतीय चरण तथा चतुर्थ चरण कहा जाता है।

नक्षत्रों के चरणाक्षर

प्रत्येक नक्षत्र के जो चार-चार चरण होते हैं, उनमें से प्रत्येक नक्षत्र के प्रत्येक चरण का एक-एक 'अक्षर' ज्योतिषशास्त्र ने निर्धारित कर दिया है। जिस नक्षत्र के जिस चरण में

जिस व्यक्ति का जन्म होता है, उसका नाम उसी जन्मकालीन नक्षत्र के चरणाक्षर पर रखा जाता है। उदाहरण के लिये यदि किसी व्यक्ति का जन्म अश्विनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ है तो उसका नाम अश्विनी नक्षत्र के द्वितीय चरणाक्षर 'चे' से प्रारम्भ करके 'चेतराम', 'चेतसिंह', 'चैतन्यदास' आदि रखा जायेगा। किस नक्षत्र के कौन-कौन से चरणाक्षर होते हैं, इसे आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

नक्षत्रों का चरणाक्षर बोधक चक्र

नक्षत्र का नाम		चरणाक्षर			
		प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
१	अश्विनी	चू	चे	चो	ला
२	भरणी	ली	लू	ले	लो
३	कृत्तिका	आ	ई	ऊ	ए
४	रोहिणी	ओ	वा	वी	वू
५	मृगशिरा	वे	वो	का	की
६	आर्द्रा	कू	घ	ङ	छ
७	पुनर्वसु	के	को	हा	ही
८	पुष्य	हू	हे	हो	डा
९	आश्लेषा	डी	डू	डे	डो
१०	मघा	मा	मी	मू	मे
११	पूर्वाफाल्गुनी	मो	टा	टी	टू
१२	उत्तराफाल्गुनी	टे	टो	पा	पी
१३	हस्त	पू	ष	ण	ठ
१४	चित्रा	पे	पो	रा	री
१५	स्वाति	रू	रे	रो	ता
१६	विशाखा	ती	तू	ते	तो
१७	अनुराधा	ना	नी	नू	ने
१८	ज्येष्ठा	नो	या	यी	यू
१९	मूल	ये	यो	भा	भी
२०	पूर्वाषाढ़ा	भू	धा	फा	ढा
२१	उत्तराषाढ़ा	भे	भो	जा	जी
२२	अभिजित्	जू	जे	जो	खा
२३	श्रवण	खी	खू	खे	खो
२४	धनिष्ठा	गा	गी	गू	गे
२५	शतभिषा	गो	सा	सी	सू
२६	पूर्वाभाद्रपदा	से	सो	दा	दी
२७	उत्तराभाद्रपदा	दू	थ	झ	ञ
२८	रेवती	दे	दो	चा	ची

वार

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार आकाश-मण्डल में शनि, बृहस्पति, मंगल, रवि, शुक्र, बुध तथा चंद्रमा—इन सातों ग्रहों की स्थिति क्रमशः एक-दूसरे से नीचे मानी गई है, अर्थात् शनि की कक्षा सबसे ऊपर है। शनि से नीचे बृहस्पति, बृहस्पति से नीचे मंगल, मंगल से नीचे सूर्य, सूर्य से नीचे शुक्र, शुक्र से नीचे बुद्ध तथा बुद्ध से नीचे चंद्रमा की कक्षा है।

एक दिन-रात में चौवीस होरायें होती हैं, अर्थात् प्रत्येक होरा एक घण्टे के बराबर होती है। यह भी कहा जा सकता है कि घण्टे का ही दूसरा नाम 'होरा' है।

प्रत्येक होरा का स्वामी नीचे की कक्षा के क्रम से एक-एक ग्रह होता है। सृष्टि के प्रारम्भ में सबसे प्रथम सूर्य दिखाई देता है, अतः पहली होरा का स्वामी सूर्य को माना गया है, इसलिये सृष्टि का पहला दिन सूर्य के दिन रविवार, आदित्यवार अथवा सूर्यवार के नाम से पुकारा जाता है। उसके पश्चात् प्रत्येक होरा (घण्टे) पर एक-एक ग्रह का अधिकार रहता है, अर्थात् उस दिन की दूसरी होरा का स्वामी सूर्य के समीप वाला ग्रह शुक्र, तीसरी होरा का स्वामी बुध, चौथी होरा का स्वामी चन्द्रमा, पाँचवीं होरा का स्वामी शनि, छठी होरा का स्वामी बृहस्पति, सातवीं होरा का स्वामी मंगल, आठवीं होरा का स्वामी फिर सूर्य, नवीं होरा का स्वामी फिर शुक्र, दसवीं होरा का स्वामी फिर बुध, ग्यारहवीं होरा का स्वामी फिर चंद्रमा, बारहवीं होरा का स्वामी फिर शनि, तेरहवीं होरा का स्वामी फिर बृहस्पति, चौदहवीं होरा का स्वामी फिर मंगल तथा पन्द्रहवीं होरा का स्वामी फिर सूर्य, सोलहवीं होरा का स्वामी फिर शुक्र, सत्रहवीं होरा का स्वामी फिर बुध, अठारहवीं होरा का स्वामी फिर चंद्रमा, उन्नीसवीं होरा का स्वामी फिर शनि, बीसवीं होरा का स्वामी फिर बृहस्पति, इक्कीसवीं होरा का स्वामी फिर मंगल, बाईसवीं होरा का स्वामी फिर सूर्य, तेईसवीं होरा का स्वामी फिर शुक्र तथा चौबीसवीं होरा का स्वामी फिर बुध होता है।

इस प्रकार पहले दिन की पहली होरा सूर्य से आरम्भ होती है तथा चौबीसवीं होरा बुध पर समाप्त होती है।

दूसरे दिन की पहली होरा का स्वामी उपर्युक्त क्रम से 'चन्द्रमा' होता है, अतः दूसरे दिन को 'चन्द्रवार' अथवा 'सोमवार' कहा जाता है। इसी क्रम से तीसरे दिन की पहली होरा का स्वामी 'मंगल' होता है, अतः उस दिन को 'मंगलवार' कहा जाता है। चौथे दिन की पहली होरा का स्वामी 'बुध' होता है, अतः उस दिन को 'बुधवार' कहा जाता है। पाँचवें दिन की पहली होरा का स्वामी 'गुरु' अथवा 'बृहस्पति' होता है, अतः उस दिन को 'गुरुवार' अथवा 'बृहस्पतिवार' कहा जाता है। छठे दिन की पहली होरा का स्वामी 'शुक्र' होता है, अतः उस दिन को 'शुक्रवार' कहा जाता है और सातवें दिन की पहली होरा का स्वामी 'शनि' होता है, अतः उस दिन को 'शनिवार' कहा जाता है।

आठवें दिन इसी क्रम में फिर पहली होरा 'सूर्य' की आ जाती है, अतः आठवाँ दिन फिर 'रविवार' के नाम से पुकारा जाता है। इसी तरह क्रमशः (१) सूर्य, (२) चन्द्र, (३) मंगल, (४) बुध, (५) गुरु, (६) शुक्र और (७) शनि—ये सातों ग्रह दिन की पहली होरा के स्वामी होते हैं। यह क्रम निरन्तर चलता रहता है, इसलिये इन सात ग्रहों की प्रथम होरा के आधार पर सात दिनों (सप्ताह) के नाम रखे गये हैं, जो क्रमशः इस प्रकार हैं—

(१) रविवार, (२) सोमवार, (३) मङ्गलवार, (४) बुधवार, (५) गुरुवार, (६) शुक्रवार और (७) शनिवार।

इन वारों की निरन्तर पुनरावृत्ति होती रहती है। सात दिनों के इस समूह को 'सप्ताह' के नाम से पुकारा जाता है।

गुरुवार, सोमवार, बुधवार तथा शुक्रवार—ये चार वार 'सौम्य-संज्ञक' तथा मंगलवार, रविवार एवं शनिवार— ये तीन वार 'क्रूर-संज्ञक' माने जाते हैं। किसी भी शुभ कार्य को करने के लिये 'सौम्य-संज्ञक' वार श्रेष्ठ माना जाता है।

प्रत्येक वार का स्वामी उसी का अधिपति ग्रह होता है।

राशियाँ

आकाश स्थित भचक्र के ३६० अंश अथवा १०८ भाग निश्चित किये गये हैं तथा समस्त भचक्र को बारह राशियों में विभक्त किया गया है। अस्तु, तीस अंश अथवा नौ भाग की एक-एक राशि होती है।

बारह राशियों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं—(१) मेष, (२) वृष, (३) मिथुन, (४) कर्क, (५) सिंह, (६) कन्या, (७) तुला, (८) वृश्चिक, (९) धनु, (१०) मकर, (११) कुम्भ और (१२) मीन।

मेष आदि प्रत्येक राशि के अन्तर्गत अश्विनी आदि नक्षत्रों के क्रमशः नौ-नौ चरण होते हैं।

अक्षरानुसार राशि ज्ञान

प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते हैं और उनमें से प्रत्येक चरण का एक-एक अक्षर होता है—यह बात पहले बताई जा चुकी है। किस-किस अक्षर की कौन-सी राशि होती है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिये :

अक्षरानुसार राशिज्ञान बोधक चक्र

राशि नाम		राशि के अक्षर								
१	मेष	चू	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	आ
२	वृष	ई	ऊ	ए	ओ	वा	वी	वू	वे	वो
३	मिथुन	का	की	कू	घ	ङ	छ	के	को	हा
४	कर्क	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो
५	सिंह	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे
६	कन्या	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
७	तुला	रा	री	रू	रे	रो	ता	ती	तू	ते
८	वृश्चिक	तो	ना	नी	नू	ने	नो	या	यी	यू
९	धनु	ये	यो	भा	भी	भू	धा	फा	ढा	भे
१०	मकर	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी
११	कुम्भ	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा
१२	मीन	दी	दू	थ	झ	ञ	दे	दो	चा	ची

किस राशि के अन्तर्गत किस-किस नक्षत्र के कितने-कितने चरण होते हैं, इसे आगे लिखे अनुसार समझा जा सकता है।

नक्षत्र चरण बोधक राशि चक्र

राशियों के नाम		नक्षत्रों के चरण
१	मेष	अश्विनी तथा भरणी नक्षत्र के चारों चरण एवं कृत्तिका नक्षत्र का पहला चरण।
२	वृष	कृत्तिका नक्षत्र के अन्तिम तीन चरण, रोहिणी नक्षत्र के चारों चरण तथा मृगशिरा नक्षत्र के पहले दो चरण।
३	मिथुन	मृगशिरा नक्षत्र के अन्तिम दो चरण, आर्द्रा नक्षत्र के चारों चरण तथा पुनर्वसु नक्षत्र के पहले तीन चरण।
४	कर्क	पुनर्वसु नक्षत्र का अन्तिम एक चरण तथा पुष्य और आश्लेषा नक्षत्र के चारों चरण।
५	सिंह	मघा तथा पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के चारों चरण एवं उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र का पहला एक चरण।
६	कन्या	उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के अन्तिम तीन चरण, हस्त नक्षत्र के चारों चरण तथा चित्रा नक्षत्र के पहले दो चरण।
७	तुला	चित्रा नक्षत्र के अन्तिम दो चरण, स्वाति नक्षत्र के चारों चरण तथा विशाखा नक्षत्र के पहले तीन चरण।
८	वृश्चिक	विशाखा नक्षत्र का अन्तिम एक चरण एवं अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्र के चारों चरण।
९	धनु	मूल तथा पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के चारों चरण एवं उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का पहला एक चरण।
१०	मकर	उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के अन्तिम तीन चरण, श्रवण नक्षत्र के चारों चरण तथा धनिष्ठा नक्षत्र के पहले दो चरण।
११	कुम्भ	धनिष्ठा नक्षत्र के अन्तिम दो चरण, शतभिषा नक्षत्र के चारों चरण तथा पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के पहले तीन चरण।
१२	मीन	पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र का अन्तिम एक चरण तथा उत्तराभाद्रपदा एवं रेवती नक्षत्र के चारों चरण।

विशेष टिप्पणी—'अभिजित्' नक्षत्र की गणना मकर राशि के अन्तर्गत की जाती है, अतः अभिजित् नक्षत्र के चारों चरणों के चार अक्षर 'जू, जे, जो, खा' की राशि भी 'मकर' ही समझनी चाहिये।

राशियों का स्वभाव और प्रभाव

किसी राशि का स्वभाव और प्रभाव कैसा है और उसके द्वारा किन बातों का विचार किया जाता है—इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये:—

(१) **मेष**—यह राशि पुरुष जाति, लाल-पीले वर्ण वाली, कान्ति-हीन, क्षत्रिय-वर्ण, पूर्व दिशा की स्वामिनी, अग्नि तत्त्व वाली, चर-संज्ञक, समान अंगों वाली, अल्प सन्ततिवान् तथा पित्त प्रकृतिकारक है। इसका स्वभाव अहंकारी, साहसी तथा मित्रों के प्रति दयालुता का है। इसके द्वारा मस्तक का विचार किया जाता है।

(२) वृष—यह राशि स्त्री जाति, श्वेत वर्ण, कान्ति-हीन, वैश्य वर्ण, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, भूमि तत्त्व वाली, स्थिर-संज्ञक, शिथिल शरीर, शुभकारक तथा महाशब्दकारी है। इसका स्वभाव स्वार्थी, सांसारिक कार्यों में दक्षता तथा बुद्धिमत्ता से काम लेने का है। इसे अर्ध-जलराशि भी कहा जाता है। इसके द्वारा मुंह और कपोलों का विचार किया जाता है।

(३) मिथुन—यह राशि पुरुष जाति, हरित वर्ण, चिकनी, शूद्र वर्ण, पश्चिम दिशा की स्वामिनी, वायु तत्त्व वाली, उष्ण, महाशब्दकारी, मध्यम सन्तति वाली, शिथिल शरीर तथा विषमोदयी है। इसका स्वभाव शिल्पी तथा विद्याध्ययनी है। इसके द्वारा शरीर के कन्धों तथा बाजुओं का विचार किया जाता है।

(४) कर्क—यह राशि स्त्री जाति, रक्त-धवल मिश्रित वर्ण, जलचारी, उत्तर दिशा की स्वामिनी, सौम्य तथा कफ प्रकृति वाली, बहु सन्तान एवं चरण वाली, रात्रिबली तथा समोदयी है। इसका स्वभाव लज्जा, साँसारिक उन्नति के लिये प्रयत्नशील रहना तथा समय के अनुसार चलना है। इसके द्वारा वक्षःस्थल एवं गुर्दे का विचार किया जाता है।

(५) सिंह—यह राशि पुरुष जाति, पीत वर्ण, क्षत्रिय वर्ण, पूर्व दिशा की स्वामिनी, पित्त प्रकृति, अग्नि-तत्त्व वाली, उष्ण स्वभाव पुष्ट शरीर, यात्रा-प्रिय, अल्प सन्ततिवान् तथा निर्जल है। इसका स्वभाव मेष राशि के समान है, परन्तु इसमें उदारता एवं स्वातन्त्र्य-प्रियता अधिक पाई जाती है। इसके द्वारा हृदय का विचार किया जाता है।

(६) कन्या—यह राशि स्त्री जाति, पिंगल वर्ण, द्विस्वभाव, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, वायु तथा शीत प्रकृति, पृथ्वी तत्त्व वाली, रात्रिबली तथा अल्प सन्तति वाली है। इसका स्वभाव मिथुन राशि जैसा है, परन्तु यह अपनी उन्नति तथा सम्मान पर विशेष रूप से ध्यान देती है। इसके द्वारा पेट का विचार किया जाता है।

(७) तुला—यह राशि पुरुष जाति, श्याम वर्ण, चर संज्ञक, शूद्र वर्ण, पश्चिम दिशा की स्वामिनी, वायु तत्त्व वाली, दिनबली, क्रूर-स्वभाव, शीर्षोदयी, अल्प सन्ततिवान् तथा पादजल राशि है। इसका स्वभाव ज्ञान-प्रिय, राजनीतिज्ञ, विचारशील एवं कार्य-सम्पादक है। इसके द्वारा नाभि से नीचे के अङ्गों का विचार किया जाता है।

(८) वृश्चिक—यह राशि स्त्री-जाति, शुभ्र वर्ण, कफ प्रकृति, ब्राह्मण वर्ण, उत्तर दिशा की स्वामिनी, रात्रिबली, बहु सन्ततिवान् तथा अर्द्धजल-तत्त्व वाली है। इसका स्वभाव स्पष्टवादी, निर्मल, दृढ़-प्रतिज्ञ, हठी तथा दम्भी है। इसके द्वारा जननेन्द्रिय का विचार किया जाता है।

(९) धनु—यह राशि पुरुष जाति, स्वर्ण वर्ण, द्विस्वभाव, क्षत्रिय वर्ण, पूर्व दिशा की स्वामिनी, दिनबली, पित्त-प्रकृति, अग्नि-तत्त्व वाली, अल्प सन्ततिवान्, दृढ़ शरीर तथा अर्द्धजल राशि है। इसका स्वभाव करुणामय, मर्यादाशील तथा अधिकारप्रिय है, इसके द्वारा पाँवों की सन्धि तथा जंघाओं का विचार किया जाता है।

(१०) मकर—यह राशि स्त्री जाति, पिंगल वर्ण, रात्रिबली, वैश्य वर्ण, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, पृथ्वी-तत्त्व वाली, शिथिल शरीर तथा वात प्रकृति है। इसका स्वभाव उच्च स्थिति का अभिलाषी है। इसके द्वारा पाँव के घुटनों का विचार किया जाता है।

(११) कुम्भ—यह राशि पुरुष जाति, विचित्र वर्ण, वायु तत्त्व वाली, शूद्रा-वर्ण, त्रिदोष प्रकृति वाली, पश्चिम दिशा की स्वामिनी, उष्ण स्वभाव, अर्द्धजल, मध्यम सन्तान वाली, शीर्षोदय, क्रूर तथा दिनबली है। इसका स्वभाव शान्त, विचारशील, धार्मिक तथा नवीन वस्तुओं का आविष्कारकर्त्ता है। इसके द्वारा पेट के भीतरी भागों का विचार किया जाता है।

(१२) मीन—यह राशि स्त्री जाति, पिंगल वर्ण, जल-तत्त्व वाली, ब्राह्मण वर्ण, उत्तर दिशा की स्वामिनी, कफ प्रकृति तथा रात्रिवली है। यह पूर्ण रूप से जल राशि है। इसका स्वभाव दयालु, दानी तथा श्रेष्ठ है। इसके द्वारा पैरों का विचार किया जाता है।

ग्रहों का स्वभाव और प्रभाव

• किस ग्रह का स्वभाव और प्रभाव कैसा है और उसके द्वारा किन बातों का विचार किया जाता है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए:—

(१) सूर्य—यह ग्रह पुरुष जाति, रक्त वर्ण, पित्त-प्रकृति तथा पूर्व दिशा का स्वामी है। यह आत्मा, आरोग्य, स्वभाव, राज्य, देवालय का सूचक एवं पितृकारक है। इसके द्वारा शारीरिक रोग, मंदाग्नि, अतिसार, सिरदर्द, क्षय, मानसिक रोग, नेत्र-विकार, उदासी, शोक, अपमान, कलह आदि का विचार किया जाता है। मेरुदण्ड, स्नायु, कलेजा, नेत्र आदि अवयवों पर इसका विशेष प्रभाव होता है। इससे पिता के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

सूर्य लग्न से सप्तम स्थान में वली तथा मकर राशि से छह राशियों तक चेष्टावली होता है। सूर्य को पाप ग्रह माना गया है।

(२) चन्द्र—यह ग्रह स्त्री जाति, श्वेत वर्ण, जलीय तथा पश्चिमोत्तर दिशा का स्वामी है। यह मन, चित्तवृत्ति, शारीरिक स्वास्थ्य, सम्पत्ति, राजकीय-अनुग्रह, माता-पिता तथा चतुर्थ स्थान का कारक है। इसके द्वारा पाण्डु रोग, कफज तथा जलीय रोग, मूत्रकृच्छ, मानसिक रोग, स्त्रीजन्य-रोग, पीनस, निरर्थक भ्रमण, उदर तथा मस्तक सम्बन्धी विचार किया जाता है। यह रक्त का स्वामी है तथा वातश्लेष्मा इसकी धातु है।

चन्द्रमा लग्न से चतुर्थ स्थान में वली तथा मकर से छह राशियों में चेष्टावली होता है। कृष्ण पक्ष की षष्ठी से शुक्ल पक्ष की दशमी तक चन्द्रमा क्षीण रहता है। इस अवधि से चन्द्रमा को पाप ग्रह माना जाता है। शुक्ल पक्ष की दशमी से कृष्ण पक्ष की पंचमी तक चन्द्रमा पूर्ण ज्योतिवान् रहता है। इस अवधि में इसे शुभ ग्रह तथा वली माना जाता है। वली चन्द्रमा ही चतुर्थ भाव में अपना पूर्ण फल प्रदान करता है, क्षीण चन्द्रमा नहीं देता।

(३) मंगल—यह ग्रह पुरुष जाति, रक्त वर्ण, दक्षिण दिशा का स्वामी, अग्नि तत्त्व वाला तथा पित्त प्रकृति का है। यह धैर्य तथा पराक्रम का स्वामी, भाई-बहिन का कारक तथा रक्त एवं शक्ति का नियामक कारक है। ज्योतिषशास्त्र में इसे पाप ग्रह माना गया है। यह उत्तेजित करने वाला, तृष्णाकारक तथा सदैव दुःखदायक रहता है।

मंगल तीसरे तथा छठे स्थान में वली होता है, दशम स्थान में दिग्बली होता है, चन्द्रमा के साथ रहने पर चेष्टाबली होता है तथा द्वितीय स्थान में निष्फल (बलहीन) होता है।

(४) बुध—यह ग्रह नपुंसक जाति, श्याम वर्ण, उत्तर दिशा का स्वामी, त्रिदोष प्रकृति तथा पृथ्वी-तत्त्व वाला है। यह ज्योतिष, चिकित्सा, शिल्प, कानून, व्यवसाय, चतुर्थ स्थान तथा दशम स्थान का कारक है। इसके द्वारा गुप्त रोग, संग्रहणी, वातरोग, श्वेत कुष्ठ, गूंगापन, बुद्धिभ्रम, विवेक, शक्ति, जिह्वा तथा तालु आदि शब्द के उच्चारण से सम्बन्धित अवयवों का विचार किया जाता है।

बुध, सूर्य, मंगल, राहु, केतु तथा शनि—इन अशुभ ग्रहों के साथ हो तो अशुभ फल देता है और पूर्णचन्द्र, गुरु अथवा शुक्र—इन शुभ ग्रहों के साथ हो तो शुभ फलदायक रहता है। यदि यह (बुध) चतुर्थ स्थान में बैठा हो तो निष्फल रहता है।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार बुध जैसे ग्रहों के साथ हो, वैसा ही शुभ अथवा पाप ग्रह बन जाता है। अकेला हो तो शुभ ग्रह है।

(५) गुरु—यह ग्रह पुरुष जाति, पीत वर्ण, पूर्वोत्तर दिशा का स्वामी तथा आकाश-तत्त्व वाला है। यह कफ धातु तथा चर्वी की वृद्धि करता है। इसके द्वारा शोथ (सूजन), गुल्म आदि रोग, घर, विद्या, पुत्र, पौत्र आदि का विचार किया जाता है। इसे हृदय की शक्ति का कारक भी माना जाता है।

गुरु लग्न में बैठा हो तो बली होता है और यदि चन्द्रमा के साथ कहीं बैठा हो तो चेष्टाबली होता है। यह शुभ ग्रह है। इसके द्वारा पारलौकिक एवं आध्यात्मिक सुखों का विशेष विचार किया जाता है।

(६) शुक्र—यह ग्रह स्त्री जाति, श्याम-गौर वर्ण, दक्षिण-पूर्व दिशा का स्वामी, कार्य-कुशल तथा जलीय तत्त्व वाला है। यह कफ, वीर्य आदि धातुओं का कारक माना जाता है। इसके प्रभाव से जातक के शरीर का रंग गेहुआँ होता है। यह काव्य-संगीत, वस्त्राभूषण, वाहन शैया, पुष्प, आँख, स्त्री (पत्नी) तथा कामेच्छा आदि का कारक है। इसके द्वारा चतुरता एवं सांसारिक सुख सम्बन्धी विचार किया जाता है। यदि जातक का जन्म दिन में हुआ हो तो शुक्र के द्वारा माता के सम्बन्ध में भी विचार किया जाता है।

शुक्र छठे स्थान में बैठा हो तो निष्फल होता है और यदि सातवें स्थान में हो तो अनिष्टकर होता है।

ज्योतिषशास्त्र ने शुक्र को शुभ ग्रह माना है। इसके द्वारा सांसारिक तथा व्यावहारिक सुखों का विशेष विचार किया जाता है।

(७) शनि—यह ग्रह नपुंसक जाति, कृष्ण वर्ण, पश्चिम दिशा का स्वामी, वायु-तत्त्व तथा वातश्लेष्मिक प्रकृति का है। इसके द्वारा आयु, शारीरिक बल, दृढ़ता, विपत्ति, प्रभुता, मोक्ष, यश, ऐश्वर्य, नौकरी, योगाभ्यास, विदेशी भाषा एवं मूर्च्छा आदि रोगों का विचार किया जाता है। यदि जातक का जन्म रात्रि में हुआ हो तो यह माता और पिता का कारक होता है।

शनि सप्तम स्थान में बली होता है तथा किसी वक्री ग्रह अथवा चंद्रमा के साथ रहने पर चेष्टाबली होता है।

शनि क्रूर तथा पाप ग्रह है, परन्तु इसका अन्तिम परिणाम सुखद होता है। यह मनुष्य को दुर्भाग्य तथा संकटों के चक्कर में डालकर, अन्त में उसे शुद्ध तथा सात्त्विक बना देता है।

(८) राहु—यह कृष्ण वर्ण, दक्षिण दिशा का स्वामी तथा क्रूर ग्रह है। यह जिस स्थान पर बैठता है, वहाँ की उन्नति को रोक देता है। यह गुप्त युक्तिबल, कष्ट तथा त्रुटियों का कारक है।

(९) केतु—यह कृष्ण वर्ण तथा क्रूर ग्रह है। इसके द्वारा नाना, हाथ, पाँव, क्षुधा-जनित कष्ट एवं चर्म रोग आदि का विचार किया जाता है। यह गुप्त शक्ति, बल, कठिन कर्म, भय तथा कमी का कारक है। कुछ स्थितियों में केतु शुभ ग्रह भी माना जाता है।

राशीश्वर

कौन-सा ग्रह किस राशि का स्वामी है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहियेः—

मेष एवं वृश्चिक—इन दोनों राशियों का स्वामी मंगल है।
१ ८

वृष एवं तुला—इन दोनों राशियों का स्वामी शुक्र है।
२ ७

मिथुन एवं कन्या—इन दोनों राशियों का स्वामी बुध है।
३ ६
कर्क—इस राशि का स्वामी चन्द्रमा है।
४
सिंह—इस राशि का स्वामी सूर्य है।
५
धनु एवं मीन—इन दोनों राशियों का स्वामी गुरु है।
९ १२
मकर एवं कुम्भ—इन दोनों राशियों का स्वामी शनि है।
१० ११

विशेष–राहु और केतु–ये दोनों छाया-ग्रह हैं, अतः ये किसी पृथक् राशि के स्वामी नहीं हैं। फिर भी, कुछ ज्योतिषशास्त्रियों ने राहु को कन्या का स्वामी तथा केतु को मिथुन का स्वामी माना है।

निम्नांकित चक्र में राशि और राशीश्वरों को प्रदर्शित किया गया है :—

राशीश्वर बोधक चक्र

राशीश्वर	राशि
मंगल	मेष
शुक्र	वृष
बुध/केतु	मिथुन
चंद्र	कर्क
सूर्य	सिंह
बुध/राहु	कन्या
शुक्र	तुला
मंगल	वृश्चिक
गुरु	धनु
शनि	मकर
शनि	कुम्भ
गुरु	मीन

ग्रहों का राशि-भोग

कौन-सा ग्रह किस राशि पर कितने समय तक ठहरता है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये:—

सूर्य—एक राशि पर एक मास।
चन्द्र एक राशि पर सवा दो दिन।
मंगल—एक राशि पर डेढ़ मास।
बुध—एक राशि पर पौन मास।
गुरु—एक राशि पर तेरह मास।
शुक्र—एक राशि पर पौन मास।
शनि—एक राशि पर ढाई वर्ष।

राहु--एक राशि पर डेढ़ वर्ष ।
केतु--एक राशि पर डेढ़ वर्ष ।

टिप्पणी-७-सूर्य, चन्द्र, राहु तथा केतु के अतिरिक्त शेष पाँचों ग्रह — मंगल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि—कभी-कभी वक्री, मार्गी अथवा अतिचारी हो जाया करते हैं, जिसके कारण ये ग्रह एक राशि पर अपनी निश्चित अवधि के समय को एक साथ लगातार भोगने के अतिरिक्त कुछ आगे-पीछे भी भोगा करते हैं। किस समय कौन-सा ग्रह मार्गी, वक्री अथवा अतिचारी है, इसका पता पंचाङ्ग (पत्रा) को देखकर चल सकता है। यदि किसी जातक के जन्म के समय कोई ग्रह वक्री, मार्गी अथवा अतिचारी होता है, तो वह उसे जीवन-भर उसी प्रकार का फल देता रहता है।

ग्रहों का पारस्परिक सम्बन्ध

कौन-सा ग्रह किस दूसरे ग्रह का मित्र, शत्रु अथवा सम है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए:—

(१) सूर्य ग्रह के चन्द्रमा, मंगल तथा गुरु मित्र हैं, शुक्र तथा शनि शत्रु हैं एवं बुध सम है।

(२) चन्द्र के सूर्य तथा बुध मित्र हैं एवं मंगल, शुक्र, शनि तथा बृहस्पति सम हैं।

(३) मङ्गल के सूर्य, चन्द्र तथा गुरु मित्र हैं, बुध शत्रु हैं तथा शुक्र और शनि सम हैं।

(४) बुद्ध के सूर्य तथा शुक्र मित्र हैं, चन्द्रमा शत्रु है एवं मंगल, गुरु तथा शनि सम हैं।

(५) गुरु के सूर्य, चन्द्र तथा मंगल मित्र हैं, शुक्र और बुध शत्रु हैं तथा शनि सम है।

(६) शुक्र के बुध तथा शनि मित्र हैं, सूर्य और चन्द्र शत्रु हैं तथा मंगल एवं गुरु सम हैं।

(७) शनि के बुध तथा शुक्र मित्र हैं, सूर्य, चन्द्र एवं मंगल शत्रु हैं तथा गुरु सम है।

नीचे दिये गये चक्र में उक्त सातों ग्रहों के पारस्परिक शत्रु-मैत्री सम्बन्ध को एक दृष्टि में प्रदर्शित किया गया है:—

निसर्ग मैत्री चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	चन्द्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चन्द्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चन्द्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र
सम	बुध	मंगल शुक्र शनि गुरु	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु
शत्रु	शुक्र शनि		बुध	चंद्र	शुक्र बुध	सूर्य चन्द्र	सूर्य चन्द्र मंगल

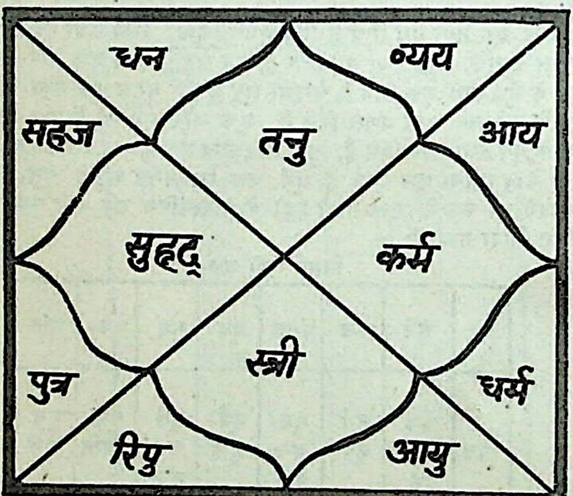
आवश्यक टिप्पणी—(१) कुछ विद्वानों के मत से चन्द्रमा गुरु से शत्रुता मानते हैं।

(२) राहु तथा केतु छाया ग्रह हैं, अतः ग्रहों के 'निसर्ग मैत्री चक्र' में इन दोनों का उल्लेख नहीं किया गया है। विद्वानों के मतानुसार राहु और केतु—ये दोनों ग्रह शुक्र तथा शनि से मित्रता रखते हैं एवं सूर्य, चन्द्रमा, मंगल एवं गुरु—इन चारों ग्रहों से शत्रुता रखते हैं। बुध इन दोनों (राहु और केतु) के लिए सम है। इसी प्रकार सूर्य, चन्द्र, मंगल तथा गुरु—ये चारों ग्रह राहु तथा केतु से शत्रुता मानते हैं। शुक्र और शनि राहु तथा केतु के मित्र हैं तथा बुध इन दोनों से सम भाव रखता है।

द्वादश भाव

जन्म-कुण्डली में बारह खाने होते हैं। इन्हें 'घर' 'स्थान' अथवा 'भाव' कहा जाता है।

जन्म-कुण्डली के द्वादश भाव



२

ऊपर दी गई उदाहरण कुण्डली में इन द्वादश भावों को प्रदर्शित किया गया है।

जन्म-कुण्डली के बारह भावों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं:—

१. तनु, २. धन, ३. सहज, ४. सुहृद्, ५. पुत्र, ६. रिपु, ७. जाया (स्त्री), ८. आयु, ९. धर्म, १०. कर्म, ११. लाभ, १२. व्यय।

द्वादश भावों का परिचय

जन्म-कुण्डली के द्वादश भावों के नाम ऊपर बताये जा चुके हैं। इन भावों के विभिन्न नाम तथा इनके द्वारा किन-किन बातों का विचार किया जाता है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) प्रथम भाव—इसे 'तनु' के अतिरिक्त लग्न, वपू, कल्प, अंग, उदय, आत्मा, शरीर, देह, होरा, केन्द्र, कण्टक, आद्य, मूर्ति, चतुष्टय तथा प्रथम भाव भी कहा जाता है।

इस भाव के द्वारा जातक के स्वरूप, जाति, आयु, विवेक, मस्तिष्क, शील, चिह्न, सुख-दुःख तथा आकृति आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

इस भाव का कारक 'सूर्य' है। इसमें मिथुन, कन्या, तुला तथा कुम्भ—इनमें से कोई राशि हो तो उसे बलवान माना जाता है।

लग्नेश की स्थिति और बलाबल के अनुसार इस भाव से जातक की जातीय उन्नति-अवनति तथा कार्यकुशलता का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

(२) द्वितीय भाव—इसे 'धन' के अतिरिक्त अर्थ, कुटुम्ब, द्रव्य, कोश, वित्त, स्व, पणफर तथा द्वितीय भाव भी कहा जाता है। इस भाव का कारक 'गुरु' है।

इस भाव के द्वारा जातक के स्वर, सौन्दर्य, आँख, नाक, कान, गायन, प्रेम, कुल, मित्र, सत्यवादिता, सुखोपभोग, बन्धन, क्रय-विक्रय एवं स्वर्ण, चाँदी, मणि, रत्न, आदि संचित पूँजी के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(३) तृतीय भाव इसे 'सहज' के अतिरिक्त पराक्रम, भ्रातृ, उपचय, दुश्चिक्य, आपोक्लिम तथा तृतीय भाव भी कहा जाता है। इस भाव का कारक 'मंगल' है।

इस भाव के द्वारा जातक के पराक्रम, कर्म, साहस, धैर्य, शौर्य, आयुष्य, सहोदर, नौकर-चाकर, गायन, योगाभ्यास, क्षय, श्वास, कास तथा दमा आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(४) चतुर्थ भाव—इसे 'सुहृद्' के अतिरिक्त सुख, गृह, कण्टक, तुर्य, हिबुक, वाहन, यान, नीर, अम्बु, बन्धु, पाताल, केन्द्र तथा चतुर्थ भाव भी कहा जाता है।

इस भाव के द्वारा जातक के सुख, गृह, ग्राम, मकान, सम्पत्ति, बाग-बगीचा, चतुष्पद, माता-पिता का सुख, अन्तःकरण की स्थिति, दया, उदारता, छल, कपट, निधि, यकृत् तथा पेट के रोग आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

इस भाव का कारक 'चन्द्रमा' है। इस स्थान को विशेषकर माता का माना जाता है।

(५) पंचम भाव इसे 'पुत्र' के अतिरिक्त सुत, तनुज, बुद्धि, विद्या, आत्मज, वाणी, पणफर, त्रिकोण तथा पंचम भाव भी कहा जाता है।

इस भाव का कारक 'गुरु' है।

इस भाव के द्वारा जातक की बुद्धि, विद्या, विनय, नीति, देवभक्ति, सन्तान, प्रबन्ध-व्यवस्था, मामा का सुख, धन मिलने के उपाय, अनायास बहुत-से धन की प्राप्ति, नौकरी छूटना, हाथ का यश, मूत्र-पिण्ड, वस्ति एवं गर्भाशय आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(६) षष्ठ भाव—इसे 'रिपु' के अतिरिक्त द्वेष, शत्रु, क्षत, वैरी, रोग, नष्ट, त्रिक, उपचय, आपोक्लिम तथा षष्ठ भाव भी कहा जाता है।

इस भाव का कारक 'मंगल' है।

इस भाव के द्वारा जातक के शत्रु, चिन्ता, सन्देह, जागीर, मामा की स्थिति, यश, गुदा-स्थान, पीड़ा, रोग तथा व्रण आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(७) सप्तम भाव—इसे 'जाया' के अतिरिक्त स्त्री, मदन, काम, सौभाग्य, जामित्र, केन्द्र तथा सप्तम भाव भी कहा जाता है।

इस भाव के द्वारा जातक की स्त्री, मृत्यु, कामेच्छा, कामचिन्ता, सहवास, विवाह, स्वास्थ्य, जननेन्द्रिय, अंग-विभाग, व्यवसाय, झगड़ा-झंझट तथा ववासीर का रोग आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। इस भाव का कारक 'शुक्र' है।

इस भाव में वृश्चिक राशि हो तो उसे बलवान माना जाता है।

(८) अष्टम भाव – इसे 'आयु' के अतिरिक्त त्रिक्, रन्ध्र, जीवन, चतुरस्र, पणफर, तथा अष्टम भाव भी कहा जाता है।

इस भाव का कारक 'शनि' है।

इस भाव के द्वारा जातक की आयु, जीवन, मृत्यु, मृत्यु के कारण, व्याधि, मानसिक चिन्ताएँ, झूठ, पुरातत्त्व, समुद्र-यात्रा, संकट, लिंग, योनि तथा अण्डकोष के रोग आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(९) नवम भाव – इसे 'धर्म' के अतिरिक्त पुण्य, भाग्य, त्रिकोण तथा नवम भाव भी कहा जाता है।

इस भाव का कारक 'गुरु' है।

इस भाव के द्वारा जातक के तप, शील, धर्म, विद्या, प्रवास, तीर्थ यात्रा, दान, मानसिक-वृत्ति, भाग्योदय तथा पिता का सुख आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(१०) दशम भाव—इसे 'कर्म' के अतिरिक्त व्योम, गगन, नभ, रव, मध्य, आस्पद, मान, आज्ञा, व्यापार, केन्द्र तथा दशम भाव भी कहा जाता है।

इस भाव का कारक 'बुध' है।

इस भाव के द्वारा जातक के अधिकार, ऐश्वर्य-भोग, यश-प्राप्ति, नेतृत्व, प्रभुता, मान-प्रतिष्ठा, राज्य, नौकरी, व्यवसाय तथा पिता के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

इस भाव में मेष, सिंह, वृष तथा मकर राशि का पूर्वार्द्ध एवं धनु राशि का उत्तरार्द्ध बलवान् होता है।

(११) एकादश भाव—इसे 'लाभ' के अतिरिक्त आय, उत्तम, उपचय, पणफर तथा एकादश भाव भी कहा जाता है।

इस भाव का कारक 'गुरु' है।

इस भाव के द्वारा जातक की सम्पत्ति, ऐश्वर्य, मांगलिक कार्य, वाहन, रत्न आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(१२) द्वादश भाव—इसे 'व्यय' के अतिरिक्त प्रान्त्य, त्रिक, रिष्फ, अन्तिम तथा द्वादश भाव कहा जाता है।

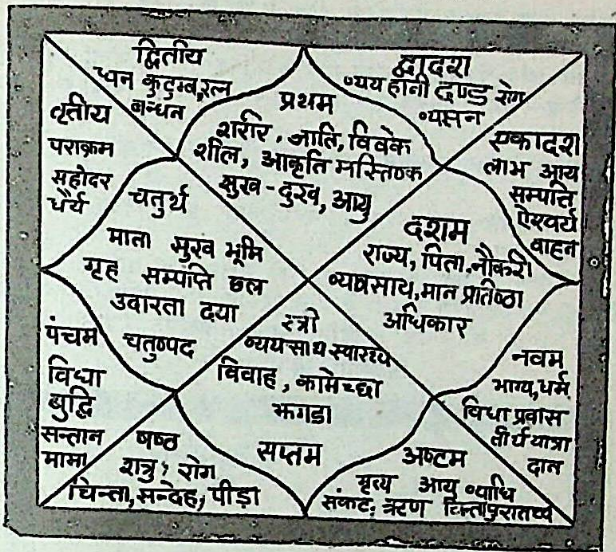
इस भाव का कारक 'शनि' है।

इस भाव के द्वारा जातक की हानि, व्यय, दण्ड, व्यसन, रोग, दान तथा बाहरी सम्बन्ध आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

सामने दी गई उदाहरण कुण्डली नं० ४ में किस-किस भाव के द्वारा किस-किस विषय के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की जाती है, इसे प्रदर्शित किया गया है:—

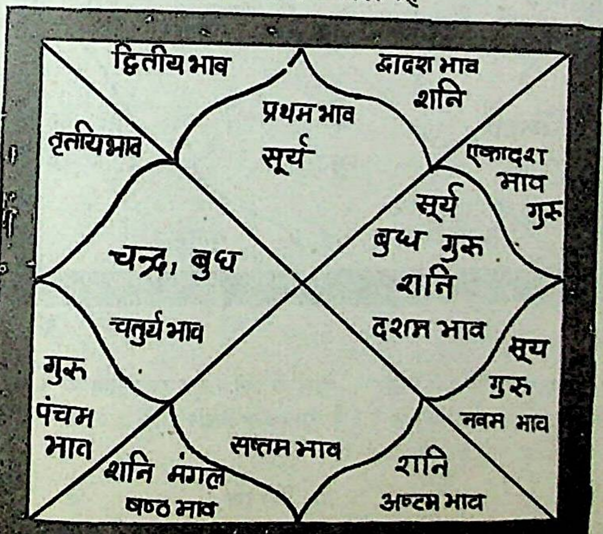
सामने दी गई उदाहरण कुण्डली नं ५ में किस भाव का कौन-कौनसा ग्रह कारक (स्वामी) होता है इसे प्रदर्शित किया गया है:—

विभिन्न भावों से विचारणीय विषय चक्र



८ः

विभिन्न भावों के कारक ग्रह



त्रिकोण, केन्द्र, पणफर, आपोक्लिम तथा मारक

त्रिकोण, केन्द्र, पणफर, आपोक्लिम तथा मारक किन-किन भावों को कहा जाता है ? इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये :—

(१) त्रिकोण—पंचम तथा नवम भावों को 'त्रिकोण' कहा जाता है ।

(२) केन्द्र—प्रथम, चतुर्थ, सप्तम तथा दशम—इन चारों भावों को 'केन्द्र' कहा जाता है ।

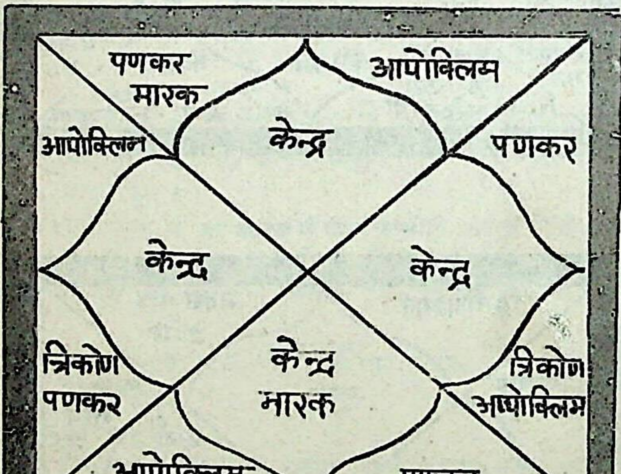
(३) पणफर—द्वितीय, पंचम, अष्टम तथा एकादश—इन चारों भावों को 'पणफर' कहा जाता है ।

(४) आपोक्लिम—तृतीय, षष्ठ, नवम तथा द्वादश—इन चारों भावों को 'आपोक्लिम' कहा जाता है ।

(५) मारक—द्वितीय तथा सप्तम भाव को 'मारक' कहा जाता है ।

नीचे दी गई उदाहरण कुण्डली में उक्त त्रिकोण, केन्द्र, पणफर, आपोक्लिम तथा मारक भावों की स्थिति को कुण्डली के विभिन्न भावों में प्रदर्शित किया गया है:—

त्रिकोणादि बोधक चक्र



आवश्यक टिप्पणी—कुछ विद्वानों के मतानुसार द्वितीय तथा दशम भाव को पफर एवं तृतीय तथा एकादश भाव को आपोक्लिम माना गया है। कुछ अन्य विद्वान षष्ठ तथा अष्टम भाव को पणफर तथा द्वितीय एवं द्वादश भाव को आपोक्लिम मानते हैं।

मूल त्रिकोण

जन्म कुण्डली के द्वादश भावों में विभिन्न राशियाँ अलग-अलग भावों में रहती हैं। उनमें सामने लिखे अनुसार जिस राशि के जितने अंश पर जो ग्रह हों, उसे मूल त्रिकोण में स्थित समझना चाहिए-

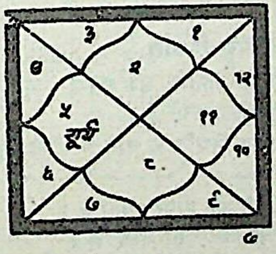
(१) सूर्य—सिंह राशि में, १ से २० अंश तक।
(२) चन्द्र—वृष राशि में, ४ से ३० अंश तक।
(३) मंगल—मेष राशि में, १ से १८ अंश तक।
(४) बुध—कन्या राशि में, १ से १५ अंश तक।
(५) गुरु—धनु राशि में, १ से १३ अंश तक।
(६) शुक्र—तुला राशि में, १ से १० अंश तक।
(७) शनि—कुम्भ राशि में, १ से २० अंश तक।

मूल त्रिकोण की राशि तथा ग्रह बोधक चक्र

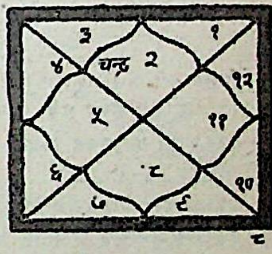
ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि	सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ

मूल त्रिकोण के ग्रहों की स्थिति को और अधिक स्पष्ट करने के लिये आगे आठ कुण्डलियाँ दी जा रही हैं। इनमें पहली सात कुण्डलियों में प्रत्येक ग्रह को अलग-अलग मूल त्रिकोण में स्थित दिखाया गया है तथा अन्तिम कुण्डली में मूल त्रिकोण के सभी ग्रहों को एक साथ अपनी-अपनी राशि में स्थित दिखाया गया है, अतः इन्हें देखकर मूल त्रिकोणस्थ ग्रहों के विषय में भली-भाँति जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिये। ये कुण्डलियाँ वृष लग्न की हैं। इन्हीं के आधार पर अन्य लग्न वाली कुण्डलियों के विषय में भी समझ लेना चाहिये।

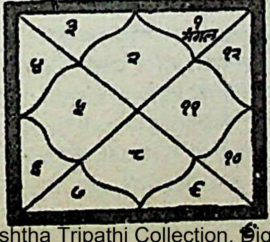
मूल त्रिकोणस्थ सूर्य



मूल त्रिकोणस्थ चन्द्र



मूल त्रिकोणस्थ मंगल

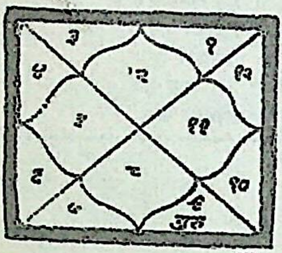


मूल त्रिकोणस्थ बुध



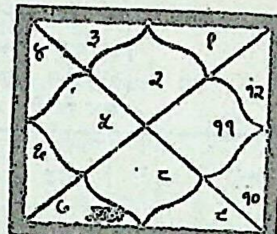
आवश्यक टिप्पणी—राहु को कर्क राशि में मूल त्रिकोणगत माना जाता है। इसी के आधार पर कुछ विद्वान् केतु को मकर राशि में मूल त्रिकोणगत मानते हैं।

मूल त्रिकोणस्थ गुरु



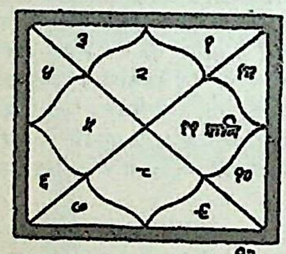
११

मूल त्रिकोणस्थ शुक्र



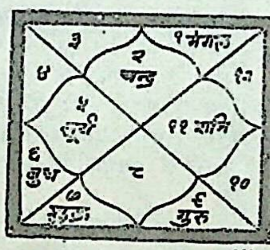
१२

मूल त्रिकोणस्थ शनि



१३

सभी ग्रह मूल त्रिकोण में



१४

ग्रहों की उच्च तथा नीच स्थिति

जातक की जन्म कुण्डली में जिस राशि के जितने अंश गत हो चुके हों, उसके अनुसार विभिन्न ग्रह उच्च तथा नीच स्थिति को प्राप्त करते हैं।

(१) ग्रहों की उच्च स्थिति—ग्रहों की उच्च स्थिति के बारे में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये :—

(१) सूर्य—मेष राशि के १० अंश पर उच्च का माना जाता है।
(२) चन्द्र—वृष राशि के ३ अंश पर उच्च का माना जाता है।
(३) मंगल—मकर राशि के २८ अंश पर उच्च का माना जाता है।
(४) बुध – कन्या राशि के १५ अंश पर उच्च का माना जाता है।
(५) गुरु—कर्क राशि के अंश पर उच्च का माना जाता है।
(६) शुक्र—मीन राशि के २७ अंश पर उच्च का माना जाता है।
(७) शनि—तुला राशि के २० अंश पर उच्च का माना जाता है।

टिप्पणी—राहु तथा केतु छाया ग्रह हैं, अतः ज्योतिष शास्त्र के अनेक ग्रंथों में इनकी उच्च अथवा नीच स्थिति के विषय में कोई उल्लेख नहीं किया गया है, परन्तु कुछ विद्वानों के मत से मिथुन राशि के १५ अंश पर राहु उच्च का माना जाता है तथा कुछ के मतानुसार वृष राशि में राहु उच्च का माना जाता है। इसी प्रकार कुछ विद्वानों के मतानुसार धनु राशि के १५ अंश पर केतु उच्च का माना जाता है और कुछ के मतानुसार वृश्चिक राशि में केतु उच्च का माना जाता है।

(२) ग्रहों की नीच स्थिति—प्रत्येक ग्रह को जिस राशि के जितने अंशों पर उच्च का बनाया गया है, उससे सातवीं राशि के उतने ही अंशों पर वह नीच का होता है। इसे नीचे लिखे अनुसार और अधिक स्पष्ट रूप में समझ लेना चाहिए :—

(१) सूर्य—तुला राशि के १० अंश पर नीच का होता है।
(२) चन्द्र—वृश्चिक राशि के ३ अंश पर नीच का होता है।
(३) मंगल—कर्क राशि के २८ अंश पर नीच का होता है।
(४) बुध—मीन राशि के १५ अंश पर नीच का होता है।
(५) गुरु—मकर राशि के ५ अंश पर नीच का होता है।
(६) शुक्र कन्या राशि के २७ अंश पर नीच का होता है।
(७) शनि—मेष राशि के २० अंश पर नीच का होता है।

टिप्पणी—राहु और केतु के विषय में यह है कि कुछ विद्वान् धनु के १५ अंश पर राहु को नीच का मानते हैं और कुछ के मतानुसार वृश्चिक राशि में राहु नीच का होता है।

इसी प्रकार कुछ विद्वानों के मतानुसार मिथुन राशि के १५ अंश पर केतु नीच का होता है और कुछ के मतानुसार वृष राशि में केतु नीच का होता है।

नीचे दिये गए चक्र में ग्रहों की उच्च तथा नीच स्थिति को प्रदर्शित किया गया है :—

ग्रहों की उच्च तथा नीच स्थिति बोधक चक्र

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रह
मेष १०	वृष ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५ अथवा वृष राशि	धनु १५ अथवा वृश्चिक राशि	उच्च स्थिति
तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनु १५	मिथुन १५ अथवा वृष राशि	नीच स्थिति

ग्रहों का बलाबल

प्रत्येक ग्रह उच्च का होने पर अधिक बलवान् होता है। उसके बाद यदि वह मूल त्रिकोण में हो तो अपनी राशि में रहने की अपेक्षा अधिक बली होता है। तत्पश्चात् स्वक्षेत्री ग्रह बलवान् होता है।

इस प्रकार ग्रहों की शक्ति की मुख्य रूप से चार स्थितियाँ होती हैं :—

(१) सर्वोच्चबली—उच्च का होने पर।
(२) उच्चबली—मूल त्रिकोण में रहने पर।
(३) बली—अपने नक्षत्र (घर) में रहने पर।
(४) निर्बल—नीच का होने पर।

उच्च क्षेत्र, मूल त्रिकोण तथा स्वग्रह के सम्बन्ध में विशेष विचार

नवग्रहों के उच्च क्षेत्रीय, मूल त्रिकोणस्थ तथा स्वग्रही होने के सम्बन्ध में विशेष रूप से नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए :—

(१) सूर्य—सूर्य 'सिंह' राशि का स्वामी है, अतः यदि वह 'सिंह' राशि में स्थित हो तो उसे 'स्वग्रही' अथवा 'स्वक्षेत्री' कहा जाएगा। परन्तु यदि सूर्य 'सिंह' राशि में स्थित हो तो सिंह राशि के १ से २० अंश तक उसका 'मूल त्रिकोण' माना जाता है तथा २१ से ३० अंश तक 'स्वक्षेत्र' कहा जाता है। मेष के १० अंश तक सूर्य 'उच्च' का तथा तुला के १० अंश तक 'नीच' का होता है, यह बात पहले बताई जा चुकी है।

(२) चन्द्र—चन्द्र 'कर्क' राशि का स्वामी है, अतः यदि वह 'कर्क' राशि में स्थित हो तो उसे 'स्वग्रही' अथवा 'स्वक्षेत्री' कहा जाएगा। परन्तु यदि चन्द्रमा 'वृष' राशि में स्थित हो तो वह वृष राशि के ३ अंश तक उच्च का तथा इसी (वृष) राशि के ४ अंश से ३० अंश तक मूल त्रिकोण स्थित माना जाता है। वृश्चिक राशि के ३ अंश तक चन्द्रमा नीच का होता है, इसे पहले बताया जा चुका है।

(३) मंगल—मंगल 'मेष' तथा 'वृश्चिक' राशि का स्वामी है, अतः यदि वह 'मेष' अथवा 'वृश्चिक' राशि में स्थित हो तो उसे 'स्वग्रही' अथवा 'स्वक्षेत्री' कहा जाएगा। परन्तु मेष राशि के १ से १८ अंश तक मंगल का 'मूल त्रिकोण' तथा १९ से २० अंश तक 'स्वक्षेत्र' कहा जाता है। मकर के २८ अंश तक मंगल उच्च का तथा कर्क के २८ अंश तक नीच का होता है, यह बात पहले बताई जा चुकी है।

(४) बुध—बुध 'कन्या' एवं 'मिथुन' राशि का स्वामी है, अतः यदि बुध 'कन्या' अथवा 'मिथुन' राशि में स्थित हो तो उसे 'स्वग्रही' अथवा 'स्वक्षेत्री' कहा जाएगा। परन्तु कन्या राशि के १ से १८ अंश तक बुध का 'मूल त्रिकोण' तथा उससे आगे १९ से ३० अंश तक 'स्वक्षेत्र' माना जाता है। कन्या राशि के १५ अंश तक बुध उच्च का तथा मीन राशि के १५ अंश तक नीच का होता है, यह बात पहले बताई जा चुकी है।

इस प्रकार यदि बुध कन्या राशि में स्थित हो तो वह कन्या राशि के १ से १५ अंश तक उच्च का और इसके साथ ही १ से १८ अंश तक मूल त्रिकोण स्थित तथा १९ से ३० अंश तक स्वक्षेत्री होता है।

(५) गुरु—गुरु 'धनु' एवं 'मीन' राशि का स्वामी है, अतः यदि गुरु 'धनु' अथवा 'मीन' राशि में स्थित हो तो उसे 'स्वग्रही' अथवा 'स्वक्षेत्री' कहा जायगा। परन्तु धनु राशि के १ से १३ अंश तक गुरु का 'मूल त्रिकोण' होता है और उसके बाद १४ से ३० अंश तक 'स्वक्षेत्र' है। कर्क राशि के ५ अंश तक गुरु उच्च का तथा मकर राशि के ५ अंश तक नीच का होता है, यह बात पहले बताई जा चुकी है।

(६) शुक्र—शुक्र 'वृष' तथा 'तुला' राशि का स्वामी है, अतः यदि शुक्र 'वृष' अथवा 'तुला' राशि में स्थित हो तो उसे 'स्वग्रही' अथवा 'स्वक्षेत्री' कहा जाएगा। परंतु तुला राशि के १ से १० अंश तक शुक्र का 'मूल त्रिकोण' होता है, तत्पश्चात् ११ से ३० अंश तक उसका 'स्वक्षेत्र' है। मीन राशि के २७ अंश तक गुरु उच्च का तथा कन्या राशि के २७ अंश तक नीच का होता है, यह बात पहले बताई जा चुकी है।

(७) शनि—शनि 'मकर' तथा 'कुम्भ' राशि का स्वामी है, अतः यदि शनि 'मकर' अथवा 'कुम्भ' राशि में स्थित हो तो उसे 'स्वग्रही' अथवा 'स्वक्षेत्री' कहा जाएगा। परन्तु कुम्भ राशि के १ से २० अंश तक शनि का 'मूल त्रिकोण' होता है और उसके बाद २१ से ३० अंश तक 'स्वक्षेत्र' है। तुला राशि के २० अंश तक शनि 'उच्च' का होता है, यह बात पहले बताई जा चुकी है।

(८) राहु—राहु को कन्या 'राशि' का स्वामी माना गया है, अतः यदि राहु 'कन्या' राशि में स्थित हो तो उसे 'स्वग्रही' अथवा 'स्वक्षेत्री' कहा जाता है।

कुछ विद्वानों के मतानुसार मिथुन राशि के ० अंश तक राहु उच्च का तथा धनु राशि के ० अंश तक नीच का होता है। इसके विपरीत कुछ अन्य विद्वानों के मत से 'वृष' राशि में राहु उच्च का तथा 'वृश्चिक' राशि में नीच का होता है, यह बात पहले बताई जा चुकी है।

कर्क राशि को राहु का मूल त्रिकोण माना जाता है।

(९) केतु—केतु को मिथुन राशि का स्वामी माना गया है, अतः यदि केतु 'मिथुन' राशि में स्थित हो तो उसे 'स्वग्रही' अथवा 'स्वक्षेत्री' कहा जाता है। धनु राशि के १५ अंश तक केतु उच्च का तथा मिथुन राशि के १५ अंश तक नीच का होता है, यह बात पहले बताई जा चुकी है।

इनके विपरीत कुछ अन्य विद्वानों के मत से 'वृश्चिक' राशि में केतु उच्च का तथा 'वृष' राशि में नीच का होता है।

सिंह राशि को केतु का मूल त्रिकोण माना जाता है।

पृष्ठ ४० पर दिये गए कोष्ठक द्वारा नवग्रहों की उच्च, नीच, मूल त्रिकोणगत तथा स्वक्षेत्री स्थिति को एक ही दृष्टि में ज्ञात किया जा सकता है।

ग्रहों के पद

नवग्रह मण्डल में सूर्य तथा चन्द्रमा को राजा, बुध को युवराज, मंगल को सेनापति, शुक्र और गुरु को मन्त्री तथा शनि को सेवक का पद प्राप्त है। जिस व्यक्ति के ऊपर जिस ग्रह का जितना अधिक प्रभाव होता है, उसे वह अपने ही समान बनाने का प्रयत्न करता है।

ग्रहों के बल

ग्रहों के निम्नलिखित ६ प्रकार के बल माने गए हैं :—

(१) स्थान-बल।
(२) दिग्बल।
(३) कालबल।
(४) नैसर्गिक-बल।
(५) चेष्टाबल
(६) दृग्बल।

(१) स्थान-बल—जो ग्रह उच्च, स्वग्रही, मित्र-ग्रही अथवा मूल त्रिकोण में स्थित होता है, उसे 'स्थान बली' कहा जाता है।

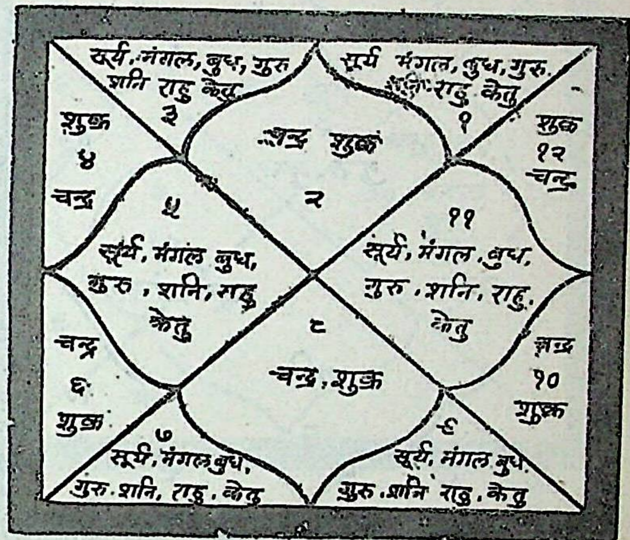
ग्रहों की उच्च, नीच तथा मूल त्रिकोणगत स्थिति बोधक चक्र

ग्रहों के नाम	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
कौन-सा ग्रह किस राशि का स्वामी है।	सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	कन्या मिथुन	धनु मीन	वृष तुला	मकर कुम्भ	कन्या	मिथुन
कौन-सा ग्रह किस राशि में उच्च का होता है।	मेष १०° अंश तक	वृष ३ अंश तक	मकर २८ अंश तक	कन्या १५ अंश तक	कर्क ५ अंश तक	मीन २७ अंश तक	तुला २० अंश तक	मिथुन अंश तक (वृष)	धनु अंश तक (वृश्चिक)
कौन-सा ग्रह किस राशि में नीच का होता है।	तुला १० अंश तक	वृश्चिक ३ अंश तक	कर्क २८ अंश तक	मीन १५ अंश तक	मकर ५ अंश तक	कन्या २७ अंश तक	मेष २० अंश तक	धनु अंश तक	मिथुन अंश तक
कौन-सा ग्रह किस राशि में मूल त्रिकोणगत माना जाता है।	सिंह १ से २० अंश तक	वृष ४ से ३० अंश तक	मेष १ से १८ अंश तक	कन्या १६ से २० अंश तक	धनु १ से १३ अंश तक	तुला १ से १० अंश तक	कुंभ १ से २० अंश तक	कर्क	सिंह
कौन-सा ग्रह किस राशि के किन अंशों में स्वक्षेत्री होता है।	सिंह २१ से ३० अंश तक	कर्क १ से ३० अंश तक	मेष १९ से ३० अंश तक तथा वृश्चिक १ से ३० अंश तक	कन्या २१ से ३० अंश तक तथा मिथुन १ से ३० अंश तक	धनु १४ से ३० अंश तक तथा मीन १ से. ३० अंश तक	तुला ११ से ३० अंश तक तथा वृष १ से ३० अंश तक	कुम्भ २१ से ३० अंश तक तथा मकर १ से ३० अंश तक	कन्या १ से ३० अंश तक	मीन १ से ३० अंश तक

चन्द्रमा और शुक्र सम राशि—वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर तथा मीन—में तथा अन्य ग्रह (सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शनि, राहु एवं केतु) विषम राशि—मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु तथा कुम्भ—में स्थित होने पर स्थान बली होते हैं।

सामने दिये गए कुण्डली चक्र नं० १५ में सम तथा विषम राशियों में कौन-सा ग्रह स्थान बली होता है इसे प्रदर्शित किया गया है—इसी के आधार पर अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

स्थानबली निरूपण चक्र



१५

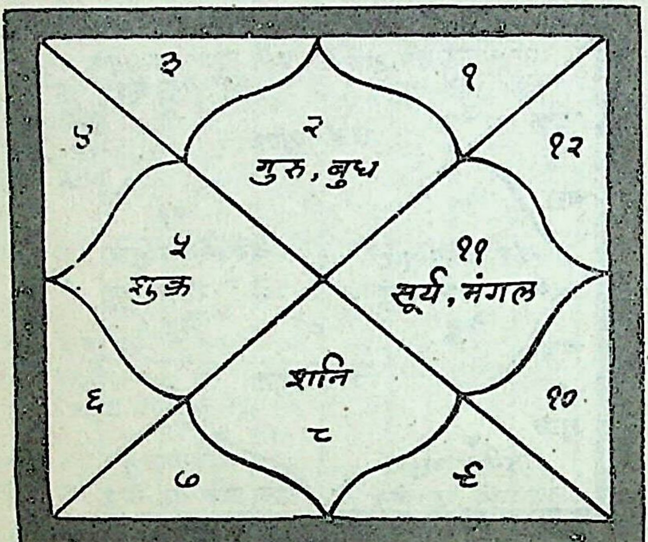
(२) दिग्बल—जन्म कुण्डली में प्रथम भाव को पूर्व दिशा, चतुर्थ भाव को उत्तर दिशा, सप्तम भाव को पश्चिम दिशा तथा दशम भाव को दक्षिण दिशा माना जाता है।

बुध और गुरु प्रथम भाव (लग्न) में रहने पर, चन्द्रमा और शुक्र चतुर्थ भाव में रहने पर, शनि सप्तम भाव में रहने पर तथा सूर्य और मंगल दशम भाव में स्थित रहने पर दिग्बली होते हैं।

आगे दिये गए कुण्डली चक्र में कौन-सा ग्रह किस भाव में बैठने पर दिग्बली होता है, इसे प्रदर्शित किया गया है। इसी के आधार पर अन्य कुण्डलियों को भी समझ लेना चाहिए।

(३) कालबल—जातक का जन्म रात्रि में हुआ हो तो चन्द्रमा, शनि और मंगल—ये तीनों ग्रह कालबली होते हैं और यदि दिन में जन्म हुआ हो तो सूर्य, बुध एवं शुक्र कालबली होते हैं गुरु सर्वकाल में बली होता है। मतान्तर से बुध को दिन रात्रि-दोनों में ही कालबली माना गया है।

दिग्बल निरूपण चक्र



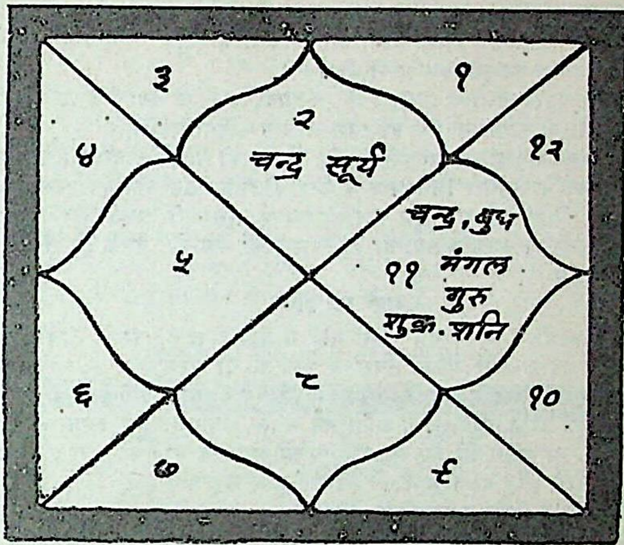
१६

(४) नैसर्गिक बल—शनि, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र तथा सूर्य—ये उत्तरोत्तर एक दूसरे से अधिक बली होते हैं, अर्थात् शनि से मंगल अधिक बलवान् है, मंगल से बुध अधिक बलवान् है, बुध से गुरु अधिक बलवान् है, गुरु से शुक्र अधिक बलवान् है, शुक्र से चन्द्र अधिक बलवान् है तथा चन्द्र से सूर्य अधिक बलवान् है। इसी क्रम के अनुसार सूर्य से चन्द्रमा कम बली होता है, चन्द्रमा से शुक्र कम बली होता है, शुक्र से गुरु कम बली होता है, गुरु से बुध कम बली होता है, बुध से मंगल कम बली होता है तथा मंगल से शनि कम बली होता है।

(५) चेष्टाबल—मकर राशि से मिथुन राशि तक किसी भी राशि में रहने से सूर्य तथा चन्द्रमा चेष्टाबली होते हैं एवं मंगल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि—ये ग्रह चन्द्रमा के साथ रहने से चेष्टाबली होते हैं।

नीचे दिये गए कुण्डली चक्र में नवग्रहों की चेष्टाबल स्थिति को प्रदर्शित किया गया है। इसी के अनुसार अन्य कुण्डलियों में भी ग्रहों के चेष्टाबल को समझ लेना चाहिए।

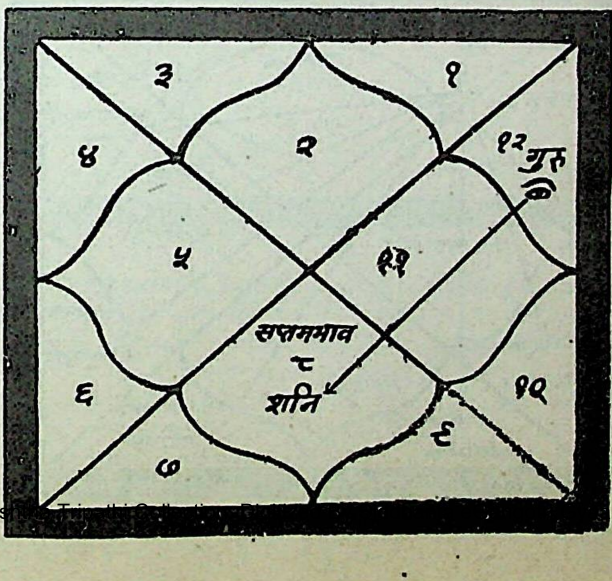
चेष्टाबल निरूपण चक्र



१७

(६) दृग्बल -- जिन दुष्ट ग्रहों के ऊपर शुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो, वे उनकी शुभ दृष्टि के बल को पाकर दृग्बली हो जाते हैं ।

दृग्बल निरूपण चक्र



उदाहरण के लिए किसी कुण्डली में शनि सप्तम भाव में बैठा है और गुरु एकादश भाव में बैठा है, तो गुरु की शनि के ऊपर पूर्ण दृष्टि पड़ेगी, क्योंकि गुरु जिस भाव में बैठा होता है उस भाव से पाँचवें, सातवें तथा नवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है (कौन-सा ग्रह किस भाव को देखता है इसका वर्णन आगे किया जाएगा)। ऐसी स्थिति में दुष्ट ग्रह शनि को शुभ ग्रह गुरु का दृष्टिवल प्राप्त होगा।

ऊपर दी गई कुण्डली में उक्त स्थिति को प्रदर्शित किया गया है। इसी के अनुसार अन्य जन्म कुण्डलियों के भी ग्रहों के दृष्टिवल को समझ लेना चाहिए।

टिप्पणी—उपर्युक्त छह प्रकारों में से किसी भी प्रकार के वल को प्राप्त बलवान् ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार जिस भाव में बैठा होता है, उस भाव का फल जातक को देता है। किसी भी भाव के शुभाशुभ फल की यथार्थ जानकारी प्राप्त करने के लिए उस भाव में स्थित राशि के स्वभाव तथा ग्रह के स्वभाव का समन्वय करके ही किसी निष्कर्ष पर पहुँचना चाहिए।

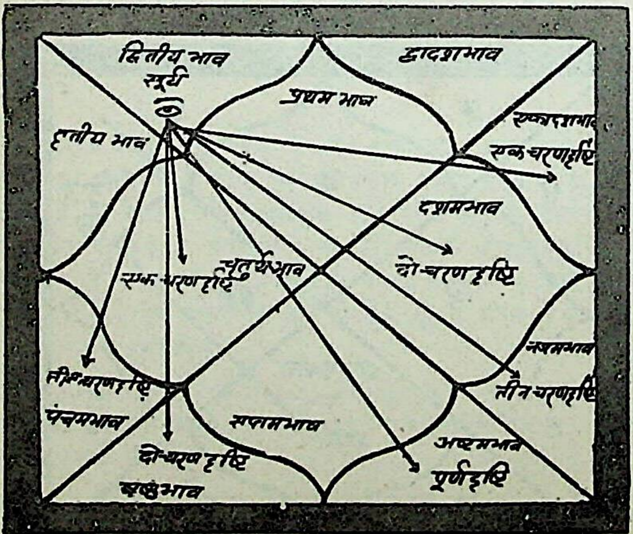
ग्रहों की दृष्टि

जन्म कुण्डली में प्रत्येक ग्रह जिस भाव में बैठा होता है, उससे तीसरे तथा दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पाँचवें तथा नवें भाव को दो चरण दृष्टि से, चौथे तथा आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से तथा सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है, परन्तु इन भावों को पूर्णापूर्ण दृष्टि से देखने के अतिरिक्त मंगल अपने बैठे हुए स्थान से चौथे तथा आठवें भाव को, गुरु अपने बैठे हुए स्थान से पाँचवें तथा नवें भाव को तथा शनि अपने बैठे हुए स्थान से तीसरे और दसवें भाव को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है।

नीचे दी गई विभिन्न कुण्डलियों में विभिन्न ग्रहों की खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि को प्रदर्शित किया गया है। इनके आधार पर अन्य जन्म कुण्डलियों में भी ग्रहों की विभिन्न भावों पर पड़ने वाली दृष्टि की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिये।

सूर्य की खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि सूर्य जिस भाव में भी बैठा हो, वहाँ से वह तीसरे

सूर्य की विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र

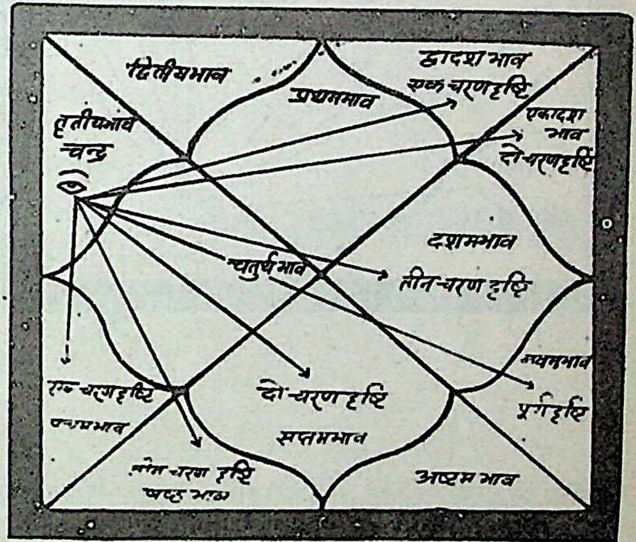


तथा दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पाँचवें तथा नवें भाव को दो चरण दृष्टि से, चौथे तथा आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से एवं सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

इस उदाहरण कुण्डली में सूर्य को द्वितीय भाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अतः द्वितीय भाव से आरम्भ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तीन चरण तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म कुण्डली के जिस भाव में भी सूर्य की स्थिति हो, उसी भाव से आरम्भ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टियों की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिये।

चन्द्रमा की खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि—चन्द्रमा जिस भाव में भी बैठा हो, वहाँ से वह तीसरे तथा दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पाँचवें तथा नवें भाव को दो चरण दृष्टि से, चौथे तथा आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से एवं सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

चन्द्रमा की विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र

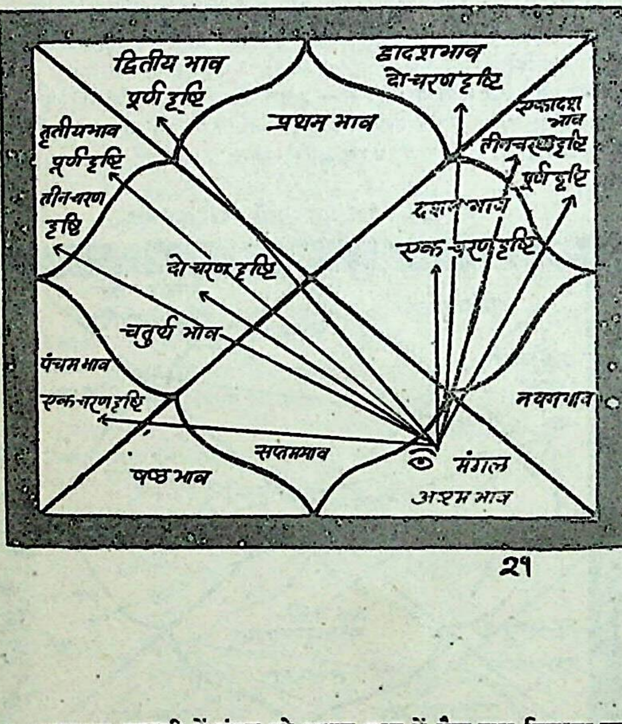


२८

इस उदाहरण कुण्डली में चन्द्रमा को तृतीय भाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अतः तृतीय भाव से आरम्भ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तीन चरण तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म कुण्डली के जिस भाव में भी चन्द्रमा की स्थिति हो, उसी भाव से आरम्भ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टियों की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिये।

मंगल की खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि—मंगल जिस भाव में भी बैठता है, वहाँ से वह तीसरे तथा दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पाँचवें तथा नवें भाव को दो चरण दृष्टि से, चौथे तथा आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से तथा सातवें, चौथे एवं आठवें—इन तीनों भावों को पूर्ण दृष्टि से देखता है देखिए कुण्डली नं० २१।

मंगल की विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र

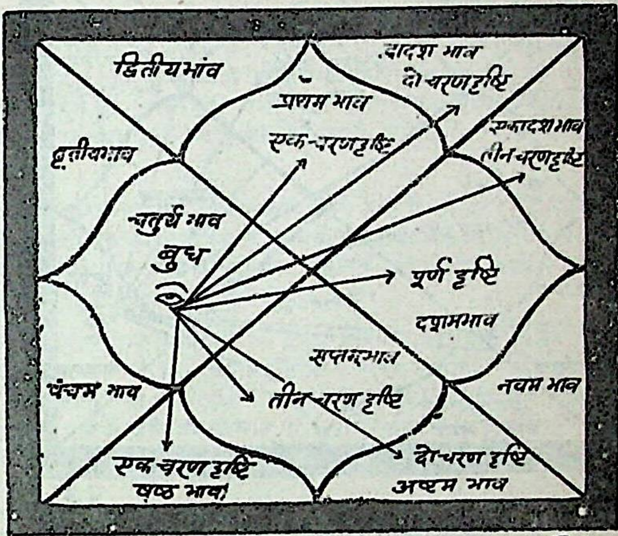


२१

इस उदाहरण कुण्डली में मंगल को अष्टम भाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अतः अष्टम भाव से आरम्भ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तीन चरण तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म कुण्डली के जिस भाव में मंगल की स्थिति हो, उसी भाव से आरम्भ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिये।

बुध की खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि—बुध जिस भाव में भी बैठा हो, वहां से वह तीसरे तथा दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पांचवें तथा नवें भाव को दो चरण दृष्टि से, चौथे तथा आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से एवं सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। देखिए कुण्डली नं० २२।

बुध की विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र



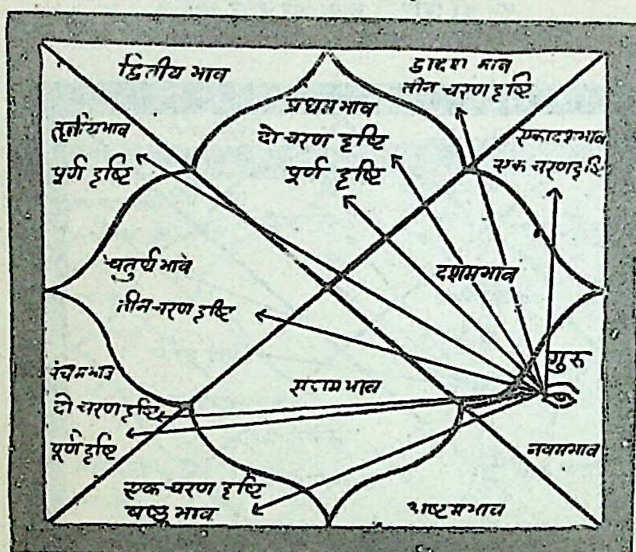
२२

इस उदाहरण कुंडली में बुध को चतुर्थ भाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अतः चतुर्थ भाव से आरम्भ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तीन चरण तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म कुण्डली के जिस भाव में भी बुध की स्थिति हो, उसी भाव से आरम्भ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टियों की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए।

गुरु की खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि—गुरु जिस भाव में भी बैठता है, वहाँ से वह तीसरे तथा दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पाँचवें तथा नवें भाव को दो चरण दृष्टि से, चौथे तथा आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से तथा सातवें, पाँचवें एवं नवें—इन तीनों भावों को पूर्ण दृष्टि से देखता है देखिए कुण्डली नं० २३।

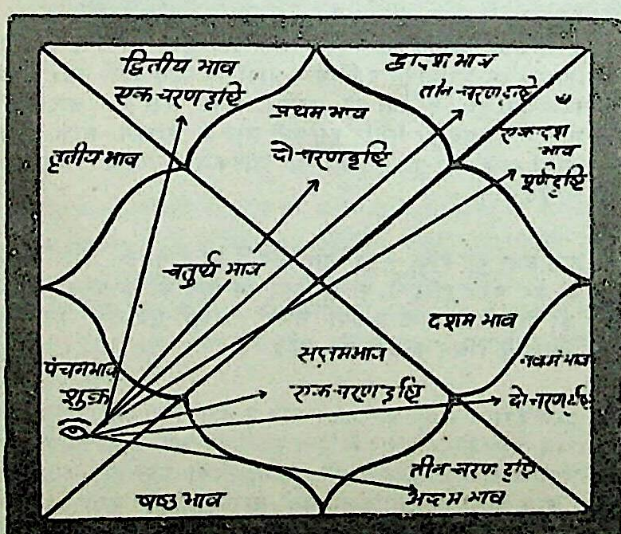
इस उदाहरण कुण्डली में गुरु को नवम भाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अतः नवम भाव से आरम्भ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तीन चरण तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म कुण्डली के जिस भाव में गुरु की स्थिति हो, उसी भाव से आरम्भ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टियों की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए।

गुरु की विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र



२३

शुक्र की विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र



२४

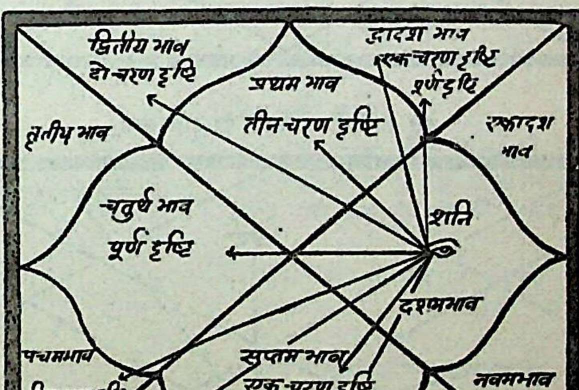
शुक्र की खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि—शुक्र जिस भाव में भी बैठा हो, वहाँ से वह तीसरे तथा दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पाँचवें तथा नवें भाव को दो चरण दृष्टि से, चौथे तथा आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से एवं सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

इस उदाहरण-कुण्डली में शुक्र को पंचम भाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अतः पंचम भाव से आरम्भ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तीन चरण तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म-कुण्डली के जिस भाव में शुक्र की स्थिति हो, उसी भाव से आरम्भ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टियों की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए।

शनि की खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि—शनि जिस भाव में भी बैठता है, वहाँ से वह तीसरे तथा दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पाँचवें तथा नवें भाव को दो चरण दृष्टि से, चौथे तथा आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से तथा सातवें, तीसरे एवं दसवें—इन तीनों भावों को पूर्ण दृष्टि से देखता है। देखिए कुण्डली नं० २५।

इस उदाहरण-कुण्डली में शनि को दशम भाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अतः दशम भाव से आरम्भ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तीन चरण तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म-कुण्डली के जिस भाव में शनि की स्थिति हो, उसी भाव से आरम्भ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टियों की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए।

शनि की विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र

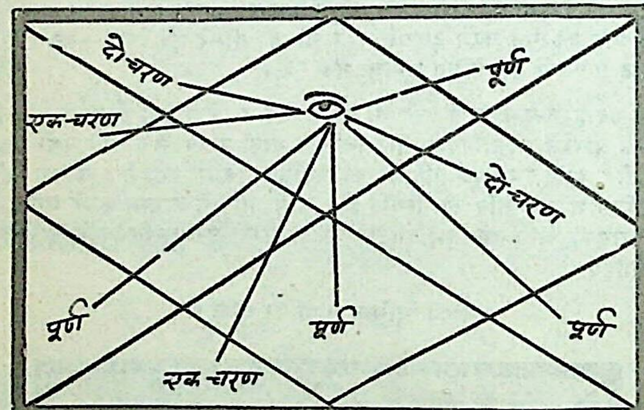


२५

राहु की खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि—राहु जिस भाव में भी बैठा हो, वहाँ से वह तीसरे तथा छठे भाव को एक चरण दृष्टि से, दूसरे तथा दशम भाव को दो चरण दृष्टि से एवं पाँचवें, सातवें, नवें तथा बारहवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। देखिए कुण्डली नं० २६

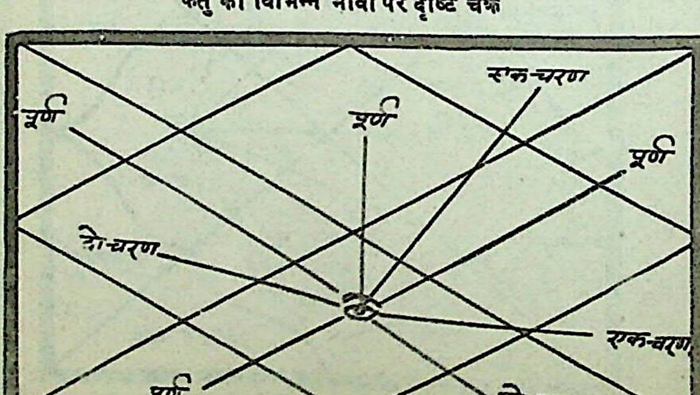
इस उदाहरण-कुण्डली में राहु को प्रथम भाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अतः प्रथम भाव से आरम्भ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म-कुण्डली के जिस भाव में राहु की स्थिति हो, उसी भाव से आरम्भ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टियों की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए। राहु की त्रिपाद दृष्टि को 'अन्ध' माना गया है।

राहु की विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र



२६

केतु की विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र



२७

केतु की खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि—केतु जिस भाव में भी बैठा हो, वहाँ से वह तीसरे तथा छठे भाव को एक चरण दृष्टि से, दूसरे तथा दशम भाव को दो चरण दृष्टि से, एवं पाचवें, सातवें, नवें तथा बारहवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। देखिए कुण्डली नं २७

इस उदाहरण-कुण्डली में केतु को सप्तम भाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अतः सप्तम भाव से आरम्भ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तथा पूर्ण दृष्टि को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म-कुण्डली के जिस भाव में केतु की स्थिति हो, उसी भाव से आरम्भ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिये। केतु की त्रिपाद दृष्टि को 'अन्ध' माना गया है।

ग्रहों के अंश

प्रत्येक ग्रह के ३० अंश होते हैं। जातक के जन्म के समय कौन-सा ग्रह कितने अंश पर था, अर्थात् किस ग्रह के कितने अंश व्यतीत हो चुके थे, इसका ज्ञान उस समय के पंचाङ्ग द्वारा हो सकता है। प्रस्तुत पुस्तक में ग्रहों के अंश ज्ञात करने की विधि का वर्णन इसलिए नहीं किया जा रहा है कि वह इस पुस्तक के मूल विषय से बाहर की वस्तु हो जायेगी और सामान्य पाठकों के लिए अधिक उपयोगी भी नहीं रहेगी।

अतः जन्म-कुण्डली स्थित ग्रहों के अंशों के सम्बन्ध में जानकारी किसी ज्योतिषी द्वारा प्राप्त कर लेनी चाहिए।

यहाँ हम पाठकों को केवल इतना ही बता देना चाहते हैं कि ३ से ९ अंश तक का ग्रह किशोरावस्था वाला होता है, १० से २२ अंश तक का ग्रह युवावस्था वाला होता है, २३ से २८ अंश तक का ग्रह वृद्धावस्था वाला होता है तथा २९ से २ अंश (२९, ३०, १ और २) तक का ग्रह मृतक-अवस्था में माना जाता है।

किशोरावस्था एवं वृद्धावस्था वाले ग्रह अपना प्रभाव कुछ कम प्रदर्शित करते हैं। युवावस्था वाले ग्रह अपना प्रभाव पूर्ण रूप से प्रदर्शित करते हैं तथा मृतक-अवस्था वाले ग्रह अपना प्रभाव अत्यन्त सूक्ष्म रूप में प्रकट करते हैं।

मार्गी और वक्री गति

कौन-सा ग्रह मार्गी है और कौन-सा वक्री—इसका ज्ञान भी पंचाङ्ग देखने पर ही होता है। जातक के जन्म के समय जो ग्रह मार्गी होता है, वह उसे जीवन-भर मार्गी ग्रह के रूप में ही अपना फल देता है और जो ग्रह वक्री होता है, वह जीवन-भर वक्री ग्रह के रूप में ही अपना फल प्रदान करता है।

इसके अतिरिक्त पंचाङ्ग की दैनिक गोचर गति के अनुसार जो ग्रह मार्गी अथवा वक्री होते रहते हैं, वे जातक के जीवन पर अपनी उसी गति के अनुसार अलग से प्रभाव डालते हैं।

'मार्गी' का अर्थ है—वह ग्रह, जो अपने मार्ग पर सीधा आगे की ओर चलता रहे, अर्थात् यदि कोई ग्रह सिंह राशि पर है तो उसे सिंह राशि पर अपने भोग का समय पूरा करने के बाद, सिंह से आगे कन्या राशि पर, तत्पश्चात् क्रमशः तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ आदि राशियों पर सीधे चलते चला जाना चाहिये। ऐसी सीधी चाल वाले ग्रहों को 'मार्गी ग्रह' कहा जाता है।

वक्री का अर्थ है – वह ग्रह, जो अपने मार्ग पर सीधा आगे की ओर चलने की

राशि पर अपने भोग का समय पूरा करने के बाद आगे कन्या राशि पर जाना चाहिए, परन्तु वह कन्या राशि पर न जाकर यदि पीछे कर्क राशि पर लौट जाये, तो उसे 'वक्री' कहा जायेगा।

ग्रहों के मार्गी तथा वक्री होने का ज्ञान किसी ज्योतिषी से पूछ कर प्राप्त कर लेना चाहिए।

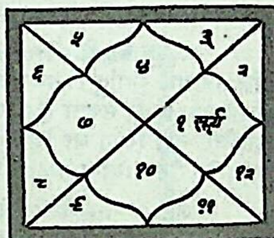
उच्च राशिगत ग्रहों का फल

उच्च राशिगत ग्रहों का सामान्य फल नीचे लिखे अनुसार होता है—

उच्च राशिस्थ सूर्य

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य उच्च राशि (मेष) का हो, वह धनी, भाग्यवान, नेतृत्व-शक्ति सम्पन्न, विद्वान्, सेनापति, यशस्वी एवं सुखी होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार सूर्य को मेष राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

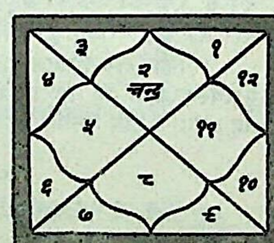


२८

उच्च राशिस्थ चन्द्र

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में चन्द्रमा उच्च राशि (वृष) का हो, वह विलासी, अलंकार-प्रिय, मिष्टान्न भोजी, यशस्वी, माननीय, सुखी एवं चपल स्वभाव का होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार सूर्य को वृष राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

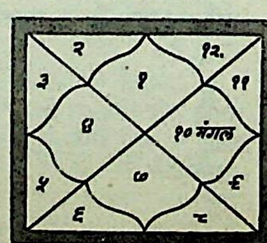


२९

उच्च राशिस्थ मंगल

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में मंगल उच्च राशि (मकर) का हो, वह राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त, कर्त्तव्यपरायण, साहसी तथा शूरवीर होता है।

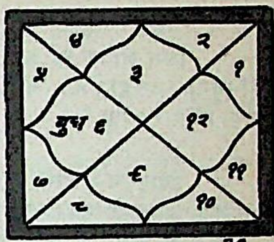
उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार मंगल को मकर राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।



उच्च राशिस्थ बुध

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में बुध उच्च राशि (कन्या) का हो, वह बुद्धिमान्, सुखी, लेखक, सम्पादक, राजा, राजमान्य, वंश-वृद्धिकर्त्ता, शत्रुनाशक तथा सुखी होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार बुध का कन्या राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

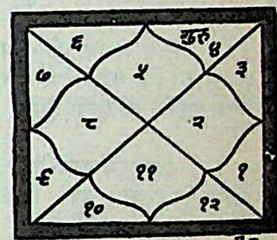


31

उच्च राशिस्थ गुरु

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में गुरु उच्च राशि (कर्क) का हो, वह विद्वान्, शासक, मन्त्री, राजप्रिय, सुशील, चतुर, सुखी, ऐश्वर्यशाली तथा सद्गुणी होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार गुरु को कर्क राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

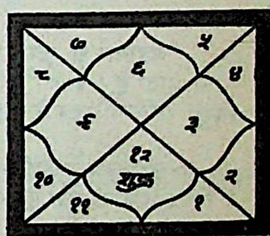


32

उच्च राशिस्थ शुक्र

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में शुक्र उच्च राशि (मीन) का हो, वह भाग्यवान्, कामी, विलासी, संगीत प्रिय एवं सुखी होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार शुक्र को मीन राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

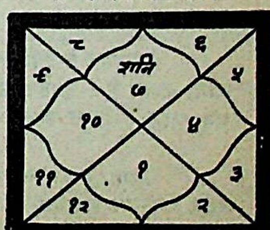


33

उच्च राशिस्थ शनि

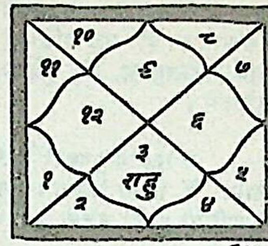
जिस जातक की जन्म-कुण्डली में शनि उच्च राशि (तुला) का हो, वह पृथ्वीपति, कृषक, राजा, जमींदार, यशस्वी, ऐश्वर्यशाली तथा सुखी होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार शनि को तुला राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।



34

उच्च राशिस्थ राहु

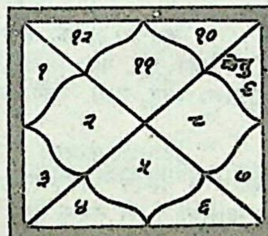


३५

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में राहु उच्च राशि (मिथुन) का हो, वह धनी, शूरवीर, साहसी, लम्पट तथा सरदार होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार राहु को मिथुन राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिये।

उच्च राशिस्थ केतु

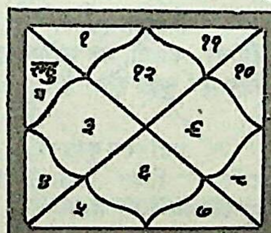


३६

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में केतु उच्च राशि (धनु) का हो, वह सरदार, राजा प्रिय, भ्रमण प्रिय तथा नीच प्रकृति का होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार केतु को धनु राशि में दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

मतान्तर से उच्च राशिस्थ राहु

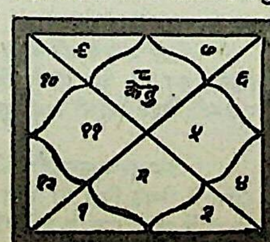


३७

मतान्तर से 'वृष' राशि में स्थित राहु उच्च का माना जाता है। इसका फल भी वही होता है, जो ऊपर मिथुन राशिस्थ उच्च के राहु का बताया गया है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार राहु को वृष राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

मतान्तर से उच्च राशिस्थ केतु



मतान्तर से वृश्चिक राशि में स्थित केतु उच्च का माना जाता है। इसका फल भी वही होता है, जो ऊपर धनु राशि में स्थित उच्च के केतु का बताया गया है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार केतु को वृश्चिक राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

३८

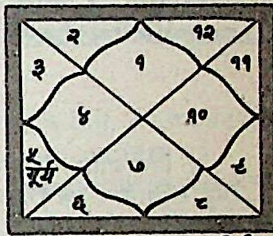
मूल त्रिकोण राशिगत ग्रहों का फल

मूल त्रिकोण राशिगत ग्रहों का सामान्य फल नीचे लिखे अनुसार होता है—

मूल त्रिकोण राशिगत सूर्य

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य मूल त्रिकोण (सिंह राशि के २० अंश तक) में हो, वह सम्माननीय, प्रतिष्ठित, पूज्य, धनी एवं सुखी होता है।

उदाहरण कुण्डली में जिस प्रकार सूर्य को मूल त्रिकोण राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

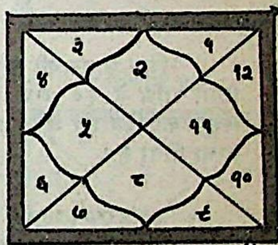


३९

मूल त्रिकोण राशिगत चन्द्र

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में चन्द्र मूल त्रिकोण (वृष राशि के ४ से ३० अंश तक) में हो, वह सुन्दर, सुखी, भाग्यशाली तथा धनवान होता है।

उदाहरण-कुण्डली में चन्द्रमा को जिस प्रकार मूल त्रिकोण राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

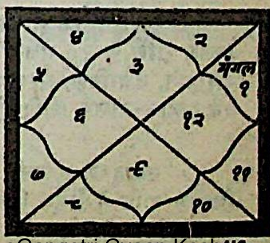


४०

मूलत्रिकोण राशिगत मंगल

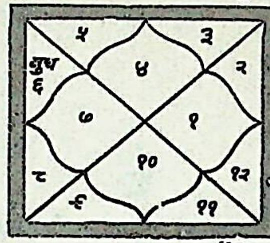
जिस जातक की जन्म-कुण्डली में मंगल मूल त्रिकोण (मेष राशि के १८ अंश तक) में हो, वह सामान्य धनी, नीच, स्वार्थी, लम्पट, क्रोधी, चरित्रहीन, दुष्ट, निर्दयी तथा अपयशी होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार मंगल को मूल त्रिकोण राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।



४१

मूल त्रिकोण राशिगत बुध

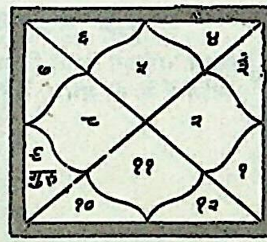


४२

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में बुध मूल त्रिकोण (कन्या राशि के १६ से २० अंश तक) में हो, वह महत्वाकांक्षी, चिकित्सक, सैनिक, व्यवसायी, प्राध्यापक, विद्वान, राजमान्य तथा धनवान होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार बुध को मूल त्रिकोण राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

मूल त्रिकोण राशिगत गुरु

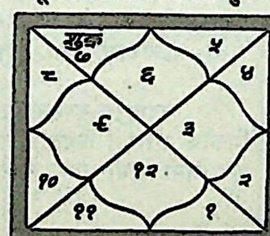


४३

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में गुरु मूल त्रिकोणी (धनु राशि के १३ अंश तक) में हो, वह राजप्रिय, यशस्व सम्माननीय, भोगी, तपस्वी तथा सुखी होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार गुरु को मूल त्रिकोण राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

मूल त्रिकोण राशिगत शुक्र



४४

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में शुक्र मूल त्रिकोण (तुला राशि के १० अंश तक) में हो, वह जागीरदार स्त्रियों का प्रिय एवं अनेक प्रकार के पुरस्कारों को जीतने वाला होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार शुक्र को मूल त्रिकोण राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

मूल त्रिकोण राशिगत शनि

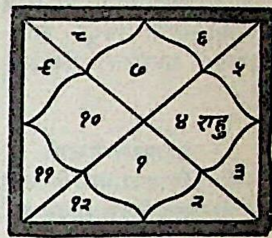


जिस जातक की जन्म-कुण्डली में शनि मूल त्रिकोण (कुम्भ राशि के २० अंश तक) में हो, वह शूरवीर, साहसी, सेनापति, वैज्ञानिक, अस्त्र-शस्त्रों का निर्माता, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं जहाज-चालक आदि होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार शनि को मूल त्रिकोण राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिये।

४५

मूल त्रिकोण राशिगत राहु



४६

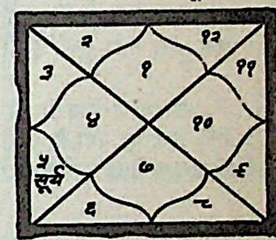
जिस जातक की जन्म-कुण्डली में राहु मूल त्रिकोण (कर्क राशि) में हो, वह लोभी, वाचाल तथा धनी होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार राहु को मूल त्रिकोण राशि में स्थित दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिये।

स्वक्षेत्रस्थ ग्रहों का फल

अपनी राशि (क्षेत्र) में स्थित ग्रहों का सामान्य फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

स्वक्षेत्रस्थ सूर्य

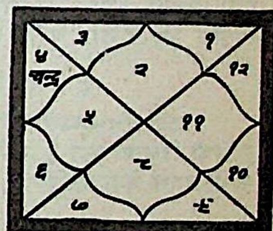


४७

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य स्वक्षेत्री (सिंह राशि का) हो, वह सुन्दर, ऐश्वर्यवान् सुखी, कामी तथा व्यभिचारी होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार सूर्य स्वक्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिये।

स्वक्षेत्रस्थ चन्द्र

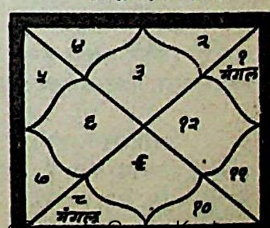


४८

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में चन्द्र स्वक्षेत्री (कर्क राशि का) हो, वह सुन्दर, भाग्यशाली, धनी तथा तेजस्वी होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार चन्द्रमा को स्वक्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

स्वक्षेत्रस्थ मंगल

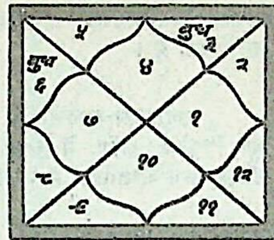


४९

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में मंगल स्वक्षेत्री (मेष राशि का) हो, वह जमींदार, किसान, साहसी, बलवान तथा यशस्वी होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार मंगल को स्वक्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिये।

स्वक्षेत्रस्थ बुध

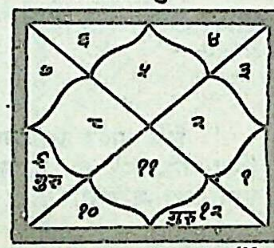


५०

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में बुध स्वक्षेत्री (कन्या अथवा मिथुन राशि का) हो, वह शास्त्रज्ञ, लेखक, सम्पादक, विद्वान् तथा बुद्धिमान होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार बुध को स्वक्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिये।

स्वक्षेत्रस्थ गुरु

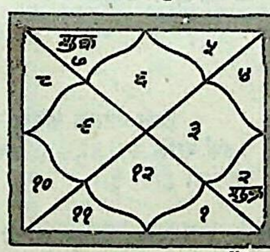


५१

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में गुरु स्वक्षेत्री (धनु अथवा मीन राशि का) हो, वह काव्य-प्रेमी, शास्त्रज्ञ, वैद्य तथा सुखी होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार गुरु को स्वक्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिये।

स्वक्षेत्रस्थ शुक्र

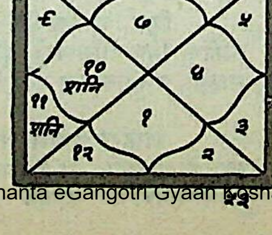


५२

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में शुक्र स्वक्षेत्री (वृष अथवा तुला राशि का) हो, वह विचारवान्, स्वतन्त्र प्रकृति का, धनी, गुणी एवं विद्वान् होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार शुक्र को स्वक्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिये।

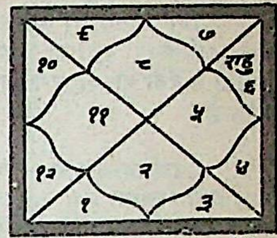
स्वक्षेत्रस्थ शनि



जिस जातक की जन्म-कुण्डली में शनि स्वक्षेत्री (मकर अथवा कुम्भ राशि का) हो, वह उग्र स्वभाव का, कष्ट-सहिष्णु तथा पराक्रमी होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार शनि को स्वक्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिये।

स्वक्षेत्रस्थ राहु

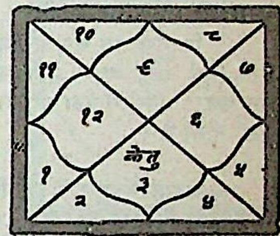


५४

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में राहु स्वक्षेत्री (कन्या राशि का) हो, वह भाग्यवान्, यशस्वी तथा सुन्दर होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार राहु को स्वक्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिये।

स्वक्षेत्रस्थ केतु



५५

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में केतु स्वक्षेत्री (मिथुन राशि का) हो, वह गुप्त-युक्ति वाला, धैर्यवान्, चिन्ताशील, कष्ट सहिष्णु तथा कर्मठ होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार केतु को स्वक्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

आवश्यक टिप्पणी—यदि किसी जातक की कुण्डली में एक ग्रह स्वक्षेत्री हो तो वह अपनी जाति में श्रेष्ठ होता है। दो ग्रह स्वक्षेत्री हों तो कर्त्तव्यपरायण, धनी एवं सम्माननीय होता है। तीन ग्रह स्वक्षेत्री हों तो विद्वान्, धनी, राजमंत्री होता है। चार ग्रह स्वक्षेत्री हों तो सरदार, धन-सम्पत्तिवान्, नेता एवं यशस्वी होता है। यदि पाँच ग्रह स्वक्षेत्री हों तो राजा अथवा राजा के समान अधिकारों का उपयोग करने वाला, परम ऐश्वर्यशाली, धनी, सुखी, गुणी, विद्वान् तथा महायशस्वी होता है।

मित्र क्षेत्रगत ग्रहों का सामान्य फल

मित्र क्षेत्रगत ग्रहों का सामान्य फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मित्र क्षेत्रगत सूर्य

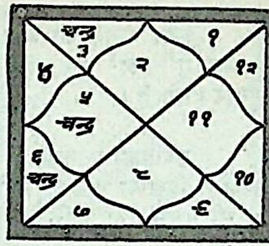


जिस जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य अपने मित्र (चन्द्र, मंगल अथवा गुरु) की राशि (कर्क, मेष, वृश्चिक, धनु अथवा मीन) में बैठा हो, तो वह दानी, यशस्वी, व्यवहारकुशल तथा सौभाग्यशाली होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार सूर्य को मित्र-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिये।

५६

मित्र क्षेत्रगत चन्द्र

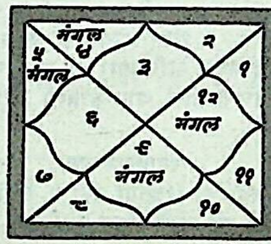


५७

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में चन्द्र अपने मित्र (सूर्य अथवा बुध) की राशि (सिंह, कन्या अथवा मिथुन) में बैठा हो, वह गुणवान्, धनवान् तथा सुखी होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार चंद्रमा को मित्र-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिये।

मित्र क्षेत्रगत मंगल

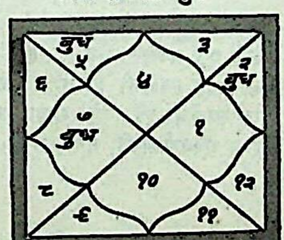


५८

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में मंगल अपने मित्र (सूर्य, चन्द्र अथवा गुरु) की राशि (सिंह, कर्क, धनु अथवा मीन) में बैठा हो, वह धनवान् तथा मित्र-प्रेमी होता हैं।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार मंगल को मित्र-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिये।

मित्र क्षेत्रगत बुध

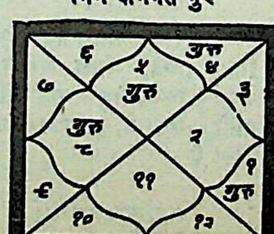


५९

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में बुध अपने मित्र (सूर्य अथवा शुक्र) की राशि (सिंह, वृष अथवा तुला) में बैठा हो, वह कार्यदक्ष, शास्त्रज्ञ तथा विनोदी स्वभाव का होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार बुध को मित्र-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिये।

मित्र क्षेत्रगत गुरु

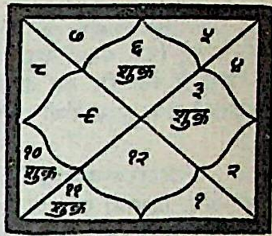


६०

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में गुरु अपने मित्र (सूर्य, चन्द्र अथवा मंगल) की राशि (सिंह, कर्क, मेष अथवा वृश्चिक) में बैठा हो, वह बुद्धिमान्, सुखी तथा उन्नतिशील होता हैं।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार गुरु को मित्र-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिये।

मित्र क्षेत्रगत शुक्र

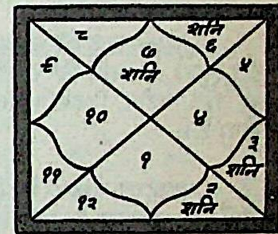


६१

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में शुक्र अपने मित्र (बुध अथवा शनि) की राशि (कन्या, मिथुन, मकर अथवा कुम्भ) में बैठा हो, वह सुखी, गुणवान् एवं सन्ततिवान् होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार शुक्र को मित्र-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिये।

मित्र क्षेत्रगत शनि



६२

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में शनि अपने मित्र (बुध अथवा शुक्र) की राशि (कन्या, मिथुन, वृष अथवा तुला) में बैठा हो, वह प्रेमी-स्वभाव का, धनी, सुखी तथा परान्न-भोजी होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार शनि को मित्र-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिये।

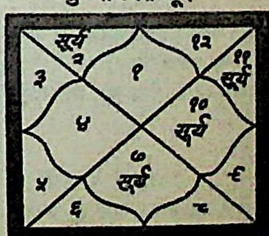
आवश्यक टिप्पणी—(१) मित्र-क्षेत्री राहु तथा केतु का फल मित्र-क्षेत्री शनि के समान होता है।

(२) जिस जातक की जन्म-कुण्डली में एक ग्रह मित्र-क्षेत्री हो, वह पराये धन का उपभोग करता है। यदि दो ग्रह मित्र-क्षेत्री हों तो जातक मित्र के धन का उपभोग करता है। यदि तीन ग्रह मित्र-क्षेत्री हों तो स्व-उपार्जित धन का उपयोग करता है। यदि चार ग्रह मित्र-क्षेत्री हों तो दानी होता है। यदि पाँच ग्रह मित्र-क्षेत्री हों तो नेता, सरदार अथवा सेनापति होता है। यदि छः ग्रह मित्र-क्षेत्री हों तो राजमान्य, उच्च पदाधिकारी, प्रथम श्रेणी का नेता अथवा महान् सेनानायक होता है। यदि सात ग्रह मित्र-क्षेत्री हों तो जातक राजा अथवा राजा के समान अधिकार प्राप्त करने वाला होता है।

शत्रु क्षेत्रगत ग्रहों का फल

शत्रु क्षेत्रगत ग्रहों का सामान्य फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

शत्रु क्षेत्रगत सूर्य



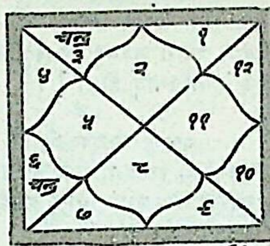
६३

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य अपने शत्रु (शुक्र अथवा शनि) की राशि (वृष, तुला, मकर अथवा कुम्भ) में बैठा हो, वह नौकरी करने वाला तथा सर्वदा दुःखी रहने वाला होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार सूर्य को शत्रु-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिये।

शत्रु क्षेत्रगत चन्द्र

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में चन्द्रमा अपने शत्रु (राहु अथवा केतु) की राशि (कन्या अथवा मिथुन) में बैठा हो, वह अपनी माता के कारण दुःखी रहता है तथा हृदय रोगी होता है।

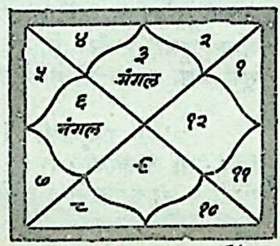


उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार चन्द्रमा को शत्रु-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

६४

शत्रु क्षेत्रगत मंगल

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में मंगल अपने शत्रु (बुध) की राशि (कन्या अथवा मिथुन) में बैठा हो, वह दीन, मलीन, विकलांग तथा व्याकुल रहने वाला होता है।

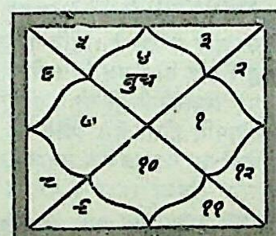


उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार मंगल को शत्रु-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

६५

शत्रु क्षेत्रगत बुध

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में बुध अपने शत्रु (चन्द्रमा) की राशि (कर्क) में बैठा हो, वह कर्त्तव्य-हीन, वासनायुक्त तथा सामान्य सुख प्राप्त करने वाला होता है।

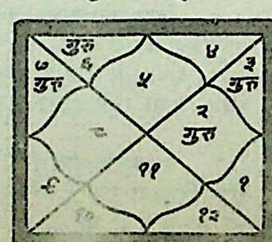


उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार बुध को शत्रु-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

६६

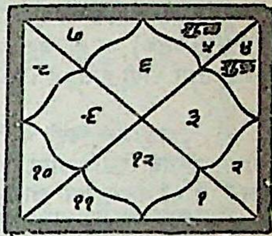
शत्रु क्षेत्रगत गुरु

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में गुरु अपने शत्रु (शुक्र अथवा बुध) की राशि (वृष, तुला, कन्या अथवा मिथुन) में बैठा हो, वह चतुर तथा भाग्यशाली होता है।



उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार गुरु को शत्रु-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।

शत्रु क्षेत्रगत शुक्र

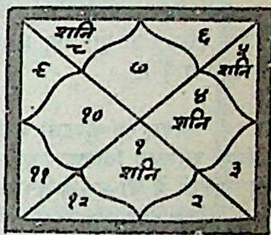


६८

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में शुक्र अपने शत्रु (सूर्य अथवा चन्द्रमा) की राशि (सिंह अथवा कर्क) में बैठा हो, वह नौकरी अथवा दास वृत्ति करके अपनी जीविका चलाता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार शुक्र को शत्रु-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

शत्रु क्षेत्रगत शनि



६९

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में शनि अपने शत्रु (सूर्य, चन्द्र अथवा मंगल) की राशि (सिंह, कर्क, मेष अथवा वृश्चिक) में बैठा हो, वह जीवन-भर किसी-न-किसी कारणवश दुःखी तथा चिन्तित बना रहता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार शनि को शत्रु-क्षेत्री दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

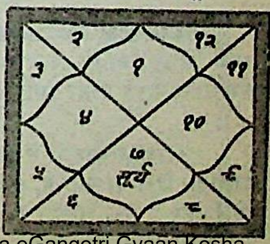
आवश्यक टिप्पणी—(१) शत्रु-क्षेत्री राहु तथा केतु का प्रभाव भी शत्रु-क्षेत्री शनि के समान होता है।

(२) जिस जातक की जन्म-कुण्डली में जितने अधिक ग्रह शत्रु-क्षेत्री होते हैं, वह उतना ही अधिक दुःखी, चिन्तित, निराश, दरिद्र तथा भाग्यहीन होता है। यदि तीन ग्रह शत्रु-क्षेत्री हों तो जीवन-भर दुःखी रहता है, परन्तु जीवन के अन्तिम भाग में सुख प्राप्त करता है।

नीच राशिगत ग्रहों का फल

नीच राशिगत ग्रहों का सामान्य-फल आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नीच राशिगत सूर्य



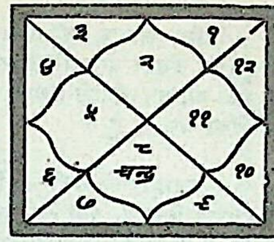
जिस जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य नीच राशि (तुला) का हो, वह पाप कर्म करने वाला तथा बन्धु-सेवी होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार सूर्य को नीच राशिगत दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

नीच राशिगत चन्द्र

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में चन्द्रमा नीच राशि (वृश्चिक) का हो, वह अल्प धनी, नीच प्रकृति वाला तथा रोगी होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार चन्द्रमा को नीच राशिगत दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

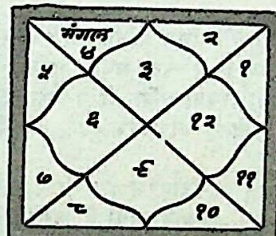


७१

नीच राशिगत मंगल

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में मंगल नीच राशि (कर्क) का हो, वह कृतघ्न तथा नीच स्वभाव का होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार मंगल को नीच राशिगत दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

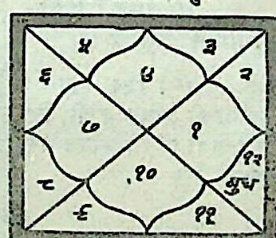


७२

नीच राशिगत बुध

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में बुध नीच राशि (मीन) का हो, वह उग्र प्रकृति वाला, चंचल स्वभाव का तथा बंधु-विरोधी होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार बुध को नीच राशिगत दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

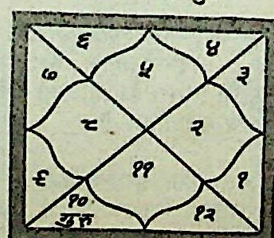


७३

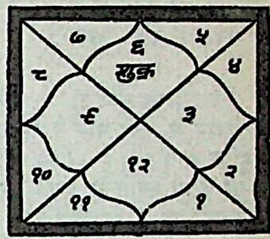
नीच राशिगत गुरु

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में गुरु नीच राशि (मकर) का हो, वह दुष्ट, अपवादी तथा अपयश प्राप्त करने वाला होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार गुरु को नीच राशिगत दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुंडलियों में भी समझ लेना चाहिए।



नीच राशिगत शुक्र

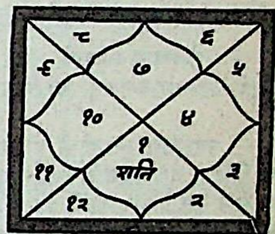


७५

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में शुक्र नीच राशि (कन्या) का हो, वह सदैव किसी-न-किसी कारण-वश दुःखी बना रहता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार शुक्र को नीच राशिगत दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

नीच राशिगत शनि



७६

जिस जातक की जन्म-कुण्डली में शनि नीच राशि (मेष) का हो, वह दुःखी तथा दरिद्री होता है।

उदाहरण-कुण्डली में जिस प्रकार शनि को नीच राशिगत दिखाया गया है, उसी प्रकार अन्य कुण्डलियों में भी समझ लेना चाहिए।

आवश्यक टिप्पणी—(१) नीच राशि स्थित राहु तथा केतु का प्रभाव भी नीच राशि स्थित शनि के समान ही होता है।

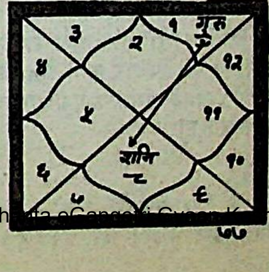
(२) जन्म-कुण्डली में जितने अधिक ग्रह नीच के होते हैं, जातक उतना ही अशुभ फल प्राप्त करता है। यदि तीन ग्रह नीच के हों तो जातक मूर्ख होता है।

ग्रहों की दृष्टि और स्थान-सम्बन्ध

ग्रहों की दृष्टि एवं स्थान-सम्बन्ध के विषय में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) दृष्टि सम्बन्ध—जब कोई ग्रह अपने बैठे हुए स्थान से किसी अन्य स्थान (भाव) को देखता है अथवा उस स्थान पर बैठे हुए किसी ग्रह को देखता है, तो उसे उस ग्रह का 'दृष्टि सम्बन्ध' कहा जाता है।

ग्रहों का दृष्टि सम्बन्ध

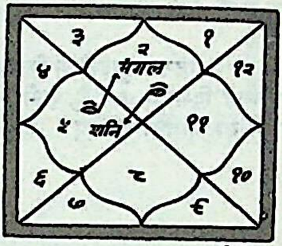


७७

उदाहरण-कुण्डली में द्वादश भाव में बैठा हुआ गुरु सप्तम भाव में स्थित शनि को अपनी पूर्ण दृष्टि से देख रहा है, अतः इसे गुरु और शनि का 'दृष्टि सम्बन्ध' कहा जायेगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के दृष्टि-सम्बन्ध के विषय में भी समझ लेना चाहिए।

(२) पारस्परिक दृष्टि सम्वन्ध—जब कोई भी दो ग्रह अलग-अलग स्थानों (भावों) में बैठे हुए एक दूसरे के ऊपर अपनी दृष्टि डालते हैं, तो उसे उन ग्रहों का 'पारस्परिक दृष्टि सम्वन्ध' कहा जाता है।

ग्रहों का पारस्परिक दृष्टि सम्वन्ध



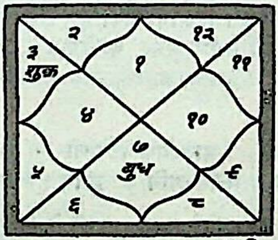
७८

उदाहरण-कुण्डली में लग्न में बैठा हुआ मंगल अपने स्थान से चौथे भाव में स्थित शनि के ऊपर अपनी पूर्ण दृष्टि डाल रहा है। साथ ही चौथे भाव में बैठा हुआ शनि भी अपने स्थान से दसवें भाव में स्थित मंगल के ऊपर अपनी पूर्ण दृष्टि डाल रहा है। इस प्रकार दोनो ग्रह परस्पर एक दूसरे को पूर्ण-दृष्टि से देख रहे हैं, अतः इसे ग्रहों का 'पारस्परिक दृष्टि सम्वन्ध' कहा जायेगा।

इसी प्रकार अन्य ग्रहों के पारस्परिक दृष्टि-सम्बन्ध के विषय में भी समझ लेना चाहिये।

(३) स्थान सम्बन्ध—जब कोई भी दो ग्रह अलग-अलग एक दूसरे के स्थान में बैठे हुए हों, तो उसे उन ग्रहों का 'स्थान सम्वन्ध' कहा जाता है।

ग्रहों का स्थान सम्वन्ध



७९

उदाहरण-कुन्डली में बुध के स्थान मिथुन राशि पर शुक्र बैठा है तथा शुक्र के स्थान तुला राशि पर बुध बैठा हुआ है। इस प्रकार दोनों ग्रह अपने-अपने स्थान छोड़कर एक दूसरे के स्थान पर बैठे हुए हैं, अतः इसे शुक्र तथा बुध का 'स्थान-सम्वन्ध' कहा जायेगा।

इसी प्रकार अन्य ग्रहों के 'स्थान-सम्बन्ध' के विषय में भी समझ लेना चाहिये।

उपर्युक्त दृष्टि-सम्बन्ध, पारस्परिक-दृष्टि-सम्वन्ध तथा स्थान-सम्वन्ध का प्रभाव यह होता है कि ग्रहों का ऐसा पारस्परिक सम्बन्ध होने पर वे अपने-अपने गुण, कर्म तथा स्वभाव को एक दूसरे से मिलाकर जातक के जीवन पर प्रभाव डालते हैं अर्थात् एक ग्रह में दूसरे ग्रह का स्वभाव सम्मिलित हो जाता है, परन्तु इन सम्वन्धों में मुख्य बात विचार करने की यह है कि पारस्परिक सम्वन्ध वाले दोनों ग्रह आपस में मित्र हैं, शत्रु हैं अथवा समभाव रखने वाले हैं।

यदि दोनों ग्रह परस्पर मित्र होंगे, तो वे जातक के जीवन पर अपना एक-सा विशेष प्रभाव डालेंगे, यदि परस्पर शत्रु होंगे तो वे जातक के जीवन पर एक दूसरे के विपरीत विशेष प्रभाव डालेंगे और यदि समभाव रखने वाले होंगे तो अपना संयुक्त सामान्य प्रभाव डालेंगे।

ग्रहों के उक्त पारस्परिक सम्बन्धों पर विचार करते समय उनके उच्च राशिगत, मूल त्रिकोण राशिगत, नीच राशिगत, स्व-क्षेत्रगत, मित्र क्षेत्रगत अथवा शत्रु क्षेत्रगत होने आदि पर भी विचार कर लेना आवश्यक है क्योंकि इन सब बातों पर विचार करने के उपरान्त सबके समन्वय एवं निष्कर्ष के रूप में जो फल निकलता है, वही जातक के जीवन पर घटित होता है।

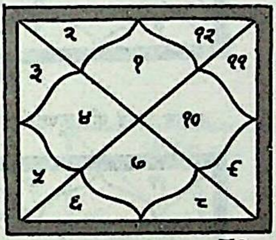
स्थानाधिपति

जन्म-कुण्डली में जो बारह खाने होते हैं, उन्हें 'द्वादश भाव' कहा जाता है, यह बात पहले बताई जा चुकी है। जिस प्रकार जन्म-कुण्डली के खानों की संख्या बारह है,

उसी प्रकार मेष आदि राशियों की संख्या भी बारह ही होती है। जातक के जन्म के समय जिस राशि की लग्न वर्तमान होती है, वही राशि जन्म-कुण्डली के लग्न स्थान अर्थात् प्रथम भाव में बैठती है। शेष राशियाँ अपने क्रम के अनुसार कुण्डली के अगले भावों में बैठती हैं।

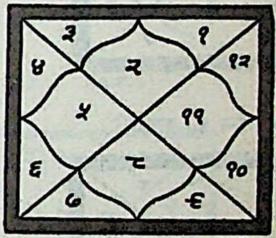
उदाहरण के लिये, यदि किसी जातक का जन्म वृष लग्न में हुआ है, तो उसे उसकी जन्म-कुण्डली में वृष राशि को प्रथम भाव में स्थापित किया जायेगा। तत्पश्चात् अगले भावों में क्रमशः मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन तथा मेष राशि को स्थापित किया जायेगा। नीचे दी गई बारह उदाहरण कुण्डलियाँ बारह विभिन्न लग्नों में जन्म लेने वाले लोगों की हैं। कुण्डली संख्या ८० मेष लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की; कुण्डली संख्या ८१ वृष लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की; कुण्डली संख्या ८२ मिथुन लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की; कुन्डली संख्या ८३ कर्क लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की; कुण्डली संख्या ८४ सिंह लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की; कुण्डली संख्या ८५ कन्या लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की; कुण्डली संख्या ८६ तुला लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की; कुण्डली संख्या ८७ वृश्चिक लग्न में जन्न लेने वाले व्यक्ति की; कुण्डली संख्या ८८ धनु लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की; कुण्डली संख्या ८९ मकर लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की; कुण्डली संख्या ९० कुम्भ लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की तथा कुण्डली संख्या ९१ मीन लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की है।

मेष लग्न की कुण्डली



८०

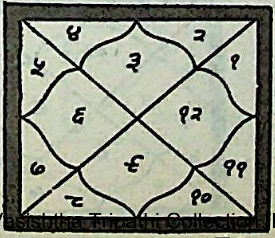
वृष लग्न की कण्डली



८१

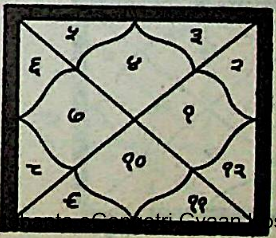
कुण्डली में कौन-सा ग्रह किस स्थान पर बैठना चाहिए, इसका निर्णय जातक के जन्मकालीन समय तथा उस समय की ग्रह स्थिति के अनुसार पंचाङ्ग के आधार पर किया जाता है। ज्योतिषी लोग इस विषय को जानते हैं, अतः यदि जिज्ञासा हो तो इस सम्बन्ध में उनसे जानकारी प्राप्त करनी चाहिये या फिर इस विषय से सम्बन्धित ज्योतिष-ग्रंथों का अध्ययन करना चाहिए।

मिथुन लग्न की कुण्डली



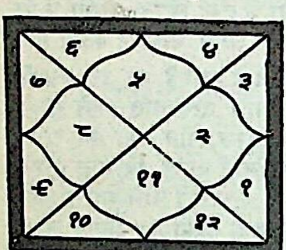
८२

कर्क लग्न की कुण्डली



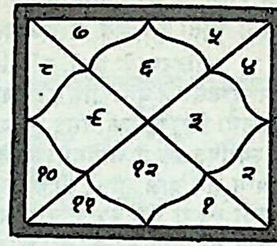
८३

सिंह लग्न की कुण्डली



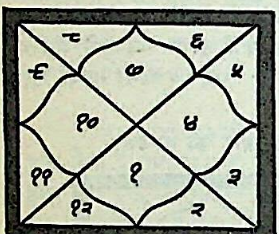
८४

कन्या लग्न की कुण्डली



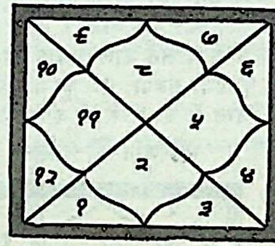
८५

तुला लग्न की कुण्डली



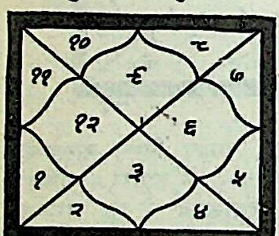
८६

वृश्चिक लग्न की कुण्डली



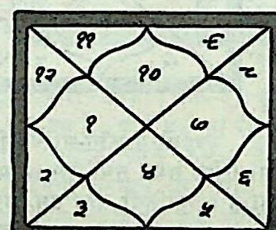
८७

धनु लग्न की कुण्डली



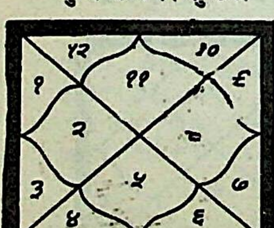
८८

मकर लग्न की कुण्डली



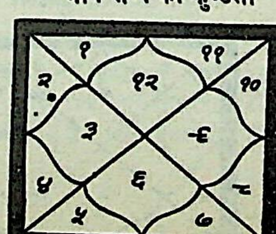
८९

कुम्भ लग्न की कुण्डली



९०

मीन लग्न की कुण्डली



९१

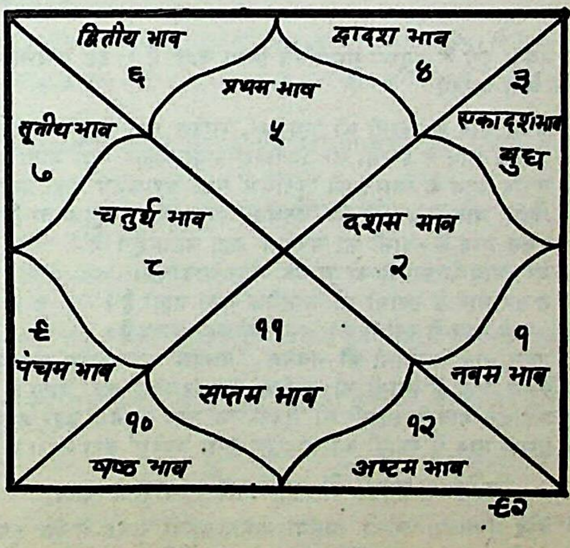
जन्म-कुण्डली में जो राशि जिस स्थान (भाव) में स्थित होती है, उस राशि का स्वामी ही उस स्थान (भाव) का अधिपति होता है।

उदाहरण के लिए ९२ नम्बर की कुण्डली के ग्याहरवें भाव में — जिससे कि लाभ तथा आमदनी का विचार किया जाता है—मिथुन राशि स्थित है, तो ऐसी स्थिति में मिथुन राशि के स्वामी बुध को ही ग्यारहवें भाव का अधिपति, अर्थात् एकादशेश या लाभेश माना जायेगा।

इसी प्रकार यदि ग्यारहवें भाव में कर्क राशि स्थित हुई तो उसका स्वामी चन्द्रमा एकादश भाव का अधिपति, अर्थात एकादशेश या लाभेश माना जायेगा।

संक्षेप में यह है कि जिस भाव में जो राशि स्थित होती है, उस राशि का स्वामी ही उस भाव का अधिपति होता है।

जिस भाव में जो राशि स्थित हो, उसका स्वामी उसी भाव में स्थित हो, यह आवश्यक नहीं है। उदाहरण के लिये यदि एकादश भाव में मिथुन राशि स्थित है और उसका स्वामी बुध कर्क राशि वाले द्वादश भाव में स्थित है, तो उस समय यह कहा जायेगा कि एकादशेश अथवा लाभेश द्वादश भाव में, अर्थात् व्यय-स्थान में चला गया है। यदि बुध कर्क राशि वाले द्वादश भाव की बजाय तुला राशि वाले तृतीय भाव में चला गया हो, तो उस स्थिति में यह कहा जायेगा कि एकादशेश तृतीय भाव में चला गया है। कुण्डली नं० ९२ तथा ९३ देखिये

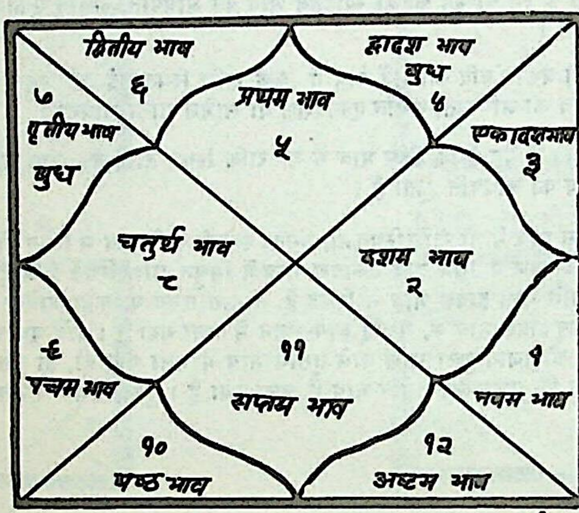


९२

इसी प्रकार अन्य सभी भावों, राशियों तथा ग्रहों के विषय में समझ लेना चाहिये।

स्थानाधिपतियों के नाम

जन्म-कुण्डली में जो द्वादश भाव होते हैं, उनमें से प्रत्येक भाव के स्वामी को, उसी



६३

भाव के नाम अथवा गुण के अनुरूप सम्बोधित किया जाता है। इस सम्बन्ध में नीचे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिये—

(१) प्रथम भाव के स्वामी को 'प्रथमेश', 'लग्नेश' तथा 'देहाधीश' कहा जाता है।
(२) द्वितीय भाव के स्वामी को 'द्वितीयेश' तथा 'धनेश' कहा जाता है।
(३) तृतीय भाव के स्वामी को 'तृतीयेश' तथा 'पराक्रमेश' कहा जाता है।
(४) चतुर्थ भाव के स्वामी को 'चतुर्थेश' तथा 'सुखेश' कहा जाता है।
(५) पंचम भाव के स्वामी को 'पंचमेश' कहा जाता है।
(६) षष्ठ भाव के स्वामी को 'षष्ठेश' कहा जाता है।
(७) सप्तम भाव के स्वामी को 'सप्तमेश' कहा जाता है।
(८) अष्टम भाव के स्वामी को 'अष्टमेश' कहा जाता है।
(९) नवम भाव के स्वामी को 'नवमेश', 'भाग्येश' तथा 'धर्मेश' कहा जाता है।
(१०) दशम भाव के स्वामी को 'दशमेश' तथा 'राज्येश' कहा जाता है।
(११) एकादश भाव के स्वामी को 'एकादशेश' तथा 'लाभेश' कहा जाता है।
(१२) द्वादश भाव के स्वामी को 'द्वादशेश' तथा 'व्ययेश' कहा जाता है।

विभिन्न भावों में ग्रहों का शुभाशुभ फल

(१) केन्द्र (पहला, चौथा, सातवाँ तथा दसवाँ भाव) में बैठे हुए ग्रह अधिक शक्तिशाली होते हैं, अतः वे अच्छा फल प्रदान करते हैं।

(२) त्रिकोण (पाँचवाँ तथा नवाँ भाव) में बैठे हुये ग्रह भी जातक के ऊपर अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य का पूरा-पूरा प्रभाव डालते हैं।

(३) धन तथा लाभ स्थान (दूसरा तथा ग्यारहवें भाव) में बैठे हुए ग्रह जातक के धन की वृद्धि करते हैं। एकादश भाव में बैठा हुआ ग्रह विशेष लाभ देता है।

(४) पराक्रम स्थान (तृतीय भाव) में बैठे हुये ग्रह जातक के पराक्रम की वृद्धि करते हैं, जिसके कारण वह सफलता प्राप्त करता है।

इस प्रकार प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम, दशम तथा एकादश भाव—ये नौ स्थान और इनमें बैठे हुए ग्रह उत्तम फल देने वाले बताये गये हैं।

(५) षष्ठ, अष्टम तथा द्वादश भाव में बैठे हुए ग्रह जातक के लिये परेशानियाँ उत्पन्न करने वाले होते हैं, क्योंकि छठा स्थान शत्रु का, आठवाँ स्थान मृत्यु का एवं बारहवाँ स्थान व्यय (खर्च) का होता है।

परन्तु सभी अच्छे स्थानों में बैठे हुये ग्रह शुभ फल ही देते हों और छठे, आठवें तथा बारहवें घर में बैठे हुए ग्रह अशुभ फल ही देते हों, ऐसी बात भी नहीं है। राशि, स्थिति, अंश, उच्च, नीच, स्व-क्षेत्र, मित्र-क्षेत्र, शत्रु-क्षेत्र, अन्य ग्रहों की दृष्टि, युति आदि कारणों से अच्छे तथा बुरे स्थानों में बैठे हुए ग्रहों के प्रभाव में भी सहस्रों प्रकार के भले-बुरे परिवर्तन हो जाते हैं—इस बात को सदैव स्मरण रखना चाहिये।

अन्य ज्ञातव्य विषय

(१) लग्न से तीसरे, छठे तथा ग्यारहवें भाव में क्रूर ग्रहों का बैठना जातक को शक्ति प्रदान करता है। ग्यारहवें भाव में सभी ग्रह शुभ फल देते हैं।

(२) स्वग्रही, उच्च-क्षेत्री, मित्र-क्षेत्री अथवा स्व-क्षेत्र या उच्च क्षेत्र पर दृष्टि डालने वाले ग्रह उस स्थान के गुणों की वृद्धि करते हैं।

इसे और अधिक स्पष्ट रूप में नीचे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिये—

सूर्य—सिंह अथवा मेष राशि पर बैठा हुआ हो अथवा इन राशियों पर सूर्य की दृष्टि पड़ती हो।

चन्द्र—कर्क अथवा वृष राशि पर बैठा हुआ हो अथवा इन राशियों पर चन्द्रमा की दृष्टि पड़ती हो।

मङ्गल—मेष, वृश्चिक अथवा मकर राशि पर बैठा हुआ हो अथवा इन राशियों पर मङ्गल की दृष्टि पड़ती हो।

बुध मिथुन अथवा कन्या राशि पर बैठा हुआ हो अथवा इन राशियों पर बुध की दृष्टि पड़ती हो।

गुरु – धनु, मीन अथवा कर्क राशि पर बैठा हुआ हो अथवा इन राशियों पर गुरु की दृष्टि पड़ती हो।

शुक्र—वृष, तुला अथवा मीन राशि पर बैठा हुआ हो अथवा इन राशियों पर शुक्र की दृष्टि पड़ती हो।

शनि—मकर, कुम्भ अथवा तुला राशि पर बैठा हुआ हो अथवा इन राशियों पर शनि की दृष्टि पड़ती हो।

राहु—मिथुन राशि पर बैठा हुआ हो अथवा लग्न से तीसरे, छठे या ग्यारहवें किसी भी ऐसे स्थान में बैठा हो, जिसमें धन राशि न हो।

केतु—धनु राशि पर बैठा हुआ हो अथवा लग्न से तीसरे, छठे या ग्यारहवें किसी भी ऐसे स्थान में बैठा हो, जिसमें मिथुन राशि न हो ।

(३) जो ग्रह सूर्य के बराबर अथवा उसके समीपी अंशों पर होता है, उसे पूर्ण अस्त माना जाता है । जो ग्रह सूर्य से ८ अंश की दूरी पर होता है, उसे आधा अस्त माना जाता है तथा जो ग्रह सूर्य से १५ अंश की दूरी पर होता है, उसे पूर्ण उदय माना जाता है ।

पूर्ण उदय ग्रह अपना पूर्ण प्रभाव देता है, आधा अस्त ग्रह अपना आधा प्रभाव देता है तथा पूर्ण अस्त ग्रह प्रभावहीन हो जाता है ।

(४) किसी भाव का स्वामी पाप ग्रह (दुष्ट ग्रह) हो और वह लग्न (प्रथम भाव) से तृतीय स्थान में बैठा हो तो अच्छा फल देता है, परन्तु जिस भाव का स्वामी शुभ ग्रह हो, वह यदि उस भाव से तीसरे स्थान में बैठे तो मध्यम फल देता है ।

(५) जिस भाव में शुभ ग्रह बैठा होता है, उसका फल उत्तम होता है तथा जिसमें पाप ग्रह रहता है, उस भाव के फल की हानि होती है ।

(६) जिस भाव में उसका अधिपति ग्रह अथवा शुक्र, बुध या गुरु बैठा हुआ हो अथवा इनकी दृष्टि पड़ रही हो अथवा वह अपने भाव के स्वामी के अतिरिक्त किसी अन्य ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट न हो, तो वह शुभ फल देता है ।

(७) जिस भाव का अधिपति शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो, अथवा जिस भाव में शुभ ग्रह बैठा हो अथवा जिस भाव को शुभ ग्रह देख रहा हो, वह शुभ फल देता है ।

(८) जिस भाव में कोई पाप ग्रह बैठा हो अथवा उसके अधिपति के साथ कोई पाप ग्रह बैठा हो अथवा उसके अधिपति पर पाप ग्रह की दृष्टि पड़ रही हो अथवा उस भाव को ही कोई पाप ग्रह देख रहा हो, तो उसका फल अशुभ होता है ।

(९) जिस भाव का अधिपति उच्च राशि का स्व-क्षेत्री, मित्र-क्षेत्री या मूल-त्रिकोण स्थित हो, उस भाव का फल शुभ होता है ।

(१०) सूर्य, मंगल, शनि तथा राहु क्रम से एक दूसरे से अधिक पाप ग्रह हैं । ये ग्रह यदि अपनी राशि में बैठे हों, तो अधिक पापी होते हैं अर्थात् जातक को अधिक अशुभ फल प्रदान करते हैं । यही ग्रह यदि अपने मित्र की राशि, किसी शुभ ग्रह की राशि अथवा अपनी उच्च राशि में बैठे हुए हों, तो अल्प पापी होते हैं, अर्थात् अशुभ फल न्यून मात्रा में देते हैं ।

(११) चन्द्रमा, बुध, शुक्र, केतु तथा गुरु ये सब क्रम से एक-दूसरे से अधिक शुभ ग्रह हैं । फल का विचार करने में केतु को प्रायः पाप ग्रह माना जाता है, परन्तु वैसे केतु की गणना शुभ ग्रहों में की जाती है । यह ग्रह यदि अपनी राशियों में बैठे हों, तो अधिक शुभ फल प्रदान करते हैं और यदि पाप ग्रहों (सूर्य, मंगल, शनि और राहु) की राशि में बैठे हों, तो अल्प शुभ फल प्रदान करते हैं ।

(१२) आठवें तथा बारहवें भाव में बैठे हुए सभी ग्रह जातक को थोड़ी-बहुत हानि अवश्य पहुँचाते हैं ।

(१३) गुरु छठे भाव में बैठा हो, तो वह शत्रुनाशक होता है । शनि आठवें भाव में बैठा हो, वह दीर्घायु देने वाला होता है । इसी प्रकार मंगल दसवें स्थान में बैठा हो, तो जातक के भाग्य को उत्तम बनाता है ।

(१४) आठवें भाव में जो राशि हो, उसका अधिपति अर्थात् अष्टमेश जिस भाव में बैठा होता है, उस भाव को बिगाड़ता है। इसी प्रकार राहु, केतु जिस भाव में रहते हैं, उस भाव को बिगाड़ देते हैं।

(१५) राहु और केतु के प्रभाव में एक बड़ी विशेषता यह है कि राहु जिसे अशुभ फल प्रदान करता है, केतु उसे शुभ फल देता है और केतु जिसे अशुभ फल प्रदान करता है, राहु उसे शुभ फल देता है।

(१६) यदि द्वितीय, पंचम तथा सप्तम भाव में गुरु अकेला बैठा हुआ हो, तो वह जातक के धन, पुत्र तथा स्त्री के लिए सदैव अनिष्टकारक होता है।

(१७) जिस भाव का जो ग्रह कारक माना गया है, वह यदि अकेला उस भाव में बैठा हुआ हो, तो उस भाव को बिगाड़ देता है।

(१८) भावों की गणना लग्न से ही की जाती है। लग्न को पहला भाव मानकर उसके बाईं ओर से गिनते हुए क्रमशः द्वादश भावों की गणना करनी चाहिए। किसी भी लग्न से भावों की गणना में कोई अन्तर नहीं आता।

(१९) जन्म-कुण्डली के बारह भावों में राशियों के नामों को अंकों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। मेष आदि बारह राशियों को क्रमशः १ से १२ तक के अंकों में लिखा जाता है। बारह उदाहरण-कुण्डलियों के माध्यम से इस विषय की विस्तृत चर्चा पहले ही की जा चुकी है।

(२०) बृहस्पति यदि पहले, चौथे, पांचवें, नवें तथा दसवें भाव में स्थित हो, तो उसे सब दोषों को नष्ट करने वाला कहा गया है। सूर्य ग्यारहवें स्थान में स्थित हो तथा चन्द्रमा शुभ लग्न में स्थित हो, तो वह नवांश दोषों को नष्ट करता है। बुध प्रथम, चतुर्थ, पंचम, नवम और दशम भाव में स्थित हो, तो उसे सौ दोषों को दूर करने वाला बताया गया है। इन्हीं स्थानों में यदि शुक्र हो, तो उसे दो-सौ दोषों को दूर करने वाला और बृहस्पति हो तो उसे एक लाख दोषों को दूर करने वाला माना जाता है। लग्न का स्वामी यदि चौथे, दसवें अथवा ग्यारहवें भाव में हो, तो वह अनेक दोषों को दूर कर देता है। इन सब बातों के सम्बन्ध में विशेष विचार विवाह के लिए वर-कन्या की जन्म-कुण्डली मिलाते समय किया जाता है।

जन्म-कुण्डली का फलादेश

जन्म-कुण्डली में बारह भाव (स्थान) होते हैं, उनमें बारह राशियाँ तथा नौ ग्रह बैठते हैं—यह बात पाठकों की समझ में अब तक भली-भाँति आ चुकी होगी।

जन्म-कुण्डली के किस भाव से किस विषय का विचार किया जाता है, कौन-सा ग्रह किस राशि अथवा किस भाव में बैठकर किस प्रकार फल देता है, इन सब बातों पर पिछले पृष्ठों में पर्याप्त प्रकाश डाला जा चुका है।

इस पुस्तक को लिखने का उद्देश्य ज्योतिष शास्त्र से अनभिज्ञ अथवा उसका सामान्य-ज्ञान रखने वाले पाठकों को किसी भी जातक की जन्म-कुण्डली को देखकर उसके फलादेश के विषय में जानकारी प्रदान करना है, अतः प्रारम्भिक विषयों का वर्णन करने के उपरान्त अब अगले द्वितीय प्रकरण में विभिन्न लग्नों में जन्म लेने वाले व्यक्तियों की कुण्डली स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का अलग-अलग वर्णन किया जायेगा।

पाठकों को चाहिए कि वे जिस जन्म-कुण्डली का फलादेश जानना चाहें, उसके

विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश को अगले खण्ड में दिये गए निर्देशों के अनुसार विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में देखकर मालूम कर लें।

अधिकांश कुण्डलियों में एक ही स्थान पर दो, तीन, चार, पाँच अथवा छः ग्रह तक बैठे हुए देखने को मिलते हैं। उन्हें 'ग्रहों की युति' कहा जाता है। एक ही स्थान पर विभिन्न ग्रहों की युति होने पर उनके फलादेश में भी अन्तर आ जाता है। विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में किया गया है।

तीसरे प्रकरण में ही जन्मकालीन नक्षत्र द्वारा ग्रह-दशा का ज्ञान, विभिन्न ग्रहों की दशा का फल, विशिष्ट योग तथा जातक की आयु के सम्बन्ध में किस प्रकार विचार करना चाहिए, आदि विषयों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

पुरुष और स्त्री

सामान्यतः पुरुष अथवा स्त्री—दोनों की कुण्डलियों में स्थित ग्रह दोनों के ऊपर एक जैसा ही प्रभाव डालते हैं। द्वितीय खण्ड में विभिन्न लग्न वाली कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के जिस फलादेश का उल्लेख किया गया है, उसे पुरुष तथा स्त्री, बालक, युवा अथवा वृद्ध—सभी पर समान रूप से लागू होने वाला समझना चाहिए। द्वितीय खण्ड के फलादेश में जहाँ कहीं 'पुरुष' शब्द आया हो, वहाँ पर यदि 'स्त्री' की जन्म-कुण्डली का फलादेश मालूम किया जा रहा हो तो 'स्त्री' समझना चाहिए। इसी प्रकार जहाँ 'पत्नी' अथवा 'प्रेमिका' शब्द आया हो, वहाँ स्त्री की कुण्डली का फलादेश ज्ञात करते समय 'पति' अथवा 'प्रेमी' समझना चाहिए।

कुछ विशेष स्थितियों में कुछ ग्रह पुरुष की अपेक्षा स्त्रियों के ऊपर कुछ अन्य प्रकार का प्रभाव भी डालते हैं, उनके सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी तथा स्त्रियों के सौभाग्य आदि के सम्बन्ध में विचार आदि विषयों का वर्णन इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में किया गया है, अतः किसी स्त्री की कुण्डली का ठीक-ठीक फलादेश ज्ञात करने के लिए द्वितीय प्रकरण में वर्णित फलादेश को देखने के उपरान्त तृतीय प्रकरण में वर्णित फलादेश को भी देखना चाहिए।

दैनिक ग्रह गोचर

अपनी दैनिक आकाशीय गति के अनुसार विभिन्न ग्रह विभिन्न समयों पर विभिन्न राशियों में पहुँचते रहते हैं। कौन-सा ग्रह किस राशि पर कितने समय तक रहता है, इसका उल्लेख पिछले पृष्ठों में किया जा चुका है, अतः प्रत्येक मनुष्य के जीवन पर प्रत्येक ग्रह अपना दो प्रकार से प्रभाव डालता है। एक स्थायी प्रभाव तो वह होता है, जो जातक के जन्मकालीन ग्रहों की स्थिति के कारण उसके जीवन पर निरन्तर पड़ता रहता है और दूसरा प्रभाव वह होता है, जो ग्रहों की दैनिक गति तथा विभिन्न-राशियों में आवागमन के कारण निरन्तर बदलता रहता है।

उदाहरण के लिए यदि किसी जातक की जन्म-कुण्डली में चन्द्रमा लग्न में वृष राशि पर बैठा हुआ है तो वह उच्च का और शुभ फल देने वाला होगा, परन्तु दैनिक ग्रह गोचर में यदि वह किसी नीच राशि में चला गया है, तो वह जिस राशि या स्थान में उस समय बैठा है, उसका कुछ-न-कुछ बुरा फल भी उतने समय तक जातक के ऊपर अवश्य डालेगा, जब तक कि वह दैनिक ग्रह गोचर में उस स्थान अथवा राशि से हट न जाये।

दैनिक ग्रह गोचर में किस समय कौन-सा ग्रह किस स्थान अथवा राशि में बैठा है, इसका ज्ञान पंचांग को देखकर आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।

प्रत्येक पंचाग में एक-एक सप्ताह के ग्रह गोचरों की कुण्डलियाँ दी गई होती हैं। उन्हें देखकर यह बात सरलता से मालूम की जा सकती है कि इस समय कौन-सा ग्रह किस भाव में और किस राशि पर चल रहा है। अन्य ग्रहों में कोई भी ग्रह ऐसा नहीं है, जो दैनिक ग्रह गोचर में एक राशि पर २१ दिन से कम ठहरता हो। अकेला चन्द्रमा ही ऐसा ग्रह है, जो हर सवादो दिन के बाद अपनी राशि को बदल देता है, अतः चन्द्रमा की स्थिति को दैनिक ग्रह गोचर में विशेष रूप से देख लेना चाहिए। कौन-सा ग्रह किस राशि पर कितने दिन ठहरता है, इसका उल्लेख आरम्भ में किया जा चुका है।

ऊपर यह बात बताई जा चुकी है कि दैनिक ग्रह गोचर में जो ग्रह जिस स्थान तथा राशि में बैठा होता है, वह जातक के ऊपर अपना कुछ-न-कुछ अच्छा-बुरा प्रभाव अवश्य डालता है, इसलिए जब तक जन्म-कुण्डली के साथ ही जातकों की दैनिक ग्रह गोचर कुण्डली का मिलान नहीं किया जाता, तब तक फलादेश ठीक नहीं बैठता।

दैनिक ग्रह गोचर की स्थिति को किसी ज्योतिषी से पूछकर मालूम कर लेना चाहिए। यह विषय इतना सरल है कि किसी भी ज्योतिषी से बहुत थोड़े ही समय में ग्रहों की सामयिक-स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करने की विधि आसानी से सीखी जा सकती है। उस विधि को सीख लेने के बाद फिर बार-बार ज्योतिषी से ग्रहों की तात्कालिक स्थिति को पूछने की आवश्यकता नहीं रहती। पंचाग देखकर उसे स्वयं ही जान लिया जाता है।

जन्म-कुण्डली के जिस भाव तथा राशि में स्थित जिस ग्रह का जो फल द्वितीय खण्ड के फलादेशों में बताया गया है, दैनिक ग्रह गोचर कुण्डली के विभिन्न भावों तथा राशियों में स्थित विभिन्न ग्रहों का फलादेश भी ठीक वैसा ही होता है।

किस दिन, मास अथवा वर्ष में दैनिक ग्रह गोचर स्थित किसी ग्रह का फलादेश किस उदाहरण-कुण्डली में देखना चाहिए तथा जन्म-कुण्डली स्थित ग्रहों का फलादेश किस उदाहरण-कुण्डली में देखना चाहिए, इसकी स्पष्ट जानकारी प्रत्येक लग्न की उदाहरण कुण्डलियों का फलादेश आरम्भ करने से पूर्व ही यथास्थान दे दी गई है। पाठकों को चाहिए कि वे जन्म-कुण्डली स्थित ग्रहों का फलादेश ज्ञात करते समय दैनिक ग्रह गोचर की स्थिति का फलादेश भी अवश्य मालूम कर लें। उन दोनों फलदेशों के समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को यथार्थ फलादेश समझना चाहिए।

सम्मिलित परिवार

जन्म-कुण्डली द्वारा फलादेश ज्ञात करने के इच्छुक महानुभावों को एक बात और भी स्मरण रखनी चाहिए, वह यह कि एक ही परिवार में सम्मिलित रूप से रहने वाले सभी व्यक्तियों का भाग्य एक दूसरे के साथ बंधा हुआ रहता है और सभी की जन्म कुण्डली स्थित ग्रहों का थोड़ा-बहुत प्रभाव संयुक्त-परिवार के सभी सदस्यों पर पड़ता है।

उदाहरण के लिए पति के ऊपर पत्नी की जन्म कुण्डली के ग्रहों का प्रभाव अवश्य पड़ता है। इसी प्रकार पत्नी भी पति की जन्म-कुण्डली स्थित ग्रहों के प्रभाव से प्रभावित होती है।

बालक जब तक अवयस्क होता है अथवा माता-पिता के आश्रय में रहता है, तब तक उसकी जन्म-कुण्डली स्थित अच्छे-बुरे ग्रहों का प्रभाव माता-पिता तथा भाई-बहनों के ऊपर भी पड़ता रहता है। इसी प्रकार घर की लड़की का जब तक विवाह नहीं हो जाता, तब तक उसके ग्रहों के प्रभाव से भी माता-पिता, भाई-बहन आदि प्रभावित होते हैं। कहने

का तात्पर्य यह है कि गृह-स्वामी अपने सभी आश्रितों के ग्रहों से प्रभावित होता है और गृह-स्वामी के ग्रहों के प्रभाव से आश्रित लोग भी थोड़े-बहुत अवश्य प्रभावित होते हैं। निकटस्थ मित्रों की जन्म-कुण्डली के ग्रह भी जातक पर अपना थोड़ा-बहुत प्रभाव डाला करते हैं।

अस्तु, किसी भी स्त्री अथवा पुरुष की कुण्डली को देखते समय उसके पति, पत्नी, पुत्र तथा अविवाहिता-पुत्री की जन्म-कुण्डलियों में स्थित ग्रहों के प्रभाव को देखना भी आवश्यक है। इसी प्रकार माता-पिता, भाई-बहन आदि संयुक्त-परिवार के सभी सदस्यों एवं निकटस्थ मित्रों की जन्म-कुण्डली के ग्रहों की स्थिति को देखकर, उन सबके ग्रहों के एक दूसरे के ऊपर पड़ने वाले प्रभाव के समन्वयस्वरूप जो निष्कर्ष निकाला जाता है, वही पूर्ण रूप से अन्तिम और यथार्थ होता है।

इस पुस्तक की सहायता से किसी भी स्त्री-पुरुष, बालक, वृद्ध, युवा--मनुष्य की जन्म-कुण्डली में स्थित ग्रहों के शुभाशुभ प्रभाव की जानकारी बहुत थोड़े ही समय में अत्यन्त सरलतापूर्वक प्राप्त की जा सकती है, अतः पाठकों को चाहिए कि वे इस पुस्तक से पूरा-पूरा लाभ उठाते रहें।

गलत जन्म-कुण्डली को सुधारना

किसी भी जन्म-कुण्डली का सम्पूर्ण फल उसकी शुद्ध लग्न के ऊपर आश्रित रहता है। यदि लग्न ठीक न हो, तो जन्म-कुण्डली का फल भी ठीक नहीं बैठ सकता।

बालक के जन्म के समय कौन-सी लग्न वर्तमान है, इसका ठीक-ठीक ज्ञान 'उस समय क्या बजा है,' इसकी सही जानकारी मिलने पर ही हो सकता है।

किसी भी जन्म-कुण्डली का निर्माण करने के लिए, जिस स्थान पर बालक उत्पन्न हुआ है, वहाँ की घड़ी के स्टैंण्डर्ड टाइम पर विचार न करके, उस स्थान पर होने वाले सूर्योदय के समय का विचार किया जाता है।

विभिन्न स्थानों पर सूर्योदय का समय अलग-अलग होता है, जबकि घड़ियों का स्टैण्डर्ड टाइम देश के सभी स्थानों के लिए एक-सा रखा जाता है। अस्तु, यदि स्टैण्डर्ड टाइम के आधार पर ही जन्म-कुण्डली का निर्माण कर दिया जाये, तो उसकी लग्न प्रायः गलत हो जाती है। लग्न के गलत हो जाने पर जन्म-कुण्डली स्थित सभी ग्रहों का फलादेश भी बदल जाता है, इसलिए सही फलादेश जानने के लिए जन्म-कुण्डली की लग्न का शुद्ध होना अत्यन्त आवश्यक है।

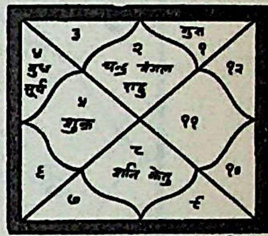
शुद्ध जन्म-कुण्डली किस प्रकार बनाई जाये, यह विषय कुण्डली निर्माण तथा गणित से सम्बन्धित है। जो महानुभाव इस विषय की जानकारी प्राप्त करना चाहते हों, उन्हें या तो किसी ज्योतिषी से सीखना चाहिए अथवा फिर हमारी लिखी 'वृहद् ज्योतिर्विज्ञान' शीर्षक पुस्तक का अध्ययन करना चाहिए।

यहाँ पर हम गलत लग्न वाली कुण्डली को सुधारने की एक सरल विधि का वर्णन करते हैं। इस विधि के अनुसार कोई भी व्यक्ति सहज में ही अपनी कुण्डली की लग्न का सुधार कर सकता है। लग्न को सुधारने की विधि इस प्रकार है—

जिस जातक की जन्म-कुण्डली पर विचार करना है, उसमें स्थित ग्रहों के शुभाशुभ फल को इस पुस्तक में पढ़कर जान लीजिए। फिर यह देखिये कि वह फलादेश उस जातक के जीवन पर ठीक-ठीक घटित होता है या नहीं। यदि फलादेश ठीक-ठीक घटित होता है, तो यह समझ लेना चाहिए कि जन्म-कुण्डली की लग्न ठीक है। उस स्थिति में जन्म-कुण्डली के ठीक होने के सम्बन्ध में संदेह करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

परन्तु यदि यह देखा जाये कि उस जन्म-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश जातक के जीवन पर ठीक-ठीक घटित नहीं होता, तो उस स्थिति में जन्म-कुण्डली की लग्न को अशुद्ध समझकर दो कुण्डलियाँ इस प्रकार की तैयार करनी चाहिएँ, जिसमें से एक में एक लग्न आगे की हो और दूसरी में एक लग्न पीछे की। फिर उनमें उन्हीं लग्नों के अनुसार ग्रहों को बैठाकर दोनों कुण्डलियों में स्थित ग्रहों के शुभाशुभ फल को जातक के जीवन पर घटित करके देखना चाहिए तथा उन दोनों में से जिस लग्न वाली कुण्डली का फलादेश ठीक-ठीक घटित होता हो, उसी लग्न वाली कुण्डली को ठीक समझ लेना चाहिए।

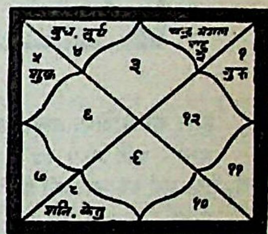
वृष लग्न वाली कुण्डली



९४

उदाहरण के लिए नीचे एक वृष लग्न वाली कुण्डली दी जा रही है। उसी के साथ वृष से एक आगे मिथुन लग्न वाली तथा एक लग्न पीछे मेष लग्न वाली दो कुण्डलियाँ भी दी जा रही हैं। इन तीनों कुण्डलियों में जिस कुण्डली के ग्रहों का फलादेश जातक के जीवन पर ठीक-ठीक घटित होगा, उसी को उस जातक की शुद्ध लग्न वाली कुण्डली माना जायेगा।

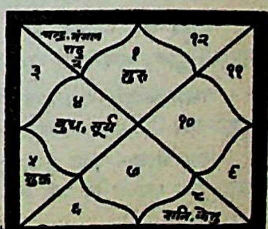
मिथुन लग्न वाली कुण्डली



९५

उपर्युक्त तीनों उदाहरण-कुण्डलियों द्वारा जिस प्रकार लग्न को बदलकर और उसी के अनुसार विभिन्न भावों में ग्रह-स्थापित करके शुद्ध लग्न ज्ञात करने अथवा जातक की जन्म-कुण्डली ठीक है या नहीं, इस बात का पता लगाने की जो विधि ऊपर बताई गई है, उसके अनुसार जिस जन्म-कुण्डली की लग्न शुद्धि के विषय में संदेह हो, उसे एक लग्न आगे-पीछे हटाकर ठीक कर लेना चाहिए।

मेष लग्न वाली कुण्डली

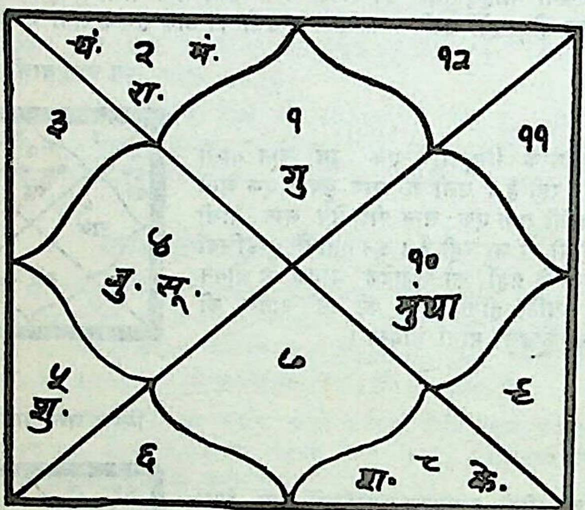


९६

वर्ष कुण्डली के फलादेश का ज्ञान

वर्ष कुण्डली स्थित ग्रहों के फलादेश की जानकारी भी जन्म-कुण्डली स्थित ग्रहों के फलादेश के समान ही इस पुस्तक की सहायता द्वारा प्राप्त की जा सकती है। किस भाव तथा राशि स्थित किस ग्रह का क्या फल होता है, इसका सम्पूर्ण विवरण अगले प्रकरण में विस्तारपूर्वक दिया गया है।

वर्ष कुण्डली में नवग्रहों के समान ही एक ग्रह 'मुंथा' विशेष रूप से माना गया है। जातक की वर्ष कुण्डली बनाते समय ज्योतिषी लोग वर्ष कुण्डली में 'मुंथा' किस भाव में बैठा है, इसे स्पष्ट लिख देते हैं। नीचे की उदाहरण-कुण्डली में नवग्रहों की स्थिति के साथ ही एक भाव में मुंथा की स्थिति को भी प्रदर्शित किया गया है।



६७

मुथा का संक्षिप्त फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए —

लग्न—यदि मुंथा वर्ष-कुण्डली के प्रथम भाव में स्थित हो, तो उस वर्ष जातक को शान्ति, सुख एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।

द्वितीय भाव—यदि मुंथा वर्ष-कुण्डली के द्वितीय भाव में स्थित हो, तो जातक को उस वर्ष व्यवसाय से लाभ, आकस्मिक लाभ एवं धन प्राप्ति के अन्य अवसर प्राप्त होते हैं।

तृतीय भाव—यदि मुंथा वर्ष-कुण्डली के तृतीय भाव में स्थित हो, तो उस वर्ष जातक के बल, पौरुष, पराक्रम तथा गौरव की वृद्धि होती है।

चतुर्थ भाव—यदि मुंथा वर्ष-कुण्डली के चतुर्थ भाव में स्थित हो, तो उस वर्ष जातक को दुःख, कलह एवं अशान्ति पूर्ण समय व्यतीत करना होता है।

पंचम भाव—यदि मुंथा वर्ष-कुण्डली के पंचम भाव में स्थित हो, तो उस वर्ष जातक को कुटुम्बियों से प्रेम, आरोग्य तथा धन लाभ के योग प्राप्त होते हैं।

षष्ठ भाव—यदि मुंथा वर्ष-कुण्डली के षष्ठ भाव में स्थित हो, तो उस वर्ष जातक को शत्रु, रोग एवं अग्नि भय का सामना करना पड़ता है।

सप्तम भाव—यदि मुंथा वर्ष-कुण्डली के सप्तम भाव में स्थित हो, तो उस वर्ष जातक की स्त्री को रोग तथा सन्तान को कष्टों का सामना करना पड़ता है।

अष्टम भाव—यदि मुंथा वर्ष-कुण्डली के अष्टम भाव में स्थित हो, तो उस वर्ष जातक को मृत्यु अथवा मृत्यु-तुल्य कष्ट की प्राप्ति होती है।

नवम भाव—यदि मुंथा वर्ष-कुण्डली के नवम भाव में स्थित हो, तो उस वर्ष जातक को धर्म तथा धन का लाभ होता है एवं भाग्य की वृद्धि होती है।

दशम भाव—यदि मुंथा वर्ष-कुण्डली के दशम भाव में स्थित हो, तो उस वर्ष जातक को राज्य द्वारा सम्मान, शासन में अधिकार एवं यश की प्राप्ति होती है।

एकादश भाव—यदि मुंथा वर्ष-कुण्डली के एकादश भाव में स्थित हो, तो उस वर्ष जातक को व्यापार में क्षति एवं अन्य प्रकार की हानियाँ उठानी पड़ती हैं।

द्वादश भाव—यदि मुंथा वर्ष-कुण्डली के द्वादश भाव में स्थित हो, तो उस वर्ष जातक को कष्ट, हानि तथा रोगों का सामना करना पड़ता है।

वर्षेश

वर्ष-कुण्डली में जिस प्रकार मुंथा को एक ग्रह के रूप में स्वीकार किया जाता है, उसी प्रकार किसी एक ग्रह को वर्ष का स्वामी—'वर्षेश' भी माना जाता है।

वर्षेश का संक्षिप्त प्रभाव नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

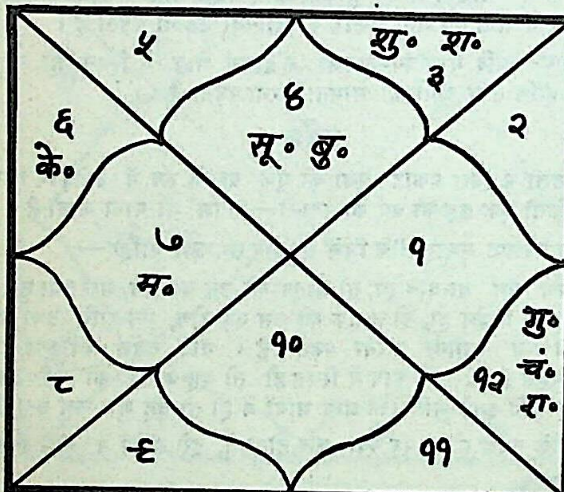
यदि वर्षेश पूर्ण बलवान हो, तो जातक को उस वर्ष धन, यश तथा सुख की प्राप्ति होती है। यदि वर्षेश निर्बल हो, तो जातक को उस वर्ष रोग, धन-हानि तथा अन्य अनेक प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है। यदि वर्षेश वर्ष-कुण्डली के छठे, आठवें अथवा बारहवें (६-८-१२) भाव में स्थित हो तो वह जातक को अनिष्टकारक फल प्रदान करता है। यदि इनके अतिरिक्त अन्य भावों में हो तो वह शुभ फल देता है।

किस ग्रह के वर्षेश होने पर क्या फल होता है, इसे संक्षेप में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

यदि वर्षेश सूर्य पूर्ण बली हो तो धन, प्रतिष्ठा, यश, स्वास्थ्य आदि का लाभ होता है। मध्यम बली हो, तो अल्प-सुख और अल्प-बली हो तो धन-हानि, रोग, शत्रु-भय आदि समझना चाहिए।

यदि वर्षेश चन्द्रमा पूर्ण बली हो तो स्त्री, पुत्र, वैभव, विलासिता का सुख मिलता है। यदि वर्षेश मंगल पूर्ण बली हो तो अधिकार, शासन, विजय कीर्ति, यश, पुत्र आदि की प्राप्ति होती है। यदि वर्षेश बुध पूर्ण बली हो तो विद्या, बुद्धि, कलाओं का लाभ होता है। यदि वर्षेश गुरु पूर्ण बली हो तो शत्रुनाश, सुबुद्धि एवं अन्य अनेक प्रकार के लाभ होते हैं। यदि वर्षेश शुक्र पूर्ण बली हो तो प्रसन्नता, सुख, विलासिता, व्यवसाय, सम्मान आदि का लाभ होता है। यदि वर्षेश शनि पूर्ण बली हो तो नवीन भूमि, भवन, खेत, स्वास्थ्य तथा उच्च पद आदि की प्राप्ति होती है।

वर्षेश के अल्प बली होने पर अल्प लाभ होता है तथा बलहीन होने पर सभी ग्रह अशुभ फल देते हैं। मुंथा और वर्षेश का विशेष ज्ञान किसी ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेना चाहिए।



९८

द्वितीय प्रकरण

बारह लग्नों की कुण्डलियों का फलादेश

दुष्ट ग्रहों की शान्ति के लिये दान

यदि किसी जातक के लिये कोई ग्रह अशुम हो, तो उसकी शांति एवं प्रसन्ता के लिये ज्योतिष शास्त्र में निम्नलिखित वस्तुओं को दान करना बताया गया है—

सूर्य के लिये—गेहूँ, ताँवा, माणिक्य, लाल चन्दन, गुड़, कमल, गाय और लाल रंग का कपड़ा।

चन्द्रमा के लिये—चाँदी, मोती, शंख, कपूर, गाय, चावलों से भरी बाँस की पिटारी, जलपूर्ण घट तथा श्वेत वस्त्र।

मंगल के लिये—स्वर्ण, लाल रंग का बैल, कनेर के फूल, ताँवा, मसूर, गेहूँ, मूँगा तथा लाल रंग का वस्त्र।

बुध के लिये—स्वर्ण, हाथी दाँत, पन्ना, मूँगा, घी, पीले फल, काँसी तथा नीले रंग का वस्त्र।

गुरु के लिये—घोड़ा, मिश्री, स्वर्ण, हल्दी, पीले रंग का अन्न तथा वस्त्र, पुखराज और नमक।

शुक्र के लिये—चित्र-विचित्र रंग के वस्त्र, घी, सफेद रंग का घोड़ा, स्वर्ण, चावल, गाय तथा सुगन्धित वस्तुयें।

शनि के लिये—तिल, तेल, उड़द, सोना, भैंस, काले रंग की गाय, काले रंग का वस्त्र, नीले रंग का कम्बल।

राहु के लिये—तलवार, घोड़ा, गोमेद, रत्न, स्वर्ण, तेल, तिल, कम्बल तथा काले रंग का वस्त्र।

केतु के लिये—कंबल, कस्तूरी, वैदूर्यमणि, तिल का तेल, सोना, शस्त्र तथा बकरा।

जन्म-कुण्डलियों का फलादेश देखने की विधि

'भृगु संहिता फलित प्रकाश' के इस द्वितीय खण्ड में बारह लग्नों की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का अलग-अलग वर्णन किया गया है।

फलादेश के साथ ही उस ग्रह की अन्य भावों पर पड़ने वाली दृष्टि, उसके स्व-क्षेत्री, मित्र-क्षेत्री, शत्रु-क्षेत्री, उच्च राशिगत, नीच राशिगत, केन्द्रगत, त्रिकोणगत अथवा मूल त्रिकोणगत होने की स्थिति आदि विषयों का यथास्थान उल्लेख कर दिया गया है।

प्रत्येक लग्न की कुण्डलियों को अलग-अलग अध्यायों में विभाजित कर दिया गया है, जिससे पाठकों को अपनी कुण्डली का फलादेश ज्ञात करने में सुविधा रहे।

किस लग्न की कुण्डली का फलादेश किन-किन संख्या वाली उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिये, इसे नीचे अनुसार समझ लें—

(१) 'मेष' लग्न वाली जन्म-कुण्डलियों का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०१ से २०८ तक में देखना चाहिये।

(२) 'वृष' लग्न वाली जन्म-कुण्डलियों का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २१२ से ३१९ तक में देखना चाहिये।

(३) 'मिथुन' लग्न वाली जन्म-कुण्डलियों का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३२३ से ४३० तक में देखना चाहिये।

(४) 'कर्क' लग्न वाली जन्म-कुण्डलियों का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४३४ से ५४१ तक में देखना चाहिये।

(५) 'सिंह' लग्न वाली जन्म-कुण्डलियों का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५४५ से ६५२ तक में देखना चाहिये।

(६) 'कन्या' लग्न वाली जन्म-कुण्डलियों का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६५६ से ७६३ तक मे देखना चाहिये।

(७) 'तुला' लग्न वाली जन्म-कुण्डलियों का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७६७ से ८७४ तक में देखना चाहिये।

(८) 'वृश्चिक' लग्न वाली जन्म-कुण्डलियों का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८७८ से ९८५ तक में देखना चाहिये।

(९) 'धनु' लग्न वाली जन्म-कुण्डलियों का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९८९ से १०९६ तक में देखना चाहिये।

(१०) 'मकर' लग्न वाली जन्म-कुण्डलियों का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०० से १२०७ तक में देखना चाहिये।

(११) 'कुम्भ' लग्न वाली जन्म-कुण्डलियों का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२११ से १३१८ तक में देखना चाहिये।

(१२) 'मीन' लग्न वाली जन्म-कुण्डलियों का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३२२ से १४२९ तक में देखना चाहिये।

दैनिक ग्रह गोचर के अनुसार विभिन्न ग्रह विभिन्न राशियों पर निरन्तर भ्रमण करते रहते हैं, अतः जन्म-कुण्डलीस्थ ग्रहों का फलादेश जानने के साथ ही ग्रहगोचर के अनुसार ग्रहों की तात्कालिक स्थिति के फलादेश को जानना भी आवश्यक है। यह बात पहले ही बताई जा चुकी है।

जिस समय जो ग्रह जिस राशि पर चल रहा हो, उसका ज्ञान पंचाङ्ग द्वारा अथवा किसी ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेना चाहिये, तदुपरान्त उस ग्रह का जातक के ऊपर क्या प्रभाव पड़ेगा, इसकी जानकारी उदाहरण-कुण्डलियों में प्रदर्शित विभिन्न राशियों पर स्थित ग्रहों के फलादेश के आधार पर प्राप्त कर लेनी चाहिये।

किस दिन, मास अथवा वर्ष में कौन-सा ग्रह किस राशि पर स्थित होने पर जातक के ऊपर अपना क्या प्रभाव डालता है और उसके फलादेश को किन-किन उदाहरण कुण्डलियों द्वारा ज्ञात किया जा सकता है—इसका उल्लेख प्रत्येक लग्न की उदाहरण-कुण्डलियों के प्रारम्भ में ही यथास्थान कर दिया गया है।

यह स्मरणीय है कि जन्म-कुण्डली स्थित ग्रहों का प्रभाव जातक के जीवन पर स्थायी रूप से पड़ता रहता है तथा दैनिक गोचर स्थित ग्रहों का प्रभाव अस्थायी रूप से पड़ता तथा हटता बना रहता है।

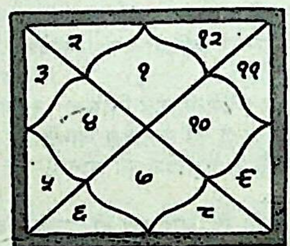
दैनिक ग्रह गोचर कुण्डली स्थित ग्रहों के अपने ऊपर पड़ने वाले फलादेश को किस प्रकार जाना जाये, इस विषय को प्रत्येक लग्न की कुण्डली का फलादेश आरम्भ करते समय स्पष्ट कर दिया गया है, अतः उसी के अनुसार दैनिक ग्रहों के प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिये।

अधिकांश जन्म-कुण्डलियों में एक ही भाव मे दो अथवा अधिक ग्रह बैठे रहते हैं। उन्हें 'ग्रहों की युति' कहा जाता है। विभिन्न ग्रहों की युति के प्रभाव का वर्णन इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में किया गया है, अतः उसे यथास्थान देख लेना चाहिए।

इस पुस्तक में वर्णित किसी भी विषय को समझने में कठिनाई हो, तो ग्रंथ-लेखक को जवाबी-पत्र लिखकर पूछताछ की जा सकती है। ज्योतिष सम्बन्धी अन्य विषयों की जानकारी तथा कार्यों के लिये भी ग्रंथ-लेखक से सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है। पता यह है—

पं० राजेश दीक्षित, कृष्णापुरी, मथुरा

मेष लग्न



मेष लग्न वाली कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग फलादेश

मेष लग्न का संक्षिप्त फलादेश

मेष लग्न में जन्म लेने वाला जातक दुबले-पतले शरीर वाला, अधिक बोलने वाला, उग्र स्वभाव वाला, रजोगुणी, अहंकारी, चंचल, बुद्धिमान, धर्मात्मा, अत्यन्त चतुर, अल्पसंततिवान्, अधिक पित्त वाला, सब प्रकार के भोजन करने वाला, उदार, कुल दीपक तथा स्त्रियों से अल्प स्नेह अथवा द्वेष रखने वाला (जातक यदि स्त्री हो, तो पुरुषों से कम स्नेह अथवा द्वेष रखने वाली) होता है। इसके शरीर का रंग कुछ लालिमा लिये होता है।

मेष लग्न में जन्म लेने वाले जातक को अपनी आयु के छठे, आठवें, पन्द्रहवें, इक्कीसवें, छत्तीसवें, चालीसवें, पैंतालीसवें, छप्पनवें तथा तिरसठवें वर्ष में शारीरिक कष्ट एवं धन-हानि का सामना करना पड़ता है।

मेष लग्न में जन्म लेने वाले जातक को अपनी आयु के सोलहवें, बीसवें, अट्ठाइसवें, चौतीसवें, इकतालीसवें, अड़तालीसवें तथा इक्यावनवें वर्ष में धन की प्राप्ति, वाहन-सुख, भाग्य-वृद्धि आदि विविध प्रकार के लाभ एवं आनन्द प्राप्त होते हैं।

मेष लग्न

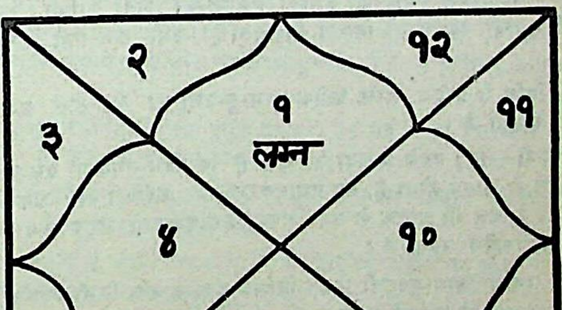
यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव मुख्यतः दो प्रकार से पड़ता है—

(१) ग्रहों की जन्मकालीन स्थिति के अनुसार।

(२) ग्रहों की दैनिक गोचर गति के अनुसार।

जातक की जन्मकालीन ग्रह स्थिति 'जन्म-कुण्डली' में दी गई होती है। उसमें जो ग्रह जिस भाव में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित प्रभाव निरन्तर स्थायी रूप से डालता रहता है।

दैनिक गोचर गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसकी जानकारी



१००

पंचाङ्ग द्वारा की जा सकती है। ग्रहों की दैनिक गोचर गति के सम्बन्ध में या तो किसी ज्योतिषी से पूछ लेना चाहिये अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिये। इस सम्बन्ध में पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।

दैनिक गोचर गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर अस्थायी रूप से अपना प्रभाव डालते हैं।

उदाहरण के लिये, यदि किसी जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य मेष राशि पर प्रथम भाव में बैठा है, तो उसका स्थायी प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या १०१ के अनुसार स्थायी रूप से पड़ता रहेगा, परन्तु यदि दैनिक ग्रह गोचर में कुण्डली देखते समय सूर्य वृष राशि के द्वितीय भाव में बैठा है, तो उस स्थिति में वह उदाहरण-कुण्डली संख्या २१३ के अनुसार उतनी अवधि तक जातक के जीवन पर अपना अस्थायी प्रभाव अवश्य डालेगा, जब तक कि वह वृष राशि से हटकर मिथुन राशि में नहीं चला जाता। मिथुन राशि में पहुँचकर वह मिथुन राशि के अनुरूप प्रभाव डालना आरम्भ कर देगा, अतः जिस जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य मेष राशि के प्रथम भाव में बैठा हो, उसे उदाहरण-कुण्डली संख्या १०१ में फलादेश देखने के पश्चात्, यदि उन दिनों सूर्य वृष राशि के द्वितीय भाव में बैठा हो, तो उदाहरण-कुण्डली संख्या २१३ का फलादेश भी देखना चाहिये तथा इन दोनों फलादेशों के समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को अपने वर्तमान जीवन पर प्रभावकारी समझना चाहिये। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विषय में जान लेना चाहिए।

मेष लग्न में जन्म लेने वाले जातकों की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदाहरण-कुण्डली संख्या १०१ से २०८ तक में किया गया है। पंचाङ्ग की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार मेष लग्न में जन्म लेने वाले जातकों को किन-किन उदाहरण-कुण्डलियों द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना चाहिए—इसका विस्तृत वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है, अतः उसके अनुसार ग्रहों की तात्कालिक स्थिति के सामयिक-प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। तदुपरान्त दोनों फलादेशों के समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिए।

इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक जन्म-कुण्डली का ठीक-ठीक फलादेश सहज में ही ज्ञात कर सकता है।

टिप्पणी—(१)-पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश से ऊपर अथवा ३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह सूर्य से अस्त होता है, वह भी जातक के ऊपर अपना प्रभाव या तो बहुत कम डालता है, या फिर पूर्णतः प्रभावहीन रहता है।

(२) स्थायी जन्म-कुण्डली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा अपनी कुण्डली में लिखवा लेने चाहिएँ, ताकि उनके अंशों के विषय में बार-बार जानकारी प्राप्त करने के झंझट से बचा जा सके। तात्कालिक गोचर के ग्रहों के अंशों की जानकारी पंचाङ्ग द्वारा अथवा किसी ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(३) स्थायी जन्म-कुण्डली अथवा तात्कालिक ग्रह-गति कुण्डली में यदि किसी भाव में एक से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन स्थानों पर उनकी दृष्टियाँ पड़ती हैं, तो जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता है। इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में 'ग्रहों की युति का प्रभाव' शीर्षक के अन्तर्गत विभिन्न ग्रहों की युति

के फलादेश का वर्णन किया गया है, अतः इस विषय की जानकारी वहाँ से प्राप्त कर लेनी चाहिये।

(४) विशोत्तरी दशा के सिद्धान्तानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० वर्ष की मानी जाती है। इस आयु-अवधि में जातक नवग्रहों की दशाओं का भोग कर लेता है। विभिन्न ग्रहों का दशा-काल भिन्न-भिन्न होता है, परन्तु अधिकांश व्यक्ति इतनी लम्बी आयु तक जीवित नहीं रह पाते, अतः वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं का भोग कर पाते हैं। जातक के जीवन के जिस काल में जिस ग्रह की दशा—जिसे 'महादशा' कहा जाता है—चल रही होती है, जन्मकालीन ग्रह स्थिति के अनुसार उसके जीवन-काल की उतनी अवधि उस ग्रह-विशेष के प्रभाव से विशेष रूप से प्रभावित रहती है। जातक का जन्म किस ग्रह की महादशा में हुआ है और उसके जीवन में किस अवधि से किस अवधि तक किस ग्रह की महादशा चलेगी और वह महादशा जातक के ऊपर अपना क्या विशेष प्रभाव डालेगी—इन सब बातों का उल्लेख भी तीसरे प्रकरण में किया गया है।

इस प्रकार (१) जन्म-कुण्डली, (२) तात्कालिक ग्रहगोचर कुण्डली एवं (३) ग्रहों की महादशा—इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है, अतः इन तीनों के समन्वयस्वरूप फलादेश का ठीक-ठीक निर्णय करके अपने भूत, वर्तमान तथा भविष्य-कालीन जीवन के विषय में सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिये।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में

'सूर्य' का फलादेश

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०१ से ११२ तक में देखना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित सूर्य का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'सूर्य' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०१ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०२ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस महीने में 'सूर्य' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०३ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०४ के अनुसार समझना चाहिये।

(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०५ के अनुसार समझना चाहिये।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०६ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'सूर्य' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०७ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०८ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'सूर्य' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०९ के अनुसार समझना चाहिये।

(१०) जिस महीने में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११० के अनुसार समझना चाहिये।

(११) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १११ के अनुसार समझना चाहिये।

(१२) जिस महीने में 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११२ के अनुसार समझना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में

'चन्द्रमा' का फलादेश

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११३ से १२४ तक में देखना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित चन्द्रमा का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

१— जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मेष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११३ के अनुसार समझना चाहिए।

२—जिस दिन 'चन्द्रमा' 'वृष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११४ के अनुसार समझना चाहिये।

३ – जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मिथुन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११५ के अनुसार समझना चाहिये।

४—जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६ के अनुसार समझना चाहिये।

५—जिस दिन 'चन्द्रमा' 'सिंह' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११७ के अनुसार समझना चाहिये।

६ – जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कन्या' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११८ के अनुसार समझना चाहिए।

७ —जिस दिन 'चन्द्रमा' 'तुला' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११९ के अनुसार समझना चाहिए।

८—जिस दिन 'चन्द्रमा' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२० के अनुसार समझना चाहिये।

९——जिस दिन 'चन्द्रमा' 'धनु' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२१ के अनुसार समझना चाहिये।

१०—जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मकर' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२२ के अनुसार समझना चाहिए।

११—जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२३ के अनुसार समझना चाहिए।

१२—जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मीन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२४ के अनुसार समझना चाहिये।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में

'मंगल' का फलादेश

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२५ से १३६ तक देखना चाहिये।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को दैनिक-ग्रह गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये—

१—जिस महीने में 'मंगल' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२५ के अनुसार समझना चाहिये।

२—जिस महीने में 'मंगल' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२६ के अनुसार समझना चाहिये।

३—जिस महीने में 'मंगल' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२७ के अनुसार समझना चाहिये।

४—जिस महीने में 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुण्डली संख्या १२८ के अनुसार समझना चाहिये।

५—जिस महीने में 'मंगल' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२९ के अनुसार समझना चाहिये।

६—जिस महीने में 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३० के अनुसार समझना चाहिये।

७—जिस महीने में 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३१ के अनुसार समझना चाहिये।

८—जिस महीने में 'मंगल' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३२ के अनुसार समझना चाहिये।

९—जिस महीने में 'मंगल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३३ के अनुसार समझना चाहिये।

१०—जिस महीने में 'मंगल' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३४ के अनुसार समझना चाहिये।

११—जिस महीने में 'मंगल' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३५ के अनुसार समझना चाहिये।

१२—जिस महीने में 'मंगल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६ के अनुसार समझना चाहिये।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में

'बुध' का फलादेश

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३७ से १४८ तक में देखना चाहिये।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'बुध' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३७ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस महीने में 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३८ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस महीने में 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३९ के अनुसार समझना चाहिये।

(४) जिस महीने में 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४० के अनुसार समझना चाहिये।

(५) जिस महीने में 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४१ के अनुसार समझना चाहिये।

(६) जिस महीने में 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४२ के अनुसार समझना चाहिये।

(७) जिस महीने में 'बुध' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४३ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस महीने में 'बुध' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४४ के अनुसार समझना चाहिये।

(९) जिस महीने में 'बुध' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४५ के अनुसार समझना चाहिये।

(१०) जिस महीने में 'बुध' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४६ के अनुसार समझना चाहिये।

(११) जिस महीने में 'बुध' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली १४७ के अनुसार समझना चाहिये।

(१२) जिस महीने में 'बुध' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४८ के अनुसार समझना चाहिये।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में

'गुरु' का फलादेश

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४९ से १६० तक में देखना चाहिये।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

(१) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४९ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १५० के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १५१ के अनुसार समझना चाहिये।

(४) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १५२ के अनुसार समझना चाहिये।

(५) जिस वर्ष में 'गुरु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १५३ के अनुसार समझना चाहिये।

(६) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १५४ के अनुसार समझना चाहिये।

(७) जिस वर्ष में 'गुरु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १५५ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १५६ के अनुसार समझना चहिये।

(९) जिस वर्ष में 'गुरु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १५७ के अनुसार समझना चाहिये।

(१०) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १५८ के अनुसार समझना चाहिये।

(११) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १५९ के अनुसार समझना चाहिये।

(१२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १६० के अनुसार समझना चाहिये।

मेष (1) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में

'शुक्र' का फलादेश

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १६१ से १७२ तक में देखना चाहिये।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये—

(१) जिस महीने में 'शुक्र' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १६१ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १६२ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस महीने में 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १६३ के अनुसार समझना चाहिये।

(४) जिस महीने में 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १६४ के अनुसार समझना चाहिये।

(५) जिस महीने में 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १६५ के अनुसार समझना चाहिये।

(६) जिस महीने में 'शुक्र' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १६६ के अनुसार समझना चाहिये।

(७) जिस महीने में 'शुक्र' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १६७ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस महीने में 'शुक्र' वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १६८ के अनुसार समझना चाहिये।

(९) जिस महीने में 'शुक्र' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १६९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'शुक्र' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १७० के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'शुक्र' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १७१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'शुक्र' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १७२ के अनुसार समझना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में

'शनि' का फलादेश

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १७३ से १८४ तक में देखना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए —

(१) जिस वर्ष में 'शनि' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १७३ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १७४ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'शनि' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १७५ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'शनि' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १७६ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'शनि' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १७७ के अनुसार समझना चहिए।

(६) जिस वर्ष में 'शनि' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १७८ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'शनि' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १७९ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १८० के अनुसार समझना चाहिये।

(९) जिस वर्ष में 'शनि' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १८१ के अनुसार समझना चाहिये।

(१०) जिस वर्ष में 'शनि' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १८२ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'शनि' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १८३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'शनि' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १८४ के अनुसार समझना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में

'राहु' का फलादेश

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १८५ से १९६ तक में देखना चाहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए।

१—जिस वर्ष में 'राहु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १८५ के अनुसार समझना चाहिए।

२—जिस वर्ष में 'राहु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १८६ के अनुसार समझना चाहिए।

३—जिस वर्ष में 'राहु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १८७ के अनुसार समझना चाहिए।

४—जिस वर्ष में 'राहु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १८८ के अनुसार समझना चाहिए।

५—जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १८९ के अनुसार समझना चाहिए।

६—जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १९० के अनुसार समझना चाहिए।

७—जिस वर्ष में 'राहु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १९१ के अनुसार समझना चाहिए।

८—जिस वर्ष में 'राहु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १९२ के अनुसार समझना चाहिए।

९—जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १९३ के अनुसार समझना चाहिए।

१०—जिस वर्ष में 'राहु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १९४ के अनुसार समझना चाहिए।

११—जिस वर्ष में 'राहु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १९५ के अनुसार समझना चाहिए।

१२—जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १९६ के अनुसार समझना चहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर कुण्डली के विभिन्न भावों में

'केतु' का फलादेश

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १९७ से २०८ तक में देखना चहिए।

मेष (१) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में सामने पृष्ठ पर लिखे अनुसार देखना चहिये—

(१) जिस वर्ष में 'केतु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १९७ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १९८ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'केतु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १९९ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'केतु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २०० के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'केतु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २०१ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'केतु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश-उदाहरण कुण्डली संख्या २०२ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'केतु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २०३ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २०४ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'केतु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २०५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'केतु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २०६ के अनुसार समझना चाहिए

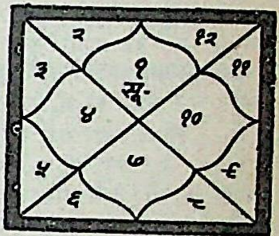
(११) जिस वर्ष में 'केतु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २०७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'केतु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २०८ के अनुसार समझना चाहिए।

'मेष' लग्न में 'सूर्य' का फल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेषलग्नः प्रथमभावः सूर्य



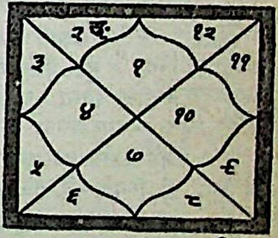
१०१

सूर्य शरीर स्थान में उच्च का होकर अपने मित्र मंगल की राशि पर बैठा हुआ है, अतः इसके प्रभाव से जातक स्वस्थ शरीर वाला, मध्यम कद वाला स्वाभिमानी, तेजस्वी तथा परम विद्वान् होगा। उसकी वाणी प्रभावशाली होगी, जिसे दूसरे लोग बड़े ध्यान और आदर के साथ सुना करेंगे। सन्तान पक्ष की प्रबलता, बुद्धिमत्ता, साहस, धैर्य, शक्ति, व्यवहार कुशलता, महत्वाकांक्षा आदि गुण जातक को सहज में प्राप्त होंगे।

परन्तु स्त्री, व्यवसाय, स्वास्थ्य तथा झगड़े-टंटे के घर सप्तम भाव पर सूर्य की नीच-दृष्टि पड़ रही है, इसलिए जातक को दाम्पत्य-सुख में कुछ कमी और क्लेश की प्राप्ति होगी। इसी प्रकार उसे अपनी जीविकोपार्जन के क्षेत्र में भी अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करते रहना होगा। ऐसे सूर्य वाले जातक की पत्नी (या पति) अधिक सुन्दर नहीं होती और वह उसकी मर्जी के मुताबिक भी कुछ कम ही चल पाती है।

जिस जातक का जन्म मेष लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेषलग्नः द्वितीयभावः सूर्य



१०२

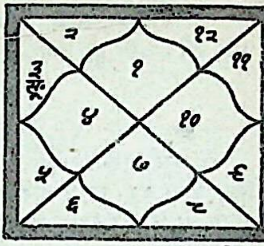
सूर्य धन स्थान में अपने शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा हुआ है, अतः इसके प्रभाव से जातक को आर्थिक मामलों में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। द्वितीय भाव कुटुम्ब, रत्न, बंधन आदि का भी है, अतः इस भाव में शत्रु-क्षेत्री सूर्य की स्थिति के कारण जातक के सन्तान पक्ष में बाधायें आयेंगी तथा विद्याध्ययन में भी कमी बनी रहेगी।

द्वितीय भावस्थ वृष राशि का सूर्य अपनी पूर्ण दृष्टि से आयु, मृत्यु तथा पुरातत्त्व के अष्टम भाव को अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये जातक दीर्घायु होगा तथा उसे अपने बुद्धि-बल से पुरातत्त्व (गढ़ा हुआ धन अथवा आकस्मिक अर्थ-प्राप्ति) का लाभ भी होगा।

ऐसे जातक के ऊपर अपने कुटुम्ब का प्रभाव भी कुछ-न-कुछ बना रहेगा। धनोपार्जन के लिये बुद्धि-बल का विशेष प्रयोग करने पर भी उसका अधिक संचय नहीं हो पायेगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेषलग्नः तृतीयभावः सूर्य



१०३

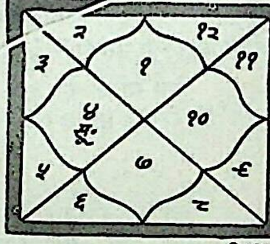
सूर्य तीसरे पराक्रम के स्थान में अपने मित्र बुध की राशि पर बैठा हुआ है, अतः इसके प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि का बल विशेष रूप से प्राप्त होगा तथा पराक्रम की वृद्धि होगी।

सूर्य सातवीं दृष्टि से भाग्य तथा धर्म स्थान को भी देख रहा है, जो उसके मित्र गुरु का है, अतः जातक भाग्यशाली, धर्मात्मा, दानी तथा तीर्थ यात्रा करने वाला भी होगा। वह अपनी बुद्धि तथा पराक्रम के योग्य से भाग्य की वृद्धि करेगा, साथ ही ईश्वराराधन, धर्म-पालन आदि शुभ कार्यों को भी करता रहेगा।

तीसरे स्थान पर गरम स्वभाव वाला ग्रह बैठा हो, तो वह अत्यधिक शक्तिशाली हो जाता है, अतः यह सूर्य जातक को अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्ति बनायेगा तथा उसकी वाणी में भी तेजी लायेगा। तीसरा स्थान भाई का भी होता है, अतः जातक को अपने भाइयों एवं सन्तान से सुख भी प्राप्त होगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली में 'चतुर्थ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेषलग्नः चतुर्थभावः सूर्य



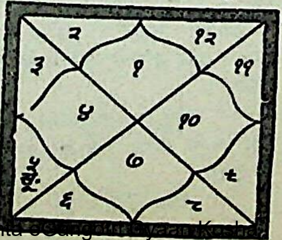
१०४

सूर्य चौथे माता, सुख, सम्पत्ति, भूमि, गृह आदि के भाव में अपने मित्र चन्द्रमा की राशि में बैठा हुआ है, अतः इसके प्रभाव से जातक भूमि, मकान तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करेगा। उसे विद्या का भी विशेष लाभ होगा। सूर्य के प्रभाव से जातक के मस्तिष्क में कुछ तेजी रहेगी, परन्तु चन्द्रमा की राशि होने के कारण उस पर शान्ति का अधिकार बना रहेगा।

सूर्य अपनी सातवीं, पूर्ण दृष्टि से शत्रु शनि की राशि वाले दशम भाव से देख रहा है, इसलिए जातक को अपने पिता से कुछ वैमनस्य एवं राज्य के सम्बन्धों में कुछ उदासीनता एवं विफलता का अनुभव होता रहेगा, परन्तु सूर्य की ऐसी स्थिति वाला जातक कुल मिलाकर सर्वत्र थोड़ा बहुत सम्मान अवश्य प्राप्त करेगा तथा प्रभावशाली भी बना रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—.

मेषलग्नः पंचमभावः सूर्य



१०५

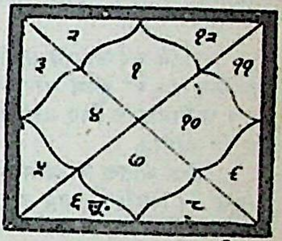
सूर्य पाँचवें विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भाव में स्वक्षेत्री होकर बैठा है, अतः इसके प्रभाव से जातक अत्यन्त विद्वान्, बुद्धिमान, प्रभावशाली तथा वाणी का धनी होगा एवं अपने सन्तान-पक्ष से शक्ति प्राप्त करेगा। इस जातक को एक अत्यन्त प्रतापी पुत्र की प्राप्ति होगी।

पंचम स्थान का सूर्य अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि वाले ग्यारहवें घर को सातवीं शत्रु दृष्टि से देख रहा है, अतः जातक की आमदनी के मार्गों में रुकावटें पैदा करेंगी और उसे धनोपार्जन के लिये विशेष प्रयत्न करते रहना होगा।

ऐसी ग्रह स्थिति वाला व्यक्ति अपने लाभ के लिए कटु शब्दों का प्रयोग भी करता है और उसके कारण सफलता प्राप्त करता है। वह बुद्धि में अन्य लोगों को अपने सामने तुच्छ गिनता है, अतः कुछ लोग उसके परोक्ष-आलोचक भी बन जाते हैं।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: षष्ठभाव: सूर्य



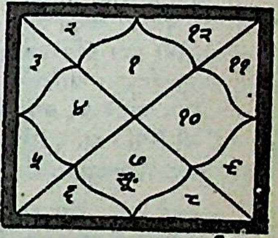
१०६

छठे शत्रु रोग तथा झगड़े के स्थान में अपने सामान्य मित्र बुध की राशि पर बैठा हुआ सूर्य जातक के लिये विद्याध्ययन के समय कठिनाइयाँ उत्पन्न करता है। अतः जातक को विद्याध्ययन में कुछ कठिनाइयाँ तो पड़ेंगी, परन्तु छठे स्थान पर बैठा हुआ उग्र स्वभावी ग्रह अत्यन्त शक्तिशाली माना गया है, अतः जातक विद्वान् भी होगा और बुद्धिमान भी होगा, साथ ही शत्रु पक्ष पर निरन्तर विजय भी प्राप्त करता रहेगा।

सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से अपने मित्र गुरु की मीन राशि वाले व्यय-स्थान को भी देख रहा है, अतः जातक बहुत अधिक खर्च करने वाला होगा तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ एवं सफलता भी खूब प्राप्त करेगा। उसे स्वदेश की अपेक्षा बाहरी स्थानों में अधिक सम्मान प्राप्त होगा। इस सूर्य के प्रभाव से सन्तान पक्ष के प्रति मन में कुछ चिन्ताएँ एवं परेशानियाँ अवश्य बनी रहेंगी।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेष लग्न: सप्तमभाव: सूर्य



१०७

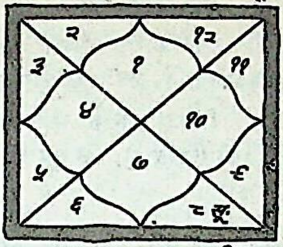
सातवें स्त्री, स्वास्थ्य तथा व्यवसाय के स्थान में सूर्य तुला राशि पर नीच का होकर अपने शत्रु की राशि में बैठा हुआ है, अतः इसके प्रभाव से जातक का स्वास्थ्य कुछ दुर्बल रहेगा तथा स्त्री के सम्बन्ध में भी कुछ-न-कुछ परेशानी बनी रहेगी।

इस घर से सूर्य अपनी सातवीं उच्च दृष्टि द्वारा मित्र मंगल की मेष राशि को देख रहा है, अतः जातक का शरीर कुछ लम्बे कद का होगा। उसके हृदय में स्वाभिमान की मात्रा अधिक रहेगी तथा युक्तिबल एवं बुद्धिबल द्वारा वह सम्मान तथा प्रभाव भी प्राप्त करता रहेगा।

सूर्य की इस स्थिति के कारण सन्तान पक्ष कमजोर बना रहेगा तथा स्त्री का सुख भी अच्छा प्राप्त नहीं होगा। जीवन-यापन के मार्ग में निरन्तर कठिनाइयाँ आती रहेंगी तथा विद्या-क्षेत्र भी कुछ कमजोर बना रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: अष्टमभाव: सूर्य



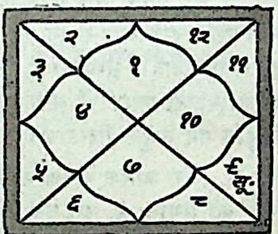
१०८

आठवें मृत्यु, आयु, व्याधि, चिन्ता तथा पुरातत्त्व के घर में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर बैठा हुआ सूर्य जातक को विद्याध्ययन में कठिनाई तथा सन्तान-पक्ष की ओर से कष्ट का अनुभव करने वाला माना जाता है। इसके प्रभाव से आयु में वृद्धि होगी तथा पुरातत्त्व के सम्बन्ध में भी लाभ प्राप्त होगा, परन्तु मस्तिष्क में तथा दैनिक जीवन में कुछ-न-कुछ परेशानियाँ उठ खड़ी होती रहेंगी।

आठवें घर का सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से धन तथा कुटुम्ब के द्वितीय स्थान को अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, अतः इसके प्रभाव स्वरूप धन-संग्रह तथा कुटुम्ब के निर्वाह के लिए अत्यधिक प्रयत्न करना पड़ेगा, फिर भी कुछ-न-कुछ असन्तोष बना ही रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: नवमभाव: सूर्य



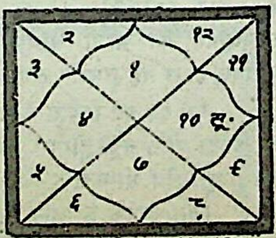
१०९

नवें भाग्य धर्म तथा विद्या के घर त्रिकोण स्थान में सूर्य अपने मित्र गुरु की धनुराशि पर बैठा हुआ है। इसके प्रभाव से जातक को श्रेष्ठ बुद्धि, विद्या तथा ज्ञान की प्राप्ति होगी। ऐसा जातक धर्मात्मा, धर्मशास्त्रों का ज्ञाता, ईश्वर भक्त, भाग्यशाली, यशस्वी, न्यायी, दयालु, तीर्थ यात्री तथा दानी भी होगा। भाग्य तथा उन्नति के क्षेत्र में उसे निरन्तर सफलताएँ मिलती रहेंगी।

नवीं धनुराशि में बैठा हुआ सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से तृतीय पराक्रम स्थान को अपने मित्र बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिए जातक पराक्रमी, भाई-बहिनों वाला पुरुषार्थी तथा श्रेष्ठ योग्यता वाला भी होगा। कुल मिलाकर सूर्य की इस स्थिति को बहुत अच्छा समझना चाहिए।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: दशमभाव: सूर्य



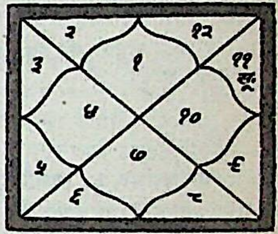
दसवें राज्य, पिता, व्यवसाय तथा मान-प्रतिष्ठा वाले केन्द्र स्थान में अपने शत्रु 'शनि' की मकर राशि पर बैठे हुए सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने पिता, व्यवसाय, नौकरी एवं मान-प्रतिष्ठा के क्षेत्र में कुछ त्रुटियों का सामना करना पड़ता है परन्तु ऐसा जातक विदेशी भाषा तथा राजभाषा का अच्छा जानकार होता है।

११०

ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक क्रोधी, अहंकारी, तथा असहिष्णु स्वभाव का होता है। मकर राशिस्थ सूर्य अपनी सातवीं पूर्ण दृष्टि से माता सुख तथा भूमि के चौथे स्थान को अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देखता है, अतः जातक को भूमि, मकान तथा माता का सुख अच्छा प्राप्त होगा और उसे अपने बुद्धिबल द्वारा राजकीय क्षेत्र तथा व्यावसायिक क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त होती रहेगी।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः एकादशभावः सूर्य



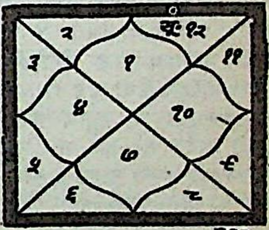
१११

ग्यारहवें लाभ, ऐश्वर्य, सम्पत्ति तथा आमदनी के स्थान में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर बैठे हुए सूर्य के प्रभाव से जातक को अर्थोपार्जन के लिए अत्यन्त कठिन परिश्रम करना आवश्यक बना रहेगा। ग्यारहवें स्थान पर बैठा हुआ गरम ग्रह अत्यन्त शक्तिशाली माना गया है, इस कारण जातक को लाभ तथा आमदनी तो होगी, परन्तु उसे शरीरिक श्रम तथा बुद्धि का उपयोग भी बहुत करना पड़ेगा।

इस भाव में स्थित सूर्य अपनी सातवीं पूर्ण दृष्टि से विद्या तथा सन्तान के पंचम-भाव को अपनी ही राशि में देख रहा है, अतः जातक विद्या, बुद्धि तथा सन्तान की विशेष शक्ति प्राप्त करेगा। वह अपने स्वार्थ-साधन के लिए कटु-वचनों का प्रयोग भी करेगा और उससे लाभ भी उठायेगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेषः लग्नः द्वादशभावः सूर्य



११२

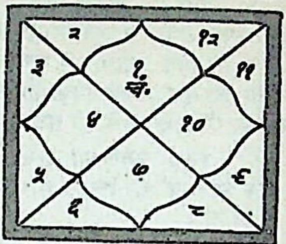
बारहवें व्यय, हानि, दण्ड तथा रोग के भाव में अपने मित्र बृहस्पति की मीन राशि पर बैठा हुआ सूर्य जातक का बाहरी स्थानों से अच्छा सम्बन्ध करायेगा, परन्तु खर्च की अधिकता बनी रहेगी। ऐसी स्थिति में जातक को अपना खर्च चलाने के लिए बुद्धिबल का अधिक प्रयोग करना पड़ेगा। सन्तान-पक्ष के लिए चिन्ता तथा हानि योग भी उपस्थित होंगे।

इस भाव में स्थित सूर्य अपनी सातवीं पूर्ण दृष्टि से छठे घर में अपने मित्र बुध की कन्या राशि में देख रहा है, अतः जातक को शत्रु-पक्ष पर विजय एवं निर्भयता प्राप्त होगी। परन्तु उसे मानसिक चिन्ताओं का शिकार बना रहना पड़ेगा तथा विद्या लाभ के पक्ष में भी कमजोरी रहेगी।

'मेष' लग्न में 'चन्द्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम' भाव में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे चन्द्रमा का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: प्रथमभाव: चन्द्र



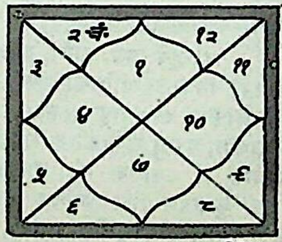
११३

पहले शरीर, जाति, विवेक, आकृति, मस्तिष्क के घर तथा मुख्य केन्द्र और लग्न स्थान में चन्द्रमा अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर बैठा हो, तो उसके प्रभाव से जातक को घरेलू सुख तथा मानसिक शान्ति की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक बुद्धिमान, विवेकी, सुन्दर शरीर वाला एवं भूमि-मकान तथा घरेलू सुख-सम्पत्ति को प्राप्त करने वाला होता है। इस भाव में स्थित चन्द्रमा सातवें स्त्री, व्यवसाय, विवाह के स्थान को अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर भी दृष्टि डालता है, अतः जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के सम्बन्ध में भी सफलता एवं प्रसन्नता प्राप्त होती है।

चन्द्रमा मन का स्वामी है। वह जब केन्द्र स्थान में बैठता है, तो जातक के मन को प्रसन्नता प्रदान करता रहता है। कुल मिलाकर ऐसी चन्द्र स्थिति वाला जातक सुख, शान्ति, दाम्पत्य प्रेम, व्यावसायिक उन्नति एवं शारीरिक स्वास्थ्य को प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे चन्द्रमा का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: द्वितीयभाव: चन्द्र



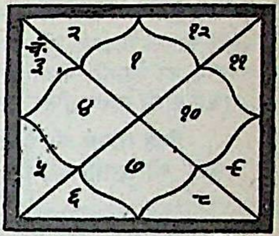
११४

दूसरे धन तथा कुटुम्ब स्थान में वृष का चन्द्रमा उच्च का होकर अपने सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर बैठा हो, तो उसके प्रभाव से जातक बहुत धनी एवं जमीन-जायदाद वाला होता है। धन तथा कुटुम्ब के स्थान में मित्र क्षेत्री शुभ ग्रह चन्द्रमा की उपस्थिति के कारण जातक के कुटुम्ब की वृद्धि होती है, परन्तु दूसरा स्थान धन का भी माना गया है, इसलिए जातक को अपनी माता के सम्बन्ध में किसी-न-किसी कमी का अनुभव भी होता रहेगा।

इस स्थान में बैठा हुआ चन्द्रमा अपनी सातवीं नीच दृष्टि से अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि वाले आयु, चिन्ता, व्याधि, संकट तथा पुरातत्त्व के आठवें स्थान को भी देखता है। चन्द्रमा की इस दृष्टि के प्रभाव से जातक को आयु, स्वास्थ्य तथा पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ न्यूनता एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा तथा दैनिक जीवनक्रम में भी कुछ-न-कुछ अशान्ति बनी रहेगी।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे चन्द्रमा का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: तृतीयभाव; चन्द्र



११५

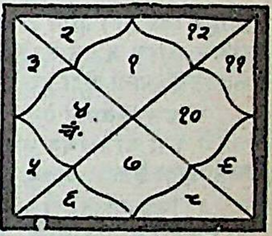
तीसरे भाई तथा पराक्रम के स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर चन्द्रमा बैठा हुआ हो, तो उसके प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है ।

चन्द्रमा की ऐसी स्थिति के कारण जातक की मानसिक-शक्ति प्रबल होती है, वह भूमि, मकान आदि का सुख प्राप्त करता है तथा आनन्दमय जीवन बिताता है ।

इस स्थान से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से अपने मित्र गुरु की धनुराशि वाले भाग्य, धर्म तथा विद्या के नवें स्थान को भी देख रहा है, इसके प्रभाव से जातक का भाग्यवान, धर्मात्मा, विद्वान्, दानी तथा उदार-स्वभाव वाला होना भी सुनिश्चित है । कुल मिलाकर ऐसी चन्द्र स्थिति वाला जातक सौभाग्यशाली, विद्वान्, धनी, धर्मात्मा, मनोबल-सम्पन्न तथा यशस्वी होगा और उसे जीवन में सफलताएँ प्राप्त होती रहेंगी ।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे चन्द्रमा का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: चतुर्थभाव: चन्द्र



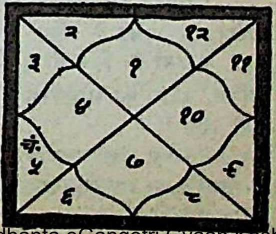
११६

चौथे माता, सुख, भूमि तथा सम्पत्ति के घर में चन्द्रमा अपनी राशि कर्क पर स्वक्षेत्री होकर बैठा है, इसके प्रभाव से जातक को अपनी माता, भूमि, मकान तथा सम्पत्ति के विषय में पूर्ण सुख प्राप्त होगा । मनोरंजन के विविध साधन भी निरन्तर उपलब्ध होते रहेंगे ।

चतुर्थ भाव में बैठा हुआ चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से, शनि की मकर राशि वाले दसवें घर को देख रहा है । दसवाँ घर पिता, राज्य, व्यवसाय तथा मान-प्रतिष्ठा का है, अत: चन्द्रमा की इस दृष्टि के प्रभाव से जातक का अपने पिता से कुछ वैमनस्य बना रहेगा तथा राजकीय कार्य एवं सम्मान के क्षेत्र में भी कुछ त्रुटि बनी रहेगी । कुल मिलाकर ऐसी चन्द्र स्थिति वाला जातक पिता से कुछ वैमनस्य रखन वाला, माता से सुख प्राप्त करने वाला तथा धन, सम्पत्ति, कुटुम्ब-सुख एवं आनन्दोपभोग को प्राप्त करने वाला होता है ।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे चन्द्रमा का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: पंचमभाव: चन्द्र



पांचवें विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के घर में चन्द्रमा अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित हो, तो उसके प्रभाव से जातक बहुत बड़ा विद्वान्, बुद्धिमान एव सन्ततिवान् होता है । उसे भूमि, माता, सम्पत्ति, मकान तथा मनोरजन आदि का सुख भी प्राप्त होता है ।

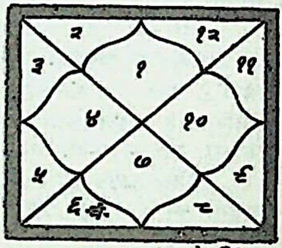
उक्त स्थान में स्थित चन्द्रमा की सातवीं, दृष्टि, ग्यारहवें लाभ तथा आय के भवन में शनि की कुम्भ राशि पर पड़ रही है, अत: इस कारण जातक को अपनी व्यय के साधनों में कुछ कठिनाइयों का सामना करना

११७

पड़ेगा । परन्तु अपने शीतल स्वभाव एवं शान्त बुद्धि के कारण वह उन कठिनाइयों से हंसते हुए संघर्ष करके अन्त में सफलता प्राप्त करता रहेगा । कुल मिलाकर ऐसी चन्द्र स्थिति वाला जातक विद्वान्, बुद्धिमान, धन-सम्पत्तिवान्, गंभीर, शान्त, सन्तोषी, अत्यन्त चतुर, भू-सम्पत्ति का स्वामी, माता के सुख से युक्त परन्तु व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों का अनुभव करने वाला होता है ।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे चन्द्रमा का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: षष्ठभाव: चन्द्र



११८

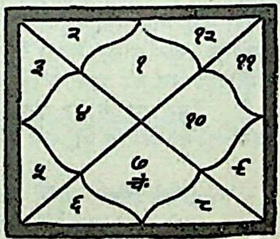
छठे शत्रु, रोग एवं पीड़ा के घर में चन्द्रमा अपने मित्र बुध की राशि कन्या पर बैठा हो, तो उसके प्रभाव से जातक के घरेलू वातावरण में अनेक प्रकार की कमियाँ तथा अशान्तियाँ बनी रहती हैं । परन्तु अपने शत्रु-पक्ष में वह शान्ति का अनुभव करता है तथा बड़े-बड़े संघर्षों, कठिनाइयों, विपत्तियों एवं संकटों पर अपने धैर्य एवं विनम्रता के बल पर विजय प्राप्त कर लेता है ।

षष्ठ भाव स्थित चन्द्रमा की सातवीं दृष्टि बारहवें व्यय तथा हानि के भाव पर पड़ती है । बारहवें स्थान में मित्र गुरु की मीन राशि होने के कारण जातक अच्छे कार्यों में अत्यधिक व्यय करता है तथा अपने जन्म-स्थान से दूर के बाहरी स्थानों द्वारा सुख एवं लाभ भी प्राप्त करता है ।

कुल मिलाकर ऐसी चन्द्र स्थिति वाला जातक धैर्यवान्, विनम्र, माता एवं घरेलू पक्ष में कमी का अनुभव करने वाला तथा अनेक प्रकार के झंझटों तथा खर्चों में फंसा रहने वाला होता है ।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे चन्द्रमा का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेष लग्न: सप्तमभाव: चन्द्र



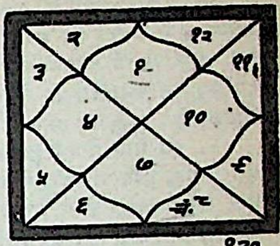
११९

सातवें स्त्री, व्यवसाय, विवाह आदि के भवन में चन्द्रमा अपने सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित हो, तो उसके प्रभाव से जातक को सौन्दर्य, भोग-विलास तथा स्त्री-सुख की प्राप्ति होती है । साथ ही भूमि, सम्पत्ति एवं व्यवसाय के मार्ग में भी सफलता प्राप्त होती है ।

सप्तम भाव स्थित चन्द्रमा की सातवीं दृष्टि शरीर तथा विवेक के प्रथम भाव लग्न में पड़ती है । वहाँ चन्द्रमा के मित्र मंगल की मेष राशि होने के कारण, जातक को शारीरिक सौन्दर्य, सुख, मनोरंजन एवं यश-सम्मान आदि निरन्तर प्राप्त होते रहेंगे ।

कुल मिलाकर ऐसी चन्द्र स्थिति वाला जातक सौन्दर्यवान्, स्त्रीवान्, विलासी, भू-सम्पत्ति का स्वामी, व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने वाला तथा यश-सम्मान का अधिकारी होता है ।

मेष लग्न: अष्टमभाव: चन्द्र



१२०

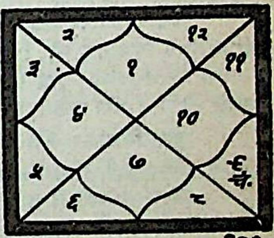
जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे चन्द्रमा का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें मृत्यु, व्याधि, संकट, चिन्ता, तथा पुरातत्त्व के घर में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में बैठे हुए नीच 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के माता सम्बन्धी सुख में कमी आती है तथा भूमि, पुरातत्त्व एवं अचल-सम्पत्ति को भी हानि पहुँचती है।

ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को आयु के सम्बन्ध में भी संकटों का सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार उसके दैनिक जीवन में भी विभिन्न प्रकार की कठिनाइयाँ उपस्थित होती रहती हैं। घरेलू सुख-शान्ति में भी कमी बनी रहती है । पुरातत्त्व के सम्बन्ध में हानि उठानी पड़ती है तथा अपनी जन्म-भूमि से बाहर जाकर भी रहना पड़ता है। परन्तु इस भाव में बैठे हुये चन्द्रमा की सातवीं उच्च दृष्टि धन, कुटुम्ब तथा राज्य के द्वितीय भाव में पड़ती है, इस कारण जातक को सुख तथा धन सम्बन्धी योग निरन्तर प्राप्त होते रहेंगे और वह सुख तथा धन उपार्जित करने के लिए विशेष मनोयोग के साथ निरन्तर प्रयत्नशील भी बना रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेष लग्न: नवमभाव: चन्द्र



१२१

नवें भाग्य, धर्म, विद्या, तीर्थ-यात्रा आदि के त्रिकोण स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर बैठा हुआ चन्द्रमा अपने प्रभाव से जातक को प्रबल बनाता है और उसे माता, भूमि तथा सम्पत्ति का सुख प्रदान करता है।

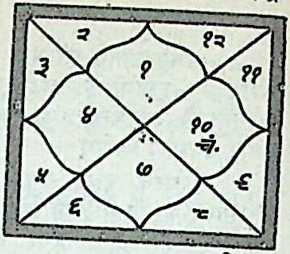
चन्द्रमा चूँकि मन का स्वामी है, और नवें धर्म स्थान में बैठा है, इसलिए इसके प्रभाव से जातक का मन धर्म-कर्म की ओर विशेष आकर्षित बना रहेगा और वह दान-पुण्य, तीर्थ-यात्रा आदि सत्कार्य भी करता रहेगा।

नवम स्थान में बैठा हुआ चन्द्रमा अपनी सातवीं पूर्ण दृष्टि से अपने मित्र बुध की मिथुन राशि वाले पराक्रम एवं भाई के स्थान को भी देखता है । इस कारण जातक को भाई-बहिनों का सुख भी प्राप्त होगा और उसके पराक्रम में भी वृद्धि होती रहेगी।

कुल मिलाकर ऐसी चन्द्र स्थिति वाला जातक सौभाग्यवान्, सुखी, धन सम्पत्ति, भाई-बहिनों से युक्त धार्मिक विचारों का होता है

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेष लग्नः दशमभावः चन्द्र



१२२

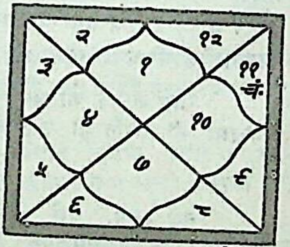
दसवें राज्य, व्यवसाय, पिता तथा मान-प्रतिष्ठा के केन्द्र स्थान में शनि की मकर राशि पर बैठे हुए चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का अपने पिता से वैमनस्य बना रहता है। उसे राज्य में सम्मान की प्राप्ति होती है तथा अपने परिश्रम एवं मनोयोग के द्वारा व्यवसाय में सफलता भी मिलती है।

इस भाव में बैठे हुए चन्द्रमा की सातवीं पूर्ण दृष्टि माता सुख, भूमि, सम्पत्ति के चौथे घर में अपनी स्वयं की कर्क राशि पर पड़ती है, इसके प्रभाव से जातक को माता की ओर से श्रेष्ठ सुख एवं शान्ति की प्राप्ति होती है तथा भूमि, सम्पत्ति आदि का भी लाभ होता है।

कुल मिलाकर ऐसी चन्द्र स्थिति वाले जातक का अपने पिता से वैमनस्य, परन्तु माता से स्नेह बना रहता है और वह धन-सम्पत्ति तथा मकान के सुख को अपने परिश्रम एवं मनोबल के योग से प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेष लग्नः एकादशभावः चन्द्र



१२३

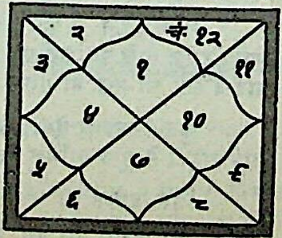
ग्यारहवें लाभ, आय, सम्पत्ति तथा आयु के घर में शनि की कुम्भ राशि पर बैठा हुआ चन्द्रमा अपने प्रभाव से जातक को सुखपूर्वक आय के साधनों में कुछ असन्तोष एवं कठिनाइयाँ देने वाला होता है। फिर भी, ऐसी चन्द्र स्थिति वाला जातक अपने मनोबल के प्रभाव से आय के साधनों में वृद्धि करता है तथा सुखी-जीवन बिताता है।

इस स्थान पर बैठे हुए चन्द्रमा का सातवीं पूर्ण दृष्टि अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि में पड़ती है। यह पाँचवाँ स्थान विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का है, अतः इसके प्रभाव से जातक का सन्तान-पक्ष प्रबल होता है और उसे विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त होती है।

कुल मिलाकर ऐसी चन्द्र स्थिति वाला जातक बुद्धिमान्, विद्वान्, सन्ततिवान् तथा कुछ कठिनाइयों के साथ अपनी आय एवं सुख के साधनों में वृद्धि करने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेष लग्नः द्वादशभावः चन्द्र



बारहवें व्यय, हानि तथा रोग के घर में अपने सामान्य मित्र गुरु की राशि पर बैठे हुए चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च शुभ कामों तथा ठाठ-बाट में होता रहेगा, परन्तु उसे किसी प्रकार का दुःख नहीं होगा। बारहवाँ घर बाहरी स्थानों से सम्बन्ध का द्योतक भी है, अतः इस भवन में चन्द्रमा की स्थिति से जातक का बाहरी स्थानों से श्रेष्ठ सम्बन्ध बना रहेगा।

१२४

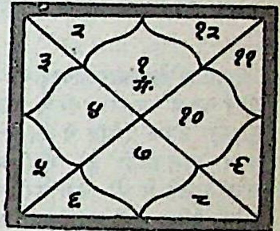
इस भवन में स्थित चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र दृष्टि से बुध की कन्या राशि वाले शत्रु, चिन्ता तथा पीड़ा के घर को देखता है, इस कारण जातक शत्रु-पक्ष के प्रति शान्तिपूर्वक रवैया अपनायेगा और हर प्रकार के झगड़े-झंझटों में बुद्धिमत्ता एवं संतोष से काम लेगा।

कुल मिलाकर ऐसी चन्द्र स्थिति वाला जातक सुखी तथा संतुष्ट जीवन व्यतीत करता है। वह शत्रु-पक्ष पर अपनी शालीनता एवं संतोषी वृत्ति के द्वारा विजय प्राप्त करता है, परन्तु उसके माता के सुख में थोड़ी कमी बनी रहती है।

'मेष' लग्न में 'मङ्गल' का फल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'मङ्गल' की स्थिति हो, उसे 'मङ्गल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेष लग्नः प्रथमभावः मङ्गल



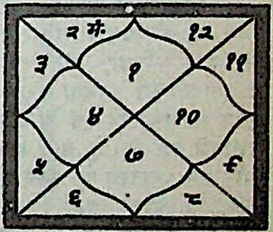
१२५

पहले शरीर स्थान में अपनी ही राशि पर बैठे हुए मङ्गल के प्रभाव से जातक का शरीर पुष्ट होता है तथा उसमें आत्म-बल प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, परन्तु मङ्गल के अष्टमेश होने के कारण उसे कभी-कभी रोगों का शिकार भी बनना पड़ता है।

मंगल की ऐसी स्थिति होने पर जातक को माता के सुख, घर, मकान आदि के सम्बन्ध तथा व्यवसाय एवं पत्नी के मामले में कुछ परेशानियां उठानी पड़ती हैं। अष्टम आयु भवन को पूर्ण दृष्टि से देखने के कारण जातक की आयु लम्बी होती है तथा उसे पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'मङ्गल' की स्थिति हो, उसे 'मङ्गल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः द्वितीय भावः मङ्गल

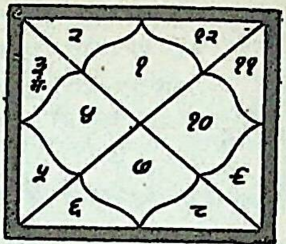


१२६

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के घर में मङ्गल शुक्र की राशि पर बैठा हो, तो उसके प्रभाव से जातक को धन-संचय में कमी तथा शरीर-स्थान में कष्टों का सामना करना पड़ता है। मंगल चतुर्थ मित्र-दृष्टि से विद्या, बुद्धि के पंचम स्थान को देखता है, अतः जातक को विद्या प्राप्ति के मार्ग में कठिनाइयाँ तथा सन्तान-पक्ष में भी कुछ कष्टों का सामना करना पड़ेगा। सातवीं दृष्टि से आयु एवं पुरातत्त्व भाव को देखने के कारण जातक को दीर्घायु एवं पुरातत्त्व का लाभ होगा। मंगल आठवीं मित्र दृष्टि से भाग्य भवन को भी देखता है, अतः भाग्य में भी रुकावटें आयेंगी।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेष लग्न: तृतीयभाव: मंगल

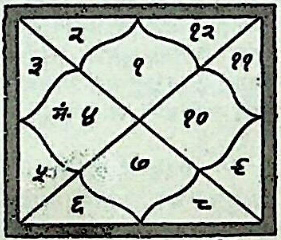


१२७

तीसरे पराक्रम स्थान में अपने मित्र बुध की राशि पर मंगल की स्थिति होने पर जातक को पराक्रम तथा हिम्मत की विशेष प्राप्ति होती है, परन्तु अष्टमेश होने के कारण भाई-बहिन के सुख में परेशानियाँ बनी रहती हैं। मंगल चौथी मित्र-दृष्टि से शत्रु भवन को देखता है, अतः जातक अपने शत्रुओं को मारने में हिम्मत से काम लेगा और उन पर अपना प्रभाव भी रखेगा। आठवीं उच्च दृष्टि से राज्य एवं पिता के स्थान को देख रहा है, इस कारण जातक को राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त होगा तथा पिता का सुख भी मिलेगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेष लग्न: चतुर्थभाव: मङ्गल

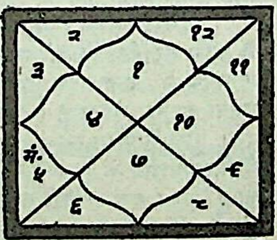


१२८

चौथे माता, सुख तथा भूमि के घर में मंगल नीच का होकर अपने मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा हो, तो उसके प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी प्राप्त होती है। इसी प्रकार भूमि, मकान एवं घरेलू सुखों में भी कमजोरी बनी रहेगी। मंगल की चौथी दृष्टि स्त्री भवन पर पड़ती है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के सम्बन्ध में भी जातक को क्लेश उठाने पड़ेंगे। परन्तु सातवीं उच्च दृष्टि से मंगल पिता एवं राज्य के दशम भाव को भी देखता है, अतः जातक को अपने पिता एवं राज्य द्वारा लाभ प्राप्त होता रहेगा। मंगल की आठवीं शत्रु दृष्टि लाभ स्थान में पड़ रही है, अतः लाभ के क्षेत्र में जातक को विशेष परिश्रम करना पड़ेगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: पचमभाव: मंगल

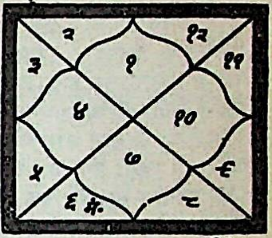


१२९

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या के स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर मंगल की स्थिति होने से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। मंगल चौथी दृष्टि से पुरातत्त्व एवं आयु भाव को अपनी वृश्चिक राशि में देख रहा है, अतः जातक दीर्घायु प्राप्त करेगा और उसे पुरातत्त्व का लाभ भी होगा। सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को देख रहा है, अतः कुछ परेशानी के साथ लाभ के योग भी प्राप्त होंगे। साथ ही आठवीं मित्र दृष्टि से बारहवें व्यय भाव को देख रहा है, अतः खर्च अधिक होगा, परन्तु बाहरी स्थानों से आजीविका प्राप्त होने के सम्बन्ध बने रहेंगे।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेष लग्न: षष्ठभाव: मंगल

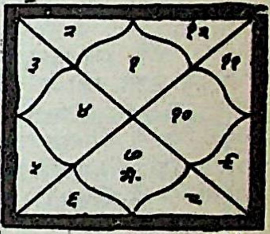


१३०

छठे शत्रु एवं रोग स्थान में मंगल अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित हो, तो उसके प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर प्रभाव बनाये रहेगा तथा बहुत निडर और साहसी बना रहेगा। मंगल की चौथी मित्र-दृष्टि भाग्य भवन पर पड़ती है, अतः भाग्य के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ उत्पन्न होंगी। सातवीं मित्र-दृष्टि व्यय भाव पर पड़ने से खर्च अधिक होगा तथा बाहरी स्थानों से लाभ भी प्राप्त होगा। आठवीं दृष्टि अपनी ही मेष राशि पर पड़ने से शरीर स्वस्थ रहेगा तथा स्वाभिमान एवं प्रभाव प्रबल बना रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेष लग्न: सप्तमभाव: मंगल

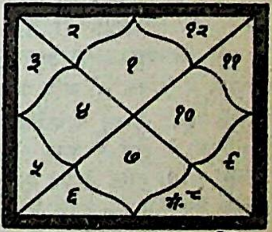


१३१

सप्तम केन्द्र तथा स्त्री-भवन में मंगल की स्थिति होने से जातक को स्त्री-पक्ष से कुछ कष्ट रहेगा तथा व्यवसाय में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। मंगल की चौथी उच्च दृष्टि राज्य भवन पर पड़ती है, अतः पिता एवं राज्य द्वारा उन्नति के साधन तथा यश की प्राप्ति होगी। सातवीं दृष्टि शरीर भवन पर पड़ने से जातक का शरीर स्वस्थ रहेगा और वह प्रभावशाली तथा यशस्वी बना रहेगा। आठवीं दृष्टि धन एवं कुटुम्ब के द्वितीय भवन पर पड़ती है, अतः धन तथा कुटम्ब की वृद्धि के लिये अधिक प्रयत्न करने पर भी थोड़ी ही सफलता प्राप्त होगी।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेष लग्न: अष्टमभाव: मंगल

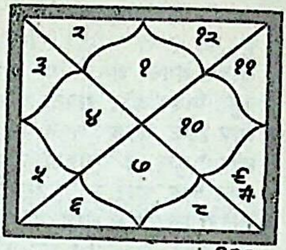


१३२

आठवें मृत्यु-भवन में मंगल स्वक्षेत्री होकर बैठा हो, तो जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है, परन्तु शरीर स्थान का स्वामी होकर अष्टम भवन में बैठा है, इसलिये शरीर की सुन्दरता में कमी रहेगी। मंगल चौथी शत्रु दृष्टि से लाभ-स्थान को देख रहा है, अतः आमदनी के क्षेत्र में परेशानियों के साथ सफलता मिलेगी। सातवीं दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को शत्रु की राशि में देखने से धन तथा कुटुम्ब के विषय में भी असन्तोष बना रहेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से पराक्रम स्थान को देख रहा है, अतः पराक्रम अधिक होगा, परन्तु अष्टमेश होने के कारण भाई-बहिन के सुख में कमी रहेगी।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेप लग्नः नवमभावः मंगल

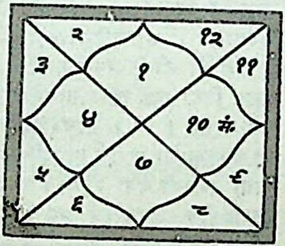


१३३

नवें, त्रिकोण एवं भाग्य स्थान में मंगल की स्थिति के प्रभाव से जातक का भाग्य अच्छा बना रहेगा, परन्तु अष्टमेश होने के कारण कुछ असन्तोप एवं कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ेगा। चौथी मित्र दृष्टि से व्यय भाव को देखने के कारण खर्च की अधिकता रहेगी तथा वाहरी स्थानों से विशेप सम्वन्ध बना रहेगा। सातवीं मित्र दृष्टि से पराक्रम के द्वितीय-भाव को देख रहा है, अतः पराक्रम अधिक रहेगा परन्तु अष्टमेश होने के कारण भाई-वहिन के सुख में कमी रहेगी। आठवीं नीच दृष्टि से माता तथा भूमि के चतुर्थभाव को देख रहा है, अतः माता के सुख एवं भूमि, मकान आदि के सम्वन्ध से भी कमी वनी रहेगी।

जिस जातक का जन्म 'मेप' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेप लग्नः दशमभावः मंगल



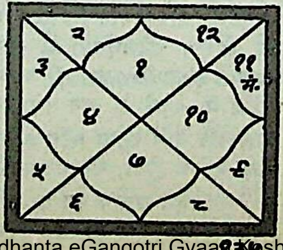
१३४

दसवें केन्द्र स्थान तथा राज्य एवं पिता के भवन में मंगल अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर उच्च का होकर वैठा है। इसके प्रभाव से जातक अपने पिता से वैमनस्य रखता हुआ भी उस स्थान तथा व्यवसाय की उन्नति करेगा और उसे राज्य द्वारा भी सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी। मंगल चौथी दृष्टि से शरीर स्थान को स्वक्षेत्री में देख रहा है अतः शारीरिक प्रभाव में उन्नति रहेगी। सातवीं नीच दृष्टि से माता तथा भूमि के चौथे स्थान को देख रहा है, अतः माता तथा भूमि के सुख में कमी का योग वनेगा। परन्तु आठवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं सन्तान-स्थान को भी देख रहा है, अतः विद्या, बुद्धि एव सन्तान के क्षेत्र में विशेप सफलता प्राप्त होगी।

जिस जातक का जन्म 'मेप' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने सममित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आय के साधनों में सफलता प्राप्त होती रहेगी, परन्तु अष्टमेश का दोप होने के कारण आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ भी आती रहेंगी। मंगल चौथी दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब के द्वितीय भाव को अपने शत्रु शुक्र की राशि में देख रहा है, अतः धन तथा कुटुम्ब से असन्तोप बना रहेगा। सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं सन्तान भवन को देख रहा है, अतः संतान तथा विद्या के पथ में भी कुछ कमी बनी रहेगी और आठवीं मित्र-दृष्टि से छठे शत्रु भवन को देख रहा है, अतः जातक शत्रु पक्ष में प्रभाव रखने वाला तथा अत्यन्त साहसी भी होगा।

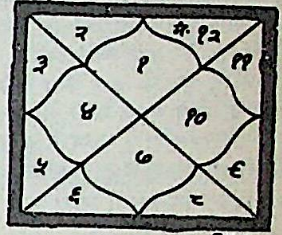
मेप लग्नः एकादशभावःमंगल



१३५

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए —

मेष लग्न: द्वादशभाव: मंगल



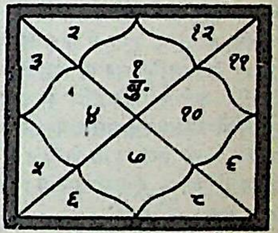
१३६

बारहवें व्यय स्थान मे अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक बहुत अधिक खर्च करने वाला, बाहरी स्थानों में भ्रमण करने वाला तथा शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी पाने वाला रहेगा। मंगल की चौथी मित्र दृष्टि पराक्रम भवन पर पड़ती है, अत: जातक पराक्रमी तो होगा, परन्तु मंगल के अष्टमेश होने के कारण उसे भाई-बहिनों के सुख में कुछ कठिनाइयाँ भी रहेंगी। सातवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को देखने के कारण जातक शत्रु पक्ष में प्रबल बना रहेगा और आठवीं दृष्टि स्त्री भवन पर पड़ने के कारण जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियों का सामना करना पड़ेगा तथा विशेष परिश्रम के बाद ही सफला मिलेगी।

'मेष' लग्न में 'बुध' का फल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए —

मेष लग्न: प्रथमभाव: बुध

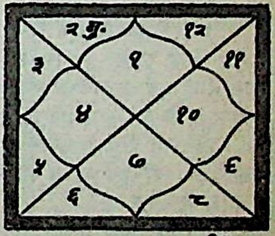


१३७

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक पुरुषार्थी होता है, परन्तु षष्ठेश का दोष होने के कारण शरीर रोग-पीड़ित भी बना रहता है। भाई-बहिनों के सुख-सम्बन्ध में भी इसी कारण कुछ कमी आ जाती है। बुध सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं व्यवसाय के भवन को देखता है, अत: जातक को पुरुषार्थी एवं परिश्रम द्वारा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी, परन्तु स्त्री-पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ सफलता मिलेगी।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए —

मेष लग्न: द्वितीयभाव: बुध

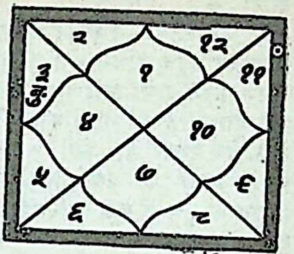


१३८

दूसरे धन भाव में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ एवं पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु बुध स्वयं शत्रु स्थान का स्वामी है, अत: उसे धन की प्राप्ति के मार्ग में कभी-कभी हानि एवं कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ेगा। द्वितीय भाव बन्धन का भी माना गया है, अत: भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहेगी। बुध सातवीं मित्र दृष्टि से आयु स्थान को देखता है, अत: जातक की आयु में वृद्धि होगी तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेष लग्न: तृतीयभाव: बुध

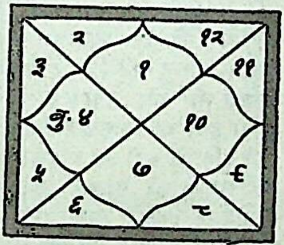


१३९

तीसरे पराक्रम स्थान में अपनी ही राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अत्यन्त पराक्रमी तथा हिम्मती बना रहेगा। बुध शत्रु स्थान का स्वामी भी है, अत: जातक अपने शत्रुओं पर बड़ा भारी प्रभाव रखेगा, परन्तु बुध के शत्रु स्थानाधिपति होने के कारण भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी बनी रहेगी। बुध सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य भवन को देख रहा है, अत: जातक अपने पराक्रम द्वारा भाग्य में वृद्धि करेगा तथा धर्म पालन में भी कुछ कमी के साथ अपना मन लगाये रहेगा। बुध को विवेक का स्वामी माना गया है, अत: उसके प्रभाव से जातक विवेकयुक्ति तथा परिश्रमी बना रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेष लग्न: चतुर्थभाव: बुध

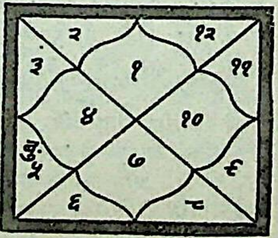


१४०

चौथे माता, सुख भूमि के स्थान में बुध अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित हो, तो उसके प्रभाव से जातक माता के सुख में कुछ कमी का अनुभव करेगा, इसी प्रकार उसे भूमि, मकान आदि के पक्ष में भी कमियाँ बनी रहेंगी। बुध सातवीं दृष्टि से अपने मित्र शनि की मकर राशि में राज्य एवं पिता के दशम भाव को देखता है, अत: जातक पिता एवं राज्य के पक्ष में भी सफलता तथा यश प्राप्त करेगा। ऐसे जातक का जीवन कुछ परेशानियों के साथ सफल रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: पंचमभाव: बुध

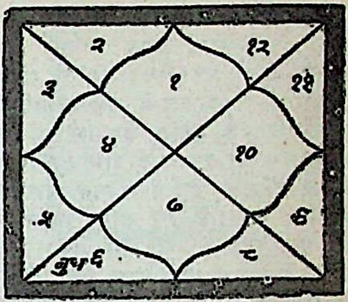


१४१

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या, बुद्धि भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के सुख को प्राप्त करने में विशेष परिश्रम करके सफलता पायेगा, क्योंकि बुध में शत्रु स्थानाधिपति होने का दोष विद्यमान है। बुध सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ के ग्यारहवें स्थान को अपने सामान्य मित्र शनि की राशि में देख रहा है, अत: जातक अपनी बुद्धि एवं विवेक के द्वारा भाग्य तथा आमदनी की वृद्धि करेगा साथ ही शत्रु पक्ष में भी सफलता प्राप्त करता रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: षष्ठभाव: बुध

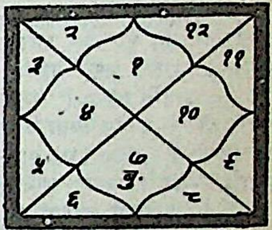


१४२

छठे शत्रु एवं रोग भवन में बुध स्वक्षेत्री एवं उच्च का होकर कन्या राशि पर बैठा हो, तो उसके प्रभाव से जातक शत्रुओं पर अपना विशेष प्रभाव रखने वाला होता है, तथा अपने पुरुषार्थ के बल पर बड़े-बड़े काम कर दिखाता है परन्तु शत्रु स्थानाधिपति होने के कारण भाई-बहिन से कुछ विरोध भी रखता है तथा पराक्रम में कछ आन्तरिक कमी का अनुभव भी होता है। बुध सातवीं नीच दृष्टि सेव्यय स्थान को देखता है अतः जातक को खर्च एवं बाह्य स्थानों के सम्बन्ध में कुछ परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं, परन्तु वह हिम्मत नहीं हारता।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: सप्तमभाव: बुध

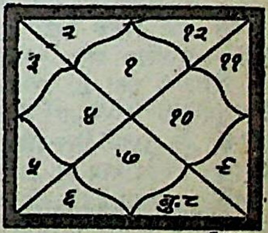


१४३

सप्तम केन्द्र एवं स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में बुध अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित हो, तो जातक अपने पुरुषार्थ एवं उद्योग द्वारा व्यवसाय में सफलता प्राप्त करता है तथा बुध के शत्रु स्थानाधिपति होने के कारण कुछ कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं। यही स्थिति स्त्री पक्ष के विषय में भी रहती हैं। बुध अपनी सातवीं मित्र दृष्टि से मंगल की मेष राशि वाले प्रथम शरीर भाव को भी देखता है, अतः जातक को कुछ शारीरिक कष्टों का सामना भी करना पड़ता है तथा रोगों का शिकार भी बनना पड़ता है। बुध की ऐसी स्थिति के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के द्वारा सहयोग भी मिलता है तथा विवेक-बुद्धि प्रबल बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: अष्टमभाव: बुध

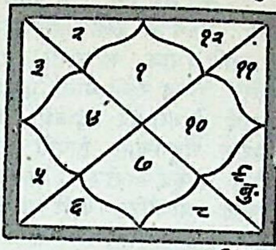


१४४

आठवें मृत्यु एवं पुरातत्व के भाव में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को पुरुषार्थ, आयु एवं पुरातत्व के सम्बन्ध में कुछ कठिनाइयों तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। उत्साह में कमी आ जाती है तथा शत्रु-पक्ष से हानि पहुँचने की संभावना भी रहती है। बुध सातवीं मित्र दृष्टि से धन कुटुम्ब के द्वितीय भाव को अपने मित्र शुक्र की वृष राशि में देखता है, अतः जातक को अर्थोपार्जन के लिये विशेष परिश्रम एवं दौड़-धूप करनी पड़ती है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेप लग्न: नवमभाव: बुध

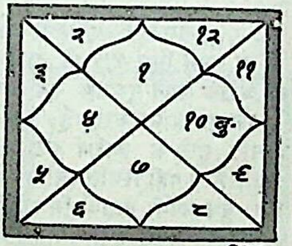


१४५

नवें भाग्य भवन में बुध अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित हो, तो उसके प्रभाव से जातक को भाग्य पक्ष में कुछ परेशानियों का अनुभव करना पड़ता है, परन्तु शत्रु-पक्ष के सम्बन्ध से उसे भाग्य सम्बन्धी सफलताएं प्राप्त होती रहती हैं। बुध सातवीं दृष्टि से द्वितीय पराक्रम स्थान को अपनी ही राशि में देखता है, इस कारण जातक का पराक्रम बल बना रहता है और उसे अपने विवेक, पराक्रम एवं भाई-बहिनों द्वारा लाभ प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक कुछ झंझटों के साथ उन्नति करता है।

जिस जातक का जन्म 'मेप' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेप लग्न: दशमभाव: बुध

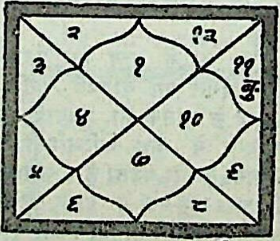


१४६

दसवें केन्द्र एवं राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर बैठे हुए बुध के प्रभाव से जातक अपने पुरुषार्थ एवं पराक्रम द्वारा अत्यधिक उन्नति करता है, परन्तु बुध के शत्रु स्थानाधिपति होने के कारण पिता के साथ कुछ वैमनस्य भी बना रहता है। राज्य द्वारा मान-प्रतिष्ठा तथा विवेक द्वारा शत्रु-पक्ष में सफलता प्राप्त होती है। बुध अपनी सातवीं शत्रु दृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में चौथे माता एवं भूमि के स्थान को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि, मकान आदि के सुख में कुछ कमी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'मेप' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेप लग्न: एकादश भाव: बुध

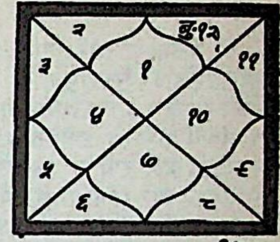


१४७

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम तथा विवेक द्वारा आमदनी के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता प्राप्त करता है तथा भाई-बहिन का लाभ भी पाता है, परन्तु बुध के शत्रु स्थानाधिपति होने के कारण मार्ग में कुछ झंझट भी बने रहते हैं। बुध सातवीं मित्र-दृष्टि से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पंचम भाव को अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि में भी देखता है। उसके प्रभाव से जातक को विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ संतान पक्ष में भी सुख प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेप' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: द्वादशभाव: बुध



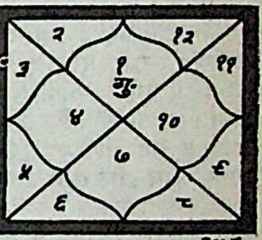
१४८

बारहवें व्यवस्थान में अपने सामान्य मित्र गुरु की राशि में बैठे हुए नीच के बुध के प्रभाव से जातक को खर्च के मामलों में तथा बाहरी सम्बन्धों में परेशानियों का सामना करना पड़ता है तथा भाई-बहिन के सुख में भी कमी बनी रहती है। बुध के शत्रु स्थानाधिपति होने के कारण सभी क्षेत्रों में कठिनाइयां भी आती रहती हैं। बुध सातवीं उच्च दृष्टि से शत्रु स्थान को अपनी कन्या राशि में देखता है, इसलिए जातक अपने विवेक के द्वारा शत्रुपक्ष पर प्रभाव स्थापित करवाने में सफल होता है और वह गुप्त युक्ति एवं धैर्यवान् भी होता है।

'मेष' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: प्रथमभाव: गुरु

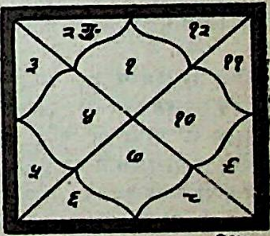


१४९

प्रथम केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र मंगल की राशि पर बैठे हुए गुरु के प्रभाव से जातक अत्यधिक यश, उन्नति एवं बाहरी स्थानों से प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। गुरु पाँचवीं मित्र दृष्टि से सन्तान एवं विद्या स्थान को देखता है, इसलिए जातक बुद्धिमान, विद्वान् तथा सन्ततिवान् भी होता है। सातवीं दृष्टि से शत्रु की तुला राशि में स्त्री एवं व्यवसाय के स्थान को देखता है। अतः स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं। नवीं दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को स्वक्षेत्र में देखता है। अतः भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक यशस्वी, धनी, सुखी, धर्मात्मा, विद्वान् तथा बुद्धिमान होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: द्वितीयभाव: गुरु

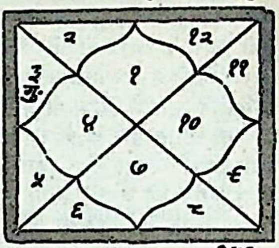


१५०

द्वितीय धन कुटुम्ब के भाव में शत्रु शुक्र की वृष राशि पर बैठे हुए गुरु के प्रभाव से जातक बाहरी स्थानों के सम्पर्क से धन एवं भाग्य की वृद्धि करता है, परन्तु कभी-कभी हानि भी उठाता है। गुरु की पाँचवीं दृष्टि शत्रु स्थान पर पड़ती है, अतः शत्रु-पक्ष में अपनी होशियारी से सफलता पाता है। सातवीं मित्र दृष्टि आयु एवं पुरातत्त्व भाव में पड़ने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। नवीं नीच दृष्टि पिता एवं राज्य स्थान में पड़ने से पिता तथा राज्य के पक्ष में परेशानी एवं त्रुटि बनी रहती है तथा उन्नति के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: तृतीयभाव: गुरु

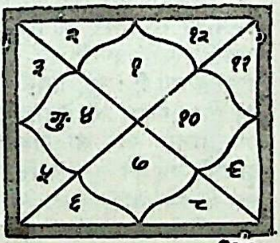


१५१

तीसरे पराक्रम भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक भाई-बहिनों का सुख तथा पराक्रम की शक्ति प्राप्त करता है। गुरु पाँचवीं दृष्टि से स्त्री तथा व्यवसाय के भाव को देखता है, अत: स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ परेशानियाँ बनी रहेंगी। सातवीं दृष्टि से भाग्य स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, अत: भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होगी और नवीं शत्रु दृष्टि से जन्म स्थान को देख रहा है, अत: आमदनी के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ आती रहेंगी। संक्षेप में, ऐसा जातक कठिनाइयों के साथ अपने भाग्य, धर्म तथा व्यवसाय की वृद्धि करेगा तथा कुछ परेशानियों के साथ स्त्री तथा भाई-बहिनों का सुख प्राप्त करेगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए —

मेष लग्न: चतुर्थभाव: गुरु



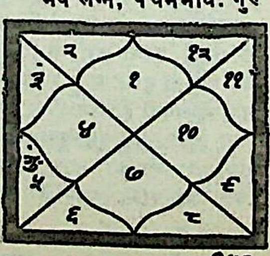
१५२

चौथे केन्द्र तथा माता एवं भूमि के भवन में मित्र चन्द्रमा की राशि पर उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, मकान आदि का भरपूर सुख प्राप्त होगा। गुरु पाँचवीं दृष्टि से आय एवं पुरातत्त्व भाव को देखता है, अत: आयु एवं पुरातत्त्व का भी लाभ होगा। सातवीं नीच दृष्टि से पिता एवं राज्य भवन को देखता है, अत: पिता के सुख में कमी एवं राज्य के क्षेत्र में असंतोष बना रहेगा। नवीं दृष्टि से व्यय स्थान को अपनी राशि में देखता है, इसलिए खर्च अधिक रहेगा तथा बाहरी स्थानों से अच्छा सम्बन्ध बनेगा। संक्षेप में, ऐसा जातक भाग्यवान्, धर्मात्मा तथा सम्पत्तिवान् होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण एवं सन्तान तथा विद्या के भाव में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक विद्वान् तथा सन्ततिवान् होता है। गुरु पांचवीं दृष्टि

मेष लग्न; पंचमभाव: गुरु

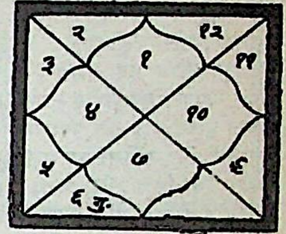


१५३

से शरीर स्थान को देखता है, अत: दृष्टि से भाग्य भवन को स्वराशि में देखता है, अत: बुद्धि के योग से जातक के भाग्य की वृद्धि होती रहेगी। सातवीं शत्रु दृष्टि से लाभ स्थान को देखता है, अत: आय के साधनों में कभी-कभी अड़चनें पड़ेंगी और नवीं मित्र दृष्टि से शरीर स्थान को देखता है, अत: शरीर सुन्दर तथा स्वस्थ होगा। संक्षेप में ऐसा जातक धनी, बुद्धिमान, धर्मात्मा तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: षष्ठभाव: गुरु

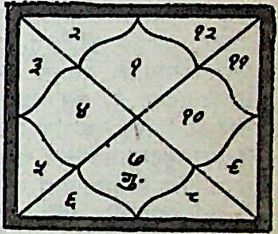


१५४

छठे शत्रु स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति के मार्ग में रुकावटें तो आती हैं, परन्तु भाग्य की वृद्धि भी होती है और शत्रुपक्ष में भी सफलता प्राप्त होती है। गुरु पांचवीं नीच दृष्टि से पिता एवं राज्य भवन को देखता है, अतः पिता एवं राज्य के सम्बन्ध में त्रुटि बनी रहेगी। सातवीं दृष्टि से व्यय भाव को स्वक्षेत्र में देखता है, अतः खर्च की कुछ परेशानी के साथ ही बाहरी सम्बंध में सफलता भी प्राप्त होती रहेगी। नवीं दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब के द्वितीय स्थान को देखता है, अतः कुटुम्ब से मतभेद रहेगा। भाग्येश के छठे होने क कारण दूसरों के सहयोग से भाग्य की उन्नति होगी।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: सप्तमभाव: गुरु



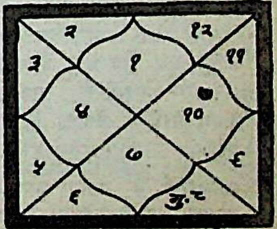
१५५

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ प्राप्त होंगी। यहाँ से गुरु पांचवीं शत्रु दृष्टि से लाभ स्थान को देखता है, अतः आमदनी के मार्ग में सीमित सफलताएं भी मिलेंगी। सातवीं मित्र दृष्टि से शरीर स्थान को देखता है, अतः शरीर सुन्दर तथा प्रभावशाली रहेगा और लोग जातक को भाग्यवान् समझते रहेंगे। नवीं मित्र दृष्टि से पराक्रम एवं भाई के स्थान को देखता है, अतः भाई-बहिन एवं पराक्रम का पक्ष अच्छा रहेगा। संक्षेप में, ऐसा जातक कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्योन्नति एवं सफलता प्राप्त करता है तथा स्वरूपवान् होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें मृत्यु एवं पुरातत्त्व स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर बैठे हुए गुरु के प्रभाव से उसके व्ययेश होने के कारण जातक की भाग्योन्नति में बहुत बाधाएँ आती हैं तथा अपयश प्राप्त होता है, परन्तु उसे आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। इस स्थान से गुरु की पाँचवीं दृष्टि व्ययभाव में पड़ती है, अतः खर्च अधिक होगा एवं बाहरी स्थानों से विशेष सम्बन्ध बना रहेगा। सातवीं दृष्टि धन एवं कुटुम्ब के द्वितीय स्थान में पड़ने से धन एवं कुटुम्ब की सामान्य वृद्धि होगी तथा नवीं उच्च दृष्टि चौथे माता और भूमि के स्थान में पड़ने से जातक को माता, भूमि तथा मकान का सुख भी प्राप्त होगा।

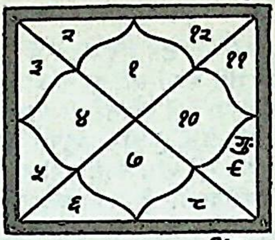
मेष लग्न: अष्टमभाव: गुरु



१५६

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: नवमभाव: गुरु

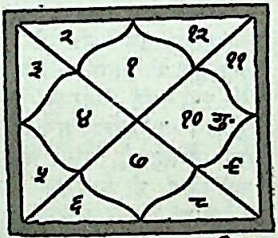


१५७

नवें त्रिकोण तथा भाग्य एवं धर्म के स्थान में गुरु के स्वक्षेत्री होने के प्रभाव से जातक अत्यन्त भाग्यशाली तथा धर्मात्मा होता है। यहाँ से गुरु की पाँचवी दृष्टि शरीर स्थान पर मंगल की मेष राशि पर पड़ती है। अतः जातक का शरीर स्वस्थ एवं सुन्दर होगा। सातवीं मित्र दृष्टि भाई एवं पराक्रम के तृतीय भाव में पड़ने से जातक भाई-बहिनों का सुख पायेगा तथा पराक्रमी होगा और नवीं मित्र दृष्टि विद्या एवं सन्तान के पंचम भाव में पड़ने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में भी विशेष सफलता प्राप्त करेगा। संक्षेप में, ऐसा जातक भाग्यवान्, धर्मात्मा, यशस्वी, सम्पत्तिवान् तथा सुन्दर होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: दशमभाव: गुरु

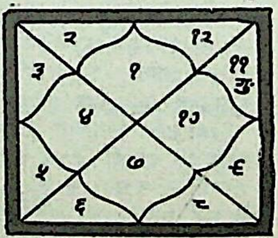


१५८

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने शत्रु शनि की राशि पर बैठे हुए व्ययेश तथा नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को पिता तथा राज्य के पक्ष में हानि एवं व्यवसाय के पक्ष में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, अतः उसके भाग्य की विशेष उन्नति नहीं हो पाती। गुरु पाँचवीं दृष्टि से धनभाव को देखता है, अतः कुटुम्ब तथा धन का अल्प लाभ होता है। सातवीं उच्च दृष्टि से माता तथा सुख के चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता और भूमि का सुख मिलता है एवं नवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को देखता है, अतः शत्रु पक्ष में जातक अपने भाग्य की शक्ति द्वारा सफलता प्राप्त करता है।

'जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चहिए—

मेष लग्न: एकादशभाव: गुरु

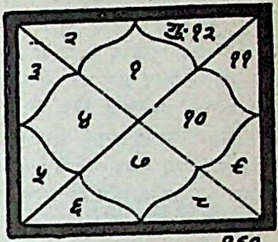


१५९

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर बैठे हुए व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक को भाग्य की शक्ति से धन का लाभ तो होता है, परन्तु उसमें कुछ कमी बनी रहती है। इस स्थान से गुरु पाँचवीं दृष्टि से पराक्रम भवन को देखता है, अतः भाई-बहिन एवं पराक्रम के पक्ष में भी कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है। सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं पंचम भाव को देखता है, अतः विद्या, बुद्धि एवं सन्तान पक्ष का सहयोग प्राप्त होगा तथा नवीं दृष्टि से स्त्री एवं व्यवसाय के सप्तम भाव को अपने शत्रु की तुला राशि में देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में भी कठिनाइयों के साथ सफलता मिलेगी।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: द्वादशभाव: गुरु



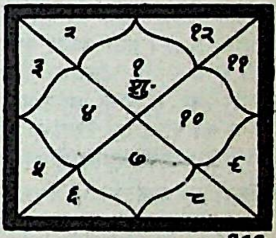
१६०

बारहवें व्यय स्थान में स्वराशि-गत गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों में उसे लाभ भी प्राप्त होता है। इस स्थान से गुरु पाँचवीं दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता, मकान एवं भूमि का सुख बना रहता है। सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को देखता है, अतः शत्रु पक्ष में अपनी समझदारी से प्रभाव प्राप्त होता है एवं नवीं मित्र दृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में भी जातक को सफलता मिलती है, परन्तु बृहस्पति के व्ययेश होने के कारण इन सभी क्षेत्रों में सफलता पाने के लिए जातक को कुछ कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ता है।

'मेष' लग्न में 'शुक्र' का फल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: प्रथमभाव: शुक्र

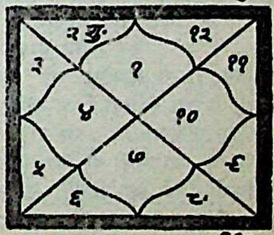


१६१

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में मेष का शुक्र, अपने शत्रु मंगल की राशि पर स्थित हो, तो उसके प्रभाव से जातक को सुन्दर शरीर, सम्मान, सफलता एवं चातुर्य्य आदि का लाभ होता है। इस स्थान से शुक्र सातवीं दृष्टि से स्त्री एवं व्यवसाय भवन को स्वक्षेत्र में देखता है, अतः जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है, परन्तु शुक्र के धनेश होने के कारण जातक को गृहस्थी तथा व्यवसाय कार्यों के संचालन में कुछ कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक सुखी, सुन्दर, यशस्वी एवं भाग्यशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: द्वितीयभाव: शुक्र

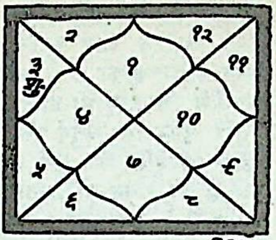


१६२

दूसरे धन भवन में स्वराशि स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक धनवान्, कुटुम्बवान् तथा सौभाग्यवान् होता है, परन्तु द्वितीय भाव बन्धन का भी होता है, अतः जातक को स्त्री एवं व्यवसाय से सम्बन्धित कार्यों में कुछ कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। इस स्थान से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपने सामान्य शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में भी अपनी योग्यता के कारण सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक सुखी तथा ऐशो-आराम का जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः तृतीयभावः शुक्र

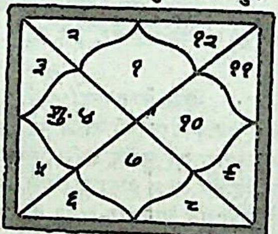


१६३

तृतीय पराक्रम स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम एवं चातुर्य्य में वृद्धि होती है, जिसके कारण उसे कुटुम्ब तथा धन का श्रेष्ठ लाभ होता है, परन्तु स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख होते हुए भी कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं। इस स्थान से शुक्र सातवीं दृष्टि से भाग्य तथा धर्म के नवें भाव को देखता है, अतः जातक भाग्यवान् होने के साथ ही धर्म का पालन भी करता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक धनी, धर्मात्मा तथा भाग्यशाली होता है और उसे कुटुम्ब, स्त्री तथा व्यावसायिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती रहती है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः चतुर्थभावः शुक्र

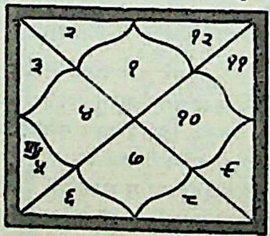


१६४

चौथे केन्द्र माता तथा सुख के चतुर्थ भाव में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है, परन्तु माता एवं भूमि के सुख में कुछ कमी बनी रहती है। इसी प्रकार स्त्री के सम्बन्ध में कुछ कमी के साथ सुख मिलता है। इस स्थान से शुक्र सातवीं मित्र दृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः जातक को राज्य एवं पिता के क्षेत्र में प्रतिष्ठा एवं उन्नति की प्राप्ति होती है। साथ ही पैतृक-धन एवं व्यावसायिक सफलता भी मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः पंचमभावः शुक्र

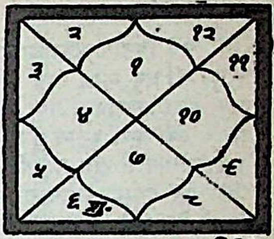


१६५

पाचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भाव में अपने शत्रु सूर्य की राशि में स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या एवं सन्तान के पक्ष में सफलता प्राप्त होती है, परन्तु यह स्थान बन्धन का भी है, अतः कुछ कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। इस स्थान से शुक्र सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, अतः जातक को आमदनी का भी श्रेष्ठ योग प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक भाग्यशाली, विद्यावान्, सन्तानवान् तथा लाभ उठाने वाला होता है, परन्तु सन्तान एवं स्त्री के पक्ष में सामान्य कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: षष्ठभाव: शुक्र

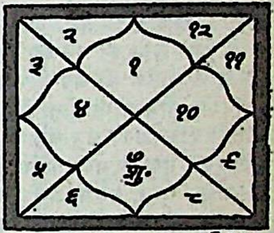


१९६

छठे शत्रु स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में गुप्त चतुराई से काम लेना पड़ता है एवं कठिनाइयाँ उपस्थित होती रहती हैं। इस स्थान से शुक्र सातवीं दृष्टि से व्ययभाव को अपने शत्रु गुरु की मीन राशि में देखता है, अतः खर्च की अधिकता बनी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को अपनी स्त्री, कुटुम्ब तथा व्यवसाय के सम्बन्ध में परेशानियों का सामना करना पड़ता है तथा प्रत्येक क्षेत्र में बुद्धि बल का अधिक प्रयोग करना होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: सप्तमभाव: शुक्र

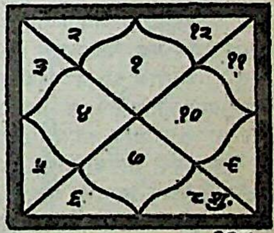


१९७

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भाव में स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है। इस स्थान से शुक्र की सातवीं दृष्टि अपने सामान्य शत्रु मंगल की मेष राशि वाले शरीर स्थान में पड़ती है, अतः जातक को शारीरिक सौन्दर्य, मान-प्रतिष्ठा तथा कार्य-कुशलता की प्रगति भी होती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक होशियार, धनवान्, सुन्दर, प्रतिष्ठित, सुखी तथा कौटुम्बिक शक्ति से सम्पन्न होता है, परन्तु धन स्थान का स्वामी बन्धन का कार्य भी करता है, अतः उसे व्यवसाय एवं स्त्री के पक्ष में कुछ कठिनाइयाँ भी उठानी पड़ेंगी

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: अष्टमभाव: शुक्र

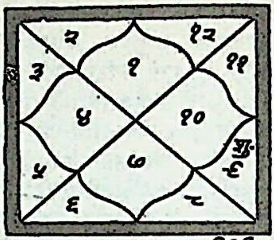


१९८

आठवें मृत्यु तथा आयु भवन में अपने सामान्य शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। साथ ही धन की भी कमी बनी रहती है, परन्तु उसे पुरातत्त्व एवं आयु की शक्ति विशेष रूप से प्राप्त होती है। इस स्थान से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब के द्वितीय भाव को अपनी राशि में देखता है, अतः कठिन परिश्रम के साथ जातक के धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि होती है। ऐसा जातक अपने परिश्रम एवं चतुराई से प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: नवमभाव: शुक्र

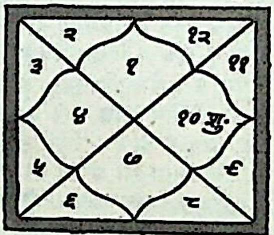


१६९

नवें त्रिकोण तथा भाग्य भवन में अपने सामान्य शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक बहुत भाग्यवान् तथा चतुर होता है और उसे गृहस्थी, स्त्री तथा कुटुम्ब का भी श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। इस स्थान से शुक्र सातवीं मित्र दृष्टि से तीसरे पराक्रम एवं सहोदर स्थान को अपने मित्र बुध की मिथुन राशि में देखता है, अतः जातक को पराक्रम एवं भाई-बहिन के श्रेष्ठ सुख का भी लाभ होता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक सुखी, धनी, धर्मात्मा, पराक्रमी तथा भाई-बहिन के सुख से सम्पन्न होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए--

मेष लग्न: दशम भाव: शुक्र

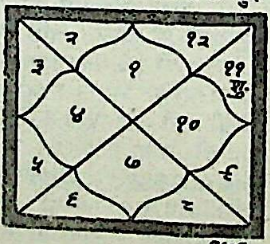


१७०

दसवें केतु तथा पिता एवं राज्य स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को अपने पिता एवं राज्य के संबन्ध से विशेष लाभ प्राप्त होता है। इस स्थान से शुक्र की सातवीं दृष्टि अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि में चौथे माता एवं सुख के भवन में पड़ती है, अतः जातक को माता एवं भूमि, मकान आदि का भी सुख प्राप्त होगा। संक्षेप में ऐसी स्थिति वाला जातक धनी, सुखी, भू-सम्पत्तिवान्, यशस्वी, माता, पिता एवं स्त्री का सुख प्राप्त करने वाला अत्यन्त चतुर होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: एकादशभाव: शुक्र

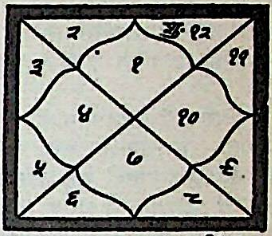


१७१

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक बड़ी चतुराई के साथ धन का खूब लाभ प्राप्त करता है और धनी होता है। उसे अपनी स्त्री एवं व्यवसाय से भी सुख तथा लाभ की प्राप्ति होती है। इस स्थान से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से शत्रु सूर्य की सिंह राशि में पंचम भवन में देखता है, अतः जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में बड़ी बुद्धिमानी एवं चतुराई के साथ सफलता मिलती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक धनी, सुखी, बुद्धिमान् चतुर तथा स्वार्थी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: द्वादशभाव: शुक्र



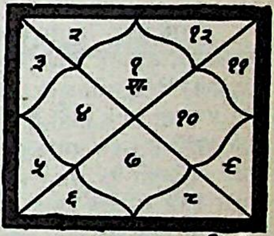
१०२

बारहवें व्यय स्थान में अपने सामान्य शत्रु गुरु की मीन राशि पर उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक बहुत अधिक खर्चीला होता है तथा बाहरी सम्बन्धों द्वारा बड़ी चतुराई से धन तथा व्यवसाय की शक्ति प्राप्त करता है। इस स्थान से शुक्र सातवीं नीच दृष्टि से अपने मित्र बुध की कन्या राशि वाले छठे शत्रु-भवन को देखता है, अतः शत्रु-पक्ष में भेद तथा गुप्त युक्ति द्वारा कुछ कमजोरी के साथ काम निकालने की शक्ति प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक सामान्य तथा संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

'मेष' लग्न में 'शनि' का फल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेष लग्न: प्रथमभाव: शनि

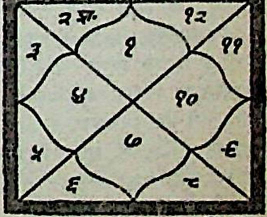


१०३

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य, मान-प्रतिष्ठा तथा आमदनी के क्षेत्र में कुछ कमी बनी रहती है, साथ ही राज्य के क्षेत्र में भी परेशानियाँ उत्पन्न होती रहती हैं। इस स्थान से शनि तीसरी मित्र दृष्टि से पराक्रम भवन को देखता है, अतः जातक को पराक्रम एवं भाई-बहिनों के क्षेत्र में सफलता एवं सामर्थ्य प्राप्त होती है। सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री तथा व्यवसाय भवन को देखने के कारण जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। दसवीं दृष्टि से अपनी राशि में पिता तथा राज्य भवन को देखने के कारण जातक को पिता तथा प्रतिष्ठा के क्षेत्र में थोड़ी सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: द्वितीयभाव: शनि



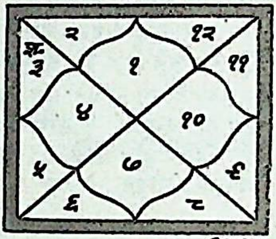
१०४

दूसरे धन तथा कुटुम्ब भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि में स्थित शनि के प्रभाव से जातक को आर्थिक क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा धन कुटुम्ब की वृद्धि होती है। इस स्थान से शुक्र तीसरी शत्रु दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता एवं भू-सम्पत्ति के क्षेत्रों में कुछ परेशानी आती है। सातवीं शत्रु दृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण जातक को पुरातत्त्व का लाभ तो होता है, परन्तु दिनचर्या में अशान्ति बनी रहती है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में लाभ भवन को देखने के कारण जातक को अच्छी आमदनी होती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक धनी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे पराक्रम भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का यथेष्ठ सुख प्राप्त होता है। साथ ही पिता एवं राज्य के क्षेत्र से भी सहयोग मिलता है। इस स्थान से शनि तीसरी शत्रु दृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। सातवीं शत्रु दृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण जातक को भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। दसवीं शत्रु दृष्टि से व्यय स्थान को देखने के कारण खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से असंतोष रहता है।

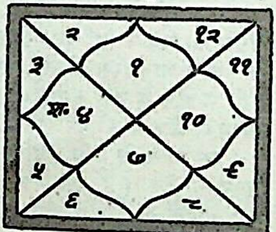
मेष लग्न: तृतीयभाव: शनि



१०५

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: चतुर्थभाव: शनि

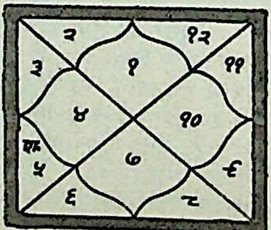


१०६

चौथे केन्द्र, माता, सुख तथा भूमि भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को माता तथा भूमि के सम्बन्ध में कुछ असन्तोष युक्त सफलता प्राप्त होती है, परन्तु सुख के साधनों में वृद्धि होती रहती है। इस स्थान से शनि तीसरी दृष्टि से शत्रु भवन को देखता है, अतः शत्रु-पक्ष से लाभ और उसम प्रभाव रखने का योग बनता है। सातवीं दृष्टि दशम भाव में पड़ने से राज्य एवं पिता द्वारा व्यवसाय की वृद्धि एवं मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती रहेगी। दसवीं नीच दृष्टि से शरीर स्थान को देखता है, अतः शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहेगी तथा कुछ चिन्तायें भी बनी रहा करेंगी।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: पंचमभाव: शनि

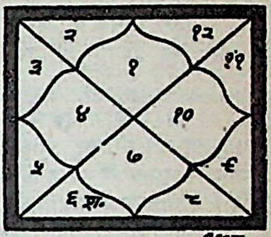


१०७

पाँचवें त्रिकोण तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि में स्थित शनि के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि द्वारा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है, परन्तु सन्तान पक्ष से मतभेद बना रहता है। यहाँ से शनि तीसरी उच्च दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से एकादश भाव को स्वक्षेत्र में देखने के कारण बुद्धि तथा सन्तपक्ष के योग से आमदनी के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता मिलती है तथा पिता द्वारा लाभ होता है। दसवीं मित्र दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब का भी विशेष लाभ होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः षष्ठभावः शनि

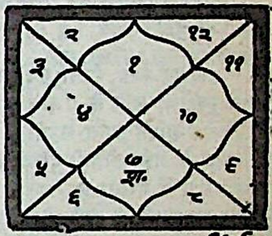


१०८

छठे शत्रु भाव में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का पिता के साथ वैमनस्य रहता है तथा राजकीय क्षेत्र में कठिन प्रयत्नों के बाद सफलता मिलती है। छठे भाव में क्रूर ग्रह की उपस्थिति प्रभावकारी मानी गई है, अतः जातक को आमदनी अच्छी रहेगी तथा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती रहेगी। यहाँ से शनि तीसरी शत्रु दृष्टि से अष्टम-भाव को देख रहा है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता प्राप्त होगी। सातवीं दृष्टि व्यय भाव में पड़ने से खर्च में अधिकता के कारण परेशानी का अनुभव होता रहेगा तथा बाहरी सम्बन्धों के कारण असन्तोष प्राप्त होगा। दसवीं मित्र दृष्टि से तृतीय भाव को देख रहा है, अतः पराक्रम विशेष रहेगा और भाई-बहिनों का सुख भी प्राप्त होगा। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक बहुत हिम्मती तथा प्रभावशाली भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः सप्तमभावः शनि

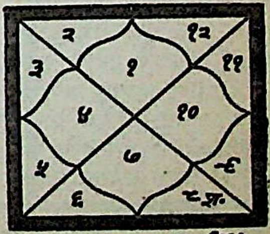


१०९

सातवें केन्द्र एवं स्त्री तथा व्यवसाय के घर में शनि अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर उच्च का होकर बैठा हो, तो उसके प्रभाव से जातक व्यवसाय तथा स्त्री के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त करता है। पिता एवं राज्य द्वारा भी उसे बहुत लाभ होता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रु दृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः भाग्य वृद्धि में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं और यश में कमी रहती है। सातवीं नीच दृष्टि से शरीर स्थान को अपने शत्रु मंगल की मेष राशि में देखता है, अतः शारीरिक सौन्दर्य में कमी तथा हृदय में अशान्ति बनी रहती है। दसवीं शत्रु दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता एवं भूमि-स्थान के सम्बन्ध में भी कुछ असंतोष बना रहता है तथा घरेलू सुखों में कमी आ जाती है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः अष्टमभावः शनि



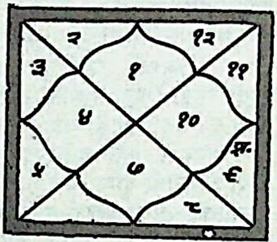
११०

आठवें मृत्यु एवं पुरातत्त्व के घर में, अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में कमजोरी रहती है, परन्तु पुरातत्त्व का लाभ होता है और आयु के सम्बन्ध में भी श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः पिता एवं राज्य द्वारा अल्प लाभ होता है। सातवीं मित्र दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब के सम्बन्ध में कठिन परिश्रम द्वारा सफलता मिलती है और दसवीं शत्रु दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या तथा सन्तान के

सम्बन्ध में त्रुटि बनी रहती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक क्रोधी, वाणी में तेजी रखने वाला तथा अल्प लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: नवमभाव: शनि

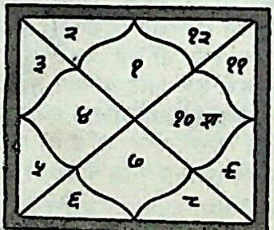


९८१

नवें, त्रिकोण एवं भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर बैठे हुए शनि के प्रभाव से जातक के भाग्य की प्रारम्भ में कम परन्तु बाद में विशेष उन्नति होती है, धर्म का पालन भी थोड़ा-बहुत होता है। पिता तथा राज्य की शक्ति एवं इनके द्वारा लाभ भी मिलता है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से एकादश भवन को अपनी राशि में देखता है, अतः लाभ अधिक होगा एवं सम्पत्ति तथा ऐश्वर्य की विशेष प्राप्ति होगी। सातवीं मित्र दृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः पराक्रम की वृद्धि होगी एवं भाई-बहिनों का सुख मिलेगा। दसवीं मित्र दृष्टि से षष्ठ भाव को देखता है, अतः शत्रु पक्ष में अपना प्रभाव स्थिर रखेगा। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक धन-सम्पत्तिवान्, यशस्वी तथा शत्रुओं पर विजय पाने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: दशमभाव: शनि

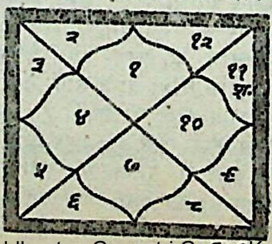


९८२

दसवें केन्द्र, पिता एवं राज्य भवन में मकर राशि स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक पिता तथा राज्य की विशेष शक्ति प्राप्त करता है तथा इनसे लाभ उठाता है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से व्यय भाव को गुरु की मीन राशि में देखता है, अतः खर्च अधिक रहेगा एवं बाहरी सम्बन्धों से असन्तोष प्राप्त होगा। सातवीं शत्रु दृष्टि से चतुर्थ भवन को देखता है, अतः माता एवं भू-सम्पत्ति, मकान आदि के सुख में कुछ कमी रहेगी और दसवीं उच्च दृष्टि से सप्तम भवन को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। संक्षेप में, ऐसा जातक ऐश्वर्यवान्, भोगी, विलासी तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: एकादशभाव: शनि

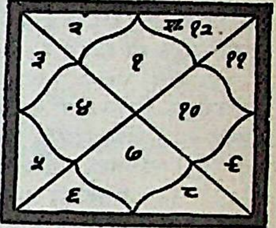


ग्यारहवें लाभ स्थान में अपनी कुम्भ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। पिता तथा राज्य से भी अच्छा सुख एवं लाभ मिलता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी नीच दृष्टि से प्रथम भाव को शत्रु मंगल की मेष राशि में देखता है, अतः शारीरिक सौन्दर्य में कमी बनी रहेगी। सातवीं शत्रु दृष्टि से पंचम भाव को सूर्य की सिंह राशि में देखने के कारण विद्या के क्षेत्र में पूर्ण सफलता नहीं मिलेगी तथा संतान पक्ष भी कमजोर रहेगा।

दसवीं शत्रु दृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होगा तथा दैनिक जीवन में परेशानियों व कठिनाइयों का अनुभव होता रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः द्वादशभावः शनि



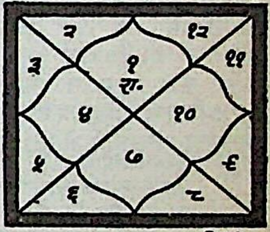
१८४

बारहवें व्यय भाव में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च बहुत अधिक रहता है। साथ ही पिता एवं राजपक्ष से हानि उठानी पड़ती है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से मित्र शुक्र को वृष राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक को धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ेगा। सातवीं मित्र दृष्टि से छठे भाव को देखने के कारण जातक शत्रु-पक्ष में प्रभाव प्राप्त करेगा तथा दसवीं शत्रु दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्योन्नति के लिए विशेष परिश्रम करने की आवश्यकता पड़ेगी तथा बहुत कठिनाइयों के बाद अपनी प्रतिष्ठा बना पायेगा।

'मेष' लग्न में 'राहु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः प्रथमभावः राहु

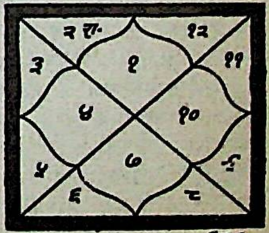


१८५

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी तथा स्वास्थ्य में परेशानी उत्पन्न होती है। साथ ही हृदय में चिन्ताओं का निवास भी रहता है। ऐसा व्यक्ति अपनी उन्नति के लिए गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है। मंगल चूँकि क्रूर ग्रह है, अतः उसकी राशि पर राहु के बैठने के कारण जातक स्वार्थ-सिद्धि के लिए झूँठ, दुराव, गुप्त युक्तियों, हिम्मत तथा गुप्त बुद्धि का भी आश्रय लेता है और उसी से तरक्की करता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः द्वितीयभावः राहु

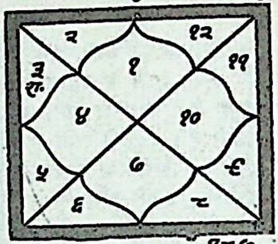


१८६

दूसरे धन एवं कुटुम्ब भाव में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक धन-सम्बन्धी चिन्ताओं से ग्रस्त बना रहता है और उसे अनेक प्रकार के कष्ट भी उठाने पड़ते हैं। इसके साथ ही उसे कौटुम्बिक क्लेश तथा परेशानियों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक गुप्त युक्तियों से काम लेता है और बारम्बार हानियाँ उठाकर भी अपने युक्तिबल से पुनः क्षति-पूर्ति करवाने में समर्थ हो जाता है तथा समाज में धनी व्यक्ति के रूप में सम्मानित बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' राशि में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: तृतीयभाव: राहु

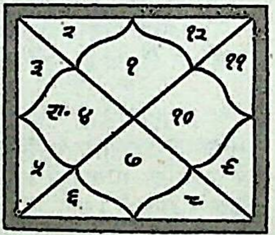


१८७

तीसरे पराक्रम स्थान में मिथुन राशि का उच्च होकर बैठे हुए राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन की शक्ति में विशेष वृद्धि होती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक युक्तबल में प्रवीण होता है तथा भीतरी रूप से कमजोरी का अनुभव करने के बावजूद भी प्रकट रूप में बड़ी दिलेरी, हिम्मत तथा साहस व परिचय देता है। फलस्वरूप उसे इच्छित सफलता प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' राशि में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: चतुर्थ भाव: राहु

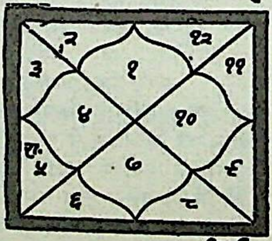


१८८

चौथे केन्द्र, माता तथा भूमि के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि बैठे हुए राहु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, मकान तथा मातृ भूमि के सुख में कमी का सामना करना पड़ता है तथा घरेलू शान्ति में भी कमी आ जाती है। ऐसा व्यक्ति मानसिक अशान्ति का शिकार बना रहता है तथा कभी सुख और कभी दु:ख को प्राप्त करता रहता है। गुप्त युक्तियों द्वारा विशेष प्रयत्न करने पर भी उसे अधिक सफलता प्राप्त नहीं होती।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेष लग्न: पंचमभाव: राहु

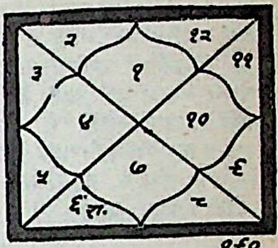


१८९

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन के क्षेत्र में बहुत कठिनाइयों के बाद थोड़ी सफलता मिलती है तथा गुप्त युक्तियों में प्रवीणता प्राप्त होती है। इसके साथ ही उसे सन्तान पक्ष से भी कष्ट का अनुभव होता है। अन्ततः अत्यधिक गुप्त युक्तियों के बल पर उसे सामान्य सफलता प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक परेशानियों एवं झंझटों में फंसा रहता है तथा अधिक विद्वान् भी नहीं होता।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली में 'षष्ठ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेष लग्न: षष्ठभाव: राहु

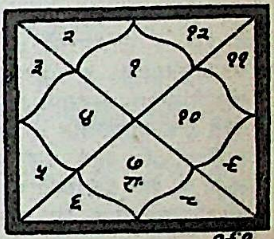


१६०

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि में स्थित राहु के प्रभाव से जातक शत्रुओं, झगड़ों तथा परेशानियों के बीच अत्यधिक हिम्मत से काम लेकर अपना प्रभाव स्थापित करता है तथा कठिन-से-कठिन परिस्थिति में भी अपने धैर्य और साहस को नहीं छोड़ता। राहु की ऐसी स्थिति के कारण जातक को कभी-कभी बहुत मुसीबतों में फंस जाना पड़ता है, परन्तु हर बार वह अपने साहस एवं हिम्मत के द्वारा उन सब पर विजय प्राप्त कर लेता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' राशि में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेष लग्न: सप्तमभाव: राहु

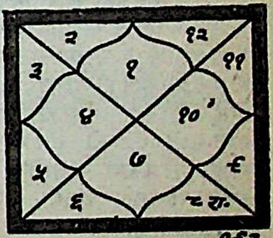


१६१

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर बैठे हुए राहु के प्रभाव से जातक स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में चिन्ता, परेशानी एवं कष्टों का अनुभव करता है, परन्तु मित्र राशिस्थ होने के कारण अपनी चतुराई एवं गुप्त युक्तियों से उन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर लेता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को पारिवारिक जीवन में अनेक प्रकार की मुसीबतों का सामना करना पड़ता है तथा बड़े प्रयत्नों के बाद उसका येन-केन प्रकारेण निर्वाह हो पाता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' राशि में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेष लग्न: अष्टमभाव: राहु



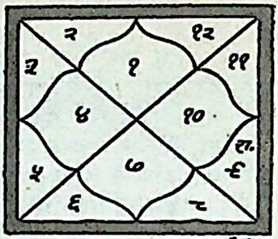
१६२

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने जीवन में अनेक बार मृत्यु तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा एक के बाद दूसरी कठिनाइयों, संघर्षों एवं मुसीबतों में फंस जाना पड़ता है। इसके साथ ही उसे पुरातत्त्व के सम्बन्ध में भी हानि उठानी पड़ती है। उसे जीवन-निर्वाह के लिये गुप्त-युक्तियों का सहारा लेना पड़ता है तथा सभी क्षेत्रों में चिन्तायें तथा परेशानियाँ बनी रहती हैं। ऐसे जातक का जीवन सुखमय व्यतीत नहीं हो पाता।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मेष लग्नः नवमभावः राहु

नवें त्रिकोण तथा भाग्य भवन में अपने शत्रु गुरु की राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ एवं परेशानियाँ उपस्थित रहती हैं। साथ ही धर्म-पालन से भी अश्रद्धा बनी रहती है। सुयश के स्थान पर हानि प्रायः प्राप्त होती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले व्यक्ति का जीवन निराशा एवं कष्टों से भरा रहता है और अन्त में बहुत तकलीफें उठाने के बाद बहुत थोड़ी सफलता प्राप्त होती है।

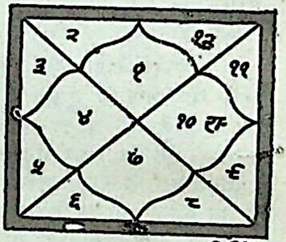


१९३

जिस जाति का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म कुण्डली के 'दशम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे राहु का फलादेश नीचे लिखे के अनुसार समझना चाहिये—

मेष लग्नः दशमभावः राहु

दसवें केन्द्र, पिता एवं राज्य के घर में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर बैठे हुए राहु के प्रभाव से जातक को अपने पिता तथा राज्य के पक्ष में कठिनाइयों एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार मान, प्रतिष्ठा, अधिकार नौकरी अथवा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कष्ट उठाने पड़ते हैं। भाग्योन्नति के लिये अत्यधिक प्रयत्नशील रहने पर भी बहुत कम सफलता प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक दुःखी, चिन्तित तथा परेशानियों का शिकार बना रहता है।

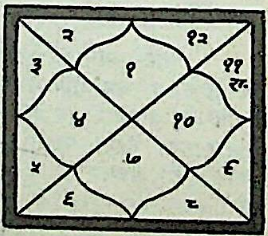


१९४

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये।

मेष लग्नः एकादशभावः राहु

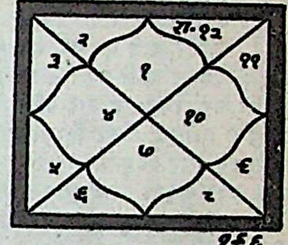
ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र शनि की राशि पर बैठे राहु के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है तथा उपार्जित लाभ होने के योग उपस्थित होते रहते हैं, परन्तु राहु के क्रूर ग्रह होने के कारण जातक को लाभ प्राप्ति के लिये कठोर परिश्रम करना आवश्यक होता है तथा कभी-कभी आमदनी में कमी एवं हानि के योगों का भी सामना करना पड़ता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक परिश्रमी, स्वार्थी, मितव्ययी ऐश्वर्यवान् तथा सम्पत्तिशाली होता है।



१९५

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये।

मेष लग्न: द्वादशभाव: राहु



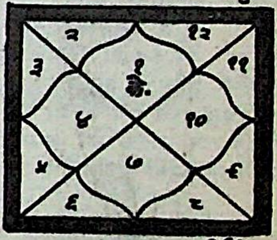
१९६

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु गुरु की राशि में स्थित राहु के प्रभाव से जातक को जीवन में खर्च की अधिकता के कारण विशेष कठिनाइयों एवं मुसीबतों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी कष्ट प्राप्त होता रहता है, परन्तु शुभ ग्रह की राशि पर शुक्र ग्रह की उपस्थिति के कारण जातक शान-शौकत एवं ठाठ-बाट के कामों में ही अधिक खर्च करेगा और उसके कारण समय-समय पर उपस्थित होने वाली कठिनाइयों पर बीच-बीच में विजय प्राप्त कर लिया करेगा। फिर भी वह खर्च एवं कर्ज के बोझ से मुक्त नहीं हो सकेगा।

'मेष' लग्न में 'केतु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: प्रथमभाव: केतु



१९७

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को शारीरिक कष्ट, मानसिक चिन्ताओं तथा अन्य प्रकार की परेशानियों का निरन्तर सामना करना पड़ता है और उसके शरीर में कोई चोट भी लगती है। केतु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी भी आ जाती है। उसे अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है तथा गुप्त युक्तियों एवं हिम्मत का आश्रय लेना पड़ता है। फिर भी, उसके जीवन में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ बनी रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: द्वितीयभाव: केतु

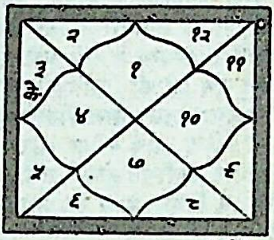


१९८

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के घर में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को शारीरिक कष्ट, चिन्ता, धन-स्थान में कमी, कौटुम्बिक परेशानी, झगड़े-झंझट एवं मतभेदों का शिकार हर समय बना रहता है, परन्तु शुक्र की राशि पर स्थित होने कारण वह गुप्त युक्तियों, चतुराई एवं कठिन परिश्रम के बल पर अपनी आर्थिक स्थिति में थोड़ा बहुत सुधार कर लेता है। यद्यपि वह भीतर से चिन्तित, परेशान तथा निर्धन होता है, परन्तु प्रकट रूप से लोग उसे धनवान ही समझते रहते हैं।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः तृतीयभावः केतु

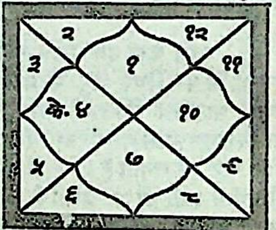


१९९

तीसरे भाई एवं पराक्रम के घर में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम एवं भाई-बहिन के पक्ष मे कमजोरी आ जाती है। उसके भीतर हिम्मत की कमी पाई जाती है, परन्तु वह भीरु स्वभाव का होने पर भी गुप्त युक्तियों से काम लेकर अपना स्वार्थ-साधन करता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक अत्यधिक परिश्रम करने के उपरान्त भी अल्प-सफलता प्राप्त करता है तथा उसके पास केवल गुप्त युक्तियों का ही सहारा रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः चतुर्थभावः केतु

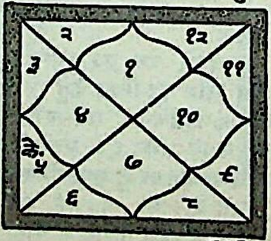


२००

चौथे केन्द्र, माता तथा भूमि के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि में स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता एवं भूमि, सम्पत्ति, मकान आदि के पक्ष में कष्ट प्राप्त होता रहता है तथा कौटुम्बिक मामलों में भी अशान्ति बनी रहती है। चन्द्रमा की राशि पर केतु की स्थिति के कारण जातक को मानसिक-शक्ति का बल प्राप्त होता है तथा उसी के द्वारा थोड़े बहुत सुख की भी प्राप्ति होती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को अपना देश छोड़कर विदेशों में निवास करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' मे 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः पंचमभावः केतु

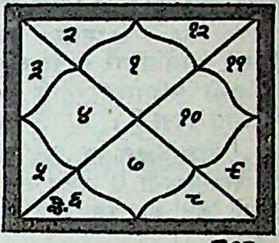


२०१

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि में स्थित केतु के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उसकी मस्तिष्क शक्ति निर्बल होती है, अतः विद्या की शक्ति भली-भाँति प्राप्त नहीं हो पाती। इसी प्रकार उसे सन्तान पक्ष से भी कष्ट का अनुभव होता है। अत्यधिक उद्योग एवं परिश्रम करते रहने पर भी सफलता बहुत कम मिल पाती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक का स्वभाव भी उग्र होता है और उसकी वाणी कठोर होती है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेप लग्न: पष्ठभाव: केतु

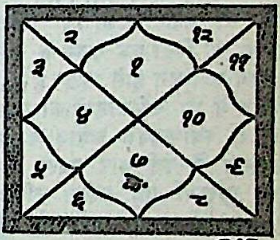


२०२

छठे शत्रु स्थान में अपने मित्र बुध की कन्याराशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक अपने शत्रु पक्ष पर सदैव विजय प्राप्त करता रहता है। उसकी विवेक शक्ति, हिम्मत एवं बहादुरी प्रबल होती है, परन्तु ऊपर से बहुत शक्तिशाली प्रतीत होने पर भी मन के भीतर थोड़ी बहुत कमजोरी छिपी रहती है तथा ननसाल के पक्ष से कुछ हानि उठानी पड़ती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक झगड़े, मुकद्दमे एवं शत्रुओं पर विजय पाने वाला, विवेक शक्ति से सम्पन्न तथा हिम्मती होता है।

जिस जातक का जन्म 'मेप' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेप लग्न: सप्तमभाव: केतु

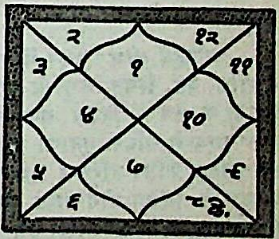


२०३

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर बैठे हुए केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा पारिवारिक गुत्थियों को सुलझाने में बड़ी चतुराई से काम लेना पड़ता है। केतु के स्वाभाविक गुण के फलस्वरूप जातक अपने व्यवसाय में परिवर्तन करता रहता है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में त्रुटियों का अनुभव करते हुए भी गुप्त युक्तियों द्वारा सफलता प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'मेप' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेप लग्न: अष्टमभाव: केतु



२०४

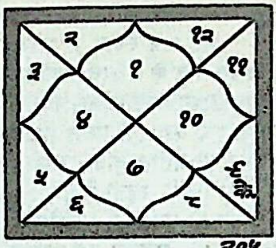
आठवें आयु, मृत्यु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर बैठे हुए केतु के प्रभाव से जातक को अपने जीवन में अनेक बार मृत्यु-तुल्य कष्ट का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व के सम्बन्ध में भी हानि उठानी पड़ती है।

ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक गुप्त युक्तियों के के द्वारा थोड़ी-बहुत शक्ति प्राप्त करता है परन्तु सुखी नहीं होता। उसके शरीर में कोई-न-कोई रोग भी अपना घर किये रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मेप' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे आगे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण तथा धर्म के भवन में बृहस्पति की मीन राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है तथा धर्म के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है।

मेष लग्न: नवमभाव: केतु

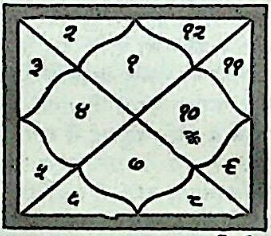


२०५

ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक अत्यन्त साहसी, मजबूत हृदय वाला, भाग्यवान् धनी तथा धर्मात्मा होता है परन्तु केतु के स्वाभाविक गुण के फलस्वरूप उसके जीवन मे अनेक प्रकार के परिवर्तन आते रहते हैं और कभी-कभी कठिनाइयों तथा परेशानियों का सामना भी करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: दशमभाव: केतु

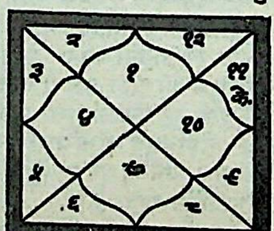


२०६

दसवें राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता एवं राज्य के द्वारा संकट एवं परेशानी के योग उपस्थित होते रहते हैं तथा व्यवसाय-संचालन के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। केतु के स्वाभाविक प्रभाव के फलस्वरूप उसे अपने व्यवसाय में कई बार प्रयत्न करना पड़ता है तथा गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम के द्वारा सफलता एवं मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्न: एकादशभाव: केतु



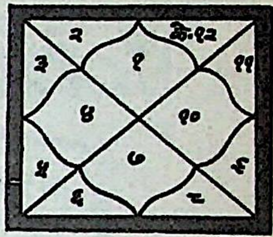
२०७

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है और वह सामान्य से अधिक मुनाफा उठाने का ऐवी होता है। ऐसा जातक कठिन परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों के बल पर लाभ के विशेष योग प्राप्त करता है, परन्तु केतु के स्वाभाविक गुण के फलस्वरूप उसे अपनी आय के साधनों में अनेक बार परिवर्तन करने पड़ते हैं तथा विशेष उद्योग भी करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

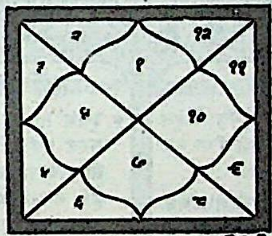
मेष लग्नः द्वादशभावः केतु

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को खर्च के मामलों में अनेक प्रकार की कठिनाइयों तथा परेशानियों का अनुभव करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी कष्ट प्राप्त होता है। केतु के स्वाभाविक गुण के फलस्वरूप खर्च तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के परिवर्तन होते रहेंगे, परन्तु शुभ ग्रह की राशि पर केतु की स्थिति होने के कारण थोड़ा बहुत लाभ भी मिलता रहेगा।



२०८

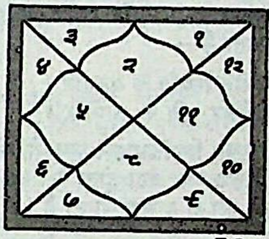
'मेष' लग्न का फलादेश समाप्त



२०९

* * *

वृषभ लग्न



२१०

[वृषभ लग्न वाली कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग फलादेश]

वृषभ लग्न का संक्षिप्त फलादेश

वृषभ लग्न में जन्म लेने वाले जातक के शरीर का रंग गोरा अथवा गेहुँआ होता है। वह स्त्रियों जैसे स्वभाव वाला शौकीन तबियत का, मधुर भाषी, रजोगुणी, लम्बे दाँत तथा कुंचित केशों वाला, श्रेष्ठ संगति में बैठने वाला, ऐश्वर्यशाली, उदार स्वभाव वाला, भक्त, गुणवान्, बुद्धिमान्, धैर्यवान्, शूर-वीर, साहसी, अत्यन्त यशस्वी, अत्यन्त शान्त प्रकृति का, परन्तु अवसर पर लड़ने अथवा युद्ध करने में अपने प्रबल पराक्रम को प्रकट करने वाला, अपने परिवार वालों से अनाहत, कलहयुक्त, शास्त्र से अभिघात पाने वाला, धन-क्षय से युक्त, मानसिक-रोग अथवा चिन्ताओं से पीड़ित एवं दुःखी रहने वाला, मित्र-वियोगी तथा पूर्णायु प्राप्त करने वाला होता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार वृषभ लग्न में जन्म लेने वाला जातक अपनी ३६ वर्ष की आयु के पश्चात् अनेक प्रकार के दुःख भी भोगता है।

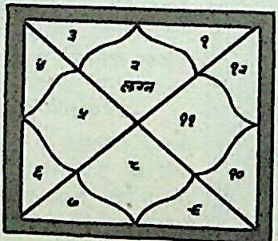
वृषभ लग्न

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव मुख्यतः दो प्रकार से पड़ता है—

(१) ग्रहों की जन्मकालीन स्थिति के अनुसार।
(२) ग्रहों की दैनिक गोचर गति के अनुसार।

जातक की जन्मकालीन ग्रह स्थिति 'जन्म-कुण्डली' में दी गई होती है। उसमें जो ग्रह जिस भाव में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित प्रभाव निरन्तर स्थायी रूप से डालता रहता है।

दैनिक गोचर गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसकी जानकारी पंचाङ्ग द्वारा की जा सकती है। ग्रहों की दैनिक गति के सम्बन्ध में या तो किसी ज्योतिषी से पूछ लेना चाहिये अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिये। इस सम्बन्ध में पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।



२११

दैनिक गोचर गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर अस्थायी रूप से अपना प्रभाव डालते हैं।

उदाहरण के लिये यदि किसी जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य वृष राशि पर प्रथमभाव में बैठा है, तो उसका स्थायी प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या २१२ के अनुसार स्थायी रूप से पड़ता रहेगा, परन्तु यदि दैनिक ग्रह गोचर में कुण्डली देखते समय सूर्य मिथुन राशि के द्वितीयभाव में बैठा है, तो उस स्थिति में वह उदाहरण-कुण्डली संख्या ३२४ के अनुसार उतनी अवधि तक जातक के जीवन पर अपना अस्थायी प्रभाव अवश्य डालेगा, जब तक कि वह मिथुन राशि से हटकर कर्क राशि में नहीं चला जाता। कर्क राशि में पहुँच कर वह कर्क राशि के अनुरूप प्रभाव डालना आरम्भ कर देगा। अतः जिस जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य वृष राशि के प्रथम भाव में बैठा हो, उसे, उदाहरण-कुण्डली संख्या २१२ में फलादेश देखने के पश्चात्, यदि उन दिनों सूर्य मिथुन राशि के द्वितीय भाव में बैठा हो, तो उदाहरण-कुण्डली संख्या ३२४ का फलादेश भी देखना चाहिये तथा इन दोनों फलादेशों के समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को अपने वर्तमान समय पर प्रभावकारी समझना चाहिये। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विषय में जान लेना चाहिये।

वृषभ लग्न में जन्म लेने वाले जातकों की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदाहरण-कुण्डली संख्या २१२ से ३१६ तक में किया गया है। पंचाङ्ग की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार वृष लग्न में जन्म लेने वाले जातकों को किन-किन उदाहरण-कुण्डलियों द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना चाहिये—इसका विस्तृत वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है। अतः उसके अनुसार ग्रहों की तात्कालिक स्थिति के सामयिक प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। तदुपरान्त दोनों फलादेशों के समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिये।

इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक जन्म-कुण्डली का ठीक-ठीक फलादेश सहज में ही ज्ञात कर सकता है।

टिप्पणी—(१) पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश से ऊपर अथवा ३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह सूर्य से अस्त होता है, वह भी जातक के ऊपर अपना प्रभाव या तो बहुत कम डालता है, या फिर पूर्णतः प्रभावहीन रहता है।

(२) स्थायी जन्म-कुण्डली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा अपनी कुण्डली में लिखवा लेने चाहिये, ताकि उनके अंशों के विषय में बार-बार जानकारी प्राप्त करने के झंझट से बचा जा सके। तात्कालिक गोचर के ग्रहों के अंशों की जानकारी पंचाङ्ग द्वारा अथवा किसी ज्योतिषी से पूछ कर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(३) स्थायी जन्म-कुण्डली अथवा तात्कालिक ग्रह-गति कुण्डली में यदि किसी भाव में एक से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन स्थानों पर उनकी दृष्टियाँ पड़ती हैं, जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता है। इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में 'ग्रहों की युति का प्रभाव' शीर्षक के अन्तर्गत विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन किया गया है, अतः इस विषय की जानकारी वहाँ से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(४) विंशोत्तरी दशा के सिद्धान्तानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० वर्ष की मानी जाती है। इस आयु-अवधि में जातक नवग्रहों की दशाओं का भोग कर लेता है। विभिन्न ग्रहों का दशा-काल भिन्न-भिन्न होता है। परन्तु अधिकांश व्यक्ति इतनी लम्बी आयु तक जीवित नहीं रह पाते, अतः वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं का भोग कर पाते हैं। जातक के जीवन के जिस काल में जिस ग्रह की दशा—जिसे 'महादशा' कहा जाता है—चल रही होती है, जन्म-कालीन ग्रह-स्थिति के अनुसार उसके जीवन-काल की उतनी अवधि उस ग्रह-विशेष के प्रभाव से विशेष रूप से प्रभावित रहती है। जातक का जन्म किस ग्रह की महादशा में हुआ है और उसके जीवन में किस अवधि से किस अवधि तक किस ग्रह की महादशा चलेगी और वह महादशा जातक के ऊपर अपना क्या विशेष प्रभाव डालेगी—इन सब बातों का उल्लेख भी तीसरे प्रकरण में किया गया है।

इस प्रकार (१) जन्म-कुण्डली, (२) तात्कालिक ग्रह-गोचर कुण्डली एवं (३) ग्रहों की महादशा—इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है। अतः इन तीनों के समन्वय स्वरूप फलादेश का ठीक-ठीक निर्णय करके अपने भूत, वर्त्तमान तथा भविष्य-कालीन जीवन के विषय में सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिये।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'सूर्य' का फलादेश

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २१२ से २२३ तक में देखना चाहिये।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २१२ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'सूर्य' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २१३ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस महीने में 'सूर्य' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २१४ के अनुसार समझना चाहिये।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २१५ के अनुसार समझना चाहिये।

(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २१६ के अनुसार समझना चाहिये।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २१७ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २१८ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २१९ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २२० के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २२१ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २२२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में सूर्य 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २२३ के अनुसार समझना चाहिये।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष (२) जन्म लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २२४ से २३५ तक में देखना चाहिये।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह गोचर कुण्डली के विभिन्न-भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए।

(१) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'वृष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २२४ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मिथुन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २२५ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २२६ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'सिंह' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २२७ के अनुसार समझना चाहिये।

(५) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कन्या' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २२८ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'तुला' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २२९ के अनुसार समझना चाहिये।

(७) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २३० के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'धनु' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २३१ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मकर' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २३२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २३३ के अनुसार समझना चाहिये।

(११) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मीन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २३४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मेष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुण्डली संख्या २३५ के अनुसार समझना चाहिये।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों के लिए
जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित
'मङ्गल' का फलादेश

वृष (२) जन्म लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मङ्गल' का स्थाई-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २३६ से २४७ तक में देखना चाहिये।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह गोचर कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मङ्गल' का अस्थाई फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए।

(१) जिस महीने में 'मङ्गल' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २३६ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'मङ्गल' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २३७ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २३८ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'मंगल' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २३९ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'मङ्गल' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २४० के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'मङ्गल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २४१ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'मङ्गल' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २४२ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'मङ्गल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २४३ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने के 'मङ्गल' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २४४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'मङ्गल' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २४५ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'मङ्गल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २४६ के अनुसार समझना चाहिये ।

(१२) जिस महीने में 'मङ्गल' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २४७ के अनुसार समझना चाहिए।

वृष (२) लग्न-वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'बुध' का फलादेश

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थाई फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २४८ से २५९ तक में देखना चाहिये।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थाई फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २४८ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस महीने में 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २४९ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस महीने में 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २५० के अनुसार समझना चाहिये।

(४) जिस महीने में 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २५१ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २५२ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'बुध' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २५३ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'बुध' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २५४ के अनुसार समझना चाहिये ।

(८) जिस महीने में 'बुध' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २५५ के अनुसार समझना चाहिये।

(९) जिस महीने में 'बुध' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २५६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'बुध' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २५७ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'बुध' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २५८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'बुध' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुण्डली संख्या २५९ के अनुसार समझना चाहिए।

वृष (१) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'गुरु' का फलादेश

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थाई-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २६० से २७१ तक में देखना चाहिए।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थाई-फलादेश विभिन्न उदाहरण कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये।

(१) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृषभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २६० के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २६१ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २६२ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'गुरु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली सख्या २६३ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २६४ के अनुसार समझना चाहिये।

(६) जिस वर्ष में 'गुरु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २६५ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २६६ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस वर्ष में 'गुरु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २६७ के अनुसार समझना चाहिये।

(९) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २६८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २६९ के अनुसार समझना चाहिये।

(११) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २७० के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २७१ के अनुसार समझना चाहिये।

वृष (२) लग्न-वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में

'शुक्र' का फलादेश

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थाई-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २७२ से २८३ तक में देखना चाहिए।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थाई फलादेश उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए।

(१) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २७२ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २७३ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस महीने में 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २७४ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुण्डली संख्या २७५ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'शुक्र' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २७६ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'शुक्र' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २७७ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २७८ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'शुक्र' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २७९ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'शुक्र' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुण्डली संख्या २८० के अनुसार समझना चाहिए—

(१०) जिस महीने में 'शुक्र' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २८१ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'शुक्र' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २८२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'शुक्र' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २८३ के अनुसार समझना चाहिये ।

वृषभ (२) लग्न-वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'शनि' का फलादेश

वृष (२) जन्म लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थाई-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २८४ से २९५ तक में देखना चाहिए—

वृष (२) जन्म लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित शनि का अस्थाई फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २८४ के अनुसार समझना चाहिये ।

(२) जिस वर्ष में 'शनि' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २८५ के अनुसार समझना चाहिये ।

(३) जिस वर्ष में 'शनि 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २८६ के अनुसार समझना चाहिए ।

(४) जिस वर्ष में 'शनि' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २८७ के अनुसार समझना चाहिए ।

(५) जिस वर्ष में 'शनि' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २८८ के अनुसार समझना चाहिए ।

(६) जिस वर्ष में 'शनि' तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २८९ के अनुसार समझना चाहिये ।

(७) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २९० के अनुसार समझना चाहिये ।

(८) जिस वर्ष ने 'शनि' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २९१ के अनुसार समझना चाहिये ।

(९) जिस वर्ष में 'शनि' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २९२ के अनुसार समझना चाहिए ।

(१०) जिस वर्ष में 'शनि' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २९३ के अनुसार समझना चाहिये ।

(११) जिस वर्ष में 'शनि' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २९४ के अनुसार समझना चाहिये ।

(१२) जिस वर्ष में 'शनि' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २९५ के अनुसार समझना चाहिए ।

वृष(२) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'राहु' का फलादेश

वृष (२) जन्म लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २९६ से ३०७ तक में देखना चाहिए—

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थाई-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

१—जिस वर्ष में 'राहु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २९६ के अनुसार समझना चाहिए।

२—जिस वर्ष में 'राहु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २९७ के अनुसार समझना चाहिए।

३—जिस वर्ष में 'राहु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २९८ के अनुसार समझना चाहिए।

४—जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २९९ के अनुसार समझना चाहिए।

५—जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३०० के अनुसार समझना चाहिए।

६—जिस वर्ष में 'राहु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३०१ के अनुसार समझना चाहिए।

७—जिस वर्ष में 'राहु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३०२ के अनुसार समझना चाहिए।

८—जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३०३ के अनुसार समझना चाहिए।

९—जिस वर्ष में 'राहु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३०४ के अनुसार समझना चाहिए।

१०—जिस वर्ष में 'राहु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३०५ के अनुसार समझना चाहिए

११—जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३०६ के अनुसार समझना चाहिए।

१२—जिस वर्ष मे 'राहु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३०७ के अनुसार समझना चाहिए।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'केतु' का फलादेश

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३०८ से ३१९ तक में देखना चाहिए।

वृष (२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३०८ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'केतु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३०९ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'केतु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३१० के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'केतु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३११ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'केतु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३१२ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'केतु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३१३ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३१४ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'केतु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुन्डली संख्या ३१५ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'केतु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३१६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'केतु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३१७ के अनुसार समझना चाहिए।

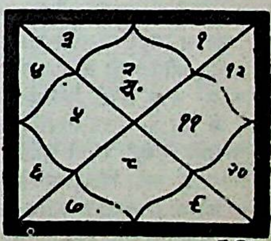
(११) जिस वर्ष में 'केतु' 'मीन' राशि पर हो, उस उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुण्डली संख्या ३१८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'केतु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३१९ के अनुसार समझना चाहिए।

'वृष' लग्न में 'सूर्य' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न से हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: प्रथमभाव: सूर्य

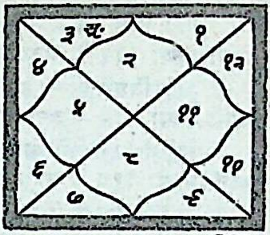


२१२

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में शत्रु शुक्र की वृष राशि पर बैठे हुए सूर्य के प्रभाव से जातक को माता तथा भूमि, मकान आदि का सामान्य सुख प्राप्त होता है तथा शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्र दृष्टि से सप्तमभाव को मंगल की वृश्चिक राशि में देखता है, अतः जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सुख, सफलता तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः द्वितीयभावः सूर्य

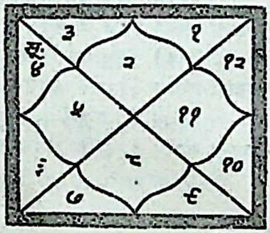


२१३

द्वितीय धन-कुटुम्ब के घर में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर बैठे हुए सूर्य के प्रभाव से जातक को धन-सम्पत्ति तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है, परन्तु माता के सुख में कुछ कमी बनी रहती है और भूमि-मकान आदि का सुख प्राप्त होते हुए भी उसका श्रेष्ठ उपयोग नहीं हो पाता। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से आयु तथा पुरातत्त्व के अष्टमभाव को अपने मित्र गुरु की धनु राशि में देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ प्राप्त होता है तथा दैनिक जीवन में भी सुख मिलता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः तृतीयभावः सूर्य

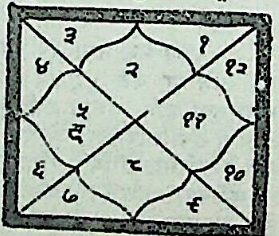


२१४

तीसरे पराक्रम एवं सहोदर स्थान पर अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर बैठे हुए सूर्य के प्रभाव से जातक को माता एवं भूमि, मकान आदि घरेलू सुख की प्राप्ति होती है। तृतीय भाव में उष्णस्वभावी ग्रह विशेष शक्तिशाली होता है, अतः इस स्थान पर सूर्य के कारण जातक अपने पराक्रम द्वारा सफलता एवं सुख को अर्जित तथा उसमें वृद्धि करता रहेगा तथा भाई-बहिन के यथेष्ट सुख को भी प्राप्त करेगा। इस स्थान से सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से नवम भाव को अपने शत्रु शनि की मकर राशि में देखता है, अतः जातक को भाग्योन्नति के लिये कठिन परिश्रम करना पड़ेगा तथा धर्म का पालन करने में कुछ लापरवाही बनी रहेगी।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः चतुर्थभावः सूर्य

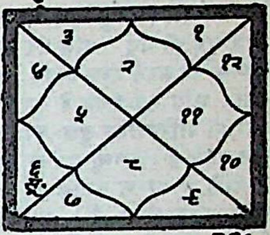


२१५

चौथे माता एवं भूमि के भवन में स्वराशि सिंह स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अपनी माता तथा भूमि, मकान, सम्पत्ति आदि का पूर्ण सुख प्राप्त होता है तथा घरेलू जीवन भी उल्लासमय बना रहता है। तेजस्वी सूर्य के प्रभाव से ऊपरी दिखावा अत्यधिक रहने पर भी जातक के मन के भीतर थोड़ी बहुत अशान्ति बनी रहेगी। इस स्थान से सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः पिता, व्यवसाय एवं राज्य के पक्ष में जातक को थोड़ा बहुत असन्तोष बना रहेगा एवं कठिनाई के साथ सफलता एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: पंचमभाव: सूर्य

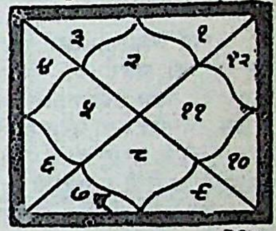


२१६

पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को विद्या तथा सन्तान के पक्ष में वृद्धि एवं सुख की प्राप्ति होगी। ऐसा जातक गम्भीर स्वभाव वाला, बुद्धिमान तथा दूरदर्शी होता है। उसका घरेलू जीवन भी सुख शान्ति एवं प्रसन्नतापूर्ण बना रहता है तथा माता एवं भूमि का सुख भी प्राप्त होता है। इस स्थान से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपने मित्र गुरु की मीन राशि में ग्यारहवें लाभ भवन को देखता है, अतः जातक की आमदनी के साधन भी अच्छे बने रहते हैं और उसे यथेष्ट लाभ प्राप्त होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: षष्ठभाव: सूर्य

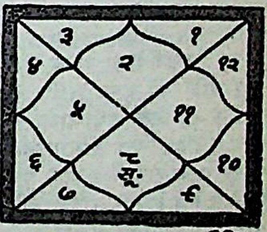


२१७

छठे शत्रु स्थान में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने शत्रु पक्ष से कठिनाइयाँ प्राप्त होती रहती हैं, परन्तु सूर्य चूँकि उग्रग्रह है, अतः वह नीच का होने पर भी शत्रुओं के ऊपर जातक के प्रभाव को बनाये रहता है। ऐसा जातक माता तथा भूमि, मकान आदि का सुख भी कम पाता है और उसे अपनी जन्म भूमि से दूर जाकर रहना पड़ता है। इस स्थान से सूर्य सातवीं उच्च दृष्टि से बारहवें भाव को अपने मित्र भंगल की मेष राशि में देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे सुख प्राप्त होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: सप्तमभाव: सूर्य

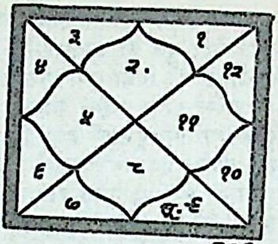


२१८

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख एवं सफलता प्राप्त करता है, साथ ही उसे माता, भूमि, भवन आदि का भी यथेष्ट लाभ होता है। इस स्थान से सूर्य सातवीं दृष्टि से प्रथम भाव को अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि में देखता है, उसके कारण जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है तथा पारिवारिक सुख-साधनों में कुछ कमी बनी है, जिनकी निवृत्ति के लिए शरीर को विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा हृदय में भी थोड़ी बहुत अशान्ति बनी रहती है।

जिस जातत का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः अष्टमभावः सूर्य

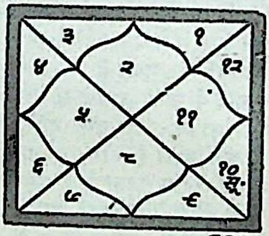


२१९

आठवें मृत्यु तथा पुरातत्व के घर में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने जन्म स्थान से दूर रहना पड़ता है तथा माता, भूमि एवं भवन के सुख में भी कमी आती है, साथ हीं पारिवारिक सुख-शान्ति में भी विघ्न उपस्थित होते रहते हैं। परन्तु सूर्य के सुखेश होकर अष्टमभाव में बैठने के कारण जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से द्वितीयभाव को अपने मित्र बुध की मिथुन राशि में देखता है, अतः जातक कुटुम्ब-द्वारा सुख पाता है तथा धन की वृद्धि करने में सफल होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः नवमभावः सूर्य

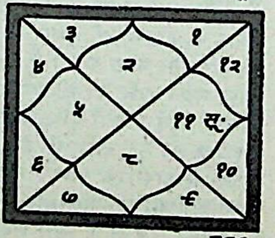


२२०

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को माता तथा भूमि-भवन आदि के सम्बन्ध में कुछ असन्तोष तथा परेशानियों के साथ सफलता प्राप्त होती है, परन्तु घरेलू सुख एवं भाग्य की वृद्धि भी होती रहती है। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से तृतीयभाव को अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देखता है, उसके कारण जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख भी मिलता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को अपने बुद्धि-बल तथा पराक्रम के द्वारा ही सफलता मिलती है, परन्तु वह भी पूर्ण सफलता नहीं होती।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः दशमभावः सूर्य

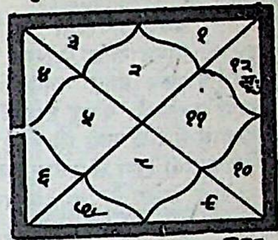


२२१

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता तथा राज्य के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है, परन्तु शत्रु के राशिस्थ होने के कारण पूर्ण सफलता नहीं मिल पाती। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से चतुर्थभाव को स्वराशि में देखता है, उसके प्रभाव से जातक को माता के सुख एवं भूमि-भवन आदि के सुख का लाभ होता है तथा पारिवारिक सुख में वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव, में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्न: एकादशभाव: सूर्य

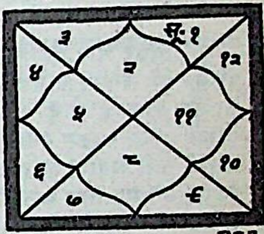


२२२

ग्यारहवें लाभ तथा ऐश्वर्य भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है। इसके साथ ही माता, भूमि, भवन तथा कुटुम्ब का सुख भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है। इस स्थान से सूर्य सातवीं दृष्टि से पंचमभाव को अपने सामान्य मित्र बुध की कन्या राशि में देखता है, अतः जातक की विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में भी वृद्धि होती है तथा उसका जीवन आनन्दपूर्वक व्यतीत होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्न: द्वादशभाव: सूर्य



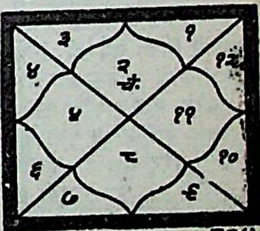
२२३

बारहवें व्ययभाव में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध सुखदायक बना रहता है, परन्तु पारिवारिक सुख एवं माता के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है। इसके साथ ही भूमि-मकान आदि के सम्बन्ध में भी थोड़ी बहुत हानि उठानी पड़ती है। ऐसा जातक यदि अपने जन्म स्थान को छोड़कर अन्य स्थान पर रहे तो उसे विशेष लाभ होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से शत्रु शुक्र को तुला राशि से षष्ठ-भाव में देखता है। जिसके कारण जातक को शत्रु पक्ष में कठिनाइयों से प्रभाव कम रखना पड़ता है।

'वृषभ' लग्न में 'चन्द्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्न: प्रथमभाव: चन्द्रमा

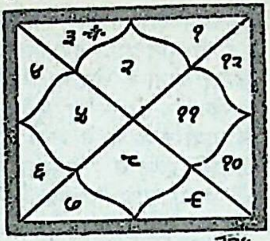


२२४

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर उच्च चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से जातक का मनोबल बहुत बढ़ा रहता है। साथ ही उसे भाई-बहिनों का सुख एवं पराक्रम द्वारा सफलता तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। परन्तु यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं नीच दृष्टि से सप्तमभाव को भी देखता है, अतः उसे स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ असन्तोष बना रहता है तथा परिवार का संचालन करने में भी उसे कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्न: द्वितीयभाव: चन्द्रमा

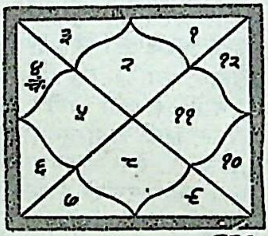


२२५

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि में स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपने पराक्रम द्वारा धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख को प्राप्त करता है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख एवं शारीरिक पुरुषार्थ में कुछ कमी भी बनी रहती है। इस स्थान से सूर्य सातवीं दृष्टि से अष्टमभाव को अपने मित्र गुरु की धनु राशि में देखता है, अत: जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। संक्षेप में ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: तृतीयभाव: चन्द्रमा

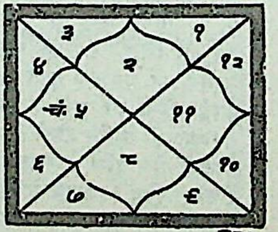


२२६

तीसरे भाई एवं पराक्रम के घर में अपनी राशि पर बैठे हुये चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है, जिसके कारण जातक बड़ा हिम्मती, परिश्रमी, पुरुषार्थी, साहसी तथा प्रसन्नचित बना रहता है और इन सबके कारण उसे यश तथा मान भी प्राप्त होता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से अपने शत्रु शनि की मकर राशि में नवमभाव को देखता है, जिसके कारण जातक को अपने भाग्य की वृद्धि के लिये विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा धर्म पालन में भी कोई अधिक रुचि नहीं होती।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्न: चतुर्थभाव: चन्द्रमा

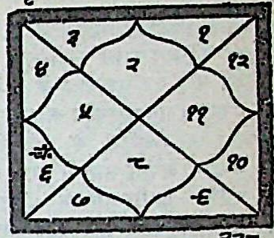


२२७

चौथे केन्द्र, माता, सुख तथा भूमि के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर बैठे हुये चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता के सुख में वृद्धि तथा भूमि, मकान, सुख इत्यादि का लाभ होता है। इसके साथ ही उसके भाई-बहिन तथा पराक्रम के पक्ष में भी उन्नति होती है। घरेलू सुख के साधनों में भी सफलता मिलती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से दशमभाव को अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि में देखता है, अत: जातक को पिता तथा राज्य के क्षेत्र में कुछ परिश्रम के बाद सफलता प्राप्त होगी—ऐसा समझना चाहिए।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचमभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्नः पंचमभावः चन्द्रमा

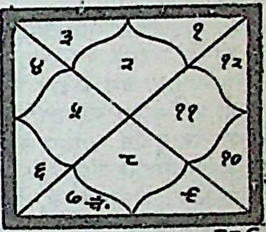


२२८

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के भाव में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त होती है। साथ ही छोटे भाई-बहिनों से सुन्दर सम्बन्ध बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से अपने सामान्य मित्र बृहस्पति की मीन राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को अपने मनोबल एवं बुद्धि-योग के द्वारा आय, सम्पत्ति तथा ऐश्वर्य के पक्ष में भी विशेष सफलता प्राप्त होती रहेगी तथा जातक सुखी एवं धनी बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः षष्ठभावः चन्द्रमा

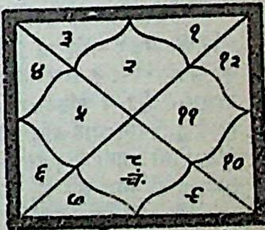


२२९

छठे शत्रु एवं रोग स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में प्रभाव प्राप्त होगा तथा कुछ परेशानियों के साथ झगड़े-झंझटों के मामलों में सफलता प्राप्त करेगा। पराक्रमेश चन्द्रमा की छठे भाव में स्थिति के कारण जातक के मन के भीतर बड़ी हिम्मत तथा शक्ति रहने पर भी कुछ परेशानियाँ बनी रहेंगी तथा भाई-बहिन के सम्बन्धों में भी कुछ मन-मुटाव रहेगा। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से अपने मित्र मंगल की मेष राशि में व्यय भाव को देखता है, अतः जातक खर्च खूब करेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में लाभ उठायेगा।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः सप्तमभावः चन्द्रमा

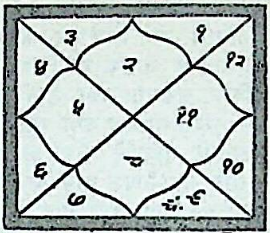


२३०

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में स्थित अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में चिन्ता, हानि तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। साथ ही भाई-बहिन के सम्बन्धों में भी त्रुटि बनी रहेगी। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं उच्च दृष्टि से अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृष राशि में शरीर स्थान को देखता है, अतः जातक का शरीर सुन्दर होगा और उसे हृदय के भीतर शक्ति एवं बाहर यश तथा मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति भी होती रहेगी।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश लिखे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: अष्टमभाव: चन्द्रमा

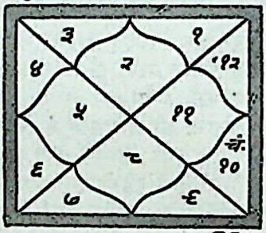


२३१

आठवें मृत्यु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में लाभ प्राप्त होगा, परन्तु पराक्रम स्थान कमजोर हो जाने के कारण पुरुषार्थ एवं भाई-बहिन के सुख में कमी बनी रहेगी। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से अपने मित्र बुध की मिथुन राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक को धन तथा कुटुम्ब के सम्बन्ध में कुछ सफलता प्राप्त होगी, परन्तु उसके लिए उसे विशेष परिश्रम करना पड़ेगा।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: नवमभाव: चन्द्रमा

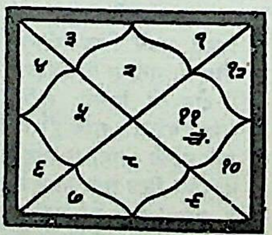


२३२

नवें त्रिकोण तथा भाग्य भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। साथ ही भाई-बहिन का सहयोग भी मिलता है। फलतः जातक भाग्यवान् एवं धर्मात्मा समझा जाता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से कर्क राशि के स्वक्षेत्र में तृतीय भाव को भी देखता है, अतः उसे भाई-बहिन तथा पराक्रम के क्षेत्र में भी विशेष शक्ति प्राप्त होती है। ऐसी ग्रह स्थिति का जातक उद्योगी, स्फूर्तिवान्, हिम्मतवर तथा प्रसन्न स्वभाव वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: दशमभाव: चन्द्रमा

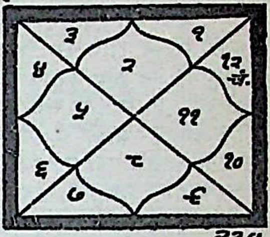


२३३

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का अपने पिता के साथ थोड़ा मतभेद बना रहता है तथा राजकीय क्षेत्र में कठिन परिश्रम के द्वारा सफलता प्राप्त होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम की सहज वृद्धि होती रहती है। इस स्थान से चन्द्रमा की सातवीं दृष्टि अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि वाले चतुर्थ भवन में पड़ती है, अतः जातक को माता, भूमि, मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है और पुरुषार्थ द्वारा घरेलू सुख में भी वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृप लग्न: एकादशभाव: चन्द्रमा

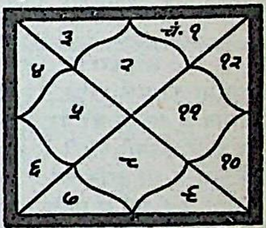


२३४

ग्यारहवें लाभ एवं आमदनी के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आय के क्षेत्र में. अपने पुरुषार्थ द्वारा बड़ी सफलता प्राप्त होती है। साथ ही भाई-बहिन एवं पराक्रम का लाभ भी मिलता है। उन्नति करने के लिए उसके विचारों में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है तथा उसे इच्छित सम्पत्ति एवं ऐश्वर्य प्राप्त होते रहते हैं। इसी स्थान से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से अपने मित्र बुध की कन्या राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में सफलता प्राप्त होती रहेगी। ऐसा जातक विद्वान, बुद्धिमान तथा मधुरभाषी होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृप लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृप लग्न: द्वादशभाव: चन्द्रमा



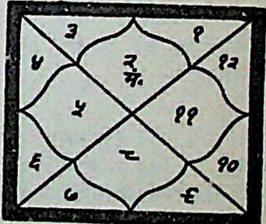
२३५

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र मंगल की मेप राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे शक्ति प्राप्त होगी। साथ ही भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम की भी हानि होगी। इस स्थान से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुलाराशि में पष्ठभाव को देख रहा है, अतः जातक शत्रु पक्ष एवं झगड़े झंझट के मामलों में बड़ी युक्तियों से काम लेकर सफलता प्राप्त करेगा।

'वृष' लग्न में 'मंगल' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृप' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृप लग्न: प्रथमभाव: मंगल

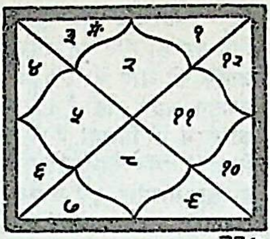


२३६

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को शारीरिक-शक्ति का लाभ होता है तथा बाहरी स्थानों से अच्छे सम्बन्ध स्थापित होते हैं। परन्तु मंगल के व्ययेश होने के कारण धातुक्षीणता, रक्त विकार, निर्बलता आदि की शिकायत भी रहती है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि के भवन को देखता है, अतः माता एवं भूमि के सुख में कमी रहती है। सातवीं दृष्टि से सप्तम केन्द्र भाव को स्वक्षेत्र में देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख प्राप्त होता है और आठवीं मित्र दृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व सम्बन्धी कठिनाइयाँ तथा हानियाँ उपस्थित होती रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'वृप' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: द्वितीयभाव: मंगल

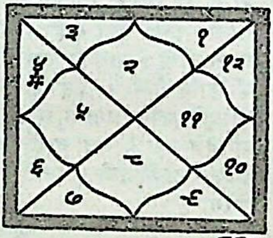


२३७

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जानक को धन तथा कुटुम्ब के सम्बन्ध में परेशानियाँ बनी रहती हैं, साथ ही स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में भी कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्र दृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में हानि उठानी पड़ती है। सातवीं मित्र दृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में भी हानि एवं चिन्ताओं का सामना करना पड़ता है। आठवीं उच्च दृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती रहती है और जातक भाग्यवान् समझा जाता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो, और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: तृतीयभाव: मंगल

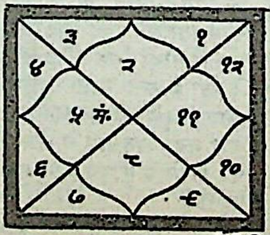


२३८

तीसरे पराक्रम एवं भाई के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को पराक्रम तथा भाई-बहिन के पक्ष में हानि उठानी पड़ती है, साथ ही स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी हानि एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यहाँ से मंगल की चौथी शत्रु-दृष्टि षष्ठभाव में पड़ती है, अतः जातक के शत्रु नष्ट हो जाते हैं। सातवीं उच्च दृष्टि नवमभाव में पड़ती है, अतः भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है और आठवीं शत्रु दृष्टि दशमभाव में पड़ने से जातक को पिता तथा राज्य के पक्ष से हानि एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है। साथ ही उनकी मान-प्रतिष्ठा एवं उन्नति के क्षेत्र में भी रुकावटें आती रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये —

वृष लग्न: चतुर्थ भाव: मंगल



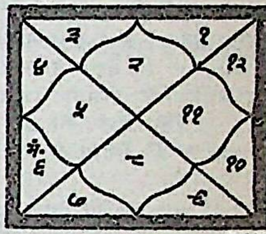
२३९

चौथे केन्द्र, माता तथा सुख स्थान में अपने सूर्य की सिंह राशि में स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को माता के सुख एवं भूमि-मकान आदि के सम्बन्ध में हानि प्राप्त होती है तथा घरेलू-सुख में भी अशान्ति का वातावरण बनता है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से स्वक्षेत्र में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है। खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उन्नति प्राप्त होती है। सातवीं शत्रु दृष्टि के दशम-

भाव में पड़ने से पिता एवं राज्य के पक्ष में हानि होती है तथा आठवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को देखने से आमदनी के साधनों में वृद्धि होती है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से देर में लाभ मिलने का योग बनता है ।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: पंचमभाव: मंगल

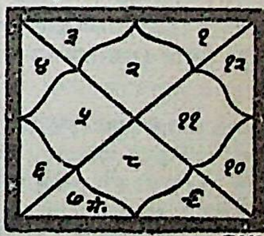


२४०

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भाव में अपने मित्र बुध की वृष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में हानि एवं चिन्ता के योग उपस्थित होते हैं । साथ ही मंगल के व्ययेश होने के कारण स्त्री-पक्ष से असन्तोष रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाई के साथ सफलता मिलती है । यहाँ से मंगल चौथी मित्र दृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में हानि के अवसर उपस्थित होते हैं । सातवीं मित्र दृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा आठवीं दृष्टि से द्वादशभाव को स्वराशि में देखने के कारण खर्च की अधिकता रहती है तथा परिश्रम एवं खर्च के द्वारा व्यवसाय में वृद्धि होती है ।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न:षष्ठभाव:मंगल

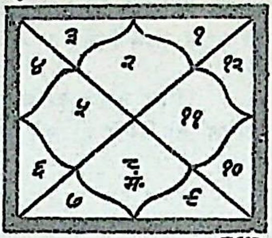


२४१

छठे शत्रु तथा रोग स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक अपने शत्रु पक्ष पर प्रबल बना रहता है परन्तु व्ययेश होने के कारण वह स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में चिन्ता तथा हानियों का शिकार बनता है । यहाँ से मंगल चौथी उच्च-दृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है । सातवीं दृष्टि से द्वादश भाव को स्वराशि में देखने के कारण खर्च अधिक होगा, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होगी । साथ ही आठवीं शत्रु दृष्टि से प्रथमभाव को देख रहा है, अतः शरीर में कमजोरी बनी रहेगी । वीर्य-विकार तथा रक्त-विकार के दोष भी उत्पन्न होंगे ।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृप लग्न: सप्तमभाव: मंगल

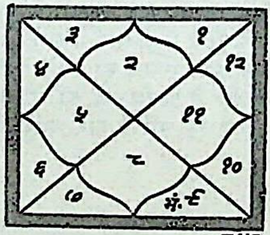


२४२

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में स्व-क्षेत्री मंगल की स्थिति के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में शक्ति प्राप्त होने पर भी मंगल के व्ययेश होने के कारण कुछ कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ेगा, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सफलता मिलेगी, साथ ही खर्च भी अधिक रहेगा। यहाँ से मंगल चौथी शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता एवं राज्य के सम्बन्ध में कठिनाइयाँ उत्पन्न होंगी तथा व्यवसाय में दिक्कतें आयेंगी। सातवीं शत्रु- दृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शरीर में कुछ दुर्बलता रहेगी तथा आठवीं मित्र दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन एवं कुटुम्ब के सम्बन्ध में भी चिन्ता, कठिनाई एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

जिस जातक का जन्म 'वृप' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृप लग्न: अष्टम भाव: मंगल

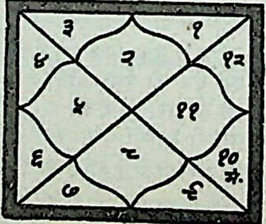


२४३

आठवें मृत्यु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र मंगल की धनु राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में बहुत मुसीबत एवं हानियों का सामना करना पड़ता है और अपने स्थान से हटकर परदेश में आजीविका उपार्जित करनी होती है। साथ ही पुरातत्त्व सम्बन्धी हानि भी उठानी पड़ती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्र दृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः विदेश से धन का लाभ होगा। सातवीं शत्रु दृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः धन तथा कुटुम्ब के सम्बन्ध में परेशानी रहेगी एवं आठवीं नीच दृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में भी कमी रहेगी। संक्षेप में, जातक की आर्थिक उन्नति परदेश में जाकर रहने पर ही होती है।

जिस जातक-जन्म 'वृप' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृप लग्न: नवमभाव: मंगल

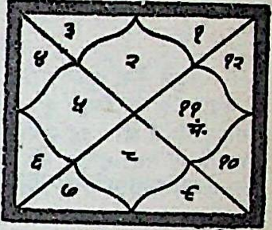


२४४

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से लाभ होता है तथा भाग्य की शक्ति से व्यवसाय में भी उन्नति होती है और धर्म में भी आस्था रहती है। यहाँ से मंगल की चौथी दृष्टि स्वराशि वाले द्वादशभाव में पड़ती है, अतः खर्च अधिक रहेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होगा। सातवीं नीच दृष्टि तृतीय भाव में पड़ने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी रहेगी। आठवीं मित्र दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि, मकान तथा घरेलू-सुख में भी कुछ कमी इसलिए बनी रहेगी कि मंगल व्ययेश होने का भी दोषी है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'मङ्गल' की स्थिति हो, उसे 'मङ्गल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: दशम भाव: मंगल

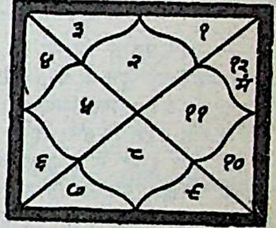


२४५

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता तथा राज्य के सम्बन्ध में हानि तथा परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। साथ ही स्त्री-पक्ष में प्रभाव की अधिकता होने पर भी कुछ कटुता बनी रहेगी एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से व्यवसाय में उन्नति प्राप्त होगी। यहाँ से मंगल चौथी शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः शरीर में कमजोरी तथा रक्त-विकार आदि रोग रहेंगे। सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा घरेलू सुख में कमी रहेगी। आठवीं मित्र दृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण सन्तान पक्ष में कुछ अनबन रहा करेगी, परन्तु सम्मान की वृद्धि होगी।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: एकादशभाव: मंगल

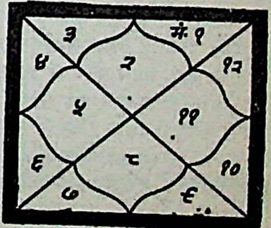


२४६

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र गुरु की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है तथा स्त्री-पक्ष से भी लाभ मिलता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उन्नति होती है परन्तु मंगल के व्ययेश होने के कारण स्त्री तथा आय के पक्ष में कुछ असंतोष भी रहता है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः धन-कुटुम्ब के पक्ष में कुछ हानि तथा परेशानी प्राप्त होगी। सातवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या तथा सन्तान के पक्ष में कमजोरी रहेगी एवं आठवीं सम-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष में प्रभाव बना रहेगा। ऐसा जातक बहुत स्वार्थी तथा चालाक होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'मङ्गल' की स्थिति हो, उसे 'मङ्गल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: द्वादशभाव: मंगल



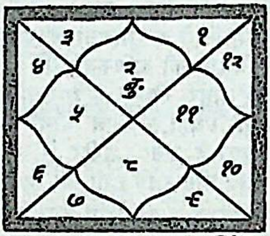
२४७

बारहवें व्ययभाव में स्वराशि मेष पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती रहती है, परन्तु मंगल के स्त्री भवन के अधिपति होने एवं व्ययेश होकर स्वक्षेत्र में बैठने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलता प्राप्त होती है। यहाँ से मंगल चौथी नीच दृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः पराक्रम एवं भाई-बहिन के सुख में न्यूनता रहेगी। सातवीं दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष में प्रभाव बना रहेगा एवं आठवीं दृष्टि से सप्तमभाव को स्वराशि में देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में हानिकारक होते हुए भी थोड़ी बहुत सफलता देता रहेगा।

'वृष' लग्न में 'बुध' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः प्रथम भावः बुध

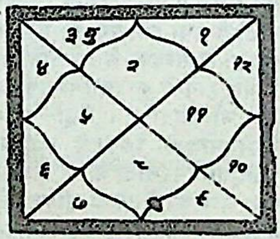


२४८

पहले केन्द्र तथा शरीर भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का शरीर सुन्दर होता है और वह उद्योग द्वारा मान-प्रतिष्ठा, यश, धन, सन्तान तथा कुटुम्ब की श्रेष्ठ शक्ति को प्राप्त करता है। बुध के मित्र भाव में स्थित होने के कारण जातक को श्रेष्ठ बुद्धि एवं प्रसन्नता प्राप्त होती है। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से सप्तमभाव को अपने सामान्य मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में देखता है, अतः उसे स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी सहयोग, सफलता एवं उन्नति प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

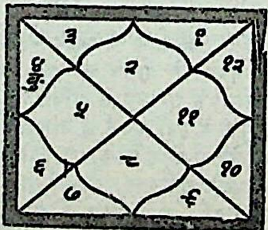
वृष लग्नः द्वितीय भावः बुध



दूसरे धन व कुटुम्ब के भाव में अपनी मिथुन राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु उसे सन्तान-पक्ष से कुछ परेशानी बनी रहती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्र दृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु की उन्नति एवं पुरातत्त्व का लाभ प्राप्त होता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक भाग्यवान होता है और ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः तृतीयभावः बुध

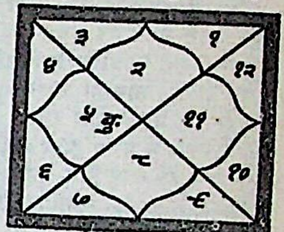


२५०

तीसरे पराक्रम एवं सहोदर के स्थान में चन्द्रमा की राशि पर बैठे हुए बुध के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख मिलता है। साथ ही वह अपने पुरुषार्थ द्वारा धन उपार्जित करता है तथा कौटुम्बिक सुख को प्राप्त करता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की वृद्धि होती है और धर्म की ओर रुचि बनी रहती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक उद्यमी, परिश्रमी, पराक्रमी, साहसी, विद्वान्, धनवान, धर्मात्मा तथा सज्जन होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: चतुर्थभाव: बुध

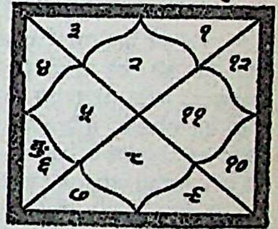


२५१

चौथे केन्द्र, माता एवं सुख के स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा मकान का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। वह विवेकी, गम्भीर, विद्वान तथा बुद्धिमान होता है और विद्या के द्वारा धन का संग्रह करता है, सन्तान एवं कुटुम्ब के सुख को प्राप्त करता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता तथा राज्य द्वारा भी यथेष्ट लाभ होता है, व्यवसाय में उन्नति होती है और राज-समाज में यश तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'बुध, की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: पंचमभाव: बुध

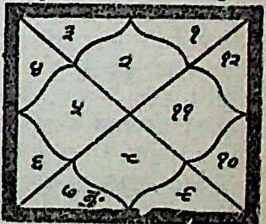


२५२

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि के स्थान में स्वराशि कन्या स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है तथा बुद्धि द्वारा धन की भी अधिकता रहती है। इसी प्रकार उसे कुटुम्ब का भी सुख मिलता है। यहाँ से बुध सातवीं नीच-दृष्टि से अपने मित्र गुरु की मीन राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को आमदनी के क्षेत्र में कमी का अनुभव होगा परन्तु विद्या एवं सन्तान पक्ष की सहायता से धन की वृद्धि होगी तथा बुद्धि-बल से प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती रहेगी।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: षष्ठभाव: बुध

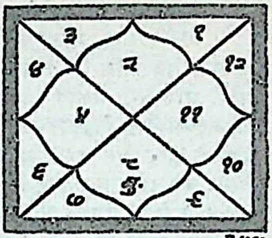


२५३

छठे शत्रु स्थान में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष द्वारा अशान्ति का सामना करना पड़ेगा, परन्तु बुद्धियोग से उसे कुछ सफलता भी मिलेगी। इसी प्रकार कौटुम्बिक एवं सन्तान पक्ष के सुख में भी कुछ कष्ट, मतभेद एवं परेशानी का योग बना रहेगा। यहाँ से बुध सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को मंगल की मेष राशि में देखता है, अतः खर्च की अधिकता रहेगी तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से धन एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती रहेगी।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृप लग्न: सप्तमभाव व बुध

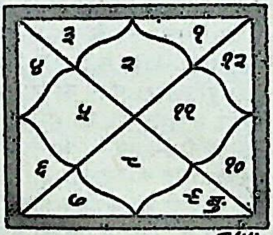


२५४

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को बुद्धिमती-स्त्री की प्राप्ति होगी तथा व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त होगी। साथ ही जातक को धन, विद्या एवं सन्तान-पक्ष से सुख प्राप्त होता रहेगा एवं कौटुम्बिक सुख भी यथेष्ट मात्रा में प्राप्त होगा। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से प्रथमभाव को अपने मित्र शुक्र की वृष राशि में देखता है, अत: जातक का शरीर सुन्दर होगा और उसे यश, मान, बुद्धि, विवेक, धन एवं सफलता की निरन्तर प्राप्ति होती रहेगी।

जिस जातक का जन्म 'वृप' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृप लग्न: अष्टमभाव: बुध

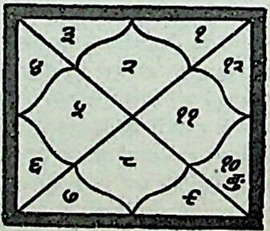


२५५

आठवें मृत्यु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होगा तथा धन की संग्रह शक्ति में वृद्धि होगी। परन्तु कौटुम्बिक सुख, विद्या एवं सन्तान के पक्ष में परेशानियों का अनुभव होगा। साथ ही जातक का रहन-सहन ऐश्वर्यशाली होगा। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से द्वितीयभाव को स्वराशि मिथुन में देखता है, अत: जातक को धन की वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा तथा कौटुम्बिक-सुख भी अल्प मात्रा में प्राप्त होगा।

जिस जातक का जन्म 'वृप' ज़ग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेप लग्न: नवमभाव: बुध:

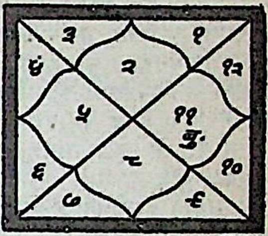


२५६

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपनी बुद्धि के योग से भाग्य तथा धन की वृद्धि करेगा। साथ ही धर्म, विद्या, संतान एवं कौटुम्बिक सुखों को भी प्राप्त करेगा। इस स्थान से बुध सातवीं दृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में तृतीय भाव को देखता है, अत: जातक को भाई-बहिन एवं पराक्रम की शक्ति विशेप रूप से प्राप्त होगी। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक धनी, सुखी तथा ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृप' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: दशमभाव: बुध

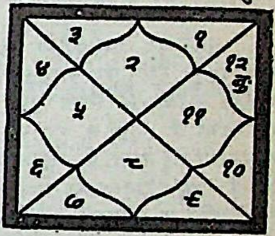


२५७

दसवें केन्द्र, राज्य एवं पिता के भवन में अपने मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को पिता एवं राज्य के पक्ष से विशेष शक्ति एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही वह अपनी बुद्धि के उपयोग द्वारा व्यवसाय से धन एवं सन्तान पक्ष से सुख प्राप्त करेगा। उसका पारिवारिक-जीवन भी आनन्दमय बना रहेगा। इस स्थान से बुध सातवीं दृष्टि से चतुर्थ-भाव को अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि में देखता है, अत: जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी प्राप्त होगा तथा घरेलू वातावरण भी सुन्दर तथा सुखद बना रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: एकादशभाव: बुध

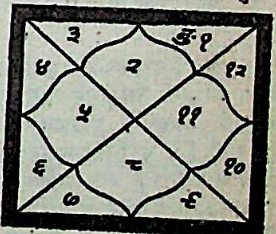


२५८

ग्यारहवें लाभ एवं आय के स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित नीच के बृहस्पति के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा तथा धन के संचय में भी कमी बनी रहेगी। साथ ही कुटुम्ब, विद्या एवं संतान पक्ष से भी अल्प लाभ मिलेगा एवं दूसरी चिन्ताओं के कारण मस्तिष्क में परेशानी बनी रहेगी। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी कन्या राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: जातक को विद्या की शक्ति प्राप्त होगी और इसी के बल से सन्तान-पक्ष भी प्रबल बना रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: द्वादशभाव: बुध



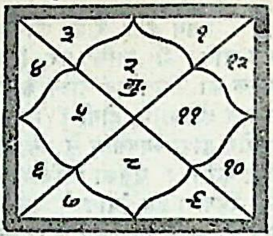
२५९

बारहवें व्ययभाव में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहेगा परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता रहेगा। साथ ही विद्या, सन्तान धन तथा कुटुम्ब के पक्ष से भी असन्तोष बना रहेगा। विशेषकर संतान के पक्ष में हानि उठानी पड़ेगी। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से अपने मित्र शुक्र की तुला राशि में षष्ठभाव को देखता है, अत: जातक शत्रु-पक्ष में अपने बुद्धि-बल से सफलता प्राप्त करता रहेगा।

'वृष' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: प्रथमभाव: गुरु

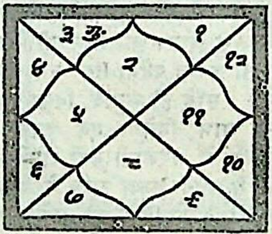


२६०

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शारीरिक परिश्रम द्वारा लाभ प्राप्त होगा तथा आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में भी उन्नति होगी। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्र दृष्टि से पचमभाव को देखता है, अत: सन्तान पक्ष में कुछ लाभ तथा कुछ परेशानी रहेगी एवं विद्या-बुद्धि का लाभ मिलेगा। सातवीं मित्र दृष्टि से सप्तमभाव को देखता हैं, अत: स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में त्रुटि पूर्ण सफलता मिलेगी तथा नवीं शत्रु दृष्टि से नवमभाव को देखता हैं, अत: भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कुछ त्रुटि बनी रहेगी। ऐसा जातक शारीरिक रूप से कुछ परेशान रहता है तथा परिश्रम द्वारा लाभ एवं उन्नति को प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: द्वितीयभाव: गुरु

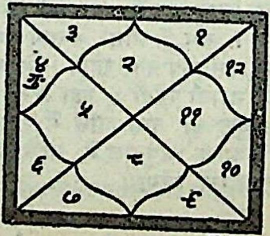


२६१

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की धन तथा कुटुम्ब की शक्ति कुछ कठिनाइयों के साथ प्राप्त होती है। यहाँ से गुरु सातवीं दृष्टि से स्वक्षेत्र अष्टम-भाव को देखता है, अत: जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी कुछ लाभ मिलता है। पाँचवीं दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है तथा नवीं दृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता से वैमनस्य एवं राज्य सम्बन्ध में सामान्य सफलता मिलती है। ऐसा जातक अपने व्यवसाय की उन्नति के लिए विशेष परिश्रम करता है तथा प्रतिष्ठित होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: तृतीयभाव: गुरु

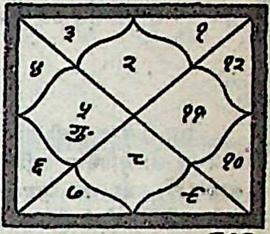


२६२

तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के बृहस्पति के प्रभाव से जातक के पराक्रम एवं भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है। यहाँ से गुरु नवीं दृष्टि से लाभ भवन के स्वक्षेत्र में देखता है, अत: जातक की आमदनी खूब होती है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता एवं उन्नति प्राप्त होती है। साथ ही आयु की वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। सातवीं नीच दृष्टि से नवमभाव में देखने के कारण भाग्य में कुछ कमजोरी आती है तथा धार्मिक भावना की भी कमी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ-भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: चतुर्थभाव: गुरु

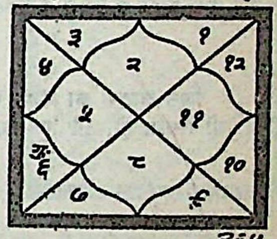


२६३

चौथे केन्द्र, माता तथा सुख भवन में अपने मित्र सूर्य की राशि पर स्थित अष्टमेश गुरु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी रहती है तथा लाभेश होने के कारण भूमि, मकान, सम्पत्ति एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से अष्टम भाव को स्वराशि में देखता है, अतः आयु की वृद्धि होती है, परन्तु पारिवारिक सुख में कुछ विघ्न उपस्थित होते हैं। सातवीं दृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं प्रतिष्ठा के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। नवीं दृष्टि से व्यवसाय को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त होता है, परन्तु खर्च आमदनी से हमेशा अधिक बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: पंचमभाव: गुरु

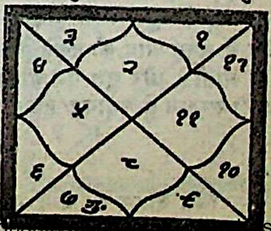


२६४

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि सन्तान के स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि, एवं सन्तान के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त होती है। गुरु के अष्टमेश होने के कारण सन्तान पक्ष से बाधायें मिलती हैं, परन्तु लाभेश होने के कारण लाभ भी रहता है। साथ ही आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। यहाँ से गुरु अपनी, पंचम नीच दृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। सातवीं दृष्टि से एकादशभाव को स्वराशि में देखने के कारण बुद्धि-योग से लाभ खूब होता है तथा नवीं शत्रु दृष्टि से प्रथमभाव के देखने के कारण आजीविका तथा लाभ के लिए शारीरिक परिश्रम अधिक करना पड़ता है। ऐसा जातक देखने में भला, स्वार्थ-साधन में चतुर, दीर्घायु तथा धनी होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: षष्ठभाव; गुरु



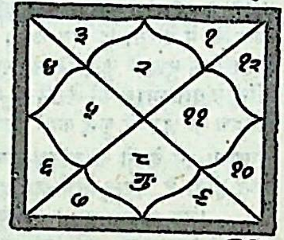
२६५

छठे शत्रु रोग भवन में अपने शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में बुद्धिमानी से सफलता प्राप्त करता है, परन्तु लाभ के मामले में कुछ कमी रहती है। अष्टमेश होने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व के पक्ष में हानि रहती है। इस स्थान से गुरु पाँचवीं शत्रु दृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता, व्यवसाय एवं राज्य के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता है। सातवीं मित्र दृष्टि से व्ययभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ

मिलता है एवं नवीं मित्र दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन-संचय के लिए विशेष परिश्रम करने पर सफलता प्राप्त होती है तथा कौटुम्बिक पक्ष में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: सप्तमभाव: गुरु

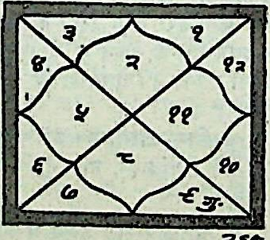


२६६

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। इस स्थान से गुरु पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी का अच्छा योग बना रहता है। सातवीं शत्रु दृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः शरीर में थकान और दुर्बलता बनी रहती है तथा नवीं उच्च दृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः भाई-बहिन के सुख, धैर्य तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी, धन संचय तथा ऊपर से देखने में सज्जन होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: अष्टमभाव: गुरु

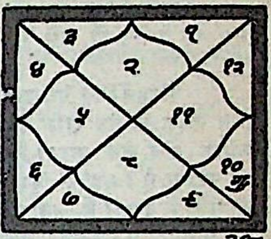


२६७

आठवें मृत्यु, आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपनी धनु राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ मिलता है, परन्तु अष्टमेश होने के कारण आय के साधनों में कुछ कठिनाइयाँ उपस्थित होती रहती हैं। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्र दृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ मिलता है। सातवीं मित्र दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण परिश्रम द्वारा धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि होती है तथा नवीं मित्र दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता के सुख में अष्टमेश होने के कारण कुछ कमी आती है और सुख एवं आमदनी के सम्बन्ध में भी कुछ असन्तोष बना रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्ध से धनागम होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: नवमभाव: गुरु

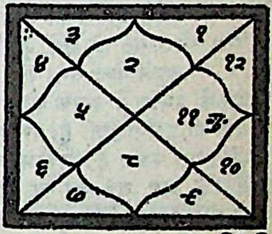


२६८

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य में कमजोरी तथा धर्मपालन में त्रुटि उपस्थित होती है, साथ ही आमदनी की कमी से दुःख का अनुभव भी होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रु दृष्टि प्रथमभाव को देखता है, अतः शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है तथा परिश्रम द्वारा प्रभाव की वृद्धि होती है। सातवीं उच्च दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है तथा नवीं शत्रु दृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण सन्तान तथा विद्या के पक्ष में भी कुछ कमी बनी रहती है। भाग्य भवन में नीच राशि-गत ग्रह के प्रभाव से जातक की उन्नति, प्रतिष्ठा एवं ऐश्वर्य में कमी अवश्य आती है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: दशमभाव: गुरु

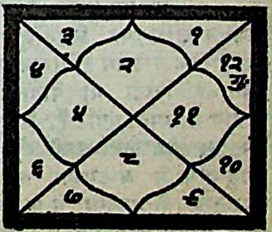


२६९

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि में स्थित अष्टमेश शनि के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ हानि प्राप्त होती है। साथ ही लाभ प्राप्ति के मार्ग में कम सफलता मिलती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्र दृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक धन वृद्धि तथा कुटुम्ब का सहयोग प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। सातवीं मित्र दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण जातक को माता, भूमि, मकान आदि का सुख कुछ असंतोष के साथ मिलता है तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष से परेशानी प्राप्त होती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा उन्नति के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

वृष लग्न; एकादशभाव: गुरु



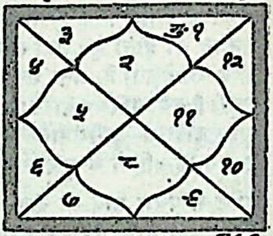
२७०

ग्यारहवें लाभ भवन में स्वक्षेत्री मीन राशिस्थ गुरु के प्रभाव से जातक को आमदनी खूब होती है, परन्तु गुरु के अष्टमेश होने के कारण परिश्रम भी विशेष करना पड़ता है अथवा कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। साथ ही जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं उच्च दृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः पराक्रम एवं भाई-बहिन के सुख का विशेष लाभ होता है। सातवीं मित्र दृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि तथा सन्तान का भी लाभ होता है और नवीं मित्र दृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण व्यवसाय से खूब

लाभ होता है, परन्तु स्त्री के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सुख प्राप्त होता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक का जीवन ऐश्वर्यशाली तथा प्रसन्नता से भरा रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: द्वादशभाव: गुरु



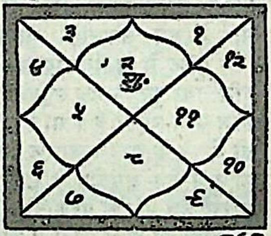
२६१

बारहवें व्यय एवं बाहरी सम्बन्ध के भाव में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर बैठे हुए गुरु के प्रभाव से जातक खर्च खूब करता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ भी उठाता है। यहाँ से 'गुरु' नवीं दृष्टि से अष्टमभाव को स्वराशि में देखता है, अतः व्यय स्थान के दोष से जातक की आयु पर कभी-कभी संकट आते हैं तथा पुरातत्त्व सम्बन्धी लाभ भी कम होता है। पाँचवीं दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण कुछ कठिनाइयों के साथ सुख के साधन प्राप्त होते हैं तथा माता के सुख में कुछ कमी रहती है। सातवीं शत्रु दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से जातक शत्रु पक्ष में बड़ी बुद्धिमानी से प्रभाव बनाये रखता है। नवीं दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु के पक्ष में कुछ कमी रहती है और आमदनी से खर्च अधिक रहता है।

'वृषभ' लग्न में 'शुक्र' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'शुक्र' की स्थित हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: प्रथमभाव: शुक्र

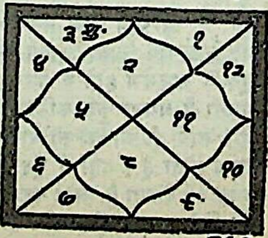


२६२

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में स्वक्षेत्री वृष राशि शुक्र के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य एवं आत्मिक-बल की प्राप्ति होती है, परन्तु कभी-कभी रोग का शिकार भी होना पड़ता है। शत्रु-भवन का स्वामी स्वक्षेत्री होकर बैठा है, अतः शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में शारीरिक परिश्रम एवं बुद्धिमानी द्वारा सफलता प्राप्त होती है। साथ ही आत्म-बल, मानसिक-शक्ति, सुखभोग, व्यावसायिक सफलता आदि भी मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: द्वितीयभाव: शुक्र

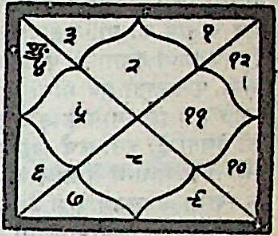


२६३

दूसरे धन-कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक परिश्रम द्वारा धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि करता है तथा प्रतिष्ठा भी पाता है। द्वितीयभाव बन्धन का स्थान भी माना गया है, अतः जातक के शारीरिक सुख में कुछ परेशानियाँ आती रहती हैं। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रु दृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ न्यूनता बनी रहती है, परन्तु शत्रु पक्ष से चातुर्य्य द्वारा लाभ की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: तृतीयभाव: शुक्र

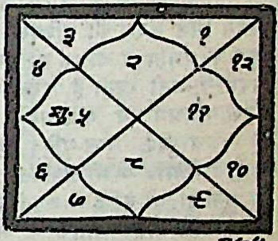


२०४

तीसरे पराक्रम एवं भाई-बहिन के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख भी कुछ वैमनस्य के साथ प्राप्त होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्र दृष्टि से नवम भाव को देखता है, अत: जातक भाग्यशाली होता है तथा धर्म पालन में भी रुचि रखता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक अपने पराक्रम एवं चातुर्य्य के बल पर यश-मान-प्रतिष्ठा, धन आदि प्राप्त करता है और अत्यधिक शारीरिक श्रम करने के कारण कभी-कभी थक भी जाता है, परन्तु हिम्मत नहीं हारता।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: चतुर्थभाव: शुक्र

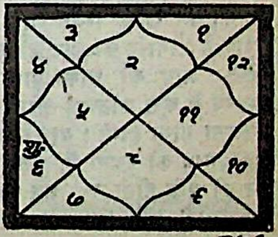


२०५

चौथे केन्द्र माता, भूमि तथा सुख भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी तथा भूमि, सम्पत्ति, मकान आदि के सम्बन्ध में भी असन्तोष प्राप्त होता है। परन्तु समस्त त्रुटियों एवं परेशानियों के बावजूद भी सुख के साधन अवश्य प्राप्त होते रहते हैं तथा शत्रु पक्ष में चतुराई एवं शान्ति के साथ सफलता मिलती है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से दशम भाव को देखता है। अत: पिता राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, उन्नति, यश एवं सम्मान की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: पंचमभाव: शुक्र

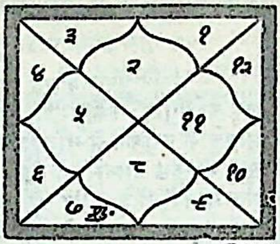


२०६

पंचम त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि सन्तान के भवन में नीच राशिस्थ शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या में अपूर्णता तथा सन्तान-पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है, परन्तु बुद्धि-योग एवं गुप्त-चातुर्य्य के बल पर शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। यहाँ से शुक्र सातवीं उच्च दृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अत: जातक अपने मस्तिष्क की सूझ-बूझ तथा कठिन परिश्रम द्वारा लाभ के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक शारीरिक सौन्दर्य में कमी, मस्तिष्क में परेशानी तथा बुद्धि में असन्तोष एवं चिन्ता के योग प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: षष्ठभाव: शुक्र

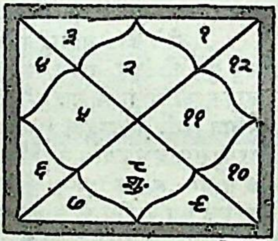


२७७

छठे शत्रु तथा रोग भवन में तुला राशिस्थ स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक को शारीरिक शक्ति एवं चातुर्य्य की प्राप्ति होती है, जिससे वह शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करता है, परन्तु शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी, परतन्त्रता एवं मामा के पक्ष से लाभ के योग भी बनते हैं। इस स्थान से शुक्र सातवीं दृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त होता है। शरीर-भवन के स्वामी के षष्ठभाव में बैठ जाने से जातक को शत्रु-पक्ष के कारण किसी-न-किसी झंझट में फंसे रहना पड़ता है परन्तु वह स्वाभिमानी एवं प्रतापी होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: सप्तमभाव: शुक्र

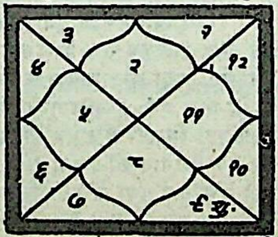


२७८

सातवें केन्द्र, स्त्री, तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित षष्ठेश शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री के पक्ष से वैमनस्य एवं परेशानी बनी रहती है, परन्तु व्यवसाय के क्षेत्र में शारीरिक परिश्रम एवं कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। चातुर्य्य, गुप्त-युक्ति एवं परेशानियों के साथ इन्द्रियभोगादि में भी सफलता प्राप्त होती है। इस स्थान से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शरीर में कुछ रोग बना रहेगा, परन्तु लौकिक कार्यों को करने में वह बड़ा दक्ष होगा।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म कुण्डली के 'अष्टमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: अष्टमभाव: शुक्र

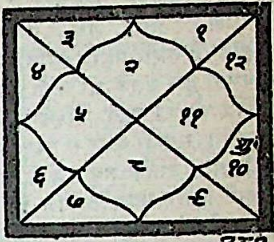


२७९

आठवें मृत्यु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के शरीर में रोगादि का कष्ट होगा तथा सौन्दर्य में भी कमी रहेगी। आयु की शक्ति प्राप्त होने पर भी पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ कठिनाई तथा गुप्त-चातुर्य्य के बल पर ही सफलता प्राप्त होगी। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्र दृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः कठिन परिश्रम के द्वारा धन की वृद्धि होगी तथा शत्रु पक्ष से कष्ट, मामा के पक्ष में कमजोरी, उदर विकार एवं प्रभाव में कमी के योग भी उपस्थित होंगे।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: नवमभाव: शुक्र

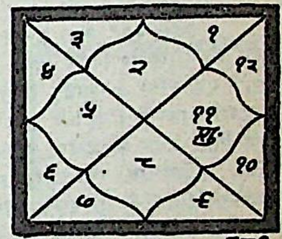


२८०

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक परिश्रम के बल पर भाग्योन्नति करेगा तथा शत्रु पक्ष में भी सफलता प्राप्त करेगा। धर्म के पालन में भी कुछ कठिनाइयों के साथ रुचि लेगा। शरीर में सुन्दरता, रोग तथा कठिनाइयों के योग भी उपस्थित होंगे। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्र दृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की शक्ति में भी कुछ परेशानियों के साथ सफलता प्राप्त होगी ऐसे व्यक्ति को झगड़ों के मामलों में स्वाभाविक रूप से विजय मिलती रहती है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्न: दशमभाव: शुक्र

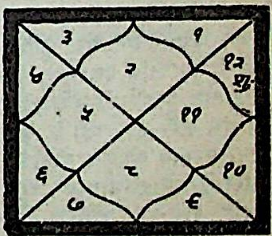


२८१

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता भवन में अपने मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता के साथ सामान्य वैमनस्य एवं राजकीय तथा व्यावसायिक क्षेत्र में सामान्य कठिनाइयों एवं परिश्रम के द्वारा सफलता और यश की प्राप्ति होगी। साथ ही शत्रु पक्ष पर भी प्रभाव बना रहेगा। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक अपनी उन्नति की धुन में सुख की चिन्ता नहीं करेगा। माता तथा भूमि-भवन के पक्ष में भी उसे कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता प्राप्त होगी। संक्षेप में, ऐसा जातक अहंकारी, चतुर, सुखी तथा उन्नति करने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्न: एकादशभाव: शुक्र

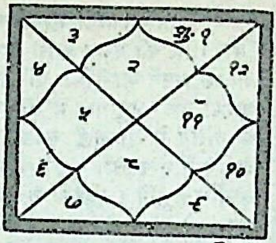


२८२

ग्यारहवें लाभ भवन में उच्च राशिस्थ शुक्र के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा पर्याप्त द्रव्योपार्जन करता है तथा आय के क्षेत्र में विशेष चतुराई एवं अनेक प्रकार के प्रयत्नों से काम चलाता है। उसके शरीर में सुन्दरता तथा रोग का निवास रहता है एवं शत्रु पक्ष से लाभ होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं नीच दृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः सन्तान पक्ष में कमी, विद्याध्ययन के पक्ष में लापरवाही तथा सफलता प्राप्ति के लिए असत्यभाषण आदि के योग भी बनते हैं। ऐसा जातक अनेक प्रकार के प्रयत्नों द्वारा श्रेष्ठ लाभ प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृप लग्न: द्वादशभाव: शुक्र



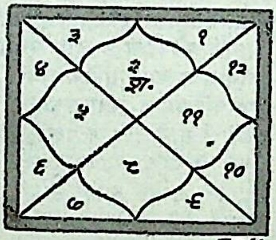
२८३

बारहवें व्ययभाव में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थिति शुक्र के प्रभाव से जातक खूब खर्चीला होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त करता है। उसके शरीर में कुछ कमजोरी रहती है, फिर भी वह बहुत परिश्रमी होता है । यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से स्वराशि को षष्ठभाव में देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष से कुछ कमजोर बना रहेगा। इसी प्रकार माता का पक्ष भी कमजोर रहेगा । ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक अत्यन्त चतुर, रोगी, धनोपार्जन करने में दक्ष तथा शत्रुओं द्वारा हानि उठाने वाला होता है।

'वृषभ' लग्न में 'शनि' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृप' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृप लग्न: प्रथमभाव: शनि

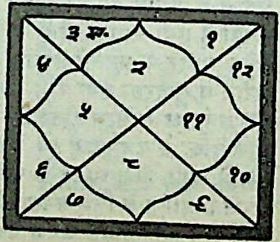


२८४

पहले केन्द्र, तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक शारीरिक दृष्टि से सुन्दर होता है तथा भाग्यवान् समझा जाता है। यहाँ से शनि दसवीं दृष्टि से राज्य एवं पिता भवन को देखता है, अतः जातक को पिता द्वारा शक्ति एवं राज्य द्वारा लाभ और सम्मान की प्राप्ति होती है । इसके साथ ही व्यवसाय में भी पर्याप्त उन्नति होती है । तीसरी शत्रु दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिनों के सुख में कमी आती है, परन्तु पराक्रम अधिक होता है सातवीं शत्रु दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण तथा स्त्री व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों के साथ वृद्धि होती है । ऐसे जातक को शारीरिक शक्ति के कार्यों में विशेष सफलता प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृप' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृप लग्न: द्वितीयभाव: शनि

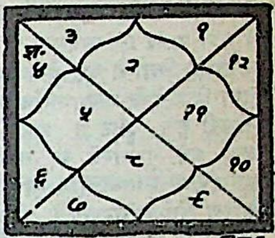


२८५

दूसरे धन तथा कुटुम्ब स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है, परन्तु जातक के सुख में कुछ कमी आ जाती है और राज्य के क्षेत्र में प्रभाव तथा सम्मान की वृद्धि होती है। यहाँ से शनि दसवीं शत्रु दृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी का विशेष योग प्राप्त होता है। तीसरी शत्रु दृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता के सुख में कमी होगी तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, इसलिये आयु के पक्ष में शक्ति प्राप्त होगी। ऐसा जातक धर्म की अपेक्षा धन की वृद्धि में तत्पर बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृप लग्न: तृतीयभाव: शनि

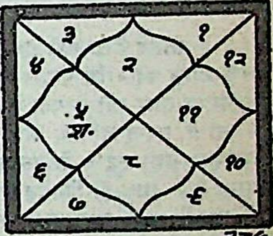


२८६

तीसरे पराक्रम एवं भाई-बहिन के स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का भाई-बहिनों के साथ सामान्य-वैमनस्य रहेगा, परन्तु पराक्रम की विशेष वृद्धि होगी। यहाँ से शनि सातवीं दृष्टि से नवमभाव को स्वराशि में देखता है, अतः भाग्य की वृद्धि होगी। तीसरी मित्र दृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलेगी तथा दसवीं नीच दृष्टि से द्वादश-भाव को देखने के कारण खर्च कम होगा एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में भी लापरवाही बनी रहेगी। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक भाग्यवान्, पुरुषार्थी, उद्योगी तथा प्रभावशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृप' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृप लग्न: चतुर्थभाव: शनि

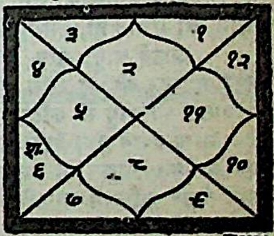


२८७

चौथे केन्द्र, माता, सुख तथा भूमि के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का माता के साथ वैमनस्य रहेगा तथा भूमि भवन के सुख में भी कमी बनी रहेगी। यहाँ से शनि सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले दशम भाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होगी, परन्तु धर्म-पालन में कुछ उदासीनता रहेगी। तीसरी उच्च दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष में अत्यधिक प्रभाव रहेगा तथा मामा के पक्ष में शक्ति प्राप्त होगी एवं दसवीं मित्र दृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक प्रभाव एवं सम्मान में वृद्धि होगी तथा जातक प्रतिष्ठित एवं भाग्यवान् समझा जायेगा।

जिस जातक का जन्म 'वृप' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

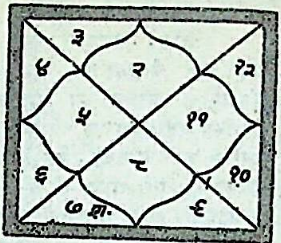
वृप लग्न: पंचमभाव: शनि



२८८

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या, बुद्धि के स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में अत्यधिक सफलता प्राप्त होगी तथा बुद्धियोग से व्यवसाय में सफलता एवं पिता द्वारा स्नेह प्राप्त होगा। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ असन्तोषपूर्ण सफलता मिलेगी। सातवीं शत्रु दृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आय के साधनों से सामान्य असन्तोष रहेगा एवं दसवीं मित्र दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन-कुटुम्ब को शक्ति मिलेगी। संक्षेप में ऐसा जातक अपनी बुद्धि एवं वाणी के बल पर यश, प्रतिष्ठा एवं सफलता प्राप्त करता है तथा भाग्यवान् होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

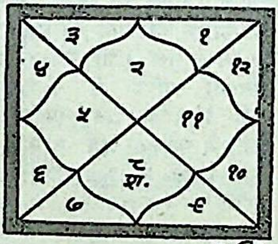


२८९

छठे शत्रु तथा रोग स्थान में उच्च राशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में बहुत प्रभावशाली होता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में भी सफलता प्राप्त करता है पिता से कुछ वैमनस्य रखते हुये शक्ति पाता है तथा दिखावे के लिये धर्माचरण करता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रु दृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्व का लाभ कुछ चिन्ताओं के साथ होता है। सातवीं नीच दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च के सम्बन्ध में परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध असन्तोषजनक रहता है। दसवीं शत्रु दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम अत्यधिक होता है, जिसके कारण जातक परेशानी का अनुभव भी करता है। वह भाई-बहिनों से भी असंतुष्ट रहता है। ऐसा जातक अपने परिश्रम द्वारा भाग्य की विशेष उन्नति करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्न: सप्तमभाव शनि



२९०

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के स्थान में अपने शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक व्यवसाय तथा स्त्री के पक्ष में उन्नति एवं सफलता प्राप्त करता है, परन्तु शनि के शत्रु राशि पर होने के कारण व्यवसाय तथा कुटुम्ब के संचालन में कुछ कठिनाइयाँ भी पाता है। साथ ही पिता द्वारा शक्ति एवं राज्य के क्षेत्र में उन्नति एवं सम्मान प्राप्त करता है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से नवमभाव को स्वराशि में देखता है, अतः भाग्य की शक्ति बलवान होती है। वह धर्म का पालन भी करता है। सातवीं मित्र दृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शरीर में सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है और दसवीं शत्रु दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कुछ कमी का अनुभव होता है, परन्तु कुल मिलाकर जातक सुखी और भाग्यशाली बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्न: अष्टमभाव: शनि



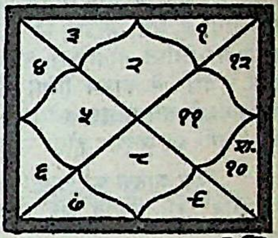
२९१

आठवें आयु, मृत्यु तथा पुरातत्व के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु में कठिनाइयों के साथ वृद्धि होती है भाग्य-स्थान तथा पिता के स्थान में कमी रहती है एवं धर्म का पालन भी यथावत् नहीं होता। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से स्वराशि में दशमभाव को देखता है, अतः पिता एव सम्मानके क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है एवं भाग्योन्नति के लिये अत्यन्त कष्ट उनठा तथा परिश्रम करना पड़ता है। सातवीं मित्र दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन की वृद्धि के लिये

प्रयत्नशील रहता है एवं दसवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या एवं सन्तान के पक्ष में सफलता प्राप्त होती है। राज्येश के अष्टमभाव में स्थिति के कारण यश और उन्नति के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु आयु एवं पुरातत्व का लाभ होता है ।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म कुण्डली के 'नवमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये ।

वृष लग्न: नवमभाव: शनि

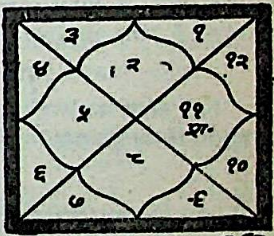


२६२

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के घर में मकर राशिस्थ स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की बहुत वृद्धि होती है तथा पिता के द्वारा भी पूर्ण शक्ति प्राप्त होती है । इसके साथ ही राज्य द्वारा यश, लाभ तथा सम्मान प्राप्त होता है यहाँ से शनि तीसरी शत्रु दृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः आय के साधनों द्वारा कुछ अरुचिकर तरीके से लाभ होता है । सातवीं शत्रु दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पुरुषार्थ तो प्रबल होता है परन्तु भाई-बहिनों के द्वारा असन्तोषपूर्ण तरीकों से सहायता मिलती है । दसवीं उच्च दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष पर महान् प्रभाव होता है तथा मामा द्वारा भी लाभ होता है । संक्षेप में, ऐसा जातक परिश्रम द्वारा उन्नति एवं लाभ प्राप्त करने वाला धनी, यशस्वी, धार्मिक तथा सुखी होता है ।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये —

वृष लग्न: दशमभाव: शनि

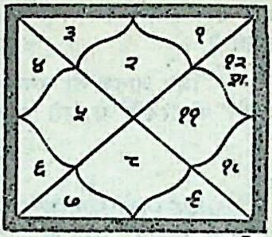


२६३

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में कुम्भ राशिस्थ स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक को पिता, व्यवसाय एवं राज्य द्वारा यथेष्ट लाभ, यश एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है और वह धर्म-कर्म का पालन भी करता है । यहाँ से शनि तीसरी नीच दृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च के मामले में कुछ परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में त्रुटि रहती है । सातवीं शत्रु दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि, सम्पत्ति तथा घरेलू सुख से असन्तोष बना रहता है । दसवीं शत्रु-दृष्टि से स्त्रीभाव को देखने के कारण स्त्री-पक्ष में भाग्यशाली होता है तथा दैनिक जीवन में कुछ चिन्तित-सा रहता है । ऐसा जातक अपने परिश्रम द्वारा महान सफलता प्राप्त करता है । वह बड़ा भाग्यवान् तथा बड़ा सफल व्यवसायी होता है ।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: एकादशभाव: शनि

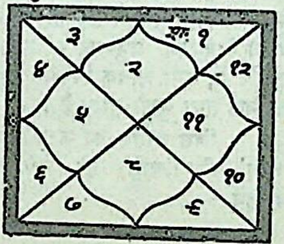


२५४

ग्यारहवें लाभ एवं ऐश्वर्य के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को आमदनी के मार्ग में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। साथ ही पिता-पक्ष के द्वारा लाभ से भी असन्तोष रहता है। ग्यारहवें भाव में क्रूर ग्रह के अधिक शक्तिशाली होने के कारण भाग्य की शक्ति प्रबल बनी रहती है। यहाँ से शनि तीसरी मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अत: जातक को शरीर एवं आयु के पक्ष में प्रभाव की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्र दृष्टि से पंचम-भाव में देखने के कारण विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में सफलता मिलती है तथा दसवीं शत्रु दृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण दैनिक जीवन एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ कठिनाइयों का अनुभव होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्न: द्वादशभाव: शनि



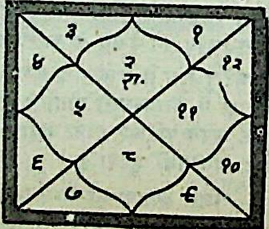
२५५

बारहवें व्यय तथा बाहरी सम्बन्ध के घर में मेष राशिस्थ नीच के शनि के प्रभाव से जातक को खर्च तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में परेशानियों का सामना करना पड़ता है, साथ ही राज्य, व्यवसाय, भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में भी कमी बनी रहती है। वहाँ से शनि तीसरी मित्र दृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अत: धन-जन को सामान्य सफलता प्राप्त होती है। सातवीं उच्च दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष पर प्रभाव बना रहता है तथा झगड़े-झंझटों के मामलों से लाभ होता है। दसवीं दृष्टि स्वक्षेत्र में पड़ने के कारण भाग्य की शक्ति थोड़ी-बहुत प्राप्त होती है परन्तु यश-सम्मान में कमी बनी रहती है।

'वृष' लग्न में 'राहु' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्न: प्रथमभाव: राहु

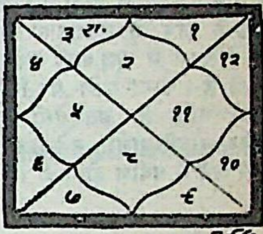


२५६

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ कमी तथा कष्ट का योग बनता है, परन्तु गुप्त चतुराई एवं मनोबल द्वारा स्वार्थ साधन में सफलता मिलती है। ऐसी स्थिति वाला जातक बहुत-सी परेशानियों को सहन करने के बाद शक्ति तथा हिम्मत प्राप्त करता है। वह अनेक युक्तियों द्वारा अपने व्यक्तित्व तथा प्रभाव की उन्नति करता है और उसमें सफलता पाता है। ऐसे व्यक्ति को कभी-कभी चोट अथवा मूर्च्छा का शिकार भी बनना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय-भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्नः द्वितीयभावः राहु

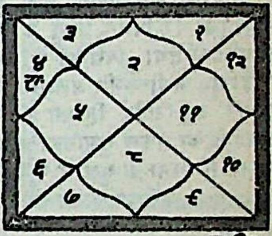


२८७

दूसरे धन व कुटुम्ब भवन में मिथुन राशि स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक अनेक युक्तियों एवं चतुराइयों द्वारा अपने धन की वृद्धि करता है, परन्तु कभी-कभी वह कुछ कठिनाइयाँ भी अनुभव करता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक के कुटुम्ब तथा धन की वृद्धि होती रहती है, परन्तु इन दोनों ही पक्षों में उसे समय-समय पर संघर्षों का सामना भी करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः तृतीयभावः राहु

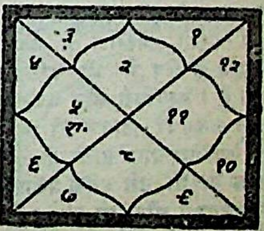


२८८

तीसरे पराक्रम तथा भाई के घर में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में कमी आती है तथा भाई-बहिनों के पक्ष में भी कष्ट का अनुभव करता है। इसके बावजूद भी तृतीय भाव में स्थित क्रूर ग्रह अधिक शक्तिशाली होता है। इस सिद्धान्त के आधार पर जातक का हौंसला बढ़ा रहेगा। मन के भीतर गुप्त-चिन्ताओं तथा कमजोरियों के रहते हुए भी प्रकट रूप में जातक हिम्मत वाला बना रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्नः चतुर्थभावः राहु

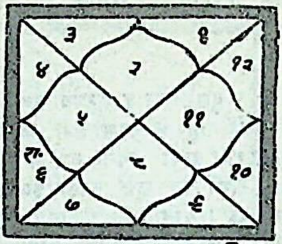


२८९

चौथे केन्द्र, माता, भूमि तथा सुख के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता के पक्ष में हानि तथा कष्ट का योग प्राप्त होता है तथा भूमि, सम्पत्ति एवं सुख के साधनों में भी कमी तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसके प्रभाव से जातक अपनी जन्म-भूमि से अलग जाकर रहता है तथा अनेक प्रकार के दुःख एवं झंझटों से घिरा रहता है। परन्तु सूर्य की राशि पर स्थित होने के कारण बाद में कठिन श्रम एवं गुप्त-उपायों द्वारा उसे धन तथा सुख की सामान्य प्राप्ति भी होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: पंचमभाव: राहु

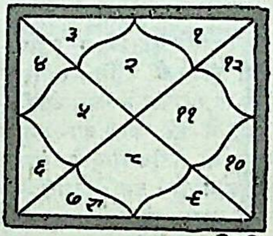


३००

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को सन्तान के द्वारा कष्ट सहित सहयोग की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति प्राप्त करने पर भी मस्तिष्क में कुछ कमी तथा परेशानी अनुभव होती रहती है। कन्या राशि पर स्थित राहु स्वक्षेत्री जैसा माना जाता है, अतः ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक अधिक बोलने वाला, नशेबाज तथा गुप्त-युक्तियों से काम लेने में प्रवीण होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: षष्ठभाव: राहु

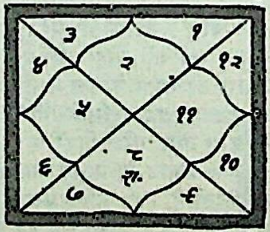


३०१

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता रहता है और वह गुप्त युक्तियों तथा विद्याओं में प्रवीण होता है। शत्रु पक्ष द्वारा कभी-कभी अशान्ति के कारण उपस्थित होने पर वह सदैव हिम्मत से काम लेता है और कठिनाइयों का सफल मुकाबला करता है। परन्तु 'राहु' के प्रभाव से मामा के सुख में कुछ कमी आ सकती है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: सप्तमभाव: राहु

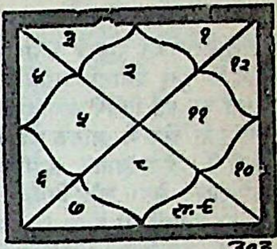


३०२

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अत्यधिक काम करने एवं गुप्त युक्तियों का आश्रय लेने पर जातक को अपने व्यवसाय में थोड़ी-बहुत सफलता प्राप्त होती है। इसी प्रकार इन्द्रिय सुख के क्षेत्र में भी उसे अनेक प्रकार की युक्तियों से काम लेना पड़ता है और उसे इन्द्रिय विकारों का भी सामना करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: अष्टमभाव: राहु

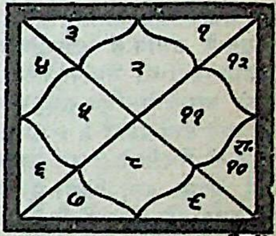


३०३

आठवें मृत्यु, आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में गुरु की धनु राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु तथा जीवन के क्षेत्र में बड़ी कठिनाइयों एवं संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु बृहस्पति की राशि पर स्थित होने के कारण उसमें सज्जनता एवं योग्यता बनी रहती है। राहु की ऐसी स्थिति के कारण जातक को पुरातत्त्व के क्षेत्र में भी हानि उठानी पड़ती है तथा गुप्त चिन्ताएं बनी रहती हैं। उसे गुप्त युक्तियों तथा बाहरी सम्बन्धों के आश्रय से जीवन निर्वाह करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: नवमभाव: राहु

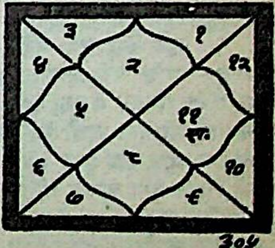


३०४

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी का सामना करना पड़ता है, यद्यपि ऊपरी दिखावे में वह धनी एवं धर्मात्मा प्रतीत होता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक अपनी भाग्य की वृद्धि के हेतु अनेक प्रकार की गुप्त युक्तियों, धैर्य, कठिन परिश्रम तथा साहस का आश्रय लेता है। उसके जीवन में सुख तथा दुःख, अमीरी एवं गरीबी का क्रम निरन्तर चलता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: दशमभाव: राहु

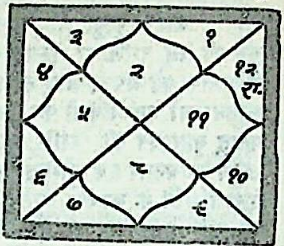


३०५

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने पितृ-पक्ष द्वारा परेशानी का सामना करना पड़ता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं। उसे जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए बड़े परिश्रम, धैर्य एवं गुप्त युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है, फिर भी ऊपरी तौर पर वह धनी एवं प्रतिष्ठित समझा जाता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृष लग्न: एकादशभाव: राहु

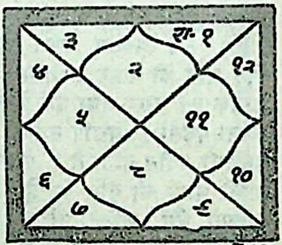


३०६

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आमदनी के मार्ग में कुछ रुकावटें आती हैं, परन्तु ग्यारहवें भाव में स्थित क्रूर ग्रह विशेष प्रभावशाली होता है, इसलिये धन प्राप्ति के क्षेत्र में जातक को विशेष सफलता भी प्राप्त होती है। ऐसा जातक अर्थोपार्जन के लिये गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेता और विशेष परिश्रम करता है। साथ ही वह स्वार्थी भी होता है। कभी-कभी संकटों के आने पर भी वह अपना धीरज नहीं छोड़ता, फलतः अन्त में उसे सफलता प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के द्वादश भाव' में में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये —

वृष लग्न: द्वादशभाव: राहु



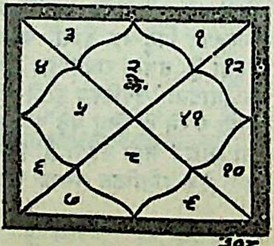
३०७

बारहवें व्यय एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्ध वाले व्ययभाव में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को खर्च के मामलों में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा अपने खर्च को चलाने के लिये कुछ गुप्त-युक्तियों एवं चतुराई का आश्रय लेना पड़ता है। उष्ण ग्रह की राशि पर उष्ण ग्रह की स्थिति के कारण जातक का प्रभाव ऊपरी दिखावे में अच्छा बना रहता है तथा कठिन परिश्रम द्वारा सफलता भी प्राप्त होती है।

'वृष' लग्न में 'केतु' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्न: प्रथमभाव: केतु

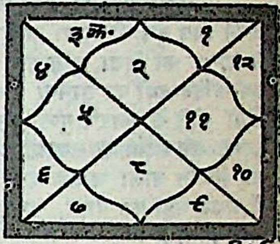


३०८

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आती है तथा मन में गुप्त चिन्ताएँ भी बनी रहती हैं, परन्तु इसके साथ ही उसका मनोबल बहुत बढ़ा हुआ रहता है, फलस्वरूप वह जिद्दी, हठी, चतुर तथा चालक भी होता है। ऐसा जातक अपने शारीरिक परिश्रम एवं योग्यता के प्रभाव से अन्य लोगों को प्रभावित करने की सामर्थ्य भी रखता है। साथ ही उसके शरीर में किसी घाव अथवा चोट का निशान भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्न: द्वितीयभाव: केतु

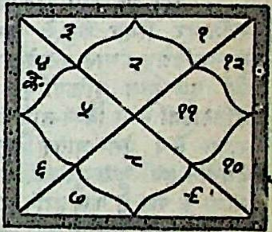


३०९

दूसरे धन व कुटुम्ब के भवन में धनु राशि स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुम्ब के क्षेत्र में बड़ी कठिनाइयों, परेशानियों एवं चिन्ताओं का सामना करना पड़ता है। फलत: कभी-कभी उसे प्रतिष्ठा बचाना भी कठिन हो जाता है। ऐसा जातक अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये गुप्त-युक्तियों एवं कठिन परिश्रम का सहारा लेता है। परन्तु उसके बावजूद भी उसे धन तथा कुटुम्ब का यथोचित सुख प्राप्त नहीं होता।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्न: तृतीयभाव: केतु

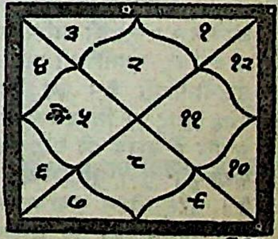


३१०

तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में कमी आती है। इसी प्रकार भाई-बहिनों के सम्बन्ध से भी उसे कष्ट और हानि का सामना करना पड़ता है, परन्तु तीसरे स्थान में बैठा हुआ क्रूर ग्रह विशेष शक्तिशाली होता है। इस कारण जातक अपनी आन्तरिक कमजोरी एवं अभावों की चिन्ता न करते हुये बहुत हिम्मत, हठ, धैर्य एवं परिश्रम से काम लेता है तथा थोड़ी-बहुत सफलता भी प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्न: चतुर्थभाव: केतु

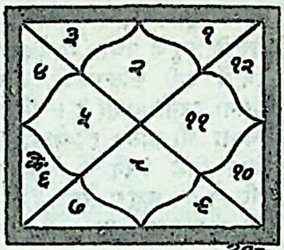


३११

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन तथा सुख के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा इन सबकी प्राप्ति के लिए उसे कठिन परिश्रम, धैर्य एवं गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को अपनी जन्मभूमि का वियोग भी सहन करना पड़ता है तथा उसके घरेलू सुख-साधनों में भी कमी और कष्ट बने रहते हैं।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्न: पंचमभाव: केतु

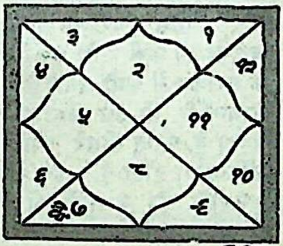


३१२

पांचवें त्रिकोण तथा विद्या-सन्तान के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में कमी एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु मित्र-क्षेत्री होने के कारण गुप्त-युक्तियों, धैर्य एवं साहस के द्वारा उसे सामान्य सफलता प्राप्त हो जाती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक अपने मन्तव्य को स्पष्ट शब्दों में प्रकट नहीं कर पाता, परन्तु बहुत साहसी तथा धैर्य-वान होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्न: षष्ठभाव: केतु

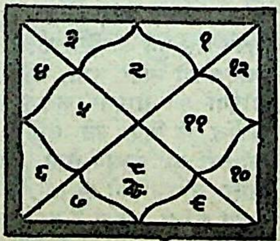


३१३

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शत्रुओं पर अपना विशेष प्रभाव बनाये रखता है तथा अपनी हिम्मत, धैर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर अनेक प्रकार की कठिनाइयों तथा विघ्न-बाधाओं पर विजय प्राप्त करता रहता है। ऐसा जातक चतुर, बड़ा परिश्रमी-साहसी, धैर्यवान तथा गुप्त युक्तियों का जानकार होता है, परन्तु मामा के पक्ष से कुछ हानि प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्न: सप्तमभाव: केतु

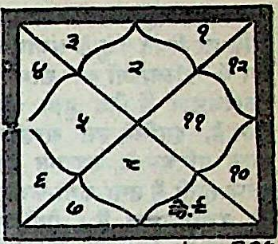


३१४

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी स्त्री के पक्ष में कष्ट तथा हानि उठानी पड़ती है। उसे मूत्राशय में किसी रोग तथा प्रमेह आदि का शिकार भी बनना पड़ता है। व्यवसाय के पक्ष में जातक को कठिन संघर्ष एवं संकटों का सामना करते हुये गुप्त युक्तियों एवं धैर्य से काम लेना पड़ता है। घरेलू जीवन तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कभी-कभी बड़ी विफलताओं का सामना करना पड़ता है, परन्तु परेशानियों के द्वारा उसे कुछ शक्ति भी प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्न: अष्टमभाव: केतु

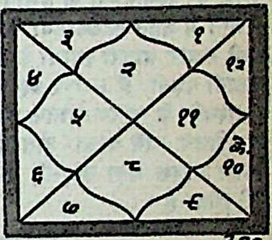


३१५

आठवें मृत्यु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व सम्बन्धी कोई विशेष लाभ भी मिलता है। ऐसे जातक को अपने जीवन–निर्वाह के लिये कठिन-परिश्रम करना पड़ता है तथा कभी-कभी सामान्य परेशानियों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु वह अत्यन्त साहसी, गुप्त-युक्ति-सम्पन्न तथा धैर्यवान होता है और अपना जीवन शान-शौकत के साथ व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्न: नवमभाव: केतु

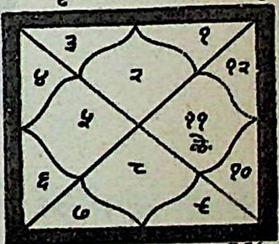


३१६

नवें त्रिकोण तथा भाग्य भवन में अपने मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम के द्वारा अपने भाग्य की उन्नति करता है। इसी प्रकार धार्मिक क्षेत्र में भी कुछ कमी के साथ सफलता प्राप्त करता है। वह अपनी भाग्य वृद्धि के लिये बड़ी हिम्मत तथा गुप्त-शक्तियों से काम लेता है तथा धर्म में आस्था होते हुये भी, वह उसमें कोई विशेष श्रद्धा नहीं रखता।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्न: दशमभाव: केतु

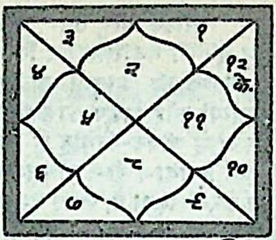


३१७

दसवें केन्द्र, पिता एवं राज्य भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता के सम्बन्ध में कुछ कमी आ जाती है। इसी प्रकार राज्य तथा मान-प्रतिष्ठा के क्षेत्र में भी उसे कुछ कठिनाइयों के साथ सामान्य सफलता प्राप्त होती है। ऊपरी तौर पर जातक धनी, सुखी तथा सम्मानित प्रतीत होता है, परन्तु भीतरी रूप में वह कमजोर बना रहता है। अपनी उन्नति के क्षेत्र में उसे कभी-कभी विशेष संकटों का सामना करना पड़ता है। ऐसा जातक परिश्रमी तथा साहसी होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'केतु' की स्थिति हो उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृष लग्न: एकादशभाव: केतु

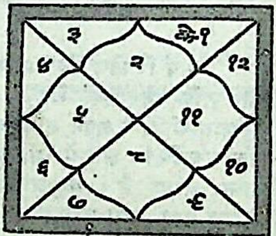


३१८

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु एकादशभाव में बैठा हुआ क्रूर ग्रह विशेष प्रभावशाली होता है, इसलिये उसे अच्छा लाभ भी प्राप्त होता है। कठिन परिश्रम के उपरान्त जातक को यथेष्ट धन की प्राप्ति होती है तथा कभी-कभी विशेष संकटों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक आशावादी, हिम्मती, धैर्यवान्, चतुर तथा परिश्रमी होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

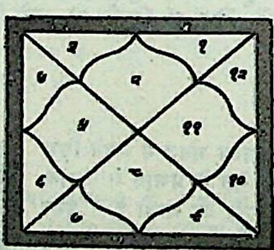
वृष लग्न: द्वादशभाव: केतु]



३१९

बारहवें व्यय-भाव में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी उसे परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं। क्रूर ग्रह की राशि पर क्रूर ग्रह की उपस्थिति के कारण जातक घोर परिश्रमी तथा कठिनाइयों पर विजय पाने वाला होता है, अतः ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक बड़ा साहसी, उद्योगी, धैर्यवान् तथा चतुर भी होता है।

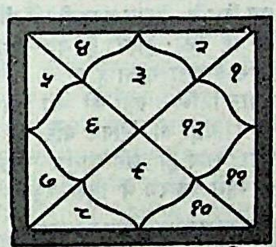
'वृषभ' लग्न का फलादेश समाप्त



३२०

✽ ✽ ✽

मिथुन लग्न



३२१

[मिथुन लग्न वाली कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग फलादेश]

मिथुन लग्न का संक्षिप्त फलादेश

मिथुन लग्न में जन्म लेने वाले जातक के शरीर का रंग गेहुँआ तथा चेहरा गोल होता है। वह स्त्रियों में आसक्त, नृत्य-संगीत-वाद्य आदि का प्रेमी, हास्य-प्रवीण, दूत-कर्म करने वाला, मधुरभाषी, विनम्र, शिल्पज्ञ, विषयी, चतुर, कवि, परोपकारी, सुखी, तीर्थ-यात्री, गणितज्ञ, ऐश्वर्यवान, बहु सन्तति एवं मित्रवान्, सुशील, दानी, अनेक प्रकार के भोगों का उपयोग करने वाला, राजा के समीप रहने वाला तथा राजा से ही पीड़ित होने वाला तथा सुन्दर केशों वाला होता है।

मिथुन लग्न वाले व्यक्ति की आयु मध्यम होती है। वह अपनी प्रारम्भिक अवस्था में सुखी, मध्यावस्था में दुःखी तथा अन्तिम अवस्था में पुनः सुखोपभोग करने वाला होता है। उसका भाग्योदय ३२ से ३५ वर्ष की आयु के बीच का होता है।

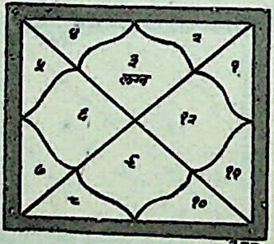
मिथुन लग्न

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव मुख्यतः दो प्रकार से पड़ता है—

(१) ग्रहों की जन्मकालीन स्थिति के अनुसार।
(२) ग्रहों की दैनिक गोचर गति के अनुसार।

जातक की जन्मकालीन ग्रह स्थिति 'जन्म-कुण्डली' में दी गई होती है। उसमें जो ग्रह जिस भाव में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित प्रभाव निरन्तर स्थाई रूप से डालता रहता है।

दैनिक गोचर गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसकी जान-कारी पंचाग द्वारा की जा सकती है। ग्रहों की दैनिक गति के सम्बन्ध में या तो किसी ज्योतिषी से पूछ लेना चाहिए अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिए। इस सम्बन्ध में पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।



३२२

दैनिक गोचर गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर अस्थाई रूप से अपना प्रभाव डालते हैं। उदाहरण के लिये यदि किसी जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य मिथुन राशि पर प्रथमभाव में बैठा है, तो उसका स्थाई प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ३२३ के अनुसार पड़ता रहेगा, परन्तु यदि दैनिक ग्रह गोचर में कुण्डली देखते समय सूर्य कर्क राशि के द्वितीय भाव में बैठा है, तो उस स्थिति में वह उदाहरण-कुण्डली संख्या ४३५ के अनुसार उतनी अवधि तक जातक के जीवन पर अपना अस्थाई प्रभाव अवश्य डालेगा, जब तक कि वह 'कर्क' राशि से हटकर 'सिंह' राशि में नहीं चला जाता। सिंह राशि में पहुँच कर वह सिंह राशि के अनुरूप अपना प्रभाव

डालना आरम्भ कर देगा। अतः जिस जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य मिथुन राशि के प्रथम भाव में बैठा हो, उसे उदाहरण-कुण्डली संख्या ३२३ में फलादेश देखने के पश्चात् यदि उन दिनों सूर्य कर्क राशि के द्वितीय भाव में बैठा हो, तो उदाहरण-कुण्डली संख्या ४३५ का फलादेश भी देखना चाहिए तथा इन दोनों फलादेशों के समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को अपने वर्तमान समय पर प्रभावकारी समझना चाहिये। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विषय में जान लेना चाहिये।

'मिथुन' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदाहरण-कुण्डली संख्या ३२३ से ४३० तक में किया गया है। पंचाग की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार मिथुन लग्न में जन्म लेने वाले जातकों को किन-किन उदाहरण-कुण्डलियों द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना चाहिये—इसका विस्तृत वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है, अतः उसके अनुसार ग्रहों की तात्कालिक स्थिति के सामयिक प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिये। तदुपरान्त दोनों फलादेश के समन्वय-स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिये।

इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक जन्म-कुण्डली का ठीक-ठीक फलादेश सहज में ही ज्ञात कर सकता है।

टिप्पणी—(१) पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश से ऊपर अथवा ३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह सूर्य से अस्त होता है, वह भी जातक के ऊपर अपना प्रभाव या तो बहुत कम डालता है या पूर्णतः प्रभावहीन रहता है।

(२) स्थाई जन्म-कुण्डली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा अपनी कुण्डली में लिखवा लेने चाहियें, ताकि उनके अंशों के विषय में बार-बार जानकारी प्राप्त करने के झंझट से बचा जा सके। तात्कालिक गोचर के ग्रहों के अंश की जानकारी पंचाङ्ग द्वारा अथवा किसी ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेनी चाहिये।

(३) स्थायी जन्म-कुण्डली अथवा तात्कालिक ग्रह-गति कुण्डली में यदि किसी भाव में एक से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन स्थानों पर उनकी दृष्टियाँ पड़ती हैं, जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता है। इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में 'ग्रहों की युति का प्रभाव' शीर्षक के अन्तर्गत विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन किया गया है, अतः इस विषय की जानकारी वहाँ से प्राप्त कर लेनी चाहिये।

(४) विंशोत्तरी दशा के सिद्धान्तानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० वर्ष की मानी जाती है। इस आयु-अवधि में जातक नवग्रहों की दशाओं का भोग कर लेता है। विभिन्न ग्रहों का दशा-काल भिन्न-भिन्न होता है। परन्तु अधिकांश व्यक्ति इतनी लम्बी आयु तक जीवित नहीं रह पाते; अतः वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं का भोग कर पाते हैं। जातक के जीवन के जिस काल में जिस ग्रह की दशा—जिसे 'महादशा' कहा जाता है—चल रही होती है, जन्म-कालीन ग्रह-स्थिति के अनुसार, उसके जीवन-काल की उतनी अवधि, उस ग्रह-विशेष के प्रभाव से विशेष रूप से प्रभावित रहती है। जातक का जन्म किस ग्रह की महादशा में हुआ है और उसके जीवन में किस अवधि से किस अवधि तक किस ग्रह की महादशा चलेगी और वह महादशा जातक के ऊपर अपना क्या विशेष प्रभाव डालेगी—इन सब बातों का उल्लेख भी तीसरे प्रकरण में किया गया है।

इस प्रकार (१) जन्म-कुण्डली, (२) तात्कालिक ग्रह-गोचर कुण्डली एवं (३) ग्रहों की महादशा—इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है, अतः इन तीनों के समन्वय-स्वरूप फलादेश का ठीक-ठीक निर्णय करके अपने भूत, वर्तमान तथा भविष्यत्-कालीन जीवन के विषय में सम्यक्-जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिये।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'सूर्य' का फलादेश

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३२३ से ३३४ तक में देखना चाहिये।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थाई-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये—

(१) जिस महीने में 'सूर्य' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३२३ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस महीने में 'सूर्य' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३२४ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस महीने में 'सूर्य' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३२५ के अनुसार समझना चाहिये।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३२६ में अनुसार समझना चाहिये।

(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३२७ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३२८ के अनुसार समझना चाहिये।

(७) जिस महीने में 'सूर्य' धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३२९ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३३० के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३३१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३३२ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'सूर्य' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २३३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३३४ के अनुसार समझना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३३५ से ३४६ तक में देखना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह—गोचर कुण्डली के विभिन्न-भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए।

(१) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मिथुन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३३५ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३३६ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'सिंह' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३३७ के अनुसार समझना चाहिये।

(४) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कन्या' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३३८ के अनुसार समझना चाहिये।

(५) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'तुला' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३३९ के अनुसार समझना चाहिये।

(६) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३४० के अनुसार समझना चाहिये।

(७) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'धनु' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३४१ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मकर' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३४२ के अनुसार समझना चाहिये।

(९) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३४३ के अनुसार समझना चाहिये।

(१०) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मीन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३४४ के अनुसार समझना चाहिये।

(११) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मेष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३४५ के अनुसार समझना चाहिये।

(१२) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'वृष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३४६ के अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'मङ्गल' का फलादेश

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३४७ से ३५८ तक में देखना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए।

(१) जिस महीने में 'मंगल' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३४७ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३४८ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'मंगल' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३४९ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'मंगल' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३५० के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३५१ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'मंगल' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३५२ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'मंगल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३५३ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'मंगल' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३५४ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'मंगल' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३५५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'मंगल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३५६ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'मंगल' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३५७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'मंगल' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३५८ के अनुसार समझना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'बुध' का फलादेश

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३५९ से ३७० तक में देखना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३५९ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३६० के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३६१ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३६२ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'बुध' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३६३ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'बुध' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३६४ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'बुध' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३६५ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'बुध' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३६६ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'बुध' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३६७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'बुध' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३६८ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'बुध' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३६९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३७० के अनुसार समझना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'गुरु' का फलादेश

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३७१ से ३८२ तक में देखना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए।

(१) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३७१ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३७२ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'गुरु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३७३ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३७४ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष 'गुरु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३७५ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३७६ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'गुरु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३७७ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३७८ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३७९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३८० के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुण्डली संख्या ३८१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३८२ के अनुसार समझना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म–लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'शुक्र' का फलादेश

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३८३ से ३९४ तक में देखना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३८३ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३८४ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३८५ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'शुक्र' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३८६ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'शुक्र' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३८७ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३८८ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'शुक्र' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३८९ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'शुक्र' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३९० के अनुसार समझना चाहिये।

(९) जिस महीने में 'शुक्र' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३९१ के अनुसार समझना चाहिये ।

(१०) जिस महीने में 'शुक्र' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली सख्या ३९२ के अनुसार समझना चाहिये ।

(११) जिस महीने में 'शुक्र' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३९३ के अनुसार समझना चाहिए ।

(१२) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३९४ के अनुसार समझना चाहिये ।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'शनि' का फलादेश

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३९५ से ४०६ तक में देखना चाहिए ।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित शनि का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए ।

(१) जिस वर्ष में 'शनि' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३९५ के अनुसार समझना चाहिए ।

(२) जिस वर्ष में 'शनि' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३९६ के अनुसार समझना चाहिए ।

(३) जिस वर्ष में 'शनि' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३९७ के अनुसार समझना चाहिए ।

(४) जिस वर्ष में 'शनि' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३९८ के अनुसार समझना चाहिए ।

(५) जिस वर्ष में 'शनि' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३९९ के अनुसार समझना चाहिए ।

(६) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४०० के अनुसार समझना चाहिए ।

(७) जिस वर्ष में 'शनि' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४०१ के अनुसार समझना चाहिए ।

(८) जिस वर्ष में 'शनि' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४०२ के अनुसार समझना चाहिए ।

(९) जिस वर्ष में 'शनि' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४०३ के अनुसार समझना चाहिए ।

(१०) जिस वर्ष में 'शनि' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४०४ के अनुसार समझना चाहिए ।

(११) जिस वर्ष में 'शनि' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४०५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४०६ के अनुसार समझना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'राहु' का फलादेश

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४०७ से ४१८ तक में देखना चाहिए—

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'राहु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या के ४०७ अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'राहु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४०८ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४०९ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४१० के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'राहु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४११ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४१२ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४१३ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'राहु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४१४ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'राहु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४१५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४१६ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'राहु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४१७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४१८ के अनुसार समझना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'केतु' का फलादेश

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४१९ से ४३० तक में देखना चाहिए।

मिथुन (३) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थाई-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'केतु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४१९ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस वर्ष में 'केतु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४२० के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'केतु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४२१ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'केतु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४२२ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'केतु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४२३ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४२४ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'केतु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४२५ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'केतु' 'मकर' राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४२६ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'केतु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४२७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'केतु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४२८ के अनुसार समझना चाहिए।

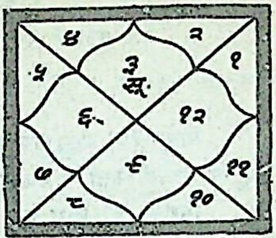
(११) जिस वर्ष में 'केतु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४२९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुण्डली संख्या ४३० के अनुसार समझना चाहिए।

'मिथुन' लग्न में 'सूर्य' का फल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: प्रथमभाव: सूर्य

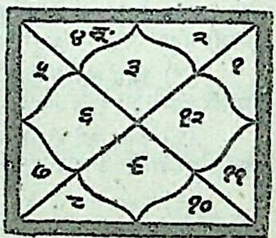


३२३

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक बड़ा तेजस्वी, हिम्मती, साहसी, पुरुषार्थी, तथा उद्योगी होता है। वह अपने परिश्रम द्वारा ऊँचे-ऊँचे काम करता है तथा भाई-बहिन की शक्ति भी प्राप्त करता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्र-दृष्टि से बृहस्पति की धनराशि वाले सप्तम-भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में भी सफलता मिलती है। ऐसे जातक का गृहस्थ-जीवन सुखपूर्ण होता है और वह स्वयं बड़ा हिम्मती, फुर्तीला, उद्योगी, प्रभावशाली तथा क्रोधी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: द्वितीयभाव: सूर्य

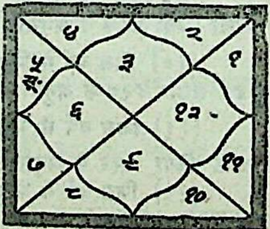


३२४

दूसरे धन तथा कुटुम्ब भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक अपने पुरुषार्थ द्वारा धन तथा कुटुम्ब के सुख में वृद्धि करता है, परन्तु भाई-बहिन की शक्ति में कुछ कमी रहती है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रु दृष्टि से शनि की मकर राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को दैनिक जीवनचर्या में कुछ अशान्ति का अनुभव होता है तथा पुरातत्त्व के लाभ में भी कमी आ जाती है। यों, ऐसा जातक धनी, प्रभावशाली तथा हिम्मतवर होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: तृतीयभाव: सूर्य

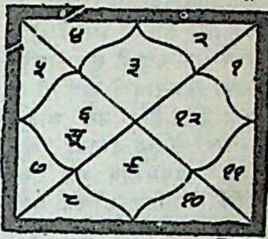


३२५

तीसरे पराक्रम एवं भाई-बहिन के घर में अपनी सिंह राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक अत्यन्त पराक्रमी होता है और उसे भाई-बहिनों की भी शक्ति प्राप्त होती है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रु-दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में नवमभाव को देखता है, उसके कारण जातक को अपने भाग्य के सम्बन्ध में कुछ असन्तोष बना रहता है तथा धार्मिक मामलों में भी कुछ विशेष श्रद्धा नहीं होती। यों, ऐसा जातक बड़ा प्रभावशाली, हिम्मतवर, पराक्रमी तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: चतुर्थभाव: सूर्य

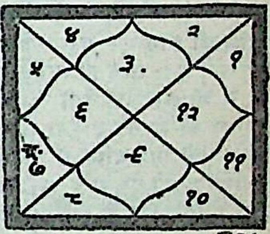


३२६

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि-भवन के घर में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का पराक्रम बढ़ा रहता है, उसे भाई-बहिनों का सुख तथा सम्मान प्राप्त होता है, माता द्वारा शक्ति मिलती है तथा भूमि-भवन, सम्पत्ति एवं सुख का भी लाभ होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपने मित्र गुरु की मीन राशि में दशमभाव को देखता है। अस्तु, जातक को पिता द्वारा सहयोग, राजकीय क्षेत्र में सफलता, व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति एवं यश की प्राप्ति होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, यशस्वी, सुखी तथा परिश्रमी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: पंचमभाव: सूर्य

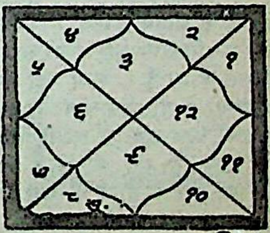


३२७

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि के स्थान में मिथुन राशि स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को संतान पक्ष से कष्ट का अनुभव होता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कमी बनी रहती है। ऐसा जातक गुप्त-युक्तियों से काम लेने वाला होता है तथा उसके बाहुबल एवं पराक्रम में कमजोरी रहती है। यहाँ से सूर्य सातवीं उच्च दृष्टि से मंगल की मेष राशि वाले एकादशभाव को देखता है, अत: जातक धन-लाभ के लिये असत्य भाषण एवं गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेता है तथा लाभ उठाता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: षष्ठभाव: सूर्य

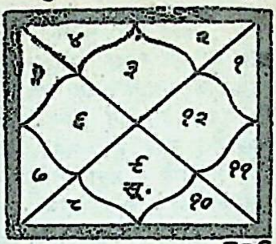


३२८

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र मंगल की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता रहता है तथा उसकी पराक्रम-शक्ति बहुत बढ़ी रहती है। ऐसे जातक का भाई-बहिनों के साथ कुछ वैमनस्य भी रहता है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रु-दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में द्वादशभाव को देखता है, अत: जातक को खर्च के मामलों में असन्तोष का अनुभव होता रहेगा तथा बाहरी स्थान के सम्बन्धों से भी विशेष सुख मिलेगा। ऐसा जातक कठिन परिश्रमी तथा साहसी भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: सप्तमभाव: सूर्य

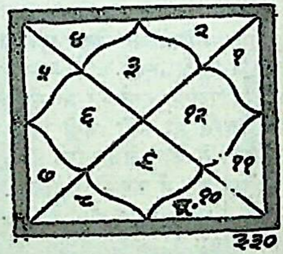


३२९

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक स्त्री-पक्ष से सुख, शक्ति एवं प्रभाव प्राप्त करता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी परिश्रम द्वारा पर्याप्त सफल होता है। उसे भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्र दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक शक्ति, सौन्दर्य एवं प्रभाव की भी प्राप्ति होती है। साथ ही, उसे अपने गृहस्थ-जीवन के सुख तथा भोगादि में भी सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: अष्टमभाव: सूर्य

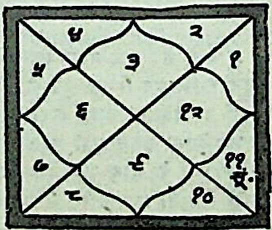


३३०

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में कुछ कमी आ जाती है। साथ ही भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी कमजोरी बनी रहती है। उसे अशान्ति एवं निराशा का अक्सर सामना करना पड़ता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्र दृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक को परिश्रम के द्वारा आर्थिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है तथा कुटुम्ब का सामान्य-सुख भी मिलता है, परन्तु वह उत्साहहीन बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: नवमभाव: सूर्य

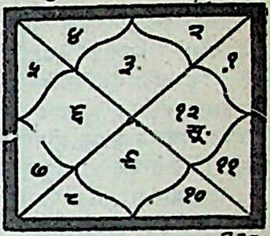


३३१

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम द्वारा अपने भाग्य की उन्नति तथा कुछ लापरवाही के साथ धर्म का पालन करता है। साथ ही उसे भाई-बहिन के सम्बन्धों से भी असन्तोष रहता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्र दृष्टि से अपनी सिंह राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई के द्वारा भी कुछ सहयोग प्राप्त होता है ऐसा जातक हिम्मती, उत्साही, परिश्रमी, उद्योगी, पराक्रमी, तेजस्वी तथा प्रभावशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्नः दशमभावः सूर्य

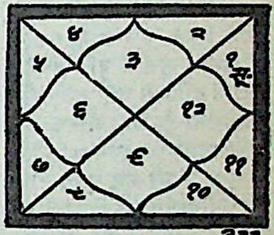


३३२

'दसवें केन्द्र' राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक अपने पिता की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त करता है तथा राज्य के क्षेत्र में भी लाभ एवं सम्मान अर्जित करता है। उसे भाई-बहिनों का सुख भी प्राप्त होता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से बुध की कन्या राशि वाले चतुर्थभाव को देखता है, अतः वह अपने पराक्रम द्वारा सुख की वृद्धि करता है। तथा माता, भूमि भवन एवं सम्पत्ति के पक्ष में भी सन्तुष्ट एवं सुखी बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुन लग्नः एकादशभावः सूर्य

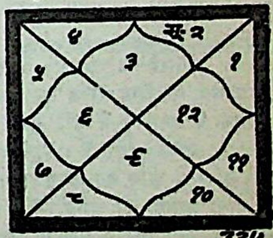


३३३

ग्यारहवें लाभ भवन में मेष राशि राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है और वह उसके द्वारा पर्याप्त धन अर्जित करता है। साथ ही उसे भाई-बहिनों की शक्ति भी मिलती है और उत्साह एवं उमंग की प्राप्ति होती है। यहाँ से सूर्य सातवीं नीच दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में पंचम-भाव को देखता है, अतः सन्तान-पक्ष के सुख में कुछ कमी आती है तथा विद्याध्ययन में भी रुकावटें पड़ती हैं। ऐसा जातक बड़ा परिश्रमी, हिम्मती एवं स्वभाव का कुछ रूखा होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'सूर्य' स्थिति हो, उसे 'सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्नः दादशभावः सूर्य



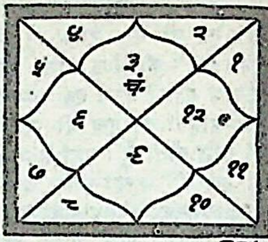
३३४

बाहरवें व्यय भवन में अपने शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। उसे भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम के क्षेत्र में भी हानि उठानी पड़ती है। सूर्य सातवीं मित्र दृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में षष्ठ भाव में देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में प्रभाव कायम रखता है। ऐसा जातक भीतरी तौर पर कमजोरी लिये रहता है, उसे छिपाकर प्रकट रूप में हिम्मत दिखाता है तथा परिश्रमी होता है।

'मिथुन' लग्न मे 'चन्द्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये।

मिथुन लग्न: प्रथमभाव: चन्द्रमा

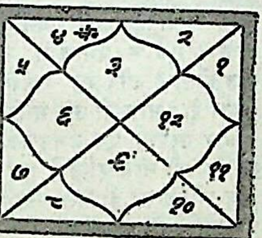


३३५

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रताप से जातक शारीरिक-शक्ति एवं मनोवल के योग से धनोपार्जन करने में कुशल होता है। साथ ही उसे कौटुम्बिक-सुख भी यथेष्ट मात्रा में प्राप्त होता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्र दृष्टि से गुरु की धनु राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से भी अच्छी शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा जातक सुन्दर, धनी, सुखी, प्रतिष्ठित तथा सुन्दर पत्नी वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए-

मिथुन लग्न: द्वितीयभाव: चन्द्रमा

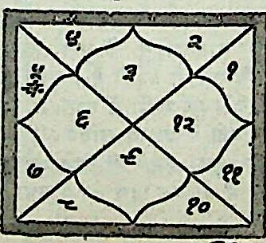


३३६

दूसरे धन तथा कुटुम्ब स्थान में अपनी कन्या राशि स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के धन एवं कौटुम्बिक सुख में वृद्धि होती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से शत्रु शनि की मकर राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को अपने दैनिक जीवन में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा तथा पुरातत्वके सम्बन्ध में भी कुछ हानि होगी। ऐसा जातक अपने मन को धनोपार्जन की दिशा में लगाये रखता है तथा लाभ प्राप्त करता है। वह यशस्वी एवं सुखी होते हुए भी मानसिक रूप से कुछ चिन्तित बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: तृतीयभाव: चन्द्रमा

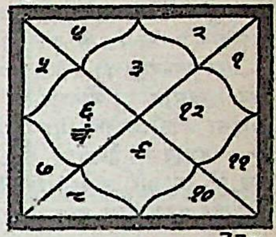


३३७

तीसरे पराक्रम एवं भाई-बन्धु के स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों को सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रु दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक को भाग्योन्नति में कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं तथा धर्म के पक्ष में भी कमी रहती है। ऐसा जातक धर्म से धन को अधिक महत्त्व देता है। वह पुरुषार्थी धनी, प्रतिष्ठित तथा यशस्वी भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

मिथुन लग्न: चतुर्थभाव: चन्द्रमा

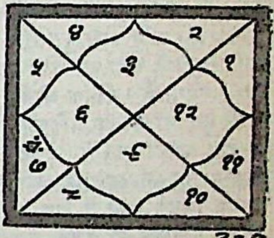


३३८

चौथे केन्द्र, माता तथा सुख स्थान में अपने मित्र बुध की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता के सुख में तो कुछ कमी आती है; परन्तु धन, भूमि, सम्पत्ति तथा कुटुम्ब का सुख खूब प्राप्त होता है। यहाँ से चंद्रमा सातवीं मित्र-दृष्टि से गुरु की मीन राशि में दशमभाव को देखता है, अत: जातक को पिता एवं राज्य के द्वारा सुख तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। साथ ही व्यवसाय में सफलता एवं धन की उन्नति के योग भी बनते हैं। ऐसा जातक धनी, सुखी तथा प्रभावशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: पंचमभाव: चन्द्रमा

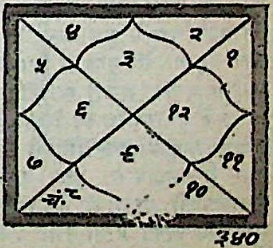


३३९

पाँचवें त्रिकोण तथा विद्या व सन्तान के भाव में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सन्तान के सुख में तो कुछ रुकावटें आती हैं परन्तु विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है और वह अपनी विद्या-बुद्धि के द्वारा धन भी उपार्जित करता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्र-दृष्टि से मंगल की मेष राशि में एकादश भाव को देखता है, अत: जातक की आमदनी अच्छी रहती है और वह ऐश्वर्यशाली, प्रतिष्ठित, सुखी, धनी तथा चतुर होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ-भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: षष्ठभाव: चन्द्रमा

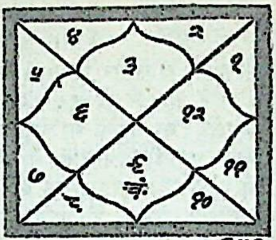


३४०

छठे शत्रु एवं रोग के स्थान में अपने मित्र मंगल की राशि वृश्चिक पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को धन प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा शत्रु पक्ष द्वारा हानि पहुँचने की सम्भावना भी रहती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में द्वादशभाव को देखता है, अत: जातक का खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण धन का संचय नहीं हो पाता परन्तु बाहरी स्थानों से लाभ होता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को धन प्राप्ति के सम्बन्ध में अपयश का भागी भी बनना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: सप्तमभाव: चन्द्रमा

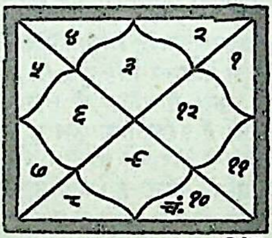


३४१

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से सुख के साधनों में कुछ रुकावटों के साथ सफलता की प्राप्ति होती है तथा विवाहोपरान्त धन, व्यवसाय एवं भोगादि की उन्नति होती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है तथा धन-वृद्धि के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: अष्टमभाव: चन्द्रमा

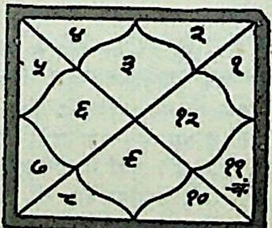


३४२

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व के पक्ष में कुछ परेशानी बनी रहती है तथा धन-कोष एवं कुटुम्ब के सुख में भी बाधा पड़ती है। दैनिक जीवन में परेशानियों का सामना करते हुए भी जातक प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से अपनी ही कर्क राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अत: जातक को धन प्राप्ति के साधन मिलते रहते हैं तथा कुटुम्ब की उन्नति के लिए विशेष परिश्रम भी करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: नवमभाव: चन्द्रमा

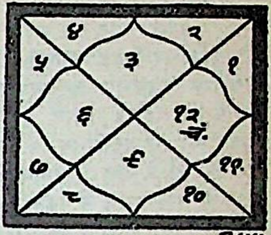


३४३

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि में स्थित शनि के प्रभाव से जातक को भाग्य पक्ष में कुछ असन्तोष के साथ लाभ होता है और वह धन की वृद्धि के लिए धर्म का पालन करता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में तृतीयभाव को देखता है अत: जातक को भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी यशस्वी, प्रभावशाली, पराक्रमी, हिम्मतदार तथा भाई-बहिनों का सुख पाने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुन लग्न: दशमभाव: चन्द्रमा

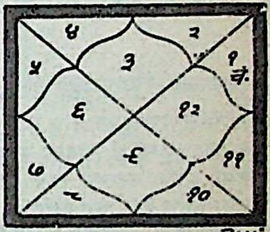


३४४

दसवें केन्द्र, पिता तथा राज्य के भवन में अपने मित्र गुरु की मिथुन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता एवं राज्य द्वारा लाभ, सुख, धन तथा मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति होती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्र दृष्टि से बुध की कन्या राशि में चतुर्थभाव को देखता है। अतः उसे माता, भूमि, मकान एवं घरेलू सुखों की प्राप्ति होती है, परन्तु धन की उन्नति में उसे कुछ घिराव का सा भी अनुभव होता रहता है।

जिस जातक का 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुन लग्न: एकादशभाव: चन्द्रमा

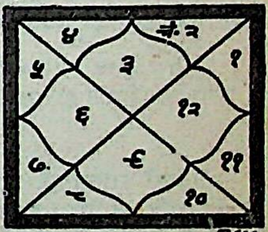


३४५

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को धन का विशेष लाभ होता है। साथ ही कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्र दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक सन्तति-वान्, विद्वान् बुद्धिमान, सुखी, धनी, प्रतिष्ठित, यशस्वी एवं कुटुम्ब का सुख पाने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये।

मिथुन लग्न: द्वादशभाव: चन्द्रमा



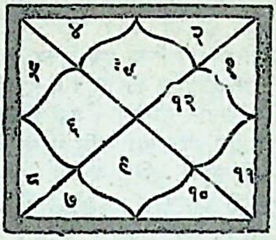
३४६

बारहवें व्यय भाव में शुक्र की वृष राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त होता है। साथ ही कुटुम्ब की शक्ति में कुछ कमी बनी रहती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं नीच दृष्टि से अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि में षष्ठ भाव को देखता है, अतः शत्रु पक्ष में उसे झुककर अपना काम निकालना पड़ता है, साथ ही रोग, झगड़े आदि के कारण मन में कुछ अशान्ति भी बनी रहती है।

'मिथुन' लग्न में 'मंगल' का फल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के प्रथम-भाव में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये।

मिथुन लग्न: प्रथमभाव: मंगल

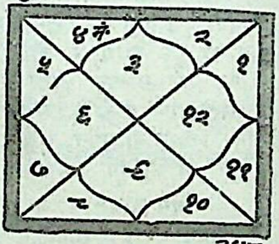


३४७

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को शारीरिक श्रम द्वारा धन का यथेष्ट लाभ होता है तथा शत्रु पक्ष में भी विजय प्राप्त होती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अत: माता तथा सुख के पक्ष में कुछ असन्तोषयुक्त लाभ होता है। सातवीं दृष्टि के सप्तमभाव में पड़ने से स्त्री के सम्बन्ध में कुछ रोग तथा परेशानी होती है एवं परिश्रम द्वारा व्यवसाय से लाभ होता है। आठवीं उच्च दृष्टि से अष्टमभाव में पड़ने से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसा जातक क्रोधी, परिश्रमी, झगड़ालू तथा लाभ कमाने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुन लग्न: द्वितीयभाव: मंगल

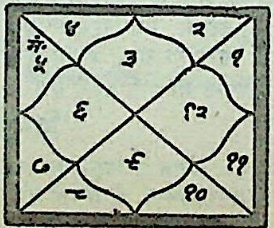


३४८

दूसरे धन-कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के सम्बन्ध में हानि उठानी पड़ती है तथा शत्रुओं द्वारा उत्पन्न किये गये झगड़ों में भी नुकसान उठाना होता है। धन-हानि के कार्य जुए-सट्टे द्वारा भी हो सकते हैं। यहाँ से बुध चौथी दृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अत: सन्तान के पक्ष में भी कुछ कष्ट होता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में गुप्त युक्तियों द्वारा लाभ होता है। सातवीं उच्च दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। आठवीं शत्रु दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्योन्नति में कठिनाई पड़ती है तथा धर्म में सच्ची श्रद्धा नहीं होती। ऐसा जातक धन प्राप्ति के लिये कठिन परिश्रम करता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुन लग्न: तृतीयभाव: मंगल

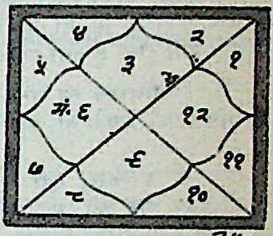


तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान में अपने मित्र सूर्य की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का कुछ परेशानी के साथ सहयोग तथा सुख प्राप्त होता है एवं पराक्रम की वृद्धि होती है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि के षष्ठ भाव को देखता है, अत: शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करता है और उससे लाभ भी उठाता है, सातवीं शत्रु दृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण भाग्य तथा धर्म के पक्ष में सामान्य लाभ होता है तथा आठवीं मित्र दृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता

तथा राज्य पक्ष से धन, सम्मान, यश एवं प्रभाव की वृद्धि होती है और जातक अपने परिश्रम द्वारा धनोपार्जन के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्नः चतुर्थभावः मंगल

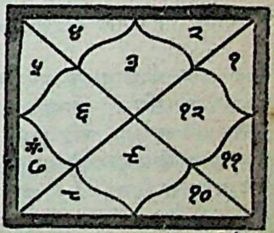


३५०

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं स्थान के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता के पक्ष में सामान्य वैमनस्य युक्त लाभ प्राप्त होता है तथा भूमि, मकान आदि के सुख में कुछ परेशानियों के साथ लाभ होता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्र दृष्टि से सप्तमभाव को देखता है. अतः स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से भी कुछ झंझट के साथ लाभ होता है। सातवीं मित्र दृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता एवं राज्य के क्षेत्र से परिश्रम द्वारा लाभ एवं यश की प्राप्ति होती है तथा आठवीं दृष्टि से एकादश भाव को अपनी मेष राशि में देखने के कारण आमदनी अच्छी होती है। संक्षेप में, जातक को कुछ परेशानियों के साथ परिश्रम द्वारा सभी क्षेत्रों में लाभ एवं उन्नति के योग प्राप्त होते हैं।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुन लग्नः पंचमभावः मंगल

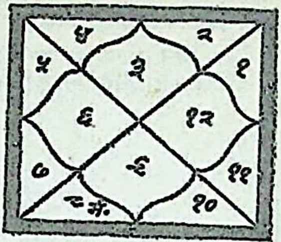


३५१

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को सन्तान के पक्ष में सामान्य वैमनस्य के साथ लाभ होता है तथा परिश्रम के द्वारा विद्या-बुद्धि की प्राप्ति होती है। यहाँ से मंगल चौथी उच्च दृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु की वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है एवं दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण रहता है। सातवीं दृष्टि स्वराशि के एकादशभाव में पड़ने से जातक गुप्त-युक्तियों एवं परिश्रम द्वारा पर्याप्त लाभ कमाता है एव आठवीं दृष्टि द्वादश भाव में पड़ने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। ऐसे जातक को पेट सम्बन्धी बीमारियाँ भी बनी रहती हैं। संक्षेप में, ऐसा जातक परिश्रम द्वारा धनी तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुन लग्न: षष्ठभाव: मंगल

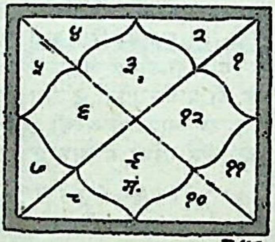


३५२

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपनी ही वृश्चिक राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर अत्यन्त प्रभाव रखता है तथा कठिन परिश्रम द्वारा अपनी आमदनी में भी वृद्धि करता है। उसे झगड़े-झंझटों के मामलों तथा मामा के पक्ष से भी लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रु-दृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः भाग्य एवं धर्म के पक्ष में कुछ कमी एवं असन्तोष रहता है। सातवीं मित्र दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। आठवीं मित्र दृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शरीर से परिश्रमी होता है तथा परिश्रम द्वारा ही धनोपार्जन करता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: सप्तमभाव: मंगल

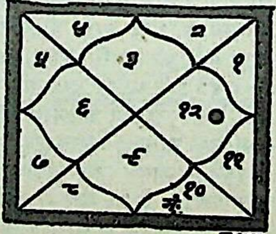


३५३

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से कुछ झंझटों के साथ व्यावसायिक-क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है तथा स्त्री-पक्ष में भी रोग एवं झंझटों के साथ लाभ होता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्र दृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता तथा राज्य के द्वारा भी कुछ परेशानियों के साथ धन, मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्र दृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक की शारीरिक-शक्ति में वृद्धि होती है, परन्तु रक्त-विकार आदि रोग भी होते हैं। आठवीं नीच दृष्टि से द्वितीय-भाव को देखने के कारण धन-संग्रह में कमी रहती है, जिसके कारण दुःख का अनुभव होता है। साथ ही, कुटुम्ब के कारण भी क्लेश प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये —

मिथुन लग्न: अष्टमभाव: मंगल

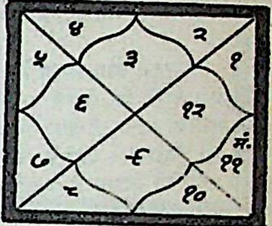


३५४

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में शत्रु शनि की मकर राशि में स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। साथ ही शत्रु पक्ष में भी कुछ परेशानी के बाद सफलता मिलती है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही मेष राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः परिश्रम द्वारा धन का लाभ होता है तथा विदेश के सम्बन्धों से भी आमदनी होती है। जीवन-निर्वाह के लिये बँधी हुई आमदनी का योग रहता है। सातवीं नीच दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन-संग्रह में कमी तथा कुटुम्ब से क्लेश रहता है। आठवीं दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन के सम्बन्ध में कुछ परेशानी के साथ लाभ प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्न: नवमभाव: मंगल

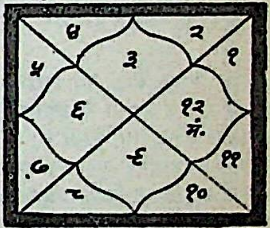


३५५

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति परिश्रम एवं कुछ कठिनाइयों के बाद होती है तथा अरुचिकर रूप से धर्म का पालन भी होता है। शत्रु-पक्ष में भी कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता प्राप्त होती है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। सातवीं मित्र दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख मिलता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता तथा भूमि, मकान आदि के सुख में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: दशमभाव: मंगल

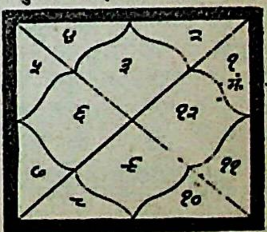


३५६

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को परिश्रम द्वारा पिता तथा राज्य के क्षेत्र में लाभ तथा यश की प्राप्ति होती है। साथ ही शत्रु पक्ष में भी बड़ा प्रभाव बना रहता है। यहाँ से मंगल चौथी-मित्र दृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है तथा कभी-कभी रोग का शिकार भी होना पड़ता है। सातवीं दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता तथा भूमि आदि के सुख में कुछ परेशानियों के साथ सफलता मिलती है। आठवीं मित्र दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने के कारण सन्तान-पक्ष से वैमनस्य युक्त लाभ होता है तथा विद्या के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। ऐसे जातक की आमदनी अच्छी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्न: एकादशभाव: मंगल



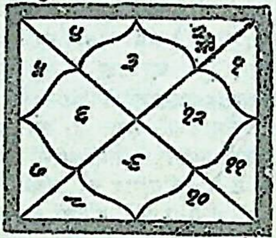
३५७

ग्यारहवें लाभ भवन में अपनी मेष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन का लाभ पर्याप्त तथा स्थानी रूप से प्राप्त होता है, परन्तु मंगल के शत्रु स्थानाधिपति होने के कारण कभी-कभी कुछ कठिनाइयाँ उठायी पड़ती हैं। यहाँ से मंगल चौथी नीच दृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः धन का संग्रह नहीं हो पाता तथा कुटुम्ब के मामलों में भी कष्ट मिलता है। सातवीं दृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण सन्तान-पक्ष से कुछ परेशानी के साथ लाभ होता है तथा विद्या-

वृद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आठवीं दृष्टि से स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष पर प्रभाव बना रहता है और शत्रुओं तथा झगड़ों द्वारा लाभ भी मिलता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: द्वादशभाव: मंगल



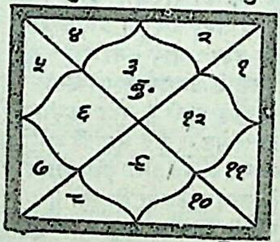
३५८

बारहवें व्यय स्थान में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्र दृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन के पक्ष से भी कुछ परेशानियों के बाद लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृश्चिक राशि में षष्ठ भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष से हानि और लाभ दोनों ही मिलते हैं तथा मामा पक्ष कमजोर रहता है। आठवीं मित्र दृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण परिश्रम द्वारा लाभ होता है तथा स्त्री-पक्ष से कुछ परेशानी बनी रहती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को जननेन्द्रिय रोग हो सकते हैं।

'वृषभ' लगन में 'चन्द्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्न: प्रथमभाव: बुध

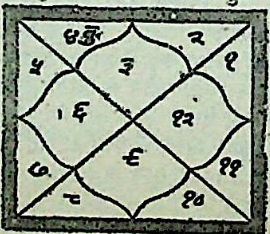


३५९

पहले केन्द्र, एवं शरीर स्थान में स्वराशि मिथुन स्थित बुध के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है, साथ ही उसे माता, भूमि, मकान तथा घरेलू सुख भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं। ऐसा जातक विवेकी एवं यशस्वी भी होता है। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री का विशेष सुख प्राप्त होता है एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। ऐसा जातक सुखी शान्त, धनी तथा प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुनलग्न: द्वितीयभाव: बुध

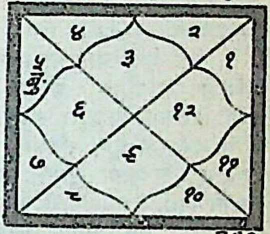


दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक धन एवं कुटुम्ब के सुख को प्राप्त करता है, परन्तु शारीरिक सुख में कुछ कमी बनी रहती है। उसे माता के सुख में भी कुछ कमी रहती है परन्तु भूमि सम्पत्ति आदि का सुख प्राप्त होता है। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से अपने मित्र शनि की मकर राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

३६०

जस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये —

मिथुनलग्न: चतुर्थभाव: बुध

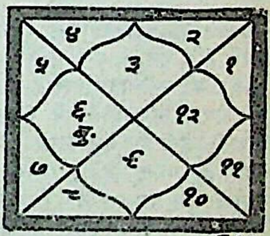


३६१

तीसरे पराक्रम एवं भाई-बहिन के घर में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख भी प्राप्त होता है। साथ ही जातक को माता के सुख एवं भूमि, मकान आदि की उपलब्धि भी होती है। ऐसा जातक बहादुर तथा हिम्मत वाला होता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्र दृष्टि से नवमभाव को शनि की कुम्भ राशि में देखता है, अत: जातक अपने पुरुषार्थ एवं विवेक द्वारा भाग्य की उन्नति तथा धर्म का पालन भी करता है। ऐसा जातक स्वभाव से सज्जन, यशस्वी तथा धैर्यवान् होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुनलग्न: चतुर्थभाव: बुध

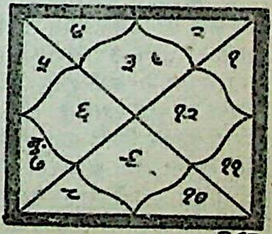


३६२

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि-भवन के स्थान में अपनी कन्या राशि पर स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक को माता द्वारा बहुत सुख प्राप्त होता है तथा भूमि, मकान सम्पत्ति आदि की भी प्राप्ति होती है। ऐसे जातक को मनोविनोद के साधन तथा शारीरिक सौन्दर्य का भी लाभ होता है। यहाँ से बुध सातवीं नीच दृष्टि से गुरु की मीन राशि में दशम भाव को देखता है, अत: पिता के स्थान में कुछ हानि उठानी पड़ती है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ कमी बनी रहती है। घरेलू सुखों के कारण जातक कुछ लापरवाह-सा बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुन लग्न: पंचमभाव: बुध

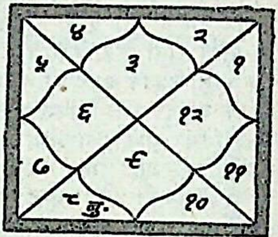


३६३

पांचवें त्रिकोण विद्या, बुद्धि, एवं सन्तान के भाव में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को सन्तान एवं विद्या-बुद्धि का विशेष लाभ प्राप्त होता है। ऐसा जातक बड़ा समझदार, गम्भीर, चतुर तथा आत्मविश्वासी होता है। सब लोग उसे बहुत योग्य व्यक्ति मानते हैं। यहां से बुध सातवीं मित्र दृष्टि से मंगल की मेष राशि में एकादशभाव को देखता है, अत: जातक को अपनी शारीरिक एवं बौद्धिक शक्ति द्वारा पर्याप्त लाभ होता है। साथ ही माता, भूमि, तथा भवन का सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा जातक शान्तिप्रिय तथा गम्भीर स्वभाव का होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ट भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्न: षष्ठभाव: बुध

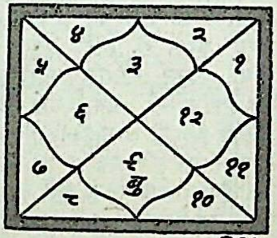


३६४

छठे शत्रु स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में अपनी विवेक-शक्ति द्वारा सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति शरीर से खूब परिश्रम करने वाला होता है। उसे माता के सुख तथा भूमि-भवन आदि के पक्ष में हानि उठानी पड़ती है तथा शारीरिक-सौन्दर्य में भी कमी रहती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्र-दृष्टि से न्यायभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्ध से सुख प्राप्त होता है। उसे मामा से भी सुख मिलता में, झगड़े झंझट के कारण कुछ परेशानी भी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्न: सप्तमभाव: बुध

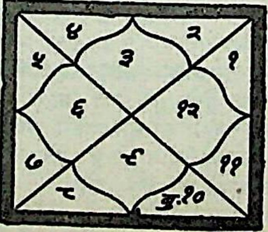


३६५

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि में स्थित बुध के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से श्रेष्ठ सुख एवं स्नेह प्राप्त होता है। तथा दैनिक जीवन में भी सुख, शान्ति एवं सफलता मिलती रहती है। ऐसे जातक को माता के पक्ष में कुछ कमी रहती है, परन्तु भूमि, मकान, भोग-विलास आदि का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है। यहाँ से बुध अपनी ही मिथुन राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः शारीरिक सौन्दर्य, मान, चतुराई तथा सुख की प्राप्ति भी होती है। ऐसा जातक बड़ा स्वाभिमानी होता है तथा यश भी प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुन लग्न: अष्टमभाव: बुध

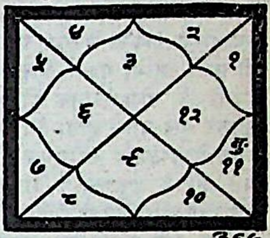


३६६

आठवें मृत्यु तथा पुरातत्त्व के स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि में स्थित बुध के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है, परन्तु माता के सुख में कमी होती है। शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में त्रुटि रहती है तथा जातक को अपनी मातृ-भूमि से हटकर किसी अन्य स्थान पर रहना पड़ता है। भूमि, मकान आदि के पक्ष में भी हानि उठानी पड़ती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्र दृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक धन वृद्धि के लिये प्रयत्नशील बना रहता है तथा कुटुम्ब से सुख प्राप्त करता है, परन्तु शारीरिक सुख एवं शान्ति में परेशानी उपस्थित होती रहती है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवमभाव में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये

मिथुन लग्न: नवमभाव: बुध

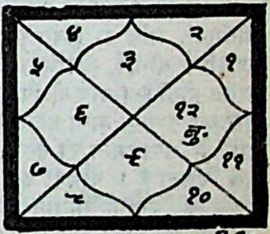


३६७

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक श्रम तथा विवेक-शक्ति द्वारा उन्नति करता है तथा धर्म का पालन भी करता है। वह भूमि, मकान, माता के सुख आदि को भी प्राप्त करता है तथा भाग्यशाली बन कर अनेक प्रकार के सुखों का उपभोग करता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा उसे भाई-बहिन का श्रेष्ठ सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा जातक भाग्यवान, समझदार, सुखी, धनी, विवेकी, सन्तुष्ट तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुन लग्न: दशमभाव:बुध

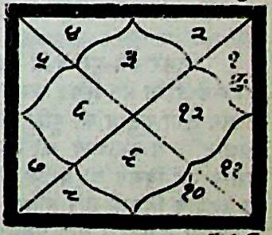


३६८

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में मीन राशि पर स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक कठिन शारीरिक श्रम द्वारा उन्नति के लिये प्रयत्नशील रहता है। उसे पिता का अल्प-सुख प्राप्त होता है तथा राज्य के क्षेत्र में भी विशेष सफलता नहीं मिलती। वह कभी अपमानित और कभी सम्मानित भी होता है। यहाँ से बुध सातवीं उच्च-दृष्टि से प्रथमभाव को बुध की कन्या राशि में देखता है, अतः जातक के सुख-साधनों में वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्न: एकादशभाव: बुध

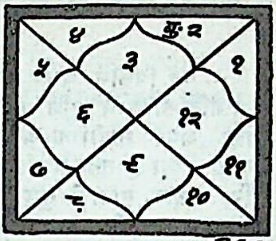


३६९

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर, स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक श्रम एवं विवेक के द्वारा पर्याप्त लाभ उठाता है। साथ ही भूमि, सम्पत्ति, मकान तथा माता के सुख को भी प्राप्त करता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्र दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान-पक्ष से भी सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है। ऐसा जातक सुखी, धनी, विवेकी, विद्वान, सुन्दर तथा मीठी वाणी बोलने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये।

मिथुन लग्नः द्वादशभावः बुध



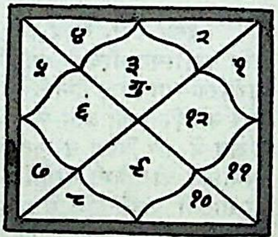
३६०

बारहवें व्ययभाव तथा बाहरी सम्बन्धों के भाव में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त होता रहता है। साथ ही माता, भूमि, मकान के सुख सम्बन्ध में कुछ कमी बनी रहती है तथा जातक को अपनी जन्म भूमि से दूर रहकर सुख प्राप्त होता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को मंगल की मेषराशि में देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में शान्ति एवं विवेक के द्वारा सफलता प्राप्त करता है। खर्च की अधिकता के कारण भीतरी रूप से चिन्तित रहते हुए भी वह अपने प्रभाव तथा सम्मान को बनाये रखता है।

'मिथुन लग्न' में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये --

मिथुनलग्न प्रथम भावः गुरु

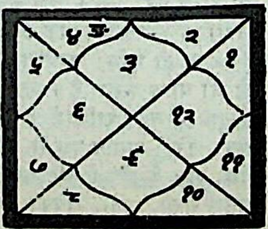


३६१

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, स्वाभिमान, मनोबल तथा सुख की प्राप्ति होती है। साथ ही पिता एवं राज्य द्वारा सहयोग-सुख एवं सम्मान प्राप्त होता है। यहाँ से गुरु सातवीं दृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री द्वारा भी सुख मिलता है। पाँचवीं शत्रु दृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण सन्तान के पक्ष में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है। नवीं-शत्रु दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में भी कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्नः द्वितीयभावः गुरु

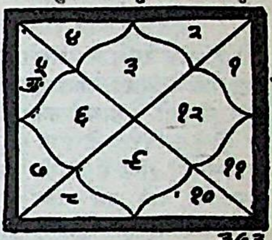


३६२

दूसरे धन-कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखता है। अतः शत्रु पक्ष में प्रभाव एवं विजय की प्राप्ति होती है तथा मामा के पक्ष से सहयोग मिलता है। सातवीं नीच दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ कमी बनी रहती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में दशमभाव को देखने के कारण पिता तथा राज्य के द्वारा सहयोग सुख एवं सम्मान प्राप्त होता है तथा व्यवसाय द्वारा धन की खूब वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'मिथन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्न: तृतीयभाव: गुरु

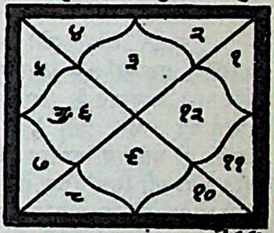


३६३

तीसरे पराक्रम एवं भाई-बहिन के स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से आपको धनु राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः सुन्दर, सशिक्षिता एवं सुयोग्यपत्नी द्वारा सुख की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में बहुत सफलता मिलती है। नवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ खूब होता है तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य तथा धर्म के पक्ष में कुछ असन्तोष एवं कमी बनी रहती है और परिश्रम द्वारा धन लाभ होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में गुरु की स्थिति हो. उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्न: चतुर्थभाव: गुरु

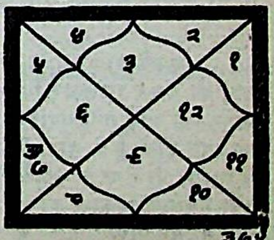


३६४

चौथे केन्द्र माता तथा भूमि-सुख भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि मकान आदि का सुख यथेष्ट मात्रा में प्राप्त होता है तथा सुख की वृद्धि होती है। पाँचवीं नीच दृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व के पक्ष में कुछ हानि एवं अशान्ति का सामना करना पड़ता है। सातवीं दृष्टि से अपनी राशि मीन में दशमभाव को देखने के कारण पिता तथा राज्य द्वारा पर्याप्त सहयोग, सफलता तथा यश की प्राप्ति होती है एवं व्यवसाय की उन्नति होती है। नवीं दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों से विशेष सम्बन्ध बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म कुण्डली के 'पंचमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्न: पंचमभाव: गुरु

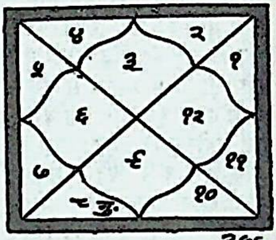


३६५

पाँचवें त्रिकोण तथा विद्या, सन्तान के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को सन्तान के पक्ष में कुछ कमी, परन्तु विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है। पाँचवीं शत्रु दृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्योन्नति में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। सातवीं मित्र दृष्टि से एकादशभाव को देखने से कारण लाभ खूब होता है। नवीं मित्र दृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक-सौन्दर्य, प्रभाव एवं स्वाभिमान की प्राप्ति होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक बड़ा विद्वान्, बुद्धिमान्, दूरदर्शी, उन्नतिशील, वाणी की शक्ति का धनी, चतुर, सुखी, तथा सफल होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: षष्ठभाव: गुरु

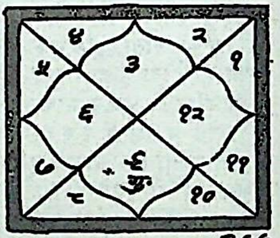


३०६

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में विजय प्राप्त होती है। साथ ही स्त्री-पक्ष में कुछ मतभेदों के साथ सफलता मिलती है तथा पिता के पक्ष से भी कुछ विरोध के साथ सहयोग मिलता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से अपनी मीन राशि में दशमभाव को देखता है, अतः उसे राज्य द्वारा सम्मान एवं उन्नति के अवसर मिलते हैं। सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च खूब रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। नवीं उच्च दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण परिश्रम के द्वारा धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब से सहयोग प्राप्त होता है। ऐसा जातक उन्नतिशील होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुनलग्न: सप्तमभाव: गुरु

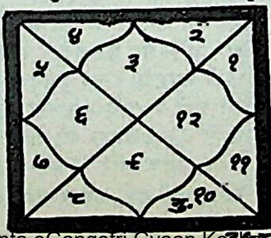


३०७

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी ही धनु राशि में स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में बड़ी सफलता, सुख एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। साथ ही पिता तथा राज्य पक्ष से भी सहयोग, सम्मान एवं सुख मिलता है। यहाँ से जातक पाँचवीं मित्र दृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को लाभ खूब होता है। सातवीं मित्र दृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक सौन्दर्य तथा सम्मान की प्राप्ति भी होती है तथा नवीं मित्र दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती तथा भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक सुन्दर, धनी, सुखी, स्वाभिमानी तथा जीवन में सफलताएँ पाने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुन लग्न: अष्टमभाव: गुरु

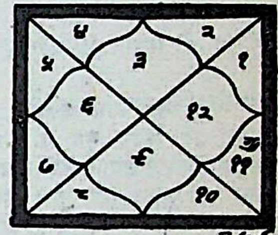


आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं। साथ ही स्त्री, पिता तथा व्यवसाय के पक्ष में भी कष्ट का अनुभव होता है। उसे उदर-विकार तथा मूत्रेन्द्रिय-विकारों का भी सामना करना पड़ता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के कपटपूर्ण-सम्बन्धों से गृहस्थी का संचालन करता है। सातवीं उच्च

दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक धन वृद्धि के लिये प्रयत्नशील रहता है तथा नवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, मकान, भूमि आदि का सुख प्राप्त होता है।

जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्नः नवमभावः गुरु

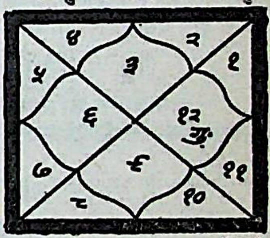


३७६

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्योन्नति करता है तथा अरुचि-पूर्वक धर्म का पालन करता है। साथ ही स्त्री तथा पिता के पक्ष पशु में भी असन्तोष बना रहता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः शारीरिक सौन्दर्य एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सहयोग भी मिलता है। नवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण सन्तान-पक्ष से कुछ असन्तोष रहता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुशलता प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुन लग्नः दशमभावः गुरु

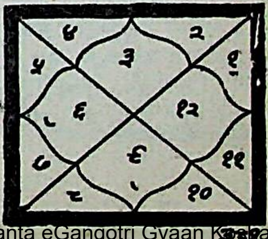


३८०

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपनी ही मीन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को राज्य एवं पिता द्वारा सुख, सहयोग तथा सम्मान की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। पाँचवीं उच्च दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक को धन-संचय की उत्तम शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि, मकान, सम्पत्ति आदि का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है तथा नवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक शत्रु पक्ष पर प्रभावशाली बना रहता है तथा मामा द्वारा भी सहायता मिलती है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी, यशस्वी तथा प्रभावशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये —

मिथुनलग्नः एकादशभावः गुरु

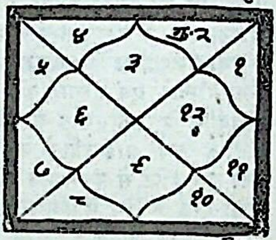


ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को व्यवसाय तथा पिता के द्वारा भी पर्याप्त लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी प्राप्त होता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण सन्तान-पक्ष से कुछ असन्तोष के साथ सफलता मिलती है तथा विद्या-बुद्धि की खूब प्राप्ति होती है। नवीं दृष्टि से अपनी ही

राशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में विशेष सुख एवं लाभ प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी, यशस्वी तथा सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्न: द्वादशभाव: गुरु



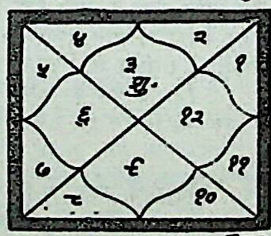
३८२

बारहवें व्यय भाव में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सम्मान तथा लाभ प्राप्त होता है। इसके साथ ही जातक को स्त्री तथा पिता के सुख सम्बन्ध में भी कुछ कमी रहती है एवं व्यवसाय में भी हानि उठानी पड़ती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता तथा घरेलू सुख, भूमि, मकान आदि की शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में प्रभाव तथा विजय मिलती है एवं नवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ हानि उठानी पड़ती है। ऐसे जातक को आयु के सम्बन्ध में खतरों का भी सामना करना पड़ता है।

'मिथुन' लग्न में 'शुक्र' का फल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्न: प्रथमभाव: शुक्र

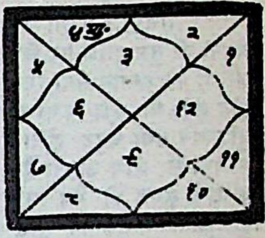


३८३

पहले केन्द्र, एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल होता है, परन्तु विद्या, बुद्धि एवं चातुर्य की पर्याप्त मात्रा में प्राप्ति होती है। ऐसा जातक खूब खर्चीला होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ एवं सम्मान प्राप्त करता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री से कुछ मतभेद के साथ आसक्ति बनी रहती है तथा बड़ी युक्तियों तथा परिश्रम के साथ दैनिक कार्यों एवं व्यवसाय में सफलता मिलती है। ऐसा जातक बहुत भोगी भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुनलग्न: द्वितीयभाव: शुक्र

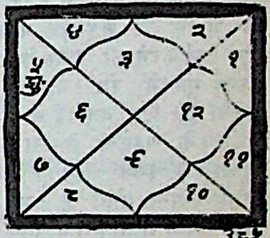


३८४

दूसरे धन व कुटुम्ब के भवन में अपने सामान्य शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक अपने बुद्धि योग एवं चातुर्य द्वारा धन तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करता है परन्तु धन का संचय नहीं हो पाता। उसका बाहरी स्थानों से सम्बन्ध रहता है तथा सन्तान-सुख में कमी आती है। विद्या का लाभ अच्छा होता है तथा स्वार्थ एवं चतुराई की भावना प्रबल रहती है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टम-भाव को देखता है, अत: जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में हानि-लाभ दोनों ही प्राप्त होते रहते हैं। परन्तु ऐसा जातक अपना जीवन बड़े ठाठ एवं शानदार ढंग से व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुनलग्न: तृतीयभाव: शुक्र

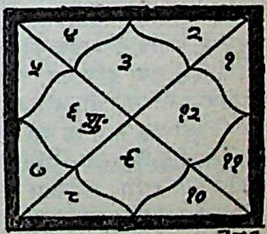


३८५

तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है। साथ ही वह विद्या तथा सन्तान के पक्ष में भी कुछ कमजोरी के साथ शक्ति प्राप्त करता है। परन्तु विद्या-बुद्धि में कमजोर होते हुए भी चतुराई एवं वार्तालाप द्वारा अपना काम निकालने में प्रवीण होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखता है, जातक भाग्य-वृद्धि के लिये विशेष प्रयत्नशील रहता है तथा धार्मिक मामलों में भी रुचि लेता है। ऐसा जातक पुरुषार्थ द्वारा अपने खर्च को चलाता है तथा चतुराई से काम निकालता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुनलग्न: चतुर्थभाव: शुक्र

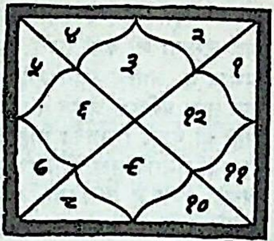


३८६

चौथे केन्द्र, माता, भूमि तथा सुख के भवन में कन्या राशि स्थित व्ययेश नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन आदि के सुख में कमी बनी रहती है। साथ ही सन्तान का सुख भी कम मिलता है तथा व्यय के कारण उसकी सुख-शान्ति में भी बाधा पड़ती है। यहाँ से शुक्र सातवीं उच्च-दृष्टि से गुरु की मीन राशि में दशमभाव को देखता है, अत: पिता तथा राज्य के द्वारा उसे सुख, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है तथा गुप्त चतुराई के बल पर मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुनलग्न: पंचमभाव: शुक्र

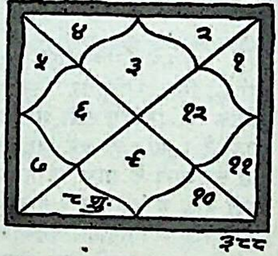


३८७

पांचवें त्रिकोण, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में अपनी ही तुलाराशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक को सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में शक्ति प्राप्त होते हुए भी कुछ कमी बनी रहती है। ऐसा जातक बुद्धिमान तथा चतुर होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है। यहां से शुक्र सातवीं मित्र-दृष्टि से मंगल की मेष राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को बुद्धि द्वारा खूब लाभ होता है परन्तु शुक्र के व्ययेश होने के कारण आमदनी से खर्च अधिक बना रहता है। ऐसा जातक बहुत बातूनी तथा चतुर व चालाक भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुनलग्न: षष्ठभाव: शुक्र

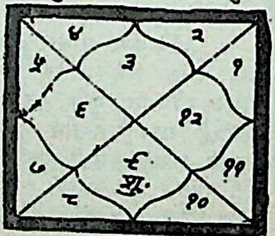


३८८

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने सामान्य मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में अपनी बुद्धिमत्ता, चतुराई एवं खर्च करने की शक्ति से सफलता प्राप्त होती है। झगड़े मुकदमे रोग आदि में उसे विशेष खर्च करना पड़ता है। गुप्त चतुराई से काम निकालने तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाने में जातक कुशल होता है। इसके साथ ही जातक को सन्तान-पक्ष से बाधा उत्पन्न होती है तथा विद्याध्ययन के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृषभ राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम-भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये--

मिथुनलग्न: सप्तमभाव शुक्र

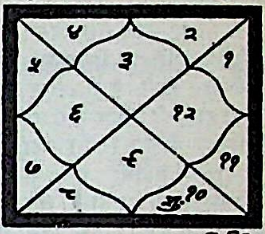


३८९

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने सामान्य मित्र गुरु की राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक को बुद्धिमान एवं चतुर स्त्री मिलती है तथा बुद्धि एवं चतुराई के बल से वह अपने दैनिक खर्चों को भी चलाता रहता है। साथ ही कभी-कभी स्त्री-पक्ष से क्लेश एवं चिंताएं भी प्राप्त करता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को बुध की मिथुन राशि में देखता है, अतः जातक के शरीर में कुछ कमजोरी बनी रहती है, परन्तु सम्मान की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है तथा सन्तान एवं विद्या के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्न: अष्टमभाव: शुक्र

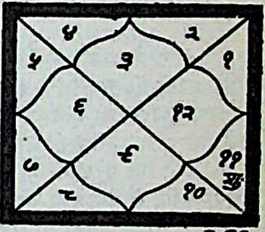


३६०

आठवें आयु एवं पुरातत्व भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। वह परिश्रमी तथा कूटनीतिज्ञ होता है। साथ ही उसे सन्तान, विद्या एवं खर्च के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रु-दृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक धनवृद्धि के लिये विशेष प्रयत्नशील बना रहता है, परन्तु शुक्र के व्ययेश होने के कारण धन का संचय अधिक नहीं हो पाता।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे शुक्र का फलादेश नीचे लिखे कनुसार समझना चाहिये।

मिथुनलग्न: नवमभाव: शुक्र

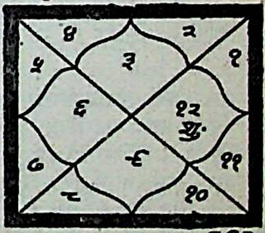


३६१

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक अपने भाग्य तथा धर्म की उन्नति करता है, परन्तु शुक्र के व्ययेश होने के कारण कुछ परेशानियाँ भी आती रहती हैं। इसके साथ ही जातक विद्या एवं सन्तान के सुख को प्राप्त करता है बुद्धिमान् एवं विद्वान् बनकर बाहरी स्थानों के सम्पर्क द्वारा लाभ उठाता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को सूर्य की सिंहराशि में देखता है, अतः भाई-बहिन के साथ वैमनस्य रहता है और वह भाग्य को पुरुषार्थ से अधिक बड़ा मानता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुनलग्न: दशमभाव: शुक्र

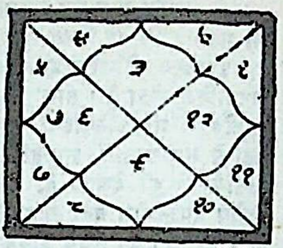


३६२

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने सामान्य मित्र गुरु की मीन राशि में स्थित व्ययेश तथा उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक को अपने पिता की सम्पत्ति तथा व्यवसाय के क्षेत्र में बहुत हानि उठानी पड़ती है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से विशेष लाभ होता है। साथ ही राज्य द्वारा भी कुछ लाभ तथा सम्मान मिलता है। उसे सन्तान तथा विद्या की शक्ति भी मिलती है। यहाँ से शुक्र चौथी नीच दृष्टि से चतुर्थ-भाव को देखता है, अतः माता के सुख एवं भूमि-सम्पत्ति आदि के सुख में भी कमी बनी रहती है। ऐसा जातक अपने अहंभाव के कारण बार-बार हानि उठाता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुनलग्न: एकादशभाव: शुक्र

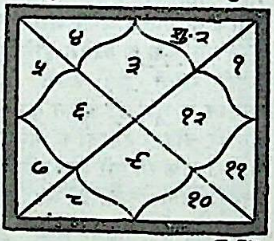


३६३

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने सामान्य मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब होती है। परन्तु शुक्र के व्ययेश होने के कारण सका खर्च भी अधिक बना रहता है। इसके साथ ही जातक के मस्तिष्क में कुछ चिन्ता तथा परेशानी बनी रहती है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही तुला राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान के पक्ष से सुख प्राप्त होता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में प्रवीणता प्राप्त होती है, परन्तु व्ययेश होने के कारण जातक को सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ भी उठानी पड़ती हैं तथा मस्तिष्क में चिन्ता भी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न हुआ हो और जन्म कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

मिथुनलग्न: द्वादशभाव: शुक्र



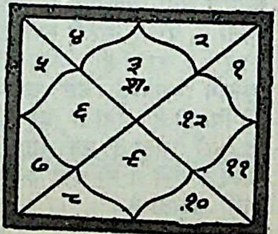
३६४

बारहवें व्यय तथा बाहरी स्थान के सम्बन्ध वाले घर में अपनी ही वृष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक खर्च खूब करता है तथा बाहरी स्थानों के सम्पर्क से लाभ उठाता है। साथ ही उसे विद्या तथा सन्तान के पक्ष में कुछ कमी एवं परेशानी भी उठानी पड़ती है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से षष्ठभाव को अपने सामान्य मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में देखता है, अतः जातक शत्रु-पक्ष में नम्रता एवं चतुराई से प्रभाव स्थापित करके अपना काम निकालेगा। ऐसा जातक बहुत चतुर होता है, परन्तु उसके मस्तिष्क में परेशानियाँ भी बनी रहती हैं।

'मिथुन' लग्न में 'शनि' का फल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुनलग्न: प्रथमभाव: शनि

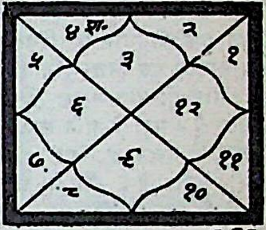


३६५

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित अष्टमेश शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आती है। साथ ही आयु, धर्म, भाग्य तथा पुरातत्व' की वृद्धि होती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रु दृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः भाई-बहन से वैमनस्य रहता है एवं पराक्रम में कुछ कमी आती है। सातवीं शत्रु दृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में असन्तोष रहता है तथा दसवीं शत्रु दृष्टि से दशमभाव को गुरु की मीन राशि में देखने के कारण पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: द्वितीयभाव: शनि

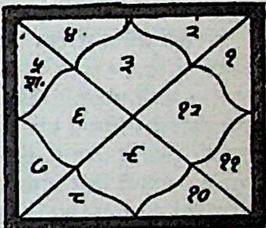


३६६

दूसरे धन व कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित अष्टमेश शनि के प्रभाव से जातक की धन-संचय शक्ति में हानि पहुँचती है तथा कुटुम्ब द्वारा भी सामान्यत: कष्ट से प्राप्त होता है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता हैं, अत: माता एवं भूमि, मकान आदि का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। सातवीं दृष्टि से स्वर राशि में अष्ठमभाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्व का लाभ मिलता है तथा दसवीं नीचदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं। संक्षेप में ऐसा जातक बहुत भाग्यवान् समझा जाता है और वह स्वार्थी तथा सज्जन होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्न: तृतीयभाव: शनि

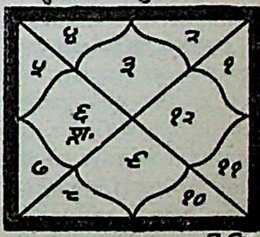


३६७

तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित अष्टमेश शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम में कुछ कमी आ जाती है तथा भाई-बहिनों से वैमनस्य बना रहता है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है। यहाँ से शनि तीसरी उच्च दृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अत: जातक को सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के पक्ष से उन्नति प्राप्त होती है। सातवीं दृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी होता है, परन्तु शनि के अष्टमेश होने के कारण कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं। दसवीं दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्न: चतुर्थभाव: शनि

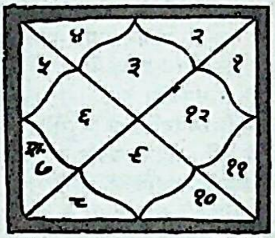


३६८

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित अष्टमेश शनि के प्रभाव से जातक को माता का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है। इसी प्रकार भूमि, मकान आदि के सुख में भी कुछ त्रुटी बनी रहती है। परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है तथा धर्म का पालन भी होता रहता है तीसरी शत्रु दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष के प्रति कड़ाई से काम लेकर प्रभाव स्थापित करता है तथा झगड़ों द्वारा लाभ प्राप्त करता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता से वैमनस्य तथा राज्य के क्षेत्र से असंतोष रहता है। दसवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति की वृद्धि होती है तथा भाग्यवान समझा जाता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के पंचमभाव' में 'शनि' की स्थित हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: पंचमभाव: शनि

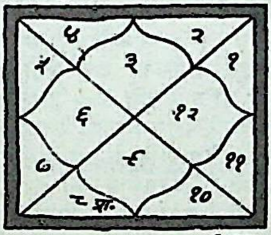


३६६

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि के भवन में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को सन्तान एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त होती है। साथ ही सन्तान-पक्ष से भाग्य वृद्धि का योग भी बनता है। यहाँ से शनि सातवीं नीच-दृष्टि से एकादश भवन को देखता है, अतः आमदनी के क्षेत्र में कमजोरी बनी रहती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण बड़ी कठिनाइयों के साथ धन सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है तथा कुटुम्ब द्वारा अल्प-सुख प्राप्त होता है। ऐसे जातक को भाग्योन्नति के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है।'

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: षष्ठभाव: शनि

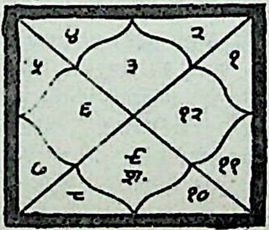


४००

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को शत्रु तथा झगड़े-झंझट के क्षेत्र में सफलता एवं विजय प्राप्त होती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि वाले अष्टम-भाव को देखने से आयु में वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं मित्र दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च बहुत ठाट का रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। दसवीं शत्रु दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन के सुख में बाधा पड़ती है तथा पराक्रम में कमी आती है। ऐसा जातक बहुत परिश्रमी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: सप्तमभाव: शनि

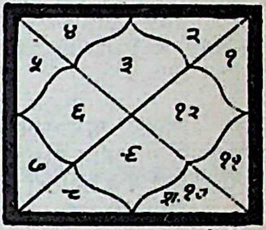


४०१

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के घर में अपने शत्रु गुरु की राशि पर स्थित अष्टमेश तथा नवमेश शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सुख-दुख तथा हानि-लाभ दोनों की प्राप्ति होती है। साथ ही, उसे जननेन्द्रिय में कष्ट भी होता है, परन्तु आयु की वृद्धि होती है। यहाँ शनि तीसरी दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखता है, अतः भाग्य की वृद्धि होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शरीर के पक्ष में कुछ चिन्तायुक्त प्रभाव प्राप्त होता है। दसवीं मित्र दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा मकान के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सुख प्राप्त होता है। संक्षेप में ऐसा जातक परेशानियों पर विजय पाकर परिश्रम के द्वारा उन्नति करता है।'

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: अष्टमभाव: शनि

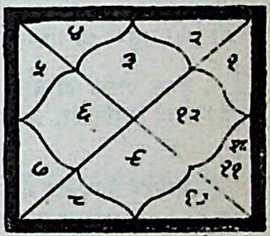


८०२

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपनी मकर राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु भाग्य के मामले में कठिनाई बनी रहती है तथा सम्मान में भी कमी आती है। ऐसा जातक धर्म का भी यथाविधि पालन नहीं करता। यहाँ से शनि तीसरी शत्रु दृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता एवं राज्य के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। सातवीं शत्रु दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय में कमी बनी रहती है तथा दसवीं उच्च दृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। ऐसा जातक वाणी की शक्ति द्वारा भाग्योन्नति करता है तथा भाग्यवान् समझा जाता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्न: नवमभाव: शनि

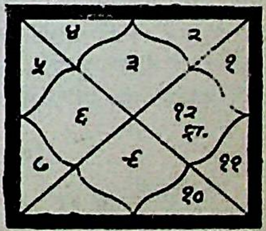


८०३

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपनी कुम्भ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के भाग्य में कुछ कमियाँ तो रहती हैं, परंतु वह प्रकटरूप में भाग्यवान् समझा जाता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति का अच्छा लाभ मिलता है। धर्म पालन में रुचि एवं यश की प्राप्ति भी होती है। यहाँ से शनि तीसरी नीच दृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन के सुख तथा पुरुषार्थ में कमी आती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष से परेशानी होने पर भी जातक उनकी चिन्ता नहीं करता तथा उन पर विजय पाता है। ऐसा जातक ठाट-बाट का जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो, और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुनलग्न: दशमभाव: शनि



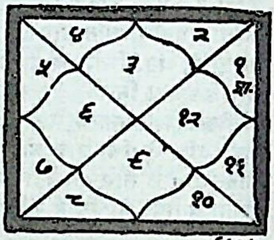
८०४

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को पिता के सुख में कुछ कमी मिलती है, परन्तु राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में धन, यश तथा सफलता की प्राप्ति होती हैं। ऐसा जातक स्वार्थ-साधक, भाग्यवान् तथा धर्म का पालन करने वाला होता है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के

कारण माता, भूमि, मकान आदि का सुख मिलता है तथा दसवीं दृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। कुल मिलाकर जातक प्रत्येक क्षेत्र में परेशानियों के साथ सफलता पाता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुनलग्न: एकादश भाव: शनि

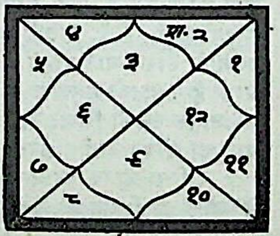


७०५

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित नीच शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं। उसके भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में भी कमी रहती है। धन प्राप्ति के लिये अनुचित साधनों का प्रयोग करने से भी वह नहीं चूकता। यहाँ से शनि तीसरी मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, परन्तु अष्टमेश होने के कारण वह जातक के शरीर में कुछ कष्ट देता है तथा नवमेश होने के कारण भाग्यवान् भी बनाता है। सातवीं उच्च दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में उन्नति होती है और दसवीं दृष्टि से अपनी ही मकर राशि में अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की आयु में वृद्धि करता है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी देता है। परन्तु नीच का शनि होने कारण जातक को अपने जीवन में अनेक के संकटों तथा खतरों का सामना करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुनलग्न: द्वादशभाव: शनि



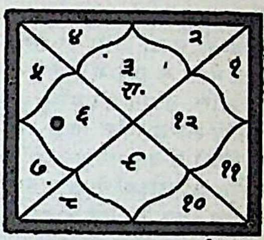
७०६

बारहवें व्ययभाव में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी मिलता है। इससे जातक के पुरातत्त्व पक्ष में भी कुछ हानि पहुँचती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रु दृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः धन-संचय एवं कुटुम्ब के पक्ष में त्रुटि तथा अशान्ति बनी रहती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष में कठिनाइयों के साथ विजय प्राप्त होती है एवं दसवीं दृष्टि से अपनी कुम्भ राशि में नवमभाव को देखने से जातक के भाग्य की वृद्धि होती है तथा वह सामान्य रूप से धर्म का पालन भी करता है। ऐसे जातक को सुख-दुख एवं यश-अपयश की प्राप्ति होती रहती है, परन्तु वह भाग्यवान् माना जाता है।

'मिथुन' लग्न में 'राहु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुनलग्न: प्रथमभाव: राहु

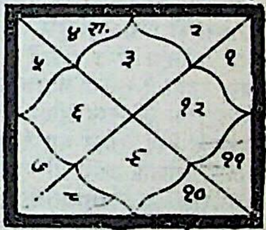


४०७

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक का शरीर लम्बा तथा प्रभावशाली होता है। वह विवेकी, गुप्तयुक्ति सम्पन्न तथा प्रतिष्ठा पाने वाला होता है। उसके मन में बड़ी हिम्मत बनी रहती है तथा वह अपनी उन्नति के लिये कष्टसाध्य कर्मों को करता तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है। ऐसा जातक लम्बी-चौड़ी बातें बनाने वाला, स्वार्थी तथा अपने युक्ति बल पर धन एवं सम्मान प्राप्त करने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म का जन्म 'मिथुन' लग्न हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुनलग्न: द्वितीयभाव: राहु

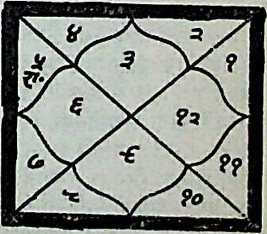


४०८

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को धन-सम्पत्ति एवं कुटुम्ब के मामले में बहुत हानि उठानी पड़ती है तथा कष्टों का सामना करना पड़ता है। वह धन-प्राप्ति के लिये गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेता है तथा कठोर परिश्रम करता है, फिर भी उसे कठिनाइयाँ निरन्तर परेशान करती रहती हैं। ऐसे जातक को अपने जीवन में बहुत समय बाद धन का अल्प सुख प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुनलग्न: तृतीयभाव: राहु

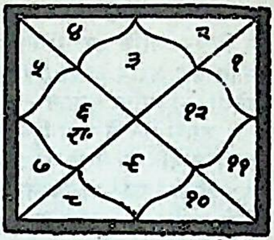


४०९

तीसरे पराक्रम तथा बन्धु स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में तो वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख-सम्बन्ध में कमी एवं कष्ट का सामना करना पड़ता है। वह परिश्रम, कष्ट एवं हिम्मत के साथ अपनी उन्नति के लिये प्रयत्न करता है। वह धैर्यवान् तथा गुप्त युक्तियों से सम्पन्न बहादुर स्वभाव का भी होता है। परन्तु कभी-कभी उसे बड़े संकटों का सामना करना पड़ता है; अतः वह अपनी पूर्ण उन्नति नहीं कर पाता।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये

मिथुनलग्न: चतुर्थभाव. राहु

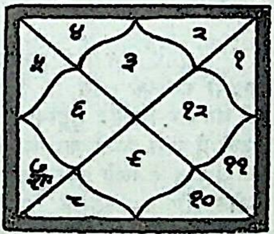


४१०

चौथे केन्द्र, एवं माता के सुख भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कुछ कमी प्राप्त होती है तथा भूमि सम्पत्ति, मकान एवं घरेलू सुख में भी कुछ असन्तोष एवं झगड़े-टंटे का योग बना रहता है । ऐसा जातक गुप्त युक्तियों के बल पर सुख-प्राप्ति का प्रयत्न करता है और बहुत कठिनाइयों के बाद सुख के साधन प्राप्त करने में सफल होता है । ऐसे जातक को घरेलू सुख-शान्ति में कमी का अनुभव होता रहता है ।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्न: पंचमभाव: राहु

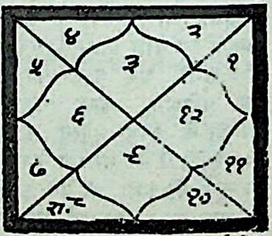


४११

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में अनेक युक्तियों के बाद सफलता प्राप्त होती है परन्तु सन्तान पक्षसे कुछ कष्ट बना रहता है । ऐसा जातक बहुत चतुर; गुप्त युक्तियों वाला तथा बुद्धिमान होता है । वह अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए असत्य भाषण करने में भी संकोच नहीं करता । यद्यपि उसके मष्तिक में अनेक प्रकार की चिन्ताएं बनी रहती हैं, परन्तु उसकी बात-चीत बड़ी प्रभावोत्पादक होती है ।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्टभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्न: षष्टभाव: राहु

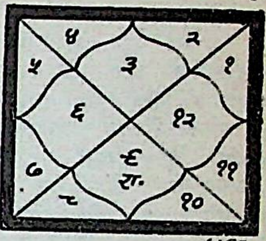


४१२

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक अपने शत्रु पक्ष में अत्यन्त प्रभाव बनाये रहता है । वह शत्रुओं द्वारा परेशानियों का अनुभव करने पर भी उन पर विजय प्राप्त करता है । ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्ति, चातुर्य धैर्य, साहस, हिम्मत तथा वीरता की प्रतिमूर्ति होती है । वह अपनी कमजोरियों को प्रकट नहीं होने देता तथा प्रत्येक झगड़े-झंझट में लाभ एवं सफलता प्राप्त करता है । परन्तु वह अपने मामा के पक्ष को कुछ हानि कारक सिद्ध होता है ।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे राहु का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

मिथुनलग्न: सप्तमभाव: राहु

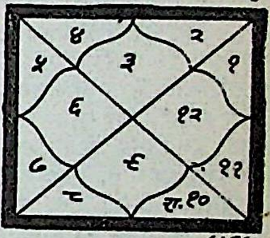


४१३

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनुराशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री के द्वारा विशेष कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उसे अपनी गृहस्थी का संचालन करने के लिए भी हर समय चिंतित एवं परेशान रहना पड़ता है तथा मूत्रेन्द्रिय में भी कोई विकार होता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त- युक्तियों, असत्य-भाषण एवं अनुचित तरीकों से भी अपना स्वार्थ सिद्ध करने में नहीं चूकता। वह स्वयं को परतंत्र तथा परेशान-सा भी अनुभव करता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुनलग्न: अष्टमभाव: राहु

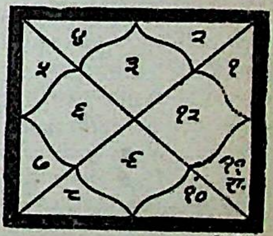


४१४

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कठिनाइयों, मुसीबतों, निराशाओं का सामना करना पड़ता है। उसके पेट के निचले भाग में कोई विकार भी होता है। वह गुप्त-युक्तियों एवं कठिन परिश्रम द्वारा सफलता प्राप्त करने के लिये प्रयत्न करता रहता है। उसके बाह्य तथा आभ्यन्तरिक रूप में अन्तर होता है और वह अपनी कठिनाइयों को किसी पर प्रकट नहीं करता।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुन लग्न: नवमभाव: राहु

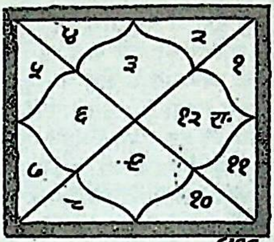


४१५

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म-भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति के क्षेत्र में अन्य कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वह अत्यन्त परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों, द्वारा अपने भाग्य की वृद्धि करता है, उसे पूर्ण सुख तथा सम्मान प्राप्त नहीं होता। इसी प्रकार उसका धर्म पालन भी दिखावटी होता है। क्रूर ग्रह की राशि पर क्रूर ग्रह की उपस्थिति के कारण जातक कठिन परिश्रम तथा गुप्त-युक्तियों के द्वारा बाद में थोड़ी-सी सफलता अर्जित कर लेता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' राशि में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुनलग्न: दशमभाव: राहु

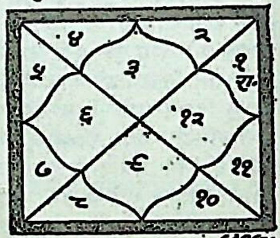


४२६

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के सुख-सम्बन्ध में कठिनाइयों तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है तथा गुप्त-युक्तियों एवं कठिन परिश्रम के द्वारा सफलता मिलती है, परन्तु कभी-कभी व्यवसाय तथा प्रतिष्ठा के ऊपर घोर संकट भी घिर आते हैं। ऐसा व्यक्ति सामान्यत: आदर्शवादी होता है और बहुत कुछ संकट उठा चुकने के बाद अन्त में यश, प्रतिष्ठा तथा भाग्य के क्षेत्र में थोड़ी सफलता पा लेता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' राशि में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्न: एकादशभाव: राहु

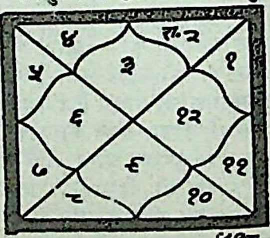


४२७:

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक बड़ी गुप्त-युक्तियों से काम लेकर अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त करता है वह कठिन परिश्रम द्वारा लाभ अर्जित करता है। यद्यपि उसे कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु अन्त में उसे विशेष सफलता भी प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति थोड़े लाभ से संतुष्ट नहीं होता, अत: अपनी आमदनी बढ़ाने के लिये निरंतर नई-नई योजनाएँ बनाता और उन पर अमल करता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुनलग्न: द्वादशभाव: राहु



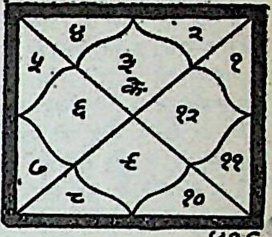
४२८

बारहवें व्यय भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है और उस सम्बन्ध में उसे कभी-कभी बड़ी कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा जातक अपनी गुप्त-योजनाओं, युक्तियों एवं चातुर्य के बल पर खर्च का संचालन करता है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से परिश्रम द्वारा लाभ भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति बहुत परिश्रमी होता है और बाहरी लोगों की दृष्टि में प्रभावशाली बना रहता है।

'मिथुन' लग्न में 'केतु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम-भाव' में केतु की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुनलग्न: प्रथमभाव: केतु

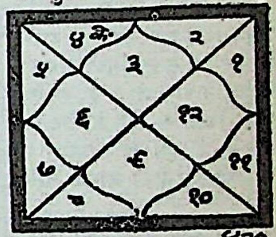


४१९

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौन्दर्य में कमी रहती है वह गुप्त-चिन्ताओं से चिंतित बना रहता है और रोग तथा चोट का सामना भी करता है। वह अपने शारीरिक-श्रम तथा गुप्त-युक्तियो द्वारा अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है तथा विवेक शक्ति द्वारा स्वार्थ-साधन में सफलता भी प्राप्त करता है। ऐसे व्यक्ति में स्वाभिमान की मात्रा कम होती है, परन्तु वह विवेकशील होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुनलग्न: द्वितीयभाव: केतु

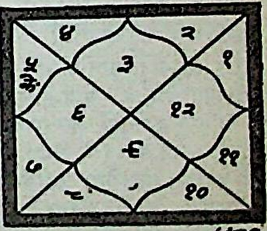


४२०

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित के केतु के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के पक्ष में चिन्ताओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। धन का संचय न हो पाने से वह कभी-कभी बहुत कष्ट भी पाता है तथा कौटुम्बिक कारणों से मानसिक-क्लेश का शिकार बना रहता है। ऐसा जातक धन-संचय के लिये गुप्त धैर्य एव साहस से काम लेता है और अनेक कठिनाइयों के बाद थोड़ी सफलता प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये

मिथुनलग्न: तृतीयभाव: केतु

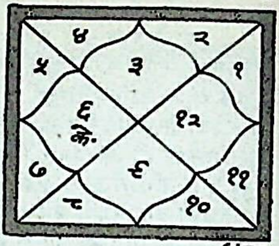


४२१

तीसरे पराक्रम एवं सहोदर भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख में कमी आती है, परन्तु पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है; क्योंकि तृतीयभाव में स्थित क्रूर ग्रह विशेष शक्तिशाली होता है। राहु के शत्रु राशिस्थ होने के कारण जातक को अपने पुरुषार्थ सम्बन्धी कार्यों से ही परेशानी तथा निराशा का अनुभव होता रहेगा, परन्तु अन्त में उसे अपने उद्देश्य में सफलता एवं विजय भी प्राप्त होगी। ऐसा जातक बहुत हठी, हिम्मती तथा बहादुर होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्न: चतुर्थभाव: केतु

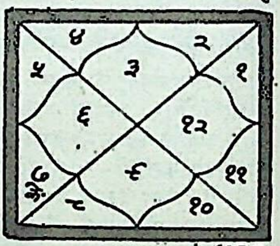


४२२

चौथे केन्द्र, माता, भूमि तथा सुख स्थान में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक घरेलू सुख को प्राप्त करने के लिए चतुराई का आश्रय लेता है, परन्तु उसे माता, भूमि तथा मकान आदि के सुख में कुछ कमी एवं असंतोष का सामना करना पड़ता है। कन्या राशि पर स्थित 'केतु' को स्वक्षेत्री जैसा माना जाता है, अतः वह अपने गुप्त धैर्य एवं साहस के बल पर अन्ततः सुख के साधनों में सफलता प्राप्त कर लेता है तथा स्थायी सुख पाने के लिए भी प्रयत्नशील बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्न: पंचमभाव: केतु

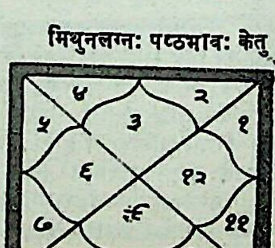


४२३

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि सन्तान के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को संतान पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु वह अपने गुप्तधैर्य की शक्ति द्वारा विद्या के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। सन्तान पक्ष में भी उसे कठिनाइयों के द्वारा सामान्य सफलता मिलती है। ऐसा जातक अत्यन्त चतुर तथा हिम्मती होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्न: षष्ठभाव: केतु

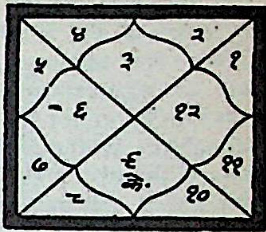


४२४

छठे शत्रु स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थिति 'केतु' के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष का दमन करता है और गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर उन पर विजय पाता है। छठे स्थान में स्थित क्रूर ग्रह अधिक शक्तिशाली कहा गया है, अतः ऐसा जातक झगड़े-झंझट-मुकद्दमे आदि में सफलता प्राप्त करता है। वह अपनी आन्तरिक कमजोरी को छिपाकर बड़ी हिम्मत से काम लेता है, जिसके कारण सब लोग उसका लोहा मानते रहते हैं।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्नः सप्तमभावः केतु

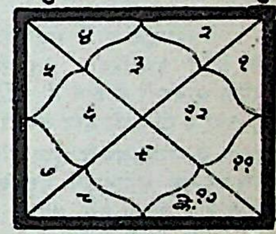


४२५.

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर उच्च के 'केतु' के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष में कुछ कठिनाइयों के बाद अनेक प्रकार की सफलतायें प्राप्त होती हैं तथा इन्द्रिय-भोगादि की विशेष प्राप्ति होती है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी वह अत्यन्त कठिन परिश्रम तथा दौड़-धूप करने के उपरान्त अत्यधिक उन्नति प्राप्त करता है तथा निरन्तर उन्नतिशील बने रहने के लिए अनेक प्रकार की युक्तियों का प्रयोग करता है तथा सफल होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्नः अष्टमभावः: केतु

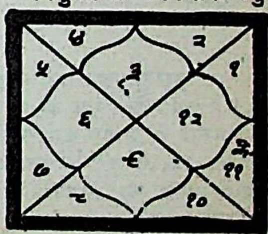


४२६

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के सम्बन्ध में अनेक बार संकटों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की भी कुछ हानि होती है, परन्तु केतु के मित्र राशिस्थ होने के कारण वह परेशानी के समय भी अपने धैर्य को नहीं खोता तथा प्रत्यक्ष रूप में हिम्मत एवं बहादुरी का प्रदर्शन करता रहता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को उदर-विकार से भी ग्रस्त होना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुनलग्नः नवमभावः केतु

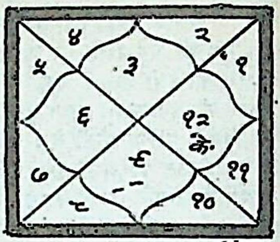


४२७

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाग्य के सम्बन्ध में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ता है, परन्तु उस सम्बन्ध में वह कठिन परिश्रम करके थोड़ी-बहुत सफलता प्राप्त कर लेता है। ऐसा जातक धर्म का यथार्थ पालन नहीं कर पाता तथा उसके यश में भी कमी बनी रहती है। फिर भी, क्रूर ग्रह की राशि पर क्रूर ग्रह की स्थिति होने से गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम द्वारा उक्त सभी क्षेत्रों में जातक को थोड़ी-बहुत सफलता प्राप्त हो जाती है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मिथुनलग्न: दशमभाव: केतु

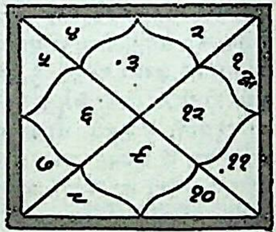


४२८

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु बृहस्पति की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पिता, व्यवसाय एवं राज्य के पक्ष में अनेक प्रकार की कठिनाइयों तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है तथा मान-प्रतिष्ठा के क्षेत्र में भी कमी-कमी बड़ी हानि उठानी पड़ती है। ऐसा जातक अपनी उन्नति के लिये कठिन परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है तथा उनके कारण कुछ सफलता भी प्राप्त कर लेता हैं।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो, और जन्म-कुण्डली के 'एकादश-भाव' मे 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: एकादशभाव: केतु

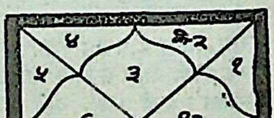


४२९

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आमदनी के क्षेत्र में कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु अपनी गुप्त युक्तियों, धैर्य एवं साहस के बल पर वह कठिनाइयों पर विजय पाकर अन्त में सफल होता है। यद्यपि उसे अपनी आमदनी से पूर्ण सन्तोष नहीं होता, फिर भी वह उसे बढ़ाने के लिये निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली क 'द्वादश-भाव में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए –

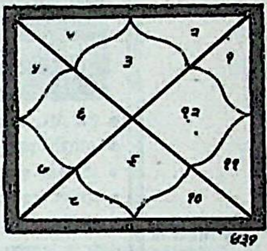
मिथुनलग्न: द्वादशभाव: केतु



४३०

बारहवें व्यय तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से घर में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक बना रहता है, जिसके कारण उसे कठिनाइयों तथा कभी-कभी बड़े भारी संकट का सामना भी करना पड़ता है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में भी कुछ परेशानी प्राप्त होती है, परन्तु केतु के अपने मित्र की राशि पर स्थित होने के कारण जातक अपनी गुप्त युक्ति, चातुर्य, परिश्रम एवं हिम्मत के बल पर अपने खर्च को चलाते रहने की शक्ति प्राप्त कर लेता है।

'मिथुन' लग्न का फलादेश समाप्त





बड़े साइज के 108 पृष्ठ

विश्व के विचित्र इंसान

लेखक: ए. एच. हाशमी

कुछ शीर्षकों की झलक

- शरीर से जुड़े हुए स्यामी भाई चांग और इंग कब और कहां पैदा हुए?
- कमर से जुड़ी हुई बहनें कलाकार कैसे बनीं?
- दो सिर वाला अजूबा बच्चा कैसा था?
- कितने अजीब होते हैं दैत्याकार इंसान?
- बौने कब, कहां पैदा हुए और कैसा होता है इनका संसार?
- तीन टांगों वाला व्यक्ति कैसे चलता था?
- क्या कोई व्यक्ति आधे टन का था?
- कैसे थे जीवित इंसानी कंकाल?

उपर्युक्त तथा अन्यान्य विचित्र इन्सानों के बारे में मनोरंजक जानकारी जैसे—वे कहां पैदा हुए, कैसे रहते थे, क्या खाते थे, क्या काम करते थे, जीवन में सफलता कैसे प्राप्त की, समाज का इनके प्रति बर्ताव तथा वे कब मरे आदि ढेरों बातें! लगभग सभी की जीवनी चित्रों सहित

हम जीव-जन्तु

हम जीव-जन्तुओं की कहानी
हमारी जबानी

- हम किस जात-बिरादरी के हैं?
- हमारी दिनचर्या क्या है?
- हम क्या-खाते-पीते हैं?
- हमारी उम्र क्या है?
- हम कहां और कैसे रहते हैं?
- मनुष्य हमारा दुश्मन है या दोस्त?
- हमारे सुख-दुख क्या-क्या हैं?
- हमारा चलना, उठना, दौड़ना, बैठना, उड़ना कैसा है?

तथा हमारे बारे में अन्यान्य ढेरों जानकारियों के लिए प्रस्तुत है—हमारी आत्मकथाएं—हम जीव-जन्तु

जीव-जन्तुओं के विशाल संसार के 50 सदस्यों की आत्मकथाएं

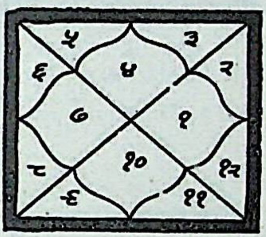
प्रस्तुतकर्त्ता—रवि लायटू

भूमिका—रामेश बेदी



बड़े साइज के 116 पृष्ठ

कर्क लग्न



१५३२

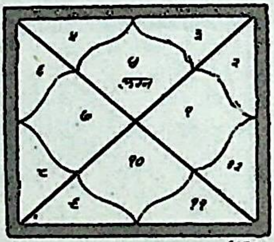
[कर्क-लग्न वाली कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग फलादेश]

'कर्क' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'कर्क' लग्न में जन्म लेने वाले जातक का शरीर गौर वर्ण होता है। वह पित्त प्रकृति वाला, जल क्रीड़ा का प्रेमी, मिष्टान्न-भोजी, भले लोगों से स्नेह करने वाला, उदार, विनम्र, बुद्धिमान, पवित्र, क्षमाशील, धर्मात्मा, बड़ा ढीठ, कन्या-सन्ततिवान्, व्यवसायी, मित्रद्रोही, धनी, भ्रमणी, शत्रुओं से पीड़ित, स्वभाव से कुटिल, कभी-कभी विपरीत-बुद्धि का परिचय देने वाला, अपने जन्म-स्थान को छोड़कर अन्य स्थान में निवास करने वाला और पतले, परन्तु शक्तिशाली शरीर वाला होता है।

कर्क लग्न में जन्म लेने वाले जातक का भाग्योदय १६-१७ वर्ष की आयु में ही हो जाता है।

'कर्क' लग्न



४३३

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव मुख्यतः दो प्रकार से पड़ता है—

(१) ग्रहों की जन्मकालीन स्थिति के अनुसार।

(२) ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के अनुसार।

जातक की जन्मकालीन ग्रह-स्थिति जन्म-कुण्डली में दी गई होती है। उसमें जो ग्रह जिस भाव में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित प्रभाव निरन्तर स्थायी रूप से डालता रहता है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है उसकी जानकारी पंचाङ्ग द्वारा की जा सकती है। ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के सम्बन्ध में या तो किसी ज्योतिषी से पूछ लेना चाहिए अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिए। इस सम्बन्ध में पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर अस्थायी रूप से अपना प्रभाव डालते हैं।

उदाहरण के लिए यदि किसी जातक की जन्म-कुण्डली सूर्य में 'कर्क' राशि पर 'प्रथम भाव' में बैठा है, तो उसका स्थायी प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण कुण्डली-संख्या ४३४ के अनुसार पड़ता रहेगा; परन्तु यदि दैनिक ग्रह-गोचर में कुण्डली देखते समय सूर्य 'सिंह' राशि के 'द्वितीय भाव' में बैठा होगा तो उस स्थिति में वह उदाहरण-कुण्डली संख्या ५४६ के अनुसार उतनी अवधि तक जातक के जीवन पर अपना अस्थायी

प्रभाव अवश्य डालेगा, जब तक कि वह 'सिंह' राशि से हटकर 'कन्या' राशि में नहीं चला जाता। 'कन्या' राशि में पहुँचकर वह 'कन्या' राशि के अनुरूप अपना प्रभाव डालना आरम्भ कर देगा। अतः जिस जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य कर्क राशि के प्रथमभाव में बैठा हो, उसे उदाहरण-कुण्डली ४३४ में फलादेश देखने के पश्चात्, यदि उन दिनों ग्रह गोचर में सूर्य राशि के द्वितीय भाव में बैठा हो तो उदाहरण-कुण्डली संख्या ५४६ का फलादेश भी देखना चाहिए तथा इन दोनों फलादेशों के समन्वय-स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को अपने वर्तमान समय पर प्रभावकारी समझना चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विषय में जान लेना चाहिए।

'कर्क' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदाहरण कुण्डली-संख्या ४३४ से ५४१ तक में किया गया है। पंचाङ्ग की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार 'कर्क' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों को किन-किन उदाहरण-कुण्डलियों द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना चाहिए, इसका विस्तृत वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है, अतः उनके अनुसार ग्रहों की तात्कालिक स्थिति के सामयिक प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। तदुपरान्त दोनों फलादेशों के समन्वय-स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिए।

इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति जन्म-कुण्डली का ठीक-ठीक फलादेश सहज में ही ज्ञात कर सकता है।

टिप्पणी—(१) पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश से ऊपर अथवा ३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह सूर्य से अस्त होता है, वह भी जातक के ऊपर अपना प्रभाव या तो बहुत कम डालता है या फिर पूर्णतः प्रभावहीन रहता है।

(२) स्थायी जन्म-कुण्डली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा अपनी कुण्डली में लिखवा लेने चाहिएँ, ताकि उनके अंशों के बारे में बार-बार जानकारी प्राप्त करने के झंझट से बचा जा सके। तात्कालिक गोचर के ग्रहों के अंशों की जानकरी पंचांग द्वारा अथवा किसी ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(३) स्थायी जन्म-कुण्डली अथवा तात्कालिक ग्रह-गति-कुण्डली मे यदि किसी भाव में एक से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन स्थानों पर उनकी दृष्टियाँ पड़ती हैं, जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता है। इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में 'ग्रहों की युति का प्रभाव' शीर्षक अध्याय के अन्तर्गत विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन किया गया है, अतः इस विषय को जानकारी वहाँ से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(४) विंशोत्तरी दशा के सिद्धान्तानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० वर्ष की मानी जाती है। इन आयु-अवधि में जातक नव ग्रहों की दशाओं का भोग कर लेता है। विभिन्न ग्रहों का दशा-काल भिन्न-भिन्न होता है। परन्तु अधिकांश व्यक्ति इतनी लम्बी आयु तक जीवित नहीं रह पाते, अतः वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं का भोग कर पाते हैं। जातक के जीवन के जिस काल में जिस ग्रह की दशा जिसे 'महादशा' कहा जाता है—चल रही होती है, जन्मकालीन ग्रह-स्थिति के अनुसार उसके जीवन-काल की उतनी अवधि उस ग्रह-विशेष के प्रभाव से विशेष रूप से प्रभावित रहती है। जातक का जन्म किस ग्रह की महादशा में हुआ है और उसके जीवन में किस अवधि से किस अवधि तक किस ग्रह की महादशा चलेगी और वह महादशा जातक के

ऊपर अपना क्या विशेष प्रभाव डालेगी—इन सब बातों का उल्लेख भी तीसरे प्रकरण में किया गया है।

इस प्रकार (१) जन्म-कुण्डली, (२) तात्कालिक ग्रह-गोचर-कुण्डली एवं (३) ग्रहों की महादशा—इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है, अतः इन तीनों के समन्वय-स्वरूप फलादेश का ठीक-ठीक निर्णय करके अपने भूत, वर्तमान तथा भविष्यत्कालीन जीवन के विषय में सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'सूर्य' का फलादेश

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी-फलादेश उदाहरण कुण्डली संख्या ४३४ से ४४५ तक में देखना चाहिए—

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखेअनु सार देखना चाहिये—

(१) जिस महीने में 'सूर्य' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४३४ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस महीने में 'सूर्य' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४३५ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४३६ के अनुसार समझना चाहिये।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४३७ के अनुसार समझना चाहिये।

(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४३८ के अनुसार समझना चाहिये।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४३९ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४४० के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुम्भ' राशि पर हो, उसे महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४४१ के अनुसार समझना चाहिये।

(९) जिस महीने में 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४४२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'सूर्य' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४४३ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने 'सूर्य' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४४४ के अनुसार समझना चाहिये।

(१२) जिस महीने 'सूर्य' 'मिथुन' राशि पर हो, उन महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४४५ के अनुसार समझना चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४४६ से ४५७ तक में देखना चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये ---

(१) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४४६ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'सिंह' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४४७ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस दिन 'चंद्रमा' 'कन्या' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४४८ के अनुसार समझना' चाहिए।

(४) जिस दिन 'चंद्रमा' 'तुला' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली-सख्या ४४९ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस दिन 'चंद्रमा' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली सख्या ४५० के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस दिन 'चंद्रमा' 'धनु' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४५१ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस दिन 'चंद्रमा' 'मकर' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४५२ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस दिन 'चंद्रमा' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४५३ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस दिन 'चंद्रमा' 'मीन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली सख्या ४५४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस दिन 'चंद्रमा' 'मेष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४५५ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस दिन 'चंद्रमा' 'वृष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४५६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस दिन 'चंद्रमा' 'मिथुन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४५७ के अनुसार समझना चाहिए।

'कर्क' (४) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'मंगल' का फलादेश

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४५८ से ४६९ तक में देखना चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४५८ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'मंगल' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४५९ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'मंगल' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४६० के अनुसार समझना चाहिए—

(४) जिस महीने में 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४६१ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'मंगल' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४६२ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'मंगल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४६३ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'मंगल' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४६४ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'मंगल' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४६५ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'मंगल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४६६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'मंगल' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४६७ में अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'मंगल' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४६८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने 'मंगल' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४६९ के अनुसार समझना चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'बुध' का फलादेश

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४७० से ४८१ तक में देखना चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४७० के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४७१ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४७२ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'बुध' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४७३ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'बुध' वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४७४ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'बुध' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४७५ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'बुध' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४७६ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'बुध' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४७७ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'बुध' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४७८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'बुध' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४७९ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४८० के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४८१ के अनुसार समझना चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'गुरु' का फलादेश

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४८२ से ४९३ तक में देखना चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४८२ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४८३ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४८४ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'गुरु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४८५ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४८६ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'गुरु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४८७ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४८८ के अनुसार समझना चाहिए ।

(८) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४८९ के अनुसार समझना चाहिए ।

(९) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४९० के अनुसार समझना चाहिये ।

(१०) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४९१ के अनुसार समझना चाहिए ।

(११) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४९२ के अनुसार समझना चाहिए ।

(१२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४९३ के अनुसार समझना चाहिए ।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'शुक्र' का फलादेश

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थाई-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४९४ से ५०५ तक में देखना चाहिए—

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४९४ के अनुसार समझना चाहिए ।

(२) जिस महीने में 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४९५ के अनुसार समझना चाहिए ।

(३) जिस महीने में 'शुक्र' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४९६ के अनुसार समझना चाहिए ।

(४) जिस महीने में 'शुक्र' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४९७ के अनुसार समझना चाहिए ।

(५) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४९८ के अनुसार समझना चाहिए ।

(६) जिस महीने में 'शुक्र' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४९९ के अनुसार समझना चाहिए ।

(७) जिस महीने में 'शुक्र' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५०० के अनुसार समझना चाहिए ।

(८) जिस महीने में 'शुक्र' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५०१ के अनुसार समझना चाहिए ।

(९) जिस महीने में 'शुक्र' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५०२ के अनुसार समझना चाहिए ।

(१०) जिस महीने 'शुक्र' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५०३ के अनुसार समझना चाहिए ।

(११) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५०४ के अनुसार समझना चाहिये—

(१२) जिस महीने में 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५०५ के अनुसार समझना चाहिए।

कर्क(४) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'शनि' का फलादेश

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५०६ से ५१७ तक में देखना चाहिए

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'शनि' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५०६ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'शनि' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५०७ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'शनि' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५०८ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'शनि' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५०९ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५१० के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'शनि' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५११ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'शनि' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५१२ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'शनि' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५१३ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'शनि' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५१४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'शनि' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५१५ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५१६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'शनि' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५१७ के अनुसार समझना चाहिए।

कर्क (४) जन्म--लग्न वालों के लिये

जन्म--कुण्डली तथा ग्रह--गोचर--कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'राहु' का फलादेश

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५१८ से ५२९ तक में देखना चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न-भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए।

(१) जिस वर्ष में 'राहु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५१८ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५१९ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५२० के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'राहु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५२१ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५२२ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५२३ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'राहु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५२४ के अनुसार समझना चाहिए

(८) जिस वर्ष में 'राहु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५२५ के अनुसार समझना चाहिये।

(९) जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५२६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'राहु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५२७ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५२८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'राहु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५२९ के अनुसार समझना चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'केतु' का फलादेश

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५३० से ५४१ तक में देखना चाहिए।

'कर्क' (४) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'केतु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५३० के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'केतु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५३१ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'केतु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५३२ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'केतु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५३३ के अनुसार समझना चाहिये।

(५) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५३४ अनुसार समझना चाहिये।

(६) जिस वर्ष में 'केतु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५३५ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'केतु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५३६ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस वर्ष में 'केतु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५३७ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'केतु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५३८ के अनुसार समझना चाहिये।

(१०) जिस वर्ष में 'केतु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली ५३९ के अनुसार समझना चाहिये।

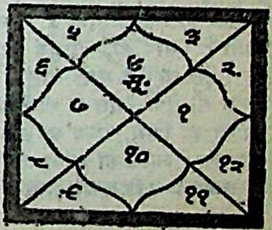
(११) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५४० के अनुसार समझना चाहिये।

(१२) जिस वर्ष में 'केतु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५४१ के अनुसार समझना चाहिये।

'कर्क' लग्न में 'सूर्य' का फल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: प्रथमभाव: सूर्य

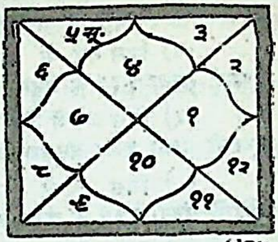


५४२

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति, सौन्दर्य एवं तेज में वृद्धि होती है तथा वह धन एवं कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त कर दूसरों की दृष्टि में धनी तथा प्रतिष्ठित समझा जाता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रु दृष्टि से शनि की मकर राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ असन्तोष एवं कठिनाइयों के साथ लाभ प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कर्कलग्नः द्वितीयभावः सू

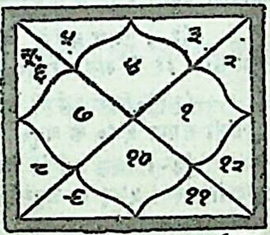


४३५

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपनी सिंह राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है, जिसके कारण वह प्रभाव तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ कमी रहेगी तथा आयु के सम्बन्ध में सामान्य कठिनाई एवं दैनिक जीवन-चर्या में भी कुछ परेशानी का सामना करना पड़ेगा।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्नः तृतीयभावः सूर्य

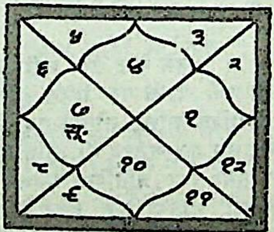


४३६

तीसरे पराक्रम एवं सहोदर के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों के पक्ष में कुछ त्रुटियों के साथ शक्ति प्राप्त होती है। पराक्रम द्वारा ही जातक अपने धन की वृद्धि भी करता है और प्रतिष्ठित होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्र दृष्टि से गुरु की मीन राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक अपने पराक्रम द्वारा भाग्य की वृद्धि तथा धर्म का पालन करता है। उसे प्रभाव तथा सम्मान की प्राप्ति भी होती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्नः चतुर्थभावः सूर्य

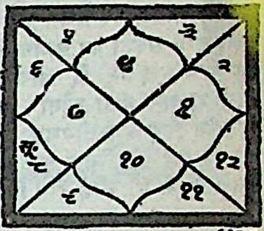


४३७

चौथे केन्द्र, माता, भूमि तथा सुख के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, व भवन के सुख में कमी प्राप्त होती है। साथ ही, धन एवं कुटुम्ब का सुख भी कम मिल पाता है। यहाँ से सूर्य सातवीं उच्च दृष्टि से अपने मित्र मंगल की मेष राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, धन तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए धन तथा सुख की विशेष चिन्ता नहीं करता।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: पंचमभाव: सूर्य

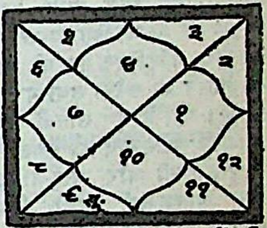


४३८

पाँचवें त्रिकोण तथा विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कुछ बाधा मिलती है, परन्तु एक सन्तान अत्यन्त प्रभावशाली होती है। साथ ही विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में भी अत्यधिक सफलता प्राप्त होती हैं तथा धन की भी वृद्धिहोती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रु दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में एकादश भाव को देखता है। अतः जातक को लाभ क शक्ति भी पर्याप्त मिलती है। परन्तु ऐसा जातक उग्र स्वभाव का होता हैं और वह स्पष्ट बात कहने में अपने हानि-लाभ की चिन्ता नहीं करता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'सूर्य की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: षष्ठभाव: सूर्य

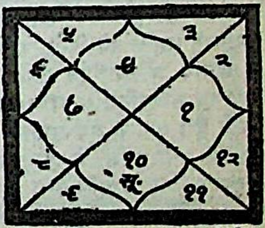


४३९

छठे शत्रु स्थान में मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में अत्यधिक प्रभावशाली बना रहता है, परन्तु धन-संचय के क्षेत्र में कमजोरी एवं कौटुम्बिक सुख में वैमनस्य तथा सुख दोनों प्राप्त करता है। झगड़े-टंटे से युक्त परिश्रम के कार्यों द्वारा जातक के प्रभाव में वृद्धि होती है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्र दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च खूब होगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त होगा। वह प्रतिष्ठा के आगे धन-संचय की चिन्ता नहीं करेगा।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: सप्तमभाव: सूर्य



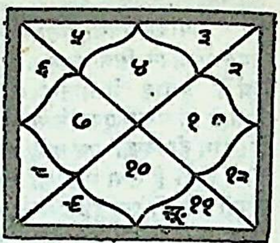
४४०

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित धन स्थान के स्वामी सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री के पक्ष में कमी तथा कष्ट की प्राप्ति होगी। स्त्री से उसका वैमनस्य रहेगा। परन्तु व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ परेशानियों के साथ धन का लाभ होता रहेगा। मूत्रेन्द्रिय में विकार तथा गृहस्थी के सम्बन्ध में कुछ कठिनाइयाँ भी हो सकती हैं। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्र दृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक शरीर के सम्बन्ध में प्रभावशाली बना रहेगा तथा प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेगा।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: अष्टमभाव: सूर्य

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से आयु के पक्ष में कभी-कभी संकटों का सामना करना पड़ेगा तथा पुरातत्त्व का लाभ कुछ कमी के साथ प्राप्त होगा। उसका रहन-सहन धनवानों जैसा रहेगा। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से स्वराशि सिंह में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक को धन एवं कौटुम्बिक सुख में कुछ कमी बनी रहेगी। उसके पेट में भी कोई रोग हो सकता है।

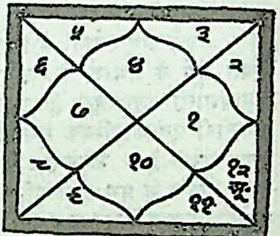


४४१

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: नवमभाव: सूर्य

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की भाग्यशक्ति प्रबल रहेगी, जिसके कारण उसे धन तथा कौटुम्बिक सुख की भी प्राप्ति होगी। वह धर्म का पालन भी करेगा तथा यश, मान व प्रतिष्ठा को प्राप्त होगा। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्र दृष्टि से बुध की कन्या-राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक के पराक्रम में वृद्धि होगी और भाई-बहिनों का सुख भी मिलेगा। ऐसा जातक धनी, सुखी, हिम्मतवर तथा स्वार्थ एवं परमार्थ दोनों का साधन करने वाला होता है।

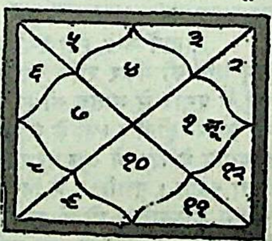


४४२

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: दशमभाव: सूर्य

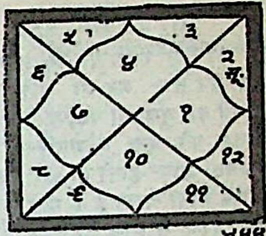
दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, प्रतिष्ठा एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। वह धनी एवं सम्मानित माना जाता है तथा उच्च पद प्राप्त करता है। यहाँ से सूर्य सातवीं नीच-दृष्टि से अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि तथा जन्म-स्थान के सुख में त्रुटि प्राप्त होगी तथा घरेलू सुख-शान्ति में भी कमी बनी रहेगी।



४४३

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: एकादशभाव: सूर्य

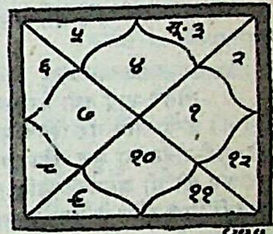


४४४

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को धन का विशेष लाभ होगा, परन्तु कौटुम्बिक सुख में कमी बनी रहेगी। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्र दृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में पंचमभाव को देखता है. अतः जातक को सन्तान-पक्ष से लाभ होगा तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी प्रवीणता तथा सफलता प्राप्त होगी। ऐसा जातक ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत करता है तथा अपनी विद्या-बुद्धि के द्वारा धनोपार्जन में उन्नति करता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कर्कलग्न: द्वादशभाव: सूर्य



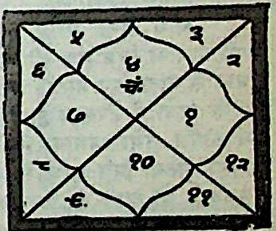
४४५

बारहवें व्यय तथा बाहरी सम्बन्धों के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से धन का श्रेष्ठ लाभ होता रहता है। ऐसा जातक रईसी ढंग का जीवन बिताता है, परन्तु उसके कौटुम्बिक सुख एवं धन-संचय के क्षेत्र में कमी बनी रहती है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्र-दृष्टि से गुरु की वृश्चिक राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक को शत्रु-पक्ष में सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति रईसी खर्च करता हुआ धन के संचय की चिन्ता नहीं करता।

'कर्क' लग्न में 'चन्द्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कर्कलग्न: प्रथमभाव: चन्द्र

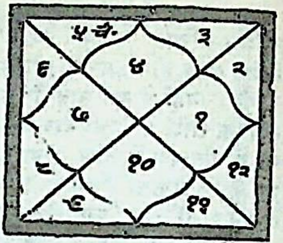


४४६

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपनी ही कर्क राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, आत्मिक शक्ति तथा यश-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति के मनोभाव बहुत श्रेष्ठ कोटि के होते हैं। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रु दृष्टि से शनि की मकर राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को सामान्य असन्तोष के साथ स्त्री तथा भोग की प्राप्ति होती है। साथ ही व्यवसाय के क्षेत्र तथा लौकिक कार्यों में भी विशेष सफलता प्राप्त होती है। ऐसा जातक यशस्वी भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: द्वितीयभाव: चन्द्र

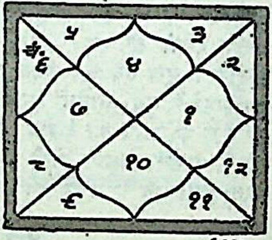


४४७

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के शरीर तथा मन की शक्ति में वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब का सुख भी पर्याप्त मिलता है। धन के क्षेत्र में जातक को कुछ परेशानी-सी होते हुए भी अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है और वह भाग्यवान् तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति माना जाता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रु दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु के सम्बन्ध में कुछ परेशानियाँ आती हैं तथा पुरातत्त्व का लाभ कुछ कठिनाइयों के साथ होता है। परन्तु वह अपने जीवन को शान-शौकत के साथ व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: तृतीयभाव: चन्द्र

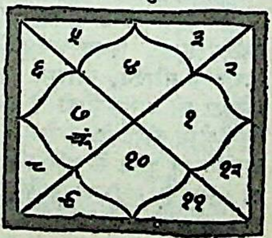


४४८

तीसरे भाई तथा पराक्रम के भवन में अपने मित्र बुध की कन्याराशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का सुख यथेष्ट मात्रा में मिलता है तथा पराक्रम की भी अत्यधिक वृद्धि होती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्र दृष्टि से नवमभाव को गुरु की मीन राशि में देखता है, अत: जातक की भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में भी उन्नति होती है। ऐसा जातक शरीर से सुन्दर, ईश्वर-भक्त, धार्मिक, धनी, पुरुषार्थी, हिम्मतवर, उत्साही, सज्जन तथा शारीरिक बल एवं मनोबल से सम्पन्न होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: चतुर्थभाव: चन्द्र

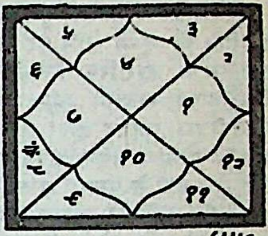


४४९

चौथे केन्द्र माता, भूमि एवं सुख स्थान में अपने सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन आदि का सुख पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता हैं। उसका शरीर सुन्दर, मन कोमल तथा स्वभाव विनोदी होता हैं। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्र दृष्टि से मंगल की मेष राशि में दशमभाव को देखता है, अत: जातक के पिता-स्थान की उन्नति होती है और वह राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, यश तथा सम्मान अर्जित करता है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी तथा सम्मानित होता है।

जिस [illegible]तक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'चन्द्रमा' [illegible]ति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: पंचमभाव: चन्द्र

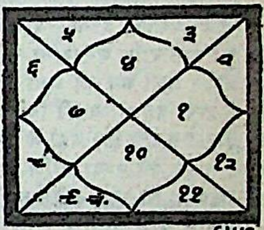


४५०.

पाँचवें त्रिकोण, विद्याबुद्धि तथा संतान के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को विद्याबुद्धि में कमी तथा संतान पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है। साथ ही शरीर तथा मन में भी दुर्बलता आती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं उच्च दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक आर्थिक-लाभ के लिए अपनी मानसिक तथा शारीरिक शक्तियों एवं गुप्त युक्तियों का प्रयोग करता है और उसमें सफलता प्राप्त करता है, परन्तु उसे थोड़ी-बहुत मानसिक अशान्ति भी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कर्कलग्न: षष्ठभाव: चन्द्र

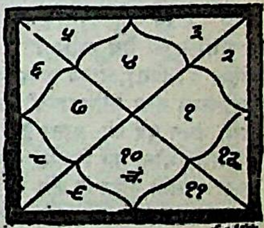


४५१

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र बृहस्पति की धनु राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में कुछ दुर्बलता प्राप्त करता है तथा अपने नम्र व्यवहार के द्वारा प्रभाव स्थापित करता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सम्मान, यश तथा धन की प्राप्ति भी होती है। ऐसा जातक आत्मबली तथा गौरवशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: सप्तमभाव: चन्द्र

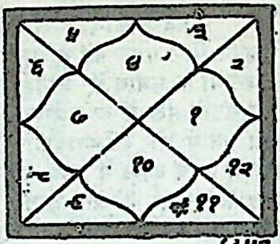


४५२

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष में कुछ असन्तोष के बाद सफलता प्राप्त होती है तथा भोगादि में विशेष रुचि बनी रहती है। साथ ही दैनिक कार्य संचालन एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से अपनी कर्क राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक-सौन्दर्य, प्रभाव, मनोबल, आत्मिक शक्ति एवं लौकिक कार्यों में सफलता मिलती है। संक्षेप में ऐसा जातक सुखी, धनी, सुन्दर तथा विलासी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: अष्टमभाव: चन्द्र

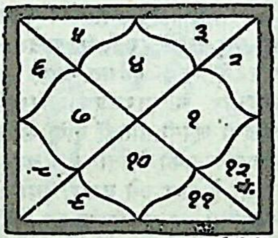


६५३

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौन्दर्य में कमी आती है तथा जीवन-यापन सम्बन्धी व्यवहारों तथा कार्यों में कुछ परेशानी का अनुभव होता है। साथ ही पुरातत्त्व के लाभ में सामान्य असन्तोष रहता है तथा आयु की वृद्धि होती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्र दृष्टि मे सूर्य की सिंह राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अत: जातक के धन-जन की वृद्धि होती है तथा वह कठिन शारीरिक श्रम द्वारा अपनी उन्नति करता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: नवमभाव: चन्द्र

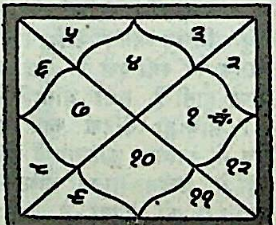


६५४

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शरीर तथा मन की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है और उसके द्वारा वह भाग्य की विशेष उन्नति करता हुआ धर्म का पालन करता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र दृष्टि से बुध की कन्या राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: जातक को भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। संक्षेप में ऐसा जातक सज्जन, सरल, सतोगुणी, भाग्यशाली, दैवी कृपापात्र, ईश्वर-भक्त तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्मकुण्डली के 'दशमभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: दशमभाव: चन्द्र

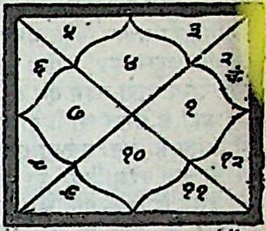


६५५

दसवें केतु, पिता तथा राज्य के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में सहयोग, सुख, लाभ तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है और वह किसी उच्च पद को पाता है। उसके शरीर में सौन्दर्य एवं शक्ति दोनों का निवास रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अत: जातक के सुख में भी वृद्धि होती है : संक्षेप में ऐसा जातक, सुन्दर, सुखी तथा भाग्यवान् होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश-भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कर्कलग्न: एकादशभाव: चन्द्र

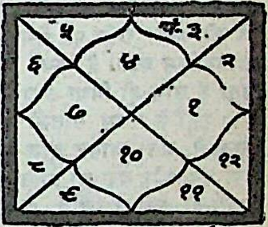


४५८

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपनी शारीरिक एवं मानसिक शक्ति द्वारा धन का विशेष लाभ प्राप्त करता है। वह शरीर से सुन्दर तथा स्वस्थ भी होता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं नीच-दृष्टि से मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को संतान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपने लाभ के लिये कटु शब्दों का प्रयोग भी करता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कर्कलग्न: द्वादशभाव: चन्द्र



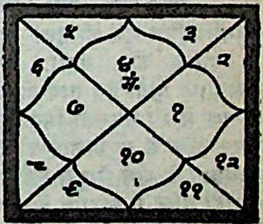
४५९

बारहवें व्ययभाव में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्पर्क से लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठ भाव को गुरु की धनु राशि में देखता है, अतः जातक शत्रुओं पर अपने शान्तिमय व्यवहार से प्रभाव बनाये रहता है, परन्तु मन में कुछ अशान्ति का अनुभव भी करता है ऐसा व्यक्ति शरीर का दुबला-पतला होता है।

'कर्क' लग्न में 'मंगल' का फल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: प्रथमभाव: मंगल

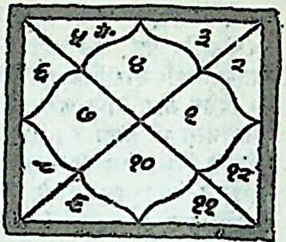


४६०

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीचे के मंगल के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा विद्या, सन्तान, राज्य एवं पिता के सुख में भी असन्तोष बना रहता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्र दृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। सातवीं उच्च दृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री-पक्ष में असन्तोष के साथ वृद्धि होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। आठवीं शत्रु दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण दैनिक जीवन में कठिनाइयाँ आती हैं तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कर्कलग्न: द्वितीयभाव: मंगल

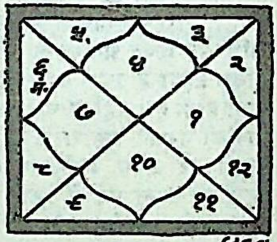


४५९

दूसरे धन-कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है। उसे पिता तथा राज्य द्वारा लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति भी होती है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखता है, अतः सन्तान एवं विद्या की शक्ति प्राप्त होने पर भी कुछ परेशानियों का अनुभव होता है। सातवीं शत्रु दृष्टि से आयुस्थान को देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व के लाभ में कुछ कमी रहती है तथा आठवीं मित्र दृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक के भाग्य, धर्म तथा यश की वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कर्कलग्न: तृतीयभाव: मंगल

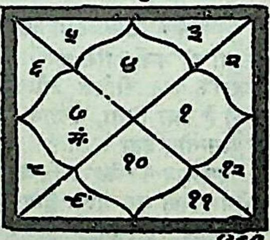


४६०

तीसरे सहोदर एवं पराक्रम भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता हैं साथ ही विद्या तथा सन्तान की शक्ति भी मिलती है। यहाँ से मंगल सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः जातक बुद्धि-बल से भाग्यशाली होता है तथा धर्म और यश को प्राप्त करता है। आठवीं दृष्टि से अपनी ही मेष राशि में दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, सफलता तथा सम्मान की प्राप्ति होती है तथा चौथी मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष में प्रभाव एवं विजय की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कर्कलग्न: चतुर्थभाव: मंगल

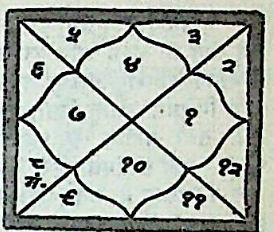


४६१

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर मंगल के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन सम्बन्धी सुख प्राप्त होता है। साथ ही उसे विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में भी सफलता मिलती है। यहाँ से मंगल चौथी उच्च दृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख एवं उन्नति का योग बनता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि के दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा सुख, सहयोग, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है तथा आठवीं शत्रु दृष्टि से एकादशभाव को देखने से धन का लाभ भी प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक सुखी, धनी तथा सफल जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: पंचमभाव: मंगल

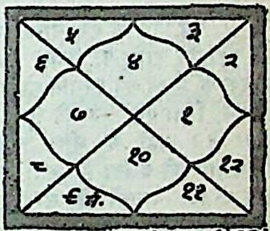


४६२

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का सुख प्राप्त होता है तथा मान-सम्मान एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। चौथी शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण कुछ कमी तथा असन्तोष के साथ आयु-पुरातत्त्व एवं दैनिक जीवन के सुख का लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ-प्राप्ति के लिए दिमागी परिश्रम अधिक करना पड़ता है तथा आठवीं मित्र दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च की अधिकता रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्पर्क से यश, धन तथा सफलता की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: षष्ठभाव: मंगल

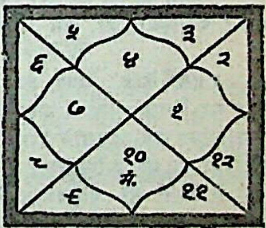


४६३

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में विजय प्राप्त होती है तथा विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का भी सुख मिलता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः बुद्धियोग द्वारा भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। सातवीं मित्र दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभदायक सम्बन्ध बनते हैं और आठवीं नीच दृष्टि से अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक-सौन्दर्य, स्वास्थ्य, सुख तथा शान्ति में कुछ कमी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: सप्तमभाव: मंगल

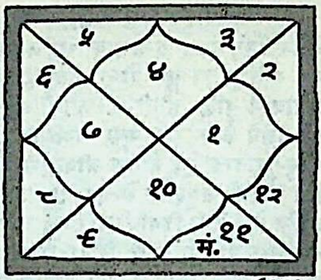


४६४

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक को कई सुन्दर स्त्रियों का संयोग प्राप्त होता है, परन्तु उनसे कुछ मतभेद भी रहता है और व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। इसके साथ ही विद्या, बुद्धि एवं सन्तान की शक्ति भी मिलती है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में दशमभाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय की शक्ति श्रेष्ठ रहती है तथा इनसे सुख, लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। सातवीं नीच दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा घरेलू सुख में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। आठवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से जातक की धन-संचय शक्ति प्रबल रहती है तथा वाणी में भी विशेष प्रभाव पाया जाता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: अष्टमभाव: मंगल

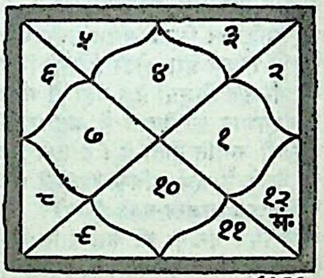


४६५

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ लाभ मिलेगा, परन्तु पिता, राज्य, व्यवसाय, विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ेगी। यहाँ से मंगल चौथी शत्रु दृष्टि से एकादश-भाव को देखता है, अतः परिश्रम द्वारा लाभ प्राप्त होगा। सातवीं मित्र दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन की वृद्धि होगी तथा कुटुम्ब का सुख मिलेगा। आठवीं मित्र दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होगी एवं कुटुम्ब का सुख भी मिलेगा।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: नवमभाव: मंगल

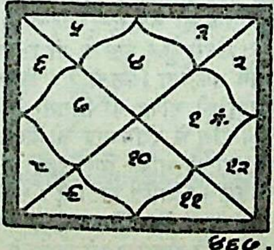


४६६

नवें त्रिकोण एवं भाग्य भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के भाग्य की उन्नति होती है तथा विद्या-बुद्धि सन्तान, पिता एवं राज्य से सुख तथा सम्मान प्राप्त होता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्र दृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ रहेगा। सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन का श्रेष्ठ सुख मिलेगा तथा पराक्रम कीवृद्धि होगी तथा आठवीं शत्रु दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता तथा भूमि-भवन के सुख में कुछ असन्तोष एवं कठिनाइयों के साथ सफलता प्राप्त होगी। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी तथान्यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: दशमभाव: मंगल

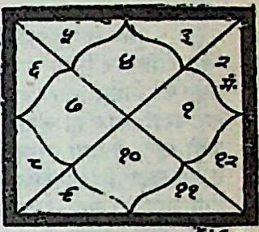


४६७.

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में मेष राशि पर स्थित स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा सुख, सम्मान, सफलता, यश तथा धन की प्राप्ति होती है। यहाँ से मंगल आठवीं दृष्टि से अपनी ही वृश्चिक राशि में पंचमभाव को भी देखता है, अतः सन्तान, एवं विद्या-बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है तथा उच्च पद की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति राजनीति एवं कानून का ज्ञाता भी होता है। चौथी नीच दृष्टि से मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी तथा दुर्बलता रहती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता तथा भूमि-भवन के सुख में कुछ असन्तोष एवं त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: एकादशभाव: मंगल

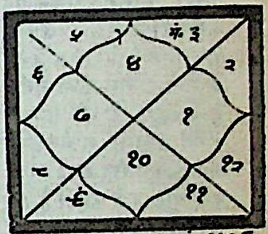


९६८

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृषभराशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन-वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है, परन्तु धन का लाभ पर्याप्त मात्रा में होता है, साथ ही पिता, राज्य एवं व्यवसाय से भी लाभ होता है। यहाँ से सातवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि तथा सन्तान की शक्ति प्राप्त होती है, जिससे लाभ के साधनों में वृद्धि होती है तथा राज्य के द्वारा सम्मान एवं सफलता मिलती है। चौथी मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है तथा आठवीं मित्र दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष में प्रभाव बढ़ता है तथा उन पर विजय प्राप्त होती रहती है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी, योग्य, विद्वान्, बुद्धिमान्, विजयी तथा सफल होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: द्वादशभाव: मंगल



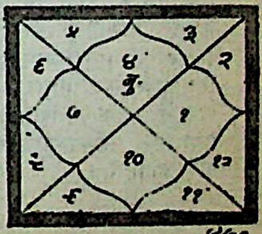
४९९

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही राज्य, पिता, संतान, विद्या-बुद्धि एवं प्रतिष्ठा के क्षेत्र में कमी का अनुभव होता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्र दृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अत: भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं मित्र दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है तथा आठवीं उच्च दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है। परन्तु ऐसे जातक की बुद्धि में कुछ भ्रम तथा मस्तिष्क में परेशानी भी बनी रहती है।

'कर्क' लग्न में 'बुध' का फल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: प्रथमभाव: बुध

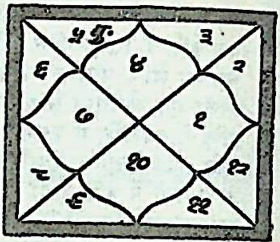


५००

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक के शरीर में कुछ दुर्बलता रहती है तथा भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। साथ ही पराक्रम एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। खर्च खूब होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी मिलता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्र दृष्टि से शनि की मकर राशि में सप्तमभाव को देखता है, अत: पुरुषार्थ शक्ति द्वारा जातक स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है, परन्तु सामान्य त्रुटियाँ भी बनी रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: द्वितीयभाव: बुध

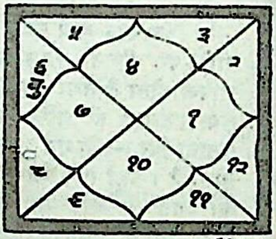


४७१

दूसरे धन-कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक धन-संग्रह का विशेष प्रयत्न करता है, परन्तु वह संचय नहीं कर पाता, साथ ही जातक को भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है तथा पराक्रम में कुछ वृद्धि होती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्र दृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु का सुख प्राप्त होता है, परन्तु पुरातत्त्व का लाभ अधूरा रहता है। ऐसे जातक का दैनिक जीवन सुख पूर्ण तथा प्रभावयुक्त बना रहता है।

जिस जातक जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: तृतीयभाव: बध

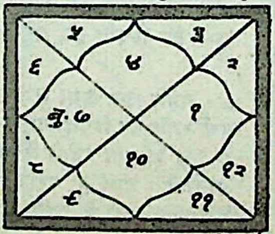


४७२

तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान में अपनी ही कन्या राशि पर स्थित स्वक्षेत्री तथा उच्च के बुध के प्रभाव से जातक के पराक्रम में तो वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी बनी रहती है, क्योंकि बुध व्ययेश भी है। यहाँ से बुध सातवीं नीच दृष्टि से अपने मित्र गुरु की मीन राशि में नवमभाव दो देखता है, अतः जातक का भाग्य कमजोर बना रहता है तथा धर्म के सम्बन्ध में भी कुछ त्रुटि बनी रहती है। ऐसे व्यक्ति के यश में भी कमी आ जाती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: चतुर्थभाव: बुध

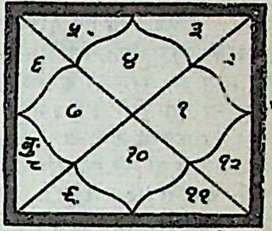


४७३

चौथे केन्द्र, माता, भूमि तथा सुख के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बध के प्रभाव से जातक को माता तथा भूमि-भवन में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है। परन्तु भाई-बहिन और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध का सुख प्राप्त होता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्र दृष्टि से दशमभाव को देखता हैं, अतः कुछ त्रुटियों के साथ जातक को पिता के स्थान से शक्ति मिलती है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सामान्य साफलता प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: पंचमभाव: बुध

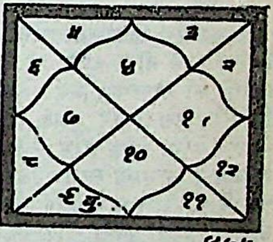


४७४

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि व सन्तान के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के पक्ष में सामान्य त्रुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति विवेक द्वारा खर्च चलाने में सफल होता है तथा हिम्मत एवं बुद्धि का धनी रहता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः उसे बुद्धि-बल द्वारा लाभ प्राप्त होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: षष्ठभाव: बुध

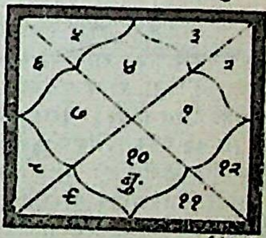


४७५

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में कुछ नम्रता तथा शान्ति द्वारा सफलता प्राप्त करता है। साथ ही उसके भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी कुछ कमजोरी बनी रहती है। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी ही मिथुन राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च कम करने का प्रयत्न करने पर भी अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध सामान्य बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: सप्तमभाव: बुध

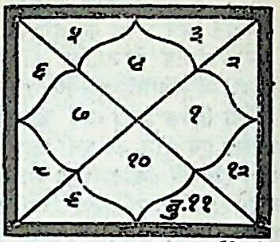


४७६

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को स्त्री का सुख प्राप्त होता है तथा व्यवसाय में भी सफलता मिलती है। परन्तु बुध के व्ययेश होने के कारण कुछ असन्तोष भी बना रहता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्र दृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः शरीर में शक्ति एवं दुर्बलता दोनों का ही प्रभाव बना रहता है। ऐसा जातक खर्च अधिक करता है तथा घर के भीतरी एवं बाहरी सम्बन्धों एवं परिश्रम के द्वारा उन्नति भी करता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: अष्टमभाव: बुध

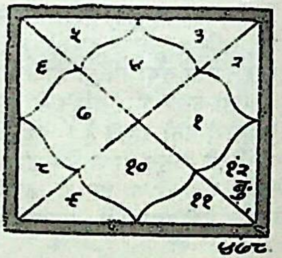


४७७

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ कमियों के साथ सफलता प्राप्त होती है। साथ ही भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में कमी आ जाती है। कठिन परिश्रम, विवेक तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध द्वारा जातक अपना खर्च चलाता है। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अत: उसे धन का लाभ भी होगा परन्तु बुध के व्ययेश होने के कारण प्रत्येक क्षेत्र में कुछ कमियाँ भी बनी रहेंगी।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कर्कलग्न: नवम भाव: बुध

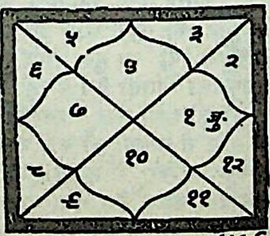


४७८

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलता मिलेगी। इस प्रकार भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम के क्षेत्र में भी अपूर्ण लाभ रहेगा। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सामान्य लाभ उठाते हुये सामान्य खर्च को चलाने की शक्ति प्राप्त होगी। यहाँ से बुध सातवीं उच्च-दृष्टि से अपनी कन्या राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: जातक भाग्य के समक्ष पुरुषार्थ को विशेष मानेगा तथा बुध के व्ययेश होने के कारण उसकी भाग्योन्नति में बाधाएं भी आती रहेंगी।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कर्क लग्न: दशमभाव: बुध

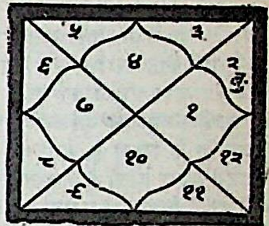


४७९

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित व्ययेश के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अपूर्ण सफलता प्राप्त होगी। परन्तु भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम की शक्ति विशेष रहेगी। यहाँ से बुध सातवीं मित्र-दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अत: जातक परिश्रम एवं व्यय की शक्ति द्वारा सुख प्राप्त करेगा और माता, भूमि, मकान आदि का सामान्य लाभ रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कर्क लग्न: एकादशभाव: बुध

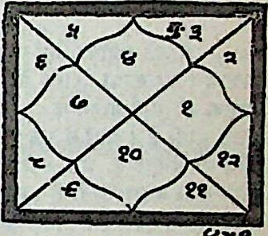


४८०

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक की आमदनी तो खूब होगी, बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी लाभ होगा, परन्तु खर्च अधिक बना रहेगा। साथ ही उसे भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम का लाभ होता रहेगा। यहाँ से बुध सातवीं मित्र-दृष्टि से अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में भी उसे अपूर्ण लाभ प्राप्त होगा। परन्तु ऐसा जातक अपनी बुद्धि, विवेक एवं वाणी के बल पर लाभ उठाता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'बुध' की स्थित हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कर्क लग्न: द्वादशभाव: बुध



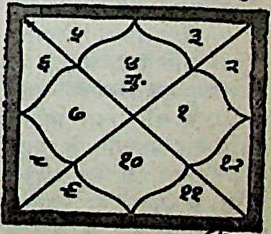
४८१

बारहवें व्ययभाव में अपनी ही मिथुन राशि में स्थित स्वक्षेत्री बुध के प्रभाव से जातक का व्यय अधिक होगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता रहेगा। साथ ही उसे भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम के क्षेत्र में भी कमजोरी बनी रहेगी। यहाँ से बुध सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः उसे अपने शान्त स्वभाव पुरुषार्थ एवं खर्च की शक्ति द्वारा शत्रु-पक्ष में सामान्य सफलता प्राप्त होगी और वह अपने खर्च करने के बल पर अनेक कठिनाइयों पर नियन्त्रण बनाये रहेगा।

'कर्क' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कर्कलग्न: प्रथमभाव: गुरु

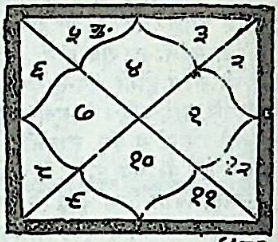


४८२

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक को शारीरिक-सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान, विद्या तथा बुद्धि का पूर्ण सुख भी प्राप्त होता है। सातवीं नीच दृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री-पक्ष में कुछ कष्ट प्राप्त होता है तथा दैनिक खर्च में कभी-कभी कठिनाइयाँ पड़ती हैं। नवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को स्व-क्षेत्र में देखने के कारण भाग्य की शक्ति प्रबल रहती है तथा धर्म का भी यथावत् पालन होता है। संक्षेप में ऐसा जातक विद्वान्, बुद्धिमान, सज्जन, उदार, विनम्र, आत्मबली तथा शत्रु-पक्ष पर विजय पाने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्नः द्वितीयभावः गुरु

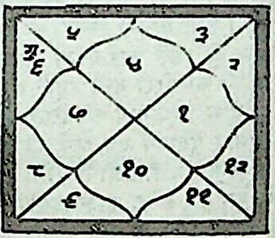


४८३

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से षष्ठभाव को स्वराशि में देखता है, अतः धन की शक्ति से शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा दैनिक जीवन में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। नवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय द्वारा धन का लाभ होता है तथा ननिहाल पक्ष से भी लाभ मिलता है। ऐसा जातक यशस्वी तथा प्रतिष्ठित भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्नः तृतीयभावः गुरु

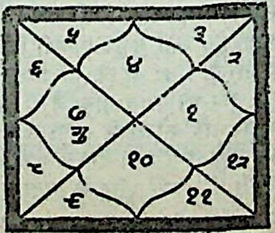


४८४

तीसरे सहोदर एवं पराक्रम के स्थान पर अपने मित्र बुध की कन्या राशि में स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि प्राप्त होती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं नीच दृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ हानि तथा क्लेश रहता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म में निष्ठा बनी रहती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। ऐसा जातक शत्रुजयी, धर्मात्मा, उन्नतिशील, पराक्रमी तथा हिम्मती होता है, परन्तु गुरु के शत्रु स्थानाधिपति होने के कारण उसे कभी-कभी कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्नः चतुर्थभावः गुरु



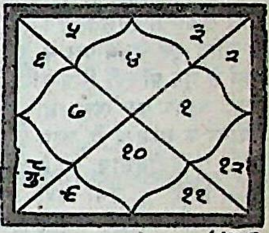
४८५

चौथे केन्द्र, माता, भूमि तथा सुख के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, मातृभूमि, स्थान तथा सुख के पक्ष में कुछ असन्तोष के साथ सफलता प्राप्त होती है। साथ ही शत्रु पक्ष एवं झगड़े के मामलों में शान्तिपूर्ण तरीकों के अपनाने पर सफलता मिलती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु के क्षेत्र में सामान्य असन्तोष रहता है, था पुरातत्त्व का भी कुछ कमी के साथ लाभ प्राप्त

होता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है। नवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: पंचमभाव: गुरु

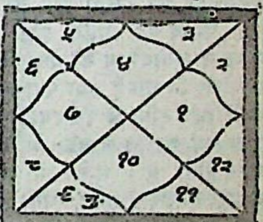


४८६

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में विशेष सफलता मिलती है तथा शत्रु-पक्ष पर भी प्रभाव प्राप्त होता है। यहाँ मे गुरु पाँचवी दृष्टि से स्व-राशि में नवमभाव को देखता है, अतः बुद्धि और सन्तान के सहयोग से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण लाभ के क्षेत्र में कुछ असन्तोष के साथ असफलता मिलती है तथा नवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक-सौन्दर्य, आत्मबल एवं सुयश प्राप्त होता है। गुरु के षष्ठेश होने के कारण जातक को प्रत्येक क्षेत्र में कुछ परेशानियाँ तो अनुभव होती हैं, परन्तु सफलता भी अवश्य मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कर्कलग्न: षष्ठभाव: गुरु

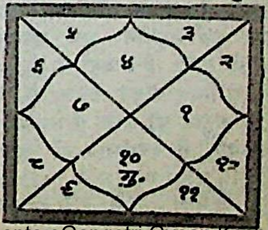


४८७

छठे शत्रु स्थान में अपनी धनु राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक शत्रुओं पर अपना अत्यधिक प्रभाव रखने वाला तथा यशस्वी होता है। परन्तु गुरु के षष्ठेश होने से भाग्योन्नति में कुछ परेशानियाँ भी आती हैं। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा सफलता, लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। नवीं मित्र दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा जातक धनी, सुखी, यशस्वी तथा प्रभावशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: सप्तमभाव: गुरु

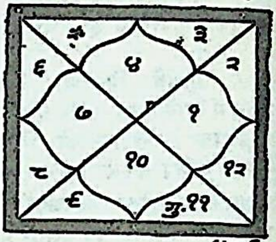


सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा शत्रु-पक्ष से भी व्यवसाय को कुछ हानि पहुँचती है। यहाँ से गुरु ५वीं शत्रु दृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः परिश्रम द्वारा लाभ प्राप्त होता है। सातवीं उच्च दृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शरीर के सौन्दर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है तथा नवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव

को देखने से भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम में सफलता प्राप्त होती है। परन्तु गुरु के षष्ठेश होने के कारण सभी क्षेत्रों में सामान्य कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कर्कलग्न: अष्टमभाव: गुरु

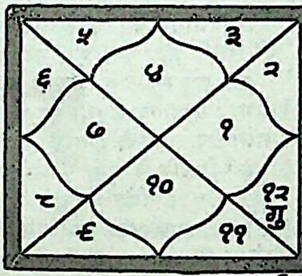


४८९

अष्टम, आयु तथा पुरातत्त्व के स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व के पक्ष में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है। परन्तु शत्रु-पक्ष की ओर से अशान्ति एवं भाग्य-पक्ष में दुर्बलता भी बनी रहती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है। सातवीं मित्र दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है तथा नवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता तथा भूमि आदि का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: नवमभाव: गुरु

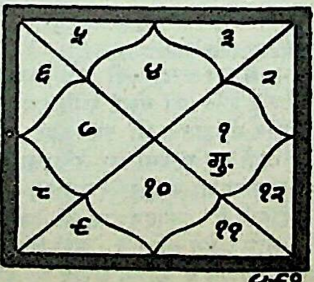


४९०

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपनी ही मीन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं उच्च-दृष्टि से मित्र राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः शारीरिक-सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्र दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में भी विशेष सफलता प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक विद्वान्, बुद्धिमान,सज्जन, सुखी, धनी, पराक्रमी तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: दशमभाव: गुरु



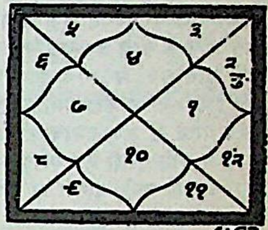
४९१

दसवें केन्द्र, राज्य एवं पिता के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा पूर्ण सहयोग, सुख, सम्मान एवं लाभ की प्राप्ति होती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक धन तथा कुटुम्ब की शक्ति से सम्पन्न रहता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से कुछ असन्तोष के साथ माता एवं भूमि का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है तथा नवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को

देखने से शत्रु पक्ष पर भारी प्रभाव बना रहता है । ऐसा जातक परिश्रम तथा झगड़ों के योग से भाग्योन्नति एवं पदोन्नति करता है तथा भाग्यशाली बनता है ।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे नीचे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: एकादशभाव: गुरु

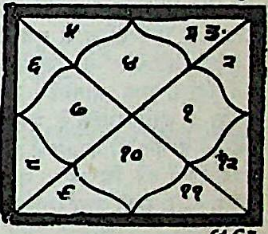


७६२

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा लाभ प्राप्त करता है। उसे शत्रु पक्ष से भी लाभ होता है और वह धर्म का पालन भी करता है । यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्र दृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को सामान्य वैमनस्य के साथ भाई-बहिनों की शक्ति प्राप्त रहेगी तथा पराक्रम में वृद्धि होगी । सातवीं मित्र दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के पक्ष में सफलता मिलेगी एवं नवीं नीच दृष्टि से सप्तमभाव को देखने कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कष्ट, हानि तथा असन्तोष बना रहेगा । सामान्यतः ऐसा जातक अवश्य धनी होता है ।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: द्वादशभाव: गुरु



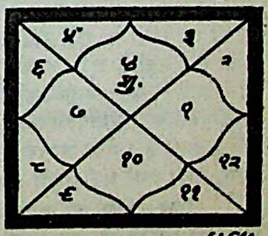
७६३

बारहवें व्ययभाव में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु से प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी मिलता है । परन्तु भाग्य-स्थान में कमी रहती है और धर्म का पालन भी यथावत् नहीं हो पाता। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रु दृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता एवं भूमि-भवन के पक्ष में परिश्रम द्वारा सफलता मिलती है । सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष में सफलता मिलती है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व के पक्ष में सामान्य सफलता प्राप्त होती है ।

'कर्क' लग्न में 'शुक्र' का फल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: प्रथमभाव: शुक्र

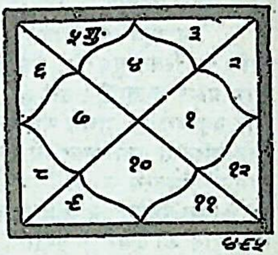


७६४

पहले केन्द्र तथा शरीर-स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शारीरिक-सौन्दर्य, सुख एवं चातुर्य का लाभ होता है। साथ ही माता एवं भूमि-सम्पत्ति का सुख भी प्राप्त होता है । यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी खूब लाभ प्राप्त होता है तथा भोगादिक में रुचि बनी रहती है । संक्षेप में, ऐसा जातक सुखी, धनी, भू-सम्पत्तिवान्, भोगी, ऐश्वर्यशाली तथा सफलता प्राप्त करने वाला होता है ।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: द्वितीयभाव: शुक्र

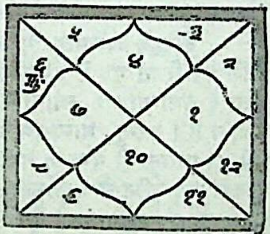


४६५

दूसरे धन-कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को सामान्य असन्तोष के साथ धन-कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। उसे भूमि तथा मकान आदि का सुख भी मिलता है, परन्तु माता के सुख में कुछ कमी रहती है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ मिलता है। ऐसा जातक धनी, प्रतिष्ठित तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: तृतीयभाव: शुक्र

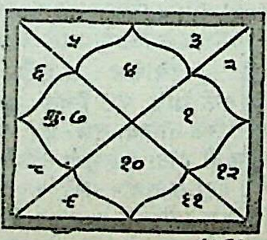


४६६

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक के भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी रहती है। साथ ही माता के सुख में भी त्रुटि का अनुभव होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं उच्च-दृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य में वृद्धि होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। ऐसा जातक अपनी भीतरी कमजोरियों को छिपाकर बाहर से हिम्मत प्रकट करने वाला, धनी, सुखी तथा धार्मिक विचारों का होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: चतुर्थभाव: शुक्र

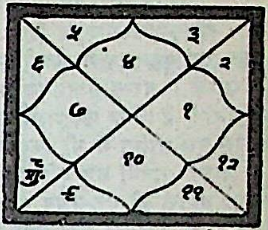


४६७

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख-भवन में अपनी तुला राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन तथा सुख का श्रेष्ठ लाभ होता है। उसकी आमदनी में वृद्धि होती है और वह धनवान् बना रहता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा भी सुख, सहयोग, सम्मान, सफलता तथा लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक बड़ा होशियार, चतुर, प्रतिष्ठित, सुखी तथा धनी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: पंचमभाव शुक्र

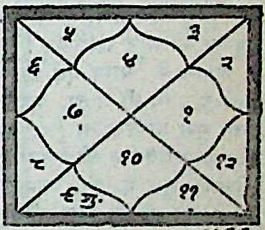


४९८

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि व सन्तान के भवन में अपने सामान्य-मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान का यथेष्ठ लाभ होता है। वह धन, सुख, सफलता एवं चातुर्य को प्राप्त करता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः बुद्धि-बल द्वारा जातक को धन का यथेष्ट लाभ होता है। साथ ही उसे माता, भूमि, भवन आदि का सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा जातक बड़ा समझदार, वार्तालाप करने में कुशल तथा प्रतिष्ठित होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: षष्ठभाव: शुक्र

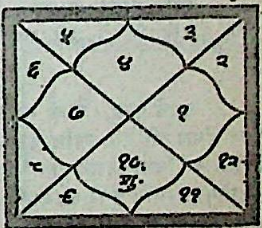


४९९

छठे शत्रु स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में सफलता प्राप्त होती है, परन्तु माता एव भूमि-भवन के सुख में कुछ कमी तथा अशान्ति का योग उपस्थित होता है। इसी प्रकार लाभ के मार्ग में भी अधिक परिश्रम तथा परतन्त्रता का सा योग बनता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक बहुत खर्चीले स्वभाव का होता है और उसे बाहरी स्थानों से सुख तथा लाभ की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कर्क लग्न: सप्तमभाव: शुक्र

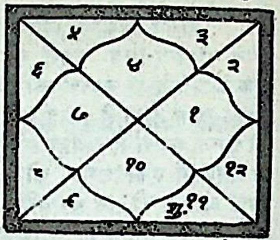


५००

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा दैनिक आमदनी एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख तथा सफलता की प्राप्ति होती है। उसे माता तथा भूमि, मकान आदि का सुख भी मिलता है। यहाँ से जातक अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक-सौन्दर्य, चातुर्य एवं सुख की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक सुखी, धनी, यशस्वी, गम्भीर, बुद्धिमान, चतुर, भोगी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम-भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: अष्टमभाव: शुक्र

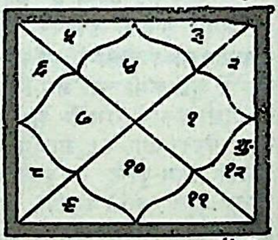


५०१

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में शक्ति एवं सफलता प्राप्त करता है। परन्तु माता एवं मातृभूमि के सुख में कमी आ जाती है। वह परदेश में रहकर उन्नति पाता है। घरेलू सुख-शान्ति में भी कुछ कमी बनी रहती है। यहाँ से जातक सातवीं शत्रु दृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अत: जातक को धन-संचय की चिन्ता नहीं रहती। उसे कुटुम्ब का सुख भी अल्पमात्रा में मिलता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: नवमभाव: शुक्र

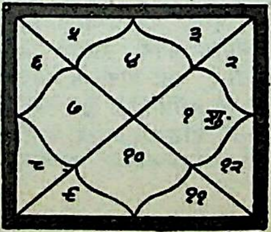


५०२

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में विशेष वृद्धि होती है, साथ ही माता, मकान, भूमि आदि का भी उत्तम सुख प्राप्त होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखता है। अत: जातक को भाई-बहिन के सुख में कुछ कमजोरी बनी रहती है तथा पराक्रम को भी वह भाग्य की तुलना में कम समझता है। ऐसा जातक भाग्यवादी, सुखी, धनी तथा भाग्यशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कर्क लग्न: दशमभाव: शुक्र

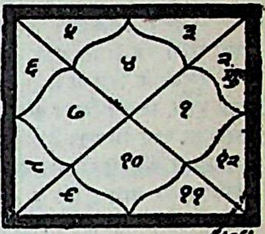


५०३

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता राज्य एवं व्यवसाय द्वारा यथेष्ट सुख, सहयोग, सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अत: जातक को माता, भूमि एवं भवन का सुख भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है। ऐसा जातक गम्भीर, चतुर, बुद्धिमान, धनी, सुखी, ऐश्वर्यशाली तथा सौन्दर्य-शृंगार का प्रेमी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: एकादशभाव: शुक्र

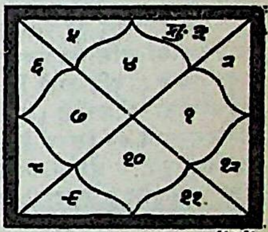


४०४

ग्यारहवें लाभ भवन में अपनी ही वृषभ राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक को आमदनी का श्रेष्ठ योग प्राप्त होता है। साथ ही मातृ-स्थान के सुख एवं भूमि-भवन आदि का भी लाभ होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्र दृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में भी पूर्ण सफलता मिलती है। ऐसा जातक श्रेष्ठ वाणी बोलने वाला, योग्य, चतुर, समझदार, धनी, सुखी तथा अनेक प्रकार की विद्याओं में निपुण होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्नमें हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: द्वादशभाव: शुक्र



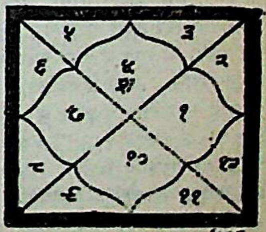
४०५

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है। साथ ही उसके माता के सुख में कमी आती है और उसे मातृभूमि से अलग जाकर रहना पड़ता है भूमि, मकान आदि के सुख में भी कमी रहती है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अष्ठमभाव को देखता है। अतः जातक शत्रु-पक्ष में चतुराई तथा खर्च से काम लेकर सफलता प्राप्त करता है एवं प्रभाव को कायम रखता है,

'कर्क' लग्न में 'शनि' का फल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: प्रथमभाव: शनि

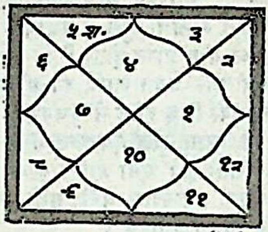


४०६

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित अष्टमेष शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी आती है तथा शरीर में कुछ रोग तथा परेशानी भी बनी रहती है। यहाँ से शनि तीसरी मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन का त्रुटिपूर्ण सुख प्राप्त होता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से सप्तमभाव के स्वक्षेत्र में देखने से स्त्री की शक्ति तो मिलेगी परन्तु उससे कुछ परेशानी भी रहेगी तथा व्यावसायिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। दसवीं नीचदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता तथा राज्य के क्षेत्र में सामान्य सफलता एवं सम्मान का लाभ रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: द्वितीयभाव: शनि

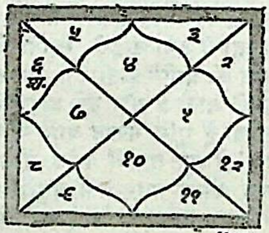


४०७

दूसरे धन-कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है। तीसरी उच्च दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता तथा भूमि-भवन का सुख मिलता है। सातवीं दृष्टि से स्वर राशि में अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दसवीं मित्र दृष्टि से एकादश भाव को देखने से परिश्रम द्वारा धन का लाभ होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक अमीरी ढंग का जीवन व्यतीत करता है, परन्तु धन की कमी बनी रहती है तथा पारिवारिक सुख में भी न्यूनता रहती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: तृतीयभाव: शनि

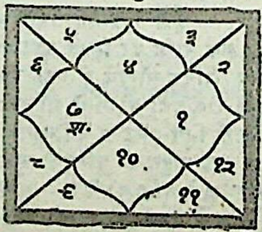


४०८

तीसरे भाई एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ में तो वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के द्वारा कुछ परेशानी मिलती है। यहाँ से तीसरी शत्रु-दृष्टि से शनि पंचमभाव को देखता है, अतः सन्तान द्वारा कष्ट एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कठिनाई एवं कमी रहती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य के सम्बन्ध में परेशानी एवं धर्म के क्षेत्र में अरुचि रहती है। दसवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। ऐसी ग्रह-स्थिति वाला जातक कुछ क्रोधी स्वभाव का भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए--

कर्कलग्न: चतुर्थ भाव: शनि

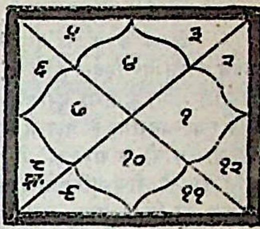


४०९

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कुछ परेशानी के साथ सुख एवं भूमि तथा मकान के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त होती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः शत्रु-पक्ष में प्रभाव रहता है। सातवीं नीच दृष्टि से दशम-भाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं तथा दसवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथम-भाव को देखने से शरीर में परेशानी रहती है तथा घरेलू सुख के साधनों की प्राप्ति के पक्ष में आलस्य बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्नः पंचमभावः शनि

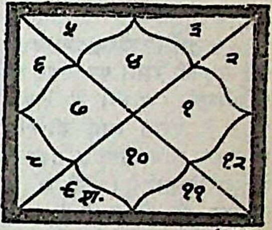


४१०

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के भाव में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि में स्थित शनि के प्रभाव से जातक सन्तान एवं विद्या-बुद्धि के पक्ष से परेशानी एव चिन्ता का योग प्राप्त करता है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से सप्तमभाव को स्वराशि में देखता है, अतः स्त्री बुद्धिमान् मिलती है, परन्तु उसके कारण भी थोड़ा-बहुत कष्ट बना रहता है। व्यवसाय के क्षेत्र में बुद्धि के योग द्वारा सफलता मिलती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है तथा दसवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय में कमी बनी रहती है तथा कुटुम्ब द्वारा भी कुछ परेशानी एवं चिन्ताओं का अनुभव होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्नः षष्ठ भावः शनि

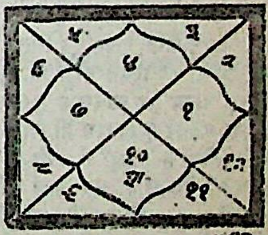


४११

छठे शत्रु भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में प्रभाव शाली बना रहता है, परन्तु स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में उसे कुछ परेशानियों के बाद सफलता मिलती है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु की शक्ति बढ़ती है तथा पुरातत्त्व का भी कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ मिलता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सम्बन्ध में वैमनस्य युक्त सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्नः सप्तमभावः शनि

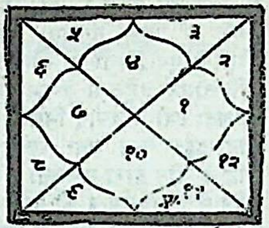


४१२

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में स्वराशि मकर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा भोगादि के सुख भी खूब प्राप्त होते हैं। यहाँ से शनि तीसरी शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी बनी रहती है। सातवीं शत्रु दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में त्रुटि रहती है तथा दसवीं उच्च एवं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, मकान तथा घरेलू सुख में वृद्धि होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक कठिनाइयों के साथ उन्नति प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: अष्टमभाव: शनि

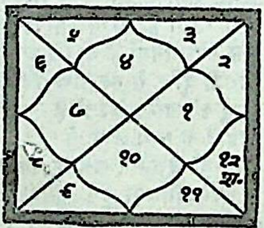


५२३

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपनी ही कुम्भ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति मिलती है। यहाँ से शनि तीसरी नीच-दृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में परेशानी का अनुभव होता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय की शक्ति में कमी आती है तथा कौटुम्बिक सुख में भी त्रुटि रहती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में भी चिन्ता एवं कठिनाइयों का अनुभव होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: नवमभाव: शनि

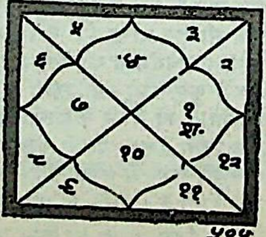


५२४

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति एवं धर्म के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ बनी रहती हैं परन्तु आयु की वृद्धि होती है, पुरातत्त्व का साधारण लाभ होता है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख मिलता है। यहाँ से शनि तीसरी मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः लाभ अच्छा रहता है। सातवीं मित्र-दृष्टि तृतीयभाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है, परन्तु शनि के अष्टमेश होने से भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के बाद प्रभाव स्थापित होता है। आन्तरिक रूप से कुछ कमजोर रहने पर भी प्रकट में ऐसा जातक बहुत भाग्यशाली समझा जाता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: दशमभाव: शनि

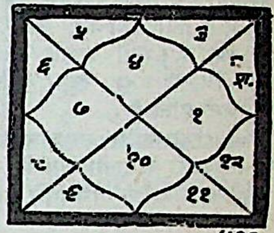


५२५

दसवें केन्द्र, राज्य एवं पिता के भवन में अपने शत्रु मंगल की राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियों का सामना करना पड़ता है। साथ ही आयु एवं पुरातत्त्व की भी कुछ हानि होती है। यहाँ से शनि तीसरी मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ मिलता है। सातवीं उच्च दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, मकान आदि का सुख मिलता है तथा दसवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक रोजगार की अच्छी शक्ति मिलती है। ऐसा जातक कुछ कमजोरियों के रहते हुए भी अपने सब कार्यों का ठीक से संचालन करता है तथा सुखी एवं धनी प्रतीत होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क-लग्न: एकादशभाव: शनि

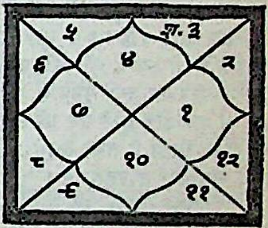


५१६

'ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है तथा स्त्री एवं रोजगार का भी सुख मिलता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव के देखता है, अतः शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि तथा संतान के पक्ष से कुछ कष्ट रहता है तथा दसवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु की शक्ति बढ़ती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा जातक अधिक पढ़-लिख नहीं पाता, परन्तु अपनी चतुराई, प्रपंच एवं परिश्रम द्वारा अपना तथा अपने परिवार का निर्वाह करता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: द्वादशभाव: शनि



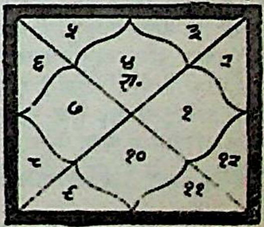
५१७

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सफलता मिलती है। साथ ही स्त्री, व्यवसाय, आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में हानि होती है। यहाँ से तीसरी शत्रु दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब की ओर से चिंताएं बनी रहती हैं। सातवीं शत्रु-दृष्टि के षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष से झंझट प्राप्त होता है, परन्तु प्रभाव बना रहता है, दसवीं शत्रु दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य एवं धर्म-पालन में कठिनाई बनी रहती है। परन्तु परेशानियों के बावजूद भी ऐसा जातक शानदार जीवन बिताता है।

'कर्क'' लग्न में 'राहु का फल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अननुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: प्रथमभाव: राहु

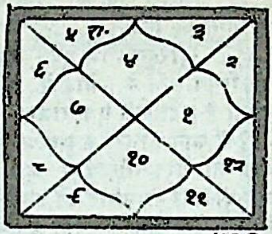


५१८

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौन्दर्य में कमी आती है तथा हृदय में चिंताए बनी रहती हैं, साथ ही उसे कभी-कभी मृत्यु-तुल्य कष्टों का भी सामना करना पड़ता है। ऐसा जातक गुप्त युक्तियों द्वारा अपने प्रभाव तथा सम्मान को स्थिर बनाये रखने का प्रयत्न करता है तथा अपनी उन्नति के लिये कठिन परिश्रम भी करता है, परन्तु उसे स्वास्थ्य के सम्बन्ध में चिंतित बना रहना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली से 'द्वितीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कर्क-लग्न: द्वितीय-भाव: राहु

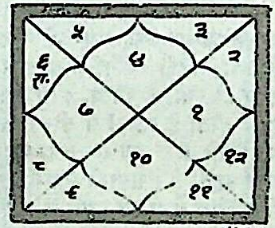


५१९

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन से अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव जातक के धन एवं कुटुम्ब के सुख में हानि उठानी पड़ती है। वह गुप्त-युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर धन-वृद्धि का प्रयत्न करता है तथा कभी-कभी उसे आकस्मिक धन लाभ भी हो जाता है। ऐसा जातक अपनी प्रतिष्ठा की वृद्धि के लिये चिंतित बना रहता है तथा बड़ा हिम्मती और परिश्रमी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कर्क-लग्न: तृतीयभाव: राहु

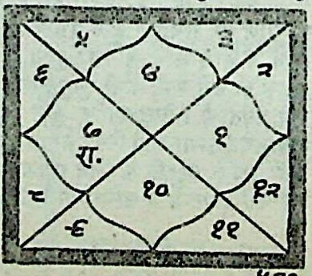


५२०

तीसरे पराक्रम एवं सहोदर के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की बहुत वृद्धि होती है तथा कुछ परेशानियों के साथ भाई-बहिन का सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिये गुप्त युक्तियों, कठिन-परिश्रम तथा पुरुषार्थ से काम लेता है। वह भीतरी रूप से कमजोर होने पर भी ऊपरी दृष्टि से बड़ा हिम्मत-वर बना रहता है तथा अपने प्रभाव को स्थिर रखने के लिये उद्योगशील रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कर्क-लग्न: चतुर्थभाव: राहु

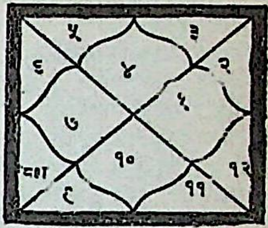


५२१

चौथे केन्द्र, माता तथा भूमि के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कुछ कमी रहती है। इसी प्रकार भूमि, भवन तथा जन्म स्थान का सुख भी न्यून मात्रा में प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति जीवन में सफलता पाने के लिये गुप्त युक्तियों, चतुराइयों तथा कठिन परिश्रम से काम लेता है, परन्तु कभी-कभी असफलताओं के कारण विशेष कष्ट भी पाता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुडण्ली के 'पंचम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

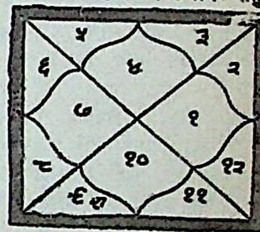
कर्क लग्नः पंचमभावः राहु



पाँचवें त्रिकोण, सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के भवन में अपने शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है, विद्या-ग्रहण करने में कठिनाई होती है तथा मस्तिष्क के भीतर चिन्ताएँ व्याप्त रहती हैं। ऐसे जातक को बहुत समय बीत जाने पर सन्तान का सुख प्राप्त होता है। बुद्धि से कमजोर होने पर भी ऐसा व्यक्ति बड़े बुद्धिमानों जैसी बातें कह-कर लोगों को प्रभावित करता है। वह कानून को जानने वाला, जिद्दी तथा गुप्त-युक्ति सम्पन्न होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्नः षष्ठभावः राहु

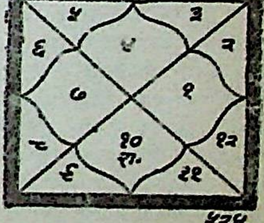


५२३

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को शत्रुपक्ष से कुछ परेशानियाँ तो होती रहती हैं, परन्तु वह भेद-नीति का आश्रय लेकर उनका दमन करता और सफलता पाता है। उसे ननसाल के पक्ष से हानि प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति पाप-पुण्य की चिन्ता नहीं करता। अपितु, अपनी गुप्त-युक्तियों एवं चतुराई पर भरोसा रखकर स्वार्थ-साधन करता है

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्नः सप्तमभावः राहु

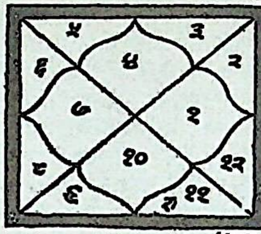


५२४

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में चिन्ताओं, कठिनाइयों तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। उनके निवारणार्थ वह गुप्त युक्तियों से काम लेता है। ऐसे व्यक्ति की इन्द्रिय में विकार होता है। वह अन्दरूनी तौर पर दुःखी रहता है तथा गृहस्थी के सन्बन्ध में कभी-कभी घोर कष्ट भी उठाता है, परन्तु अन्त में सफलता भी पा लेता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: अष्टमभाव: राहु

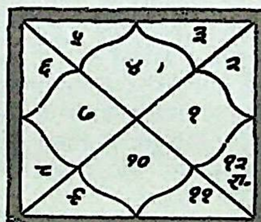


५२८

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के सम्बन्ध में कभी-कभी चिन्ताजनक स्थितियों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की भी हानि उठानी पड़ती है। उसके पेट में किसी प्रकार का विकार रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन का निर्वाह करने के लिए गुप्त युक्तियों से काम लेता है तथा अनेक कठिनाइयों के बाद कुछ सफलता भी पाता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: नवमभाव: राहु

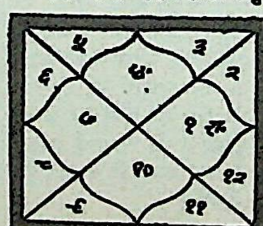


५२९

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती रहती हैं तथा धर्म का भी यथावत् पालन नहीं हो पाता। ऐसे व्यक्ति को कभी-कभी बड़े संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु गुप्त युक्तियों एवं परिश्रम द्वारा कष्टों को सहन करने के उपरान्त वह थोड़ी-बहुत सफलता भी पा लेता है। कभी-कभी उसे आकस्मिक लाभ का योग भी प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कर्क लग्न: दशमभाव: राहु

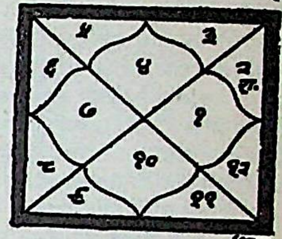


५३०

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में कमी, हानि, कष्ट एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है। अनेक कष्टों को भोगने तथा अनेक बार निराश और विफल होने के बाद अन्त में वह व्यवसाय के क्षेत्र में थोड़ी बहुत उन्नति पाता है तथा अपनी मान-प्रतिष्ठा की रक्षा करता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, बहादुर तथा धैर्यवान् होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कर्कलग्न: एकादशभाव: राहु

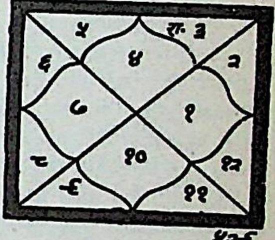


५२८

ग्यारहवें लाभ के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक अपनी अत्यन्त चतुराई के द्वारा धन का यथेष्ट उपार्जन करता है, यद्यपि उसे कभी-कभी सामान्य कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। परन्तु कभी-कभी उसे लाभ के क्षेत्र में गहरे संकटों का सामना भी करना पड़ता है और कभी-कभी उसे आकस्मिक रूप से अधिक लाभ हो जाने की प्रसन्नता भी प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कर्कलग्न: द्वादशभाव: राहु



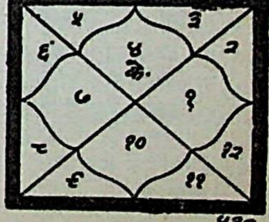
५२९

बारहवें व्यय भाव में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि में स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक का खर्च अत्यधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से गुप्त युक्तियों के बल पर उसे लाभ एवं शक्ति की प्राप्ति भी होती है। ऐसा व्यक्ति बाहरी स्थान में विशेष सम्मान एवं प्रभाव प्राप्त करता है। वह अपनी गुप्त कमजोरियों को कभी प्रकट नहीं होने देता तथा बड़ी बुद्धिमानी एवं चतुराई से उन्नति एवं सफलता प्राप्त करता चला जाता है।

'कर्क' लग्न में 'केतु' का फल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: प्रथमभाव: केतु

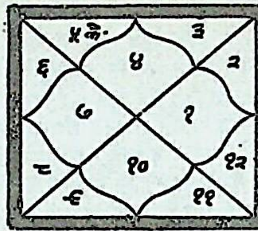


५३०

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शरीर पर किसी गहरी चोट अथवा घाव का निशान बनता है तथा शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में भी कमी रहती है। चेचक की बीमारी होने की भी सम्भावना रहती है। मानसिक शक्ति दुर्बल होती है तथा कभी-कभी मृत्यु-तुल्य कष्ट एवं रोग का शिकार भी बनना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी प्रसिद्धि एवं प्रभाव-वृद्धि के लिए गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: द्वितीयभाव: केतु

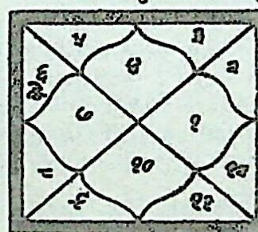


२३१

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के धन के कोप में अत्यधिक हानि होती है तथा उसे आर्थिक कमी के कारण बड़ी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है इसी प्रकार उसे अपने कुटुम्ब से भी दुख: और क्लेश प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति ऋण लेकर अपना काम चलाता है तथा अत्यधिक परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों द्वारा अपने प्रभाव को बनाये रखने का प्रयत्न करता है। बहुत बाद में उसे थोड़ी-बहुत सफलता भी मिल जाती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये

कर्कलग्न: तृतीयभाव: केतु



२३२

तीसरे पराक्रम एवं भाई-बहिन के स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है। गुप्त युक्तियों, विवेक तथा कठिन परिश्रम के द्वारा उसे सफलता भी मिलती है। परन्तु ऐसा व्यक्ति उद्दण्ड प्रकृति एवं उग्र स्वभाव का होता है। उसमें शालीनता नहीं पाई जाती। उसे भाई-बहिन का सुख भी कुछ कठिनाइयों के बाद प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कर्कलग्न: चतुर्थभाव: केतु

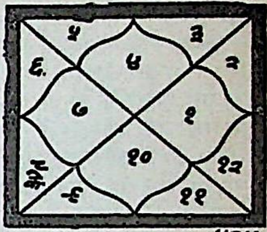


२३३

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी तथा परेशानी बनी रहती है। इसके अतिरिक्त मातृ-भूमि का वियोग सहन करके बार-बार स्थान परिवर्तन करना और दूसरी जगह में जाकर रहना पड़ता है। उसे घरेलू सुखों की प्राप्ति के लिये भी विशेष परिश्रम करना पड़ता है। परन्तु कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना होता है। अन्त में उसे सामान्य-सुख भी मिलता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचमभाव' में केतु की स्थिति हो, उसे केतु का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: पंचमभाव: केतु

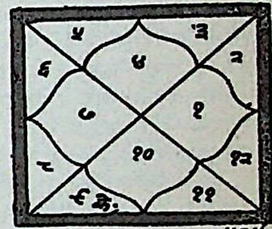


५३४

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। परन्तु ऐसा जातक गुप्त युक्तियों वाला, चतुर-चालाक तथा बातूनी होता है। वह अपनी अयोग्यता को छिपाकर दूसरे लोगों पर प्रभाव डालने में सफल होता है, परन्तु शीलवान् तथा सन्तोषी नहीं होता।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: षष्ठभाव: केतु

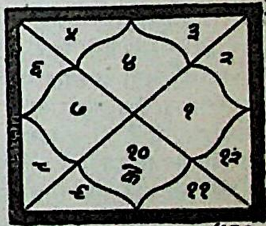


५३५

छठे शत्रु एवं रोग स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर बड़ी सफलता एवं विजय प्राप्त करता है तथा कठिन-से-कठिन संकट के समय में भी अपने धैर्य तथा साहस को नहीं छोड़ता। वह गुप्त युक्तियों एवं कठोर परिश्रम के बल पर अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। उसका शरीर स्वस्थ रहता है, परन्तु उसमें शील तथा दया आदि के गुण नहीं पाये जाते।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: सप्तमभाव: केतु



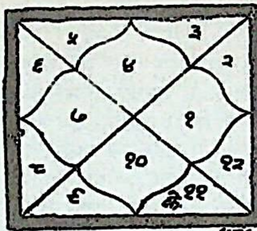
५३६

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष में हानि एवं कष्ट का सामना करना पड़ता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का अनुभव होता है। ऐसे व्यक्ति की मूत्रेन्द्रिय में विकार होता है। उसकी विषयेच्छा बढ़ी रहती है। वह गुप्त धैर्य से काम लेकर कठिनाइयों पर विजय पाता है। ऐसे लोग स्वभाव के जिद्दी, हठी, भोगी तथा कठिन परिश्रमी होते हैं।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: अष्टमभाव: केतु

आठवें मृत्यु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के पक्ष में अनेक बार मृत्यु-तुल्य संकटों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की भी हानि होती है। ऐसे व्यक्ति के पेट में विकार रहता है। वह गुप्त चिन्ताओं तथा परेशानियों से ग्रस्त बना रहता है। धन का संकट उसे सदैव रहता है, परन्तु उस पर विजय पाने के लिए वह निरन्तर गुप्त रूप से प्रयत्न करता रहता है।

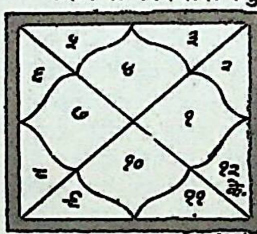


२३७

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: नवमभाव: केतु

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपने भाग्य की उन्नति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा कभी-कभी उसे बहुत बड़े संकटों एवं असफलताओं का शिकार भी बनना होता है। ऐसे व्यक्ति की भाग्योन्नति बहुत धीरे-धीरे तथा संघर्षों से मुकाबिल करते हुए होती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह-स्थिति वाले लोग गुप्त रूप से चिन्तित बने रहने वाले, परेशानियों में उलझे रहने वाले, ईश्वर की शक्ति में कम विश्वास करने वाले तथा मन्द भाग्य वाले होते हैं।

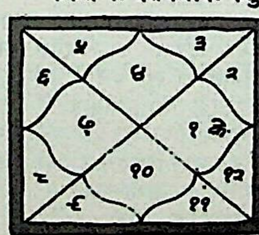


२३८

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: दशमभाव: केतु

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता के स्थान में हानि तथा कष्ट का सामना करना पड़ता है। उसे राज्य के क्षेत्र में भी कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं तथा व्यवसाय की उन्नति के लिए घोर परिश्रम करना पड़ता है। कभी-कभी उसके यश तथा प्रतिष्ठा को बड़ा धक्का पहुँचता है, परन्तु वह अपनी गुप्त-युक्ति, एवं परिश्रम के द्वारा प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

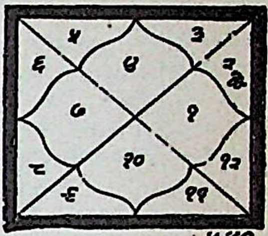


२३९

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न के हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्कलग्न: एकादशभाव: केतु

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए कठोर परिश्रम करता है और गुप्त युक्ति, चतुराई एवं परिश्रम के द्वारा उसकी आय में वृद्धि भी होती है। परन्तु कभी-कभी उसे आमदनी के क्षेत्र में परेशानियों एवं संकटों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी, हिम्मतवर, परिश्रमी तथा पुरुषार्थी होता है।

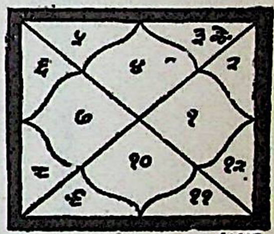


५८०

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए —

कर्कलग्न: द्वादशभाव: केतु

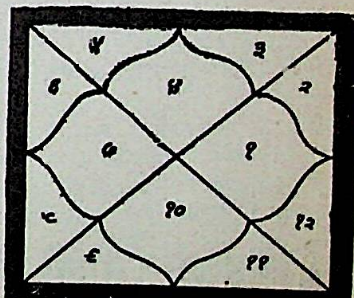
बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक को खर्च के सम्बन्ध में बड़ी कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी कष्ट प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपने खर्च को चलाने के लिए कठिन परिश्रम करता है, परन्तु उसकी सम्यक् पूर्ति नहीं हो पाती। वह गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला, परिश्रमी तथा आन्तरिक रूप से दुःख भोगने वाला भी होता है।



५८१

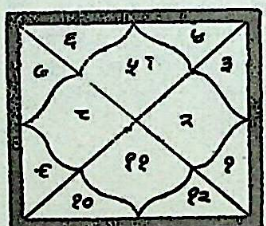
'कर्क' लग्न का

फलादेश समाप्त



५८२

सिंह लग्न



५४३

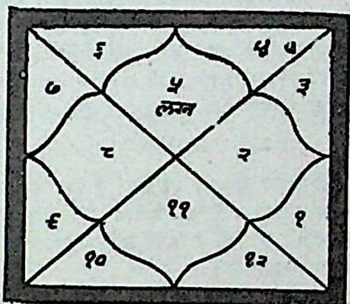
[सिंह-लग्न वाली कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग फलादेश]

'सिंह' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'सिंह' लग्न में जन्म लेने वाले जातक का शरीर पाण्डुवर्ण होता है। वह पित्ततथा वायु विकार से पीड़ित रहने वाला, मांसभोजी, रसीली वस्तुओं को पसन्द करने वाला, कृशोदर, अल्पभोजी, अल्प पुत्रवान, अत्यन्त पराक्रमी, अहंकारी, भोगी, तीक्ष्ण-बुद्धि, ढीठ, वीर, भ्रमणशील, रजोगुणी, क्रोधी, बड़े हाथ-पाँव तथा चौड़ी छाती वाला, उग्रस्वभाव का, वेदान्त विद्या का ज्ञाता, घोड़े की सवारी से प्रेम रखने वाला, अस्त्र-शस्त्र चलाने में निपुण, तेज स्वभाव वाला, उदार तथा साधु-सन्तों की सेवा करने वाला होता है।

'सिंह' लग्न में जन्म लेने वाला जातक प्रारम्भिक अवस्था में सुखी, मध्यमावस्था में दुःखी तथा अन्तिम अवस्था में पूर्ण सुखी होता है। उसका भाग्योदय २१ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है।

'सिंह' लग्न



२७४

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव मुख्यतः दो प्रकार से पड़ता है—

(१) ग्रहों की जन्मकालीन स्थिति के अनुसार।
(२) ग्रहों के दैनिक गति-गोचर के अनुसार।

जातक की जन्मकालीन ग्रह-स्थिति जन्म-कुण्डली में दी गई होती है। उसमें जो ग्रह जिस भाव में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित प्रभाव निरन्तर स्थायी रूप से डालता रहता है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसकी जानकारी पंचाङ्ग द्वारा की जा सकती है। ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के सम्बन्ध में या तो किसी ज्योतिषी से पूछ लेना चाहिए अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिए। इस सम्बन्ध में पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर अस्थायी रूप से अपना प्रभाव डालते हैं।

उदाहरण के लिए यदि किसी जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य 'सिंह' राशि पर 'प्रथम भाव' म बैठा है, तो उसका स्थायी प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण कुण्डली संख्या '२७४' के अनुसार पड़ता रहेगा, परन्तु यदि दैनिक ग्रह-गोचर में कुण्डली देखते समय सूर्य 'कन्या' राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा होगा तो उस स्थिति में वह उदाहरण-

कुण्डली संख्या ६५७ के अनुसार उतनी अवधि तक जातक के जीवन पर अपना अस्थायी प्रभाव अवश्य डालेगा, जब तक कि वह 'कन्या' राशि से हटकर 'तुला' राशि में नहीं चला जाता। 'तुला' राशि में पहुँच कर वह 'तुला' राशि के अनुरूप अपना प्रभाव डालना आरम्भ कर देगा। अतः जिस जातक की जन्म-कुण्डली में 'सूर्य' 'सिंह' राशि के प्रथमभाव में बैठा हो, उसे उदाहरण-कुण्डली ५४५ में वर्णित फलादेश देखने के पश्चात, यदि उन दिनों ग्रह-गोचर में सूर्य कन्या राशि के द्वितीयभाव में बैठा हो तो उदाहरण-कुण्डली संख्या ६५७ का फलादेश भी देखना चाहिए तथा इन दोनों फलादेशों के समन्वय-स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को अपने वर्तमान समय पर प्रभावकारी समझना चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विषय में जान लेना चाहिए।

'सिंह' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों की जन्म-कुण्डली के विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदाहरण कुण्डली-संख्या ५४५ से ६५२ तक में किया गया है। पंचाङ्ग की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार 'सिंह' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों को किन-किन उदाहरण कुण्डलियों द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना चाहिए, इसका विस्तृत वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है, अतः उनके अनुसार ग्रहों की तात्कालिक स्थिति के सामायिक प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। तदुपरान्त दोनों फलादेशों के समन्वय-स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिए।

इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति जन्म-कुण्डली का ठीक-ठीक फलादेश सहज में ही ज्ञात कर सकता है।

टिप्पणी—(१) पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश से ऊपर अथवा ३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह सूर्य से अस्त होता है, वह भी जातक के ऊपर अपना प्रभाव या तो बहुत कम डालता है या फिर पूर्णतः प्रभावहीन रहता है।

(२) स्थायी जन्म-कुण्डली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा अपनी कुण्डली में लिखवा लेने चाहिए, ताकि उनके अंशों के बारे में बार-बार जानकारी प्राप्त करने के झंझट से बचा जा सके। तात्कालिक गोचर के ग्रहों के अंशों की जानकारी पंचांग द्वारा अथवा किसी ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(३) स्थायी जन्म-कुण्डली अथवा तात्कालिक ग्रह-गति-कुण्डली में यदि किसी भाव में एक से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन स्थानों पर उनकी दृष्टियाँ पड़ती हैं, जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता है। इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में 'ग्रहों की युति का प्रभाव' शीर्षक अध्याय के अन्तर्गत विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन किया गया है, अतः इस विषय की जानकारी वहाँ से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(४) 'विंशोत्तरी दशा, के सिद्धान्तानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० वर्ष की मानी जाती है। इस आयु-अवधि में जातक नव ग्रहों की दशाओं का भोग कर लेता है। विभिन्न ग्रहों का दशा काल भिन्न-भिन्न होता है। परन्तु अधिकांश व्यक्ति इतनी लम्बी आयु तक जीवित नहीं रह पाते, अतः वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं का भोग कर पाते हैं। जातक के जीवन के जिस काल में जिस ग्रह की दशा —जिसे 'महादशा' कहा जाता है। —चल रही होती है, जन्म-कालीन ग्रह-स्थिति के अनुसार उसके जीवन-काल की उतनी अवधि उस ग्रह-विशेष के प्रभाव से विशेष रूप से प्रभावित रहती है। जातक का जन्म किस ग्रह की महादशा में हुआ है और उसके जीवन में किस अवधि तक किस ग्रह

की महादशा चलेगी और वह महादशा जातक के ऊपर अपना क्या विशेष प्रभाव डालेगी—इन सब बातों का उल्लेख भी तीसरे प्रकरण में किया गया है।

इस प्रकार (१) जन्म-कुण्डली, (२) तात्कालिक ग्रहगोचर-कुण्डली एवं (३) ग्रहों की महादशा —इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है, अतः इन तीनों के समन्वय स्वरूप फलादेश का ठीक-ठीक निर्णय करके अपने भूत, वर्तमान तथा भविष्यत्कालीन जीवन के विषय में सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिये।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'सूर्य' का फलादेश

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५४५ से ५५६ तक में देखना चाहिये।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह- गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये—

(१) जिस महीने में 'सूर्य' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५४५ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५४६ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस महीने में 'सूर्य 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५४७ के अनुसार समझना चाहिये।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५४८ के अनुसार समझना चाहिये।

(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५४९ के अनुसार समझना चाहिये।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५५० के अनुसार समझना चाहिये।

(७) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५५१ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५५२ के अनुसार समझना चाहिये।

(९) जिस महीने में 'सूर्य' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५५३ के अनुसार समझना चाहिये।

(१०) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५५४ के अनुसार समझना चाहिये।

(११) जिस महीने 'सूर्य' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५५५ के अनुसार समझना चाहिये।

(१२) जिस महीने 'सूर्य' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५५६ के अनुसार समझना चाहिये।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म- कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५५७ में ५६८ तक में देखना चाहिये।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थाई फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये—

(१) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'सिंह' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५५७ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कन्या' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५५८ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'तुला' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५५९ के अनुसार समझना चाहिये।

(४) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५६० के अनुसार समझना चाहिये।

(५) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'धनु' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५६१ के अनुसार समझना चाहिये।

(६) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मकर' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५६२ के अनुसार समझना चाहिये।

(७) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५६३ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिम दिन 'चन्द्रमा' 'मीन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुडण्ली संख्या ५६४ के अनुसार समझना चाहिये।

(९) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मेष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५६५ के अनुसार समझना चाहिये।

(१०) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'वृष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५६६ के अनुसार समझना चाहिये।

(११) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मिथुन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५६७ के अनुसार समझना चाहिये।

(१२) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५६८ के अनुसार समझना चाहिये।

'सिंह' (५) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'मंगल' का फलादेश

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश उदाहरण- कुण्डली संख्या ५६९ से ५८० तक में देखना चाहिये।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थाई-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये—

(१) जिस महीने में 'मंगल' 'सिंह' का राशि पर हो, उस महीने फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५६९ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस महीने में 'मंगल' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५७० के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस महीने में 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुडण्ली संख्या ५७१ के अनुसार समझना चाहिये।

(४) जिस महीने में 'मंगल' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५७२ के अनुसार समझना चाहिये।

(५) जिस महीने में 'मंगल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५७३ के अनुसार समझना चाहिये।

(६) जिस महीने में 'मंगल' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५७४ के अनुसार समझना चाहिये।

(७) जिस महीने में 'मंगल' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५७५ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस महीने में 'मंगल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५७६ के अनुसार समझना चाहिये।

(९) जिस महीने में 'मंगल' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५७७ के अनुसार समझना चाहिये।

(१०) जिस महीने में 'मंगल' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५७८ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'मंगल' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५७९ के अनुसार समझना चाहिये।

(१२) जिस महीने में 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५८० के अनुसार समझना चाहिये।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'बुध' का फलादेश

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थाई फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५८१ से ५९२ तक देखना चाहिये।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को दैनिक-ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थाई फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये —

(१) जिस महीने में 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५८१ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस महीने में 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५८२ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस महीने में 'बुध' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फ़लादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५८३ के अनुसार समझना चाहिये ।

(४) जिस महीने में 'बुध' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५८४ के अनुसार समझना चाहिये ।

(५) जिस महीने में 'बुध' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५८५ के अनुसार समझना चाहिये ।

(६) जिस महीने में 'बुध' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५८६ के अनुसार समझना चाहिये ।

(७) जिस महीने में 'बुध' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५८७ के अनुसार समझना चाहिये ।

(८) जिस महीने में 'बुध' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५८८ के अनुसार समझना चाहिये ।

(९) जिस महीने में 'बुध' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५८९ के अनुसार समझना चाहिये ।

(१०) जिस में 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५९० के अनुसार समझना चाहिये ।

(११) जिस महीने में 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५९१ के अनुसार समझना चाहिये ।

(१२) जिस महीने में 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५९२ के अनुसार समझना चाहिये ।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'गुरु' का फलादेश

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित गुरु' का स्थाई फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५९३ से ६०४ तक में देखना चाहिये ।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थाई फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये—

(१) जिस वर्ष में 'गुरु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५९३ के अनुसार समझना चाहिये ।

(२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५९४ के अनुसार समझना चाहिये ।

(३) जिस वर्ष में 'गुरु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५९५ के अनुसार समझना चाहिये ।

(४) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५९६ के अनुसार समझना चाहिये ।

(५) जिस वर्ष में 'गुरु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५९७ के अनुसार समझना चाहिये ।

(६) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५९८ के अनुसार समझना चाहिये।

(७) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५९९ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६०० के अनुसार समझना चाहिये।

(९) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६०१ के अनुसार समझना चाहिये।

(१०) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६०२ के अनुसार समझना चाहिये।

(११) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६०३ के अनुसार समझना चाहिये।

(१२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६०४ के अनुसार समझना चाहिये।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'शुक्र' का फलादेश

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थाई फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६०५ से ६१६ तक में देखना चाहिये।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थाई-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये——

(१) जिस महीने में 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६०५ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस महीने में 'शुक्र' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६०६ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस महीने में 'शुक्र' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६०७ के अनुसार समझना चाहिये।

(४) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६०८ के अनुसार समझना चाहिये।

(५) जिस महीने में 'शुक्र' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६०९ के अनुसार समझना चाहिये।

(६) जिस महीने में 'शुक्र' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६१० के अनुसार समझना चाहिये।

(७) जिस महीने में 'शुक्र' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६११ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस महीने में 'शुक्र' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६१२ के अनुसार समझना चाहिये।

(९) जिस महीने में 'शुक्र' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६१३ के अनुसार समझना चाहिये ।

(१०) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६१४ के अनुसार समझना चाहिये ।

(११) जिस महीने में 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६१५ के अनुसार समझना चाहिये ।

(१२) जिस महीने में 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६१६ के अनुसार समझना चाहिये ।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'शनि' का फलादेश

सिंह(५) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६१७ से ६२८ तक में देखना चाहिये ।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये—

(१) जिस वर्ष में 'शनि' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६१७ के अनुसार समझना चाहिए ।

(२) जिस वर्ष में 'शनि' 'कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६१८ के अनुसार समझना चाहिये ।

(३) जिस वर्ष में 'शनि' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६१९ के अनुसार समझना चाहिये ।

(४) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६२० के अनुसार समझना चाहिये ।

(५) जिस वर्ष में 'शनि' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६२१ के अनुसार समझना चाहिये ।

(६) जिस वर्ष में 'शनि' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६२२ के अनुसार समझना चाहिये ।

(७) जिस वर्ष में 'शनि' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६२३ के अनुसार समझना चाहिये ।

(८) जिस वर्ष में 'शनि' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६२४ के अनुसार समझना चाहिये ।

(९) जिस वर्ष में 'शनि' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६२५ के अनुसार समझना चाहिये ।

(१०) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६२६ के अनुसार समझना चाहिये ।

(११) जिस वर्ष में 'शनि' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६२७ के अनुसार समझना चाहिये ।

(१२) जिस वर्ष में 'शनि' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६२८ के अनुसार समझना चाहिये ।

सिंह (५) लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'राहु' का फलादेश

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थाई फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६२९ से ६४० तक में देखना चाहिये ।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थाई फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये—

(१) जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६२९ के अनुसार समझना चाहिये ।

(२) जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३० के अनुसार समझना चाहिये ।

(३) जिस वर्ष में 'राहु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३१ के अनुसार समझना चाहिये ।

(४) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३२ के अनुसार समझना चाहिये ।

(५) जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३३ के अनुसार समझना चाहिये ।

(६) जिस वर्ष में 'राहु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३४ के अनुसार समझना चाहिये ।

(७) जिस वर्ष में 'राहु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३५ के अनुसार समझना चाहिये ।

(८) जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३६ के अनुसार समझना चाहिये ।

(९) जिस वर्ष में 'राहु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३७ के अनुसार समझना चाहिये ।

(१०) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३८ के अनुसार समझना चाहिये ।

(११) जिस वर्ष में 'राहु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३९ के अनुसार समझना चाहिये ।

(१२) जिस वर्ष में 'राहु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६४० के अनुसार समझना चाहिये ।

सिंह (५) लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'केतु' का फलादेश

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थाई-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६४१ से ६५२ तक में देखना चाहिये।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित केतु' का अस्थाई-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये।

(१) जिस वर्ष में 'केतु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६४१ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस वर्ष में 'केतु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६४२ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस वर्ष में 'केतु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६४३ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६४४ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'केतु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६४५ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'केतु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६४६ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'केतु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६४७ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'केतु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६४८ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'केतु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६४९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलदेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६५० के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'केतु' मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६५१ के अनुसार समझना चाहिए।

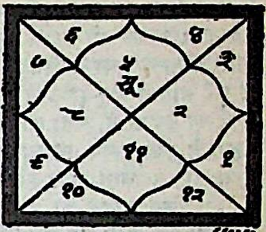
(१२) जिस वर्ष में 'केतु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६५२ के अनुसार समझना चाहिए।

'सिंह' लग्न में 'सूर्य' का फल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो, और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में सूर्य का स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: प्रथमभाव: सूर्य

पहले केन्द्र तथा शरीर-स्थान में अपनी सिंह राशि पर स्थित स्वक्षेत्री सूर्य के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति, आत्मबल, स्वाभिमान, सौन्दर्य, हिम्मत तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। ऐसा जातक लम्बे कद का होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री-पक्ष से असन्तोष रहता है तथा दैनिक खर्च एवं व्यवसाय के मार्ग में भी कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

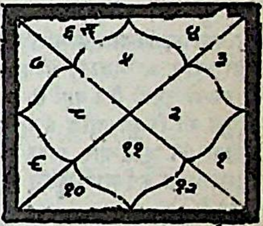


५४५

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: द्वितीयभाव: सूर्य

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब के सुख में वृद्धि होती है, परन्तु यह स्थान बन्धन का भी होने के कारण कुछ परतन्त्रता का सा अनुभव भी होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से गुरु की मीन राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है और वह प्रतिष्ठित व्यक्ति समझा जाता है।

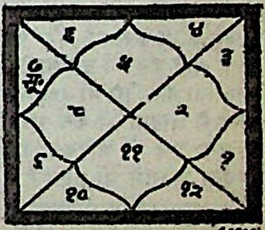


५४६

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: तृतीयभाव: सूर्य

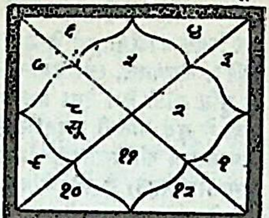
तीसरे सहोदर एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों के सुख में कमी तथा वैमनस्य मिलता है एवं पराक्रम में भी कुछ कमी आती है, परन्तु तृतीय-भाव में बैठा हुआ क्रूर ग्रह अधिक प्रभावशाली होता है, इसलिये जातक बहुत हिम्मत वाला भी बना रहता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्र-दृष्टि से मंगल की मेष राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य में वृद्धि होती है और वह धर्म में भी आस्था रखता है।



५४७

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्नः चतुर्थभावः सूर्यं

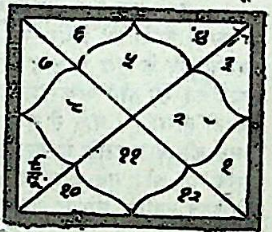


५४८

चौथे केन्द्र, माता, भूमि, मकान एवं सुख के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, मकान आदि का सुख प्राप्त होता है तथा शरीर आनन्दित बना रहता है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रु-दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में दशम-भाव को देखता है, अतः जातक का पिता के साथ वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक प्रयत्न द्वारा कुछ सफलता प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्नः पंचमभावः सूर्यं

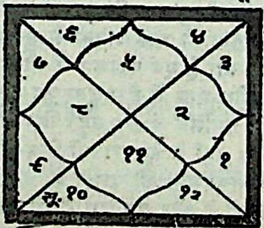


५४९

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या-संतान के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति आत्मज्ञानी भी होता है, परन्तु उसके मस्तिष्क में उग्रता रहती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को बुद्धि-बल द्वारा पर्याप्त लाभ होता है तथा आमदनी के कई मार्ग खुलते हैं। ऐसा जातक अहंकारी भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्नः षष्ठभावः सूर्यं

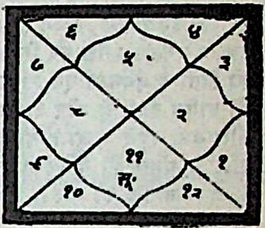


५५०

छठे शत्रु एवं रोग के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है और कठिनाइयों तथा मुसीबतों की चिंता नहीं करता। उसे शारीरिक सौंदर्य में कमी, रोग तथा परतंत्रता का योग भी रहता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्र-दृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च की अधिकता रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: सप्तमभाव: सूर्य

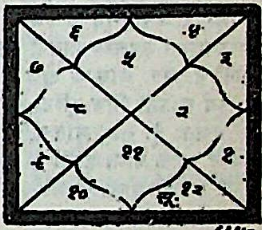


५५१

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से वैमनस्य रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिन परिश्रम के बाद सफलता प्राप्त होती है। परन्तु भोगादि के सम्बन्ध में जातक की आसक्ति रहती है। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपनी ही सिंह राशि में प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक शारीरिक शक्ति, प्रभाव एवं स्वाभिमान सम्पन्न होता है और अपने नाम को ऊँचा उठाने का प्रयत्न करता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: अष्टमभाव: सूर्य



५५२

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ शारीरिक शक्ति एवं कुछ कठिनाइयों के साथ प्राप्त करता है। साथ ही बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे शक्ति मिलती है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्र-दृष्टि से बुध की कन्या राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अत: जातक धन-वृद्धि के लिये कठिन परिश्रम करता है और उसे धन तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा जातक स्वभाव का क्रोधी होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: नवमभाव: सूर्य

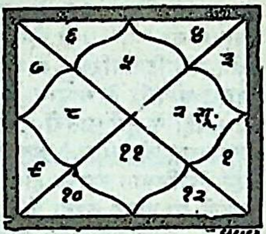


५५३

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक को भाग्य की प्रबल शक्ति प्राप्त होती है तथा धर्म के पक्ष में भी रुचि बनी रहती है। ऐसा जातक ईश्वर-विश्वासी, भाग्यवान् तथा स्थूल शरीर वाला होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं नीच दृष्टि से अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: उसे भाई-बहिन के द्वारा असन्तोष मिलता है और वह पराक्रम के सम्बन्ध में लापरवाह बना रहता है। ऐसा व्यक्ति कभी-कभी छोटे-मोटे काम भी करता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: दशमभाव: सूर्य

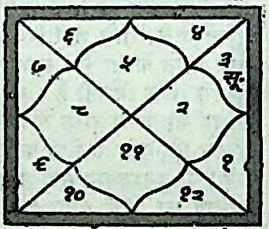


५५४

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता से वैमनस्य एवं राज्य के क्षेत्र से मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है और वह अपनी उन्नति के लिये प्रयत्नशील बना रहने वाला होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्र-दृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: एकादशभाव: सूर्य

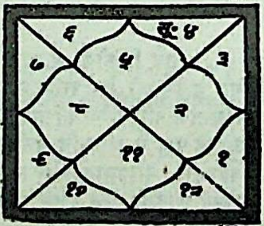


५५५

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को आमदनी के श्रेष्ठ साधन उपलब्ध होते हैं। उसकी शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है, अतः आय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्र-दृष्टि से गुरु की धनु राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को संतान एवं विद्या-बुद्धि की यथेष्ट शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी होता है तथा उसकी बोली में भी कुछ उग्रता बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: द्वादशभाव: सूर्य



५५६

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल बना रहता है। खर्च पर वह अपना प्रभाव रखता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है। ऐसा व्यक्ति भ्रमणशील भी होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रु-दृष्टि से शनि की मकर राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु-पक्ष में प्रभाव रखता है और अनेक प्रकार की कठिनाइयों के बाद उन पर विजय भी पाता है।

'सिंह' लग्न में 'चन्द्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: प्रथमभाव: चन्द्र

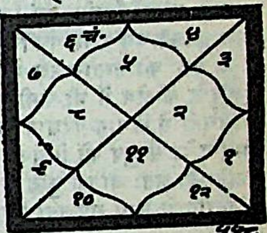


२५७

पहले केन्द्र एवं शरीर-स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित व्ययेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल होता है, वह बाहरी स्थानों का भ्रमण करता और वहाँ से सुन्दर सम्बन्ध स्थापित करता है। ऐसा व्यक्ति अपने खर्च के कारण मन में कुछ चिंतित भी बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं शत्रु-दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः उसे स्त्री-पक्ष से कुछ परेशानी होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों एवं हानि का सामना करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: द्वितीयभाव: चन्द्र

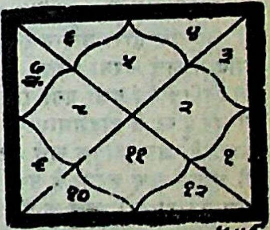


२५८

दूसरे धन तथा कुटुम्ब स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के धन की कुछ हानि होती है, परन्तु उसके ठाट-बाट अमीरों जैसे रहते हैं। साथ ही कुटुम्ब पक्ष से भी कुछ असन्तोष रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र दृष्टि से गुरु की मीन राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु की शक्ति में वृद्धि होती है तथा कुछ कमजोरी के साथ पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति शानदार जीवन बिताता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: तृतीयभाव: चन्द्र

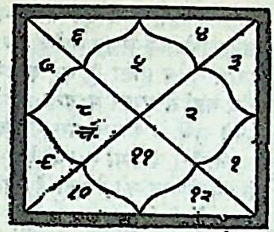


२५९

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने सामान्य-मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित व्ययेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम के क्षेत्र में कुछ कमजोरी बनी रहती है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्र-दृष्टि से मंगल की मेष राशि में नवमभाव को देखता है, अतः कुछ कमी के साथ जातक के भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है तथा खर्च को सुन्दर तरीके से चलाता है और जातक सुखी तथा धनी समझा जाता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: चतुर्थभाव: चन्द्र

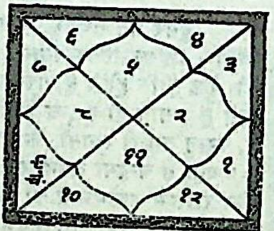


५६०

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता एवं भूमि, मकान आदि के सुख में कमी तथा कष्ट की प्राप्ति होती है तथा घरेलू खर्चों के कारण भी परेशानी का सामना करना पड़ता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं उच्च दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता से सुख मिलता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के द्वारा भी सुख, सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचमभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: पंचमभाव: चन्द्र

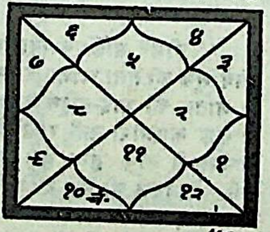


५६१

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या-संतान के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित व्ययेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष में बाधा आती है तथा विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में भी कमी बनी रहती है। साथ ही खर्च की चिन्ता से दिमाग परेशान रहता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्र-दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक बुद्धि के द्वारा लाभ के क्षेत्र में कुछ असन्तोष के साथ सफलता प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: षष्ठभाव: चन्द्र

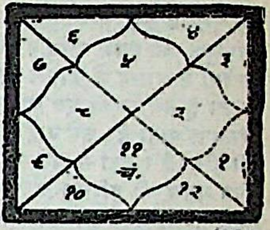


५६२

छठे शत्रु तथा रोग स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित व्ययेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष द्वारा उत्पन्न किये गये झगड़े-टंटे तथा रोग आदि में खर्च करना पड़ता है तथा खर्च की चिंता से मन चिंतित एवं दुखी बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से द्वादशभाव को अपनी ही कर्क राशि में देखता है, अतः जातक खर्च जुटाने की परेशानी रहते हुए भी अधिक खर्च करता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बंध से लाभ उठाता है। खर्च के द्वारा ही उसे शत्रु-पक्ष में भी सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्नः सप्तमभावः चन्द्र

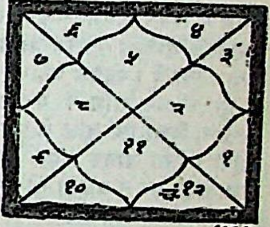


४६३

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शनि की राशि में स्थित व्ययेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में हानि उठानी पड़ती है तथा घरेलू खर्च चलाने में कुछ असन्तोष एवं कठिनाइयों का अनुभव होता है। साथ ही उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है, परन्तु मन में कमजोरी एवं चिन्ता बनी रहती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः शरीर में भी दुर्बलता बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टमभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः अष्टमभावः चन्द्र

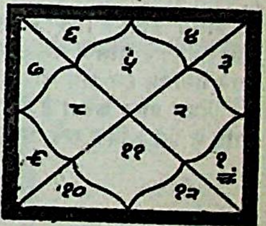


४६४

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित व्ययेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में चिन्ता एवं हानि के योग प्राप्त होते हैं तथा पेट में भी कुछ विकार बना रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे लाभ होता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्र दृष्टि से बुध की कन्या राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः धन के स्थान में भी कुछ हानि होती है तथा कुटुम्ब का सुख भी कम मिल पाता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवमभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः नवमभावः चन्द्र

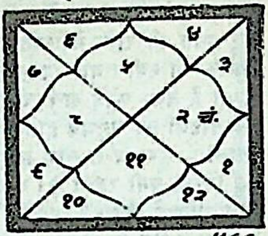


४६५

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित व्ययेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के भाग्य में वृद्धि होती है तथा मनोबल द्वारा खर्च चलाने की शक्ति प्राप्ति होती है। धर्म-पालन के क्षेत्र में भी कुछ त्रुटियाँ बनी रहती हैं। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है। ऐसा जातक प्रसन्न रहते हुए भी मानसिक दुर्बलता का शिकार रहता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: दशमभाव: चन्द्र

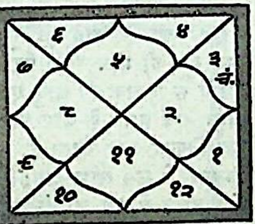


५६६

दसवें केन्द्र, राज्य व पिता के भवन में अपने सामान्य मित्रशुक्र की वृषभ राशि पर स्थित व्ययेश तथा उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक पैतृक सम्पत्ति का अधिक व्यय करता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता पाता है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं नीच दृष्टि से अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अत: माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है और खर्च की अधिकता के कारण मन अशान्त बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: एकादशभाव: चन्द्र

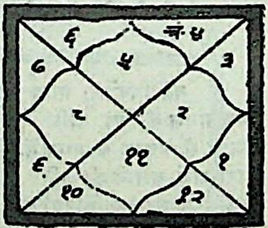


५६७

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि में स्थित व्ययेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त करता है, परन्तु खर्च अधिक बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से गुरु की धनु राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के पक्ष में भी कुछ कमजोरी बनी रहेगी। ऐसा जातक कुछ चिंताओं के साथ अपना खर्च चलाता है, परन्तु बाहरी तौर पर धनी मालूम होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: द्वादशभाव: चन्द्र



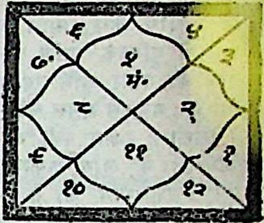
५६८

बारहवें व्ययभाव में अपनी ही कर्क राशि में स्थित व्ययेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे सुख, यश एवं लाभ की प्राप्ति होती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं शत्रु-दृष्टि से शनि की मकर राशि में षष्ठभाव को देखता है, अत: जातक अपने मनोबल एवं खर्च की शक्ति से शत्रुपक्ष पर प्रभाव एवं विजय प्राप्त करता है। परन्तु रोग, झगड़े, मुकद्दमे आदि में उसे अधिक खर्च करना पड़ता है।

'सिंह' लग्न में 'मंगल' का फल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: प्रथमभाव: मंगल

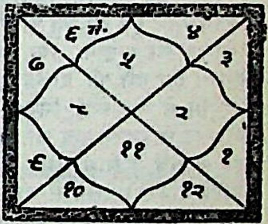


५६९

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शरीर से बड़ा प्रभावशाली होता है। वह भाग्यशाली, धर्मात्मा तथा भाग्य पर भरोसा करने वाला होता है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि के चतुर्थभाव को देखता है, अत: जातक को माता, भूमि, भवन आदि का सुख प्राप्त होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों के साथ सुख मिलता है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: द्वितीयभाव: मंगल

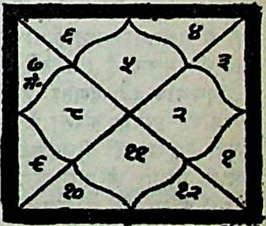


५७०

दूसरे धन व कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है, परन्तु माता एवं भूमि के सुख में कुछ कमी रहेगी। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अत: सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के पक्ष में सफलता मिलेगी। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है तथा आठवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने के कारण भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। ऐसा जातक धनी, सुखी, धर्मात्मा तथा प्रतिष्ठित होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: तृतीयभाव: मंगल

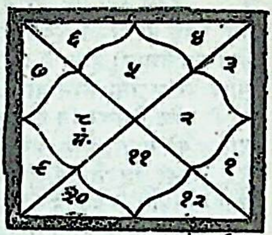


५७१

तीसरे सहोदर एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। साथ ही माता, भूमि एवं मकान का सुख भी मिलता है। यहाँ से मंगल चौथी उच्च दृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अत: शत्रु पक्ष में सफलता, प्रभाव एवं विजय की प्राप्ति होती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है तथा आठवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, सुख, सम्मान एवं उन्नति की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: चतुर्थभाव: मंगल

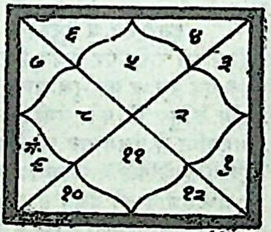


५८२

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख के स्थान में अपनी ही वृश्चिक राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रु दृष्टि से सप्तमभाव को देखता है। अतः स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य द्वारा शक्ति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है तथा आठवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के पक्ष में पर्याप्त सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती रहती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: पंचमभाव: मंगल

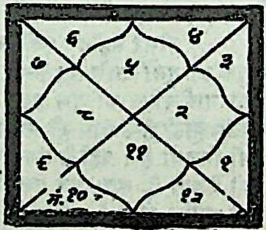


५८३

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के पक्ष में सुख, सफलता एवं यश की प्राप्ति होती है। उसे माता तथा मातृभूमि से भी स्नेह मिलता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में लाभ होता है। सातवीं मित्र दृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ खूब होता है तथा आठवीं नीच-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च के कारण कुछ परेशानी बनी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में भी निर्बलता रहती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: षष्ठभाव: मंगल

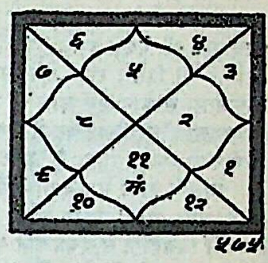


५८४

छठे शत्रु स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में सफलता प्राप्त होती है तथा भाग्य की शक्ति से सुख भी मिलता है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक परिश्रम द्वारा भाग्य की उन्नति करता है। साथ ही धर्म का पालन भी करता है। सातवीं नीचदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च के मामले में कुछ परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कमजोरी आती है एवं आठवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक प्रभाव, सुख एवं सौन्दर्य की वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: सप्तमभाव:मंगल

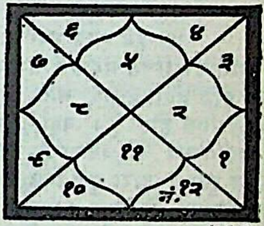


५०५

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को कठिनाइयों के साथ स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखता है अतः कुछ मतभेद के साथ पिता एवं राज्य के द्वारा सुख, सम्मान तथा प्रभाव एवं व्यवसाय में सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक-सौन्दर्य एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन एवं कुटुम्ब का सुख भी मिलता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: अष्टमभाव: मंगल

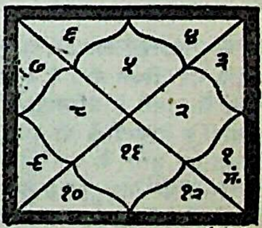


५०६

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है, परन्तु भाग्य एवं धर्म के पक्ष में कमजोरी आती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी खूब होती है। सातवीं मित्र दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख का लाभ होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन का सुख मिलता है एवं पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा जातक यशस्वी भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: नवमभाव: मंगल

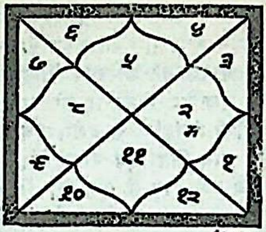


५०७

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म स्थान में अपनी ही मेष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में सफलता मिलती है। यहाँ से मंगल चौथी नीच-दृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च में कमी के कारण कष्ट प्राप्त होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी परेशानी होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन का सुख असन्तोषयुक्त रहता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि, मकान आदि का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः दशमभावः मंगल

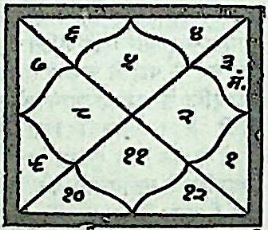


५०८

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति, सफलता, सम्मान एवं लाभ के योग प्राप्त होते हैं। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः शरीर में प्रभाव रहता है और सौभाग्य की वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता तथा भूमि, मकान आदि का सुख मिलता है और आठवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सुख एव सफलता की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति मधुरभाषी, विनम्र तथा सज्जन होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः एकादशभावः मंगल

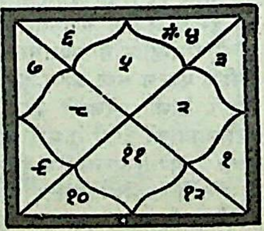


५०९

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है तथा माता, भूमि, मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है अतः धन की प्राप्ति होती है एवं कुटुम्ब द्वारा सुख मिलता है। सातवीं मित्र दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के पक्ष में सफलता मिलती है तथा आठवीं उच्चदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रुओं, रोगों तथा झंझटों पर विजय प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति अत्यन्त प्रभावशाली, शत्रुजयी, धनी तथा ननिहाल का भी सुख प्राप्त करने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्नः द्वादशभावः: मंगल



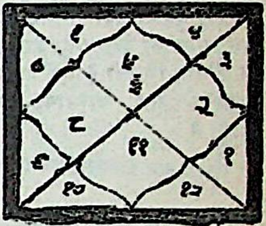
५१०

बारहवें व्ययभाव में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को खर्च के मामले में कठिनाई उठानी पड़ती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी कष्ट प्राप्त होता है। वह भाग्य, माता एवं भूमि के पक्ष से भी हानि उठाता है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुओं पर विजय मिलती है तथा आठवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय द्वारा सुख एवं लाभ होता है। परन्तु ऐसा जातक धर्म के पक्ष में लापरवाह होता है।

'सिंह' लग्न में 'बुध' का फल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः प्रथमभावः बुध

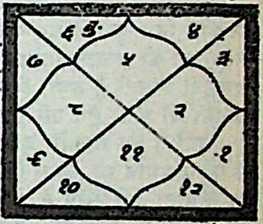


५८१

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक विवेकी, सम्मानित, भोगी तथा धनी होता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से भी अत्यन्त उन्नति, सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक यशस्वी तथा प्रतिष्ठित भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः द्वितीयभावः बुध

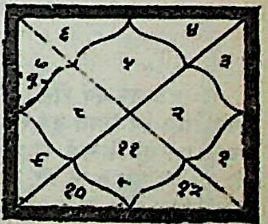


५८२

दूसरे धन, कुटुम्ब के स्थान में अपनी ही कन्या राशि पर स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक भाई-बहिन तथा कुटुम्ब के सुख को यथेष्ट मात्रा में प्राप्त करता है, साथ ही उसके धन और प्रतिष्ठा की वृद्धि भी होती है। यहाँ से बुध सातवीं नीच दृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक की आयु एवं पुरातत्व के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की चिन्ताओं, कठिनाइयों एवं कमियों का शिकार बनना पड़ता है। उसके दैनिक जीवन में कुछ असन्तोष बना रहता है तथा पेट में भी खराबी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः तृतीयभावः बुध

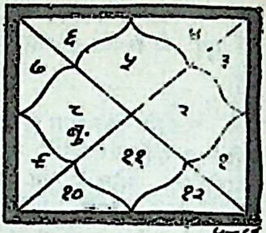


५८३

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। वह पुरुषार्थ द्वारा धन भी कमाता है तथा विवेक द्वारा लाभ के मार्ग में उन्नति करता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की उन्नति होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, हिम्मती, धर्मात्मा, तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

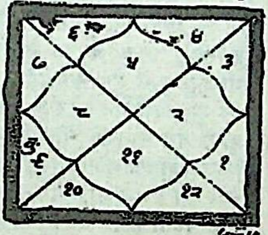
सिंहलग्न: चतुर्थभाव: बुध



चौथे केन्द्र, माता, भूमि, एवं सुख के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, मकान आदि का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है और वह धन का संचय भी करता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता के स्थान से उन्नति मिलती है एवं राज्य तथा व्यवसाय के द्वारा भी सहयोग, सुख, सम्मान, यश तथा लाभ की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

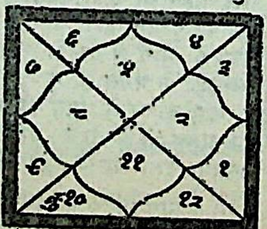
सिंहलग्न: पंचमभाव: बुध



पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है तथा विद्या-बुद्धि के द्वारा धन की उन्नति भी होती है। उसे कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी ही मिथुन राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को अच्छा लाभ प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी, बुद्धिमान, विद्वान्, संततिवान्, सज्जन तथा स्वार्थी होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

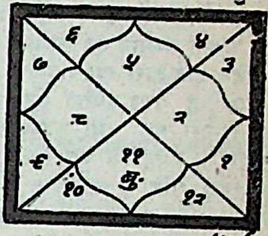
सिंहलग्न: षष्ठभाव: बुध



छठे शत्रु एवं रोग स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में नम्रता एवं धन के खर्च की शक्ति से काम लेता है, परन्तु उसे धन की कुछ हानि भी उठानी पड़ती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्र दृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति एवं लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को कौटुम्बिक सुख भी कम ही मिल पाता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: सप्तमभाव: बुध

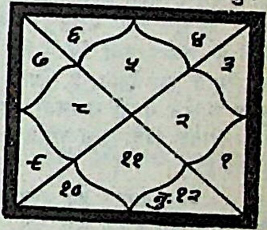


५८७

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से लाभ भी होता है। उसे धन एवं कुटुम्ब का सुख तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति भी होती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक-सौन्दर्य, विवेकशक्ति, आत्मिक बल तथा यश भी प्राप्त होता है। संक्षेप में,ऐसा जातक धनी, सुखी, विवेकी तथा प्रतिष्ठित होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: अष्टमभाव: बुध

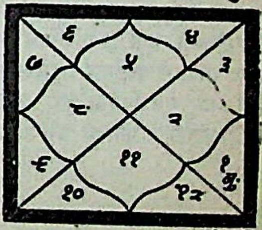


५८८

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक को आयु के पक्ष में कभी-कभी घोर संकटों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की हानि होती है। ऐसा व्यक्ति धन तथा कुटुम्व के सम्बन्ध में भी चिन्तित और परेशान रहता है। यहाँ से बुध सातवीं उच्चदृष्टि से अपनी ही कन्या राशि में द्वितीयभाव को देखता है, इसलिए धन की कमी रहते हुए भी जातक अपने दैनिक खर्चों की पूर्ति करता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: नवमभाव: बुध

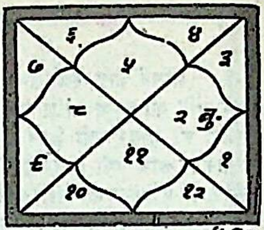


५८९

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है और वह धन, ऐश्वर्य तथा सुखों को प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति ईमानदार, ईश्वर-भक्त तथा सज्जन होता है। उसे कुटुम्ब का सुख भी पर्याप्त मिलता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन का सुख भी मिलता है और उसके पराक्रम में भी वृद्धि होती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक यशस्वी होते हैं तथा निरन्तर उन्नति करते जाते हैं।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः दशमभाव:बुध

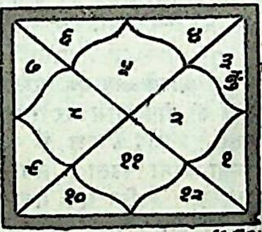


४६०

दसवें केन्द्र, पिता एवं राज्य के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा लाभ प्राप्त होता है तथा राज्य के क्षेत्र में सम्मान एवं सफलता मिलती है । वह अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा व्यवसाय के क्षेत्र में भी बहुत सफल होता है तथा पर्याप्त धन एवं प्रतिष्ठा अर्जित करता है । उसे धन तथा कुटुम्ब का पूर्ण सहयोग एवं सुख रहता है । यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में चतुर्थभाव को देखता है,अतः जातक को माता भूमि, मकान आदि का सुख भी मिलता है ।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः एकादशभावः बुध'

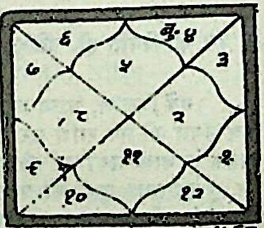


४६१

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपनी ही मिथुन राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपनी विवेक बुद्धि द्वारा यथेष्ट लाभ अर्जित करता है तथा धन की वृद्धि के साथ ही सुख तथा कीर्ति की वृद्धि भी होती रहती है । यहाँ से बुध सातवीं मित्र-दृष्टि से गुरु की धनु राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः उसे सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है । संक्षेप में, ऐसा जातक विद्वान्, सन्ततिवान्, धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है ।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः द्वादशभावः बुध



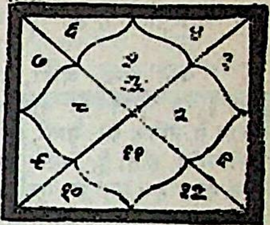
४६२

बारहवें व्ययभाव में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण उसे कष्ट का अनुभव होता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ लाभ भी होता है। ऐसे जातक के कौटुम्बिक सुख में कमी बनी रहती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्र-दृष्टि से शनि की मकर राशि से षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में खर्च, धन एवं विवेक द्वारा अपना काम निकालताहै, परन्तु झगड़े-झंझटों में फँसकर उसे हानि भी उठानी पड़ती है।

'सिंह' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः प्रथमभावः गुरु

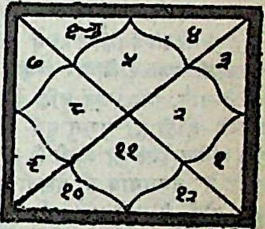


५६३

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित अष्टमेश गुरु के प्रभाव से जातक को शारीरिक-सौन्दर्य, प्रभाव तथा दीर्घायु प्राप्त होती है। यहाँ से गुरु पाँचवी दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखता है, अतः विद्या, बुद्धि, सन्तान के पक्ष में शक्ति, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति भी होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के पक्ष में कुछ असन्तोष रहता है तथा नवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है तथा पुरातत्त्व का भी कुछ लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अमीरी ढंग का जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः द्वितीयभावः गुरु

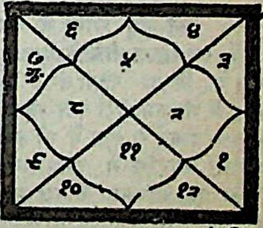


५६४

दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को धन एवं कौटुम्बिक सुख की प्राप्ति होती है, परन्तु सन्तान पक्ष से कुछ कष्ट होता है। यहाँ से गुरु पांचवीं नीच-दृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः शत्रु पक्ष से परेशानी तथा ननसाल से हानि का योग बनता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता से मतभेद रहता है तथा राजकीय सम्पर्कों से असन्तोष मिलता है। ऐसा व्यक्ति अपने सम्मान की वृद्धि के लिये प्रयत्न करता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः तृतीयभावः गुरु

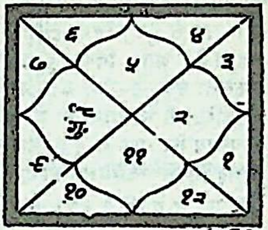


५६५

तीसरे भाई एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का भाई-बहिनों से मतभेद रहता है तथा पराक्रम की शक्ति प्राप्त होती है। उसे कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान का सुख मिलता है तथा आयु की वृद्धि होती है। यहाँ से गुरु पांचवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से वृद्धि-योग द्वारा भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण लाभ की शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा जातक प्रत्येक क्षेत्र में साहस से काम लेता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: चतुर्थभाव: गुरु

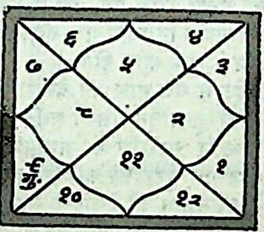


५९६

चौथे केन्द्र, माता, भूमि तथा सुख के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा मकान के सुख में कमी प्राप्त होती है, परन्तु सन्तान एवं विद्या के पक्ष से लाभ होता है। यहाँ से गुरु के पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य के क्षेत्र से भी पूर्ण लाभ नहीं होता एवं नवीं उच्चदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक होता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ एवं सुख की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: पंचमभाव: गुरु

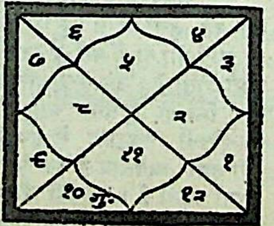


५९७

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि-सन्तान के भवन में अपनी धनु राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के पक्ष में सुख एवं सफलता प्राप्ति होती है, परन्तु गुरु के अष्टमेश होने के कारण कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखता है अतः जातक के भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म की भी उन्नति रहती है। साथ ही पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ अच्छा होता है तथा नवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सुख, मनोबल, प्रभाव एवं स्वाभिमान की प्राप्ति होती है, परन्तु गुरु के अष्टमेश होने के कारण सुख-दुःख दोनों का ही अनुभव होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: षष्ठभाव: गुरु

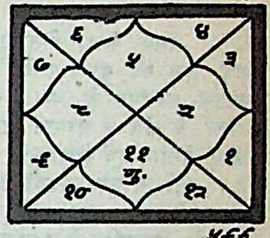


५९८

छठे शत्रु स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष से चिन्ता रहेगी तथा सन्तान एवं विद्या बुद्धि के क्षेत्र में भी कमजोरी बनी रहेगी। पुरातत्त्व की हानि तथा दैनिक जीवन के सुख में भी कमी आती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में भी थोड़ी सफलता मिलती है। पिता से वैमनस्य भी रहता है। सातवीं उच्च-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से व्यय अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों से अच्छी शक्ति मिलती है। नवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन एवं कुटुम्ब की सामान्य वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः सप्तमभावः गुरु

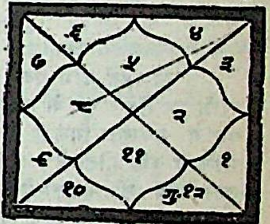


४९९

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री के वैमनस्य तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ परेशानी का अनुभव होता है। साथ ही विद्या तथा सन्तान पक्ष से सामान्य शक्ति प्राप्त होती है। आयु की वृद्धि तथा पुरातत्त्व का साधारण लाभ होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः लाभ अच्छा होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम-भाव को देखने से शरीर में मान, प्रभाव एवं सौन्दर्य की प्राप्ति होती है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण भाई-बहिनों से वैमनस्य रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि के लिये जातक प्रयत्नशील बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः अष्टमभावः गुरु

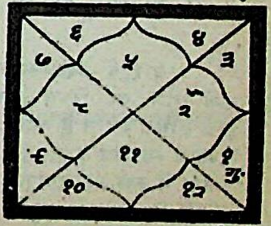


५००

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपनी राशि मीन में स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आयु एवं पुरातत्त्व में वृद्धि होती है। अपने दैनिक जीवन में वह प्रभावशाली रहता है, परन्तु सन्तान पक्ष से कष्ट पाता है और विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कुछ कमी रहती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं उच्चदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध लाभदायक रहता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से जातक धन-वृद्धि के लिये प्रयत्न-शील बना रहता है तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख प्राप्त करता है एवं नवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता तथा भूमि, मकान आदि के सुख में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः नवमभावः गुरु

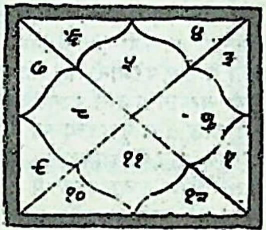


५०१

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक अपनी बुद्धि के द्वारा भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति भी मिलती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से प्रथम-भाव को देखता है, अतः शरीर में प्रभाव, मनोबल एवं सुख की प्राप्ति होती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई बहिनों का सम्बन्ध असन्तोषजनक रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने से सन्तान एवं विद्या-बुद्धि की यथेष्ट उपलब्धि होती है, परन्तु गुरु के अष्टमेश होने के कारण प्रत्येक क्षेत्र में कुछ कमी का अनुभव भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः दशमभावः गुरु

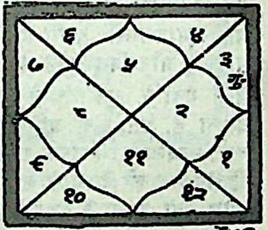


६०७

दसवें केन्द्र, पिता एवं राज्य के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता के पक्ष से कुछ हानि मिलती है, परन्तु राज्य के क्षेत्र में सम्मान प्राप्त होता है। वह पुरातत्त्व, आयु, सन्तान एवं विद्या-बुद्धि की शक्ति भी अर्जित करता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः धन एवं कुटुम्ब का सुख मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान का सामान्य सुख उपलब्ध होता है। नवीं नीचदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष से कुछ परेशानी होती है तथा झगड़े-टंटों के कारण चिन्ता बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः एकादशभावः गुरु



६०८

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को आमदनी के पक्ष में सफलता मिलती है तथा आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः भाई-बहिन से मतभेद रहता है तथा पुरुषार्थ की वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में पंचमभाव को देखने के कारण सन्तान, विद्या एवं बुद्धि का लाभ मिलता है, परन्तु ग्रह के अष्टमेश होने के कारण कुछ परेशानी रहती है। नवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक रोजगार के क्षेत्र में कुछ वैमनस्य तथा परेशानियाँ बनी रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः द्वादशभावः गुरु



६०९

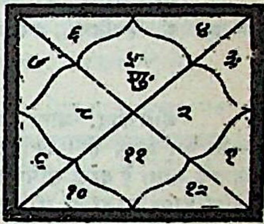
बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक खर्च अधिक करता है तथा बाहरी स्थानों से लाभदायक सम्बन्ध स्थापित करता है। उसे विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में कुछ असन्तोषपूर्ण शक्ति मिलती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि, मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। सातवीं नीचदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष से परेशानी होती है तथा नवीं दृष्टि से स्वराशि में

अष्टमभाव को देखने से आयु की विशेष शक्ति प्राप्त होती है तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है।

'सिंह' लग्न में 'शुक्र' का फल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न प्रथमभावः शुक्र

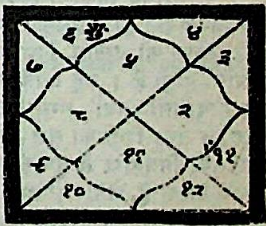


६०५

पहले केन्द्र, एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव के जातक को शारीरिक-सौन्दर्य, शृङ्गार, मान एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है, तथा भाई-बहिन एवं पिता के साथ कुछ मत-भेद रहते हुए भी सुख प्राप्त होता है। ऐसा जातक अपनी उन्नति के लिये बहुत परिश्रम करता है तथा चातुर्य का सहारा लेता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को शनि की कुम्भ राशि में देखता है, अतः जातक को स्त्री-पक्ष से सफलता, शक्ति तथा प्रतिष्ठा मिलती है एवं दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ एवं सुख की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्नः द्वितीयभावः शुक्र

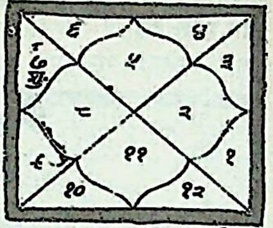


६०६

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के भवन में बुध की कन्या राशि में स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक की धन-संचय की शक्ति में कमी आती है तथा कुटुम्ब का सुख भी अल्प मात्रा में प्राप्त होता है। साथ ही पराक्रम, व्यवसाय, पिता एवं राज्य के क्षेत्र में भी कमी बनी रहती है। यहाँ से शुक्र सातवीं उच्चदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ मिलता है। ऐसा व्यक्ति अपना जीवन बड़े ठाठ-बाट से बिताता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः तृतीयभावः शुक्र

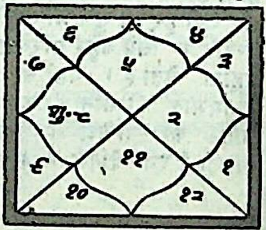


६०७

तीसरे सहोदर एवं पराक्रम के भवन में अपनी ही तुला राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है। साथ ही पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा भी लाभ मिलता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की मेष राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक पुरुषार्थ द्वारा अपने भाग्य तथा धर्म की वृद्धि करता है। वह बहुत बड़े व्यवसाय का संचालन करता है तथा बड़ा हिम्मती, परिश्रमी, चतुर तथा योग्य होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः चतुर्थभावः शुक्र

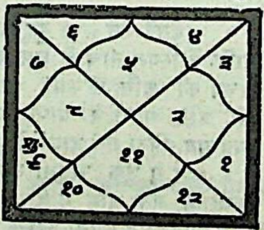


६०८

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख के स्थान में अपने शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक माता के द्वारा सामान्य मतभेद के साथ सुख एव शक्ति प्राप्त करता है और उसे भूमि, भवन आदि का लाभ भी होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी वृष राशि में दशमभाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से सुख, धन, सफलता, सहयोग एवं सम्मान का लाभ होता है। ऐसे जातक को भाई-बहिन का सुख भी मिलता है तथा उसका रहन-सहन रईसी होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः पंचमभावः शुक्र

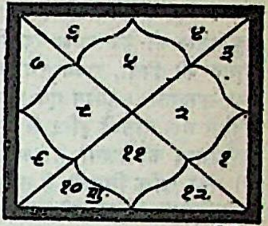


६०९

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के पक्ष में सफलता प्राप्त होती है। वह अपनी योग्यता एवं चातुर्य के द्वारा प्रभावशाली तथा सम्मानित होता है और उसे भाई-बहिन तथा पिता का सुख भी मिलता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः परिश्रम द्वारा उसे लाभ भी खूब होता है। साथ ही राज्य के पक्ष में भी उसे सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति चतुर, राजनीतिज्ञ, यशस्वी, धनी तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: षष्ठभाव: शुक्र

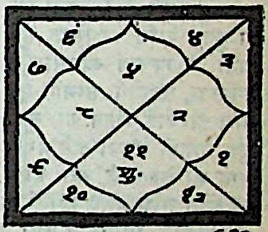


६१०

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक अत्यन्त चतुर तथा प्रभावशाली होता है तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। उसका पिता के साथ कुछ मतभेद रहता है तथा राज्य के क्षेत्र में परिश्रम द्वारा उन्नति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रु-दृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख मिलता है। ऐसा जातक गुप्त-युक्तियों के बल पर सफलता पाता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: सप्तमभाव: शुक्र

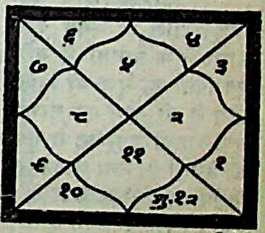


६११

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त करता है और उसे भाई-बहिन एवं पिता का सुख भी मिलता है। वह गृहस्थी के कार्यों का कुशलतापूर्वक संचालन करता है तथा यशस्वी होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रु दृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक को शारीरिक शक्ति, प्रभाव, हिम्मत, पुरुषार्थ तथा मनोबल की प्राप्ति होती है। वह हुकूमत करने वाला न्यायी, हिम्मती तथा बहादुर होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: अष्टमभाव: शुक्र



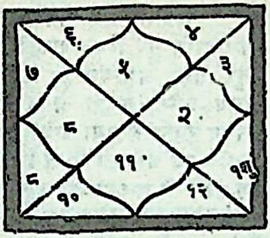
६१२

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ मिलता है। भाई-बहिन तथा पिता के सुख में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है तथा दैनिक जीवन में बड़ा प्रभाव बना रहता है। उसे राज्य के पक्ष से भी सफलता एवं शक्ति मिलती है। यहाँ से शुक्र सातवीं नीच-दृष्टि से बुध की कन्या राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः धन-संचय तथा कुटुम्ब के सुख में कुछ कमी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: नवमभाव: शुक्र

नवें त्रिकोण भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र से भी सुख, सफलता, सहयोग एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही तुला राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन की श्रेष्ठ शक्ति मिलती है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा जातक परिश्रमी, सद्‌गुणी, सुनकर, सुखी, हिम्मतवर, धनी, यशस्वी तथा चतुर होता है।

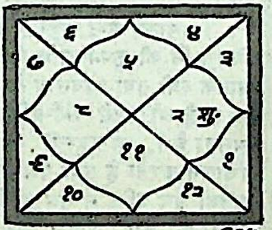


६१३

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: दशमभाव: शुक्र

दसवें केन्द्र, पिता एवं राज्य के भवन में अपनी ही वृषभ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र से अत्यधिक शक्ति, सफलता, सहयोग, सम्मान एवं सुख की प्राप्ति होती है साथ ही भाई-बहिन का सुख भी मिलता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता, मकान तथा भूमि के सुख का श्रेष्ठ लाभ होता है। ऐसा जातक चतुर, परिश्रमी, उन्नतिशील, भाग्यवान् तथा प्रभावशाली होता है।

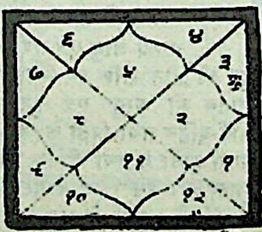


६१४

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: एकादशभाव: शुक्र

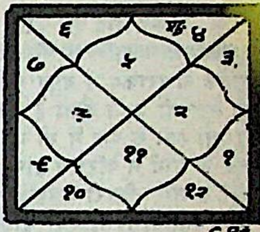
ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी के साधनों में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन एवं पिता का सुख भी प्राप्त होता है। वह राज्य के क्षेत्र से भी लाभ एवं सम्मान प्राप्त करता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से गुरु की धनु राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का विशेष लाभ होता है। ऐसा जातक अपनी वाणी द्वारा प्रभाव स्थापित करने वाला, सुखी, यशस्वी, सम्मानित तथा धनी होता है।



६१५

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: द्वादशभाव: शुक्र



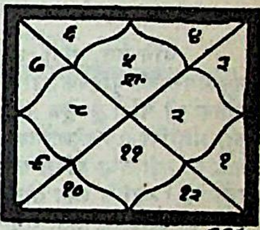
६१६

बारहवें व्यय तथा बाहरी सम्बन्धों के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सफलता मिलती है । उसे पिता तथा भाई-बहिन के सुख में कुछ हानि उठानी पड़ती है तथा शारीरिक पुरुषार्थ में भी कमजोरी रहती है । यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक अपने चातुर्य द्वारा शत्रु पक्ष में प्रभावशाली बना रहता है तथा अपनी हिम्मत के द्वारा झगड़े-झञ्झटों में विजय प्राप्त करता है ।

'सिंह' लग्न में 'शनि' का फल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: प्रथमभाव: शनि

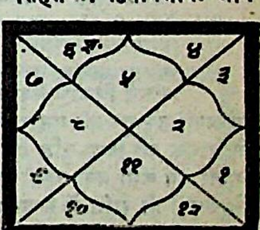


६१७

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को शरीर के सम्बन्ध में परेशानी, रोग आदि का सामना करना पड़ता है, परन्तु शत्रुपक्ष पर कुछ प्रभाव रहता है । यहाँ से शनि तीसरी उच्च तथा मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः भाई-बहिन की शक्ति प्राप्त होती है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है । सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में सप्तमभाव को देखने से कुछ परेशानियों के साथ स्त्री तथा व्यवसाय का सुख एवं लाभ मिलता है । दसवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ सफलता, यश एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है ।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: द्वितीयभाव: शनि

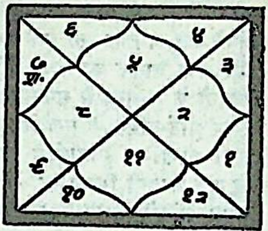


६१८

दूसरे धन-कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन के क्षेत्र में हानि-लाभ तथा कुटुम्ब के पक्ष में सुख-दुःख दोनों की ही प्राप्ति होती है । स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में बाधाएँ आती हैं । यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ कमी बनी रहती है तथा विघ्न उपस्थित होते रहते हैं । सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में भी असन्तोष रहता है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी में वृद्धि होती है । संक्षेप में ऐसा जातक सुख-दुःखपूर्ण जीवन व्यतीत करता है ।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः तृतीयभावः शनि

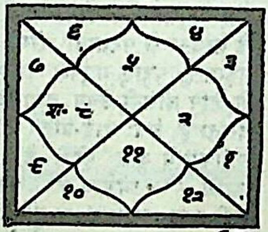


६१९

तीसरे भाई एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित उच्च के शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम में बहुत वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख भी प्राप्त होता है। वह शत्रु-पक्ष पर विजय पाता है तथा स्त्री के पक्ष में भी बहुत प्रभाव रखता है। दैनिक खर्च के मार्ग में परिश्रम द्वारा विशेष उन्नति करता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में कुछ परेशानी रहती है। सातवीं नीचदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी आती है तथा परेशानी रहती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण परेशानी भी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः चतुर्थभावः शनि

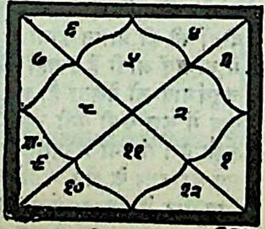


६२०

चौथे केतु, माता, भूमि एवं सुख के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को माता के सुख तथा भूमि-भवन के सम्बन्ध में कुछ अशान्ति एवं परेशानियों के बाद सफलता मिलती है। साथ ही स्त्री तथा दैनिक खर्च के सम्बन्ध में भी असन्तोष रहता है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः शत्रु पक्ष पर प्रभाव रहता है और कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, सम्मान तथा सुख प्राप्त होता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शरीर में रोग एवं चिन्ताओं का निवास रहता है तथा शारीरिक-सौन्दर्य में भी कुछ त्रुटि रहती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः पंचमभावः शनि

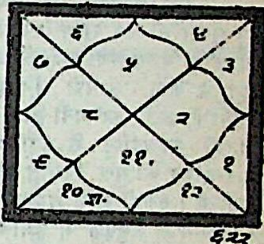


६२१

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष से कुछ परेशानी एवं कमी बनी रहती है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री तथा व्यवसाय का सुख तो मिलता है, परन्तु कुछ चिन्ताएँ भी बनी रहती है। स्त्री बुद्धिमती होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी में वृद्धि होती है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक धन की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहता है तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख भी प्राप्त करता है। ऐसा जातक विषयी भी अधिक होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: षष्ठभाव: शनि

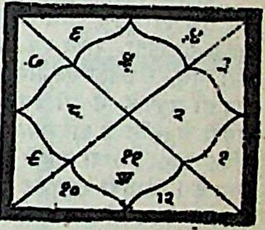


६२२.

छठे शत्रु भवन में अपनी ही मकर राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष में प्रभावशाली बना रहता है। उसे अपनी ननसाल से भी शक्ति प्राप्त होती है। दैनिक खर्च के संचालन में कुछ कठिनाई रहती है तथा स्त्री-पक्ष से कुछ असन्तोष बना रहता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है तथा आयु के क्षेत्र में कुछ अशान्ति रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक होता है और उसके कारण परेशानी रहती है। दसवीं उच्चदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक परिश्रम तथा हिम्मत के द्वारा कठिनाइयों पर विजय पाते हुए उन्नति करता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: सप्तमभाव: शनि

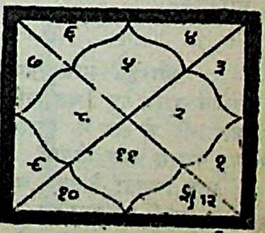


६२३

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी ही कुम्भ राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा व्यवसाय में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। शत्रु-पक्ष में प्रभाव रहता है। यहाँ से शनि तीसरी नीचदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः भाग्य तथा धर्म की कुछ हानि होती है। यश में कमी आती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक-सौन्दर्य एवं शान्ति का ह्रास होता है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, भवन आदि के सुख में भी कमी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: अष्टमभाव: शनि

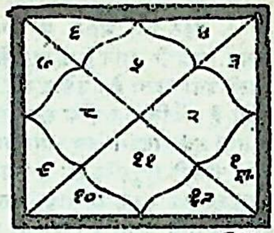


६२४.

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है, परन्तु स्त्री पक्ष से अशान्ति, शत्रुपक्ष से परेशानियों तथा दैनिक व्यवसाय के पक्ष से मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा कुछ लाभ की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक धन-वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्नशील रहता है तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि के पक्ष में कमी तथा सन्तान पक्ष से कष्ट होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: नवमभाव: शनि

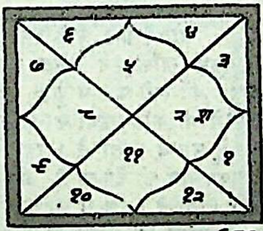


६२५

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी रहती है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी की शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। दसवीं दृष्टि से स्वयं अपनी ही राशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रुपक्ष में प्रभाव प्राप्त होता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से कुछ हानि और कुछ लाभ रहता है। शनि के सप्तमेश होने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: दशमभाव: शनि

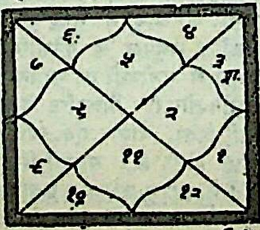


६२६

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से परिश्रम द्वारा सुख, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। साथ ही शत्रुपक्ष में भी प्रभाव रहता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता के साथ वैमनस्य रहता है तथा भूमि-भवन का सुख कम मिलता है। दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय का सुख तो मिलता है, परन्तु शनि के षष्ठेश होने के कारण कुछ परेशानी भी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: एकादशभाव: शनि



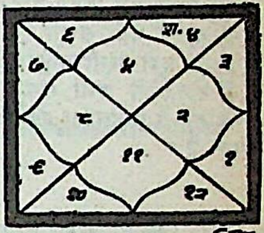
६२७

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में सफलता मिलती है। विशेषकर शत्रु पक्ष से लाभ होता है। स्त्री का सुख कुछ परेशानियों के साथ मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परिश्रम द्वारा अच्छी सफलता मिलती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी आती है तथा बीमारी भी होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण

सन्तान एवं विद्या के पक्ष में कमी रहती है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से पुरातत्त्व के लाभ में कमी आती है तथा जीवन के सम्बन्ध में भी चिन्ताएं बनी रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: द्वादशभाव: शनि



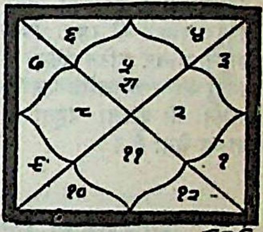
६२८

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ लाभ होता है। साथ ही शत्रु-पक्ष से परेशानी मिलती है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक धन-जन के सुख की वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करता है। सातवीं-दृष्टि से षष्ठभाव को अपनी ही राशि में देखने से शत्रुओं पर प्रभाव बना रहता है। दसवीं नीचदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं तथा धर्म की भी हानि होती है, ऐसा जातक रोगी, अपयशी, स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से कष्ट पाने वाला भी होता है।

'सिंह' लग्न में 'राहु' का फल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश लिखे नीचे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: प्रथमभाव: राहु

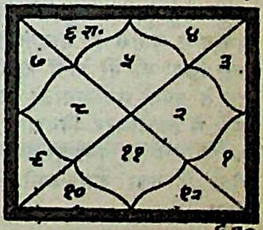


६२९

पहले केन्द्र एवं शरीर के स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौन्दर्य में कमी आती है तथा सुख-शान्ति में बाधा पड़ती है। उसे शरीर में कभी-कभी बड़े कष्ट का सामना करना पड़ता है तथा भीतरी चिन्ताओं से चिन्तित बना रहता है। ऐसा व्यक्ति किसी उच्च पद पर पहुँचने अथवा किसी विशेष कार्य को करने के लिए गुप्त-युक्ति, परिश्रम एवं साहस का सहारा लेता है और सफलता की ओर बढ़ता भी है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली 'द्वितीयभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: द्वितीयभाव राहु



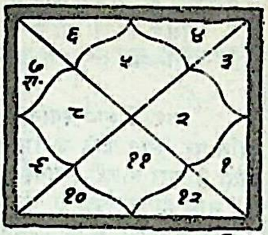
६३०

दूसरे धन-कुटुम्ब भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक धन तथा कुटुम्ब के पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ उन्नति प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे घोर आर्थिक कष्ट उठाना पड़ता है और ऋण लेना पड़ता है, तो कभी-कभी उसे अकस्मात् ही जैसे मुफ्त धन की प्राप्ति भी हो जाती है, ऐसा व्यक्ति धन की वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम, गुप्त युक्तियों एवं गम्भीरता से काम लेता है। वह चतुर तथा चालाक भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: तृतीयभाव: राहु

तीसरे सहोदर एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन की ओर से कुछ कष्ट प्राप्त होता है, परन्तु पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति गुप्त-चातुर्य, धैर्य, साहस एवं परिश्रम का पुतला होता है। वह बड़ी गम्भीरतापूर्वक अपने स्वार्थ को सिद्ध करता है। भीतर से कभी कमजोरी अनुभव करने पर भी प्रकट रूप से साहस का प्रदर्शन करता है तथा दृढ़-निश्चयी होता है।

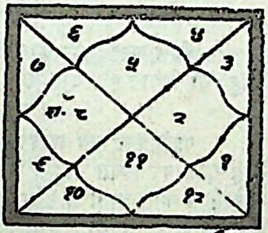


६३१

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: चतुर्थभाव: राहु

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख के भवन में अपने शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक माता के पक्ष से कष्ट पाता है। उसे भूमि, मकान आदि के सुख में भी बाधा मिलती है तथा घरेलू सुख-शान्ति में भी कमी रहती है। उसे अपनी मातृभूमि से दूर जाकर भी रहना पड़ता है। कभी-कभी उसे अपने घर के भीतर कठिन संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु भाग्य की शक्ति एवं हिम्मत के द्वारा वह सुख के साधनों को जुटाता रहता है तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है।

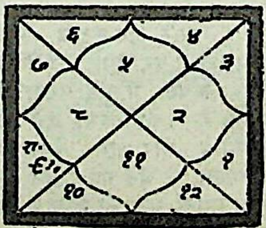


६३२

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: पंचमभाव: राहु

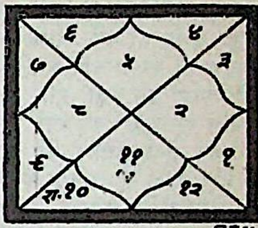
पाँचवें त्रिकोण, विद्या तथा सन्तान के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को सन्तान के पक्ष में कष्ट मिलता है तथा विद्या की भी कमी रहती है। वह अपने बुद्धि-बल से अपनी अयोग्यताओं को छिपाता है। परन्तु बोल-चाल में शिष्टाचार, विनम्रता एवं सत्य का पालन नहीं कर पाता। वह गुप्त-युक्तियों से स्वार्थ सिद्ध करने वाला होता है तथा कभी-कभी अपने मन में घबरा भी जाता है।



६३३

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: षष्ठभाव: राहु

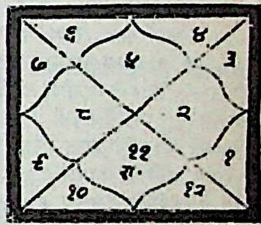


६३४

छठे रोग तथा शत्रु के घर में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक युक्ति-बल के द्वारा शत्रु-पक्ष पर सफलता प्राप्त करता है, परन्तु कभी-कभी अपने शत्रुओं द्वारा प्राप्त परेशानी का भी विशेष रूप से अनुभव करता है। उसमें गुप्त-धैर्य एवं साहस की शक्ति होती है। वह बड़ा हिम्मती होता है, अतः किसी समय झगड़े में वह अपनी बहादुरी का प्रदर्शन भी करता है। उसे ननसाल के पक्ष से कुछ हानि उठानी पड़ती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये--

सिंहलग्न: सप्तमभाव: राहु

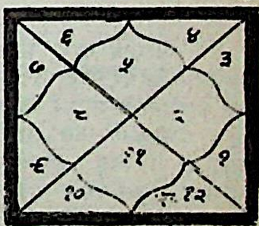


६३५

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी घोर कठिनाइयाँ आती हैं, परंतु यह बड़े परिश्रम, गुप्त-युक्ति, धैर्य एवं हिम्मत के साथ अपने व्यवसाय एवं गृहस्थी का संचालन करता तथा स्त्री-पक्ष के सुख की वृद्धि करता है। ऐसे व्यक्ति को कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु बाद में किसी प्रकार गृह-संचालन की शक्ति उसे प्राप्त हो जाती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: अष्टमभाव: राहु

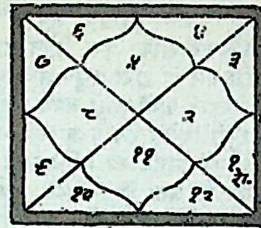


६३६

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने जीवन में अनेक बार मृत्यु-तुल्य कष्ट का सामना करना पड़ता है। उसके पेट के निचले भाग में विकार रहता है तथा दैनिक कार्यों में भी चिन्ताएं एवं परेशानियाँ बनी रहती हैं। उसे पुरातत्त्व की हानि उठानी पड़ती है। किसी प्रकार गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेकर वह जैसे-तैसे अपने जीवन का निर्वाह करता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: नवमभाव: राहु

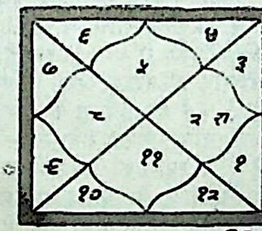


६३७

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में अनेक बार रुकावटें आती हैं तथा परेशानियाँ उठ खड़ी होती हैं। धर्म के पालन में भी उसे अरुचि रहती है। वह अपने भाग्य की वृद्धि के लिये कठिन परिश्रम, गुप्त-युक्तियों, धैर्य तथा साहस का आश्रय लेता है और अनेक परेशानियों को पार करने के बाद थोड़ी-सी सफलता भी पा लेता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: दशमभाव: राहु

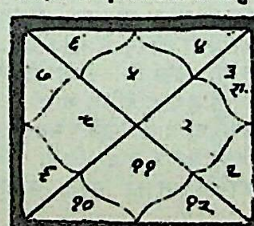


६३८

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने पिता के सुख में कमी रहती है तथा व्यावसायिक उन्नति में रुकावटें आती रहती हैं। उसे राज्य द्वारा भी परेशानी का योग प्राप्त होता है। परन्तु राहु के मित्र-राशिस्थ होने के कारण जातक अनेक कठिनाइयों के बाद गुप्त युक्तियों के बल पर व्यवसाय में थोड़ी-बहुत उन्नति भी कर लेता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न एकादशभाव: राहु

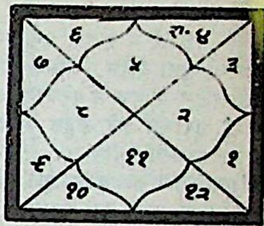


६३९

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक को आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता प्राप्त होती है और कभी-कभी उसे आकस्मिक धन की प्राप्ति भी होती है। वह गुप्त-युक्तियों, धैर्य, साहस तथा परिश्रम के बल पर लाभ के क्षेत्र को बढ़ाता रहता है, परन्तु कभी-कभी उसे हानि तथा परेशानी भी उठानी पड़ती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: द्वादशभाव: राहु



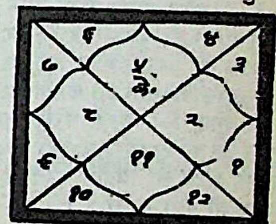
६४०

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने के लिए हर समय चिन्तित रहना पड़ता है तथा कभी-कभी घोर संकटों का सामना करना पड़ता है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी हानि उठानी पड़ती है। मन की प्रबल शक्ति द्वारा बारम्बार के प्रयत्न, परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों के बल पर अन्त में उसे थोड़ी-बहुत सफलता मिलती है।

'सिंह' लग्न में 'केतु' का फल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्मकुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: प्रथमभाव: केतु

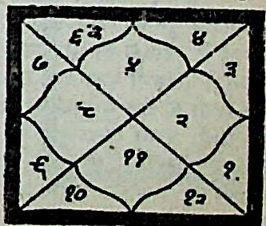


६४१

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान के अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है तथा कभी कोई गहरी चोट भी लगती है अथवा घाव होता है। ऐसा व्यक्ति भीतर से चिन्तित रहते हुए भी गुप्त-धैर्य से काम लेता है तथा सुख की प्राप्ति के लिये विशेष परिश्रम करता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: द्वितीयभाव: केतु

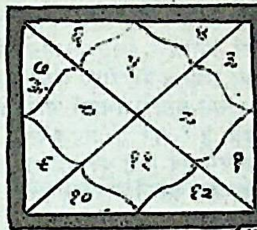


६४२

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को धन-संचय के क्षेत्र में दुर्बलता प्राप्त होती है तथा धन की कमी के कारण अनेक प्रकार की चिन्ताओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है। वह धन-वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम करता है। कभी-कभी उसे ऋण भी लेना पड़ता है। वह गुप्त-युक्तियों के बल पर अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाने का प्रयत्न करता है। उसे कुटुम्ब का पूर्ण सुख भी नहीं मिलता।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्नः तृतीयभावः केतु

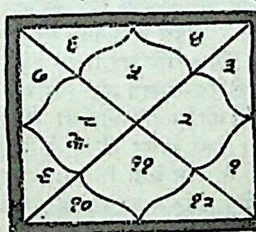


६४३

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के पक्ष में परेशानी एवं कष्ट का योग बनता है, परन्तु पराक्रम की बहुत अधिक वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति पुरुषार्थी, परिश्रमी, निडर, बड़ी हिम्मतवाला, चतुर तथा शक्तिशाली होता है। वह प्रत्येक काम को अपने बाहुबल के द्वारा पूरा करता है और लापरवाह तथा हठी होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्नः चतुर्थभावः केतु

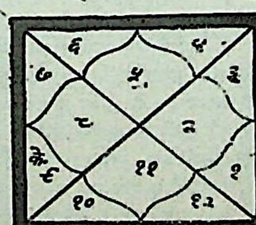


६४४

चौथे, केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख के घर में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी माता के सुख में कमी रहती है तथा मातृभूमि से अलग हट कर परदेश में जाकर रहने का योग भी बनता है। उसके घरेलू सुख में अशान्ति बनी रहती है। वह कठिन परिश्रम तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर सुख प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। परन्तु अधिकतर परेशान ही बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्नः पंचमभावः केतु

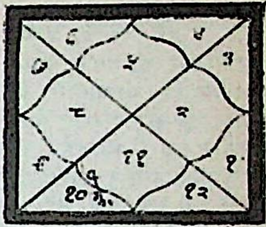


६४५

पाँचवें त्रिकोण, विद्या तथा सन्तान के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से शक्ति मिलती है, परन्तु कभी-कभी कष्ट का सामना भी करना पड़ता है। वह विद्या के क्षेत्र में सफलता पाने के लिये कठिन परिश्रम करता है, परन्तु विद्या-बुद्धि में कुछ कमी ही बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति स्वयं को बुद्धिमान् समझता है, परन्तु उसकी वाणी अधिक प्रभावशाली नहीं होती।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: षष्ठभाव: केतु

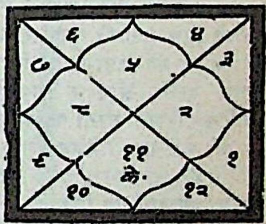


६४६

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम द्वारा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है तथा कठिनाइयों को बड़ी हिम्मत एवं धैर्य के साथ पार करता है। वह बड़ी-बड़ी मुसीबतें आने पर भी घबराता नहीं है तथा गुप्त युक्तियों एवं आन्तरिक साहस के बल पर निरन्तर आगे बढ़ते रहने का प्रयत्न करता है। उसे ननसाल के पक्ष से हानि प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: सप्तमभाव: केतु

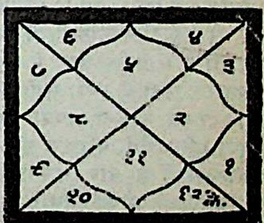


६४७

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री के सुख में कमी एवं व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वह गुप्त-धैर्य एवं साहस के साथ अपनी गृहस्थी का पालन करता है तथा कभी-कभी गहरी मुसीबतों में भी फंस जाता है, परन्तु अपना धैर्य और साहस नहीं छोड़ता। अन्ततः उसे सफलता प्राप्त होती है। उसकी मूत्रेन्द्रिय में विकार भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: अष्टमभाव: केतु

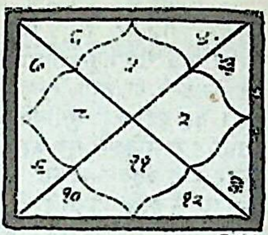


६४८

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि में स्थित केतु के प्रभाव से जातक को जीवन में अनेक बार मृत्यु-तुल्य संकटों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व के सम्बन्ध में भी हानि उठानी पड़ती है। उसके पेट के निचले भाग में विकार रहता है। वह हर समय चिन्ताओं से घिरा रहता है, परन्तु अपने साहस और धैर्य को नहीं छोड़ता। अन्ततः उसे कठिनाइयों पर घोर परिश्रम एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर विजय भी प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंहलग्न: नवमभाव: केतु

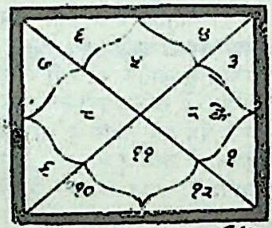


६४९

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती रहती हैं और उसे घोर परिश्रम करना पड़ता है। इसी प्रकार धर्म के पक्ष में भी कमजोरी बनी रहती है। भाग्यहीनता एवं धर्महीनता के कारण उसके यश को भी धब्बा लगता है। उसे कभी-कभी बड़े संकटों का शिकार भी होना पड़ता है। परन्तु अन्त में वह अपने गुप्त-धैर्य, परिश्रम एवं साहस के बल पर सफलता एवं शक्ति प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये —

सिंहलग्न: दशमभाव: केतु

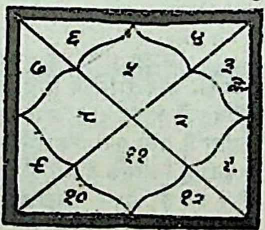


६५०

दसवें केन्द्र, माता, राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता-स्थान से कुछ कष्ट प्राप्त होता है तथा राज्य क्षेत्र में सफलता एवं मान पाने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है। उसे व्यावसायिक क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ प्राप्त होती हैं तथा प्रतिष्ठा के ऊपर भी संकट आ बनता है, परन्तु वह गुप्त-धैर्य, साहस, बुद्धि, चतुराई एवं परिश्रम के बल पर उन सबको पार करके उन्नति पाता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्न: एकादशभाव: केतु

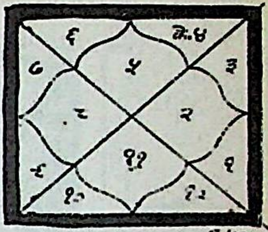


६५१

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आय के क्षेत्र में घोर कठिनाइयों एवं संघर्षों का सामना करना पड़ता है। धनोपार्जन में कमी के कारण उसे दुःख का अनुभव होता है तथा कभी-कभी धन की कमी से घोर संकटों का सामना करना पड़ता है। परन्तु वह अपनी गुप्त-युक्ति, धैर्य, परिश्रम तथा साहस के बल पर उन सब कठिनाइयों को पार करता है और लाभ उठाने के लिए उचित-अनुचित का विचार नहीं करता है।

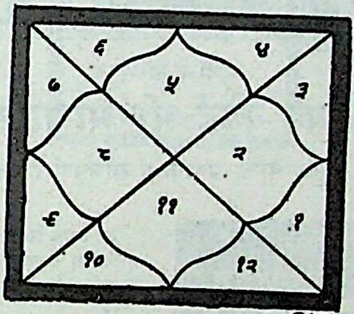
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के द्वादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

सिंहलग्नः द्वादशभावः केतु



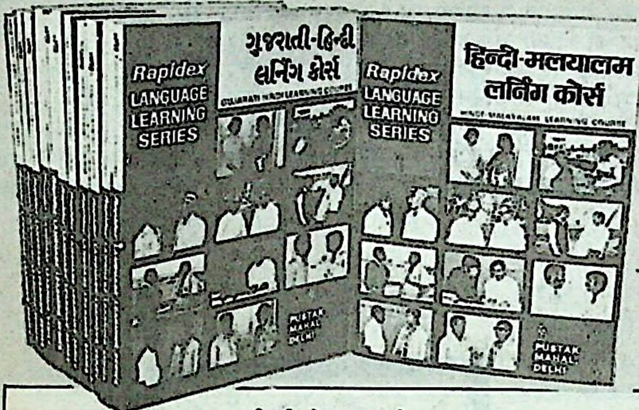
६४२

बारहवें व्यय स्थान म अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपने खर्च के कारण अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उसे मानसिक चिन्ताएं घेरे रहती हैं। कई बार उसे हानि, संकट एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है। परन्तु अन्त में वह अपने गुप्त-धैर्य, साहस, युक्ति-बल तथा परिश्रम के द्वारा कठिनाइयों पर विजय पाता है और अपने काम को जैसे-तैसे चलाता रहता है।

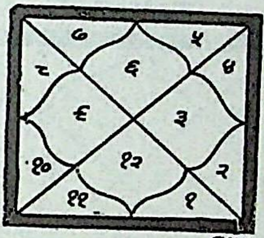


६५२

'सिंह' लग्न का फलादेश समाप्त


Rapidex
LANGUAGE
LEARNING
SERIES
ગુજરાતી-હિન્દી
લર્નિંગ કોર્સ
Rapidex
LANGUAGE
LEARNING
SERIES
हिन्दी-मलयालम
लर्निंग कोर्स
PUSTAK
MAHAL
DELHI

कन्या-लग्न



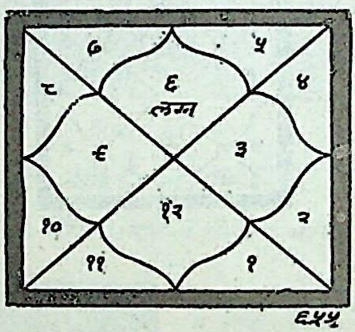
६५४

[कन्या-लग्न वाली कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग फलादेश]

'कन्या' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'कन्या' लग्न में जन्म लेने वाला जातक कफ एवं पित्त प्रकृति वाला, सौन्दर्यवान्, विचारशील, सन्तान से युक्त, स्त्री द्वारा पराजित, डरपोक, मायावी, काम-वासना से दुःखी शरीर वाला, कामक्रीड़ा में निपुण, अनेक प्रकार के गुणों तथा कौशलों से युक्त, सदैव प्रसन्न रहने वाला, सुन्दर स्त्री प्राप्त करने वाला, श्रृंगार-प्रिय, स्थूल तथा सामान्य शरीर वाला, बड़ी, आँखों वाला, प्रियवादी, अल्पभाषी, भ्रातृ-द्रोही, गणित तथा धर्म में रुचि रखने वाला, गम्भीर, अधिक कन्या और सन्तति वाला, यात्राप्रेमी, चतुर नाजुक-मिजाज, अपने मन की बात को छिपाने वाला, बाल्यावस्था में सुखी, मध्यमावस्था में सामान्य, तथा अन्तिम अवस्था में दुःख प्राप्त करने वाला होता है। २४ से ३६ वर्ष की आयु के बीच उसकी भाग्योन्नति होती है। इस काल में वह अपने धन-ऐश्वर्य की वृद्धि करता है।

'कन्या' लग्न



यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव मुख्यतः दो प्रकार से पड़ता है—

(१) ग्रहों की जन्मकालीन स्थिति के अनुसार।

(२) ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के अनुसार।

जातक की जन्मकालीन ग्रह-स्थिति जन्म-कुण्डली में दी गई होती है। उसमें जो ग्रह जिस भाव में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित प्रभाव निरन्तर स्थायी रूप से डालता रहता है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है उसकी जानकारी पंचाङ्ग द्वारा की जा सकती है। ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के सम्बन्ध में या तो किसी ज्योतिषी से पूछ लेना चाहिए अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिए। इस सम्बन्ध में पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर अस्थायी रूप से अपना प्रभाव डालते हैं।

उदाहरण के लिये यदि किसी जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य 'कन्या' राशि पर 'प्रथमभाव' में बैठा है, तो उसका स्थायी प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ६५६ के अनुसार पड़ता रहेगा, परन्तु यदि दैनिक ग्रह-गोचर में कुण्डली

देखते समय सूर्य 'तुला' राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा होगा तो उस स्थिति में वह उदाहरण-कुण्डली संख्या ७६८ के अनुसार उतनी अवधि तक जातक के जीवन पर अपना अस्थायी प्रभाव अवश्य डालेगा, जब तक कि वह 'तुला' राशि से हट कर 'वृश्चिक' राशि में नहीं चला जाता। 'वृश्चिक' राशि में पहुँच कर वह 'वृश्चिक' राशि के अनुरूप अपना प्रभाव डालना आरम्भ कर देगा, अतः जिस जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य 'कन्या' राशि के 'प्रथमभाव' में बैठा हो, उसे उदाहरण-कुण्डली-संख्या ६५६ में वर्णित फलादेश देखने के पश्चात्, यदि उन दिनों ग्रह-गोचर में सूर्य 'तुला' राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा हो तो उदाहरण-कुण्डली संख्या ७६८ का फलादेश भी देखना चाहिए तथा इन दोनों फलादेशों के समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को अपने वर्तमान समय पर प्रभावकारी समझना चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विषय में जान लेना चाहिए।

'कन्या' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदाहरण कुण्डली-संख्या ७६७ से ८७४ तक में किया गया है। पंचांग की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार 'कन्या' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों को किन-किन उदाहरण-कुण्डलियों द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना चाहिए—इसका विस्तृत वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है, अतः उनके अनुसार स्थिति के सामयिक प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। तदुपरान्त दोनों फलादेशों के समन्वय-स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिये।

इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति जन्म-कुण्डली का ठीक-ठीक फलादेश सहज में ही ज्ञात कर सकता है।

टिप्पणी—(१) पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश से ऊपर अथवा ३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह सूर्य से अस्त होता है, वह भी जातक के ऊपर अपना प्रभाव या तो बहुत कम डालता है या फिर पूर्णतः प्रभावहीन रहता है।

(२) स्थायी जन्म-कुण्डली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा अपनी कुण्डली में लिखवा लेने चाहिए, ताकि उनके अंशों के बारे में बार-बार जानकारी प्राप्त करने के झंझट से बचा जा सके। तात्कालिक गोचर के ग्रहों के अंशों की जानकारी पंचांग द्वारा अथवा किसी ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(३) स्थायी जन्म-कुण्डली अथवा तात्कालिक ग्रह-गति-कुण्डली में यदि किसी भाव में एक से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन स्थानों पर उनकी दृष्टियाँ पड़ती हैं, जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता रहता है। इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में 'ग्रहों की युति का प्रभाव' शीर्षक अध्याय के अन्तर्गत विभिन्न ग्रहों की युति का फलादेश का वर्णन किया गया है, अतः इस विषय की जानकारी वहाँ से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(४) 'विंशोत्तरी दशा' के सिद्धान्तानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० वर्ष की मानी जाती है। इस आयु-अवधि में जातक नवग्रहों की दशाओं का भोग कर लेता है। विभिन्न ग्रहों का दशा-काल भिन्न-भिन्न होता है। परन्तु अधिकांश व्यक्ति इतनी लम्बी आयु तक जीवित नहीं रह पाते, अतः वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं का भोग कर पाते हैं। जातक के जीवन के जिस काल में जिस ग्रह की दशा—जिसे 'महादशा' कहा जाता है—चल रही होती है, जन्मकालीन ग्रह-स्थिति के अनुसार उसके

जीवन-काल की उतनी अवधि उस ग्रह-विशेष के प्रभाव से विशेष रूप से प्रभावित रहती है। जातक का जन्म किस ग्रह की महादशा में हुआ है और उसके जीवन में किस अवधि से किस अवधि तक किस ग्रह की महादशा चलेगी और वह महादशा जातक के ऊपर अपना क्या विशेष प्रभाव डालेगी—इन सब बातों का उल्लेख भी तीसरे प्रकरण में किया गया है।

इस प्रकार (१) जन्म-कुण्डली, (२) तात्कालिक ग्रह-गोचर-कुण्डली एवं (३) ग्रहों की महादशा— इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है, अतः इन तीनों के समन्वय-स्वरूप फलादेश का ठीक-ठीक निर्णय करके अपने भूत, वर्तमान तथा भविष्यत्कालीन जीवन के विषय में सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिये।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'सूर्य' का फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६५६ से ६६७ तक में देखना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६५६ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'सूर्य' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६५७ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६५८ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६५९ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६० के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६१ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६२ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६३ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'सूर्य' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६५ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने 'सूर्य' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने 'सूर्य' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६७ के अनुसार समझना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६८ से ६७९ तक में देखना चाहिये।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये—

(१) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कन्या' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६८ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'तुला' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६९ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६७० के अनुसार समझना चाहिये।

(४) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'धनु' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६७१ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मकर' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६७२ के अनुसार समझना चाहिये।

(६) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६७३ के अनुसार समझना चाहिये।

(७) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मीन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६७४ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मेष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६७५ के अनुसार समझना चाहिये।

(९) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'वृष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६७६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मिथुन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६७७ के अनुसार समझना चाहिये।

(११) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६७८ के अनुसार समझना चाहिये।

(१२) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'सिंह' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६७९ के अनुसार समझना चाहिए।

'कन्या' (६) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'मंगल' का फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६८० से ६९१ तक में देखना चाहिये।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'मंगल' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६८० के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस महीने में 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६८१ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'मंगल' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६८२ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'मंगल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६८३ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'मंगल' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६८४ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'मंगल' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६८५ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'मंगल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६८६ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'मंगल' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६८७ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'मंगल' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६८८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'मंगल' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६८९ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६९० के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'मंगल' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६९१ के अनुसार समझना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'बुध' का फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६९२ से ७०३ तक में देखना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६९२ के अनुसार समझना चाहिए ।

(२) जिस महीने में 'बुध' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६९३ के अनुसार समझना चाहिए ।

(३) जिस महीने में 'बुध' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६९४ के अनुसार समझना चाहिए ।

(४) जिस महीने में 'बुध' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६९५ के अनुसार समझना चाहिए ।

(५) जिस महीने में 'बुध' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६९६ के अनुसार समझना चाहिए ।

(६) जिस महीने में 'बुध' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६९७ के अनुसार समझना चाहिए ।

(७) जिस महीने में 'बुध' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६९८ के अनुसार समझना चाहिए ।

(८) जिस महीने में 'बुध' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६९९ के अनुसार समझना चाहिए ।

(९) जिस महीने में 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७०० के अनुसार समझना चाहिए ।

(१०) जिस महीने में 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७०१ के अनुसार समझना चाहिये ।

(११) जिस महीने में 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७०२ के अनुसार समझना चाहिये ।

(१२) जिस महीने में 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७०३ के अनुसार समझना चाहिये ।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'गुरु' का फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण कुण्डली संख्या ७०४ से ७१५ तक में देखना चाहिए ।

(६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७०४ के अनुसार समझना चाहिए ।

(२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७०५ के अनुसार समझना चाहिए ।

(३) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७०६ के अनुसार समझना चाहिये ।

(४) जिस वर्ष में 'गुरु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७०७ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७०८ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७०९ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७१० के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७११ के अनुसार समझना चाहिये ।

(९) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७१२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७१३ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७१४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७१५ के अनुसार समझना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'शुक्र' का फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७१६ से ७२७ तक में देखना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'शुक्र' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७१६ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'शुक्र' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७१७ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७१८ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'शुक्र' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७१९ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'शुक्र' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७२० के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'शुक्र' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७२१ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'शुक्र' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७२२ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'शुक्र' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७२३ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७२४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७२५ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७२६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७२७ के अनुसार समझना चाहिए।

कन्या (६) लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'शनि' का फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७२८ से ७३९ तक में देखना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये—

(१) जिस महीने में 'शनि' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७२८ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'शनि' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७२९ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस महीने में 'शनि' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७३० के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'शनि' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७३१ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'शनि' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७३२ के अनुसार समझना चाहिये।

(६) जिस महीने में 'शनि' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७३३ के अनुसार समझना चाहिये।

(७) जिस महीने में 'शनि' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७३४ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस महीने में 'शनि' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७३५ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'शनि' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७३६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'शनि' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७३७ के अनुसार समझना चाहिये।

(११) जिस महीने में 'शनि' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७३८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'शनि' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७३९ के अनुसार समझना चाहिए।

कन्या (६) लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'राहु' का फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७४० से ७५१ तक में देखना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७४० के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'राहु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७४१ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७४२ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७४३ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'राहु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७४४ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'राहु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७४५ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७४६ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'राहु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७४७ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७४८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'राहु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७४९ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'राहु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७५० के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७५१ के अनुसार समझना चाहिए।

कन्या (६) लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'केतु' का फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डली संख्या ७५२ से ७६३ तक में देखना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए —

(१) जिस वर्ष में 'केतु' 'कन्या' राशि हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७५२ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'केतु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७५३ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७५४ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'केतु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७५५ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'केतु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७५६ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'केतु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७५७ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'केतु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७५८ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'केतु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७५९ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७६० के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'केतु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७६१ के अनुसार समझना चाहिए।

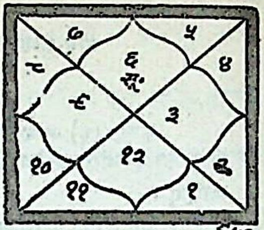
(११) जिस वर्ष में 'केतु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७६२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'केतु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७६३ के अनुसार समझना चाहिए।

'कन्या' लग्न में 'सूर्य' का फल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए —

कन्यालग्न: प्रथमभाव: सूर्य

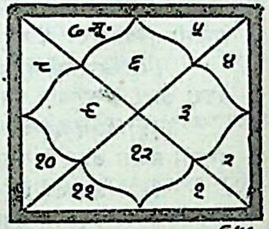


६५६

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित व्ययेश सूर्य के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल होता है। वह शानदार खर्च करने वाला होता है, परन्तु कभी-कभी खर्च के कारण कुछ परेशानी का अनुभव भी होता है। बाहरी स्थानों के सम्पर्क से उसे विशेष लाभ तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में सप्तम भाव को देखता है, अत: उसे स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ असन्तोष एवं हानि का भी सामना करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: द्वितीयभाव: सूर्य

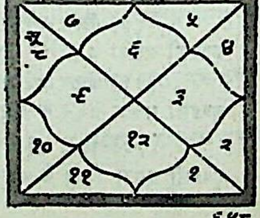


६५७

दूसरे धन-कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को धन तथा कौटुम्बिक सुख की बहुत हानि प्राप्त होती है। बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी आर्थिक दृष्टि से दुर्बल बना रहता है तथा खर्च के मामले में परेशानी बनी रहती है। यहां से सूर्य सातवीं उच्चदृष्टि से अपने मित्र मंगल की मेष राशि में अष्टमभाव को देखता है, अत: जातक दीर्घायु होता है और उसे पुरातत्त्व का लाभ भी प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: तृतीयभाव: सूर्य

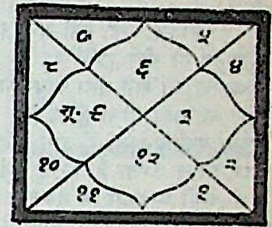


६५८

तीसरे सहोदर एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के पराक्रम की सामान्य-वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। ऐसा जातक अपने पुरुषार्थ द्वारा खर्च भली-भांति चलाता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी लाभ उठाता है। वह बड़ा हिम्मती एवं प्रभावशाली भी होता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में नवमभाव को देखता है, अत: जातक को भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में भी कमी का अनुभव होता है। ऐसा व्यक्ति सामान्य जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कन्यालग्न: चतुर्थभाव: सूर्य

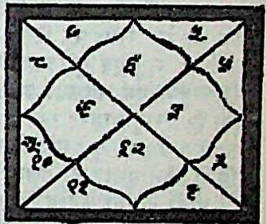


६५६

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को मातृ-सुख तथा भूमि, भवन आदि के लाभ में कमी रहती है। वह बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख प्राप्त करता है तथा अर्च को चलाता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से भी कुछ कमी तथा असन्तोष का अनुभव होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

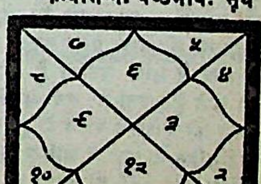
कन्यालग्न: पंचमभाव: सूर्य



पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि में स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के पक्ष में हानि प्राप्त होती है तथा खर्च के कारण दिमाग में परेशानी बनी रहती है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी सामान्य लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को कुछ कमियों के साथ लाभ होता रहता है। ऐसा व्यक्ति बड़ी घुमाव-फिराव की बातें करने वाला तथा चंचल-बुद्धि का होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

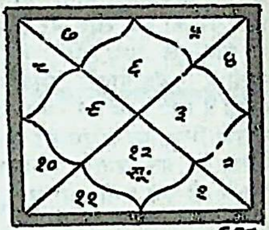
कन्यालग्न: षष्ठभाव: सूर्य



छठे शत्रु एवं रोग के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित व्ययेश सूर्य के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष से परेशानी रहेगी तथा खर्च अधिक पड़ेगा। परन्तु वह उन पर अपना प्रभाव स्थापित करने में सफलता प्राप्त करेगा, क्योंकि छठे स्थान पर क्रूर ग्रह की राशि पर क्रूर ग्रह की स्थिति विशेष प्रभावशाली होती है। ऐसा व्यक्ति परिश्रम द्वारा अपना खर्च चलाता है और उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सामान्य लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च की अधिकता बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्नः सप्तमभावः सूर्य

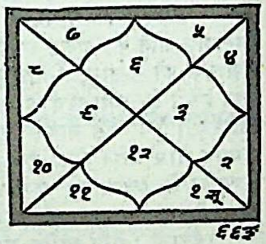


६६२

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित व्ययेश सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कमी एवं हानि का योग प्राप्त होता है। वह व्यवसाय द्वारा ही अपना खर्च चलाता है, तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त करता है, परन्तु सूर्य के व्ययेश होने के कारण कभी-कभी व्यवसाय में नुकसान भी उठाना पड़ता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक का शरीर दुर्बल होता है। वह स्वभाव से चंचल, क्रोधी तथा खर्च के कारण चिन्तित भी रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो , उसे 'सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्नः अष्टम भावः सूर्य

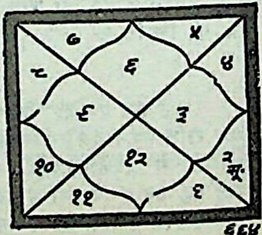


६६३

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ वृद्धि एवं सफलता प्राप्त होती है। खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं नीच-दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः धन की अधिक हानि होती है तथा कुटुम्ब के सुख में भी कमी आती है। ऐसा व्यक्ति धन की ओर से चिन्तित बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्नः नवमभावः सूर्य

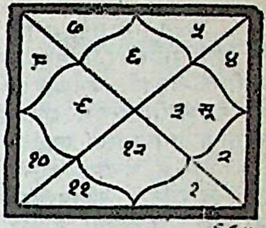


६६४

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म-स्थान में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वह भाग्य द्वारा ही खर्च-संचालन की शक्ति प्राप्त करता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है। ऐसे व्यक्ति प्रायः नास्तिक भी होते हैं। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः भाई-बहिन के सुख में कमी रहती है तथा पराक्रम की भी अधिक वृद्धि नहीं हो पाती।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्नः दशमभावः सूर्य

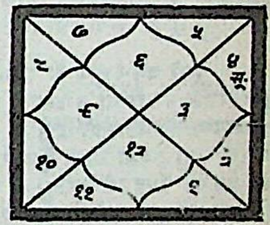


६६५

दसवें केन्द्र, पिता एवं राज्य भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में हानि तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वह खर्च खूब करता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी उठाता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता, भूमि, मकान आदि के सुख में कुछ कमी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति सामान्य जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कन्यालग्नः एकादश भावः सूर्य

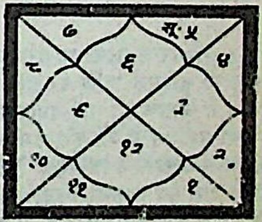


६६६

ग्यारहवें लाभ भवन के अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को लाभ तो खूब होता है, परन्तु सूर्य के व्ययेश होने के कारण खर्च भी अत्यधिक बना रहता है। अतः आमदनी में वृद्धि होते हुये भी जातक को खर्च चलाने के सम्बन्ध में कुछ चिन्ता बनी रहती है। परन्तु बाहरी स्थानों के सम्पर्क से उसे लाभ, सुख तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से शनि की मकर राशि में पंचम-भाव को देखता है, अतः सन्तान पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा विद्या-बुद्धि का पक्ष भी कमज़ोर रहता है

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्नः द्वादश भावः सूर्य



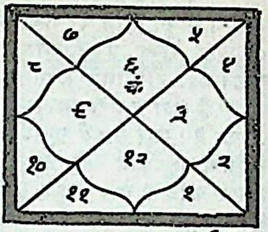
६६७

बारहवें व्यय भवन में अपनी ही सिंह राशि पर स्थित स्वक्षेत्री सूर्य के प्रभाव से जातक खर्च अधिक करता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से पर्याप्त लाभ एवं सम्मान भी अर्जित करता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः शत्रु-पक्ष एवं रोग आदि के कारण उसे कुछ परेशानी उठानी पड़ती है तथा खर्च भी करना पड़ता है, परन्तु वह समस्त कठिनाइयों के समय साहस बनाये रखता है और शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित करने में सफल होता है।

'कन्या' लग्न में 'चन्द्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: प्रथमभाव: चन्द्र

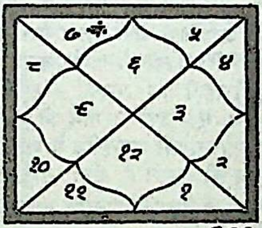


९९८

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शारीरिक-सौन्दर्य, मनोबल एवं प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। वह शारीरिक-श्रम द्वारा धन का श्रेष्ठ लाभ प्राप्त करता है तथा यशस्वी एवं प्रभावशाली भी बना रहता है। । यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में सप्तमभाव को देखता है, अत: जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है और उसके पक्ष से लाभ भी होता है। इसी प्रकार व्यवसाय के द्वारा भी यथेष्ट लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति का गृहस्थ जीवन सुख एवं सन्तोषपूर्ण बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए —

कन्यालग्न: द्वितीयभाव: चन्द्र

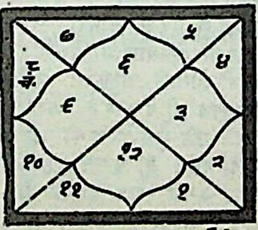


९९९

दूसरे धन-कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त होती है, जिसके कारण उसकी आमदनी भी अच्छी रहती है और वह खूब धन कमाता है। वह धन का संग्रह भी करता है' यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में अष्टमभाव को देखता है, अत: जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति भी प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति शानशौकत का जीवन बिताता है तथा यशस्वी और प्रतिष्ठित होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: तृतीयभाव: चन्द्र

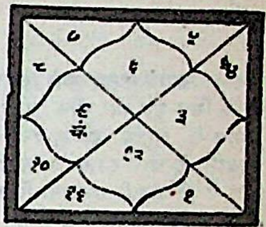


१०००

तीसरे सहोदर एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के पक्ष से परेशानी होती है तथा पराक्रम में भी कुछ कमी बनी रहती है। वह मानसिक चिन्ताओं से ग्रस्त रहता है तथा धनोपार्जन के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं उच्चदृष्टि से अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में नवमभाव को देखता है, अत: कठिन परिश्रम द्वारा उसके भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म-पालन में भी विशेष रुचि बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: चतुर्थभाव: चन्द्र

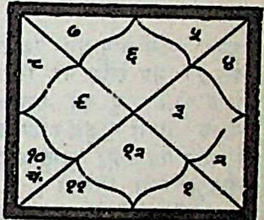


६०१

चौथे केन्द्र, माता, भूमि तथा सुख के स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपने स्थान पर रहकर ही सुख प्राप्त करता है। उसे माता, भूमि, मकान आदि के स्नेह तथा सुख का विशेष लाभ होता है, वह सदैव प्रसन्न बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में यश, सम्मान, सफलता, लाभ, उन्नति एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: पंचमभाव: चन्द्र



६०२

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से लाभ होता है तथा विद्या-बुद्धि की वृद्धि होती है। साथ ही, वह अपनी विद्या-बुद्धि के द्वारा धन का लाभ भी अर्जित करता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि द्वारा अपनी ही कर्क राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक की आमदनी में वृद्धि होती है। वह धन की प्राप्ति एवं उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कन्यालग्न: षष्ठभाव: चन्द्र

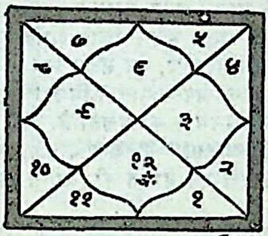


६०३

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष द्वारा मानसिक अशान्ति मिलती है, परन्तु वह अपनी नम्रता द्वारा शत्रुओं पर सफलता प्राप्त करता है और उनसे लाभ उठाता है। ऐसा जातक झगड़े, मुकद्दमे, शत्रु, झंझट आदि के पक्ष से लाभ कमाता है, परन्तु लाभ की कुछ कमी भी अवश्य रहती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में द्वादशभाव को देखता है। अतः खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: सप्तमभाव: चन्द्र

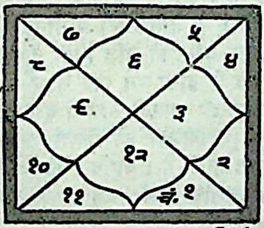


६७४

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री का लाभ होता है, भोगादि के श्रेष्ठ साधन प्राप्त होते हैं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी अच्छी सफलता मिलती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में प्रथम-भाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, मनोबल एवं प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। उसे लाभ के अवसर निरन्तर मिलते रहते हैं। ऐसा जातक सुखी, धनी तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्न: अष्टमभाव: चन्द्र

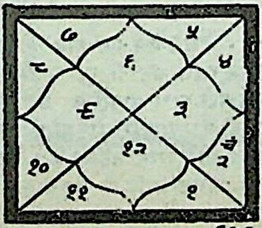


६७५

आठवें आयु एवं पुरातत्व के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को दीर्घायु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। उसे आय के साधनों में कुछ कठिनाइयों तथा त्रुटियों का सामना तो करना पड़ता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से विशेष सफलता मिलती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक धन का संग्रह करता है और कुटुम्ब का सुख भी मिलता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: नवम भाव: चन्द्र

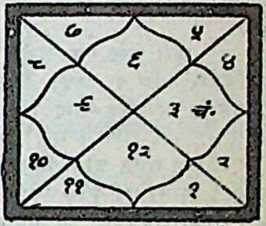


६७६

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को धन का यथेष्ठ लाभ होता है और वह धर्म का पालन भी करता है। उसे समय-समय पर दैवी सहायताएँ भी मिलती रहती हैं। फलतः उसे बहुत भाग्यवान समझा जाता है। उसे आकस्मिक धन का भी बहुत अधिक लाभ होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं नीचदृष्टि से मित्र मंगल की तुला राशि में तृतीय-भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है तथा पराक्रम की वृद्धि की ओर भी उसका विशेष ध्यान नहीं जाता।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्नः दशम भावः चन्द्र

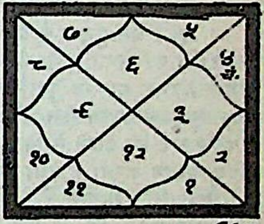


६६६

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से पूर्ण सफलता, सहयोग, स्नेह, सुख, सम्मान और लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, प्रतिष्ठित और यशस्वी होता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्र-दृष्टि से गुरु की धनु राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता के पक्ष से भी लाभ होता है तथा भूमि, मकान आदि का सुख भी मिलता है। संक्षेप में, ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्नः एकादशभावः चन्द्र

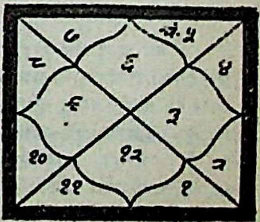


६६८

ग्यारहवें लाभ भवन में अपनी ही कर्क राशि पर स्थित स्वक्षेत्री चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को लाभ के क्षेत्र में यथेष्ट सफलता मिलती है। वह अपने मनोबल द्वारा पर्याप्त धन कमाता है तथा प्रसन्न रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान पक्ष में वैमनस्य तथा विद्या के पक्ष में कमी बनी रहती है। परन्तु वह अपनी चतुराई द्वारा अन्य क्षेत्रों में उन्नति करता चला जाता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्नः द्वादशभावः चन्द्र



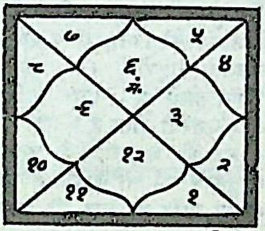
६६९

बारहवें व्ययस्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक खर्च करता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से पर्याप्त लाभ भी उठाता है। आमदनी और खर्च बराबर रहने के कारण उसके मन में कभी-कभी चिन्ताएं भी घर कर लेती हैं। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में षष्ठ भाव को देखता है, अतः वह खर्च एवं नम्रता की शक्ति द्वारा शत्रु-पक्ष में सफलता प्राप्त करता है। बीमारी अथवा अन्य प्रकार के झंझटों में भी उसका धन खर्च होता है।

'कन्या' लग्न में 'मंगल' का फल

जिस जातक जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: प्रथमभाव: मंगल

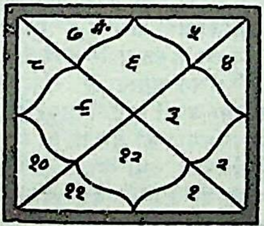


६८०

पहले, केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित अष्टमेश मंगल के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी आ जाती है, साथ ही भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता एवं भूमि-मकान के सुख में कुछ कमी आती है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा आठवीं दृष्टि से अपनी ही मेष राशि में अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संघर्षों से मुकाबला करते हुए आगे बढ़ता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: द्वितीयभाव: मंगल

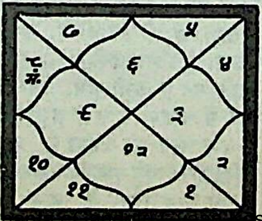


६८१

दूसरे धन-कुटुम्ब के स्थान में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी मिलती है और वह कठिन पुरुषार्थ करता है। चौथी उच्च दृष्टि से शत्रु राशि में पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि की उन्नति के लिए अधिक प्रयत्न करता है तथा सन्तान पक्ष से कुछ कष्ट के साथ उन्नति मिलती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है तथा रहन-सहन ठाठ-बाट का होता है। आठवीं शत्रु दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्योन्नति तथा धर्मपालन में कुछ कमी तथा असन्तोष रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कन्यालग्न: तृतीयभाव मंगल

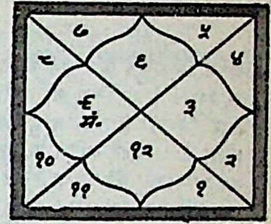


६८२

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपनी वृश्चिक राशिगत व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख में कमी प्राप्त होती है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। साथ ही आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। चौथी शत्रुदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रुपक्ष पर प्रभाव रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं एवं आठवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता के सुख में कमी आती है तथा राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में विशेष परिश्रम करने पर भी थोड़ी सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कन्यालग्न: चतुर्थभाव: मंगल

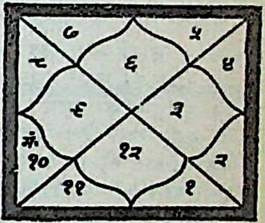


६८३

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से माता, भूमि एवं मकान के सुख में कमी आती है। भाई-बहिन का सुख भी कम मिलता है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से कुछ परेशानी के साथ शान्ति मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ता है तथा आठवीं नीचदृष्टि से मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में एकादशभाव को देखने से लाभ के मार्ग में कुछ कठिनाइयों का अनुभव होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो, उसे और जन्म-कुण्डली के 'पंचमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: पंचमभाव: मंगल

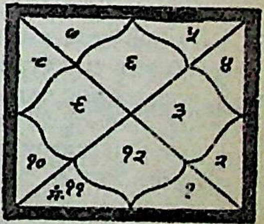


६८४

पाँचवें त्रिकोण, विद्या तथा सन्तान के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित अष्टमेश तथा उच्च के शनि के प्रभाव से जातक को सन्तान के पक्ष में कुछ परेशानी के साथ शक्ति मिलती है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति की वृद्धि होती है। सातवीं नीचदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं तथा आठवीं मित्रदृष्टि से व्यवसाय को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है और बाहरी स्थानों के सम्पर्क से लाभ प्राप्त होता है व प्रभाव में वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कन्यालग्न: षष्ठभाव: मंगल

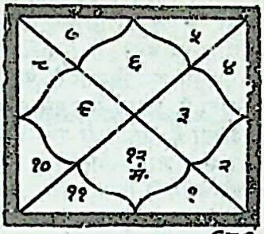


६८५

छठे शत्रु एवं रोग स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करता है। वह पुरुषार्थी तथा परिश्रमी होता है एवं भाई-बहिन से कुछ विरोध प्राप्त करता है। आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में उसे शक्ति मिलती है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः भाग्य एवं धर्म के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से कम सम्बन्ध रहता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में कुछ परेशानी रहती है और रक्त-विकार आदि रोग होते हैं।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: सप्तमभाव: मंगल

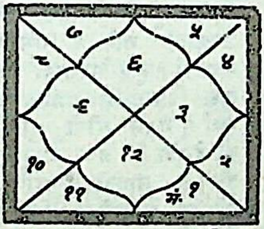


६८६

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित अष्टमेश मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से कष्ट मिलता है तथा आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है। भाई-बहिन के सुख में उतार-चढ़ाव आता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पुरुषार्थ द्वारा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ परेशानी के साथ उन्नति प्राप्त होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में कुछ परेशानी के साथ हिम्मत की शक्ति मिलेगी एवं आठवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन-संचय एवं कुटुम्ब के सुख में कमी बनी रहेगी।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कन्यालग्न: अष्टमभाव: मंगल

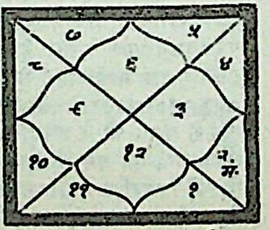


६८७

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के स्थान में अपनी मेष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। यहाँ से मंगल चौथी नीचदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी के पक्ष में कुछ कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-संचय तथा कुटुम्ब के सुख में कुछ असन्तोष रहता है। आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में कुछ वृद्धि होती है तथा गुप्त हिम्मत अधिक बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: नवमभाव: मंगल

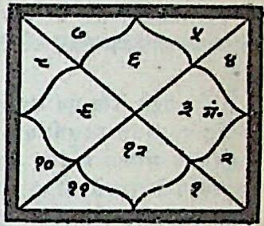


६८८

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के स्थान में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित अष्टमेश मंगल के प्रभाव से जातक को भाग्य तथा धर्म के पक्ष में कुछ कमी प्राप्त होती है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीयभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ भाई-बहिनों की शक्ति प्राप्त होती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ कमी का अनुभव होता है, परन्तु सामान्यतः जीवन ठाठ-बाट के साथ व्यतीत होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: दशमभाव: मंगल

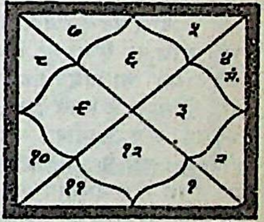


६८९

दसवें केन्द्र, राज्य एवं पिता के स्थान में अपने शत्रु बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सम्मान, सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति भी मिलती है, परन्तु भाई बहिन के सम्बन्ध में कुछ कमी बनी रहती है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अत: शरीर में कुछ विकार बना रहता है, परन्तु हिम्मत अधिक होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ-भाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान आदि का त्रुटिपूर्ण सुख मिलता है तथा आठवीं उच्चदृष्टि से पंचमभाव को देखने से संतान पक्ष में भी कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है तथा विद्या-बुद्धि की अधिक वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: एकादशभाव: मंगल



६९०

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्कराशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाई आती है तथा आयु एवं पुरातत्त्व के पक्ष में भी कुछ कमी रहती है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अत: धन-संचय में कुछ कमी तथा कौटुम्बिक पक्ष में कुछ क्लेश उत्पन्न होता है। सातवीं उच्चदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान के क्षेत्र में कुछ परेशानी के साथ सफलता मिलती है तथा विद्या-बुद्धि के पक्ष में उन्नति रहती है। आठवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रुपक्ष पर प्रभाव प्राप्त होता है। ऐसा जातक बहुत बोलने वाला, हिम्मती तथा बहादुर होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: द्वादशभाव: मंगल



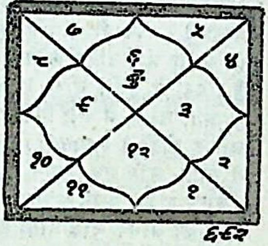
बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ शक्ति मिलती है। साथ ही आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं, यहाँ से मंगल चौथीदृष्टि से अपनी राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: भाई-बहिन का सामान्य सुख मिलता है तथा पराक्रम की साधारणत: वृद्धि होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रुपक्ष पर कुछ कठिनाई के साथ प्रभाव

होता है एवं आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के पक्ष में कुछ कष्ट रहता है तथा व्यवसाय में परिश्रम एवं कठिनाइयों के योग से उन्नति प्राप्त होती है। ऐसे ग्रह-स्थिति वाले व्यक्ति को उदर एवं इन्द्रिय विकारों का सामना भी करना पड़ता है।

'कन्या' लग्न में 'बुध' का फल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: प्रथमभाव: बुध

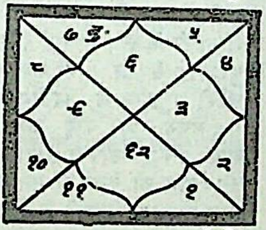


६६२

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपनी ही कन्या राशि पर स्थित स्वक्षेत्री बुध के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौन्दर्य में वृद्धि होती है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से भी सुख, सहयोग, सफलता, सम्मान एवं लाभ की प्राप्ति होती है। यहाँ से बुध सातवीं नीच-दृष्टि से गुरु की मीन राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री पक्ष तथा व्यवसाय के क्षेत्र में त्रुटि का योग बनता है। उसे भोगादि सुखों की भी समुचित उपलब्धि नहीं होती तथा अत्यधिक स्वाभिमानी होने के कारण व्यवसाय में भी उन्नति नहीं मिलती।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: द्वितीय भाव: बुध

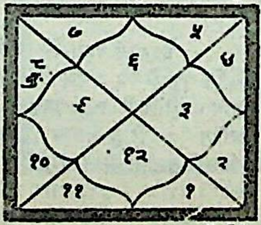


६६३

दूसरे धन-कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने बुद्धि-बल से धन का विशेष संग्रह करता है तथा कुटुम्ब का सुख भी पाता है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय पक्ष से भी यश, मान, सहयोग, सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। उसका रहन-सहन रईसी ढंग का होता है और वह धनी तथा सुखी भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कन्यालग्न: तृतीयभाव: बुध

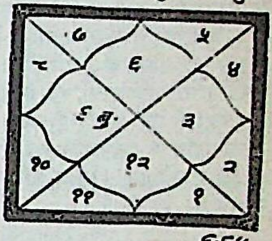


६६४

तीसरे भाई एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। उसे पिता, राज्य व व्यवसाय के पक्ष में भी सफलता मिलती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की उन्नति होती है तथा वह धर्म का पालन भी करता है। ऐसा व्यक्ति सुखी, यशस्वी, धनी, धार्मिक, पराक्रमी तथा प्रभावशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कन्यालग्न: चतुर्थभाव: बुध

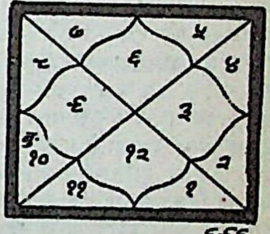


६६५

चौथे केन्द्र, माता एवं सुख के स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। साथ ही उसे शारीरिक-सौन्दर्य एव शान्ति-सुखपूर्ण वातावरण मिलता है। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी ही मिथुन राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को पिता की ओर से सुख मिलता है, राज्य की ओर से सम्मान की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता एवं उन्नति प्राप्त होती रहती है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कन्यालग्न: पंचमभाव: बुध

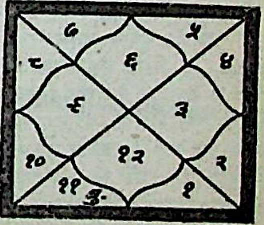


६६६

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में यथेष्ट सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है। वह अपनी विद्या-बुद्धि के बल पर उच्च पद को पाता है तथा अनेक प्रकार के प्रशंसनीय कार्य करता है। यहाँ से बुध सातवीं शत्रु-दृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक की आमदनी में वृद्धि होती रहती है। वह व्यवसाय, पिता एवं राज्य के द्वारा भी सहयोग एवं लाभ प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति सुन्दर, स्वाभिमानी, सुखी तथा धनी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: षष्ठभाव: बुध

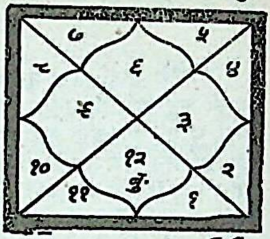


६६७

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में विवेक तथा अनेक प्रकार की युक्तियों द्वारा काम निकालता है। उसे अपनी ननसाल के पक्ष से कुछ शक्ति मिलती है। ऐसे जातक को शारीरिक-सौन्दर्य में कमी तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से कुछ असन्तोष बना रहता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि मे द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे यथेष्ट लाभ एवं सुख प्राप्त होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्नः सप्तमभावः बुध

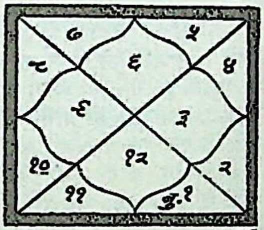


६६८

सातवें केन्द्र, स्त्री एवं व्यवसाय के स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपनी स्त्री के व्यक्तित्व के सम्मुख स्वयं को कुछ हीन-सा अनुभव करता है तथा व्यवसाय के पक्ष में भी कठिन परिश्रम करना पड़ता है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के द्वारा सामान्य सफलता एवं लाभ तथा सहयोग प्राप्त होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से अपनी ही कन्या राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक-सौन्दर्य, मान, प्रभाव एवं सुख-शान्ति में भी कुछ कमी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्नः अष्टमभावः बुध

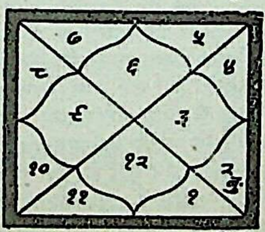


६६९

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सुख एवं सौन्दर्य में कमी आ जाती है। उसे पिता का भी अल्प-सुख प्राप्त होता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का अनुभव होता है। वह विदेश अथवा घर से बाहर के अन्य स्थानों में रहकर भी जीविका चलाता है। ऐसे व्यक्ति की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक अपने कुटुम्ब से प्रेम करता है तथा धन की वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्नः नवमभावः बुध

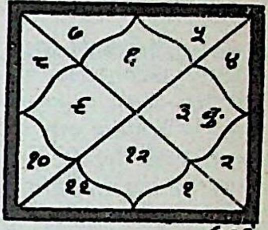


७००

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है। वह पिता से सहयोग एवं सुख प्राप्त करता है। राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सम्मान, सफलता एवं धन की प्राप्ति होती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्र-दृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा जातक सुखी, धनी, सज्जन, यशस्वी, तथा धार्मिक होता है। उसको उन्नति स्वयमेव होती रहती है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: दशमभाव: बुध

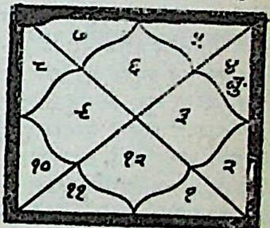


६०१

दसवें केन्द्र, राज्य एवं पिता के स्थान में अपनी ही मिथुन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री बुध के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा शक्ति एवं सुख की प्राप्ति होती है। वह राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में यथेष्ट सफलता, यश व लाभ अर्जित करता है। ऐसा व्यक्ति सुन्दर शरीर वाला, प्रभावशाली, स्वाभिमानी, सुखी तथा उन्नतिशील होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः उसे माता, भूमि एवं मकान आदि का भी पूर्ण सुख प्राप्त होता है। उसका घरेलू जीवन शान्ति, सुख एवं वैभवपूर्ण बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश-भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: एकादशभाव: बुध

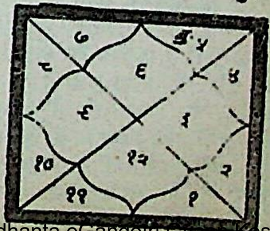


६०२

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक आमदनी के श्रेष्ठ योग को प्राप्त करता है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र से भी सुख, सफलता एवं सम्मान पाता रहता है। उसे शारीरिक-सौन्दर्य, प्रभाव, मनोबल एवं सुख की प्राप्ति भी होती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से शनि की मकर राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक सन्ततिवान् होता है तथा उसे विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में भी विशेष उन्नति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति विद्वान्, बुद्धिमान्, वाणी का धनी, सुखी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: द्वादशभाव: बुध



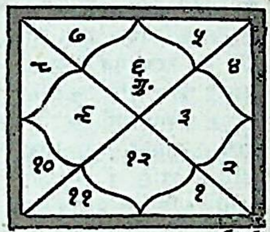
६०३

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, परन्तु उसे बाहरी स्थानों के सम्पर्क से सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति देश-विदेश की यात्राएं करता है, परन्तु उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र से असन्तोष बना रहता है तथा कभी-कभी हानि भी उठानी पड़ती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में देखता है, अतः वह अपने शारीरिक-बल एवं अन्य युक्तियों द्वारा शत्रुपक्ष पर सफलता प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति विवेकी, बुद्धिमान, तथा दूरदर्शी भी होता है।

'कन्या' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' से 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: प्रथमभाव: गुरु

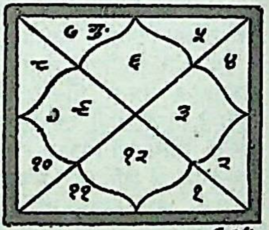


६०६

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शारीरिक--सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। वह माता, भूमि, मकान आदि के सुख को भी पाता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं नीचदृष्टि से अपने शत्रु शनि की मकर राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः सन्तान एवं विद्या-बुद्धि के पक्ष में परेशानियाँ बनी रहती हैं। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के द्वारा सुख एवं लाभ प्राप्त होता है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्योन्नति में सामान्य बाधाएं आती हैं तथा धर्म के पक्ष में भी कुछ कमी बनी रहती है, परन्तु सामान्यतः ऐसा जातक धनी तथा सज्जन होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: द्वितीय भाव: गुरु

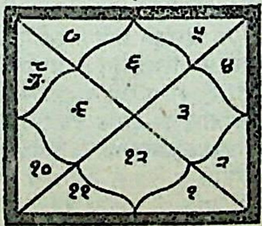


६०७

दूसरे धन-कुटुम्ब के भवन में अपने सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है, परन्तु माता एवं स्त्री के सुख में कुछ परेशानियाँ आती हैं। जबकि व्यवसाय के पक्ष में उन्नति होती रहती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। नवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से पिता द्वारा सुख मिलता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के द्वारा सुख, प्रतिष्ठा, सम्मान, प्रभाव-लाभ एवं धन की प्राप्ति होती रहती है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: तृतीय भाव: गुरु



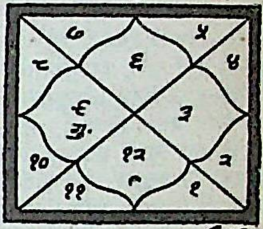
६०८

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। साथ ही माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ सफलता मिलती है। स्त्री सुन्दर होती है तथा घरेलू सुख में वृद्धि बनी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ अवरोधों के साथ

उन्नति होती रहती है। नवीं उच्च तथा मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: चतुर्थभाव: गुरु

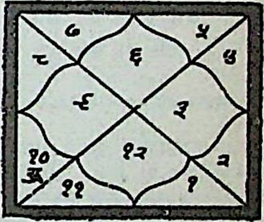


६०६

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपनी ही धनु राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। उसे अपनी गृहस्थी का पूर्ण सुख मिलता है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में निरन्तर सफलता एवं आनन्द की उपलब्धि होती रहती है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध सुखकर एवं लाभदायक बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: पंचम भाव: गुरु

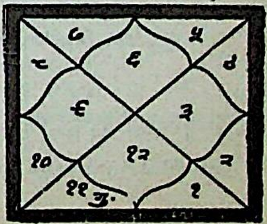


६०८

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक सन्तान-पक्ष से कष्ट का अनुभव करता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में त्रुटि प्राप्त करता है। उसे स्त्री तथा माता के पक्ष से भी कमजोरी रहती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः भाग्य एवं धर्म की सामान्य वृद्धि होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण जातक अपनी दिमागी शक्ति से आय को बढ़ाने का प्रयत्न करता रहता है तथा लाभ में वृद्धि भी होती है, परन्तु मस्तिष्क में परेशानियाँ बनी रहती हैं। नवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक-शक्ति, मान, प्रभाव तथा कार्य-कुशलता प्राप्त होती है। संक्षेप में जातक सुखी और सामान्य धनी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: षष्ठभाव: गुरु

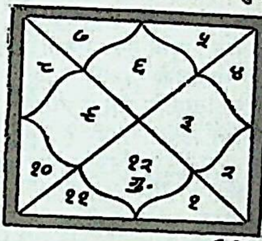


छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शत्रुपक्ष में नम्रता द्वारा अपना काम निकालना पड़ता है तथा स्त्री, माता, भूमि, एवं मकानादि के सुख-सम्बन्ध में कमजोरी तथा कठिनाइयाँ बनी रहती हैं। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से कुछ सफलता, सुख एवं यश मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से व्ययभाव को देखने

के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। नवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: सप्तमभाव: गुरु

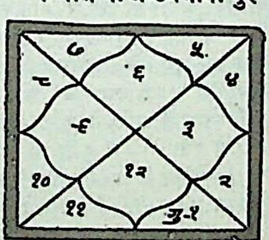


६१०

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी मीन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से पर्याप्त सुख एवं लाभ प्राप्त होता है। साथ ही माता, भूमि, मकान आदि का सुख भी यथेष्ट मिलता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं उच्चदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी में बहुत वृद्धि होती है तथा अपने स्थान पर रहकर ही सुख-पूर्वक लाभ प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक-सुख, मान एवं सौन्दर्य की प्राप्ति होती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख मिलता है और पराक्रम की वृद्धि होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कन्यालग्न: अष्टमभाव: गुरु

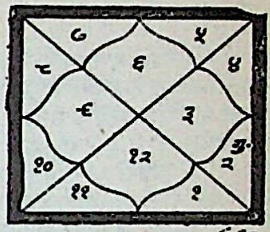


६११

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का अल्प लाभ होता है, परन्तु स्त्री, एवं व्यवसाय के सुख में भी कमी आ जाती है। यहाँ से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन-वृद्धि के लिये विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा कुटुम्ब का सुख भी कम मिलता है। नवीं दृष्टि से चतुर्थभाव को स्वराशि में देखने से माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है, परन्तु उसमें कुछ परेशानियाँ भी आती हैं।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कन्यालग्न: नवमभाव: गुरु

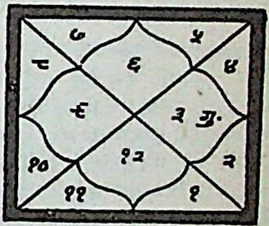


६१२

नवं त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति कुछ कठिनाइयों के साथ होती है तथा साथ ही स्त्री तथा व्यवसाय के सुख में सामान्य कमी आती है, परन्तु भूमि, मकान एवं माता का सुख तथा लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः शारीरिक सुख एवं सम्मान की वृद्धि होगी तथा भोगेच्छा प्रबल रहेगी। सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों आदि के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होगी तथा नवीं नीच-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या के पक्ष में कुछ कमजोरी बनी रहेगी।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कन्यालग्न: दशम भाव: गुरु

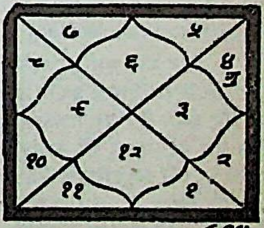


६१३

दसवें केन्द्र, माता तथा राज्य के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से पिता का सुख मिलेगा, राज्य से सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा व्यवसाय से लाभ होगा। साथ ही स्त्री सुन्दर तथा प्रभावशाली होगी। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः धन-कुटुम्ब का सामान्य सुख मिलेगा। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान का अच्छा सुख मिलेगा तथा नवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष में शान्ति की नीति से विजय प्राप्त करेगा तथा झगड़ों द्वारा लाभ उठाएगा।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: एकादशभाव: गुरु

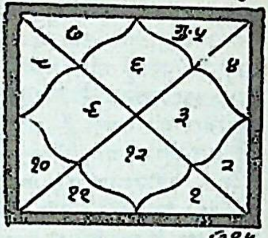


६१४

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक को आमदनी की विशेष शक्ति प्राप्त होती है तथा माता, भूमि, मकान आदि का भी श्रेष्ठ लाभ मिलता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः भाई-बहिन का सुख मिलेगा तथा पराक्रम की वृद्धि होगी। सातवीं नीच-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से कुछ परेशानी तथा विद्या के क्षेत्र में कमी रहेगी। मस्तिष्क भी घरेलू कारणों से चिन्तित रहेगा। नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में सप्तमभाव को देखने के कारण सुन्दर एवं योग्य स्त्री मिलेगी, व्यवसाय में उन्नति प्राप्त होगी तथा भोग आदि का भी श्रेष्ठ सुख मिलेगा।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कन्यालग्न: द्वादशभाव: गुरु



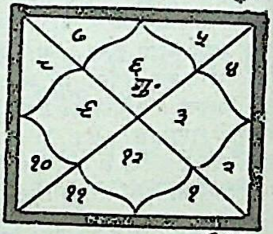
६२५

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होगा, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख, सम्मान एवं लाभ की प्राप्ति होगी। स्त्री और घर के सुख में भी न्यूनता आयेगी। पाँचवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सामान्य सुख प्राप्त होगा। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुपक्ष में नम्रता से काम निकालना होगा तथा नवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होगा। सामान्यत: ऐसा जातक सुखी जीवन व्यतीत करता है।

'कन्या' लग्न में 'शुक्र' का फल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कन्यालग्न: प्रथमभाव: शुक्र

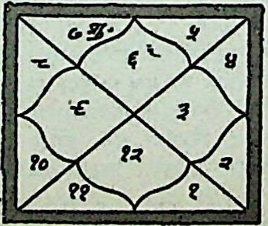


६२६

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक को धन एवं कौटुम्बिक सुख के सम्बन्ध में कुछ कमी रहती है और वह धनान्नति के लिये धर्म की चिन्ता नहीं करता। उसे शारीरिक-सुख सामान्य रूप में प्राप्त होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं उच्चदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अत: स्त्री सुन्दर एवं भाग्यवान् मिलती है तथा व्यवसाय में भी उन्नति होती है। भोगादि का सुख भी खूब मिलता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कन्यालग्न: द्वितीयभाव: शुक्र

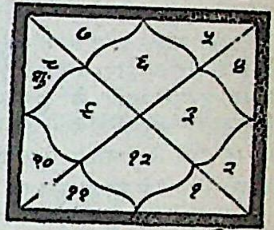


६२६

दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में अपनी ही तुला राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब में वृद्धि होती है। वह भाग्यशाली होता है तथा धन के द्वारा धर्म का पालन भी करता है और यश पाता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की मेष राशि में अष्टम-भाव को देखता है, अत: आयु एवं पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसा जातक धनी तथा चतुर होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: तृतीयभाव: शुक्र

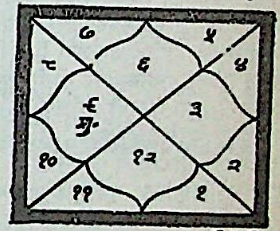


६१८

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित भाग्येश शुक्र के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। पराक्रम के द्वारा वह अपने धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि भी करता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृषभ राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य एवं धर्म की बहुत वृद्धि होती है। ऐसा जातक सुखी, धनी, धार्मिक तथा भाग्यवान् होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: चतुर्थभाव: शुक्र

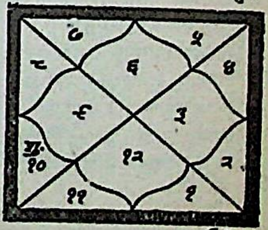


६१९

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित भाग्येश शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि मकान आदि का श्रेष्ठ लाभ प्राप्त होता है और धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को बुध की मिथुन राशि में देखता है, अतः उसे पिता की शक्ति मिलती है, राज्य के क्षेत्र में सम्मान तथा व्यवसाय के पक्ष में लाभ होता है। वह धर्म का पालन भी करता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: पंचमभाव: शुक्र

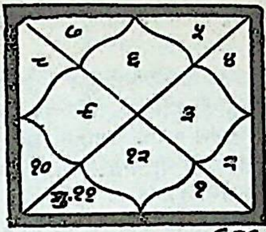


६२०

पाँचवें त्रिकोण, विद्या तथा सन्तान के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित भाग्येश शुक्र के प्रभाव से जातक को सन्तान द्वारा श्रेष्ठ लाभ होता है तथा विद्या-बुद्धि की वृद्धि के साथ ही धन, भाग्य तथा धर्म की भी उन्नति होती है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रु-दृष्टि से चन्द्रमा की मकर लग्न में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक की आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धि एवं चातुर्य के बल पर निरन्तर उन्नति करता चला जाता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: षष्ठभाव: शुक्र

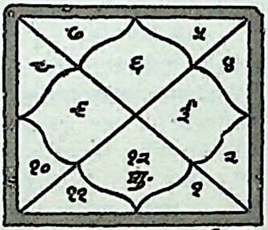


६२१

छठे शत्रु स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित भाग्येश शुक्र के प्रभाव से जातक के भाग्य में कुछ कमी आती है तथा धन एवं कुटुम्ब का सुख भी कम रहता है। उसे धर्म में भी अरुचि रहती है। परन्तु वह अपने चातुर्य द्वारा भाग्य तथा धन की उन्नति करता है और परिश्रम द्वारा शत्रु पक्ष में सफलता पाता है तथा झगड़े, मुकद्दमे आदि के द्वारा लाभ उठाता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रु-दृष्टि से व्ययभाव को देखता है, अत: खर्च अधिक रहने से मानसिक चिन्ताएँ बनी रहती हैं, परन्तु बाहरी स्थानों से अच्छा सुख एवं लाभ मिलता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: सप्तम भाव: शुक्र

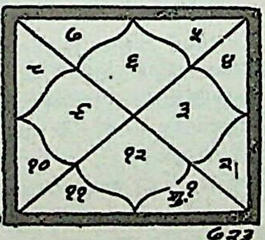


६२२

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री प्राप्त होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी पर्याप्त सफलता मिलती है। वह धर्म का पालन करने वाला, भाग्यवान्, भोगी, सुखी तथा धनी होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र बुध की कन्या राशि में प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक के शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी आती है तथा धन की वृद्धि के लिए वह शारीरिक-सुख की चिन्ता नहीं करता।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: अष्टमभाव: शुक्र

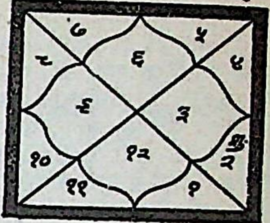


६२३

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का भाग्य कमजोर रहता है, धन-संग्रह में परेशानी होती है। धर्म का यथावत् पालन नहीं होता तथा कुटुम्ब से भी क्लेश मिलता है, जबकि उसे आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति का लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से अपनी तुला राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अत: जातक गुप्त चतुराई एवं कठोर परिश्रम से धनोपार्जन करता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: नवमभाव: शुक्र

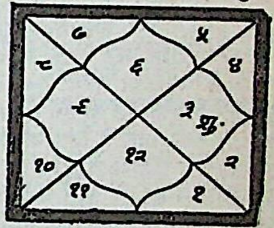


६२४

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपनी ही वृषभ राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक बहुत भाग्यशाली होता है तथा धर्म का पालन भी करता है। उसे धन का पर्याप्त सुख मिलता है तथा साथ ही यश व सम्मान में वृद्धि भी होती है। यहाँ से शुक्र सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः उसे भाई-बहिन की शक्ति प्राप्त होती है तथा पुरुषार्थ में वृद्धि होती है। उसे धन एवं कुटुम्ब का भी पूर्ण सुख मिलता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: दशमभाव: शुक्र

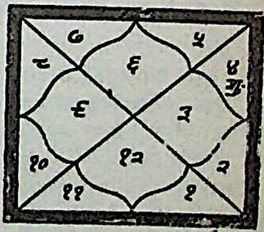


६२५

दसवें केन्द्र, पिता तथा राज्य भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक पिता की विशेष शक्ति प्राप्त करता है। उसे राज्य द्वारा उन्नति एवं सम्मान तथा व्यवसाय द्वारा लाभ मिलता है। वह अपने श्रेष्ठ कर्म एवं चातुर्य के बल पर धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि करता है तथा यशस्वी होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपने सामान्य शत्रु गुरु की धनु राशि में चतुर्थभाव को देखता है। उसके प्रभाव से जातक को कुछ असन्तोष के साथ माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: एकादशभाव: शुक्र

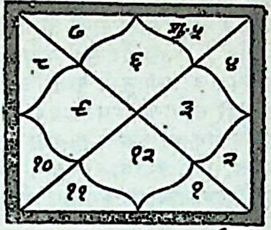


६२६

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। वह बहुत भाग्यवान्, धनवान्, कुटुम्बवान्, न्यायी तथा धर्म का पालन करने वाला होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान के पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि की उन्नति होती है। ऐसा जातक चतुर, निपुण, योग्य, वाणी में प्रभाव रखने वाला, यशस्वी तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: द्वादशभाव: शुक्र



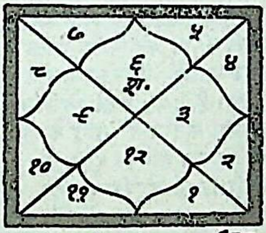
६२७

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, भाग्योन्नति में बाधा पड़ती है तथा धन का संचय नहीं हो पाता। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी हानि होती है और कुटुम्ब का सुख भी नहीं मिलता। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में षष्ठभाव को देखता है, अत: शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है तथा झगड़े-मुकद्दमे आदि से लाभ प्राप्त होता है।

'कन्या' लग्न में 'शनि' का फल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कन्यालग्न: प्रथमभाव: शनि

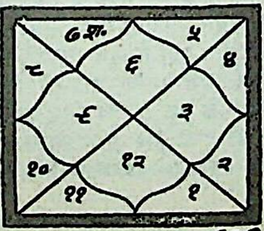


६२८

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को शरीर में रोग तथा परेशानी-सी रहती है। विद्या बुद्धि का सुख मिलता है। सन्तान का सुख होते हुए भी उससे कुछ वैमनस्य रहता है तथा शत्रु-पक्ष में विजय मिलती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अत: भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है तथा पराक्रम वृद्धि के लिए परिश्रम करना पड़ता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के पक्ष में कुछ वैमनस्य रहेगा तथा व्यवसाय में मेहनत करनी पड़ेगी। दसवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता की ओर से सामान्य परेशानी रहेगी तथा राज्य एवं व्यापार के क्षेत्र में सफलता मिलेगी।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: द्वितीयभाव: शनि

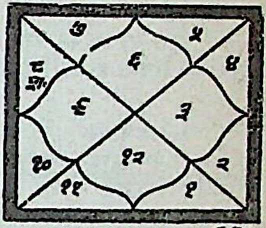


६२९

दूसरे धन-कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित उच्च के शनि के प्रभाव से जातक बुद्धि तथा परिश्रम द्वारा बहुत धन कमाता है तथा कुटुम्ब स्थान में वृद्धि होने पर भी उससे कुछ परेशानी रहती है। विद्या की वृद्धि तथा सन्तान-पक्ष से परेशानी रहती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अत: माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ कमी रहेगी। सातवीं नीचदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ कमी रहेगी। दसवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आयेंगी। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक प्रत्येक क्षेत्र में परेशान रहता है, परन्तु शत्रुपक्ष पर विजयी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: तृतीयभाव: शनि

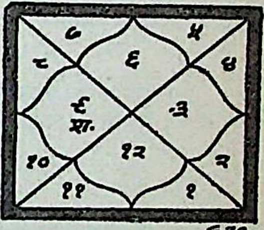


६३०

तीसरे धन कुटुम्ब के स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है, शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है, परन्तु भाई-बहिनों से परेशानी बनी रहती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष में सामान्य कठिनाइयाँ आती हैं तथा विद्या-बुद्धि की वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण परिश्रम द्वारा भाग्य की उन्नति होती है एवं दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च के सम्बन्ध में कठिनाइयों का अनुभव होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी असन्तोष बना रहता है। संक्षेप में, ऐसा जातक संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: चतुर्थभाव: शनि

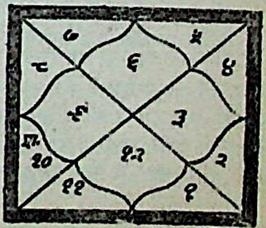


६३१

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख के स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान के सुखों में कमी रहती है तथा सन्तान-पक्ष से भी परेशानी होती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है, परन्तु झगड़े-झंझटों के कारण सुख-दुःख दोनों ही प्राप्त होते रहते हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में परिश्रम द्वारा सफलता, यश एवं लाभ की प्राप्ति होती है। दसवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शरीर में कुछ बीमारी रहती है, परन्तु प्रभाव एवं परिश्रम की वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: पंचमभाव: शनि



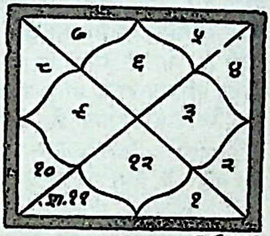
६३२

पाँचवें त्रिकोण, विद्या तथा सन्तान के स्थान में अपनी ही मकर राशि में स्थित शनि के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या तथा बुद्धि का कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता है, साथ ही सन्तान पक्ष से कुछ परेशानी भी होती है। वह अपनी गुप्त-युक्तियों के बल पर शत्रु-पक्ष में भी सफलता प्राप्त करता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री-पक्ष से भी कुछ परेशानी रहेगी तथा व्यवसाय में कठिनाइयाँ आती रहेंगी। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादश-भाव को देखने के कारण बुद्धि के परिश्रम द्वारा लाभ [illegible] तथा दसवीं शत्रु-दृष्टि

से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। ऐसा जातक संघर्षपूर्ण परन्तु सुखी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: षष्ठभाव: शनि

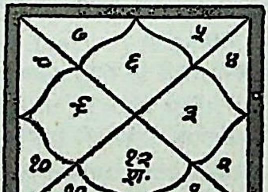


६३३

छठे शत्रु स्थान में अपनी ही कुम्भ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में अपने बुद्धि-बल पर सफलता प्राप्त करता है, परन्तु उसे विद्या तथा सन्तान के पक्ष में सामान्य कठिनाइयाँ आती हैं। यहाँ से शनि तीसरी नीच-दृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु के क्षेत्र में अनेक बार संकटों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की हानि होती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च की परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी सुखद नहीं रहता। दसवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों से परेशानी रहती है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: सप्तमभाव: शनि

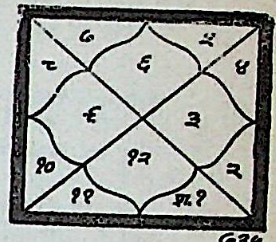


६३४

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उसकी मूत्रेन्द्रिय में विकार होता है और वह विद्या के उपयोग से परिवार का पालन करता है। ऐसे व्यक्ति को सन्तान-पक्ष से भी परेशानी रहती है परन्तु शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः बुद्धि द्वारा जातक की भाग्योन्नति होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शरीर में रोग रहते हैं तथा प्रभाव की वृद्धि भी होती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता के सुख में कमी रहती है तथा भूमि एवं मकान के सुख में भी न्यूनता आती है। ऐसा जातक अपने जन्म-स्थान में रहते समय परेशानियों का अनुभव करता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: अष्टमभाव: शनि

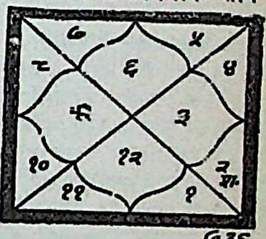


६३४

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु मंगल की राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के सम्बन्ध में अनेक बार खतरों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की हानि होती है। उसे सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है, शत्रु-पक्ष से परेशानी रहती है तथा विद्या के पक्ष में कमी रहती है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी दृष्टि से दशमभाव को देखता है, अत: पिता एवं राज्य के पक्ष में कुछ झंझट बना रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में बुद्धि-बल से सामान्य सफलता मिलती है। सातवीं उच्च-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से जातक धन-जन का सुख पाने के लिए कठोर परिश्रम करता है। दसवीं दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है, परन्तु चतुराई अधिक होती है। ऐसे व्यक्ति का जीवन घोर अशान्तिपूर्ण बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: नवमभाव: शनि

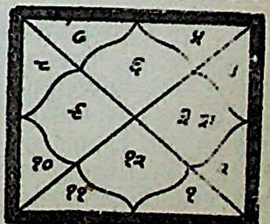


६३५

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक अपने बुद्धि के बल पर भाग्योन्नति करता है तथा धर्म का सामान्य रूप से पालन करता है। उसे सन्तान तथा विद्या के पक्ष में भी सफलता मिलती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अत: जातक लाभ-प्राप्ति के लिए विशेष प्रयत्न करता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन से कुछ वैमनस्य रहता है। दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष में विजय प्राप्त होती है तथा झगड़े-झंझट, मुकद्दमे आदि से लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा नीतिज्ञ, चतुर तथा प्रभावशाली बातचीत करने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: दशमभाव: शनि



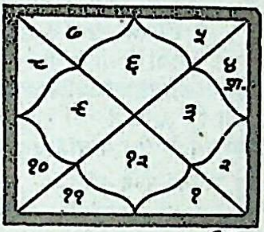
६३६

दसवें केन्द्र, पिता तथा राज्य के स्थान में बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक पिता के पक्ष से कुछ परेशानी पाता है तथा राज्य-पक्ष से सम्मान एवं व्यवसाय-पक्ष से लाभ उठाता है। उसे विद्या तथा सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अत: जातक को खर्च के मामले में असन्तोष रहता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी सुखद नहीं होता। सातवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता एवं भूमि के सुख में कुछ कमी आती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव

को देखने के कारण स्त्री के सुख में कमी आती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिन परिश्रम करने पर सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्नः एकादशभावः शनि

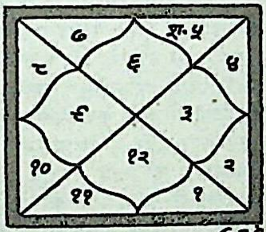


६३८

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी में खूब वृद्धि होती है तथा शत्रु-पक्ष से भी लाभ होता है। यहाँ से शनि तीसरी मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः शरीर में कुछ रोग बना रहता है तथा परिश्रम की शक्ति भी मिलती है। सातवीं-दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या की शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु कुछ परेशानी भी रहती है। दसवीं नीच-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक को आयु के सम्बन्ध में कठिन संघर्ष एवं कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की भी हानि होती है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्नः द्वादशभावः शनि



६३९

बारहवें व्ययभवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी परेशानी अनुभव होती है। यहाँ से शनि तीसरी उच्च तथा मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रुपक्ष पर प्रभाव रहता है तथा रोगादि पर भी कुछ परेशानियों के बाद विजय पाता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से बुद्धिबल द्वारा भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म में भी रुचि रहती है। ऐसा व्यक्ति बहुत शान से खर्च करने वाला होता है।

'कन्या' लग्न में 'राहु' का फल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्नः प्रथमभावः राहु

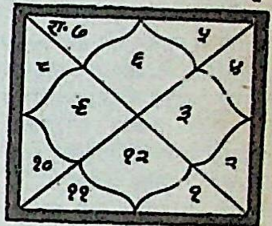


६४०

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को शारीरिक-शक्ति, स्वाभिमान तथा मनोबल की प्राप्ति होती है, परन्तु कभी-कभी शारीरिक-कष्टों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा जातक गहरी सूझ-बूझ वाला होता है। उसकी दिमागी शक्ति बढ़ी रहती है। वह अपनी उन्नति के लिए कठोर श्रम करता है। मानसिक रूप से कभी-कभी चिन्तित रहते हुए भी वह बड़े धैर्य से काम लेता है तथा उन्नति भी करता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: द्वितीयभाव: राहु

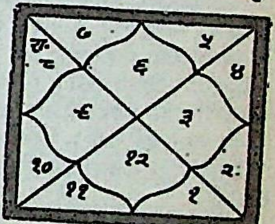


७४१

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब की ओर से परेशानी बनी रहती है। कभी-कभी उसे भारी आर्थिक-घाटा भी उठाना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति धन बढ़ाने के लिए गुप्त प्रयत्न तथा कठिन परिश्रम करता है, अतः वह कुछ धन का संचय भी कर लेता है तथा प्रकट रूप में धनवान् माना जाता है। उसे कभी-कभी आकस्मिक रूप से भी धन का लाभ होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीयभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: तृतीयभाव: राहु

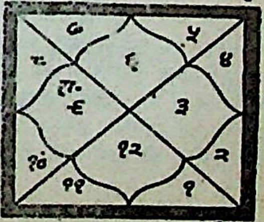


७४२

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के पक्ष में परेशानी, असन्तोष एवं कमी बनी रहती है। कभी-कभी विशेष संकट उपस्थित होने पर भी वह धैर्य धारण किए रहता है तथा अपनी गुप्त-युक्तियों एवं हिम्मत के बल पर सफलता प्राप्त करता है। वह भले-बुरे का विचार किये बिना अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: चतुर्थभाव: राहु

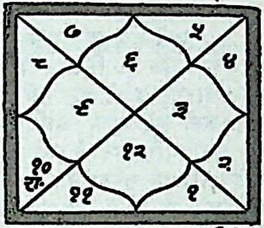


७४३

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को माता का सुख खूब प्राप्त होता है, परन्तु भूमि, मकान एवं घरेलू सुख-शान्ति में कमी बनी रहती है। कभी-कभी उसे घरेलू कारणों से घोर संकटों का सामना करना पड़ता है। मातृभूमि से वियोग अर्थात् परदेश में रहने का योग भी उपस्थित होता है। उसे मातृभूमि में कष्ट मिलते हैं, परन्तु बाहरी स्थानों में जाकर अपनी गुप्त योजनाओं द्वारा लाभ की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्नः पंचमभावः राहु

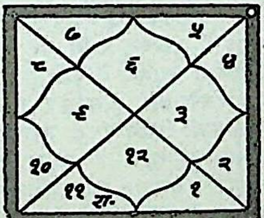


६४४

पाँचवें त्रिकोण, विद्या तथा सन्तान के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा विद्या के क्षेत्र में कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं। अधिक विद्वान् न होने पर भी जातक बातें करने में बड़ा चतुर होता है और सत्यासत्य की चिन्ता किये बिना अपना स्वार्थ-साधन करने में तत्पर रहता है। कभी-कभी उसका मस्तिष्क चिन्ताओं के कारण परेशान भी हो जाता है, परन्तु वह अपनी गुप्त-युक्तियों से लाभ उठाता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्नः षष्ठभावः राहु

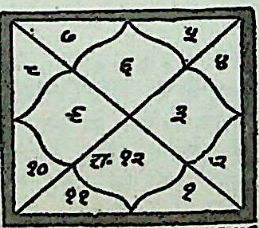


६४५

छठे शत्रु स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर प्रभावशाली बना रहता है तथा झगड़े-झंझटों में अपने युक्ति-बल से विजय पाता है। शत्रु एवं रोगादि के कारण जब कभी उसके ऊपर कठिन संकट घिरते हैं, तब वह अपनी हिम्मत तथा धैर्य से काम लेकर अपनी कमजोरी को प्रकट नहीं होने देता तथा उन पर नियन्त्रण भी प्राप्त कर लेता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्नः सप्तमभावः राहु

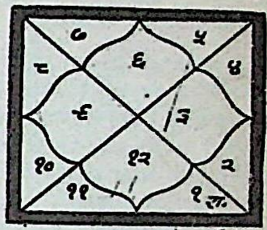


६४६

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वह अपने गुप्त-धैर्य एवं युक्तियों के बल पर किसी प्रकार अपना काम चलाता है तथा उन्नति पाने के लिए कठिन परिश्रम करता है। उसकी मूत्रेन्द्रिय में विकार होने की सम्भावना भी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: अष्टमभाव: राहु

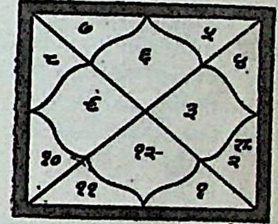


७४७

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने जीवन में कई बार खतरों का सामना करना पड़ता है और मृत्यु-तुल्य कष्ट भोगना पड़ता है । उसे पुरातत्त्व की भी हानि उठानी पड़ती है । ऐसे जातक के पेट में विकार होता है । चिन्ताएँ, परेशानियाँ उसे घेरे रहती हैं, परन्तु गुप्त-युक्ति, धैर्य एवं साहस के बल पर वह किसी प्रकार आगे बढ़ता है ।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: नवमभाव: राहु

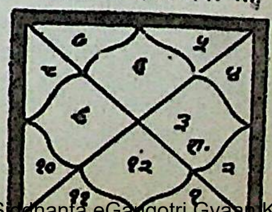


७४८

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक धर्म का यथाविधि पालन नहीं कर पाता तथा भाग्य की उन्नति करने के लिये भी कठोर परिश्रम करता है । कभी-कभी उसे भाग्य के क्षेत्र में कठिन संकटों का सामना करना पड़ता है तो कभी अपने धैर्य, चातुर्य एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर थोड़ी-बहुत उन्नति भी कर लेता है । ऐसे जातक का जीवन संघर्षमय बना रहता है ।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: दशमभाव: राहु

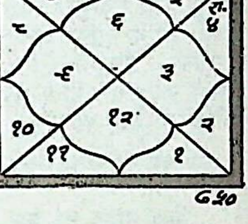


७४९

दसवें केन्द्र, पिता तथा राज्य के स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक पिता के साथ संघर्ष करता हुआ उन्नति प्राप्त करता है । राज्य के क्षेत्र में चातुर्य एवं युक्ति बल पर उसे सम्मान एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है तथा गुप्त-युक्तियों द्वारा वह व्यवसाय के क्षेत्र में भी पर्याप्त सफलता प्राप्त करता है । कभी-कभी उसे विशेष संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु बाद में स्थिति ठीक हो जाती है ।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: एकादशभाव: राहु

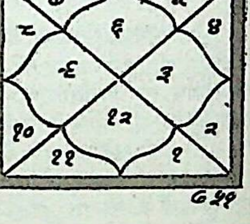


६५०

ग्यारहवें लाभ-भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है, परन्तु कठिनाइयों का सामना भी बहुत करना पड़ता है। कभी-कभी उसे विशेष लाभ हो जाता है तो कभी बहुत घाटा भी चला जाता है। अत्यधिक परिश्रम, धैर्य, साहस एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर वह लाभ उठाने का विशेष प्रयत्न करता है, परन्तु कभी-कभी वह धोखा भी खा जाता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: द्वादशभाव: राहु



६५१

बारहवें व्यय-स्थान म अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को खर्च के सम्बन्ध में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्पर्क से दुःख का अनुभव होता है। वह अपना खर्च चलाने के लिए विशेष परिश्रम करता है तथा गुप्त-युक्तियों, धैर्य एवं हिम्मत से भी काम लेता है। साथ ही कभी-कभी उसे आकस्मिक-धन की प्राप्ति भी हो जाती है।

'कन्या' लग्न में 'केतु' का फल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: प्रथमभाव: केतु

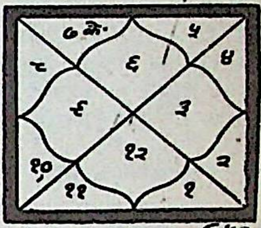


६५२

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को शारीरिक-कष्ट एवं चिन्ताओं का सामना करना पड़ता है तथा शरीर में कभी गहरी चोट लगने अथवा होने का योग भी बनता है। उसके शारीरिक-सौन्दर्य में भी कमी रहती है। ऐसे जातक में गुप्त हिम्मत, गुप्त युक्ति तथा गुप्त धैर्य बहुत पाया जाता है, अतः शरीर से कमजोर होते हुए भी वह अकड़ स्वभाव का होता है। वह कभी तेजी और कभी नरमाई से काम लेता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: द्वितीयभाव: केतु

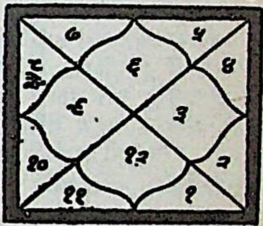


६५३

दूसरे धन-कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के धन में कमी आती है तथा कुटुम्ब से भी कष्ट प्राप्त होता है। कभी-कभी अचानक ही अधिक धन की हानि हो जाने के कारण चिन्ता रहती है तथा कभी-कभी अचानक ही धन का लाभ भी हो जाता है। वह धन की वृद्धि के लिए अथक परिश्रम तथा चातुर्य का प्रदर्शन करता है, परन्तु हर समय परेशान बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: तृतीयभाव: केतु

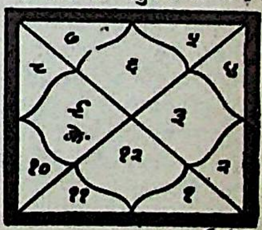


६५४

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के कारण परेशानी प्राप्त होती है, परन्तु पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है, अतः वह अपने प्रभाव की वृद्धि के लिये कठिन परिश्रम करता है। ऐसा व्यक्ति किसी संकट के समय हिम्मत नहीं हारता तथा बाहु-बल की शक्ति भी रखता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: चतुर्थभाव: केतु

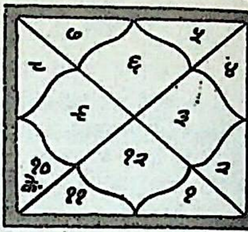


६५५

चौथे केन्द्र, माता, भूमि तथा सुख के स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर उच्च के केतु के प्रभाव से जातक को माता तथा भूमि, मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपना घरेलू जीवन शान, बुजर्गी तथा ठसक के साथ व्यतीत करता है और इनकी प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम भी करता है। कभी-कभी उसके घरेलू सुख में विशेष संकट आ जाता है तो कभी वृद्धि भी हो जाती है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: पंचमभाव: केतु

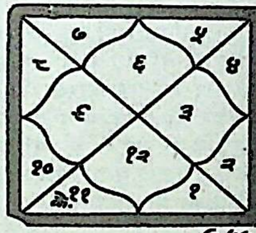


७५६

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से चिन्ता बनी रहती है तथा विद्या-प्राप्ति के लिये भी विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। ऐसा व्यक्ति बातचीत में बहुत उग्र होता है। वह अपनी विद्या-बुद्धि की कमी को स्वयं अनुभव भी करता है, परन्तु प्रकट में स्वयं को बड़ा समझदार तथा योग्य प्रदर्शित करता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: षष्ठभाव: केतु



७५७

छठे शत्रु तथा रोग-भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपना बहुत प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में गुप्त हिम्मत, धैर्य, युक्ति, अकड़ तथा निर्भयता से काम लेकर लाभ उठाता एवं सफलता प्राप्त करता है। उसे ननसाल पक्ष से परेशानी उठानी पड़ती है। ऐसा व्यक्ति कभी-कभी बड़ी बहादुरी का प्रदर्शन भी कर बैठता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: सप्तमभाव: केतु

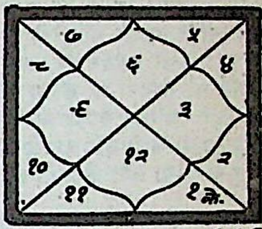


७५८

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु वह गुप्त-युक्तियों, धैर्य, साहस तथा बुद्धि के बल पर उन कठिनाइयों के निवारण का प्रयत्न करता है तथा सफलता भी पा लेता है। ऐसे व्यक्ति की मूत्रेन्द्रिय में विकार होता है और गृहस्थ-जीवन बड़ी कठिनाइयों से सफल हो पाता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: अष्टमभाव: केतु

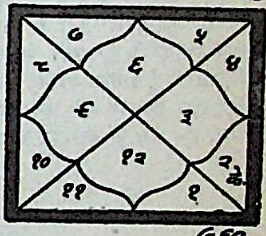


७५९

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपने जीवन में अनेक बार प्राणों के संकट का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की भी हानि होती है। पेट में कोई विकार रहता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी होता है, परन्तु कभी-कभी अत्यधिक चिन्तित भी हो जाता है। वह क्रोधी, धैर्यवान्, हिम्मती, तेजी से काम करने वाला तथा संघर्षशील होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्यालग्न: नवमभाव: केतु

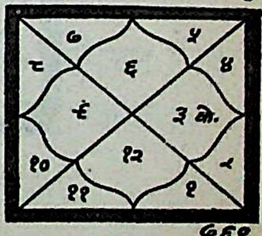


७६०

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाग्य के क्षेत्र में बड़े संकटों का सामना करना पड़ता है तथा धर्म के क्षेत्र में भी कुछ कमी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपने भाग्य की वृद्धि के लिये कठोर परिश्रम करता है। वह गुप्त-युक्तियों, चातुर्य, बुद्धि तथा साहस के बल पर संकटों से अपनी रक्षा करता रहता है तथा कभी-कभी चिन्ता के विशेष योग प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्मकुण्डली के 'दशमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कन्यालग्न: दशमभाव: केतु

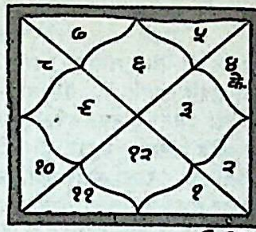


७६१

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता के क्षेत्र में हानि एवं कष्ट का सामना करना पड़ता है। राज्य के क्षेत्र में प्रभाव तथा सम्मान अधिक नहीं रहता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उसे कभी कभी मान-हानि का शिकार भी बनना पड़ता है तथा कभी किसी संकट झगड़े अथवा परेशानी में फँस जाना होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कन्यालग्न: एकादशभाव: केतु

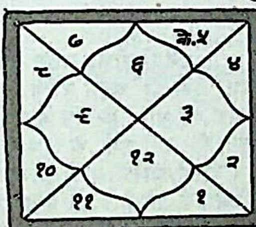


७६२

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की आय के साधनों में उन्नति तो होती है परन्तु मानसिक परेशानियों अथवा किसी अवसर पर किसी विशेष प्रकार के संकट एवं हानि का सामना भी करना पड़ता है। आमदनी की वृद्धि के लिये चिन्तित जातक अपने मन में दुःखी भी रहता है और कभी-कभी उसे आकस्मिक लाभ भी हो जाता है। वह परिश्रमी तथा धैर्यवान् होता है।

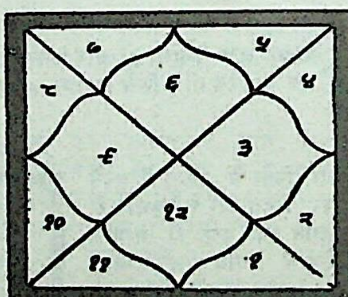
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कन्यालग्न: द्वादशभाव: केतु



७६३

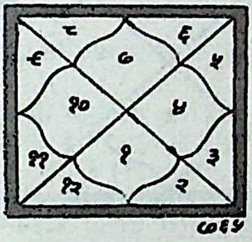
बारहवें व्ययभाव में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को खर्च के कारण चिन्ताओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी कष्ट एवं असन्तोष की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति खर्च के क्षेत्र में कभी-कभी संकटों का शिकार भी बन जाता है, परन्तु अपनी गुप्त-हिम्मत एवं धैर्य के बल पर काम चलाता रहता है।



७६४

'कन्या' लग्न का फलादेश समाप्त

तुला—लग्न

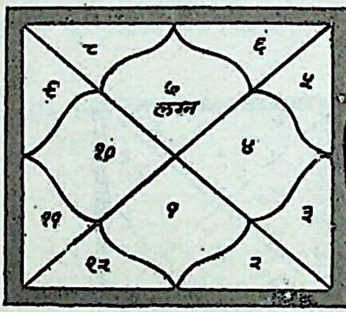


[तुला लग्न वाली कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग फलादेश]

'तुला' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'तुला' लग्न में जन्म लेने वाला जातक गुणी, व्यवसाय-निपुण, धनी, यशस्वी, कुलभूषण, कफ प्रकृतिवाला, सत्यवादी, पर-स्त्रियों से प्रेम रखने वाला, राज्य द्वारा सम्मानित, देवपूजन में तत्पर, परोपकारी, सतोगुणी, तीर्थ-प्रेमी, प्रियवादी, ज्योतिषी, भ्रमणशील, निर्लोभ तथा वीर्य-विकार से युक्त होता है। वह गौर वर्ण, शिथिल गात्र तथा मोटी नाक वाला होता है। उसे प्रारम्भिक आयु में दुःख उठाना पड़ता है, मध्यमावस्था में वह सुखी रहता है तथा अन्तिम अवस्था सामान्य रूप से व्यतीत होती है। ३१ अथवा ३२ वर्ष की आयु में उसका भाग्योदय होता है।

'तुला' लग्न



७६६

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव मुख्यत: दो प्रकार से पड़ता है—

(१) ग्रहों की जन्मकालीन स्थिति के अनुसार।
(२) ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के अनुसार।

जातक की जन्मकालीन ग्रह-स्थिति जन्म-कुण्डली में दी गई होती है। उसमें जो ग्रह जिस भाव में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित प्रभाव निरन्तर स्थायी रूप से डालता रहता है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसकी जानकारी पंचाङ्ग द्वारा की जा सकती है। ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के सम्बन्ध में या तो किसी ज्योतिषी से पूछ लेना चाहिए अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिए। इस सम्बन्ध में पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर अस्थायी-रूप से अपना प्रभाव डालते हैं।

उदाहरण के लिए यदि किसी जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य 'तुला' राशि पर 'प्रथमभाव' में बैठा है, तो उसका स्थायी प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली-संख्या ७६७ के अनुसार पड़ता रहेगा; परन्तु यदि दैनिक ग्रह-गोचर में कुण्डली देखते समय सूर्य 'वृश्चिक' राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा होगा तो उस स्थिति में वह उदाहरण-कुण्डली संख्या ७६८ के अनुसार उतनी अवधि तक जातक के जीवन पर अपना

अस्थायी प्रभाव अवश्य डालेगा, जब तक कि वह 'वृश्चिक' राशि से हटकर 'धनु' राशि में नहीं चला जाता। 'धनु' राशि में पहुँचकर वह 'धनु' राशि के अनुरूप अपना प्रभाव डालना आरम्भ कर देगा, अतः जिस जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य 'तुला' राशि के 'प्रथमभाव' में बैठा हो, उसे उदाहरण-कुण्डली संख्या ७६७ में वर्णित फलादेश देखने के पश्चात्, यदि उन दिनों ग्रह-गोचर में सूर्य 'वृश्चिक' राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा हो तो उदाहरण-कुण्डली संख्या ७६८ का फलादेश भी देखना चाहिए तथा इन दोनों फलादेशों के समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को अपने वर्तमान समय पर प्रभावकारी समझना चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विषय में जान लेना चाहिए।

'तुला' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदाहरण कुण्डली-संख्या ७६७ से ७७४ तक में किया गया है। पंचाङ्ग की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार 'तुला' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों को किन-किन उदाहरण-कुण्डलियों द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना चाहिए— इसका विस्तृत वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है, अतः उनके अनुसार ग्रहों की तात्कालिक स्थिति के सामयिक प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। तदुपरान्त दोनों फलादेशों के समन्वय-स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिए।

इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति जन्म-कुण्डली का ठीक-ठीक फलादेश सहज में ही ज्ञात कर सकता है।

टिप्पणी—(१) पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश से ऊपर अथवा ३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह सूर्य से अस्त होता है, वह भी जातक के ऊपर अपना प्रभाव या तो बहुत कम डालता है या फिर पूर्णतः प्रभावहीन रहता है।

(२) स्थायी जन्म-कुण्डली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा अपनी कुण्डली में लिखवा लेने चाहिए, ताकि उनके अंशों के बारे में बार-बार जानकारी प्राप्त करने के झंझट से बचा जा सके। तात्कालिक गोचर के ग्रहों के अंशों की जानकारी पंचांग द्वारा अथवा किसी ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(३) स्थायी जन्म-कुण्डली अथवा तात्कालिक ग्रह-गति-कुण्डली में यदि किसी भाव में एक से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन स्थानों पर उनकी दृष्टियाँ पड़ती हैं, जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता रहता है। इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में 'ग्रहों की युति का प्रभाव' शीर्षक अध्याय के अन्तर्गत विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन किया गया है, अतः इस विषय की जानकारी वहाँ से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(४) 'विंशोत्तरी दशा' के सिद्धान्तानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० वर्ष की मानी जाती है। इस आयु-अवधि में जातक नवग्रहों की दशाओं का भोग कर लेता है। विभिन्न ग्रहों का दशा-काल भिन्न-भिन्न होता है। परन्तु अधिकांश व्यक्ति इतनी लम्बी आयु तक जीवित नहीं रह पाते, अतः वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं का भोग कर पाते हैं। जातक के जीवन के जिस काल में जिस ग्रह की दशा— जिसे 'महादशा' कहा जाता है—चल रही होती है, जन्मकालीन ग्रह-स्थिति के अनुसार उसके जीवन-काल की उतनी अवधि उस ग्रह-विशेष के प्रभाव से विशेष रूप से प्रभावित रहती है। जातक का जन्म किस ग्रह की महादशा में हुआ है और उसके जीवन में किस अवधि से किस अवधि तक किस ग्रह की महादशा चलेगी और वह महादशा जातक के ऊपर अपना क्या विशेष प्रभाव डालेगी—इन सब बातों का उल्लेख भी तीसरे प्रकरण में किया गया है।

इस प्रकार (१) जन्म-कुण्डली, (२) तात्कालिक ग्रहगोचर-कुण्डली एवं (३) ग्रहों की महादशा—इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है, अतः इन तीनों के समन्वय-स्वरूप फलादेश का ठीक-ठीक निर्णय करके अपने भूत, वर्तमान तथा भविष्यत्कालीन जीवन के विषय में सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए ।

तुला (७) लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'सूर्य' का फलादेश

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७६७ से ७७८ तक में देखना चाहिए ।

कन्या (७) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'सूर्य' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७६७ के अनुसार समझना चाहिए ।

(२) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७६८ के अनुसार समझना चाहिए ।

(३) जिस महीने में 'सूर्य' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७६९ के अनुसार समझना चाहिए ।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७० के अनुसार समझना चाहिए ।

(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७१ के अनुसार समझना चाहिए ।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७२ के अनुसार समझना चाहिए ।

(७) जिस महीने में 'सूर्य' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७३ के अनुसार समझना चाहिए ।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७४ के अनुसार समझना चाहिए ।

(९) जिस महीने में 'सूर्य' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७५ के अनुसार समझना चाहिए ।

(१०) जिस महीने में 'सूर्य' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७६ के अनुसार समझना चाहिए ।

(११) जिस महीने में 'सूर्य' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७७ के अनुसार समझना चाहिए ।

(१२) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७८ के अनुसार समझना चाहिए ।

तुला (७) लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७९ से ७९० तक में देखना चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'तुला' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७९ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७८० के अनुसार समझना चाहिएं।

(३) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'धनु' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७८१ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मकर' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७८२ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७८३ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मीन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७८४ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मेष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७८५ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'वृष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७८६ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मिथुन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७८७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७८८ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'सिंह' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७८९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कन्या' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७९० के अनुसार समझना चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'मंगल' का फलादेश

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७९१ से ८०२ तक में देखना चाहिए।

(७) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७९१ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'मंगल' वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७९२ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'मंगल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७९३ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'मंगल' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७९४ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'मंगल' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७९५ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'मंगल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७९६ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'मंगल' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७९७ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'मंगल' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली सख्या ७९८ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'मंगल' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७९९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८०० के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'मंगल' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुण्डली-संख्या ८०१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'मंगल' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८०२ के अनुसार समझना चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'बुध' का फलादेश

कन्या (७) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली-संख्या ८०३ से ८१४ तक में देखना चाहिए।

कन्या (७) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये—

(१) जिस महीने में 'बुध' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली-संख्या ८०३ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'बुध' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८०४ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'बुध' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८०५ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'बुध' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८०६ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'बुध' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८०७ के अनुसार समझना चाहिये।

(६) जिस महीने में 'बुध' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८०८ के अनुसार समझना चाहिये।

(७) जिस महीने में 'बुध' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८०९ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस महीने में 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८१० के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८११ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८१२ के अनुसार समझना चाहिये।

(११) जिस महीने में 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८१३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८१४ के अनुसार समझना चाहिए।

तुला (७) लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'गुरु' का फलादेश

कन्या (७) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८१५ से ८२६ तक में देखना चाहिये।

कन्या (७) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'गुरु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८१५ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८१६ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस वर्ष में 'गुरु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८१७ के अनुसार समझना चाहिये।

(४) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८१८ के अनुसार समझना चाहिये।

(५) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८१९ के अनुसार समझना चाहिए ।

(६) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८२० के अनुसार समझना चाहिए ।

(७) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८२१ के अनुसार समझना चाहिए ।

(८) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८२२ के अनुसार समझना चाहिये ।

(९) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८२३ के अनुसार समझना चाहिये ।

(१०) जिस वर्ष मे 'गुरु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८२४ के अनुसार समझना चाहिये ।

(११) जिस वर्ष में 'गुरु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८२५ के अनुसार समझना चाहिये ।

(१२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहर-कुण्डली संख्या ८२६ के अनुसार समझना चाहिए ।

तुला (७) लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'शुक्र' का फलादेश

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८२७ से ८३८ तक के देखना चाहिए ।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये—

(१) जिस महीने में 'शुक्र' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८२७ के अनुसार समझना चाहिये ।

(२) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८२८ के अनुसार समझना चाहिए ।

(३) जिस महीने में 'शुक्र' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८२९ के अनुसार समझना चाहिये ।

(४) जिस महीने में 'शुक्र' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८३० के अनुसार समझना चाहिये ।

(५) जिस महीने 'शुक्र' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८३१ के अनुसार समझना चाहिये ।

(६) जिस महीने में 'शुक्र' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८३२ के अनुसार समझना चाहिये ।

(७) जिस महीने में 'शुक्र' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८३३ के अनुसार समझना चाहिये ।

(८) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८३४ के अनुसार समझना चाहिये।

(९) जिस महीने में 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८३५ के अनुसार समझना चाहिये।

(१०) जिस महीने में 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८३६ के अनुसार समझना चाहिये।

(११) जिस महीने में 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८३७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'शुक्र' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८३८ के अनुसार समझना चाहिए।

तुला (७) लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'शनि' का फलादेश

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८३९ से ८५० तक में देखना चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'शनि' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८३९ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८४० के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'शनि' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८४१ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'शनि' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८४२ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'शनि' कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८४३ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'शनि' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८४४ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'शनि' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८४५ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८४६ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'शनि' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८४७ के अनुसार समझना चाहिये।

(१०) जिस वर्ष में 'शनि' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली ८४८ के अनुसार समझना चाहिये।

(११) जिस वर्ष में 'शनि' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८४९ के अनुसार समझना चाहिये।

(१२) जिस वर्ष में 'शनि' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८५० के अनुसार समझना चाहिये।

तुला (७) लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'राहु' का फलादेश

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८५१ से ८६२ तक में देखना चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'राहु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८५१ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८५२ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८५३ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'राहु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८५४ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'राहु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८५५ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८५६ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'राहु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८५७ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८५८ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'राहु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८५९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'राहु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८६० के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८६१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८६२ के अनुसार समझना चाहिए।

तुला (७) लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'केतु' का फलादेश

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८६३ से ८७४ तक में देखना चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए।—

(१) जिस वर्ष में 'केतु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश का उदाहरण-कुण्डली संख्या ८६३ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८६४ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'केतु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८६५ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'केतु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८६६ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'केतु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८६७ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'केतु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८६८ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'केतु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८६९ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८७० के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'केतु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८७१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'केतु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८७२ के अनुसार समझना चाहिए।

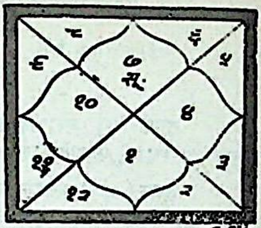
(११) जिस वर्ष में 'केतु' 'सिंह' राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८७३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२ जिस वर्ष में 'केतु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८७४ के अनुसार समझना चाहिए।

'तुला' लग्न में 'सूर्य' का फल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: प्रथमभाव: सूर्य

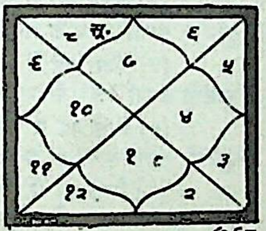


७६७

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक के शरीर में दुर्बलता तथा सौन्दर्य में कमी आती है। उसको परतन्त्रता के मार्ग से हानि होती है तथा पराक्रम की भी कमी बनी रहती है। यहाँ से सूर्य सातवीं उच्चदृष्टि से सप्तमभाव को अपने मित्र मंगल की मेष राशि में देखता है, अतः स्त्री के पक्ष में लाभ होता है। स्त्री सुन्दर मिलती है, भोगादि की शक्ति बढ़ती है तथा व्यावसायिक उन्नति भी होती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: द्वितीयभाव:सूर्य

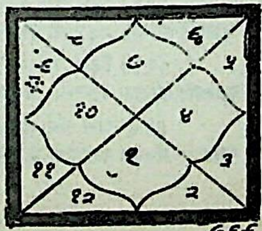


७६८

दूसरे धन-कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को धन का विशेष लाभ होता है तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। वह धन का संचय भी करता है तथा प्रभावशाली बना रहता है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु के पक्ष में कुछ कमी रहती है तथा पुरातत्त्व के लाभ में भी असन्तोष बना रहता है। ऐसा व्यक्ति सामान्यतः धनी होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

तुलालग्न: तृतीयभाव: सूर्य

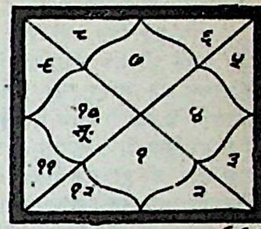


७६९

तीसरे भाई और पराक्रम के स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है। वह अपने बाहुबल पर भरोसा रखने वाला होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य तथा धर्म में वृद्धि होती है। अच्छी आमदनी होने के कारण जातक भाग्यवान् समझा जाता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: चतुर्थभाव: सूर्य

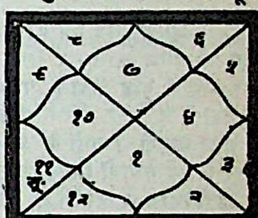


८८०

चौथे केन्द्र, माता तथा भूमि के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा मकान का अपूर्ण सुख प्राप्त होता है तथा आमदनी के पक्ष में भी कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को अपने पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा सुख, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में लग्न हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: पंचमभाव: सूर्य



८८१

पाँचवें त्रिकोण, विद्या तथा सन्तान के स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को सन्तान के पक्ष से असन्तोष के साथ सामान्य लाभ होता है तथा विद्याध्ययन में भी बड़ी कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपनी ही सिंह राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को कठिन परिश्रम एवं बुद्धि-योग से आमदनी की अच्छी शक्ति मिलती है, परन्तु मस्तिष्क में कुछ परेशानियाँ भी रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

तुलालग्न: षष्ठभावस्: र्य

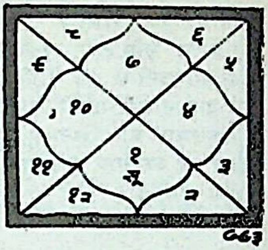


८८२

छठे रोग तथा शत्रु स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को झगड़े-झंझट एवं शत्रु-पक्ष से लाभ होता है तथा शत्रुओं पर विजय मिलती है। कठिन परिश्रम के द्वारा उसकी आमदनी भी अच्छी रहती है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ रहता है। ऐसा जातक बड़ा हिम्मती तथा बहादुर होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्नः सप्तमभावः सूर्य

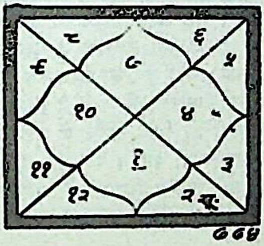


६६३

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है, तथा स्त्री-पक्ष एवं व्यवसाय के पक्ष से लाभ भी खूब होता है। वह अपने घर के भीतर सुख प्राप्त करता है तथा कभी-कभी उसे अत्यधिक लाभ भी होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं नीच-दृष्टि से शत्रु शुक्र की तुला राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में दुर्बलता रहती है तथा मन में चिन्ताएँ रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

तुलालग्नः अष्टमभावः सूर्य

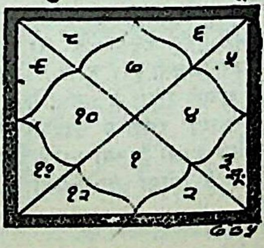


६६४

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है, परन्तु पुरातत्त्व के लाभ में कमी आ जाती है। वह कठिन परिश्रम द्वारा धनोपार्जन करता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक धन की वृद्धि के लिये प्रयत्नशील बना रहता है और उसे कौटुम्बिक-सुख की प्राप्ति होती रहती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

तुलालग्नः नवमभावः सूर्य

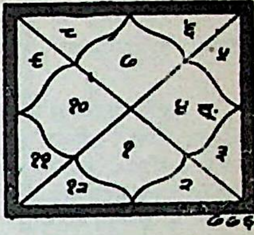


६६५

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के भाग्य में वृद्धि होती है और वह धर्म का भी यथाविधि पालन करता है। ऐसा व्यक्ति ईश्वर-भक्त, न्यायी तथा सौभाग्यवान् होता है। उसे स्वयमेव धन, सुख तथा लाभ की प्राप्ति होती रहती है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

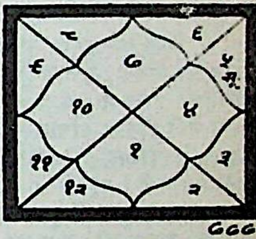
तुलालग्न: दशमभाव: सूर्य



दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के द्वारा सुख, सम्मान, सफलता, यश, शक्ति तथा लाभ की प्राप्ति होती है। वह प्रभावशाली कर्म करता है तथा अपनी आमदनी को बढ़ाता रहता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में चतुर्थभाव को देखता है, फलतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कुछ कमी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

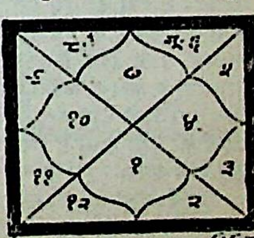
तुलालग्न: एकादशभाव: सूर्य



ग्यारहवें लाभ स्थान में अपनी ही सिंह राशि पर स्थित स्वक्षेत्री सूर्य के प्रभाव से जातक की आमदनी में विशेष वृद्धि होती रहती है और उसका प्रभाव बढ़ता चला जाता है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रु-दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान-पक्ष से कुछ असन्तोष रहता है तथा विद्या-बुद्धि में भी कुछ कमी रहती है। ऐसे जातक की बोली में तेजी पाई जाती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: द्वादशभाव: सूर्य

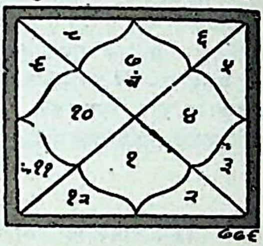


बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख, सफलता एवं लाभ की शक्ति प्राप्त होती है। परन्तु लाभ चाहे जितना कर लिया जाय, वह सब खर्च हो जाता है। यहाँ सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक के शत्रु-पक्ष से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनते हैं तथा झगड़ों के मार्ग से लाभ होता है एवं प्रभाव की वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न में 'चन्द्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: प्रथमभाव: चन्द्र

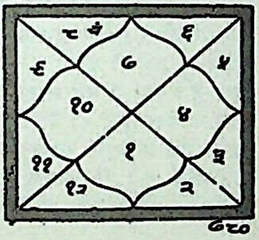


८०९

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शारीरिक-सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति राजनीति के क्षेत्र में सम्मानित होता है तथा पितृपक्ष के सम्मान की वृद्धि करता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्र-दृष्टि से मंगल की मेष राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है, व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होता है, भोगों की प्राप्ति होती है तथा सर्वत्र प्रभाव स्थापित होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: द्वितीयभाव: चन्द्र

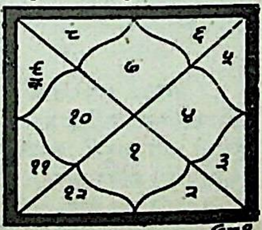


८१०

दूसरे धन-कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र मंगल की राशि पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की धन-संचय शक्ति में कमी आती है तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त नहीं होता। व्यवसाय एवं सुख के मार्ग में बाधाएँ पड़ती हैं तथा धन-वृद्धि के लिये गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं उच्च तथा मित्र-दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक की आयु एवं पुरातत्त्व के लाभ की वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

तुलालग्न: तृतीयभाव: चन्द्र

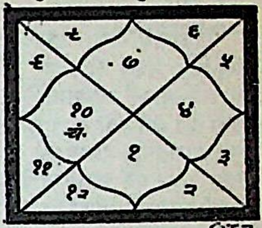


८११

तीसरे भाई तथा पराक्रम के स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। उसे पिता एवं राज्य के क्षेत्र में भी सम्मान एवं सफलता प्राप्त होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पक्ष भी प्रबल होता है। ऐसा व्यक्ति बहुत हिम्मती होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: चतुर्थभाव: चन्द्र

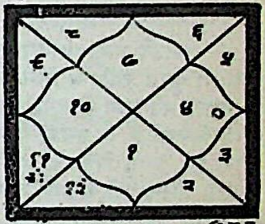


६८२

चौथे केन्द्र, माता तथा भूमि के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का लाभ त्रुटिपूर्ण प्राप्त होता है, परन्तु मनोबल में वृद्धि होने के कारण सुख के साधन बने रहते हैं। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से कर्क राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती रहती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचमभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: पंचम भाव: चन्द्र

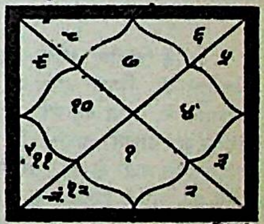


६८३

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सन्तान की शक्ति प्राप्ति होती है तथा मनोबल द्वारा विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। वह राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ तथा सम्मान प्राप्त करता है। उसकी बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण होती है तथा मनोबल बढ़ा रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में एकादशभाव को देखता हैं, अतः जातक की आमदनी में यथेष्ठ वृद्धि होती है। ऐसा जातक धनी तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: षष्ठभाव: चन्द्र

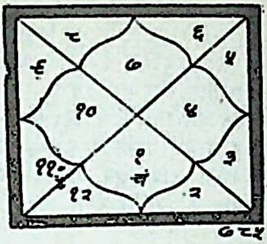


६८४

छठे रोग एवं शत्रु स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में अपने मनोबल, चातुर्य एवं शान्त स्वभाव के कारण सफलता मिलती है। उसे पिता की ओर से असन्तोष रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी रुकावटें आती हैं। फलतः प्रतिष्ठा में भी कमी बनी रहती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से बुध की कन्या राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्पर्क से लाभ होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: सप्तमभाव: चन्द्र

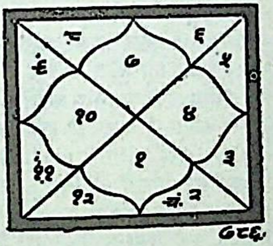


७८५

सातवें केन्द्र, स्त्रीत था व्यवसाय के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक व्यवसाय के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त करता है। उसे स्त्री बहुत सुन्दर मिलती है तथा स्त्री-पक्ष द्वारा उन्नति एवं प्रभाव की वृद्धि भी होती है। ऐसा व्यक्ति पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से भी लाभान्वित तथा यशस्वी होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक-सौन्दर्य, मान एवं प्रभाव की प्राप्ति भी होती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

तुलालग्न: अष्टमभाव: चन्द्र

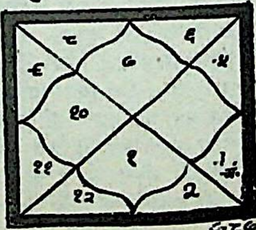


७८६

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि में स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ मिलता है। उसका दैनिक जीवन आनन्दपूर्ण बना रहता है, परन्तु पिता के पक्ष में हानि, व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ उन्नति तथा राज्य के पक्ष से साधारण सम्मान मिलता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं नीचदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक के धन-संचय में कमी रहती है तथा कुटुम्ब का पक्ष भी दुर्बल रहता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: नवमभाव: चन्द्र

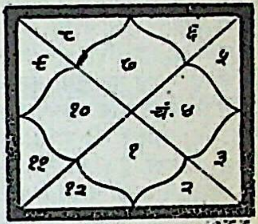


७८७

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के भाग्य की वृद्धि होती है और वह धर्म का भी रुचिपूर्वक पालन करता है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्षों से भी उन्नति, सम्मान, सहयोग तथा शक्ति की प्राप्ति होती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा उसके पराक्रम में वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

तुलालग्न: दशमभाव: चन्द्र

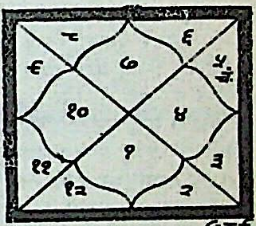


७८८

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपनी कर्क राशि पर स्थित स्वक्षेत्री चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता के पक्ष से शक्ति, राज्य के पक्ष से सम्मान, व्यवसाय के पक्ष से उन्नति, लाभ तथा धन की प्राप्ति होती है। वह स्वाभिमानी, यशस्वी तथा समाज में प्रतिष्ठित होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता के पक्ष में कुछ शक्ति मिलती है तथा भूमि और मकान का त्रुटिपूर्ण सुख प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: एकादशभाव चन्द्र

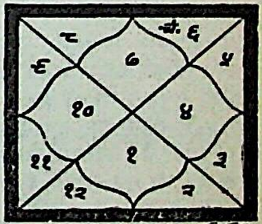


७८९

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि में स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को लाभ के अवसर निरन्तर प्राप्त होते हैं। उसे पिता, राज्य तथा व्यवसाय-तीनों ही पक्षों से लाभ, यश, प्रतिष्ठा तथा सफलता की प्राप्ति होती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः उसे सन्तान-पक्ष से सामान्य असन्तोष के साथ सफलता मिलती है, परन्तु विद्या एवं वाणी की शक्ति खूब प्राप्त होती है। ऐसा जातक चतुर, चालक, स्वार्थी तथा समझदार होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: द्वादशभाव: चन्द्र



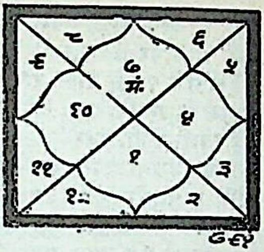
७९०

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ, उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति पिता, व्यवसाय तथा राज्य—तीनों के क्षेत्र में कुछ हानि प्राप्त करता है और उसे मान-प्रतिष्ठा भी कम मिलती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रुपक्ष में शान्ति एवं चातुर्य द्वारा सफलता एवं प्रभाव प्राप्त करता है।

'तुला' लग्न में 'मंगल' का फल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

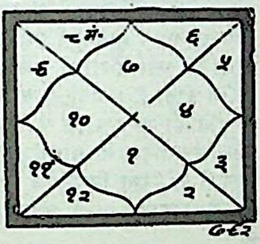
तुलालग्न: प्रथमभाव: मंगल



पहले केन्द्र एवं शरीर-स्थान में अपने सामान्य-मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को शारीरिक-सुख तथा घर में प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। उसे धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। यहाँ से मंगल चौथी उच्च दृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि, मकान आदि का विशेष सुख मिलता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही मेष राशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री का सुख मिलता है तथा व्यवसाय की उन्नति होती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है, परन्तु पेट में विकार रहता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

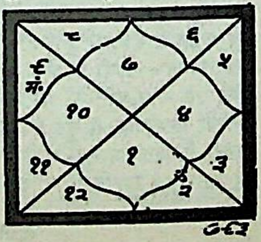
तुलालग्न: द्वितीयभाव: मंगल



दूसरे धन-कुटुम्ब के भवन में अपनी ही वृश्चिक राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख तो मिलता है, परन्तु स्त्री एवं परिवार के पक्ष से कुछ असंतोष भी बना रहता है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः सन्तान-पक्ष से बाधायुक्त शक्ति मिलती है और विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयों के साथ तरक्की होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति सामान्य रहती है तथा आठवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन स्वार्थ के लिये किया जाता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

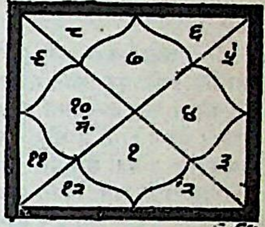
तुलालग्न: तृतीयभाव: मंगल



तीसरे भाई एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का सुख मिलता है, स्त्री-पक्ष से शक्ति प्राप्त होती है, पराक्रम की वृद्धि होती है तथा पुरुषार्थ द्वारा धन भी खूब मिलता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव देखता है, अतः जातक को शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है एवं आठवीं नीचदृष्टि से दशमभाव देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में उन्नति मिलने के रास्ते में रुकावटें आती रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: चतुर्थभाव: मंगल

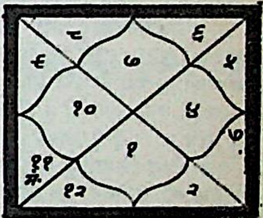


७६४

चौथे केन्द्र, माता तथा भूमि के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा मकान आदि का विशेष सुख मिलता है एवं धन का संचय होता है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के द्वारा भी सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है। सातवीं नीचदृष्टि से मित्र राशि में दशमभाव को देखने से पिता के सुख में कमी एवं राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में उन्नति में व्यवधान पड़ता है। आठवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के पक्ष में विशेष सफलता मिलती है। कुल मिलाकर ऐसा जातक धनी और सुखी रहता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: पंचमभाव: मंगल

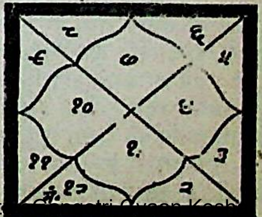


७६५

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष में कुछ कठिनाइयाँ प्राप्त होती हैं तथा विद्या के क्षेत्र में भी कुछ परेशानियों के बाद ही सफलता मिलती है। स्त्री-पक्ष में असन्तोष रहता है तथा कुटुम्ब से वैमनस्य प्राप्त होता है। व्यवसाय के मार्ग में बुद्धि-बल से सफलता मिलती है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु तथा जीवन के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा कुछ परेशानियों के साथ पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ खूब होता है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से धन एवं सफलता की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: षष्ठभाव: मंगल



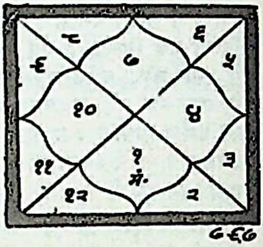
७६६

छठे शत्रु एवं रोग स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में बड़ा प्रभाव रखता है। धन-संचय में कमी रहती है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है, यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की वृद्धि होती है तथा स्वार्थ के लिए धर्म का पालन करता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। आठवीं शत्रु-

दृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक-सौन्दर्य में कमी रहती है तथा झगड़ों-झंझटों के मार्ग से लाभ होता है ।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्नः सप्तमभावः मंगल

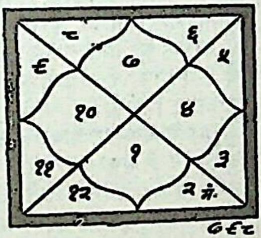


७६७

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के स्थान में अपनी ही मेष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री के पक्ष से कुछ बन्धन-सा रहता है, परन्तु भोग की अच्छी शक्ति प्राप्त होती है और दैनिक व्यवसाय में भी सफलता मिलती है । यहाँ से मंगल चौथी नीचदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं रोजगार के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है । सातवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में कुछ गर्मी का विकार रहता है तथा आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखने के कारण धन का संचय होता है तथा कौटुम्बिक सुख भी प्राप्त होता है ।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'मंगल की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्नः अष्ठमभावः मगल

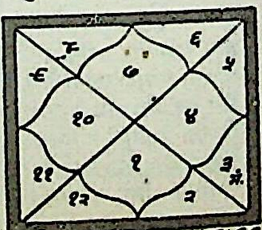


७६८

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के स्थान में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री के पक्ष से कष्ट होता है तथा दैनिक रोजगार में परेशानी बनी रहती है । बाहरी स्थानों पर व्यवसाय करने से लाभ होता है पुरातत्त्व की भी प्राप्ति होती है । यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को आमदनी का लाभ होता है । सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब के सुख का लाभ परिश्रम द्वारा होता है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों का सामान्य सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है ।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्नः नवम भावः मंगल



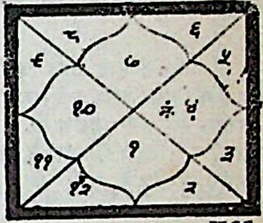
७६९

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म-स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति खूब होती है तथा धर्म का पालन भी होता है । उसे भाग्यवती स्त्री मिलती है, अतः विवाह के बाद विशेष उन्नति होती है । यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च खूब रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है । सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है । आठवीं

उच्च-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, मकान आदि का पर्याप्त सुख मिलता है। ऐसा जातक लौकिक तथा पारलौकिक दोनों प्रकार की उन्नति करता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्नः दशमभावः मंगल

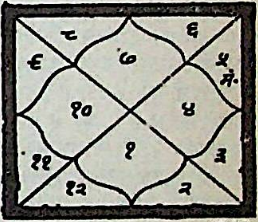


८००

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। स्त्री तथा कुटुम्ब के पक्ष में भी कमजोरी तथा कष्ट की स्थिति रहती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शरीर में कमजोरी रहती है, परन्तु सम्मान प्राप्त होता है। सातवीं उच्चदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है तथा आठवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से वैमनस्य तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्नः एकादशभावः मंगल

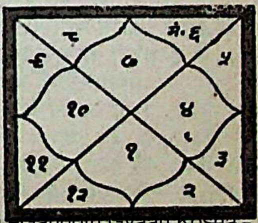


८०१

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन का पर्याप्त लाभ होता है तथा स्त्री के पक्ष से भी लाभ तथा सुख मिलता है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी दृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः धन-संचय की शक्ति भी रहेगी तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलेगा। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण सन्तान-पक्ष से असंतोष रहेगा तथा विद्या की भी कमी होगी। आठवीं मित्रदृष्टि से शत्रुभाव को देखने से शत्रु-पक्ष से लाभ होगा तथा उस पर प्रभाव बना रहेगा। संक्षेप में, ऐसा जातक सुखी, धनी तथा प्रभावशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्नः द्वादशभावः मंगल



बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। धन, कुटुम्ब, स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से भी असन्तोष एवं हानि के योग उपस्थित होते हैं। यहाँ से मंगल चौथी मित्र दृष्टि से तृतीयभाव को देखता है। अतः भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से जातक शत्रु-पक्ष पर प्रभावशाली बना रहता है तथा आठवीं दृष्टि से स्वराशि

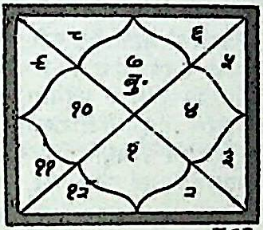
८०२

में सप्तमभाव को देखने के कारण दूसरे स्थानों के सम्बन्ध से व्यवसाय में लाभ होता है, परन्तु स्त्री के पक्ष में कुछ कमजोरी बनी रहती है

'तुला' लग्न में 'बुध' का फल

जिस जातक जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: प्रथमभाव: बुध

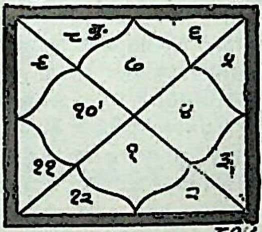


२०३

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल होता है। वह बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है तथा खूब खर्च करता है। भाग्य के क्षेत्र में कमी का अनुभव करते हुए भी वह भाग्यवान् गिना जाता है तथा धर्म का पालन भी करता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में सफलता प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: द्वितीयभाव: बुध

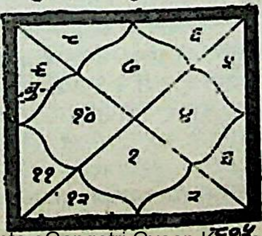


२०४

दूसरे धन-कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख कुछ कम प्राप्त होता है। वह खर्च खूब करता है तथा धर्म का पालन भी स्वार्थ के लिए करता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में अष्टमभाव को देखता है, अत: जातक की आयु एवं पुरातत्त्व पक्ष की वृद्धि होती है। उसे दैनिक जीवन में शक्ति एवं सफलता प्राप्त होती है, अतः वह धनी एवं प्रतिष्ठित माना जाता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: तृतीयभाव: बुध

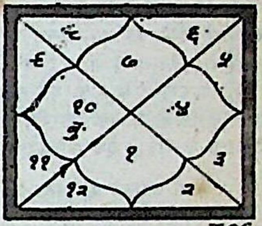


२०५

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। भाग्योन्नति के मार्ग में साधारण रुकावटें आया करती हैं, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की वृद्धि होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, यशस्वी, सुखी, प्रतिष्ठित तथा प्रभावशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: चतुर्थभाव: बुध

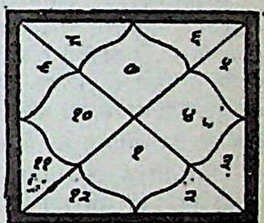


८०६

चौथे केन्द्र, माता तथा भूमि के स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, मकान आदि का सुख प्राप्त होता है, परन्तु घरेलू शान्ति में कुछ कमी बनी रहती है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से विशेष लाभ होता है और वह खर्च भी बड़ी शानदारी से करता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से यश, मान, प्रतिष्ठा, सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: पंचमभाव: बुध

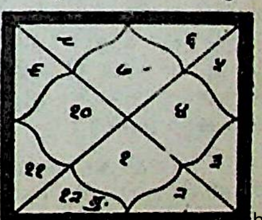


८०७

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से शक्ति तथा विद्या-बुद्धि का त्रुटिपूर्ण लाभ होता है। वह बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अपने भाग्य की वृद्धि करता है तथा खर्चीला भी बहुत होता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को आमदनी खूब रहती है और वह भाग्यवान् माना जाता है। ऐसा व्यक्ति धर्म का पालन करने वाला तथा प्रतिष्ठित भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: षष्ठभाव: बुध

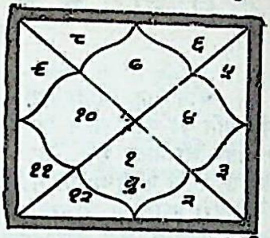


८०८

छठे शत्रु एवं रोग के स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित व्ययेश एवं नीच के बुध के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा अपना खर्च चलाने के लिये भी बड़ी मुसीबतें उठानी पड़ती हैं। भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में भी कमजोरी बनी रहती है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ लाभ होता है। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्नः सप्तमभावः बुध

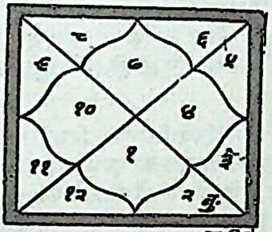


८०९

सातवें केन्द्र, स्त्री, व्यवसाय के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। वह गृहस्थी का खर्च खूब चलाता है तथा धर्म का पालन भी करता है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक शारीरिक-सुख तथा मान-प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है एवं भाग्यवान् समझा जाता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्नः अष्टमभावः बुध

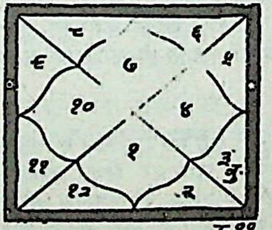


८१०

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व की कुछ शक्ति एवं लाभ की प्राप्ति होती है। परन्तु भाग्य एवं धर्म के पक्ष में कमजोरी बनी रहती है, उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कठिनाइयों के साथ कुछ लाभ होता है तथा खर्च के मामले में परेशानी उठानी पड़ती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक कुछ कठिनाइयों के साथ धन की वृद्धि करता है। उसे यश कम मिलता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्नः नवमभावः बुध.

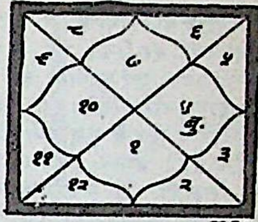


८११

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के स्थान में अपनी ही मिथुन राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अच्छा लाभ होता है। वह खर्च अधिक करता है तथा बुध के व्ययेश होने के कारण उसे कुछ कठिनाइयों का भी अनुभव होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों की शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

तुला लग्न: दशमभाव: बुध

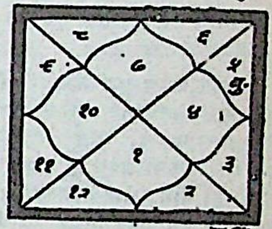


८१२

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करने में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा कुछ कमजोरी सी रहती है। धर्म का पालन भी थोड़ा ही हो पाता है। इसी कारण भाग्योन्नति भी कम होती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अत: जातक को माता, भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है जिसके कारण वह धनवान् भी समझा जाता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: एकादशभाव: बुध

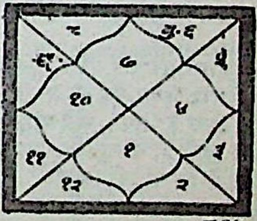


८१३

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। वह धर्म का पालन करता है तथा भाग्यवान् भी होता है। परन्तु बुध के व्ययेश होने के कारण सभी क्षेत्रों में कुछ कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: जातक को संतान-पक्ष से सफलता मिलती है एवं विद्या-बुद्धि की शक्ति भी प्राप्त होती है। ऐसा जातक अपनी बोल-चाल तथा विद्या-बुद्धि के बल पर विशेष उन्नति करता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: द्वादशभाव: बुध



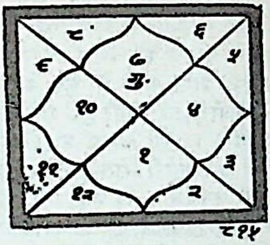
८१४

बारहवें व्यय स्थान में अपनी ही कन्या राशि पर स्थित व्ययेश तथा उच्च के बुध प्रभाव से जातक का व्यय अधिक होता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ तथा सुख की प्राप्ति होती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं नीच दृष्टि से मित्र गुरु की मीन राशि में षष्ठभाव को देखता है, अत: जातक को शत्रु-पक्ष से कुछ परेशानियाँ बनी रहती हैं और उनसे वह कुछ अनुचित उपायों का आश्रय लेकर काम निकालता है। संक्षेप में ऐसा जातक धनी तथा सुखी होता है।

'तुला' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्नः प्रथमभावः गुरु

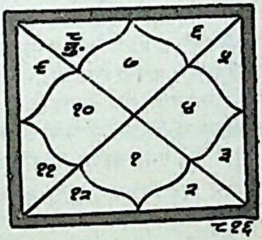


८१५

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव एवं पुरुषार्थ की वृद्धि होती है तथा पुरुषार्थ द्वारा मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति भी होती है। भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी आती है तथा शत्रु-पक्ष में हिम्मत के द्वारा प्रभाव स्थापित होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः सन्तान-पक्ष से वैमनस्य एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त होगी। सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में शक्ति प्राप्त होगी। नवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में उन्नति रहेगी तथा यश भी प्राप्त होगा।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसासार समझना चाहिए—

तुलालग्नः द्वितीयभावः गुरु

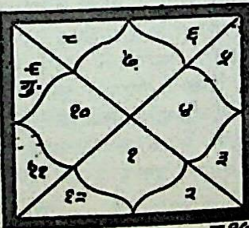


८१६

दूसरे धन-कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक अपने पुरुषार्थ द्वारा धन की वृद्धि करता है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से अपनी ही मीन राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक अपने धन तथा शक्ति के बल पर शत्रु-पक्ष में प्रभाव प्राप्त करता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण पुरातत्त्व की सामान्य शक्ति प्राप्त होती है तथा आयु की वृद्धि होती है। नवीं उच्च एवं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य द्वारा सम्मान, पिता द्वारा सुख तथा व्यवसाय में सफलता एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्नः तृतीयभावः गुरु

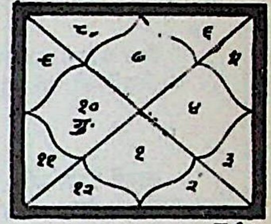


८१७

तीसरे पराक्रम एवं भाई-बहिन के स्थान में अपनी धनु राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन के सुख में सामान्य परेशानी रहती है, परन्तु शत्रु-पक्ष में प्रभाव प्राप्त होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में सफलता मिलती रहती है तथा जातक सुखी, प्रभावशाली एवं सम्पन्न जीवन व्यतीत करता है उसे राजकीय क्षेत्र में सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति भी होती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: चतुर्थभाव: गुरु

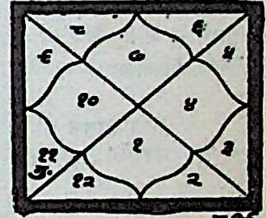


८१८

चौथे माता, सुख एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को भूमि, मकान एवं माता के सुख में कमी का अनुभव होता है। साथ ही भाई-बहिन के सुख में भी कमी आती है तथा शत्रु-पक्ष से भी परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः पुरातत्त्व एवं आयु की शक्ति में कुछ वृद्धि होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से दशमभाव को मित्र चन्द्रमा की राशि में देखने से राज्य, पिता एवं व्यवसाय द्वारा सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है। नवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: पंचमभाव: गुरु

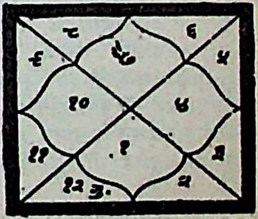


८१९

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के पक्ष में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है एवं शत्रु-पक्ष में प्रभाव बढ़ता है। भाई-बहिनों से कुछ मतभेद बना रहता है। यहाँ से गुरु पाँचवी मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः पुरुषार्थ द्वारा भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन बना रहता है सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ होता रहता है तथा नवीं दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक-शक्ति, प्रभाव एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। परन्तु गुरु के षष्ठेश होने के कारण जातक के स्वास्थ्य एवं सन्तान के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये

तुलालग्न: षष्ठभाव: गुरु



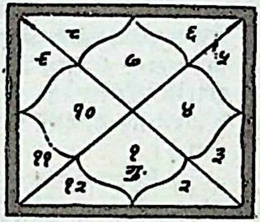
८२०

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपनी ही मीन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में प्रभाव तथा झगड़े-झंझट के कामों में सफलता प्राप्त करता है। गुरु से षष्ठेश होने के कारण भाई-बहिन के पक्ष में कुछ वैमनस्य बना रहता है तथा पुरुषार्थ में भी कुछ परतन्त्रता का अनुभव होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं उच्च-दृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता, व्यवसाय एवं राज्य के द्वारा सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण

खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है। नवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन की वृद्धि होती है, परन्तु कुटुम्ब के साथ कुछ मतभेद रहता है। प्रतिष्ठा के क्षेत्र में वृद्धि भी होती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये

तुलालग्नः सप्तमभावः गुरु

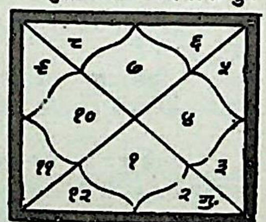


८२१

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक अपने पुरुषार्थ द्वारा व्यवसाय की उन्नति करता है तथा स्त्री की शक्ति भी पाता है। गुरु के षष्ठेश होने के कारण जातक का स्त्री से कुछ मतभेद रहता है तथा व्यवसाय में भी अधिक परिश्रम करना पड़ता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः जातक पुरुषार्थ द्वारा धनोपार्जन की शक्ति पाता है। सातवीं शत्रु दृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शरीर में सामान्य परेशानी रहती है, परन्तु प्रभाव की वृद्धि होती है। नवीं दृष्टि से अपनी ही धनुराशि में तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

तुलालग्नः अष्टमभावः गुरु

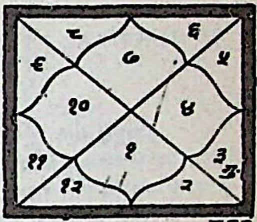


८२९

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पुरातत्त्व की सामान्य-शक्ति प्राप्ति होती है तथा आयु की वृद्धि होती है। साथ ही भाई-बहिन के सुख में कमी, पराक्रम के क्षेत्र में कमजोरी तथा शत्रु-पक्ष से परेशानी का अनुभव भी होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। नवीं नीच-दृष्टि से चतुर्थ-भाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी रहती है तथा परतंत्रता का-सा अनुभव भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

तुलालग्न: नवमभाव: गुरु

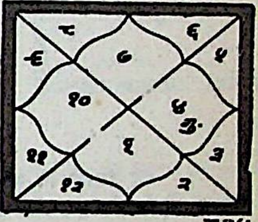


८२३

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है, साथ ही उसे यश भी प्राप्त होता है। गुरु के षष्ठेश होने के कारण जातक को शत्रु-पक्ष अथवा झगड़ों के कारण भाग्योन्नति में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः शरीर में कुछ परेशानी रहते हुए भी प्रभाव की वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। पुरुषार्थ के द्वारा भाग्य की उन्नति भी होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से कुछ वैमनस्य रहता है तथा परिश्रम द्वारा विद्या, बुद्धि एवं वाणी के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है और जातक प्रभावशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

तुलालग्न: दशमभाव: गुरु

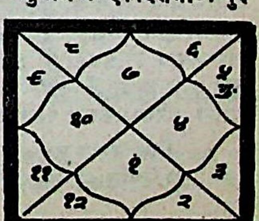


८२४

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक को राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही भाई-बहिन का सुख भी मिलता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक को कुटुम्ब का सुख मिलता है तथा धन की वृद्धि होती है। सातवीं नीच-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता एवं भूमि-मकान आदि के सुख में कुछ कमी आती है। नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में विजय एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है तथा झगड़े-झंझटों से लाभ होता है, परन्तु गुरु के पराक्रमेश होने के कारण भाई-बहिनों से मतभेद रहता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

तुलालग्न: एकादशभाव: गुरु



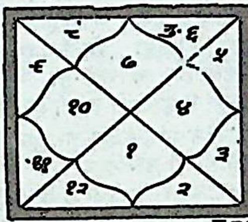
८२५

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा अपनी आमदनी एवं ऐश्वर्य की वृद्धि करता है और उसे शत्रु-पक्ष से लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को स्वराशि में देखता है, अतः भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या के पक्ष में कुछ कमी रहती है, परन्तु बुद्धि अधिक होती है। नवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण दैनिक

व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा स्त्री-पक्ष से भी शक्ति प्राप्त होती है। गुरु के षष्ठेश होने के कारण जातक का भाई-बहिनों से कुछ मतभेद बना रहता है तथा लाभ एवं व्यवसाय के पक्ष में भी उसे विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: द्वादशभाव: गुरु



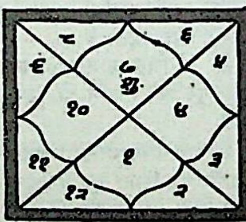
८२६

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ एवं शक्ति की प्राप्ति होती है। गुरु के षष्ठेश होने के कारण भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है तथा पुरुषार्थ पर भी उसका कुछ प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ कमी आती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में षष्ठभाव को देखने के कारण जातक गुप्त-युक्तियों द्वारा शत्रु-पक्ष में सफलता प्राप्त करता है, परन्तु उसे कुछ दबना भी पड़ता है। नवीं दृष्टि से अष्टमभाव को शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलती है तथा गुरु के षष्ठेश होने के कारण भाई-बहिनों से कुछ परेशानी भी रहती है।

'तुला' लग्न में 'शुक्र' का फल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

तुलालग्न: प्रथमभाव: शुक्र

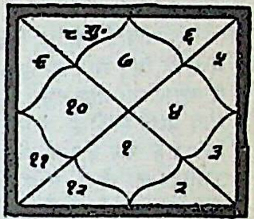


८२७

पहले केन्द्र, और शरीर स्थान में अपनी ही तुला राशि पर स्थित शुक्र के कारण जातक के आत्म-बल तथा शारीरिक प्रभाव में वृद्धि होती है। साथ ही उसे आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। वह मनस्वी एवं मानी होता है, परन्तु शुक्र के अष्टमेश होने के कारण कभी-कभी शरीर में परेशानी का अनुभव भी करता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपने सामान्य शत्रु मंगल की मेष राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है तथा व्यावसायिक उन्नति लिये भी कठिन परिश्रम करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: द्वितीयभाव: शुक्र

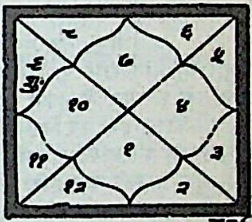


८२८

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को धन-संचय के लिये विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। शुक्र के अष्टमेश होने के कारण धन-संचय तथा कुटुम्ब-सुख में कुछ परेशानियाँ भी आती रहती हैं। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृषभ राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है। कुल मिलाकर जातक अमीरी ढंग का जीवन बिताता है तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

तुलालग्न: तृतीयभाव: शुक्र

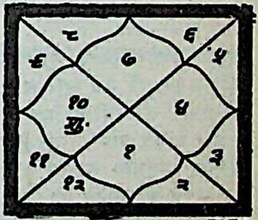


८२९

तीसरे भाई-बहिन तथा पराक्रम के स्थान में अपने सामान्य शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का भाई-बहिनों के साथ कुछ वैमनस्य रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। साथ ही उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति भी प्राप्त होती है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि के बुध की मिथुन राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक को भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में उन्नति तथा सफलता प्राप्त होती है। चातुर्य एवं शारीरिक-परिश्रम के द्वारा जातक प्रभावशाली जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

तुलालग्न: चतुर्थभाव: शुक्र

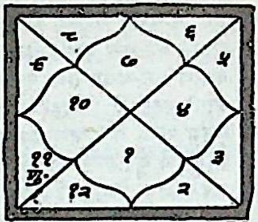


८३०

चौथे केन्द्र, माता, सुख एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का सुख तो प्राप्त होता है, परन्तु शुक्र के अष्टमेश होने के कारण उसमें कुछ कमी भी बनी रहती है। जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सुख, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। वह सुखी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: पंचमभाव: शुक्र

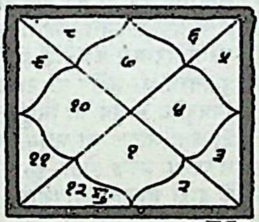


८३१

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को वाक्चातुर्य, बुद्धि एवं विद्या के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है, परन्तु शुक्र के अष्टमेश होने के कारण सन्तान के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को लाभ के क्षेत्र में सफलता मिलती है साथ ही वह बुद्धिमान् भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: षष्ठभाव: शुक्र



८३२

छठे शत्रु, रोग एवं पीड़ा के स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में अपना विशेष प्रभाव रखता है तथा बड़ी-बड़ी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का भी सामान्य लाभ होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं नीच-दृष्टि से अपने मित्र बुध की कन्या राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक को खर्च के मामलों में परेशानी उठानी पड़ती है तथा बाहरी स्थानों से भी कुछ कष्ट होता है। सामान्यतः ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक शान-शौकत का जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: सप्तमभाव: शुक्र

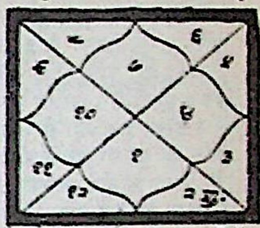


८३३

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के स्थान में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री के पक्ष में कुछ कठिनाइयाँ रहते हुए भी उससे शक्ति प्राप्त होती है तथा शारीरिक-परिश्रम द्वारा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का भी लाभ होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही तुला राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक-सौन्दर्य, आत्म-बल तथा प्रभाव की प्राप्ति भी होती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: अष्टमभाव: शुक्र

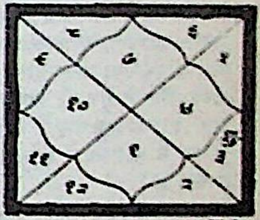


८३४

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपनी ही वृषभ राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु शुक्र के अष्टमेश होने के कारण जातक के शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी आती है। उसका जीवन शान के साथ व्यतीत होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रु-दृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में द्वितीयभाव को देखता है, इस कारण जातक को धन-वृद्धि के लिए चतुराई का आश्रय लेना पड़ता है तथा कुटुम्बी जनों से कुछ वैमनस्य बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: नवमभाव: शुक्र



८३५

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की कुछ कमी के साथ उन्नति होती है। ऐसा जातक भाग्य पर अधिक निर्भर रहता है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति और शारीरिक-सौन्दर्य एवं शील की उपलब्धि भी होती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से सामान्य शत्रु गुरु की धनु राशि में तृतीयभाव को देखता है अतः जातक के पराक्रम में तो वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से सामान्य मतभेद बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: दशमभाव: शुक्र

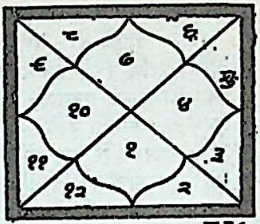


८३६

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता प्राप्त होती है। उसे शारीरिक-शक्ति, प्रभाव एवं आयु की शक्ति मिलती है। शारीरिक-परिश्रम तथा चातुर्य के द्वारा उसे विशेष सफलता मिलती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से शनि की मकर राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्नः एकादशभावः शुक्र

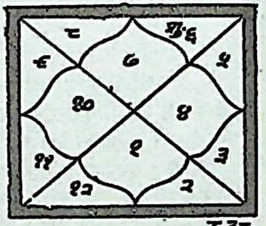


८३७

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शारीरिक-परिश्रम एवं चातुर्य के द्वारा आमदनी के क्षेत्र में सफलता मिलती है। साथ ही उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति भी प्राप्त होती है। उसका जीवन सामान्यतः आनन्दमय व्यतीत होता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भराशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलती है, वाणी की शक्ति में वृद्धि होती है, परन्तु सन्तान-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्नः द्वादशभावः शुक्र



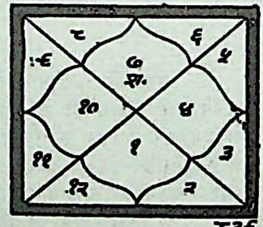
८३८

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक को खर्च के मामले में कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में भी परेशानियाँ आती हैं। इसके साथ ही आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ हानि एवं शारीरिक-क्षेत्र में दुर्बलता प्राप्त होती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से गुरु की मीन राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु-पक्ष में विशेष प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में हिम्मत और चतुराई से सफलता प्राप्त करता है।

'तुला' लग्न में 'शनि' का फल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फ़लादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्नः प्रथमभावः शनि

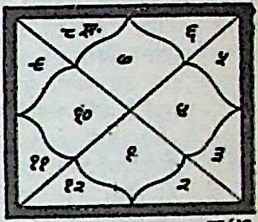


८३९

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित उच्च के शनि के प्रभाव से जातक का शरीर स्थूल एवं प्रभावशाली होता है। उसे माता, भूमि तथा मकान का श्रेष्ठ सुख मिलता है। सन्तान पक्ष भी प्रबल रहता है एवं विद्या के क्षेत्र में भी उन्नति होती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः भाई-बहिन के सम्बन्धों में कुछ वैमनस्य रहता है तथा पराक्रम के क्षेत्र में विशेष परिश्रम करने पर ही सफलता मिलती है। सातवीं नीच-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री से कुछ मतभेद रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। दसवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता के सुख में कुछ कमी रहती है, राज्य के क्षेत्र में सम्मान मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चहिये—

तुलालग्न: द्वितीयभाव: शनि

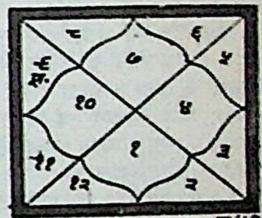


८४०

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन-संचय में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है तथा कुटुम्बी जनों से कुछ मतभेद बना रहता है। साथ ही संतान पक्ष में कुछ कमी आती है तथा विद्या की शक्ति प्राप्त होती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा दसवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है तथा लाभ प्राप्ति के लिये बुद्धि का विशेष उपयोग करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

तुलालग्न: तृतीयभाव: शनि

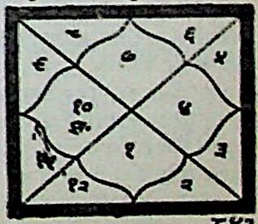


८४१

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनुराशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन की शक्ति प्राप्त होते हुए भी उनसे कुछ वैमनस्य बना रहता है। उसे माता के द्वारा भी शक्ति प्राप्त होती है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: जातक को विद्या और सन्तान की शक्ति यथेष्ट प्राप्त होती है, परन्तु उसकी वाणी में उत्तेजना रहती है और सन्तान से सुख प्राप्त होते हुए भी कुछ मतभेद बना रहता है। यहाँ से शनि सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखता है, अत: बुद्धि योग से जातक के भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म में रुचि बनी रहती है। दसवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

तुलालग्न: चतुर्थभाव: शनि

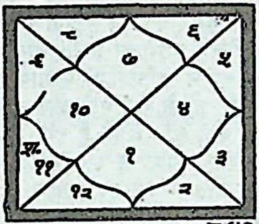


८४२

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं भवन के स्थान में अपनी ही मकर राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। उसे सन्तान एवं विद्या के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अत: जातक शत्रु-पक्ष में विशेष प्रभाव रखता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता से मतभेद रखते हुए भी सुख प्राप्त होता है तथा राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय में सफलता की प्राप्ति होती है। दसवीं उच्च-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है और जातक बड़ा मानी, प्रभावशाली, सुखी तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: पंचमभाव: शनि

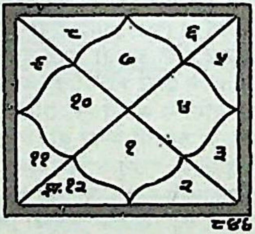


८४३

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपनी ही कुम्भ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। उसे माता, भूमि एवं मकान का सुख भी मिलता है। यहाँ से शनि तीसरी नीच दृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अत: स्त्री से मतभेद एवं दैनिक व्यवसाय के मार्ग में कठिनाइयाँ बनी रहती हैं। विषय-भोगादि के पक्ष में भी कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के मार्ग में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा कुटुम्ब से भी मतभेद बना रहता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति सदैव प्रसन्न रहने वाला तथा मनमौजी होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: षष्ठभाव: शनि

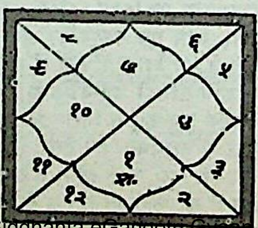


८४४

छठे शत्रु एवं झंझट के स्थान में अपने गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में अपनी बुद्धि के द्वारा सफलता प्राप्त करता है। साथ ही उसे माता, भूमि, सन्तान एवं विद्या के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अत: जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्र दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्पर्क से लाभ होता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है, परन्तु पुरुषार्थ में वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो, और जन्म कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: सप्तमभाव: शनि



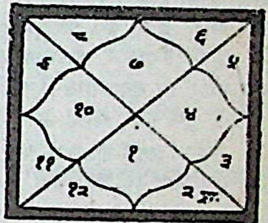
८४५

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री, गृहस्थी एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अशांति एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। साथ ही विद्या व संतान के पक्ष में भी कुछ कमजोरी रहती है। यहाँ से शनि तीसरी मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखता है, अत: जातक बुद्धि योग से भाग्य की वृद्धि तथा धर्म का पालन करता है। सातवीं उच्चदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शरीर का प्रभाव प्राप्त होता है तथा शारी-

रिक-सुख की प्राप्ति भी होती है। दसवीं दृष्टि से चतुर्थभाव को अपनी ही मकर राशि में देखने के कारण माता के पक्ष से कुछ शक्ति मिलती है तथा कठिन परिश्रम द्वारा कुछ कमी के साथ घरेलू सुख भी प्राप्त होता है। फिर भी मस्तिष्क में चिन्ताओं का निवास बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: अष्टमभाव: शनि

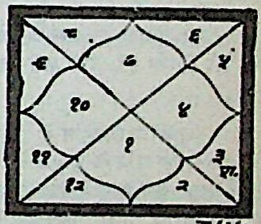


८४६

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृषभराशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु बड़ी होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। उसके माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी आती है तथा विद्या एवं सन्तान के पक्ष में भी कष्ट एवं त्रुटियों का सामना करना पड़ता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में कष्ट, वैमनस्य एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय में कमी रहती है तथा कौटुम्बिक-सुख में व्यवधान पड़ता है। दसवीं दृष्टि से पंचमभाव को स्वराशि में देखने के कारण विद्या एवं सन्तान की सामान्य-शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु ऐसे जातक के मस्तिष्क में परेशानियाँ घर किये रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: नवमभाव: शनि

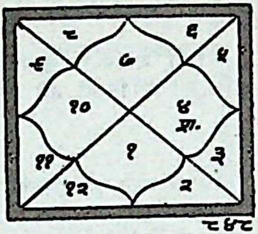


८४७

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुनराशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक अपनी बुद्धि द्वारा भाग्य की उन्नति तथा धर्म का पालन करता है। वह विद्या एवं सन्तान के पक्ष में भी सफलता प्राप्त करता है। उसे माता, भूमि एवं मकान का सुख भी मिलता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः जातक की आमदनी के मार्ग में रुकावटें आती हैं। सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिनों से मतभेद रहता है तथा परिश्रम द्वारा पुरुषार्थ की वृद्धि होती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष से वैमनस्य रहता है तथा बुद्धि-बल से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है। ऐसा जातक अपनी बुद्धि के प्रयोग से भाग्य की उन्नति करता है तथा आनन्द का उपयोग करता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्नः दशमभावः शनि

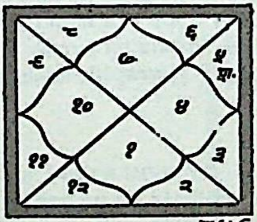


८४८

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सामान्य सफलता प्राप्त होती है। वह विद्वान् होता है, परन्तु सन्तान के साथ उसका मतभेद बना रहता है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक खूब खर्चीला होता है और उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही मकर राशि के चतुर्थभाव में देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। दसवीं नीच-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शनि' स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्नः एकादशभावः शनि

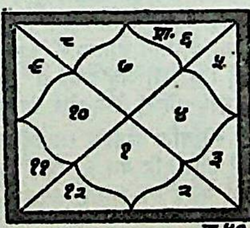


८४९

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ श्रेष्ठ लाभ प्राप्त होता है। साथ ही माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख मिलता है। तीसरी उच्च-दृष्टि से अपने मित्र शुक्र की तुला राशि में प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक-शक्ति एवं प्रभाव की वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही कुम्भ राशि में पंचम-भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान की शक्ति प्राप्त होती है। दसवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु की शक्ति में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति विशेष स्वार्थी होता है। वह लापरवाह, मस्तमौला तथा चिन्तित स्वभाव का भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्नः द्वादशभावः शनि



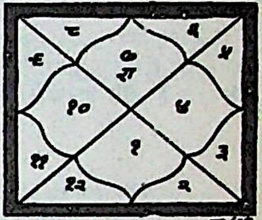
८५०

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी आती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वितीय-भाव को देखता है, अतः धन-संचय में कमी आती है तथा कुटुम्ब से मतभेद रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष में सामान्य प्रभाव रहता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक के भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म के मामलों में रुचि बनी रहती है। ऐसे जातक की बुद्धि एवं वाणी में कुछ भ्रम सा भी बना रहता है।

'तुला' लग्न में 'राहु' का फल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्नः प्रथमभावः राहु

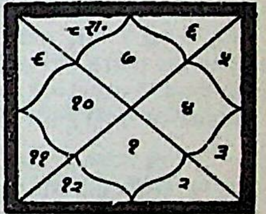


८५२

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शरीर में दुर्बलता एवं परेशानी बनी रहती है। उसे अपनी उन्नति के लिये गुप्त-चातुर्य का आश्रय लेना पड़ता है। दिखावटी रूप में वह अपना प्रभाव प्रदर्शित करता है, परन्तु भीतरी रूप में परेशान रहता है। वह अपनी उन्नति के लिये कठिन परिश्रम करता है। कभी-कभी उसकी उन्नति के मार्ग में विशेप कठिनाइयाँ आती हैं, फिर भी वह अपनी सूझ-बूझ एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर संकटों पर विजय प्राप्त करने में सफल हो जाता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्नः द्वितीयभावः राहु

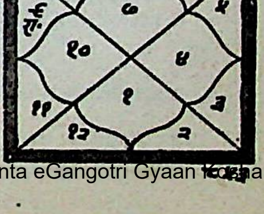


८५३

दूसरे धन-कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को धन-सचय के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और कभी-कभी घोर आर्थिक संकटों का सामना भी करना पड़ता है। किसी-किसी समय उसे कहीं से आकस्मिक रूप में भी धन प्राप्त हो जाता है। वह गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेकर किसी-न-किसी प्रकार अपना काम चलाता है। ऐसे जातक को अपने कुटुम्ब के द्वारा भी क्लेश प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

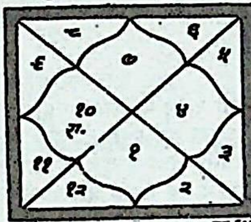
तुलालग्नः तृतीयभावः राहु



तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पराक्रम के क्षेत्र में कमजोरी बनी रहती है तथा भाई-बहिनों के सम्बन्ध से भी कष्ट प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी उन्नति एवं पुरुषार्थ की वृद्धि के लिए गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेता है तथा अनुचित मार्ग पर चलने से भी नहीं चूकता। उसे अपने जीवन में कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु धैर्य, गुप्त-शक्ति एवं चातुर्य के बल पर वह उन पर विजय प्राप्त कर लेता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये —

तुलालग्नः चतुर्थभावः राहु·

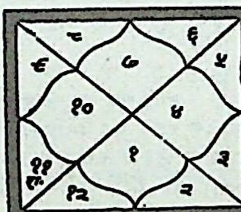


८५४

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी का अनुभव होता है, परन्तु शनि की राशि पर स्थित होने के कारण, वह गुप्त-युक्ति, हिम्मत एवं दृढ़ता के बल पर संकटों का सामना करते हुये सफलता प्राप्त करता है और सामान्य रूप से सुखी भी होता है। ऐसे जातक का जीवन संघर्षपूर्ण बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्नः पंचमभावः राहु

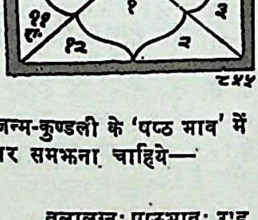


८५५

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा विद्याध्ययन में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति का मस्तिष्क कुछ न कुछ परेशान बना रहता है। वह सदैव चिंतित बना रहता है तथा अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए सत्य असत्य की परवाह नहीं करता। ऐसा जातक अपने शब्दों पर दृढ़ता प्रदर्शित करता है और गुप्त-युक्तियों से काम लेता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

तुलालग्नः षष्ठभावः राहु

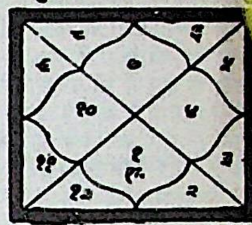


८५६

छठे शत्रु एवं झगड़े के स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष से परेशानियाँ तो उठानी पड़ती हैं, परन्तु वह उन पर विजय प्राप्त कर लेता है और अपना प्रभाव स्थापित करता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती तथा बहादुर होता है और गुप्त-युक्तियों के बल पर शत्रु, झंझट एवं विपक्षियों पर सफलता पाता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

तुलालग्न: सप्तमभाव: राहु

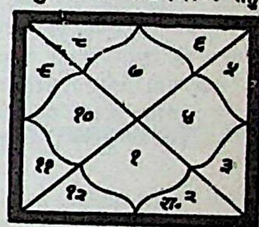


८५७

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से संकटों का सामना करना पड़ता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं, परन्तु गुप्त-युक्ति, धैर्य एवं हिम्मत के बल पर वह उन पर विजय प्राप्त करता है। व्यवसाय के क्षेत्र में कभी-कभी महान् संकट के अवसर उपस्थित होते हैं, परन्तु कठिन संघर्ष के बाद वह उन पर भी विजय प्राप्त कर लेता है। इसी प्रकार स्त्री-पक्ष में भी कठिनाइयों के बाद कुछ सफलता पाता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

तुलालग्न: अष्टमभाव: राहु



८५८

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के पक्ष में बड़े संकटों का सामना करना पड़ता है तथा कभी-कभी प्राणों पर भी नौबत बन आती है, परन्तु मृत्यु नहीं होती। इसके साथ ही जातक को पुरातत्त्व की हानि भी होती है। उसे अपने दैनिक जीवन में चिन्ता, परेशानी संघर्ष एवं झंझटों का सामना करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: नवमभाव: राहु

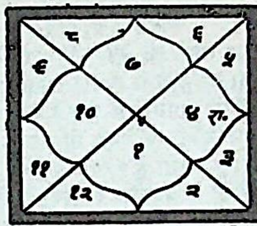


८५९

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक गुप्त-युक्तियों के बल पर अपने भाग्य की विशेष वृद्धि करता है तथा धर्म का भी सतर्कतापूर्वक पालन करता है। ऐसे व्यक्ति की भाग्योन्नति में कभी-कभी बाधाएँ भी आती हैं, परन्तु अपने चातुर्य, धैर्य एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर वह उन सब पर सफलता प्राप्त करता रहता है तथा भाग्यवान् समझा जाता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

तुलालग्न: दशमभाव: राहु

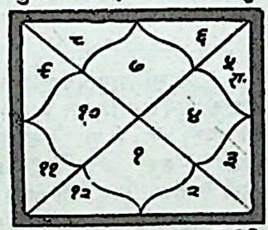


८९०

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पिता के सुख में कमी रहती है। साथ ही राज्य के क्षेत्र में भी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। व्यवसाय के क्षेत्र में उसके समक्ष बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं तथा उन्नति के मार्ग में रुकावटें पड़ती हैं। ऐसा जातक बहुत परेशानियों तथा कठिनाइयों के बाद ही उन्नति एवं सफलता प्राप्त कर पाता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: एकादशभाव: राहु

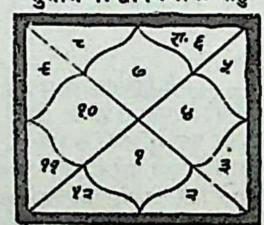


८९१

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह-राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को आमदनी के मार्ग में अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु गुप्त-युक्ति, चातुर्य एवं हिम्मत के कारण उन सब पर विजय प्राप्त करके जातक अपनी उन्नति करता है। ऐसे व्यक्ति को कभी-कभी विशेष संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु अपनी हिम्मत एवं परिश्रम के बल पर अन्ततः उसे सफलता भी प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: द्वादशभाव: राहु



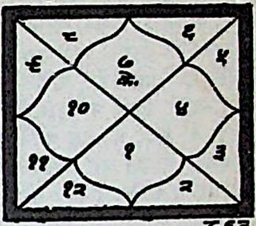
८९२

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा कभी-कभी किसी बड़े संकट का शिकार भी होना पड़ता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से जातक को कुछ शक्ति भी प्राप्त होती है। संक्षेप में ऐसा जातक अपने गुप्त युक्ति-बल, परिश्रम, विवेक, कूटनीति, धैर्य तथा हिम्मत के कारण जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

'तुला' लग्न में 'केतु' का फल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: प्रथमभाव: केतु

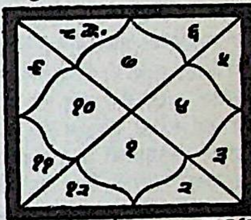


८६३

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को शारीरिक-पक्ष में कभी-कभी विशेष कष्ट एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है, परन्तु ऐसा जातक गुप्त-युक्ति, धैर्य एवं चातुर्य के बल पर अपने व्यक्तित्व की उन्नति करता है तथा समाज में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। शरीर के भीतर गुप्त कमजोरी के रहते हुए भी वह बाहर से बड़ा हिम्मतवर बना रहता है तथा बुद्धि-बल से सफल एवं विजयी होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: द्वितीयभाव: केतु

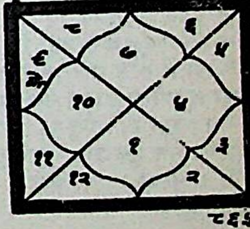


८६४

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को धन-संचय एवं धन-प्राप्ति के मार्ग में कठिनाइयों एवं संकटों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त-युक्तियों के बल पर धनोपार्जन करता है, फिर भी वह चिन्तित तथा परेशान ही बना रहता है। उसे अपने कुटुम्बियों द्वारा भी कष्ट प्राप्त होता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती तथा धैर्यवान् होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: तृतीयभाव: केतु

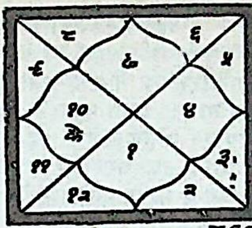


८६५

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है और उसे भाई-बहिनों का सुख भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी, धैर्यवान् तथा साहसी होता है। कभी-कभी उसे भाई-बहिनों के कारण कुछ कष्ट भी उठाना पड़ता है तथा मन के भीतर परेशानी एवं कमजोरी उत्पन्न होती है, फिर भी वह बड़ी हिम्मत से काम लेता है तथा अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: चतुर्थभाव: केतु

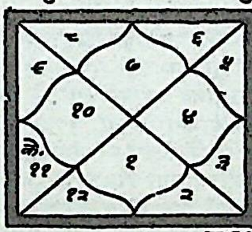


८९६

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी रहती है। वह घरेलू झंझटों का शिकार बना रहता है। कभी-कभी उसके परिवार में घोर अशान्ति उत्पन्न हो जाती है, फिर भी वह अपने धैर्य, साहस, बुद्धि एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करता है और थोड़ी-बहुत सफलता भी पाता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: पंचमभाव: केतु

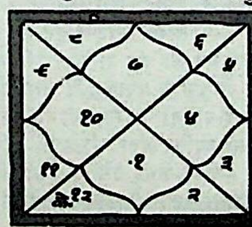


८९७

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से संकट एवं परेशानी की प्राप्ति होती है, साथ ही विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। शनि की राशि पर स्थित होने के कारण जातक कठिन परिश्रम द्वारा विद्याध्ययन करता है तथा अनेक कठिनाइयों के बाद सन्तान-पक्ष में भी थोड़ी-बहुत सफलता पाता है, फिर भी उसे सन्तान की ओर से अत्यधिक परेशानियाँ तथा संकटों का सामना करना पड़ता है। सम्भव है कि ऐसा व्यक्ति निस्सन्तान ही बना रहे।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: षष्ठभाव: केतु

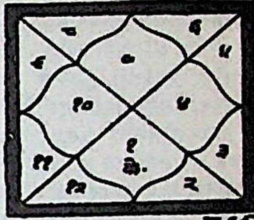


८९८

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक झगड़े-झंझट, रोग एवं शत्रु-पक्ष में बड़ी हिम्मत, बहादुरी, धैर्य एवं गुप्त-युक्तियों से काम लेकर सफलता प्राप्त करता है। कभी-कभी शत्रुओं के कारण उसे घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु वह भयभीत नहीं होता और बहादुरी के साथ मुकाबला करते हुए उन पर विजय पाता है। ऐसी ग्रह-स्थिति वाले जातक का ननसाल पक्ष कमजोर रहता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु', का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: सप्तमभाव: केतु



८६६

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष द्वारा विशेष कष्ट का अनुभव होता है तथा दैनिक आमदनी के मार्ग में भी अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वह स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए गुप्त-युक्तियों, धैर्य, हिम्मत एवं परिश्रम का सहारा लेता है, जिसके कारण थोड़ी–बहुत सफलता प्राप्त होती है। ऐसी ग्रह-स्थिति वाले जातक को इन्द्रिय-विकार का भी सामना करना पड़ता है तथा गृहस्थी के संचालन में बहुत कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' मे 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: अष्टमभाव: केतु

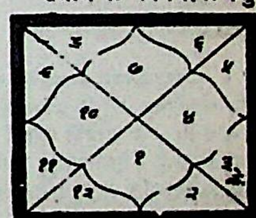


८००

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन म अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के विषय में अनेक बार कठिनाइयों तथा संकटों का सामना करना पड़ता है। उसे पुरातत्त्व की हानि भी उठानी पड़ती है। ऐसे व्यक्ति का जीवन गुप्त-चिन्ताओं से ग्रस्त बना रहता है। उसके पेट में भी कुछ-न-कुछ विकार रहता है, परन्तु वह साहस, धैर्य एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर किसी प्रकार अपने जीवन को आगे बढ़ाता चलता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

तुलालग्न: नवमभाव: केतु

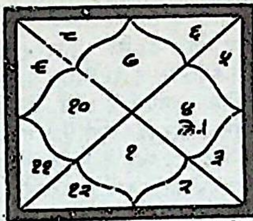


८०१

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में विशेष बाधाएँ आती हैं तथा धर्म की भी हानि होती है। भाग्य के सम्बन्ध में जातक को कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अनुचित उपायों से भी अपना स्वार्थ सिद्ध करता है तथा अपयश पाता है। ईश्वर तथा धर्म के विषय में उसकी श्रद्धा कम होती है और वह धर्म के विरुद्ध आचरण करने में भी नहीं हिचकिचाता।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

तुलालग्न: दशमभाव: केतु



८८२

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा कष्ट प्राप्त होता है, राजकीय क्षेत्रों से परेशानी होती है तथा व्यवसाय के पक्ष में भी वारम्बार कठिनाइयों एवं विघ्नों का सामना करना पड़ता है। किसी-किसी समय उसके सामने बड़े व्यावसायिक संकट भी उपस्थित हो जाते हैं। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में अनेक बार उतार-चढ़ाव देखता है तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर सामान्य सफलता प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादशभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुलालग्न: एकादशभाव: केतु

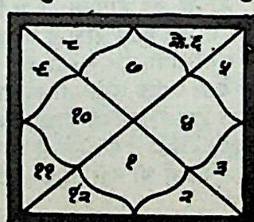


८८३

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों तथा विघ्नों का सामना तो करना पड़ता है, परन्तु विशेष परिश्रम, धैर्य एवं गुप्त-युक्तियों के द्वारा उसे सफलता भी प्राप्त होती है। किसी-किसी समय उसे लाभ के क्षेत्र में गहरे संकटों में भी फंस जाना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अधिक मुनाफा खाने के लिए प्रयत्नशील रहता है तथा प्रभावशाली भी होता है। ऐसे लोग अनेक कठिनाइयों एवं संकटों से गुजरने के बाद सफलता प्राप्त करते है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

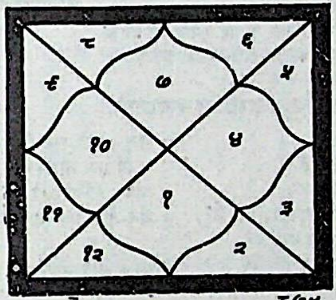
तुलालग्न: द्वादशभाव: केतु



८८४

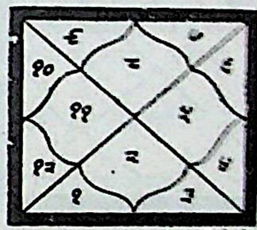
बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक खूब खर्चीला होता है, साथ ही उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपने खर्च को चलाते रहने के लिए विवेक-बुद्धि से काम लेता है तथा कठिन परिश्रम भी करता है। इतने पर भी उसे कभी-कभी संकटों एवं परेशानियों का शिकार बन जाना पड़ता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी उसे कभी-कभी कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं, परन्तु अन्त में सफलता मिलती है।

'तुला' लग्न का फलादेश समाप्त



८७५

वृश्चिक-लग्न



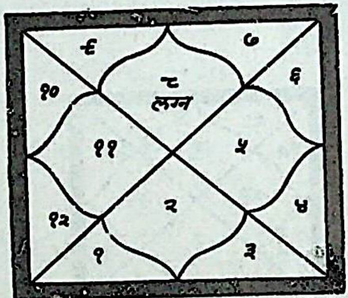
८०८

[तुला लग्न वाली कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग फलादेश]

'वृश्चिक' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'वृश्चिक' लग्न में जन्म लेने वाला जातक शूरवीर, अत्यन्त विचारशील, निर्दोष, विद्या के आधिक्य से युक्त, क्रोधी, राजाओं से पूजित, गुणवान्, शास्त्रज्ञ, शत्रुनाशक, कपटी, पाखण्डी, मिथ्यावादी, तमोगुणी, दूसरों के मन की बात जानने वाला, पर-निन्दक, कटु स्वभाव वाला तथा सेवा-कर्म करने वाला होता है। उसका शरीर ठिगना तथा स्थूल होता है, आँखें गोल होती हैं। छाती चौड़ी होती है। वह भाइयों से द्रोह करने वाला, दयाहीन, ज्योतिषी, तथा भिक्षावृत्ति करने वाला होता है। वह अपने जीवन की प्रथमावस्था में दुःखी रहता है तथा मध्यमावस्था में सुख पाता है। उसका भाग्योदय २० अथवा २४ वर्ष की आयु में होता है।

'वृश्चिक लग्न'



८७७

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव मुख्यतः दो प्रकार से पड़ता है—

(१) ग्रहों की जन्म-कालीन स्थिति के अनुसार।
(२) ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के अनुसार।

जातक की जन्म-कालीन ग्रह-स्थिति जन्म-कुण्डली में दी गई होती है, उसमें जो ग्रह जिस भाव में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित प्रभाव निरन्तर स्थायी रूप से डालता रहता है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसकी जानकारी पंचाङ्ग द्वारा की जा सकती है। ग्रहों की दैनिक-गोचर-गति के सम्बन्ध में या तो किसी ज्योतिषी से पूछ लेना चाहिए अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिए। इस सम्बन्ध में पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर अस्थायी रूप से अपना प्रभाव डालते हैं।

उदाहरण के लिए यदि किसी जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य 'वृश्चिक' राशि पर 'प्रथमभाव' में बैठा है, तो उसका स्थायी-प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ८७८ के अनुसार पड़ता रहेगा; परन्तु यदि दैनिक ग्रह-गोचर में कुण्डली देखते समय सूर्य 'धनु' राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा होगा तो उस स्थिति में वह उदाहरण-

कुण्डली संख्या ६६० के अनुसार उतनी अवधि तक जातक के जीवन पर अपना अस्थायी प्रभाव अवश्य डालेगा, जब तक कि वह 'धनु' राशि से हटकर 'मकर' राशि में नहीं चला जाता। 'मकर' राशि में पहुँचकर वह 'मकर' राशि के अनुरूप अपना प्रभाव डालना आरम्भ कर देगा, अतः जिस जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य 'वृश्चिक' राशि के 'प्रथमभाव' में बैठा हो, उसे उदाहरण-कुण्डली संख्या ८७८ में वर्णित फलादेश देखने के पश्चात्, यदि उन दिनों ग्रह-गोचर में सूर्य 'धनु' राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा हो तो उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६० का फलादेश भी देखना चाहिए तथा इन दोनों फलादेशों के समन्वय-स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को अपने वर्तमान समय पर प्रभावकारी समझना चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विषय में जान लेना चाहिए।

'वृश्चिक' लग्न में जन्म लेने वाले जातक की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदाहरण-कुण्डली-संख्या ८७८ से ६८५ तक में किया गया है। पंचाङ्ग की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार 'वृश्चिक' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों को किन-किन उदाहरण-कुण्डलियों द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना चाहिए—इसका विस्तृत वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है, अतः उनके अनुसार ग्रहों की तात्कालिक स्थिति के सामयिक प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। तदुपरान्त दोनों फलादेशों के समन्वय-स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिए।

इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति जन्म-कुण्डली का ठीक-ठीक फलादेश सहज में ही ज्ञात कर सकता है।

टिप्पणी—(१) पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश से ऊपर अथवा ३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह सूर्य से अस्त होता है, वह भी जातक के ऊपर अपना प्रभाव या तो बहुत कम डालता है या फिर पूर्णतः प्रभावहीन रहता है।

(२) स्थायी जन्म-कुण्डली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा अपनी कुण्डली में लिखवा लेने चाहिए, ताकि उनके अंशों के बारे में बार-बार जानकारी प्राप्त करने के झंझट से बचा जा सके। तात्कालिक ग्रह-गोचर के ग्रहों के अंशों की जानकारी पंचांग द्वारा अथवा किसी ज्योतिषी से पूछ कर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(३) स्थायी जन्म-कुण्डली अथवा तात्कालिक ग्रह-गति-कुण्डली के यदि किसी भाव में एक से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन स्थानों पर उनकी दृष्टियाँ पड़ती हैं, जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता रहता है। इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में 'ग्रहों की युति का प्रभाव' शीर्षक अध्याय के अन्तर्गत विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन किया गया है, अतः इस विषय की जानकारी वहाँ से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(४) 'विंशोत्तरी दशा' के सिद्धान्तानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० वर्ष की मानी जाती है। इस आयु-अवधि में जातक नवग्रहों की दशाओं का भोग कर लेता है। विभिन्न ग्रहों का दशा-काल भिन्न-भिन्न होता है। परन्तु अधिकांश व्यक्ति इतनी लम्बी आयु तक जीवित नहीं रह पाते, अतः वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं का भोग कर पाते हैं। जातक के जीवन के जिस काल में जिस ग्रह की दशा—जिसे 'महादशा' भी कहा जाता है—चल रही होती है, जन्मकालीन ग्रह-स्थिति के अनुसार उसके जीवन-काल की उतनी अवधि उस ग्रह-विशेष के प्रभाव से विशेष रूप से प्रभावित रहती है। जातक का जन्म किस ग्रह की महादशा में हुआ है और उसके जीवन में किस अवधि से किस

अवधि तक किस ग्रह की महादशा चलेगी और वह महादशा जातक के ऊपर अपना क्या विशेष प्रभाव डालेगी—इन सब बातों का उल्लेख भी तीसरे प्रकरण में किया गया है।

इस प्रकार (१) जन्म-कुण्डली, (२) तात्कालिक ग्रह-गोचर-कुण्डली एवं (३) ग्रहों की महादशा —इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है, अतः इन तीनों के समन्वय स्वरूप फलादेश का ठीक-ठीक निर्णय करके अपने भूत, वर्तमान तथा भविष्यत्कालीन जीवन के विषय में सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८७८ से ८८९ तक में देखना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थाई-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियो में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८७८ के अनुसार समझना चाहिये ।

(२) जिस 'महीने' में 'सूर्य' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८७९ के अनुसार समझना चाहिए ।

(३) जिस 'महीने' में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८८० के अनुसार समझना चाहिए ।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८८१ के अनुसार समझना चाहिए ।

(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८८२ के अनुसार समझना चाहिए ।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८८३ के अनुसार समझना चाहिए ।

(७) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८८४ के अनुसार समझना चाहिए ।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८८५ के अनुसार समझना चाहिए ।

(९) जिस महीने में 'सूर्य' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८८६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'सूर्य' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८८७ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८८८ के अनुसार समझना चाहिए ।

(१२) जिस महीने में 'सूर्य' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८८९ के अनुसार समझना चाहिए ।

वृश्चिक (८) लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'चन्द्रमा' का फलादेश

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८९० से ९०१ तक में देखना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८९० के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'धनु' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८९१ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मकर' राशि पर पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८९२ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८९३ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मीन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८९४ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मेष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८९५ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'वृष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८९६ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मिथुन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८९७ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८९८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'सिंह' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८९९ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कन्या' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९०० के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'तुला' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९०१ के अनुसार समझना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'मंगल' का फलादेश

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'मंगल' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९०२ से ९१३ तक में देखना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों के नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'मंगल' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९०२ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'मंगल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९०३ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस महीने में 'मंगल' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९०४ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'मंगल' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९०५ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'मंगल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९०६ के अनुसार समझना चाहिये।

(६) जिस महीने में 'मगल' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९०७ के अनुसार समझना चाहिये।

(७) जिस महीने में 'मंगल' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९०८ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस महीने में 'मंगल' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९०९ के अनुसार समझना चाहिये।

(९) जिस महीने में 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९१० के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'मंगल' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९११ के अनुसार समझना चाहिये।

(११) जिस महीने में 'मंगल' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९१२ के अनुसार समझना चाहिये।

(१२) जिस महीने में 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९१३ के अनुसार समझना चाहिये।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'बुध' का फलादेश

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९१४ से ९२५ तक में देखना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थाई फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियो में आगे लिखे अनुसार देखना चाहिये—

(१) जिस महीने में 'बुध' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९१४ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस महीने में 'बुध' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डला संख्या ९१५ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस महोने में 'बुध' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९१६ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'बुध' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९१७ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'बुध' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९१८ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'बुध' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९१९ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९२० के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९२१ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९२२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९२३ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९२४ के अनुसार समझना चाहिये।

(१२) जिस महीने में 'बुध' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९२५ के अनुसार समझना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'गुरु' का फलादेश

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९२६ से ९३७ तक में देखना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९२६ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९२७ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९२८ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९२९ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३० के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली-संख्या ६३१ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३२ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'गुरु' मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३३ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष मे 'गुरु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डनी संख्या ६३५ के अनुसार समझना चाहिये।

(११) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३६ के अनुसार समझना चाहिये।

(१२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली सख्या ६३७ के अनुसार समझना चाहिए।

वृश्चिक (८) लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३८ से ६४९ तक में देखना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थाई-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३८ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'शुक्र' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३९ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'शुक्र' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६४० के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'शुक्र' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६४१ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'शुक्र' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६४२ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'शुक्र' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६४३ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९४४ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९४५ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९४६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९४७ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'शुक्र' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९४८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'शुक्र' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९४९ के अनुसार समझना चाहिये।

वृश्चिक (८) लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'शनि' का फलादेश

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९५० से ९६१ तक में देखना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९५० के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'शनि' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९५१ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस वर्ष में 'शनि' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९५२ के अनुसार समझना चाहिये।

(४) जिस वर्ष में 'शनि' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९५३ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'शनि' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९५४ के अनुसार समझना चाहिये।

(६) जिस वर्ष में 'शनि' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९५५ के अनुसार समझना चाहिये।

(७) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९५६ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस वर्ष में 'शनि' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९५७ के अनुसार समझना चाहिये।

(९) जिस वर्ष में 'शनि' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९५८ के अनुसार समझना चाहिये।

(१०) जिस वर्ष में 'शनि' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९५९ के अनुसार समझना चाहिये ।

(११) जिस वर्ष में 'शनि' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९६० के अनुसार समझना चाहिये ।

(१२) जिस वर्ष में 'शनि' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९६१ के अनुसार समझना चाहिये ।

वृश्चिक (८) लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'राहु' का फलादेश

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९६२ से ९७३ तक में देखना चाहिए ।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये—

(१) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९६२ के अनुसार समझना चाहिए ।

(२) जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९६३ के अनुसार समझना चाहिए ।

(३) जिस वर्ष में 'राहु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९६४ के अनुसार समझना चाहिए ।

(४) जिस वर्ष में 'राहु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९६५ के अनुसार समझना चाहिये ।

(५) जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९६६ के अनुसार समझना चाहिये ।

(६) जिस वर्ष में 'राहु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९६७ के अनुसार समझना चाहिये ।

(७) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९६८ के अनुसार समझना चाहिए ।

(८) जिस वर्ष में 'राहु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९६९ के अनुसार समझना चाहिये ।

(९) जिस वर्ष में 'राहु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९७० के अनुसार समझना चाहिये ।

(१०) जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९७१ के अनुसार समझना चाहिये ।

(११) जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९७२ के अनुसार समझना चाहिये ।

(१२) जिस वर्ष में 'राहु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९७३ के अनुसार समझना चाहिये ।

वृश्चिक (८) लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'केतु' का फलादेश

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९७४ से ९८५ तक में देखना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक' राशि हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९७४ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'केतु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९७५ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'केतु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९७६ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'केतु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९७७ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'केतु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९७८ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'केतु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९७९ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९८० के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'केतु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९८१ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'केतु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९८२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'केतु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९८३ के अनुसार समझना चाहिए।

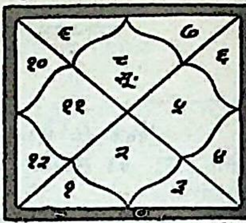
(११) जिस वर्ष में 'केतु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९८४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'केतु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९८५ के अनुसार समझना चाहिए।

'वृश्चिक' लग्न में 'सूर्य' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: प्रथमभाव: सूर्य

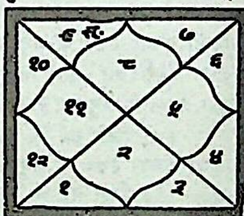


२८७

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक सुन्दर, स्वस्थ, मानी, स्वाभिमानी, क्रोधी, प्रभावशाली तथा गौरव-युक्त होता है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से सुख, सहयोग एवं सम्मान प्राप्त होता है। वह सुन्दर वस्त्राभूषणों को धारण करने वाला तथा यशस्वी होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृषभराशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक का अपनी स्त्री से कुछ मतभेद बना रहता है तथा दैनिक रोजगार में कुछ कठिनाइयों का अनुभव भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्न: द्वितीयभाव: सूर्य

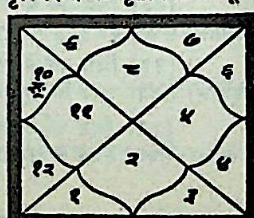


२८८

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को व्यवसाय एवं पितृ-पक्ष से धन की शक्ति प्राप्त होती है तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। उसे राज्य द्वारा सम्मान तथा व्यवसाय द्वारा लाभ भी होता है, परन्तु पिता के सुख में कुछ कमी रहती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है और उसका दैनिक जीवन भी प्रभावपूर्ण बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

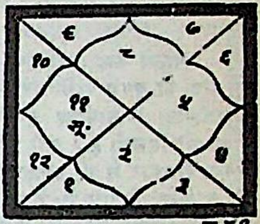
वृश्चिकलग्न: तृतीयभाव: सूर्य



तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी बनी रहती है, परन्तु पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा भी सुख, सम्मान, सहयोग तथा सफलता की प्राप्ति होती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि के नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की वृद्धि होती है और वह धर्म का भी यथाविधि पालन करता है। ऐसा जातक बड़ा तेजस्वी, हिम्मतवर तथा पुरुषार्थी होता है।

जिस जातक जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए —

वृश्चिकलग्नः चतुर्थभावः सूर्य

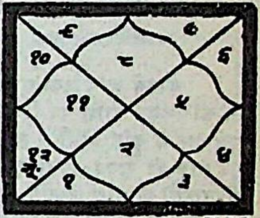


८२१

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का अपनी माता के साथ मतभेद रहता है और भूमि तथा भवन के सुख में भी कुछ कमी आती है। घरेलू सुख तो मिलता है, परन्तु उसमें भी कुछ त्रुटियाँ बनी रहती हैं। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से दशमभाव को स्वराशि में देखता है, अतः जातक को पिता का सुख, राज्य द्वारा सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी उन्नति स्वयं करता है।

जिस जातक जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः पंचमभावः सूर्य

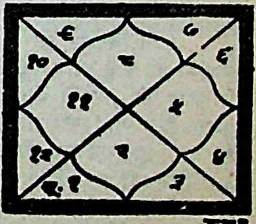


८२२

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है। वह राजनीति के क्षेत्र में उन्नति करता है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से भी सम्मान तथा सहयोग पाता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्र दृष्टि से बुध की कन्या राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को लाभ के श्रेष्ठ साधन प्राप्त होते हैं। वह अपने बुद्धि-बल से आमदनी को बढ़ाता तथा यश एवं सुख प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः षष्ठभावः सूर्य

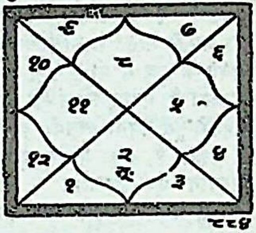


८२३

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में विशेष प्रभाव रखने वाला तथा विजयी होता है। अपने माता-पिता से सामान्य मतभेद रहता है, परन्तु राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी तथा प्रभावशाली होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं नीचदृष्टि से अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक को खर्च के मामलों में कुछ परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्नः सप्तमभावः सूर्य

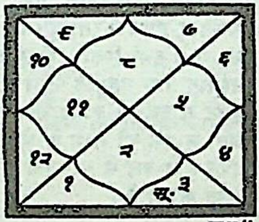


८८४

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से सामान्य सन्तोष रहता है, परन्तु उसको शक्ति भी मिलती है। इसी प्रकार कुछ कठिनाइयों के साथ दैनिक रोजगार में भी सफलता मिलती है। राज्य, पिता, एवं व्यवसाय के पक्ष से साधारण मान, सहयोग एवं सफलता प्राप्त होती है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक का शरीर सुन्दर एवं प्रभावशाली होता है। वह तेजस्वी तथा गौरवपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाला, प्रभावशाली, त्यागी तथा उन्नतिशील होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्नः अष्टमभावः सूर्य

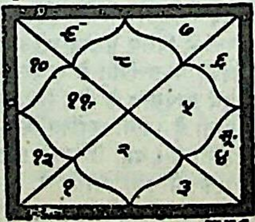


८८५

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के आयु-पक्ष में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ मिलता है। साथ ही राज्य, पिता एवं व्यवसाय के पक्ष में भी कुछ कठिनाइयों के साथ उन्नति होती है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक परिश्रम द्वारा धन की वृद्धि करता है तथा उसे कुटुम्ब का सुख एवं संयोग भी प्राप्त होता है। वह बाहरी स्थान का सम्पर्क भी प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्नः नवमभावः सूर्य

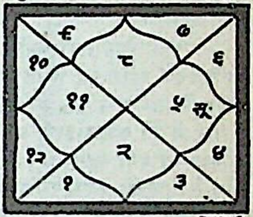


८८६

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के भाग्य की उन्नति होती है और वह धर्म का पालन करता है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता, सुख एवं यश की प्राप्ति होती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक का भाई-बहिनों के साथ मतभेद रहता है और उसके पराक्रम में भी सामान्य वृद्धि होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक सामान्य सुखी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्नः दशमभावः सूर्यः

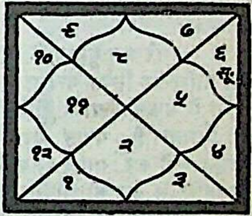


८८७

दसवें केन्द्र, राज्य पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपनी ही सिंह राशि पर स्थित स्वक्षेत्री सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा शक्ति, राज्य द्वारा सम्मान एवं व्यवसाय द्वारा लाभ की प्राप्ति होती है। वह अपनी मानप्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिये उग्र कर्म भी करता है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक का अपनी माँ के साथ वैमनस्य रहता है। साथ ही भूमि तथा मकान आदि के सुख में भी कमी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्नः एकादशभावः सूर्यः

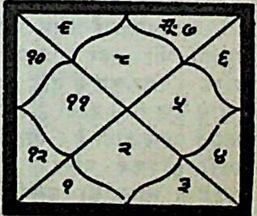


८८८

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने माता, पिता के द्वारा श्रेष्ठ लाभ होता है, राज्य द्वारा सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी विशेष लाभ एवं यश मिलता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान की शक्ति प्राप्त होती है तथा विद्या एवं बुद्धि में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति शासन करने वाला, तेजस्वी, तेज स्वभाव का, स्वाभिमानी यशस्वी तथा प्रतिष्ठित होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः द्वादशभावः सूर्यः



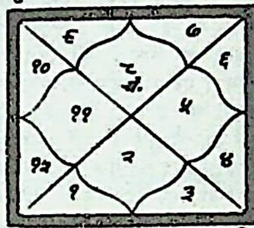
८८९

बारहवें व्यय एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्ध वाले भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी कष्ट प्राप्त होता है। इसी प्रकार राज्य, पिता एवं व्यवसाय के पक्ष से भी परेशानियाँ बनी रहती हैं। यहाँ से सूर्य सातवीं उच्चदृष्टि से अपने मित्र मंगल की मेष राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु-पक्ष में प्रभावशाली बना रहता है तथा झगड़े-मुकद्दमे आदि के मामलों से लाभ प्राप्त करता है।

'वृश्चिक' लग्न में 'चन्द्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्न: प्रथमभाव: चन्द्र

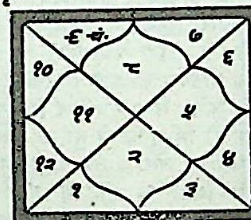


८६०

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के शरीर में कुछ दुर्बलता रहती है तथा यश-प्राप्ति के मार्ग में भी कठिनाइयाँ आती हैं, जिसके कारण मन चिन्तित-सा बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं उच्चदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में सप्तमभाव को देखता है, अत: जातक को सुन्दर तथा मनोनुकूल स्त्री प्राप्त होती है, साथ ही व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्न: द्वितीयभाव: चन्द्र



८६१

दूसरे धन-कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को धन-संचय में सफलता प्राप्त होती है, साथ ही कौटुम्बिक सुख भी मिलता है, परन्तु ऐसा जातक धर्म का यथाविधि पालन नहीं कर पाता। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में अष्टमभाव को देखता है, अत: जातक को आयु की शक्ति प्राप्त होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक भाग्यवान्, धनी तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्न: तृतीयभाव: चन्द्र

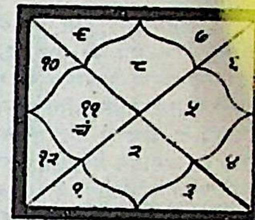


८६२

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है। ऐसे व्यक्ति की मानसिक शक्ति अत्यन्त प्रबल होती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से अपनी ही कर्क राशि में नवमभाव को देखता है, अत: जातक के भाग्य की उन्नति होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ द्वारा यश प्राप्त करता है तथा भाग्यशाली समझा जाता है।

जिस जातक का 'जन्म' 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्नः चतुर्थभावः चन्द्र

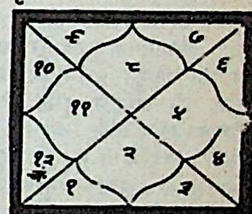


८६३

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है, परन्तु शत्रु राशिस्थ होने के कारण कुछ असन्तोष भी बना रहता है। ऐसा जातक धर्म का पालन भी करता है तथा मनोयोग द्वारा भाग्य की भी उन्नति बनाता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सुख-सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्नः पंचमभावः चन्द्र



८६४

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में श्रेष्ठ सफलता प्राप्त होती है। वह धर्मात्मा, सज्जन, विनम्र तथा मधुरभाषी भी होता है तथा अपने बुद्धि बल से भाग्य की उन्नति करता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की वृद्धि होती है और वह अच्छा लाभ कमाता है। बुद्धि तथा परिश्रम द्वारा उसे आमदनी के श्रेष्ठ साधन प्राप्त होते रहते हैं।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्नः षष्ठभावः चन्द्र

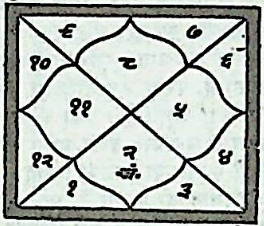


८६५

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में शान्ति-नीति द्वारा सफलता प्राप्त करता है। शत्रुओं तथा झंझटों के कारण उसके मन में अशान्ति बनी रहती है। वह परिश्रम द्वारा भाग्य की वृद्धि भी करता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक अपने भाग्यबल से खर्च को चलाता तथा बाहरी स्थानों से सफलता एवं वृद्धि प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्नः सप्तमभावः चन्द्र

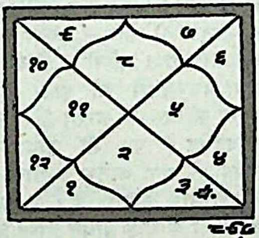


८६

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सुन्दर एवं भाग्यवान् स्त्री मिलती है तथा गृहस्थ-जीवन सुखमय व्यतीत होता है। वह व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त करता है। ऐसे जातक का मनोबल बढ़ा हुआ रहता है, जिसके कारण भाग्य तथा यश में वृद्धि होती हैं। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं नीचदृष्टि से मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शरीर में कुछ कमजोरी बनी रहती है। साथ ही भाग्य तथा धर्म के पक्ष में भी कुछ कमी का अनुभव होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्नः अष्टमभावः चन्द्र

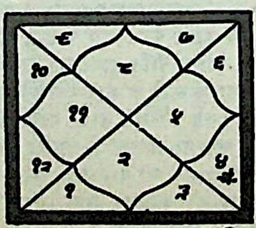


८७

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है और उसे पुरातत्त्व शक्ति का लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक धन का लाभ प्राप्त करता है, साथ ही उसे अपने कुटुम्ब का भी सुख-सहयोग मिलता है। संक्षेप में, ऐसा जातक शान्त स्वभाव वाला, यशस्वी, धनी तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्नः नवमभावः चन्द्र

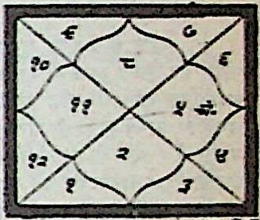


८८

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपनी ही कर्क राशि पर स्थित स्वक्षेत्री चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की श्रेष्ठ उन्नति होती है। वह भाग्यवान्, धर्मात्मा तथा यशस्वी होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में तृतीय-भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों के सम्बन्ध से कुछ निराशा रहती है, परन्तु पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है। कुल मिलाकर ऐसा जातक सुखी तथा समृद्ध होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः दशमभावः चन्द्र

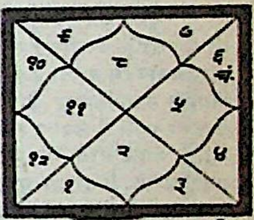


८९९

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। वह भाग्यवान् तथा धर्मात्मा भी होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ कमी रहती है। फिर भी वह सुखी, यशस्वी, सन्तुष्ट तथा धनी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः एकादशभावः चन्द्र

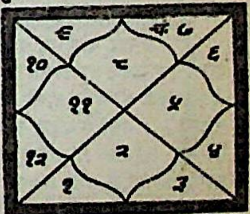


९००

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को श्रेष्ठ लाभ प्राप्त होता है तथा धन एवं धर्म के क्षेत्र में सफलता मिलती है। वह भाग्यवान, धनी, सुखी, यशस्वी तथा धर्मपरायण होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है। उसका मनोबल बढ़ा-चढ़ा रहता है। वाणी में शक्ति रहती है तथा यश एवं लाभ की प्राप्ति होती रहती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः द्वादशभावः चन्द्र



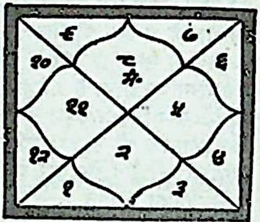
९०१

बारहवें व्यय भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, परन्तु उसकी पूर्ति में किसी कठिनाई का अनुभव नहीं होता। साथ ही उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अत्यधिक शक्ति एवं सफलता प्राप्त होती है। अपने स्थान पर उसका भाग्य कमजोर बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु-पक्ष में शान्ति से काम लेता है और कठिनाइयों पर भाग्य-बल से विजय प्राप्त करता है।

'वृश्चिक' लग्न में 'मंगल' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः प्रथमभावः मंगल

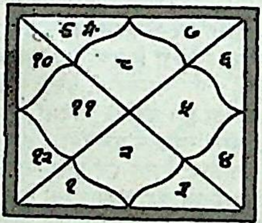


६०२

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपनी ही वृश्चिक राशि पर स्थित स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक की शारीरिक-शक्ति में वृद्धि होती है और उसे शत्रु-पक्ष में भी सफलता प्राप्त होती है, परन्तु कभी-कभी बीमार भी होना पड़ता है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रु दृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान के सुख में कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है और आठवीं मित्रदृष्टि से अष्टम-भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः द्वितीयभावः मंगल

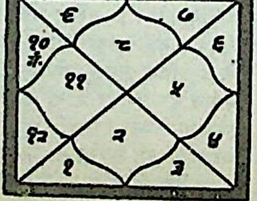


६०३

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा धनोपर्जन करता है तथा कुटुम्ब का सुख कुछ परेशानियों के साथ मिलता है। शारीरिक-सुख एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा शत्रुपक्ष पर प्रभाव बना रहता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में शक्ति एवं सफलता प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। आठवी नीचदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की हानि होती है। साथ ही यश की भी कमी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे मंगल का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चहिए—

वृश्चिकलग्नः तृतीयभावः मंगल

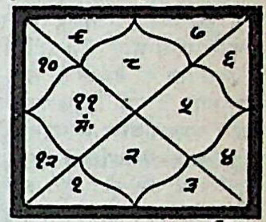


तीसरे भाई एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से षष्ठ-भाव को अपनी ही मेष राशि में देखता है, अतः जातक शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है तथा अपना प्रभाव बनाये रखता है। सातवीं नीच-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य की अपेक्षा पुरुषार्थ पर अधिक भरोसा रखता है तथा धर्म का भी यथाविधि पालन नहीं करता। आठवीं मित्र दृष्टि से दशमभाव

को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में उन्नति, यश, लाभ, सुख तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति व्यावसायिक सफलता खूब प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्न: चतुर्थभाव: मंगल

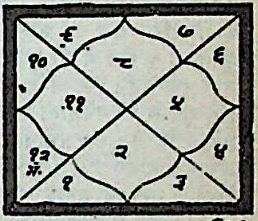


९०५

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी प्राप्त होती है तथा शारीरिक-सुख में भी कमजोरी रहती है चौथी दृष्टि से सप्तम-भाव को देखने से स्त्री पक्ष से मतभेद-युक्त शक्ति प्राप्त होती है एवं परिश्रम द्वारा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यापार के क्षेत्र में सफलता, यश, सुख एवं सम्मान प्राप्त होता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: पंचमभाव: मंगल

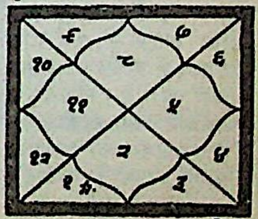


९०६.

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है और शत्रु-पक्ष पर विजय पाने के लिए जातक गहरी युक्तियों को सोचता रहता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अत: आयु की वृद्धि एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा आठवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहने के कारण जातक को परेशानी होती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कठिनाइयों के साथ सामान्य लाभ होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्न: षष्ठभाव: मंगल

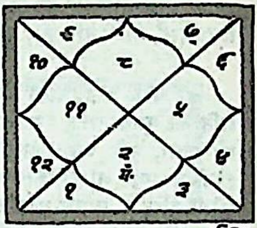


९०७

छठे शत्रु एवं रोग-भवन में अपनी ही मेष राशि पर स्थित स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में अपना विशेष प्रभाव रखता है तथा विजय प्राप्त करता है। चौथी नीच-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी का अनुभव होता है तथा यश-सम्मान में भी कमी आती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से अच्छे सम्बन्ध स्थापित होते हैं। आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखने से शरीर में कुछ प्रभाव बना रहता है तथा परिश्रम द्वारा आत्मबल की [illegible] होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्नः सप्तमभावः मंगल

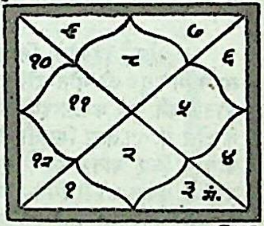


९०८

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से सामान्य परेशानी रहती है तथा जननेन्द्रिय में कुछ विकार होता है। दैनिक रोजगार के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। यहाँ से मंगल चौथी मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यापार के पक्ष से सफलता, सुख एवं सम्मान प्राप्त होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखने से जातक के व्यक्तित्व का विकास होता है तथा शारीरिक-शक्ति में वृद्धि होती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-वृद्धि एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। कुल मिलाकर जातक का जीवन सामान्यतः सुखी रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्नः अष्टमभावः मंगल

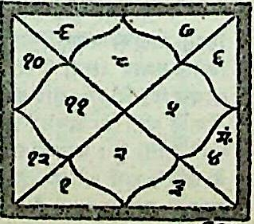


९०९

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के शारीरिक सुख एवं सौन्दर्य में कमी आती है। आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयाँ तथा परेशानियाँ बनी रहती हैं। ऐसे व्यक्ति के पेट में विकार रहता है और शत्रु-पक्ष से भी परेशानी रहती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी का अच्छा योग बनता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा आठवीं उच्चदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन की शक्ति भी प्राप्त होती है परन्तु उनसे कुछ वैमनस्य भी बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः नवमभावः मंगल



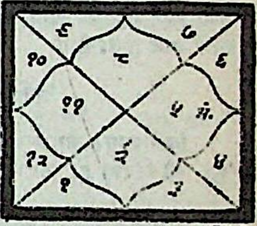
९१०

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को भाग्य एवं धर्म के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है। साथ ही शत्रु-पक्ष से भी झंझट एवं भाग्योन्नति में बाधा पड़ती है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख भी प्राप्त होता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता के साथ कुछ वैमनस्य बना रहता है तथा

भूमि, मकान आदि के सुख में भी कमी रहती है। कुल मिलाकर ऐसा जातक संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः दशमभावः मंगल

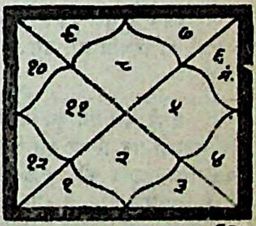


६११

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को कुछ परेशानियों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से सफलता, सुख एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति शत्रु-पक्ष पर विजय पाने वाला होता है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक को प्रबल शारीरिक-शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति स्वस्थ, पुष्ट तथा स्वाभिमानी होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। आठवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्नः एकादशभावः मंगल

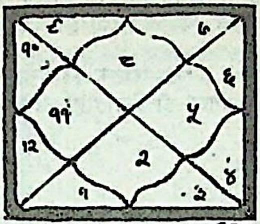


६१२

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा पर्याप्त लाभ उठाता है। परन्तु उसे शत्रु-पक्ष से कुछ परेशानी तथा शारीरिक रोगों का भी सामना करना पड़ता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः धन एवं कुटुम्ब की शक्ति तथा सुख प्राप्त होते हैं, सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है तथा ननसाल के पक्ष से लाभ होता है। ऐसा जातक बड़ा स्वाभिमानी तथा प्रभावशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: द्वादशभाव: मंगल



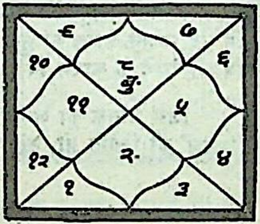
६९३

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से शान्ति एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। साथ ही शरीर में कमजोरी भी बनी रहती है। यहाँ से मंगल चौथी उच्चदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में षष्ठभाव को देखने से जातक शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है तथा झगड़े झंझट के कामों में सफलता पाता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री-पक्ष से कुछ वैमनस्य रहते हुये भी उसका सुख प्राप्त होता है तथा दैनिक व्यवसाय में कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता है।

'वृश्चिक' लग्न में 'बुध' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: प्रथमभाव: बुध

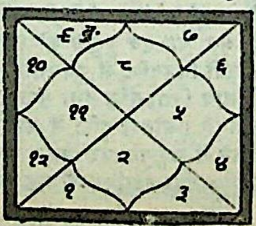


६९४

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव में वृद्धि होती है। वह अपनी शारीरिक-शक्ति एवं परिश्रम द्वारा श्रेष्ठ लाभ एवं आयु की शक्ति प्राप्त करता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री के पक्ष में कुछ कठिनाई के साथ सहयोग प्राप्त होता है एवं दैनिक व्यवसाय में भी परिश्रम के साथ सफलता प्राप्त होती है। बुध के अष्टमेश होने के कारण जातक को शारीरिक परेशानी भी उठानी पड़ती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

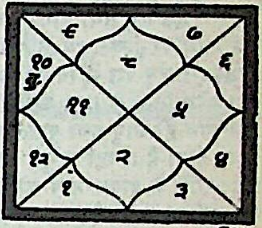
वृश्चिकलग्न: द्वितीयभाव: बुध



दूसरे धन एवं कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र गुरु की धनुराशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को धन-संचय तथा कुटुम्ब की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु बुध के अष्टमेश होने के कारण उसमें कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी ही मिथुन-राशि में अष्टमभाव को देखता है, जिससे जातक की आयु की वृद्धि होती है तथा उसे पुरातत्त्व का लाभ मिलता है। ऐसी ग्रहस्थिति वाला जातक शान-शौकत का जीवन व्यतीत करता है। वह यशस्वी तथा प्रतिष्ठित होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: तृतीयभाव: बुध

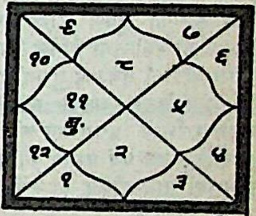


९१६

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है बुध के अष्टमेश होने के कारण इन दोनों क्षेत्रों में कुछ कठिनाइयाँ अवश्य आती हैं। इसके साथ ही जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के लाभ का भी योग बनता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक अपनी विवेक-शक्ति द्वारा भाग्य एवं धर्म की भी उन्नति करता है तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: चतुर्थभाव: बुध

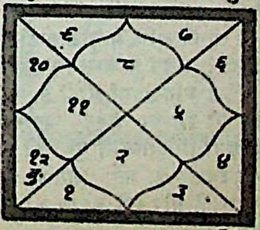


९१७

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को माता का सुख एवं भूमि-भवन का लाभ प्राप्त होता है। कठिन परिश्रम द्वारा वह अपनी आय के साधनों को भी बढ़ाता है उसे आयु तथा पुरातत्त्व का भी सुख मिलता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को कुछक ठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सुख, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: पंचमभाव: बुध

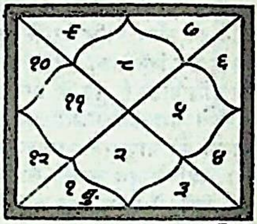


९१८

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में कमी तथा सन्तान-पक्ष में कष्ट का सामना करना पड़ता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति अपनी विवेक-शक्ति से लाभ प्राप्त करता है। आयु के क्षेत्र में कुछ परेशानी रहती है तथा पुरातत्त्व का भी स्वल्प लाभ होता है। यहाँ से बुध सातवीं उच्च दृष्टि से अपनी ही कन्या राशि में एकादशभाव को देखता है, जिसके कारण जातक की आमदनी खूब रहती है और वह सुखी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए--

वृश्चिकलग्नः षष्ठभावः बुध

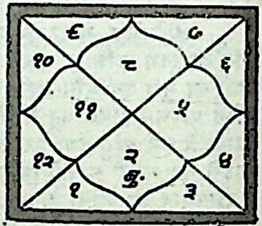


९१९

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपनी विवेक-बुद्धिद्वारा शत्रु-पक्ष में विजय एवं लाभ प्राप्त करता है। कुछ परेशानियों के साथ उसकी आमदनी का मार्ग बनता है। साथ ही आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ भी प्राप्त होता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्र दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः सप्तमभावः बुध

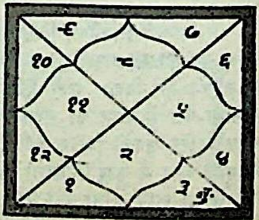


९२०

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा दैनिक रोजगार के पक्ष में सफलता प्राप्त होती है तथा आयु एवं पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृषभ राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक-बल एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है और उसकी दिनचर्या शान-शौकत की बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः अष्टमभावः बुध

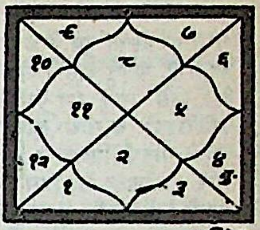


९२१

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपनी मिथुन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री बुध के प्रभाव से जातक की जीवन-शक्ति में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। बुध के अष्टमेश होने के कारण आमदनी के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु परिश्रम द्वारा जातक अमीरी ढंग का जीवन व्यतीत करता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक विवेक द्वारा धन का संचय करता है और उसे कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः नवमभावः बुध

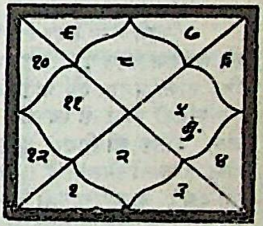


९२२.

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। साथ ही आयु एवं पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति कुछ स्वार्थी स्वभाव का भी होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को कुछ कमी के साथ भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। संक्षेप में ऐसा जातक भाग्यवान् माना जाता है और सुखी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः दशमभाव. बुध

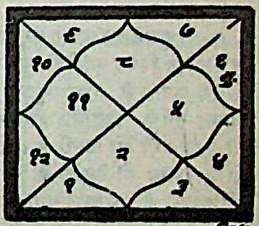


९२३

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को परेशानियों के साथ पिता द्वारा सुख एवं लाभ प्राप्त होता है। इसी तरह कुछ कठिनाइयों के साथ राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता, लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। उसे पुरातत्त्व एवं आयु का भी उत्तम लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख तथा लाभ भी प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः एकादशभावः बुध

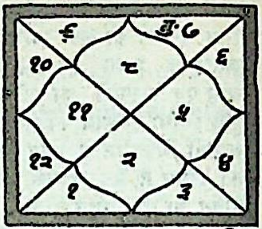


९२४

ग्यारहवें लाभ भवन में अपनी ही कन्या राशि पर स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक की आमदनी बहुत ही अच्छी रहती है। साथ ही आयु एवं पुरातत्त्व का भी विशेष लाभ होता है। वह अपने जीवन में उमंग एवं उत्साह से परिपूर्ण बना रहता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः बुध के अष्टमेश होने के कारण जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है, परन्तु उसका व्यवहार कुछ रूखापन लिये रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः द्वादशभावः बुध



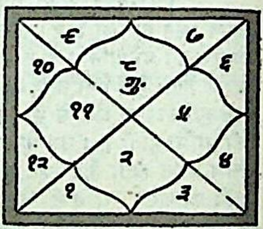
६२५

बारहवें व्यय भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का भी कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में षष्ठ भाव को देखता है, जिसके फलस्वरूप जातक शत्रुपक्ष में अपनी विवेक-बुद्धि के द्वारा विनम्र रहकर काम निकालता है। उसका जीवन भ्रमणशील होता है तथा चित्त में कुछ अशान्ति भी बनी रहती है।

'वृश्चिक' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्नः प्रथमभावः गुरु

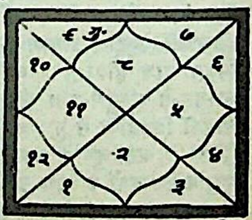


६२६

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक शारीरिक शक्ति प्रभाव एवं प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में भी श्रेष्ठ सफलता मिलती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री से कुछ मतभेद रहता है तथा व्यावसायिक क्षेत्र में सामान्य कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु बाद में स्त्री तथा रोजगार दोनों ही पक्षों से शक्ति मिलती है। नवीं उच्चदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य की विशेष उन्नति होती है तथा जातक धर्म का पालन भी करता है। संक्षेप में, ऐसा व्यक्ति भाग्यवान् तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिक लग्नः द्वितीयभावः गुरु

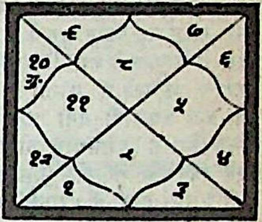


६२७

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपनी ही धनु-राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक धन का संचय करता है तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त करता है, परन्तु गुरु के द्वितीयेश होने के कारण सन्तान-पक्ष के सुख में कुछ कमी आ जाती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में अपनी बुद्धिमानी से सफलता प्राप्त करता है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, पिता एवं व्यवसाय के द्वारा सुख, सम्मान, सहयोग तथा सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा बुद्धिमान् तथा धनवान् होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्नः तृतीयभावः गुरु

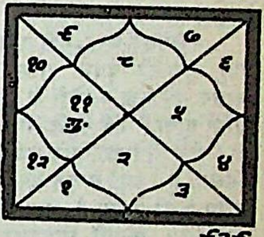


९२८

तीसरे भाई-बहिन तथा पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख में बाधा तथा पराक्रम में कमजोरी बनी रहती है। विद्या, धन तथा कुटुम्ब का सुख भी कम रहता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रु दृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री से कुछ वैमनस्य रहता है और व्यावसायिक क्षेत्र में कठिन परिश्रम से सफलता मिलती है। सातवीं उच्च दृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य की अच्छी उन्नति होती है तथा धर्मपालन में रुचि बनी रहती है। नवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी का योग अच्छा बनता है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः चतुर्थभावः गुरु

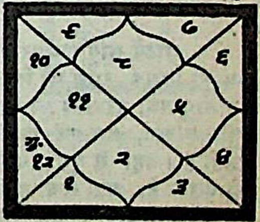


९२९

चौथे केन्द्र, माता तथा भूमि के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का माता के साथ कुछ वैमनस्य रहता है तथा भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है। विद्या तथा सन्तान के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ शक्ति मिलती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, पिता एवं व्यवसाय के पक्ष में सुख, यश, सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से साधारण लाभ होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः पंचमभावः गुरु

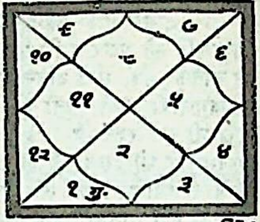


९३०

पाँचवें त्रिकोण, विद्या तथा सन्तान के भवन में अपनी ही मीन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है। साथ ही उसे धन एवं कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्र तथा उच्च दृष्टि से नवमभाव को देखता है। अतः जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी अच्छी बनी रहती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति, सौन्दर्य, एवं प्रभाव में वृद्धि होती है तथा जातक यश, सम्मान, प्रतिष्ठा, धन, ऐश्वर्य आदि सभी वस्तुयें प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः षष्ठभावः गुरु

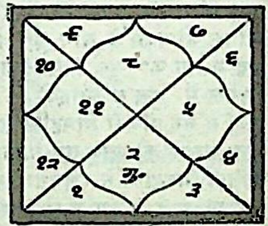


९३१

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक अपने बुद्धि-बल से शत्रुपक्ष में काम निकालता है तथा धन एवं कुटुम्ब के कारण झंझटों में फँसता है। विद्या तथा सन्तान पक्ष में भी कुछ कमजोरी बनी रहती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति—सफलता तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। सातवीं शत्रु दृष्टि से व्ययभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति मिलती है। नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखने से परिश्रम द्वारा धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब से कुछ वैमनस्य के साथ शक्ति मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः सप्तमभावः गुरु

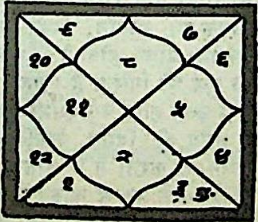


९३२

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को कुछ मतभेदों के बावजूद भी स्त्री का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है एवं बुद्धि-योग से व्यवसाय में लाभ होता है। साथ ही विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में भी सफलता मिलती है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः जातक की आमदनी अच्छी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक-सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है तथा नवीं नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है तथा पुरुषार्थ में भी कमी का अनुभव होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः अष्टमभावः गुरु



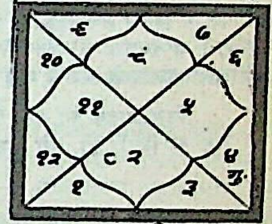
९३३

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। परन्तु विद्या, बुद्धि, सन्तान, धन एवं कुटुम्ब के पक्ष में कुछ कमजोरी रहती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रु दृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से कुछ लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त होती है एवं नवीं शत्रु-

दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कुछ परेशानियाँ उपस्थित होती हैं, परन्तु जातक अपने बुद्धि-बल से सुख-भोग करता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः नवमभावः गुरु

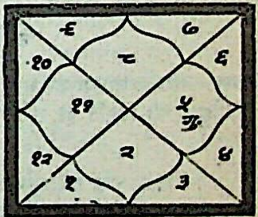


९३४

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य में वृद्धि होती है और वह धर्म का पालन करता है। उसे धन तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक प्रभाव में वृद्धि होती है और उसे मान-सम्मान मिलता रहता है। सातवीं नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन के सुख में कमी रहती है तथा पराक्रम भी क्षीण होता है। नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में पंचमभाव को देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि की विशेष शक्ति प्राप्त होती है जिसके कारण जातक यशस्वी भी बनता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्नः दशमभावः गुरु

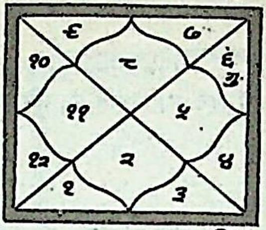


९३५

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख-सम्मान, लाभ तथा सफलता की प्राप्ति होती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि धनु में द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से शत्रु शनि की राशि में चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ असन्तोष के साथ प्राप्त होता है तथा नवीं मित्र-दृष्टि से मंगल की मेष राशि में षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु तथा झगड़ों के क्षेत्र में बुद्धिमानी द्वारा सफलता एवं विजय प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्न: एकादशभाव: गुरु

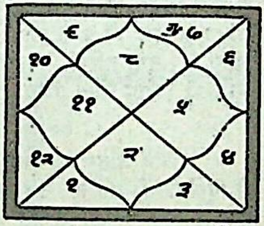


९३६

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती रहती है। साथ ही धन एवं कुटुम्ब का सुख भी अच्छा मिलता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं नीचदृष्टि से तृतीय-भाव को शत्रु की नीच राशि में देखता है, अतः भाई-बहिन के सुख में कमी आती है तथा पराक्रम की भी हानि होती है। सातवीं दृष्टि से पंचमभाव में अपनी ही राशि को देखने के कारण विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में विशेष उन्नति प्राप्त होती है तथा नवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के साथ कुछ वैमनस्य रहते हुए भी लाभ होता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: द्वादश भाव: गुरु



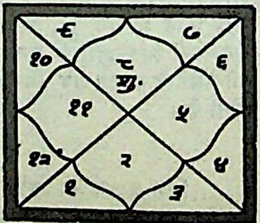
९३७

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों में भी कमजोरी बनी रहती है। साथ ही धन, कुटुम्ब, सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में भी कमी का अनुभव होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता एवं भूमि, मकान आदि सुख में कमी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक शत्रु-पक्ष में चतुराई से काम निकालता है तथा प्रभाव स्थापित करता है। नवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है। ऐसे जातक का चित्त प्रायः अशान्त बना रहता है।

'वृश्चिक' लग्न में 'शुक्र' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: प्रथमभाव: शुक्र

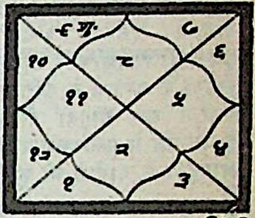


पहले केन्द्र तथा शरीर-स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के शरीर में कुछ कमजोरी रहती है, परन्तु वह प्रभावशाली, चतुर तथा कार्य-कुशल भी होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृषभ राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता प्राप्त होती है, परन्तु शुक्र के व्ययेश होने के कारण जातक को सामान्य कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है।

९३८

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय-भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः द्वितीयभावः शुक्र

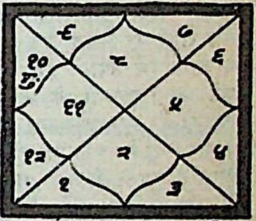


९३९

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के कौटुम्बिक सुख में कमी रहती है तथा शुक्र के व्ययेश होने के कारण धन का लाभ तो होता है, परन्तु खर्च अधिक होने से परेशानी बनी रहती है। यहां से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक की आयु में तो वृद्धि होती है, परन्तु पुरातत्त्व का लाभ कम होता है। फिर भी, ऐसा जातक धनी तथा चतुर माना जाता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः तृतीयभावः शुक्र

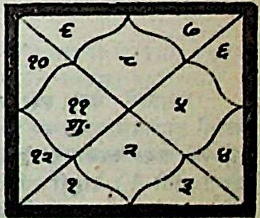


९४०

तीसरे पराक्रम एवं भाई-बहिन के स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक के भाई-बहिन के सुख एवं पुरुषार्थ में कुछ कमी बनी रहती है। वह खर्च अधिक करता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी उठाता है। वह अत्यन्त चतुराई से अपने घर का खर्च चलाता है। स्त्री के पक्ष में कुछ कमजोरी बनी रहती है। यहां से शुक्र सातवीं शत्रु-दृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक की भाग्योन्नति कुछ कमजोरी के साथ होती है और वह धर्म का भी थोड़ा-बहुत पालन करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः चतुर्थभावः शुक्र

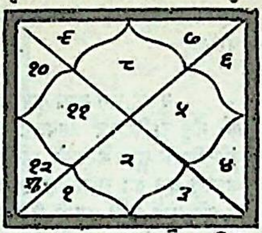


९४१

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं भवन के स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कुछ कमी रहती है। इसी प्रकार भूमि, मकान तथा स्त्री के पक्ष में भी कमजोरी बनी रहती है। उसका खर्च आराम से चलता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख प्राप्त होता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सुख-सहयोग, सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: पंचमभाव: शुक्र

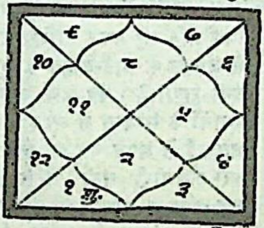


९६२

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में कुछ कमियों के साथ सफलता मिलती है, परन्तु वह किसी विशेष कला का जानकार अवश्य होता है। ऐसा व्यक्ति वाक्चतुर तथा स्त्री के प्रभाव में रहने वाला होता है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति एव लाभ की प्राप्ति होती है। यहाँ से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र बुध की कन्याराशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को आमदनी के मार्ग में भी कुछ कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: षष्ठभाव: शुक्र

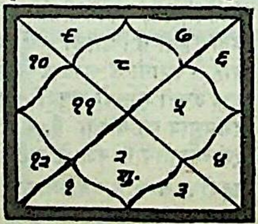


९६३

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में शान्तिपूर्ण उपायों द्वारा अपना काम निकालता है। उसे अपनी गृहस्थी के कार्य-संचालन में भी कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से परेशानी होती है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही तुला राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अत्यधिक परिश्रम द्वारा ही सामान्य लाभ प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्न: सप्तमभाव: शुक्र

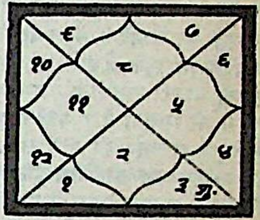


९६४

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी ही वृषभ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता एवं शक्ति प्राप्त होती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे अपना खर्च चलाने में सहायता मिलती है। ऐसा व्यक्ति चतुर तथा बुद्धिमान् भी होता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शरीर में कुछ दुर्बलता बनी रहती है, फिर भी वह प्रभावशाली, यशस्वी व्यावहारिक तथा कार्य कुशल व्यक्ति होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः अष्टमभावः शुक्र

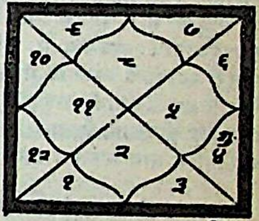


६६५

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को आयु, पुरातत्त्व, स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में संकटों एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है। वह गुप्त-चतुराई तथा कठिन परिश्रम द्वारा सफलता प्राप्त करता रहता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से गुरु की धनु राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक को धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में भी कठिनाइयाँ आती हैं। वह बड़ी ही चतुराई से काम लेकर किसी प्रकार अपनी इज्जत को बचाये रखता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः नवमभावः शुक्र

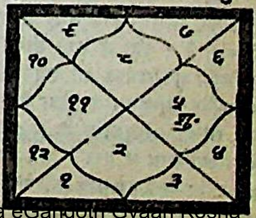


६६६

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति एवं धर्म-पालन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। साथ ही स्त्री के सम्बन्ध में भी कुछ परेशानी रहती है, परन्तु वह चतुराई से अपना काम निकालता है और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है। यहाँ से व्ययेश शुक्र सातवीं मित्र-दृष्टि से शनि की मकर राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन एवं पराक्रम के क्षेत्र में भी कुछ असन्तोष बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः दशमभावः शुक्र

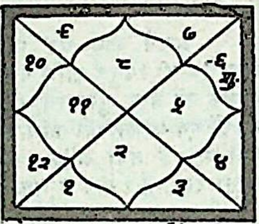


६६७

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों एवं कमियों के साथ सफलता प्राप्त होती है। इसी प्रकार स्त्री तथा गृहस्थी के सुख में भी कुछ कमी आती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता का सुख सहयोग प्राप्त होता है तथा भूमि एवं मकानादि का सुख भी मिलता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः एकादशभावः शुक्र

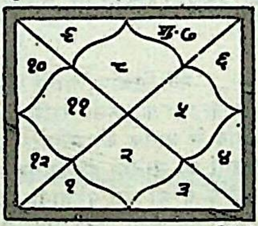


९४८

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित व्ययेश तथा नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी में कमी आती है। साथ ही स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी परेशानी बनी रहती है। परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से चतुराई द्वारा थोड़ा लाभ भी मिलता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं उच्च-दृष्टि से शत्रु गुरु की मीन राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को विद्या-बुद्धि की शक्ति तो प्राप्त होती है, परन्तु सन्तान के पक्ष में कुछ कमी रहती है। सामान्यत; ऐसा जातक विद्वान्, बुद्धिमान्, चतुर तथा कूटनीतिज्ञ होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः द्वादशभावः शुक्र



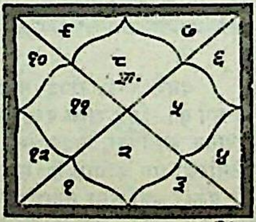
९४९

बारहवें व्यय स्थान में अपनी ही तुला राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ एवं शक्ति प्राप्त होती है। स्त्री के पक्ष में कुछ परेशानी रहती है तथा स्थानीय व्यवसाय में कठिनाइयाँ आती हैं जबकि बाहरी स्थानों के व्यवसाय में सफलता मिलती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की मेष राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु-पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ सफलता प्राप्त करता है।

'वृश्चिक' लग्न में 'शनि' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए —

वृश्चिकलग्नः प्रथमभावः शनि

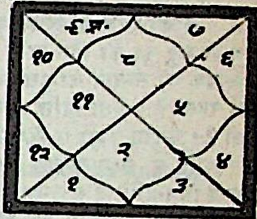


९५०

पहले केन्द्र तथा शरीर-स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के शरीर में शान्ति एव उग्रता दोनों का ही दर्शन होता है। उसे माता, भूमि तथा मकान का भी सामान्य सुख मिलता है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही मकर राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: द्वितीयभाव: शनि

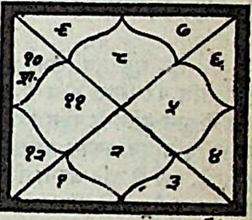


९५१

दूसरे धन-कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख प्राप्त होता है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्व का लाभ होता है तथा दसवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। ऐसा जातक धनी तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्न: तृतीयभाव: शनि

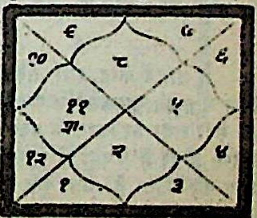


९५२

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपनी ही मकर राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। साथ ही माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी मिलता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या एवं संतान के पक्ष में सफलता मिलती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्योन्नति होती है तथा कुछ मतभेदों के साथ धर्म का पालन होता है, दसवीं उच्च तथा मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च आराम से चलता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: चतुर्थभाव: शनि

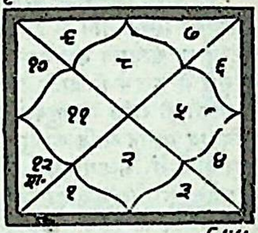


९५३

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के स्थान में अपनी ही कुम्भ राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक को माता का सुख विशेष रूप से मिलता है। साथ ही भूमि, मकान आदि का भी श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है और भाई-बहिन एवं पराक्रम की वृद्धि होती है। यहाँ से शनि तीसरी नीच-दृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक को शत्रु-पक्ष से अशान्ति रहती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता से मतभेद रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी अधिक सफलता नहीं मिलती। दसवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है तथा जातक अधिक परिश्रमी होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: पंचमभाव: शनि

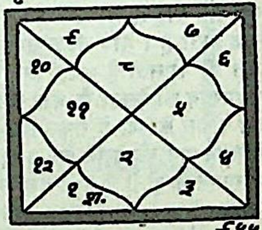


६५४

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को सन्तान का सुख मिलता है परन्तु उससे मतभेद बना रहता है। ऐसा व्यक्ति वाचाल, चतुर तथा होशियार होता है। उसका माता से वैमनस्य रहता है तथा मकान, भूमि आदि का सामान्य सुख प्राप्त होता है। यहाँ से शनि तीसरी मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः उसे स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है, सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है तथा दसवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण कुटुम्ब से वैमनस्य बना रहता है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर भी धन की विशेष वृद्धि नहीं हो पाती।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्न: षष्ठभाव: शनि

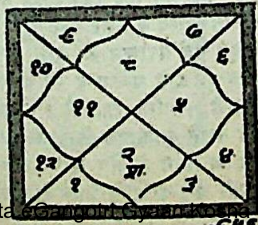


६५५

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में गुप्त-युक्ति से काम निकालता है। उसे भाई-बहिन, माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख अल्प-मात्रा में प्राप्त होता है, यहाँ से शनि अपनी तीसरी मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं उच्च-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बंध से लाभ मिलता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीयभाव को देखने से विरोध रहते हुए भी भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: सप्तमभाव: शनि



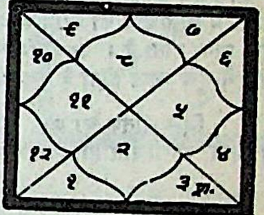
६५६

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक-सौन्दर्य में कमी रहती है तथा जातक को अधिक शारीरिक-श्रम करना पड़ता है। दसवीं दृष्टि से अपनी राशि में चतुर्थभाव को देखने से माता,

भूमि तथा मकान का सुख यथेष्ट प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में आमोद-प्रमोदवान् सुखी तथा सन्तुष्ट बना रहता है एवं प्रभावशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः अष्टमभावः शनि

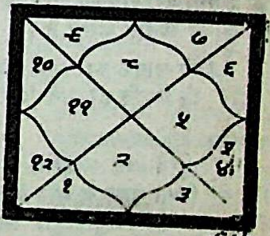


६५८

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु माता के सुख में बहुत कमी रहती है तथा भूमि, मकान एवं भाई-बहिनों के सुख में भी हानि उठानी पड़ती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता से वैमनस्य, राजकीय क्षेत्र में असफलता एवं व्यावसायिक क्षेत्र में आलस्य का सामना करना पड़ता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीय-भाव को देखने से धन-संचय में कमी रहती है तथा कुटुम्ब से वैमनस्य बना रहता है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या एवं सन्तान के पक्ष में भी त्रुटि रहती है, परन्तु दैनिक जीवन कुछ शान का बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्नः नवमभावः शनि

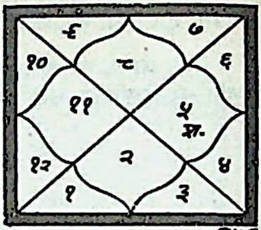


६५९

नवें, त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक कुछ असन्तोष के साथ धर्म का पालन करता है तथा कुछ रुकावटों के साथ भाग्योन्नति होती है। उसे माता, भूमि, मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी अच्छी रहती है तथा धन का प्रचुर लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। दसवीं नीचदृष्टि से शत्रु की राशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष से कुछ परेशानी उठानी पड़ती है तथा ननसाल का पक्ष भी कमजोर बना रहता है। फिर भी ऐसा जातक भाग्यवान् समझा जाता है तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: दशमभाव: शनि

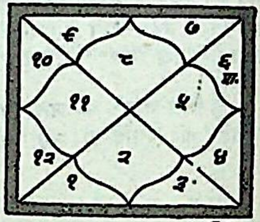


९५९

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से सफलता, मान तथा लाभ प्राप्त करता है। इसी प्रकार उसे भाई-बहिन का सुख भी कुछ कम मिल पाता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। यहाँ से शनि तीसरी मित्र तथा उच्चदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ एवं शक्ति मिलती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थभाव को देखने से माता से कुछ मतभेद रहता है, परन्तु भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख प्राप्त होता है तथा घरेलू वातावरण आनन्दमय बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: एकादशभाव: शनि

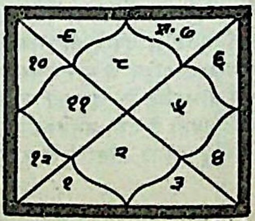


९६०

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है और उसके कारण वह सुखी जीवन व्यतीत करता है। साथ ही उसे भाई-बहिन, माता एवं भूमि, मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक-सौन्दर्य में कमी आती है तथा शरीर को आराम नहीं मिल पाता। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या एवं सन्तान का सुख प्राप्त होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से जातक को दीर्घायु की प्राप्ति होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। संक्षेप में ऐसा जातक भाग्यवान् होता है तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: द्वादशभाव: शनि



९६१

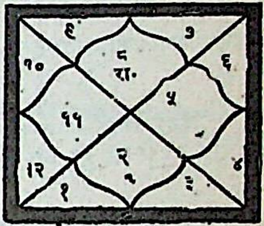
बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित उच्च के शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है। साथ ही भाई-बहिन, माता एवं भूमि आदि के सुख में कुछ कमी आती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक के धन-संचय में कमी रहती है तथा कुटुम्ब से असन्तोष रहता है। सातवीं नीचदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष से परेशानी रहती है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से

अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा जातक अमीरी ढंग का जीवन बिताता है।

'वृश्चिक' लग्न में 'राहु' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः प्रथमभावः राहु

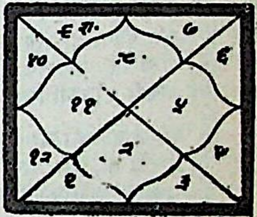


९६२

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शरीर में किसी गुप्त चिन्ता अथवा कष्ट का निवास रहता है। वह अपनी उन्नति के लिये अत्यधिक कठिन परिश्रम करता हुआ गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेता है। ऐसे व्यक्ति का स्वभाव तेज होता है। वह स्वार्थ साधने में चतुर होता है। उसके शारीरिक-सौन्दर्य में कमी रहती है और कभी-कभी उसे मृत्यु-तुल्य शारीरिक कष्ट का सामना भी करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः द्वितीयभावः राहु

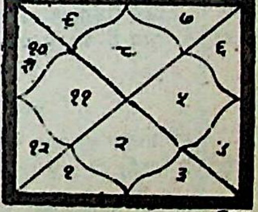


९६३

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को अपने कुटुम्ब के सम्बन्ध में चिन्ता एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है। उसे धन प्राप्त करने के लिये कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा अनेक प्रकार की गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है, फिर भी वह अभाव-ग्रस्त तथा ऋणी ही बना रहता है। उसकी धन-सम्बन्धी चिन्ताएँ दूर नहीं हो पातीं।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः तृतीयभावः राहु

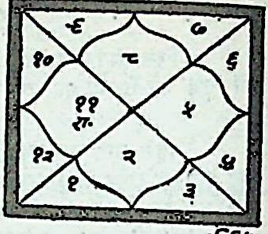


९६४

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। वह कठिन कर्म करने वाला, परिश्रमी, महान् पुरुषार्थी, चतुर, गुप्त-युक्तियों का जानकार, हिम्मतवर तथा धैर्यवान् होता है। कभी-कभी हिम्मत हारने का अवसर आ जाने पर भी वह अपने धैर्य को नहीं खोता और किसी-किसी समय असाधारण साहस का प्रदर्शन भी कर बैठता है। ऐसे व्यक्ति को भाई-बहिनों का सुख तो मिलता है, परन्तु उनकी ओर से अनेक प्रकार की चिन्ताएँ भी बनी रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: चतुर्थभाव: राहु

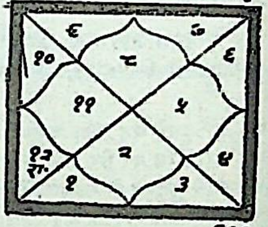


९६५

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा मकान आदि के सुख में कुछ कमी का अनुभव होता है तथा उसके घरेलू वातावरण में भी कभी-कभी बड़े संकट उठ खड़े होते हैं। परन्तु वह अपनी गुप्त-युक्तियों के बल पर हिम्मत तथा धैर्य से काम लेकर उनका निराकरण कर देता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी तथा होशियार भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: पंचमभाव: राहु

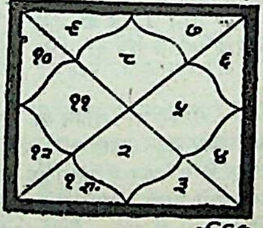


९६६

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु वह गुप्त-युक्तियों और चतुराइयों में प्रवीण होता है। उसकी बोल-चाल से उसकी होशियारी तथा बुद्धिमानी प्रकट होती है। सन्तान-पक्ष में उसे पहले बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, बाद में उसे कुछ सफलता मिलती है। ऐसे व्यक्ति का मस्तिष्क हर समय परेशान रहता है, परन्तु वह अपनी परेशानी किसी पर जाहिर नहीं होने देता।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: षष्ठभाव: राहु

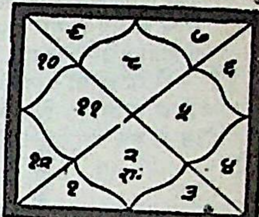


९६७

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर अत्यधिक प्रभाव रखने वाला तथा विजयी होता है। वह अपनी गुप्त युक्तियों, हिम्मत, चतुराई तथा धैर्य के बल पर सभी मुसीबतों, कठिनाइयों, संघर्षों रोगों, झंझटों, झगड़ों तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता रहता है और बड़ी-से-बड़ी मुसीबतों के समय में भी हिम्मत नहीं हारता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो, और जन्म-कुण्डली के 'सप्तमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः सप्तमभावः राहु

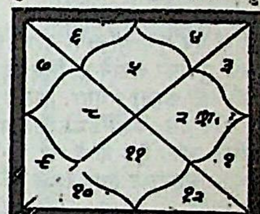


९६८

सातवें केन्द्र,स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु वह अपनी गुप्त-युक्तियों एवं चतुराई के बल पर उन सब पर विजय प्राप्त करता है। ऐसी ग्रह-स्थिति वाले व्यक्ति को स्त्री तथा व्यवसाय के कारण किसी समय घोर संकटों में भी फँस जाना पड़ता है, परन्तु वह येन केन प्रकारेण उन मुसीबतों को पार कर लेता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, धैर्यवान् तथा चतुर होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः अष्टमभावः राहु

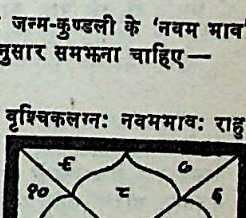


९६९

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है और उसे पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन उमंग और उत्साह से पूर्ण बना रहता है। वह बड़ी शान-शौकत से जिन्दगी बिताता है, परन्तु कभी-कभी उसे हानि भी उठानी पड़ती है और पेट में विकार भी हो जाता है। ऐसा व्यक्ति यशस्वी होता है तथा प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः नवमभावः राहु

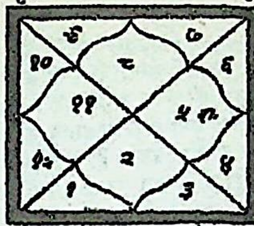


९७०

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में बड़ी बाधाएं आती हैं तथा धर्म के प्रति भी उसकी अश्रद्धा बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति मानसिक चिन्ताओं से ग्रस्त बना रहता है। वह कई बार निराश भी हो जाता है तथा अपनी भाग्योन्नति के लिए न्याय-विरुद्ध आचरण भी करता है। अनेक प्रकार की मुसीबतें उठाने के बाद अन्त में उसे थोड़ी-बहुत सफलता प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः दशमभावः राहु

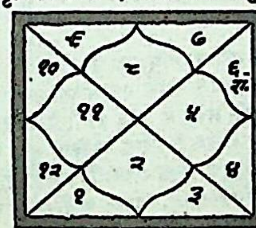


९८१

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने पिता के द्वारा परेशानी उठानी पड़ती है। इसी प्रकार राज्य के क्षेत्र से भी कष्ट एवं निराशा का सामना करना होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनायाँ आती हैं। ऐसे व्यक्ति की मानप्रतिष्ठा पर कभी-कभी जबर्दस्त संकट आ जाता है। फिर भी वह अपने चातुर्य, धैर्य एवं साहस के वल पर उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः एकादशभावः राहु

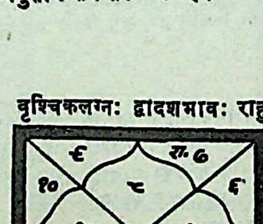


९८२

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है। वह अपनी बुद्धि, चातुर्य, विवेक-शक्ति एवं गुप्त-युक्तियों द्वारा विशेष लाभ कमाता है। अधिक मुनाफा कमाने के लिए वह उचित-अनुचित का विचार भी नहीं करता। ऐसा व्यक्ति स्वार्थ साधने में चतुर होता है और उसे कभी-कभी अनायास ही मुफ्त जैसा धन भी मिल जाता है। इतने पर भी वह अपनी आमदनी के सम्बन्ध में असन्तुष्ट बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः द्वादशभावः राहु

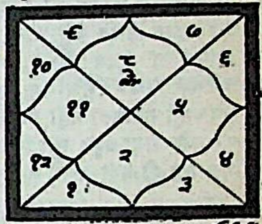


बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, जिसके कारण उसे प्रायः परेशानियों एवं चिन्ताओं का शिकार बना रहना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ उठाता है। परन्तु ऐसे व्यक्तियों को कभी आकस्मिक धन-लाभ होता है, कभी अत्यधिक आर्थिक संकट का सामना करना पड़ता है, तो कभी अन्य प्रकार की कठि-नाइयों का सामना करना पड़ता है।

'वृश्चिक' लग्न में 'केतु' का फल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: प्रथमभाव: केतु

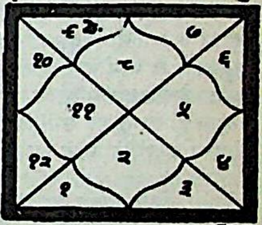


९७४

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शरीर पर कई बार चोट लगती है तथा शारीरिक-सौन्दर्य में कमी बनी रहती है। ऐसे व्यक्ति का स्वभाव उग्र होता है। वह शरीर से कठिन परिश्रम करने वाला परन्तु दिमाग का कमजोर होता है। उसे चेचक आदि की बीमारी भी हो सकती है, जिसके स्थायी-चिह्न शरीर पर बने रहेंगे। ऐसी ग्रह-स्थिति वाला जातक कुछ अधिक दौड़-धूप करने पर अधिक थक जाता है तथा परेशानी का अनुभव करता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: द्वितीयभाव: केतु

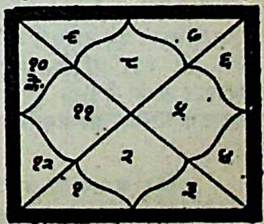


९७५

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक को धन की प्राप्ति के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है, परन्तु कभी-कभी उसे आकस्मिक रूप से भी धन का लाभ हो जाता है। ऐसा व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा को बचाए रखने के लिए विशेष प्रयत्नशील रहता है और उसके कौटुम्बिक-सुख में भी कुछ-न-कुछ कमी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: तृतीयभाव: केतु

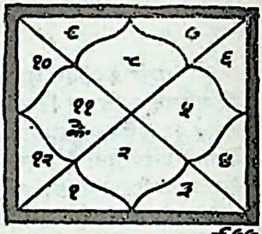


९७६

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी, साहसी तथा धैर्यवान् होता है। भीतर से कमजोरी का अनुभव करने पर भी वह बाहर से बड़ी हिम्मत का प्रदर्शन करता है। उसे झगड़े-झंझट के मामलों में सफलता प्राप्त होती है, परन्तु भाई-बहिन के सम्बन्धों से उसे सदैव ही परेशानी एवं कष्ट का अनुभव होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: चतुर्थभाव: केतु

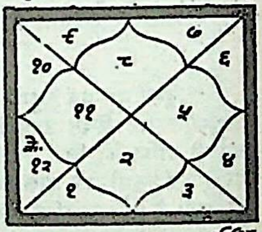


६६७

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता के कारण परेशानी उठानी पड़ती है तथा भूमि एवं मकान आदि के सुख में भी कमी बनी रहती है। ऐसे व्यक्ति का हृदय सदैव अशान्त रहता है। वह कठिन परिश्रम करके सुख-चैन पाना चाहता है, परन्तु उसे मनचाही सफलता नहीं मिलती। स्थान-परिवर्तन कर देने पर उसे थोड़ा-बहुत सुख मिल जाता है, परन्तु घर में सदैव अशान्ति ही बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्न: पंचमभाव: केतु

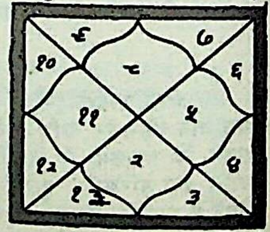


६६८

पाँचवें त्रिकोण, विद्या तथा सन्तान के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन में अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा सन्तान के पक्ष से भी कष्ट प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा जिद्दी, दृढ़-निश्चयी, गुप्त-युक्तियों से काम लेने वाला, साहसी, निर्भय तथा धैर्यवान् होता है। उसके मस्तिष्क में गुप्त-चिन्ताओं का निवास रहता है, परन्तु वह उन्हें किसी पर प्रकट नहीं होने देता। उसका बातचीत करने का ढंग भी अच्छा नहीं होता।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसारसम झना चाहिये—

वृश्चिकलग्न: षष्ठभाव: केतु

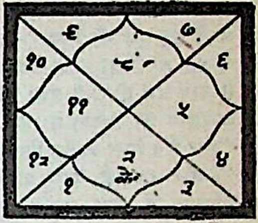


६६९

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपना विशेष प्रभाव रखता है तथा सभी मुसीबतों, संकटों, कठिनाइयों, झगड़ों एवं शत्रुओं पर अपने साहस, धैर्य, गुप्त-युक्तियों एवं बहादुरी के बल पर विजय प्राप्त करता है। वह बड़ा परिश्रमी होता है तथा अपने प्रभाव का विस्तार करने के लिये प्रयत्नशील बना रहता है। उसके ननसाल का पक्ष भी कमजोर रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: सप्तमभाव: केतु

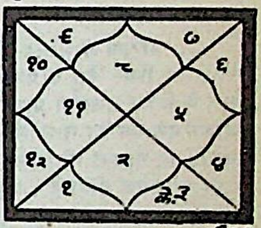


९८०

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से घोर कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा गृहस्थी के सुख में अनेक प्रकार के व्यवधान एवं संकट उठ खड़े होते हैं। उसे अपने दैनिक व्यापार के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं तथा जननेन्द्रिय में विकार भी होता है। ऐसा व्यक्ति अपने चातुर्य, हठ गुप्त-युक्ति, साहस एवं धैर्य के बल पर किसी प्रकार कठिनाइयों का निवारण करने में कुछ समर्थ होता है, परन्तु उसका जीवन संघर्षमय ही बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

वृश्चिकलग्न: अष्टमभाव: केतु



९८१

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु (जीवन) के सम्बन्ध में अनेक बार मृत्यु-तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की भी हानि होती है। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन का निर्वाह करने के लिए कठिन परिश्रम करता है तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय भी लेता है, फिर भी वह संकटों से छुटकारा नहीं पाता।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्न: नवमभाव: केतु

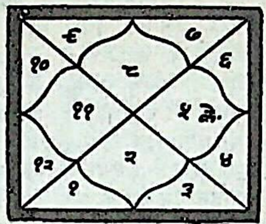


९८२

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में महान् संकट उपस्थित होते रहते हैं तथा धर्म की भी हानि होती है। ऐसा व्यक्ति हर समय मानसिक चिन्ताओं से घिरा रहता है। वह कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करता है। गुप्त-युक्तियों एवं कठिन परिश्रम के द्वारा वह अपने भाग्य को बनाने का प्रयत्न करता है, परन्तु उसे अधिक सफलता नहीं मिल पाती।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः दशमभावः केतु

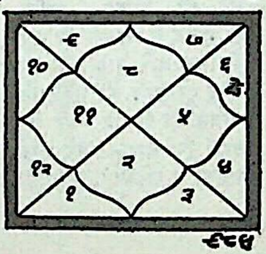


६८३

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा कष्ट प्राप्त होता है, राज्य के क्षेत्र से मान भंग होता है तथा परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं एवं व्यवसाय की उन्नति में घोर संकटों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति किसी-किसी समय घोर संकट में भी फंस जाता है, परन्तु वह अपने धैर्य, साहस एवं गुप्त-युक्तियों के बल अन्ततः कुछ राहत पा लेता है। फिर भी उसका जीवन सुखी नहीं रहता।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

वृश्चिकलग्नः एकादशभावः केतु



६८४

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है। कभी-कभी उसे आकस्मिक-धन का लाभ भी हो जाता है और कभी-कभी संकटों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी तथा चालबाज होता है। वह सदैव अपना मतलब पूरा करने की इच्छा रखता है। इतने पर भी उसे अपने लाभ से सन्तोष नहीं होता। वह परिश्रम एवं हिम्मत के साथ और अधिक आमदनी बढ़ाने का प्रयत्न करता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

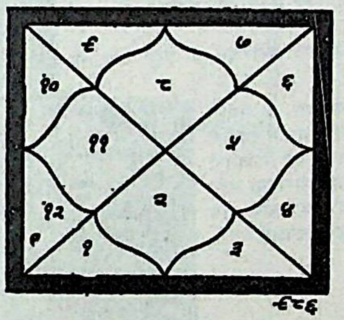
वृश्चिकलग्नः द्वादशभावः केतु



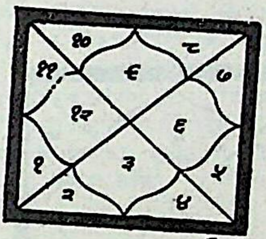
६८५

बारहवें व्ययस्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु वह बड़ी चतुराई, परिश्रम एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर अपने खर्च को चलाता रहता है। ऐसे व्यक्ति को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कठिन परिश्रम एवं चतुराई द्वारा लाभ प्राप्त होता है। किसी समय उसे अपने खर्च के कारण घोर संकट का सामना भी करना पड़ता है, फिर भी वह अपने साहस तथा धैर्य को नहीं छोड़ता।

'वृश्चिक' लग्न का फलादेश समाप्त



धनु–लग्न



९२७

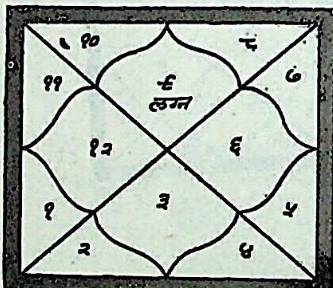
[धनु लग्न वाली कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग फलादेश]

'धनु' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'धनु' लग्न में जन्म लेने वाला जातक कार्य करने में कुशल, ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, घोड़ों को रखने वाला, मित्रों के काम आने वाला, राजा के समीप रहने वाला, ज्ञानवान्, अनेक कलाओं का ज्ञाता, सत्यप्रतिज्ञ, बुद्धिमान्, सुन्दर, सती-गुणी, श्रेष्ठ स्वभाव वाला, धनी, ऐश्वर्यवान्, कवि, लेखक, व्यवसायी, यात्रा-प्रेमी, पराक्रमी, अल्प सन्ततिवान्, प्रेम के वशीभूत रहने वाला, पिंगल वर्ण, घोड़े के समान जाँघों वाला, बड़े दाँतों वाला तथा प्रतिभाशाली होता है।

ऐसा व्यक्ति बाल्यावस्था में अधिक सुख भोगने वाला, मध्यमावस्था में सामान्य जीवन व्यतीत करने वाला तथा अन्तिम अवस्था में धन-धान्य तथा ऐश्वर्य से पूर्ण होता है। उसे २२ अथवा २३ वर्ष की आयु में धन का विशेष लाभ होता है।

धनु 'लग्न'



यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव मुख्यतः दो प्रकार से पड़ता है—

(१) ग्रहों की जन्मकालीन स्थिति के अनुसार।
(२) ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के अनुसार।

जातक की जन्मकालीन ग्रह-स्थिति जन्म-कुण्डली में दी गई होती है, उसमें जो ग्रह जिस भाव में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित प्रभाव निरन्तर स्थायी रूप से डालता रहता है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसकी जानकारी पंचाङ्ग द्वारा की जा सकती है। ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के सम्बन्ध में या तो किसी ज्योतिषी से पूछ लेना चाहिए अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिए। इस सम्बन्ध में पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर अस्थायी-रूप से अपना प्रभाव डालते हैं।

उदाहरण के लिए यदि किसी जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य 'धनु' राशि पर 'प्रथमभाव' में बैठा है, तो उसका स्थायी प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण-

कुण्डली-संख्या ९८९ के अनुसार पड़ता रहेगा; परन्तु यदि दैनिक ग्रह-गोचर में कुण्डली देखते समय सूर्य 'धनु' राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा होगा तो उस स्थिति में वह उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०१ के अनुसार उतनी अवधि तक जातक के जीवन पर अपना अस्थायी प्रभाव अवश्य डालेगा, जब तक कि वह 'मकर' राशि से हटकर 'कुम्भ' राशि में नहीं चला जाता। 'कुम्भ' राशि में पहुँचकर वह 'धनु' राशि के अनुरूप अपना प्रभाव डालना आरम्भ कर देगा। अतः जिस जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य 'धनु' राशि के 'प्रथमभाव' में बैठा हो, उसे उदाहरण-कुण्डली संख्या ९८९ में वर्णित फलादेश देखने के पश्चात्, यदि उन दिनों ग्रह-गोचर में सूर्य 'मकर' राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा हो तो उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०१ का फलादेश भी देखना चाहिए तथा इन दोनों फलादेशों के समन्वय-स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को अपने वर्तमान समय पर प्रभावकारी समझना चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विषय में जान लेना चाहिए।

'धनु' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदाहरण कुण्डली-संख्या ९८९ से १०९६ तक में किया गया है। पंचाङ्ग की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार 'वृश्चिक' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों को किन-किन उदाहरण-कुण्डलियों द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना चाहिए— इसका विस्तृत वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है, अतः उनके अनुसार ग्रहों की तात्कालिक स्थिति के सामयिक प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। तदुपरान्त दोनों फलादेशों के समन्वय-स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिए।

इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक जन्म-कुण्डली का ठीक-ठीक फलादेश सहज में ही ज्ञात कर सकता है।

टिप्पणी—(१) पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश से ऊपर अथवा ३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह सूर्य से अस्त होता है, वह भी जातक के ऊपर अपना प्रभाव या तो बहुत कम डालता है या फिर पूर्णतः प्रभावहीन रहता है।

(२) स्थायी जन्म-कुण्डली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा अपनी कुण्डली में लिखवा लेने चाहिए, ताकि उनके अंशों के बारे में बार-बार जानकारी प्राप्त करने के झंझट से बचा जा सके। तात्कालिक ग्रह-गोचर के ग्रहों के अंशों की जानकारी पंचांग द्वारा अथवा किसी ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(३) स्थायी जन्म-कुण्डली अथवा तात्कालिक ग्रह-गति-कुण्डली के किसी भाव में यदि एक से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन स्थानों पर उनकी दृष्टियाँ पड़ती हैं, जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता रहता है। इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में 'ग्रहों की युति का प्रभाव' शीर्षक अध्याय के अन्तर्गत विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन किया गया है, अतः इस विषय की जानकारी वहाँ से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(४) 'विंशोत्तरी दशा' के सिद्धान्तानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० वर्ष की मानी जाती है। इस आयु-अवधि में जातक नवग्रहों की दशाओं का भोग कर लेता है। विभिन्न ग्रहों का दशा-काल भिन्न-भिन्न होता है। परन्तु अधिकांश व्यक्ति इतनी लम्बी आयु तक जीवित नहीं रह पाते, अतः वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं का

भोग कर पाते हैं। जातक के जीवन के जिस काल में जिस ग्रह की दशा—जिसे 'महादशा' भी कहा जाता है–चल रही होती है, जन्मकालीन ग्रह-स्थिति के अनुसार उसके जीवन-काल की उतनी अवधि उस ग्रह-विशेष के प्रभाव से विशेष रूप से प्रभावित रहती है। जातक का जन्म किस ग्रह की महादशा में हुआ है और उसके जीवन में किस अवधि से किस अवधि तक किस ग्रह की महादशा चलेगी और वह महादशा जातक के ऊपर अपना क्या विशेष प्रभाव डालेगी—इन सब बातों का उल्लेख भी तीसरे प्रकरण में किया गया है।

इस प्रकार (१) जन्म-कुण्डली, (२) तात्कालिक ग्रहगोचर-कुण्डली एवं (३) ग्रहों की महादशा—इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है, अतः इन तीनों के समन्वय-स्वरूप फलादेश का ठीक-ठीक निर्णय करके अपने भूत, वर्तमान तथा भविष्यत्कालीन जीवन के विषय में सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

धनु (९) लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'सूर्य' का फलादेश

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९८९ से १००० तक में देखना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'सूर्य' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९८९ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९९० के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९९१ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९९२ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९९३ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९९४ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'सूर्य' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९९५ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९९६ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'सूर्य' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९९७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९९८ के अनुसार समझना चाहिए ।

(११) जिस महीने में 'सूर्य' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९९९ के अनुसार समझना चाहिए ।

(१२) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १००० के अनुसार समझना चाहिए ।

धनु (९) लग्न वालों के लिए

जन्म- कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में थत

'चन्द्रमा' का फलादेश

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी, फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १००१ से १०१२ तक में देखना चाहिये ।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थाई-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये—

(१) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'धनु' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १००१ के अनुसार समझना चाहिये ।

(२) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मकर' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १००२ के अनुसार समझना चाहिये ।

(३) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १००३ के अनुसार समझना चाहिये ।

(४) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मीन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १००४ के अनुसार समझना चाहिये ।

(५) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मेष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १००५ के अनुसार समझना चाहिये ।

(६) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'वृष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १००६ के अनुसार समझना चाहिये ।

(७) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मिथुन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १००७ के अनुसार समझना चाहिये ।

(८) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १००८ के अनुसार समझना चाहिये ।

(९) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'सिंह' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १००९ के अनुसार समझना चाहिये ।

(१०) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कन्या' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०१० के अनुसार समझना चाहिये ।

(११) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'तुला' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०११ के अनुसार समझना चाहिये ।

(१२) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०१२ के अनुसार समझना चाहिये।

'धनु' (६) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'मंगल' का फलादेश

धनु (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी-फलादेश उदाहरण- कुण्डली संख्या १०१३ से १०२४ तक में देखना चाहिये।

धनु (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'मंगल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०१३ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस महीने में 'मंगल' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०१४ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'मंगल' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०१५ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'मंगल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०१६ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'मंगल' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०१७ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'मंगल' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०१८ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'मंगल' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०१६ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०२० के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'मंगल' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०२१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'मंगल' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०२२ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०२३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'मंगल' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुण्डली संख्या १०२४ के अनुसार समझना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'बुध' का फलादेश

धनु (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०२५ से १०३७ तक में देखना चाहिए।

धनु (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'बुध' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०२५ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'बुध' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०२६ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'बुध' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०२७ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'बुध' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०२८ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'बुध' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०२९ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०३० के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०३१ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०३२ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०३३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०३४ के अनुसार समझना चाहिये।

(११) जिस महीने में 'बुध' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०३५ के अनुसार समझना चाहिये।

(१२) जिस महीने में 'बुध' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुण्डली संख्या १०३६ के अनुसार समझना चाहिये।

धन (९) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'गुरु' का फलादेश

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०३७ से १०४८ तक में देखना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये—

(१) जिस वर्ष में 'गुरु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०३७ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०३८ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०३९ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस 'वर्ष' में 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०४० के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०४१ के अनुसार समझना चाहिये।

(६) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०४२ के अनुसार समझना चाहिये।

(७) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०४३ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०४४ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'गुरु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०४५ के अनुसार समझना चाहिये।

(१०) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०४६ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'गुरु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या के १०४७ अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०४८ के अनुसार समझना चाहिए।

धनु (९) लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'शुक्र' का फलादेश

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थाई-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०४९ से १०६० तक में देखना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'शुक्र' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०४९ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'शुक्र' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०५० के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'शुक्र' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०५१ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'शुक्र' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०५२ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'शुक्र' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०५३ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०५४ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०५५ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०५६ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०५७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'शुक्र' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०५८ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'शुक्र' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०५९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०६० के अनुसार समझना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'शनि' का फलादेश

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०६१ से १०७२ तक में देखना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये —

(१) जिस वर्ष में 'शनि' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०६१ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'शनि' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०६२ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'शनि' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०६३ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'शनि' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०६४ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'शनि' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०६५ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०६६ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'शनि' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०६७ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'शनि' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०६८ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'शनि' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०६९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'शनि' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०७० के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'शनि' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०७१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०७२ के अनुसार समझना चाहिए।

'धनु' (९) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'राहु' का फलादेश

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०७३ से १०८४ तक में देखना चाहिए।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०७३ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'राहु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुण्डली संख्या १०७४ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'राहु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०७५ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०७६ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'राहु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०७७ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०७८ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'राहु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०७९ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'राहु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०८० के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०८१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०८२ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'राहु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०८३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०८४ के अनुसार समझना चाहिए।

धनु (९) लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'केतु' का फलादेश

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०८५ से १०९६ तक में देखना चाहिये।

धनु (९) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'केतु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०८५ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस वर्ष में 'केतु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०८६ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस वर्ष में 'केतु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०८७ के अनुसार समझना चाहिये।

(४) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०८८ के अनुसार समझना चाहिये।

(५) जिस वर्ष में 'केतु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०८९ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०९० के अनुसार समझना चाहिये।

(७) जिस वर्ष में 'केतु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०९१ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस वर्ष में 'केतु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०९२ के अनुसार समझना चाहिये।

(९) जिस वर्ष में 'केतु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०९३ के अनुसार समझना चाहिये ।

(१०) जिस वर्ष में 'केतु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०९४ के अनुसार समझना चाहिए ।

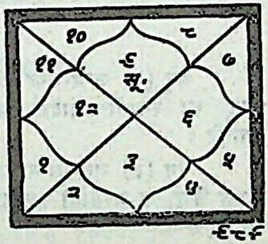
(११) जिस वर्ष में 'केतु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०९५ के अनुसार समझना चाहिए ।

(१२) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०९६ के अनुसार समझना चाहिए ।

'धनु' लग्न में 'सूर्य' का फल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

धनुलग्न: प्रथमभाव: सूर्य

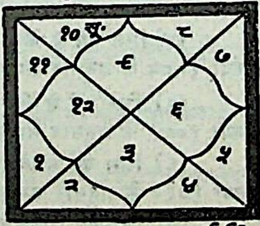


९८९

पहले केन्द्र तथा शरीर-स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को श्रेष्ठ शारीरिक-शक्ति एवं अधिक बल की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान्, धर्म-पालक तथा ईश्वर-भक्त होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में सप्तम-भाव को देखता है, अतः जातक को सुन्दर तथा भाग्य-शालिनी स्त्री मिलती है और उससे सहयोग भी प्राप्त होता है। साथ ही दैनिक व्यवसाय में लाभ होता है और गृहस्थी का सुख भी प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: द्वितीयभाव: सूर्य

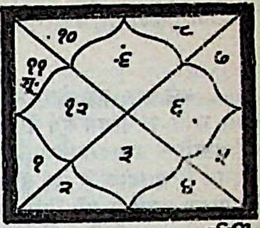


९९०

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को धन-संचय में कुछ कठिनाइयों के साथ अच्छी सफलता मिलती है। उसे कुटुम्ब का सुख भी कुछ मतभेदों के साथ प्राप्त होता है। स्वार्थ-सिद्धि की दृष्टि से वह धर्म का पालन भी करता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक की आयु में वृद्धि होती है, पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा भाग्योन्नति में भी सहायता प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

धनुलग्न: तृतीयभाव: सूर्य

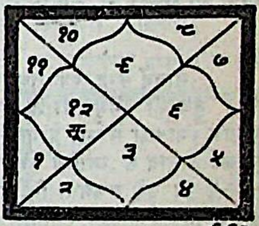


९६१

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख तो कुछ असन्तोष के साथ मिलता है, परन्तु पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति ईश्वर पर भरोसा रखने वाला तथा पुरुषार्थ द्वारा अपने भाग्य की उन्नति करने वाला होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपनी ही सिंह राशि में नवमभाव को देखता है, अतः पुरुषार्थ के द्वारा जातक के भाग्य की अत्यधिक वृद्धि होती है और वह धर्म का भी यथोचित पालन करता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा यशस्वी, हिम्मती तथा शक्तिशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: चतुर्थभाव: सूर्य

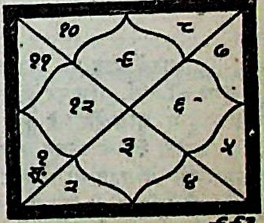


९६२

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को माता का सुख बहुत मिलता है तथा भूमि, मकान आदि की शक्ति भी प्राप्त होती है। उसकी भाग्योन्नति होती रहती है तथा धर्म में भी रुचि बनी रहती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता द्वारा शक्ति, राज्य द्वारा सम्मान एवं व्यवसाय द्वारा लाभ एवं उन्नति के योग प्राप्त होते रहते हैं। वह धनी, यशस्वी तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: पंचमभाव: सूर्य

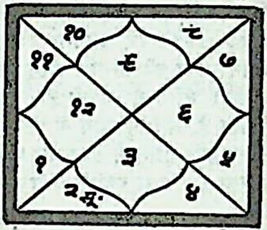


९६३

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक को सन्तान का सुख एवं विद्या तथा बुद्धि का लाभ यथेष्ट मात्रा में प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा विद्वान् ज्ञानी, बुद्धिमान् तथा धार्मिक विचारों का होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु शुक्र की तुला राशि मे एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। उसकी वाणी प्रखर होती है, जिसके कारण उसे लाभ के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है। उसमें शिष्टाचार एवं सज्जनता की कमी रहती है, फलतः ऐसा व्यक्ति अपनी सामाजिक अथवा आर्थिक उन्नति अधिक नहीं कर पाता।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: षष्ठभाव: सूर्य

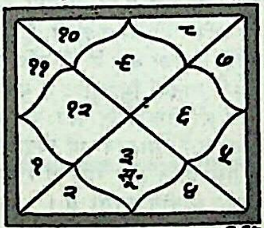


९६४

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अत्यधिक प्रभावशाली बना रहता है तथा झगड़े-झंझट के मार्ग से भाग्योन्नति एवं सफलता प्राप्त करता है। धर्म का पालन करने में उसे विशेष रुचि नहीं होती। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु उसे बाहरी स्थानों से लाभ होता रहता है, जिसके कारण खर्च चलता रहता है तथा भाग्य में वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: सप्तमभाव: सूर्य

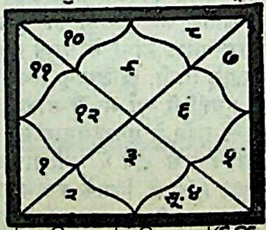


९६५

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन के अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक स्त्री-पक्ष से सुख प्राप्त करता है। उसका गृहस्थ-जीवन आनन्द से व्यतीत होता है, साथ ही व्यवसाय के क्षेत्र में भी उसे सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति भाग्य की शक्ति का भरोसा रखता है तथा ईश्वर-भक्त भी होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक को श्रेष्ठ शारीरिक-सुख एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। वह धर्म का पालन करता है तथा भाग्यवान् होता है, परन्तु उसकी स्त्री का स्वभाव कुछ तेज होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

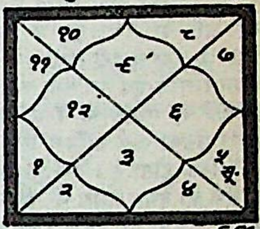
धनुलग्न: अष्टमभाव: सूर्य



आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। उसका दैनिक जीवन प्रभावशाली रहता है, परन्तु भाग्योन्नति में बहुत-सी रुकावटें आती हैं और विलम्ब से भाग्य की वृद्धि होती है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि के द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक को धन-संचय के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं तथा कौटुम्बिक सुख में भी कमी आती है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: नवमभाव: सूर्य

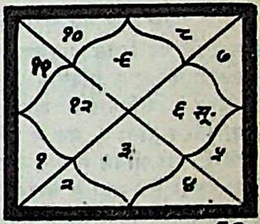


९६७

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपनी ही सिंह राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है और वह धर्म का भी यथाविधि पालन करता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा प्रभावशाली तथा यशस्वी होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक के पराक्रम में कुछ कमी आती है, साथ ही भाई-बहिनों से भी कुछ मतभेद रहता है। ऐसा व्यक्ति पुरुषार्थ के मुकाबले भाग्य पर अधिक आश्रित रहता है, परन्तु वह भाग्यवान् समझा जाता है तथा उसका जीवन सामान्यतः सुखी रहता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: दशमभाव: सूर्य

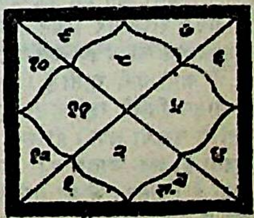


९६८

दसवें केन्द्र, पिता एवं राज्य के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा बहुत सहयोग मिलता है, राज्य के क्षेत्र से सम्मान की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय में उन्नति होती रहती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा भाग्यशाली होता है तथा धर्म का भी यथोचित पालन करता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान का यथेष्ट सुख भी प्राप्त होता है। वह प्रतिष्ठित तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: एकादशभाव: सूर्य

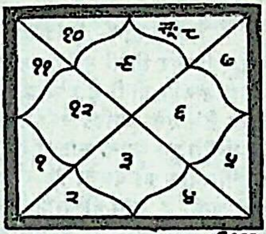


९६९

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि तो होती है परन्तु उसमें कुछ कठिनाइयाँ भी उपस्थित होती रहती हैं। यहाँ से सूर्य सातवीं उच्चदृष्टि से मंगल की मेष राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान एवं विद्या के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। वह विद्वान्, बुद्धिमान्, गुणवान्, धर्मज्ञ, सज्जन तथा श्रेष्ठ वाणी बोलने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति सामान्य सुखी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः द्वादशभावः सूर्य



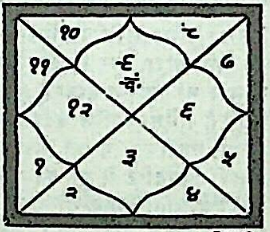
१०००

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का खर्च रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ विलम्ब के साथ लाभ एवं सफलता का अवसर प्राप्त करता है। वह धर्म का पालन करने में अधिक रुचि नहीं रखता, परन्तु उसका खर्च धार्मिक एवं परोपकार के मामलों में ही अधिक होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रुओं पर प्रभाव रखने वाला होता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से लाभ एवं सफलता प्राप्त करता है।

'धनु' लग्न में 'चन्द्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः प्रथमभावः चन्द्र



१००१

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित अष्टमेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आयु की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु पुरातत्त्व के लाभ में कठिनाइयाँ आती हैं। उसका शरीर सुन्दर तथा स्वस्थ होता है, मन में अनेक प्रकार के विचार उठते रहते हैं तथा जीवन में सुख-दुःख दोनों का ही समन्वय बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री की शक्ति कुछ कठिनाइयों के बाद मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय में भी परेशानियाँ आती रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

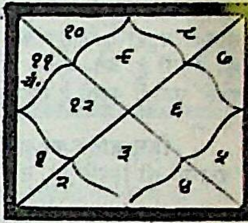
धनुलग्नः द्वितीयभावः चन्द्र



दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित अष्टमेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक धन का संचय नहीं कर पाता तथा कौटुम्बिक सुख में भी कमी बनी रहती है। उसे पुरातत्त्व द्वारा धन प्राप्ति के साधन मिलते रहते हैं तथा आयु की वृद्धि भी होती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी ही कर्क राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। उसका जीवन अमीरी ढंग का होता है, परन्तु [illegible] में कुछ [illegible] भी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: तृतीयभाव: चन्द्र

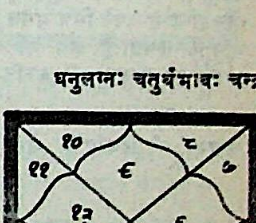


१००३

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित अष्टमेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है तथा पराक्रम की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है तथा दैनिक जीवन प्रभावशाली बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में नवमभाव को देखता है, अतः कुछ परेशानियों के साथ जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। सामान्यतः ऐसा जातक भाग्यवान् होता है, परन्तु उसे जीवन में संघर्षों का सामना भी निरन्तर करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: चतुर्थभाव: चन्द्र

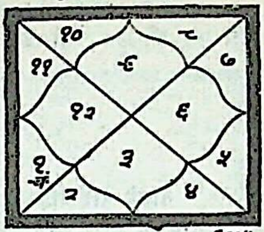


१००४

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित अष्टमेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कुछ कमी रहती है तथा मातृभूमि से अलग जाकर रहना पड़ता है। परन्तु उसे आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है और दैनिक-जीवन प्रभावशाली बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: पंचमभाव: चन्द्र

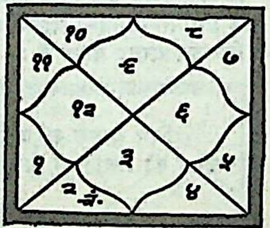


१००५

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित अष्टमेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी का सामना करना पड़ता है। उसके मस्तिष्क में चिन्त एँ घर किए रहती हैं, परन्तु उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ मिलता है तथा दैनिक जीवन उल्लासपूर्ण बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को लाभ के सम्बन्ध में भी परेशानी उठाती पड़ती है तथा बड़े मनोयोग तथा परिश्रम के बाद कुछ सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: षष्ठभाव: चन्द्र

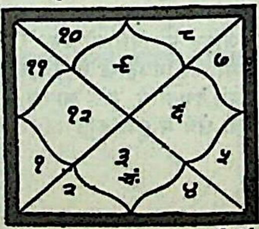


१००६

छठे रोग एवं शत्रु के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर प्रभाव बनाये रखता है। उसके दैनिक जीवन में कुछ कठिनाइयाँ तो आती हैं, फिर भी वह आनन्दित बना रहता है। अष्टमेश चन्द्रमा के प्रभाव से उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ भी होता है, साथ ही शत्रु-पक्ष से झगड़े-झंझटों के कारण कुछ मानसिक परेशानी भी बनी रहती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक को खर्च के सम्बन्ध में कुछ परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी अरुचिकर रहता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

धनुलग्न: सप्तमभाव: चन्द्र

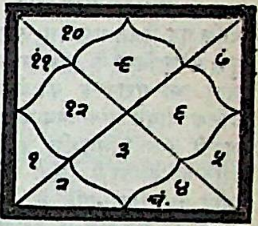


१००७

सातवें केन्द्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित अष्टमेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं, परन्तु उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है और दैनिक जीवन में आनन्द का वातावरण भी थोड़ा-बहुत बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से गुरु की धनु राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक का शारीरिक-सौन्दर्य तो अच्छा होता है, परन्तु उसका स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं रहता। वह थोड़े से परिश्रम अथवा सामान्य परेशानियों के उपस्थित होने पर अधिक थक कर शिथिल हो जाता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: अष्टमभाव: चन्द्र

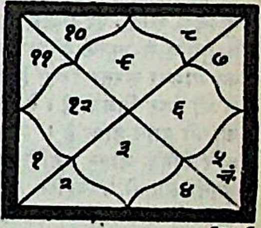


१००८

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपनी ही कर्क राशि पर स्थित अष्टमेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा उसे पुरातत्त्व की शक्ति का भी यथेष्ट लाभ मिलता है। उसका जीवन बड़े ठाठ-बाट का रहता है, परन्तु मन में थोड़ी-बहुत अशान्ति भी बनी रहती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को धन के सम्बन्ध में चिन्ता बनी रहती है तथा कुटुम्ब से भी अधिक सुख नहीं मिल पाता। उसे धन तथा कुटुम्ब दोनों के ही सम्बन्ध में परेशानी एवं चिन्ताओं का शिकार बने रहना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

धनुलग्न: नवमभाव: चन्द्र

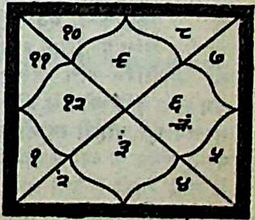


१००९

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित अष्टमेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कुछ परेशानियाँ आती हैं तथा यश भी कम मिल पाता है। साथ ही धर्म का भी यथा-विधि पालन नहीं होता। परन्तु उसकी आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होने से भाग्य में वृद्धि भी होती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक का अपने भाई-बहिनों के साथ मतभेद बना रहता है तथा पराक्रम की भी समुचित वृद्धि नहीं हो पाती। वह अपने मनोबल द्वारा सामान्य जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

धनुलग्न: दशमभाव: चन्द्र

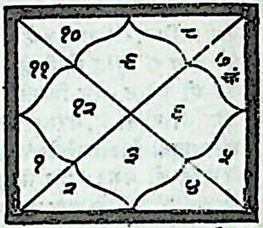


१०१०

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित अष्टमेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है, जिसके कारण जीवन प्रभावशाली एवं ठाठ-बाट का बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में चतुर्थभाव को देखता है अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख मिलता तो है, परन्तु उसमें कमी और परेशानी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

धनुलग्नः एकादशभावः चन्द्र

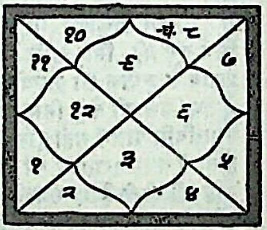


२०११

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित अष्टमेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को कुछ परेशानियों के साथ लाभ प्राप्त होता रहता है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है तथा दैनिक जीवन आनन्दमय बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में पंचम-भाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान-पक्ष से कुछ कष्ट तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है। इसके साथ ही मस्तिष्क में विविध प्रकार की चिन्ताओं का निवास भी बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः द्वादशभावः चन्द्र



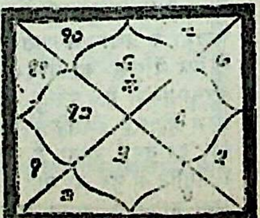
२०१२

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित अष्टमेश तथा नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को खर्च के मामले में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी कष्ट मिलता है। ऐसे व्यक्ति को आयु एवं पुरातत्त्व की भी हानि होती है। मानसिक चिन्तायें घेरे रहती हैं और दैनिक जीवन अशान्तिपूर्ण रहता है। यहाँ से चंद्रमा अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक अपने शत्रुओं पर प्रभाव बनाए रहता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों पर विजय एवं सफलता प्राप्त करता है।

'धनु' लग्न में 'मंगल' का फल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः प्रथमभावः मंगल

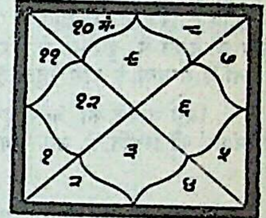


पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक की शारीरिक-शक्ति उत्तम रहती है और शारीरिक-श्रम तथा बुद्धि-योग से बड़े काम करता है। उसे विद्या, सन्तान एव बाहरी स्थानों से भी सामान्य लाभ होता है। परन्तु मंगल के व्ययेश होने के कारण शारीरिक-सौन्दर्य में कमी रहती है तथा अहंकार की मात्रा भी बढ़ी रहती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता एवं भूमि का सामान्य सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से

सप्तमभाव को देखने से स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ त्रुटि के साथ सफलता मिलती है तथा आठवीं नीचदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में भी कुछ कमजोरी आती है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

धनुलग्नः द्वितीयभावः मंगल

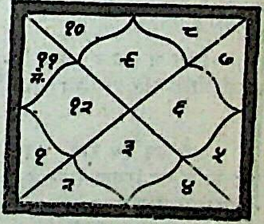


१०२४

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक बुद्धि-योग तथा बाहरी सम्बन्धों से धन का सामान्य संचय करता है तथा कौटुम्बिक-सुख में न्यूनाधिकता बनी रहती है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को विद्या तथा सन्तान की शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं नीच दृष्टि से अष्टमभाव को मित्र की राशि में देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कमजोरी रहती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से बड़ी कठिनाइयों के साथ भाग्योन्नति में थोड़ी सफलता मिलती है तथा धर्म का पालन करने में भी कुछ कमी बनी रहती है। मंगल के व्ययेश होने के कारण जातक का जीवन संघर्षपूर्ण रहता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः तृतीयभावः मंगल

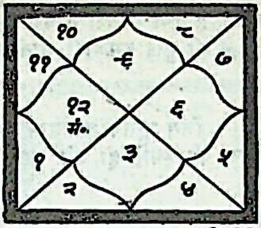


१०२५

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है। विद्या तथा सन्तान के पक्ष में भी कमी होती है तथा खर्च अधिक रहता है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः शत्रुपक्ष में प्रभाव रहता है तथा झगड़े-झंझटों में सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य एवं धर्म की सामान्य उन्नति होती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में न्यूनाधिक सफलता मिलती रहती है। संक्षेप में, ऐसे व्यक्ति का जीवन उतार-चढ़ावपूर्ण तथा संघर्षमय रहता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

धनुलग्न: चतुर्थभाव: मंगल

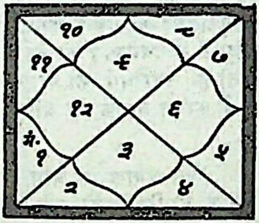


१०२६

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित व्ययेश मंगल से प्रभाव से जातक को माता के सुख की विशेष हानि होती है तथा भूमि, मकान आदि का सुख भी प्रायः प्राप्त नहीं हो पाता। सन्तान-पक्ष तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कमी बनी रहती है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ काम चलता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से बुद्धि-योग द्वारा आमदनी के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ रहता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: पंचमभाव: मंगल

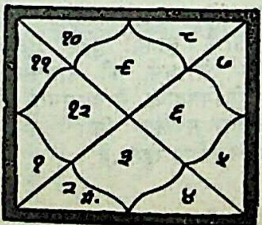


१०२७

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपनी ही मेष राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या एवं सन्तान के क्षेत्र में परेशानियों के बाद थोड़ी सफलता मिलती है। यहाँ से मंगल चौथी नीच दृष्टि से मित्र चन्द्रमा की राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ कमजोरी रहती है तथा पेट में विकार बना रहता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से बुद्धि-योग एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से आमदनी के क्षेत्र में कुछ सफलता मिलती है तथा आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण कुछ मानसिक परेशानी बनी रहती है, परन्तु बाहरी स्थानों से विशेष लाभ भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

धनुलग्न: षष्ठभाव: मंगल



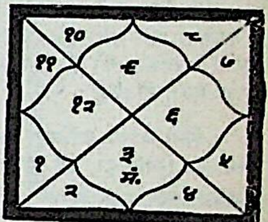
१०२८

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर सफलता प्राप्त करता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में भी सफलता मिलती है। परन्तु सन्तान से परेशानी तथा विद्या में कमी रहती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः भाग्य एवं धर्म की उन्नति में कुछ परेशानी तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृश्चिक राशि में द्वादशभाव को देखने से खर्च की अधिकता से परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में भी

कठिनाइयाँ आती हैं। आठवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक के शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा मस्तिष्क में परेशानी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये —

धनुलग्नः सप्तमभावः मंगल

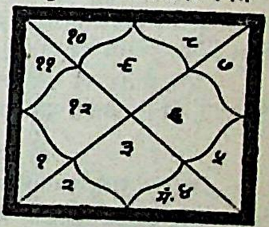


२०१९

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय में कठिनाई एवं हानि उठानी पड़ती है। बाहरी स्थानों से सम्बन्ध कुछ अच्छा रहता है तथा बुद्धि-बल से जातक अपना खर्च चलाता है। चौथी मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सामान्य सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से जातक के शरीर में कुछ दुर्बलता रहती है एवं आठवीं उच्च दृष्टि से द्वितीय-भाव को देखने के कारण धन-संचय के पक्ष में कुछ उन्नति होती है तथा कुटुम्ब का सुख भी सामान्य रूप में अच्छा प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये —

धनुलग्नः अष्टमभावः मंगल

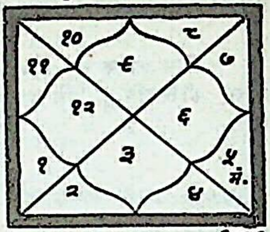


१०२०

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित व्ययेश एवं नीच के मंगल के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व शक्ति का ह्रास होता है। पेट में विकार रहता है तथा चिन्ता एवं परेशानियाँ घेरे रहती हैं। सन्तान-पक्ष से कष्ट और विद्या पक्ष में कमजोरी तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अशान्ति बनी रहती है। चौथी शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से कठिन परिश्रम द्वारा आमदनी की वृद्धि होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन एवं कुटुम्ब की सामान्य शक्ति प्राप्त होती है तथा आठवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों से विरोध रहता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये —

धनुलग्न: नवमभाव: मंगल

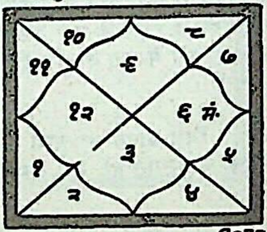


२०२१

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धन के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म के पक्ष की कुछ त्रुटिपूर्ण उन्नति होती है। इसी प्रकार विद्या एवं सन्तान के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयों एवं कमियों के साथ सामान्य सफलता मिलती है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादशभाव को देखता है, अत: खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के अच्छे सम्बन्ध से खर्च की पूर्ति होती है तथा शक्ति मिलती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों से विरोध रहता है तथा पुरुषार्थ में कमी आती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा मकान आदि का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: दशमभाव: मंगल

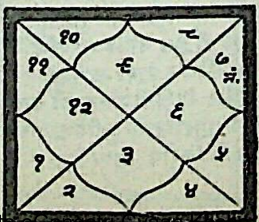


२०२२

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को पिता के सुख की हानि होती है, व्यवसाय में भी नुकसान रहता है तथा राज्य के क्षेत्र में थोड़ा प्रभाव बढ़ता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति अपने बुद्धि-बल से किसी बाहरी स्थान में काम करके बहुत सम्मान प्राप्त करता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक के शारीरिक-स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान का सुख भी कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है। आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ तो होता है, परन्तु विद्या एवं सन्तान के सुख में कुछ कठिनाई भी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: एकादशभाव: मंगल



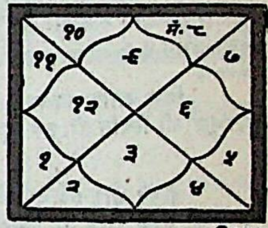
२०२३

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। उसका खर्च भी अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से कुछ परेशानी के साथ लाभ भी होता है। चौथी उच्च-दृष्टि से शत्रु शनि की राशि में द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय के लिये विशेष श्रम करना पड़ता है तथा कौटुम्बिक सुख का भी लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में पंचमभाव को देखने से विद्या एवं

संतान-पक्ष से लाभ होता है तथा आठवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष पर बड़ा प्रभाव रहता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में जातक को सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न मे हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, और उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: द्वादशभाव: मंगल



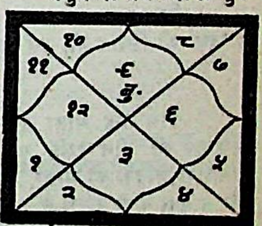
१०२४

बारहवें व्यय-स्थान में अपना ही वृश्चिक राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से बुद्धि-योग द्वारा सफलता मिलती रहती है। परन्तु सन्तान के पक्ष में हानि एवं विद्या के पक्ष में कमजोरी रहती है। चौथी शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से भाई-बहिनों से वैमनस्य रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुओं पर प्रभाव रहता है तथा झगड़ों से लाभ होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री-पक्ष से संकट मिलता है तथा व्यवसाय में कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसा व्यक्ति अपने बुद्धि-बल द्वारा बाहरी स्थानों के सम्बन्धो से लाभ उठाता है।

'धनु' लग्न में 'बुध' का फल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: प्रथमभाव: बुध

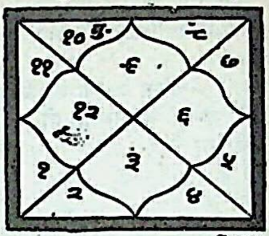


१०२५

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को श्रेष्ठ शारीरिक शक्ति एवं विवेक-शक्ति प्राप्त होती है। साथ ही उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है वह यशस्वी तथा सम्मानित भी होता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से अपनी ही मिथुन राशि में सप्तमभाव को देखता है, अत: जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है तथा ससुराल से यथेष्ट धन का लाभ होता है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी उसे पर्याप्त सफलता मिलती है। ऐसा जातक सदैव उमंग और उत्साह से परिपूर्ण, धनी, सुखी तथा यशस्वी बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

धनुलग्न: द्वितीयभाव: बुध

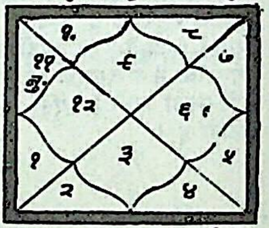


१०२६

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को धन-संचय की विशेष शक्ति प्राप्त होती है तथा कौटुम्बिक-सुख भी मिलता है। उसे पिता द्वारा लाभ, राज्य द्वारा सम्मान तथा व्यवसाय में सफलता एवं प्रतिष्ठा भी मिलती है, परन्तु स्त्री के सुख में कमी रहती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। उसका दैनिक जीवन उल्लासपूर्ण तथा ठाठ-बाट का रहता है तथा विवेक-बुद्धि द्वारा वह निरंतर उन्नति करता चला जाता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये--

धनुलग्न: तृतीयभाव: बुध

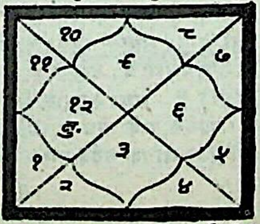


१०२७

तीसरे भाई एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ की वृद्धि होती है और उसे भाई-बहिनों का यथेष्ट सुख भी प्राप्त होता है। पिता, राज्य, व्यवसाय एवं स्त्री के पक्ष में भी सफलता मिलती है तथा यश और मान की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति एवं सफलता प्राप्त करता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। संक्षेप में ऐसा जातक धनी, सुखी धर्मात्मा, यशस्वी एवं हिम्मत वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

धनुलग्न: चतुर्थभाव: बुध

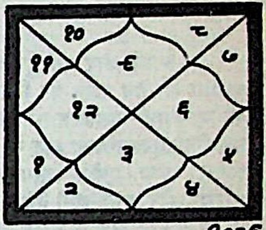


१०२८

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कुछ कमी रहती है। साथ ही स्त्री तथा गृहस्थी-सम्बन्धी अन्य सुख में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। यहाँ से बुध सातवीं उच्चदृष्टि से अपनी ही कन्या राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक कुछ कमी के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में शक्ति प्राप्त करता है तथा कठिनाइयों से मुकाबला करते हुए आगे बढ़ता है और अपनी मान-सम्मान्नति करता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

धनुलग्न: पंचमभाव: बुध

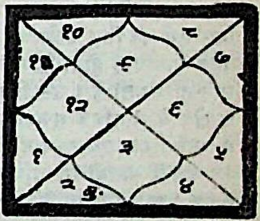


२०२९.

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है तथा सन्तान का भी श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। इसके साथ ही स्त्री, गृहस्थी, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में भी उन्नति होती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक अपनी श्रेष्ठ बुद्धि द्वारा पर्याप्त लाभ अर्जित करता है। ऐसा व्यक्ति बातचीत करने में बड़ा निपुण, चतुर तथा बुद्धिमान होता है। उसे सर्वत्र यश तथा सम्मान प्राप्त होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: षष्ठभाव: बुध

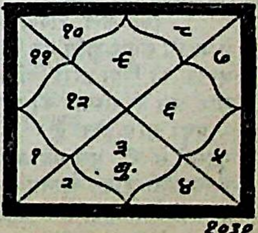


२०३०

छठे रोग एवं शत्रु स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा शत्रु-पक्ष में सफलता प्राप्त करता है। उसे पिता के सुख की कमी रहती है साथ ही व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। राज्य के क्षेत्र से भी उसे असन्तोष रहता है, परन्तु नाना के पक्ष से शक्ति प्राप्त होती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से जातक को लाभ मिलता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

धनुलग्न: सप्तमभाव: बुध



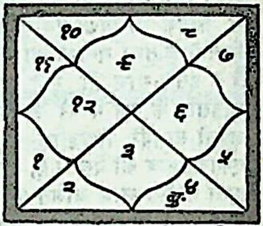
२०३१

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी ही मिथुन राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है तथा स्त्री-पक्ष से लाभ भी होता है। इसी प्रकार वह अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त करता है। साथ ही पिता एवं राज्य द्वारा भी सहयोग एवं सम्मान मिलता है। वह वैभवशाली तथा यशस्वी होता है और घरेलू सुख भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त करता रहता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक को

शारीरिक-सौन्दर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। वह सुखी, यशस्वी, भोगी तथा धनी होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः अष्टमभावः बुध

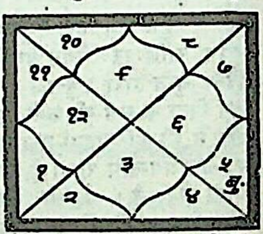


२०३२

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ मिलता है। उसकी दिन-चर्या ठाठ-बाट से पूर्ण बनी रहती है, परन्तु पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उसे काफी कठिनाइयों और कभी-कभी बड़े घाटे का सामना करना पड़ता है। राजकीय क्षेत्र में भी कमजोरी बनी रहती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक को धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि तथा सुख के लिये विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः नवमभावः बुध



२०३३

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक बहुत भाग्यवान् होता है, साथ ही धार्मिक क्षेत्र में भी उसे उन्नति मिलती है। उसे पिता, स्त्री, व्यवसाय तथा राज्य के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता मिलती है। वह विवेक-बुद्धि से पर्याप्त यश एवं सम्मान भी अर्जित करता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की भी अत्यधिक वृद्धि होती है। वह अपने पुरुषार्थ द्वारा व्यावसायिक तथा अन्य क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करके सुखी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः दशमभावः बुध



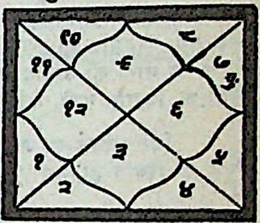
२०३४

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपनी कन्या राशि पर स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा विशेष सहयोग मिलता है। राजकीय क्षेत्र में सम्मान की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय में प्रचुर लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति को स्त्री-पक्ष तथा गृहस्थी से भी सुख एवं शक्ति की प्राप्ति होती है। वह वैभवशाली जीवन व्यतीत करता है तथा यश एवं सम्मान प्राप्त करता रहता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं नीच-

दृष्टि से मित्र गुरु की मीन राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता के सुख में कमी रहती है। साथ ही जन्म-भूमि एवं मकान आदि के सुख में भी कुछ परेशानियाँ आती हैं।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: एकादशभाव: बुध

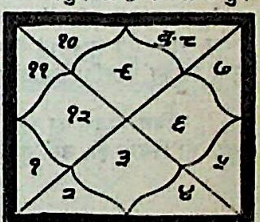


१०३५

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को व्यवसाय द्वारा प्रचुर लाभ प्राप्त होता है। उसे पिता के द्वारा सहयोग, स्त्री के द्वारा सुख, राज्य द्वारा सम्मान तथा आर्थिक क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। वह अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा धन तथा यश की खूब वृद्धि करता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को विद्या-बुद्धि खूब प्राप्त होती है तथा सन्तान-पक्ष में भी सुख एवं सफलता मिलती रहती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, यशस्वी तथा सम्मानित जीवन व्यतीत करता है और उसे प्रशंसा प्राप्त होती रहती है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: द्वादशभाव: बुध



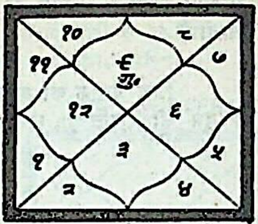
१०३६

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त होता है, परन्तु अपने ही स्थान में रहकर व्यवसाय करने में उसे हानि उठानी पड़ती है। स्त्री तथा पिता के सुख की हानि होती है तथा राजकीय क्षेत्र भी लाभदायक नहीं रहता। घरेलू इज्जत की रक्षा करने के लिए भी बहुत परेशानी उठानी पड़ती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु-पक्ष एवं झगड़े-झंझट के मामलों में सफलता प्राप्त करता है।

'धनु' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः प्रथमभावः गुरु

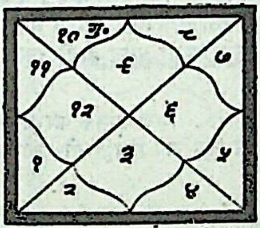


२०३७

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपनी ही धनु राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से शारीरिक-सौन्दर्य एवं सुख प्राप्त होता है। साथ ही उसे माता, भूमि तथा मकान आदि का सुख भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति मधुरभाषी तथा आनन्दी होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः उसे विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में भी सुख, सफलता एवं निपुणता की प्राप्ति होती है। उसकी वाणी में मधुरता तथा बड़प्पन का आभास मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय का सुख भी प्राप्त होता है और नवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म का पालन होता है। ऐसा व्यक्ति सज्जन, धर्मात्मा, विद्वान्, गुणी, धनी तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः द्वितीय भावः गुरु

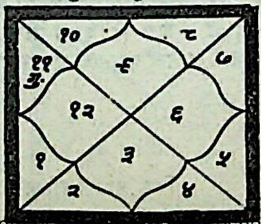


२०३८

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु शनि की राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक के धन की हानि होती है तथा कुटुम्ब-पक्ष से परेशानी रहती है। शारीरिक-सुख, स्वास्थ्य और सौन्दर्य में भी कमी आती है तथा माता एवं भूमि का पक्ष भी कमजोर रहता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु-पक्ष में प्रभावशाली रहता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में बुद्धिमानी से काम निकालता है। सातवीं उच्चदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है और नवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से सुख, सम्मान, सहयोग तथा लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति उन्नतिशील तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः तृतीयभावः गुरु



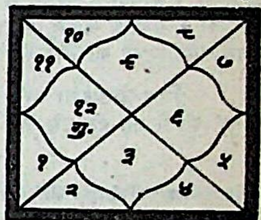
२०३९

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों का सुख कुछ मतभेद के साथ प्राप्त होता है, पराक्रम में कुछ कमी आती है तथा माता, भूमि एवं मकान का सुख सामान्य रहता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्र दृष्टि से सप्तमभाव को देखता है अतः स्त्री-पक्ष से सुख और सौन्दर्य की प्राप्ति होती है एवं व्यवसाय में सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य की [illegible] है तथा धर्म-पालन में

रुचि रहती है। नवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति कुछ परेशानियों के साथ ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: चतुर्थभाव: गुरु

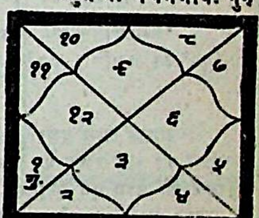


२०५०

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपनी ही मीन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। उसे शारीरिक-सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति भी होती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं उच्च तथा मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का विशेष लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता का सुख, राज्य द्वारा सम्मान तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। नवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च का संचालन भली-भाँति होता रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बंध से भी लाभ प्राप्त होता है। कुल मिलाकर ऐसा व्यक्ति सुखी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: पंचमभाव: गुरु

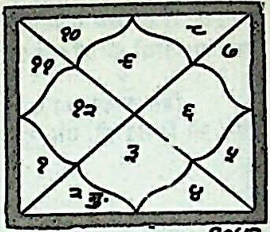


२०५१

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में पूर्ण सफलता मिलती है तथा सन्तान-पक्ष से भी सुख प्राप्त होता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः उसके भाग्य की वृद्धि होती है, धर्म-पालन में रुचि रहती है, साथ ही यश भी प्राप्त होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ आमदनी के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक-सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान्, भाग्यवान् तथा स्वाभिमानी होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: षष्ठभाव: गुरु

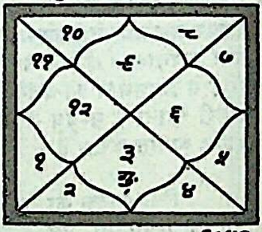


२०५२

छठे रोग तथा शत्रु-भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष-झगड़ों एवं रोग आदि के कारण कुछ परेशानियाँ रहती हैं तथा बुद्धि-बल से सफलता मिलती है। शारीरिक सुख, स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में भी कमी आती है। माता का सुख अल्प रहता है तथा मातृभूमि, मकान आदि से भी विच्छेद हो जाता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से सुख, मान, लाभ, सहयोग एवं शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख मिलता है। नवीं नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से जातक को धन तथा कुटुम्ब की ओर से चिन्ता तथा परेशानी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में "गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: सप्तम भाव: गुरु

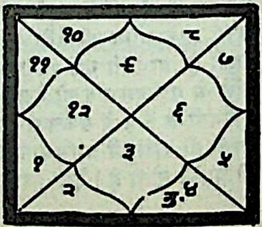


२०५३

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से सुख एवं सौन्दर्य की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी खूब सफलता मिलती है। उसे माता, भूमि एवं मकान का सुख भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति अपने दैनिक कार्यों का सफलतापूर्वक संचालन करता है तथा प्रसन्न बना रहता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी के क्षेत्र में कुछ असन्तोष बना रहता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, सरलता एवं स्वाभिमान की प्राप्ति होती है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन से असन्तोष रहता है तथा पुरुषार्थ की वृद्धि में भी रुकावटें आती हैं।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

धनुलग्न: अष्टमभाव: गुरु



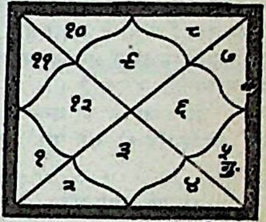
२०५४

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी आ जाती है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु शनि की राशि में द्वितीयभाव को देखने से धन के सम्बन्ध में चिन्ता बनी रहती है तथा कौटुम्बिक सुख में

कमी आती है। नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थभाव को देखने के कारण माता तथा भूमि व मकान आदि का सुख कुछ त्रुटियों के साथ मिलता है तथा घरेलू सुख में कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

धनुलग्न: नवमभाव: गुरु

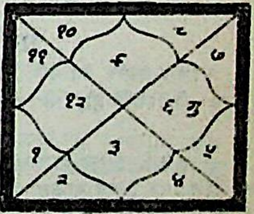


१०५५

नवें भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य की अत्यधिक वृद्धि होती है और वह धर्म का भी विधिवत् पालन करता है। उसे माता, भूमि एवं मकान का सुख भी मिलता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं दृष्टि से प्रथमभाव को अपनी ही राशि में देखता है, अतः जातक को शारीरिक सौन्दर्य, सुख, स्वास्थ्य एवं यश की प्राप्ति होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख में कुछ असन्तोष रहता है तथा पुरुषार्थ की वृद्धि-भी रुचिकर रूप में नहीं हो पाती। नवीं मित्र दृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि की वृद्धि भी होती है। ऐसे व्यक्ति की वाणी प्रभावशाली होती है और वह यशस्वी, धनी तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: दशमभाव: गुरु

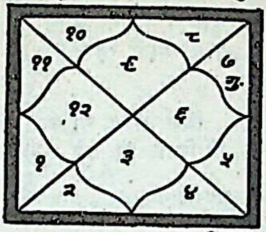


१०५६

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता का सुख, राज्य से प्रतिष्ठा, व्यवसाय में सफलता एवं यश की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति शरीर से सुन्दर तथा स्वाभिमानी होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं नीचदृष्टि से अपने शत्रु शनि की राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक को धन एवं कुटुम्ब के पक्ष से असन्तोष रहता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक शत्रु-पक्ष में बड़ी होशियारी से काम लेता है। कुछ कठिनाइयाँ उठाने के बावजूद भी वह अपने शत्रुओं पर प्रभाव स्थापित करने में सफल होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: एकादशभाव: गुरु

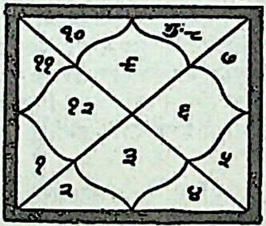


१०४७

ग्यारहवें लाभ-भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक शारीरिक-श्रम द्वारा अपनी आमदनी को बढ़ाता है। उसे माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी मिलता है। धन-वृद्धि के लिए वह निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है. अतः जातक को भाई-बहिनों से असन्तोष रहता है तथा पराक्रम की भी विशेष वृद्धि नहीं हो पाती। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री के सुख तथा व्यवसाय द्वारा लाभ प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसा व्यक्ति संघर्षपूर्ण सामान्य सुखी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: द्वादशभाव: गुरु



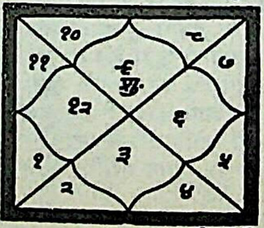
१०४८

बारहवें व्यय-भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख प्राप्त होता है। उसे भ्रमण करना पड़ता है तथा शरीर में कुछ कमजोरी भी बनी रहती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में अपनी बुद्धिमानी से प्रभाव स्थापित करता है तथा झगड़ों में शान्तिपूर्वक काम निकालकर सफलता पाता है। नवीं उच्चदृष्टि से मित्र चन्द्र की राशि में अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की आयु की वृद्धि होती है और उसे पुरातत्त्व का लाभ मिलता है। ऐसे व्यक्ति का दैनिक जीवन शानदारी का रहता है।

'धनु' लग्न में 'शुक्र' का फल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: प्रथमभाव: शुक्र

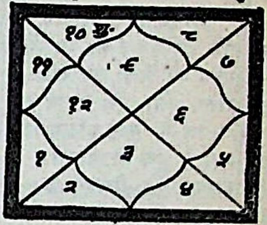


१०४९

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित षष्ठेश शुक्र के प्रभाव से जातक के शारीरिक-स्वास्थ्य में कुछ कमी आती है, परन्तु वह बड़ा परिश्रमी तथा चतुर होता है, अतः शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है एव झगड़े-झंझट के मार्ग से लाभ उठाता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री द्वारा कुछ मतभेद के साथ सुख प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परिश्रम एवं चातुर्य के द्वारा लाभ एवं सफलता प्राप्त होती है। ऐसा जातक यशस्वी तथा प्रतिष्ठित भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः द्वितीयभावः शुक्र

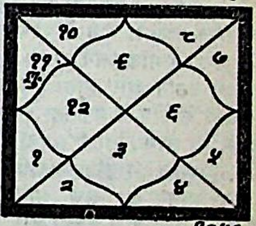


१०५०

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित षष्ठेश शुक्र के प्रभाव से जातक कुछ कठिनाइयों के साथ धन की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त करता है तथा कुटुम्ब के साथ उसका मतभेद बना रहता है। शत्रु-पक्ष से लाभ उठाने और उस पर प्रभाव जमाने में जातक को सफलता मिलती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ मिलता है। ऐसा व्यक्ति प्रतिष्ठित तथा प्रभावशाली होता है और कठिन परिश्रम द्वारा द्रव्योपार्जन करता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए —

धनुलग्नः तृतीयभावः शुक्र

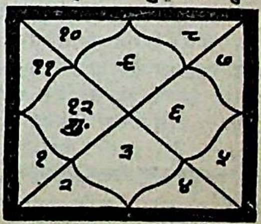


१०५१

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, पुरुषार्थ द्वारा वह धन भी उपार्जित करता है। भाई-बहिनों का सुख कुछ मतभेद के साथ मिलता है तथा शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक की भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं तथा धर्म की ओर भी विशेष रुचि नहीं रहती। एसा व्यक्ति पुरुषार्थ को प्रधानता देता है और सामान्यतः सुखी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः चतुर्थभावः शुक्र

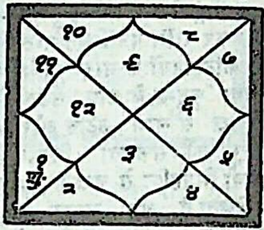


१०५२

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। आमदनी अच्छी रहती है तथा शत्रु पक्ष पर विजय मिलती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं नीचदृष्टि से मित्र बुध की कन्या राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता से हानि तथा राजकीय क्षेत्र से असफलता प्राप्त होती है। व्यवसाय की उन्नति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने के मार्ग में भी उसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: पंचमभाव: शुक्र

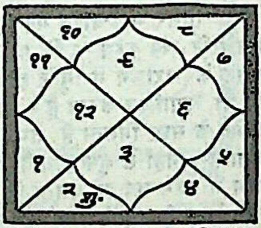


१०५३

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि की प्राप्ति होती है। वाणी की शक्ति, कला एवं चातुर्य का लाभ भी होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही तुला राशि में एकादशभाव को देखता है। जातक अपनी विद्या-बुद्धि द्वारा आमदनी को बढ़ाता है। ऐसा व्यक्ति शत्रु-पक्ष पर विजयी होता है तथा झगड़े-झंझट, मुकदमे आदि के द्वारा लाभ उठाता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: षष्ठभाव: शुक्र

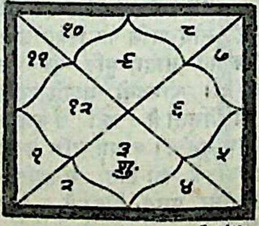


१०५४

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपनी ही वृषभ राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर बड़ा भारी प्रभाव रखने वाला तथा झगड़े-झंझटों के मार्ग से लाभ उठाने वाला होता है। उसे परिश्रम द्वारा धन एवं आमदनी के क्षेत्र में सफलता मिलती है। साथ ही ननसाल पक्ष से भी लाभ होता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का ख़र्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अच्छा लाभ कुछ कठिनाइयों के साथ होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: सप्तमभाव: शुक्र

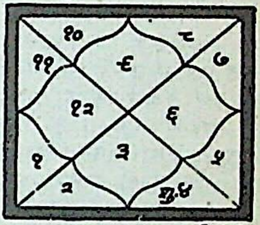


१०५५

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक स्त्री-पक्ष से कुछ मतभेद के साथ लाभ प्राप्त करता है। इसी प्रकार व्यावसायिक क्षेत्र में भी कठिनाइयों के साथ लाभ प्राप्त करता है। वह शत्रु पक्ष पर प्रभाव स्थापित करता है। उसकी मूत्रेन्द्रिय में विकार होने की संभावना भी रहती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से गुरु की धनु राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक शारीरिक दृष्टि से प्रभावशाली रहता है, परन्तु आमदनी के क्षेत्र में उसे विशेष परिश्रम एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: अष्टमभाव: शुक्र

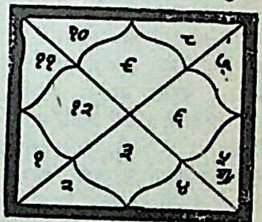


१०५६

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ मिलता है। आमदनी के मार्ग में उसे कठिनाइयों का अनुभव होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से चातुर्य एवं परिश्रम द्वारा लाभ मिलता है। शत्रु-पक्ष से भी उसे कुछ कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक धन-वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करता है और उसे कुटुम्ब का सहयोग भी प्राप्त होता है

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: नवमभाव: शुक्र

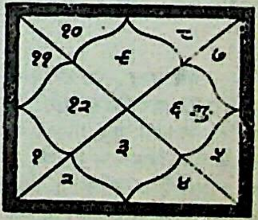


१०५७

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक अपनी भाग्योन्नति के लिए विशेष परिश्रम करता है तथा धर्म के पक्ष में भी उसे थोड़ी ही श्रद्धा रहती है। वह अपने चातुर्य के बल पर शत्रु-पक्ष से लाभ भी उठाता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन की शक्ति मिलती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है, जिसके कारण उसे सफलताएँ मिलती रहती हैं और वह भाग्यवान् समझा जाता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: दशमभाव: शुक्र

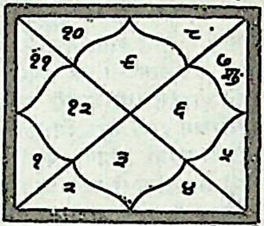


१०५८

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता-पक्ष से परेशानी, राज्य-पक्ष से प्रतिष्ठा में कमी एवं व्यवसाय पक्ष में कठिनाइयों का अनुभव होता है, उसकी भाग्योन्नति में शत्रु-पक्ष के कारण रुकावटें आती हैं, परन्तु गुप्त-चातुर्य के बल पर वह अपना काम निकालता रहता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से शत्रु गुरु की मीन राशि में चतुर्थभाव को देखता है, जिससे जातक को माता, भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है, साथ ही घर के भीतर भी उसका प्रभाव बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: एकादशभाव: शुक्र

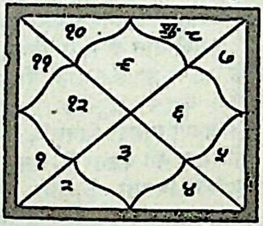


१०५९

ग्यारहवें लाभ भवन में अपनी ही तुला राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है और उसे शत्रु-पक्ष से भी विशेष लाभ मिलता है। झगड़े-झंझट के मामलों से वह फायदा तो उठाता है, परन्तु उसके कारण उसे परेशानियाँ भी सहनी पड़ती हैं। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की मेष राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। बाद में वह बड़ा चतुर, गुणी तथा विद्वान् बन जाता है। उसे सन्तान-पक्ष से भी कुछ त्रुटिपूर्ण लाभ प्राप्त होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: द्वादशभाव: शुक्र



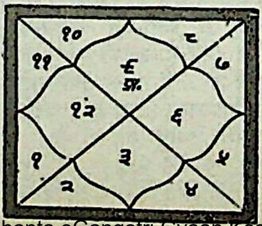
१०६०

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता रहता है। उसे झगड़े-झंझटों के कारण कुछ परेशानी भी उठानी पड़ती है, परन्तु अपने गुप्त-चातुर्य के बल पर वह उससे भी लाभ उठा लेता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृषभ राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु-पक्ष पर अपना प्रभाव स्थापित करता है। ऐसा व्यक्ति संघर्षपूर्ण तथा सामान्य जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

'धनु' लग्न में 'शनि' का फल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: प्रथमभाव: शनि



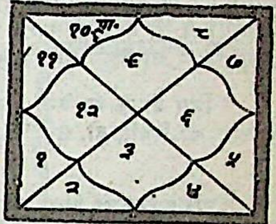
१०६१

पहले केन्द्र तथा शरीर-स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु-राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक-स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में कुछ कमी बनी रहती है। वह शारीरिक श्रम से धन तथा कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त करता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः उसे भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से भी सुख एवं शक्ति प्राप्त होती

है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता से सुख, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः द्वितीयभावः शनि

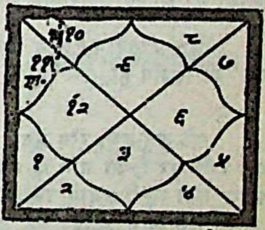


२०६२

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपनी ही मकर राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख अल्प-मात्रा में प्राप्त होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। दसवीं उच्च दृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है और कभी-कभी आकस्मिक धन का लाभ भी होता है। संक्षेप में, ऐसा व्यक्ति धनी तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः तृतीयभावः शनि

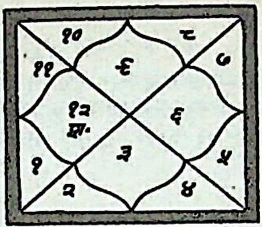


२०६३

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपनी ही कुम्भ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख कुछ त्रुटिपूर्ण बना रहता है। यहाँ से शनि तीसरी नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः सन्तान-पक्ष से कष्ट का अनुभव होता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा यश की उन्नति में कमी आती है तथा धर्म पर श्रद्धा भी कम रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी अधिक अच्छा नहीं रहता। ऐसा व्यक्ति अपने परिश्रम द्वारा भाग्य की उन्नति करता तथा धन कमाता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः चतुर्थभावः शनि

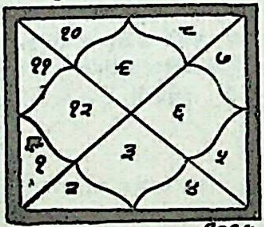


१०६३

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी रहती है तथा भूमि, मकान आदि का सामान्य सुख प्राप्त होता है। भाई-बहिन एवं कुटुम्ब का सुख भी सन्तोषजनक नहीं रहता। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक का शत्रु-पक्ष पर बड़ा प्रभाव रहता है तथा झगड़े के मामलों से लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा, सुख, सहयोग, सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है तथा घरेलू सुख में भी विघ्न आते रहते हैं।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः पंचमभावः शनि

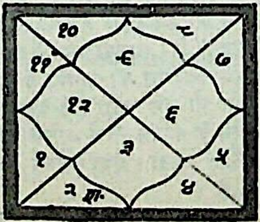


१०६४

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति वार्तालाप करने में रूखा तथा मन में छिपाव रखने वाला होता है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है। सातवीं उच्चदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है तथा परिश्रम के द्वारा विशेष लाभ होता है। दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखने में कारण कुटुम्ब तथा धन-संचय के लिए जातक विशेष चिन्तित बना रहता है और गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेकर कुछ सफलता भी पाता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' के 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः षष्ठ भावः शनि



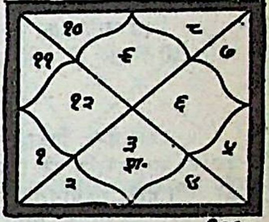
१०६६

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर बड़ा भारी प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से लाभ उठाता है। उसका भाई-बहिन एवं कुटुम्ब से कुछ विरोध रहता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु की शक्ति में तो वृद्धि होती है, परन्तु पुरातत्त्व की शक्ति में कुछ कमी रहती है। सातवीं दृष्टि से मंगल राशि में द्वादश-भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों

के सम्बन्ध से भी हानि ही होती है। दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन की शक्ति तो मिलती है, परन्तु उनसे वैमनस्य रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ पर भरोसा रखने वाला, बहादुर तथा हिम्मत वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: सप्तमभाव शनि

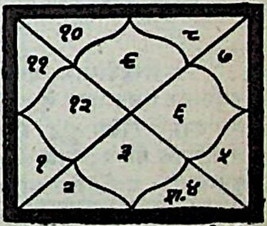


२०६७

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक व्यवसाय द्वारा खूब धन कमाता है तथा स्त्री-पक्ष से भी उसे शक्ति मिलती है, परन्तु स्त्री द्वारा सुख थोड़ा ही मिलता है। भाई-बहिनों से अच्छा सम्पर्क रहता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः भाग्योन्नति में रुकावटें पड़ती हैं तथा धर्म के मामले में भी विशेष रुचि नहीं रहती। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में कुछ कष्ट रहता है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता के सुख में कमी आती है और भूमि,मकान आदि का सुख भी अल्प-मात्रा में ही प्राप्त होता है। जातक को स्थान-परिवर्तन भी करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: अष्टमभाव: शनि

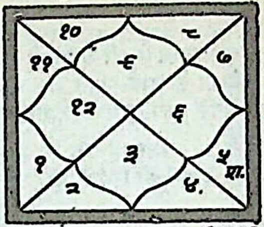


२०६८

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है। परन्तु दैनिक जीवन का सुख, धन के संचय तथा भाई-बहिन के सुख में कमी बनी रहती है और धन-प्राप्ति के लिये कठोर परिश्रम करना पड़ता है। यहाँ से शनि तीसरी मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता से सहयोग, राज्य से मान तथा व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीय भाव को देखने से धन- कुटुम्ब का सामान्य सुख मिलता है तथा दसवीं नीच-दृष्टि से पंचम-भाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में कुछ कमजोरी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: नवमभाव: शनि

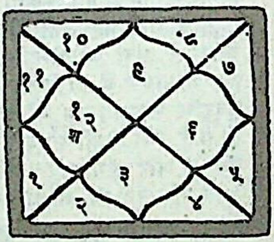


१०६९

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति एवं धर्म पालन में बाधाएं आती हैं एवं धन तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख प्राप्त है। यहां से शनि तीसरी उच्च-दृष्टि से मित्र की राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है तथा कभी-कभी आकस्मिक धन का लाभ भी हो जाता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन की शक्ति प्राप्त होती है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। दसवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक का शत्रु-पक्ष में अत्यधिक प्रभाव रहता है तथा झगड़े-झंझट के मार्गों से उसे लाभ प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे शनि का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: दशमभाव: शनि

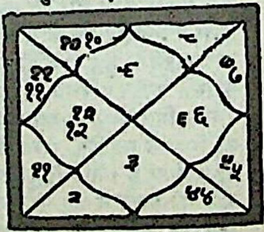


१०७०

दसवें केन्द्र, पिता एवं राज्य के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा सहयोग, राज्य द्वारा सम्मान तथा व्यवसाय द्वारा लाभ की प्राप्ति होती है। वह समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। उसे भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। यहां से शनि अपनी तीसरी शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है एवं बाहरी स्थानों के सम्बंध भी असंतोपजनक रहते हैं। सातवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ कमी रहती है तथा दसवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री-पक्ष से सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती रहती है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: एकादशभाव: शनि



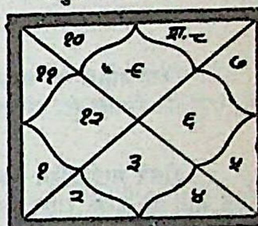
१०७१

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित उच्च के शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी में विशेष वृद्धि होती है और कभी-कभी उसे आकस्मिक धन का लाभ भी हो जाता है। ऐसे व्यक्ति को कुटुम्ब तथा भाई-बहिन का सुख भी मिलता है एवं पराक्रम में भी वृद्धि होती है। यहां से शनि तीसरी शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आ जाती है। सातवीं नीच-दृष्टि से शत्रु की राशि में पंचमभाव को देखने से सन्तान से कष्ट रहता

है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी प्राप्त होती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु दैनिक जीवन में परेशानियों का अनुभव होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: द्वादशभाव: शनि



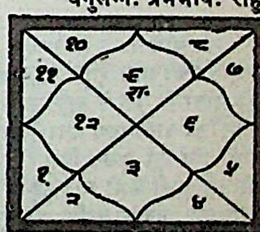
१०८२

बारहवें व्यय-भाव में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बंध से कुछ असन्तोषपूर्ण लाभ होता है। साथ ही धन, कुटुम्ब तथा भाई-बहिन के सुख में भी कमी रहती है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः धन तथा कुटुम्ब की सामान्य शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से जातक शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बनाये रखता है तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेकर लाभ उठाता है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्योन्नति कठिनाइयों के साथ होती है तथा धर्म का पालन भी कम हो पाता है।

'धनु' लग्न में 'राहु' का फल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हो हुआ और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: प्रथमभाव: राहु

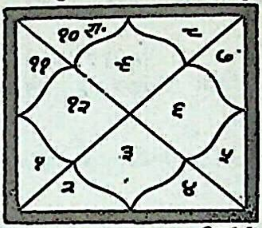


१०८३

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनुराशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौन्दर्य में कमी आती है तथा स्वास्थ्य पर भी कुछ प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त-युक्तियोंके बल पर उन्नति करता है। परन्तु उन्नति एवं प्रतिष्ठा के क्षेत्र में कमी बनी रहती है। कभी-कभी उसे कठिन शारीरिक-कष्ट भी उठाना पड़ता है। ऐसा जातक देखने में सज्जन लगता है, परन्तु भीतर से चालाक होता है। उसके मनमें चिन्ताओं का निवास भी बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: द्वितीयभाव: राहु

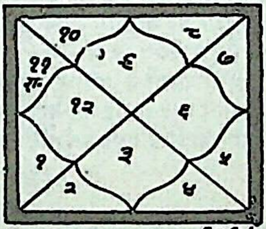


१०७४

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक धन का संचय नहीं कर पाता तथा उसके कौटुम्बिक सुख में भी कमी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपने कुटुम्ब अथवा धन के कारणों से कभी-कभी घोर संकटों का शिकार बन जाता है। वह अक्सर ऋण लेकर अपना काम चलाता है तथा गुप्त-युक्तियों, चातुर्य एवं परिश्रम के बल पर कठिनाइयों पर विजय पाने का प्रयत्न करता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: तृतीयभाव: राहु

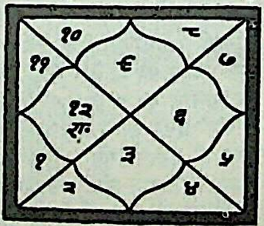


१०७५

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। वह बड़ा हिम्मती तथा बहादुर होता है। गुप्त-युक्तियों तथा चतुराई के बल पर जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए वह अत्यधिक परिश्रम भी करता है। परन्तु कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करता है। वह इतना धैर्यवान् होता है कि संकटों को चुपचाप पार कर लेता है और घबराता नहीं है। ऐसे व्यक्ति का भाई-बहिनों के साथ सुखपूर्ण सम्बन्ध नहीं रहता। उसके कारण उसे कष्ट भी उठाने पड़ते हैं।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: चतुर्थभाव: राहु

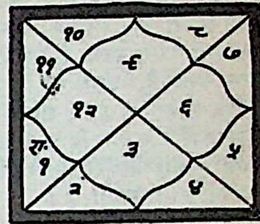


१०७६

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में बहुत कमी रहती है तथा घर में भी संकट का वातावरण बना रहता है, जिसे वह बड़ी चतुराई, धैर्य एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर निपटाता है, फिर भी उसे कभी-कभी घोर मुसीबतें उठानी पड़ती हैं। उसे भूमि एवं मकान आदि का सुख भी प्राप्त नहीं होता। अशान्ति उसके चारों ओर मंडराती रहती है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: पंचमभाव: राहु

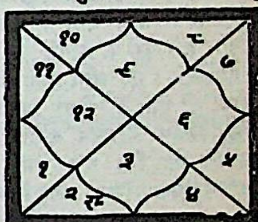


२०६६

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु मङ्गल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा चिन्ताएँ बनी रहती हैं। विद्या प्राप्त करने में भी उसे बड़ी कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं और बड़े परिश्रम, धैर्य तथा हिम्मत के साथ काम लेने पर वह थोड़ी-बहुत विद्या सीख पाता है उसकी बोली में रूखापन रहता है तथा गुप्त-युक्ति एवं चातुर्य के बल पर वह अपना काम चलाता है। उसके मस्तिष्क में अनेक प्रकार की चिन्ताएँ घर किए रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: षष्ठभाव: राहु

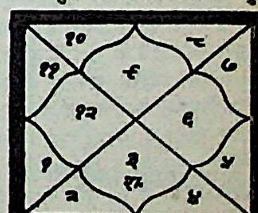


२०६८

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक अपने शत्रु-पक्ष पर बड़ा भारी प्रभाव रखता है। वह अपनी बुद्धि, चातुर्य एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर शत्रुओं को परास्त करता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, बहादुर तथा धैर्यवान् होता है। वह मामा के पक्ष को कुछ हानि पहुँचाता है, साथ ही मन-भीतर किसी-न-किसी प्रकार की परेशानी का अनुभव भी करता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: सप्तमभाव: राहु

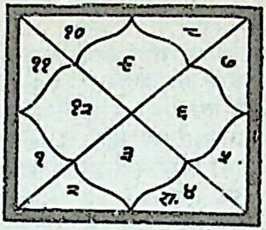


२०६९

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक स्त्री-पक्ष से विशेष शक्ति प्राप्त करता है। उसके एक से अधिक विवाह होने की संभावना रहती है। वह अपने व्यवसाय की वृद्धि के लिए अनेक प्रकार के उपाय, साधन एवं चतुराइयों का सहारा लेता है। कभी-कभी उसके गृहस्थी तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ भी आती हैं परन्तु उनसे वह बहुत जल्दी छुटकारा पा लेता है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: अष्टमभाव: राहु

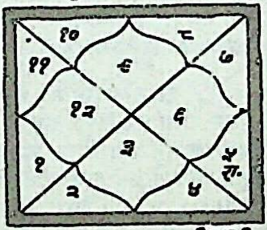


१०८०

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु (जीवन) के पक्ष में कई बार संकटों का सामना करना पड़ता है। कभी-कभी मृत्यु-तुल्य स्थिति भी बन जाती है। उसके पेट में विकार रहता है तथा पुरातत्त्व शक्ति की हानि भी होती है। ऐसा व्यक्ति गुप्त-युक्तियों के आश्रय से अपने जीवन को चलाता है। परन्तु उसे परेशानियाँ घेरे ही रहती हैं और उसे जीवन-भर संघर्ष करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: नवमभाव: राहु

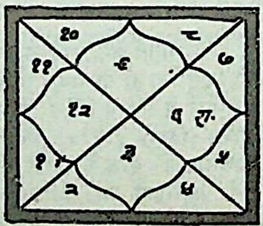


१०८१

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में प्रायः घोर संकट आते रहते हैं तथा कभी-कभी बड़ी हानियों का शिकार भी होना पड़ता है। धर्म के मामले में भी उसकी अधिक निष्ठा नहीं होती। ऐसे लोग प्रायः अधार्मिक अथवा अनीश्वरवादी भी होते हैं। ऐसा व्यक्ति अपनी भाग्योन्नति के लिए विशेष परिश्रम करता है तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेता है। वह कभी हिम्मत नहीं हारता और अधिकाधिक परिश्रम करने से भी नहीं घबराता।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: दशमभाव: राहु

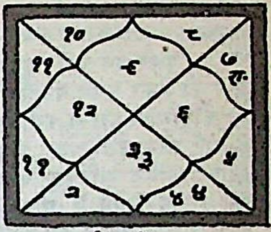


१०८२

दसवें केन्द्र, राज्य एवं पिता के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने पिता द्वारा परेशानी, राज्य द्वारा संकट तथा व्यवसाय के क्षेत्र में हानि का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त-युक्तियों, बुद्धिबल, चातुर्य एवं हिम्मत के बल पर उन्नति करने के लिये प्रयत्नशील बना रहता है, परन्तु उसे अधिक सफलता नहीं मिल पाती। वह सदैव चिन्तित भी रहता है और कभी-कभी घोर संकटों में भी फँस जाता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: एकादशभाव: राहु

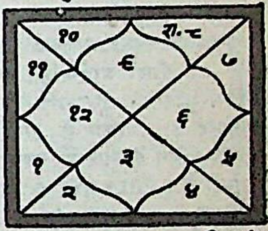


१०८४

ग्यारहवें लाभ-भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आमदनी में विशेष वृद्धि होती है। वह अपनी चतुराई एवं बुद्धि-बल से अधिक लाभ प्राप्त करता है। कभी-कभी उसकी आमदनी के क्षेत्र में बड़ी कठिनाइयाँ आ जाती हैं, परन्तु उस समय भी वह अपना धैर्य नहीं छोड़ता और हिम्मत से काम लेकर उन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता है। संक्षेप में ऐसा व्यक्ति धनोपार्जन खूब करता है और समाज में धनी समझा जाता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: द्वादशभाव: राहु



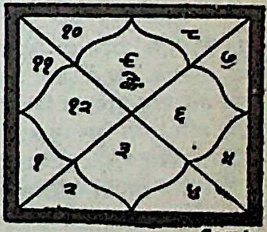
१०८५

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के खर्च के कारण चिन्ता, परेशानी एवं झंझटों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी कष्ट का अनुभव होता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति हिम्मत, धैर्य, परिश्रम तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर उन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करता रहता है और संकट के समय में भी घबराता नहीं है।

'मिथुन' लग्न में 'केतु' का फल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

धनुलग्न: प्रथमभाव: केतु

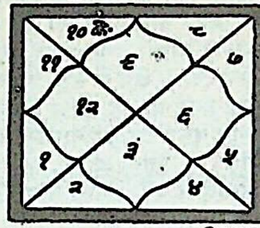


१०८६

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक की शारीरिक-शक्ति एवं आकार में वृद्धि होती है। वह बड़ा बहादुर, हिम्मत वाला, जिद्दी तथा हठी स्वभाव का होता है, परन्तु उसके शारीरिक-सौन्दर्य में कमी अवश्य आ जाती है। वह अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिये कठिन परिश्रम करता है तथा मन के भीतर चिन्तित बने रहने पर भी वह किसी के सामने अपनी चिन्ताओं को प्रकट नहीं करता।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

धनुलग्न: द्वितीयभाव: केतु

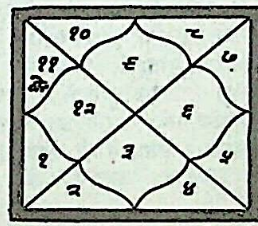


१०८६.

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को कौटुम्बिक सुख में कमी बनी रहती है और कोई न कोई क्लेश उठ खड़ा होता है। वह धन-प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करता है, परन्तु कमी-कमी उसे धन के विषय में घोर संकटों का सामना करना होता है और ऋण लेकर भी अपना काम चलाना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी, धैर्यवान् तथा हिम्मती होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: तृतीयभाव: केतु

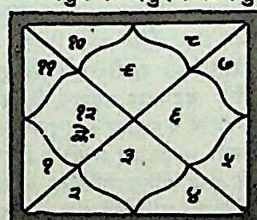


१०८७

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शनि की तुलाराशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी एवं कष्ट का अनुभव होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का धैर्य एवं साहस के साथ मुकाबला करता है। वह गुप्त-युक्तियों से काम लेने वाला तथा कठिन परिश्रम द्वारा अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: चतुर्थभाव: केतु

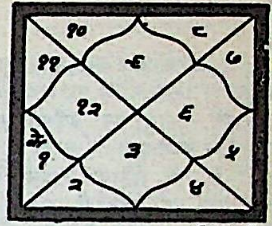


१०८८

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में बड़ी हानि उठानी पड़ती है। साथ ही उसे मातृ-भूमि का वियोग भी सहन करना पड़ता है। उसे भूमि तथा मकान आदि का सुख भी प्राप्त नहीं होता। घरेलू संकट भी उसको घेरे रहते हैं। परन्तु ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, गुप्त धैर्यवान्, सन्तोषी तथा परिश्रमी होता है, अत: वह सुख-प्राप्ति के लिये निरंतर प्रयत्नशील बना रहता है और अन्त में थोड़ी-बहुत सफलता भी पा लेता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः पंचमभावः केतु

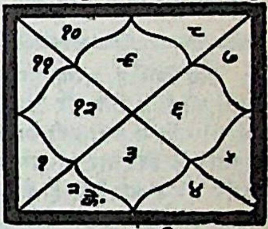


१०८९

पांचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को संतान-पक्ष से बड़ी हानि उठानी पड़ती है तथा विद्याध्ययन के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइयों के बाद बहुत थोड़ी सफलता मिल पाती है। ऐसा व्यक्ति कठिन परिश्रम करने वाला, जिद्दी तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेने वाला होता है। उसके मस्तिष्क में हर समय चिन्ताओं का निवास रहता है, परन्तु वह अपनी परेशानियों को किसी के सामने प्रकट नहीं करता।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः षष्ठभावः केतु

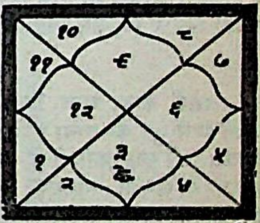


१०९०

छठे रोग तथा शत्रु भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक अपने शत्रु पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट, मुकद्दमे आदि में-विजय, सफलता एवं लाभ प्राप्त करता है। वह गुप्त-युक्तियों, धैर्य एवं चतुराई के बल पर अपनी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता है। शत्रु-पक्ष द्वारा महान संकटों में डाल दिये जाने पर भी वह अपनी-हिम्मत और बहादुरी को नहीं छोड़ता।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः सप्तमभावः केतु

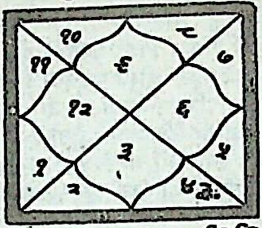


१०९१

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष में विशेष हानि अथवा कठिनाई का सामना करना पड़ता है। साथ ही उसे व्यावसायिक क्षेत्र में भी बड़ी परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं। कभी-कभी घर तथा व्यवसाय के क्षेत्र में घोर संकट उठ खड़े होते हैं, परन्तु वह हर बार धैर्य एवं साहस के साथ उनका मुकाबला करता है। वह परिश्रम तथा युक्ति-बल से अपने गार्हस्थ्य-जीवन को सुखी बनाने का प्रयत्न करता रहता है, परन्तु उसकी इच्छा पूर्ण नहीं हो पाती।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः अष्टमभावः केतु

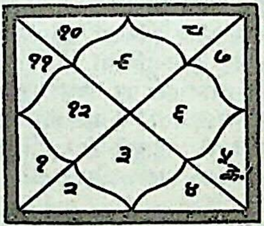


१०६२

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के जीवन (आयु) पर बड़े-बड़े संकट आते हैं और उसे मृत्यु-तुल्य कष्ट उठाना पड़ता है। उसके पेट में विकार रहता है तथा दैनिक जीवन में भी अनेक प्रकार की परेशानियाँ बनी रहती हैं। उसकी पुरातत्त्व शक्ति को हानि पहुँचती है तथा और भी अनेक प्रकार के संकट उपस्थित होते रहते हैं। वह अपने जीवन को चलाने के लिए गुप्त-युक्तियों, धैर्य, साहस तथा परिश्रम का सहारा लेता है, परन्तु उसे सुख नहीं मिल पाता।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः नवमभावः केतु

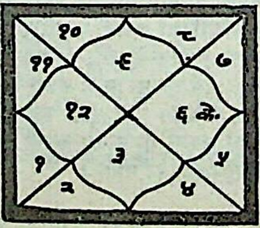


१०६३

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में बड़ी-बड़ी बाधाएँ आती रहती हैं। वह उन्हें हटाने के लिए घोर परिश्रम, गुप्त युक्ति-बल, साहस तथा धैर्य का आश्रय लेता है, फिर भी उसका भाग्य दुर्बल ही बना रहता है। ऐसा व्यक्ति ईश्वर पर भी कम ही विश्वास करता है। वह सदैव असफलताओं से जूझता है तथा गुप्त-चिन्ताओं से ग्रस्त बना रहता है। उसके यश में भी कमी आ जाती है। उसका सम्पूर्ण जीवन संघर्ष करते हुए बीतता है।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्नः दशमभावः केतु

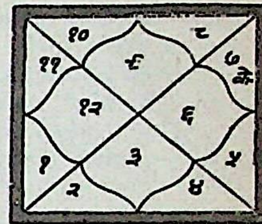


१०६४

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को कुछ कमियों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलती है तथा अत्यधिक परिश्रम करने एवं युक्ति-बल का आश्रय लेने पर भी विशेष उन्नति नहीं हो पाती। ऐसा व्यक्ति अपने धैर्य, हिम्मत एवं परिश्रम के योग से कुछ समय बाद सामान्य सफलता प्राप्त कर लेता है, परन्तु वह अधिक धनी, सुखी अथवा यशस्वी नहीं बन पाता।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

धनुलग्न: एकादशभाव: केतु

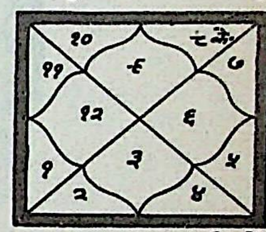


१०६५

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। वह कठोर परिश्रम द्वारा विशेष लाभ प्राप्त करता है। कभी-कभी उसके सामने कठिनाइयाँ एवं संकट भी उपस्थित हो जाते हैं, परन्तु अपनी गुप्त-युक्तियों, बुद्धि तथा परिश्रम के बल पर उन मुसीबतों पर विजय प्राप्त कर लेता है। इतना सब होने पर भी उसे पूर्ण संतोषजनक लाभ नहीं मिल पाता।

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

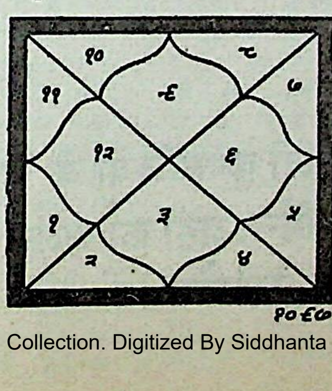
धनुलग्न: द्वादश भाव: केतु



१०६६

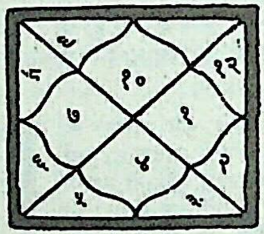
बारहवें व्यय-भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण उसे बहुत परेशानी उठानी पड़ती है तथा कभी-कभी बड़े संकटों का सामना भी करना पड़ता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी परेशानियाँ प्राप्त होती हैं। ऐसा व्यक्ति गुप्त-युक्तियों, हिम्मत, बुद्धि-बल एवं परिश्रम का आश्रय लेकर कठिनाइयों पर विजय पाने का प्रयत्न करता है, परन्तु उसे अधिक सफलता नहीं मिल पाती।

'धनु' लग्न का फलादेश समाप्त



१०६७

मकर–लग्न



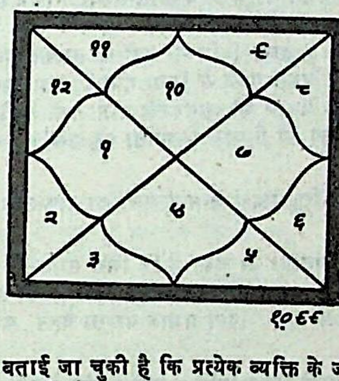
१०६८

[मकर-लग्न वाली कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग फलादेश]

'मकर' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'मकर' लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति सन्तोषी, भीरु, उग्र स्वभाव का, निरन्तर पुरुषार्थ करने वाला, वंचक, बड़े नेत्रों वाला, शठ, मनमौजी, अधिक सन्ततिवान्, चतुर, लोभी, कफ तथा वायु से पीड़ित रहने वाला, लम्बे शरीर वाला, ठग, तमोगुणी, पाखण्डी, आलसी, खर्चीला, धर्म के विमुख आचरण करने वाला, स्त्रियों में आसक्त, कवि तथा लज्जा-रहित होता है। वह अपनी प्रारम्भिक अवस्था में सुख भोगता है, मध्यमावस्था में दुःखी रहता है तथा ३२ वर्ष की आयु के बाद अन्त तक सुखी रहता है। मकर लग्न वाला व्यक्ति पूर्णायु प्राप्त करता है।

'मकर' लग्न



१०६६

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव मुख्यतः दो प्रकार से पड़ता है—

(१) ग्रहों की जन्मकालीन स्थिति के अनुसार।

(२) ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के अनुसार।

जातक की जन्मकालीन ग्रह-स्थिति जन्म-कुण्डली में दी गई होती है, उसमें जो ग्रह जिस भाव में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित प्रभाव निरन्तर स्थायी रूप से डालता रहता है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसकी जानकारी पंचांग द्वारा की जा सकती है। ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के सम्बन्ध में या तो किसी ज्योतिषी से पूछ लेना चाहिए अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिए। इस सम्बन्ध में पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर अस्थायी रूप से अपना प्रभाव डालते हैं।

उदाहरण के लिए यदि किसी जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य 'मकर' राशि पर 'प्रथमभाव' में बैठा है, तो उसका स्थायी प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०० के अनुसार पड़ता रहेगा; परन्तु यदि दैनिक ग्रह-गोचर में कुण्डली देखते समय सूर्य 'कुम्भ' राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा होगा तो उस स्थिति में वह उदाहरण-

कुण्डली संख्या १२१२ के अनुसार उतनी अवधि तक जातक के जीवन पर अपना अस्थायी प्रभाव अवश्य डालेगा, जब तक कि वह 'कुम्भ' राशि से हटकर 'मीन' राशि में नहीं चला जाता। 'मीन' राशि में पहुँचकर वह 'मीन' राशि के अनुरूप अपना प्रभाव डालना आरम्भ कर देगा। अतः जिस जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य 'मकर' राशि के 'प्रथमभाव' में बैठा हो, उसे उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०० में वर्णित फलादेश देखने के पश्चात्, यदि उन दिनों ग्रह-गोचर में सूर्य 'कुम्भ' राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा हो तो उदाहरण-कुण्डली संख्या १२१२ का फलादेश भी देखना चाहिए तथा इन दोनों फलादेशों के समन्वय-स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को अपने वर्तमान समय पर प्रभावकारी समझना चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विषय में जान लेना चाहिए।

'मकर' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदाहरण कुण्डली-संख्या ११०० से १२०७ तक में किया गया है। पंचाँग की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार 'मकर' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों को किन-किन उदाहरण-कुण्डलियों के द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना चाहिए – इसका विस्तृत वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है, अतः उनके अनुसार ग्रहों की तात्कालिक स्थिति के सामयिक प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। तदुपरान्त दोनों फलादेशों के समन्वय-स्वरुप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिए।

इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक जन्म-कुण्डली का ठीक-ठीक फलादेश सहज में ही ज्ञात कर सकता है।

टिप्पणी (१)—पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश से ऊपर अथवा ३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह सूर्य से अस्त होता है, वह भी जातक के ऊपर अपना प्रभाव या तो बहुत कम डालता है या फिर पूर्णतः प्रभावहीन रहता है।

(२) स्थायी जन्म-कुण्डली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा अपनी जन्म-कुण्डली में लिखवा लेने चाहिए, ताकि उनके अंशों के बारे में बार-बार जानकारी प्राप्त करने के झंझट से बचा जा सके। तात्कालिक ग्रह-गोचर के ग्रहों के अंशों की जानकारी पंचांग द्वारा अथवा किसी ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(३) स्थायी जन्म-कुण्डली अथवा तात्कालिक ग्रह-गति-कुण्डली के किसी भाव में यदि एक से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन स्थानों पर उनकी दृष्टियाँ पड़ती हैं, जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता रहता है। इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में 'ग्रहों की युति का प्रभाव' शीर्षक अध्याय के अन्तर्गत विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन किया गया है, अतः इस विषय की जानकारी वहाँ से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(४) 'विंशोत्तरी दशा' के सिद्धान्तानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० वर्ष की मानी जाती है। इस आयु-अवधि में जातक नवग्रहों की सभी दशाओं का भोग पूरा कर लेता है। विभिन्न ग्रहों का दशा-काल भिन्न-भिन्न होता है। परन्तु अधिकांश व्यक्ति इतनी लम्बी आयु तक जीवित नहीं रह पाते, अतः वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं का भोग कर पाते हैं। जातक के जीवन के जिस काल में जिस ग्रह की दशा— जिसे 'महादशा' भी कहा जाता है—चल रही होती है, जन्मकालीन ग्रह-स्थिति के अनुसार उसके जीवन-काल की उतनी अवधि उस ग्रह-विशेष के प्रभाव से विशेष रूप से प्रभावित रहती है। [illegible] में हुआ है और उसके जीवन में किस अवधि से किस अवधि तक किस ग्रह की

महादशा चलेगी और वह महादशा जातक के ऊपर अपना क्या विशेष प्रभाव डालेगी—इन सब बातों का उल्लेख भी तीसरे प्रकरण में किया गया है ।

इस प्रकार (१) जन्म-कुण्डली, (२) तात्कालिक ग्रह-गोचर एवं (३) ग्रहों की महादशा—इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है, अतः इन तीनों के समन्वयस्वरूप फलादेश का ठीक-ठीक निर्णय करके अपने भूत, वर्तमान तथा भविष्यत्कालीन जीवन के विषय में सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिये ।

मकर (१०) लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'सूर्य' का फलादेश

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०० से ११११ तक में देखना चाहिये ।

मकर (१०) जन्म लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०० के अनुसार समझना चाहिए ।

(२) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०१ के अनुसार समझना चाहिए ।

(३) जिस महीने में 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०२ के अनुसार समझना चाहिए ।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०३ के अनुसार समझना चाहिए ।

(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०४ के अनुसार समझना चाहिए ।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०५ के अनुसार समझना चाहिए ।

(७) जिस महीने में 'सूर्य' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०६ के अनुसार समझना चाहिए ।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०७ के अनुसार समझना चाहिए ।

(९) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०८ के अनुसार समझना चाहिए ।

(१०) जिस महीने के 'सूर्य' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०९ के अनुसार समझना चाहिए ।

(११) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १११० के अनुसार समझना चाहिए ।

(१२) जिस महीने में 'सूर्य' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११११ के अनुसार समझना चाहिए ।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १११२ से ११२३ तक में देखना चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए।

(१) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मकर' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १११२ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १११३ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मीन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १११४ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मेष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १११५ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'वृष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १११६ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मिथुन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १११७ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १११८ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'सिंह' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १११९ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कन्या' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११२० के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'तुला' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११२१ के अनुसार समझना चाहिये।

(११) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११२२ के अनुसार समझना चाहिये।

(१२) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'धनु' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११२३ के अनुसार समझना चाहिये।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'मंगल' का फलादेश

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११२४ से ११३५ तक में देखना चाहिये।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में आगे लिखे अनुसार देखना चाहिये—

(१) जिस महीने में 'मंगल' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११२४ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'मंगल' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११२५ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'मंगल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११२६ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'मंगल' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११२७ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'मंगल' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११२८ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'मंगल' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११२९ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११३० के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'मंगल' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११३१ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'मंगल' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११३२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११३३ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'मंगल' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११३४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'मंगल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११३५ के अनुसार समझना चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुडण्ली के विभिन्न भावों में स्थित

'बुध' का फलादेश

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११३६ से ११४७ तक में देखना चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए —

(१) जिस महीने में 'बुध' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११३६ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'बुध' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११३७ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'बुध' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११३८ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'बुध' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११३९ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११४० के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११४१ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११४२ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११४३ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११४४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'बुध' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११४५ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'बुध' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११४६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'बुध' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११४७ के अनुसार समझना चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'गुरु' का फलादेश

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११४८ से ११५९ तक में देखना चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११४८ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११४९ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११५० के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११५१ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११५२ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११५३ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११५४ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'गुरु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११५५ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११५६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'गुरु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११५७ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११५८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११५९ के अनुसार समझना चाहिए।

मकर (१०) लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'शुक्र' का फलादेश

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६० से ११७१ तक में देखना चाहिए—

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'शुक्र' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६० के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस महीने में 'शुक्र' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६१ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'शुक्र' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६२ के अनुसार समझना चाहिये।

(४) जिस महीने में 'शुक्र' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६३ के अनुसार समझना चाहिये।

(५) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६४ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६५ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६६ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस महीने में 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६७ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'शुक्र' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६८ के अनुसार समझना चाहिये।

(१०) जिस महीने में 'शुक्र' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६६ के अनुसार समझना चाहिये ।

(११) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११७० के अनुसार समझना चाहिये ।

(१२) जिस महीने में 'शुक्र' 'धनु' राशि हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११७१ के अनुसार समझना चाहिये ।

मकर (१०) लग्न वालों के लिये

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'शनि' का फलादेश

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११७२ से ११८३ तक में देखना चाहिए ।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'शनि' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११७२ के अनुसार समझना चाहिए ।

(२) जिस वर्ष में 'शनि' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११७३ के अनुसार समझना चाहिए ।

(३) जिस वर्ष में 'शनि' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११७४ के अनुसार समझना चाहिए ।

(४) जिस वर्ष में 'शनि' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११७५ के अनुसार समझना चाहिए ।

(५) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११७६ के अनुसार समझना चाहिए ।

(६) जिस वर्ष में 'शनि' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११७७ के अनुसार समझना चाहिए ।

(७) जिस वर्ष में 'शनि' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११७८ के अनुसार समझना चाहिए ।

(८) जिस वर्ष में 'शनि' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११७९ के अनुसार समझना चाहिए ।

(९) जिस वर्ष में 'शनि' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११८० के अनुसार समझना चाहिए ।

(१०) जिस वर्ष में 'शनि' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११८१ के अनुसार समझना चाहिए ।

(११) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११८२ के अनुसार समझना चाहिए ।

(१२) जिस वर्ष में 'शनि' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११८३ के अनुसार समझना चाहिए ।

मकर (१०) लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'राहु' का फलादेश

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११८४ से ११९५ तक में देखना चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'राहु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११८४ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'राहु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११८५ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११८६ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'राहु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११८७ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११८८ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष मे 'राहु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११८९ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'राहु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११९० के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११९१ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११९२ के अनुसार समझना चाहिये।

(१०) जिस वर्ष में 'राहु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११९३ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११९४ के अनुसार समझना चाहिये।

(१२) जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११९५ के अनुसार समझना चाहिये।

मकर (१०) लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'केतु' का फलादेश

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११९६ से १२०७ तक में देखना चाहिए।

मकर (१०) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'केतु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११९६ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'केतु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११९७ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'केतु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११९८ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'केतु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११९९ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२०० के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'केतु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२०१ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'केतु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२०२ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'केतु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२०३ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'केतु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२०४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'केतु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२०५ के अनुसार समझना चाहिए।

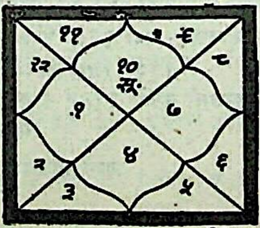
(११) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२०६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'केतु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२०७ के अनुसार समझना चाहिए।

'मकर' लग्न में 'सूर्य' का फल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः प्रथमभावः सूर्यः

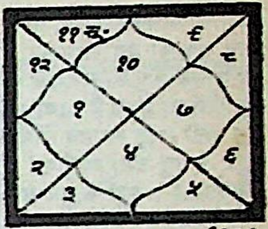


११००·

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आ जाती है तथा कभी-कभी विशेष शारीरिक कष्ट का सामना भी करना पड़ता है। परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि बनी रहती है। साथ ही शारीरिक प्रभाव एवं तेज की भी उन्नति होती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री-पक्ष से सामान्य कठिनाई बनी रहती है। इसी प्रकार व्यावसायिक क्षेत्र में भी कुछ परेशानियाँ उपस्थित होती रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: द्वितीयभाव: सूर्य

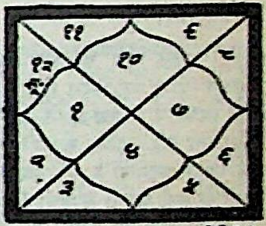


११०१

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक धन का संचय नहीं कर पाता। साथ ही कौटुम्बिक सुख में भी कभी-कभी संकट एवं संघर्ष के योग बनते रहते हैं। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपनी सिंह राशि में अष्टमभाव को देखता है, अत: जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा उसे पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। ऐसा व्यक्ति अमीरी ढंग का जीवन बिताता है तथा शान-शौकत के लिए धन की चिन्ता नहीं करता।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: तृतीयभाव: सूर्य

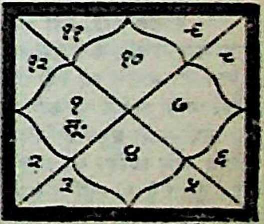


११०२

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ में अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी तथा परेशानी बनी रहती है। ऐसे व्यक्ति को आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में नवमभाव को देखता है, अत: जातक की भाग्योन्नति में कुछ रुकावटें पड़ती हैं तथा धर्म के पक्ष में भी कुछ त्रुटि बनी रहती है। सूर्य के अष्टमेश होने के कारण पूर्ण भाग्योन्नति नहीं हो पाती।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: चतुर्थभाव: सूर्य

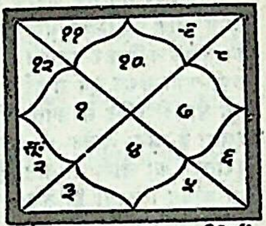


११०३

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन के अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को माता का सुख अच्छा मिलता है तथा भूमि एवं मकान आदि का भी लाभ होता है। उसका घरेलू वातावरण भी सुखपूर्ण रहता है। आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है तथा दैनिक जीवन-चर्या बड़े रईसी ढंग की तथा आनन्दमय रहती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु शुक्र की तुला राशि में दशमभाव को देखता है। अत: जातक को पिता के सुख में भी रुकावटें आती रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पचंम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: पंचमभाव; सूर्य

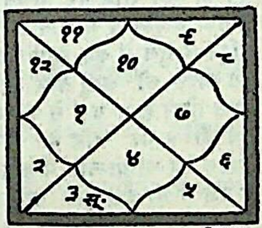


११०४

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है, विद्याध्ययन में परेशानी होती है तथा बुद्धि की भी विशेष उन्नति नहीं हो पाती। वह स्वभाव से क्रोधी तथा चिन्तातुर बना रहता है। परन्तु उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ मिलता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को लाभ-प्राप्ति के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है, तभी उसे सफलता प्राप्त हो पाती है। सूर्य के अष्टमेश होने के कारण उसे कठिनाईयों का सामना हर क्षेत्र में अवश्य करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: षष्ठभाव: सूर्य

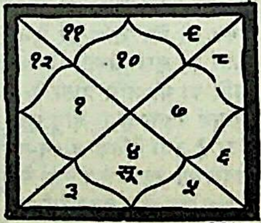


११०५

छठे रोग एवं शत्रु-भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक अपने शत्रु पक्ष पर निरन्तर विजय प्राप्त करता रहता है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का भी लाभ मिलता है एवं झगड़े-झंझट के मामलों में परिश्रम के साथ सफलता मिलती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से असन्तोष प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: सप्तमभाव: सूर्य

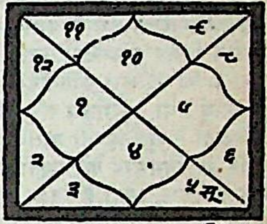


११०६

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से परेशानी रहती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। कभी-कभी बहुत हानि भी उठानी पड़ती है। ऐसी सूर्य स्थिति वाले व्यक्ति को आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक-सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है। उसे परिश्रम भी अधिक करना पड़ता है तथा कभी-कभी रोग का शिकार भी बनना होता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: अष्टमभाव: सूर्य

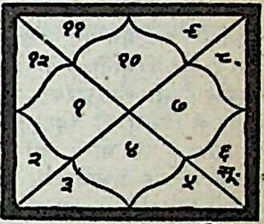


११०७

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व केवन में अपनी ही सिंह राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की विशेष शक्ति प्राप्त होती है। वह स्वभाव से बड़ा निर्भय, बहादुर, स्वाभिमानी तथा तेजस्वी होता है। उसका दैनिक जीवन भी बड़ा प्रभावशाली रहता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक को धन-संचय में परेशानी उठानी पड़ती है तथा कौटुम्बिक सुख में भी व्यवधान उपस्थित होते रहते हैं।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: नवमभाव: सूर्य

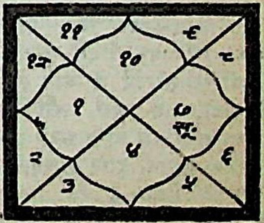


११०८

नवें त्रिकोण, भाग्य एव धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक के भाग्य की उन्नति कुछ रुकावटों के साथ होती है। धर्म-पालन में त्रुटि बनी रहती है तथा यश भी कम ही मिल पाता है। परन्तु आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है, जिसके कारण जातक भाग्यवानों जैसा व्यतीत करता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन के सुख में कुछ परेशानी बनी रहती है तथा पराक्रम की भी समुचित वृद्धि नहीं हो पाती।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: दशमभाव: सूर्य

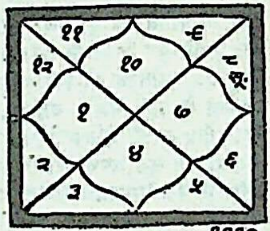


११०९

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित अष्टमेश तथा नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता के सम्बन्ध में घोर कष्ट उठाना पड़ता है। राज्य के क्षेत्र में प्रतिष्ठा में कमी आती है तथा व्यवसाय की उन्नति में भी बाधाएँ उपस्थित होती रहती हैं। इसके साथ ही जातक की आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का भी कुछ ह्रास होता है। यहाँ से जातक अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से मित्र मंगल की मेष राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता एवं भूमि, मकान आदि का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: एकादशभाव: सूर्य

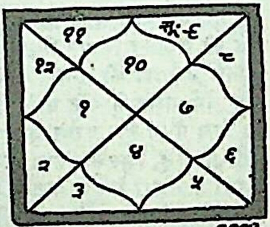


१११०

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है, परन्तु सूर्य के अष्टमेश होने के कारण कुछ कठिनाईयाँ भी आती रहती हैं। साथ ही आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का विशेष लाभ होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट रहता है तथा विद्याध्ययन के क्षेत्र में भी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति के दिमाग में कुछ तेजी रहती है। अतः उसका स्वभाव उग्र रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: द्वादशभाव: सूर्य



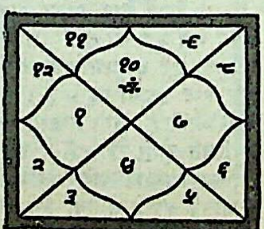
११११

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक को खर्च के कारण कुछ परेशानी बनी रहेगी तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी कठिनाइयाँ उपस्थित होंगी। ऐसे व्यक्ति के पेट में विकार भी रहता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में भी थोड़ी हानि उठानी पड़ेगी तथा दैनिक जीवन भी कम प्रभावशाली रहेगा। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में षष्ठ भाव को देखता है, अतः जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ शत्रु-पक्ष पर सफलता मिलती रहेगी तथा उनके झगड़े-झंझट अपने-आप दूर होते रहेंगे।

'मकर' लग्न में चन्द्रमा का फल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

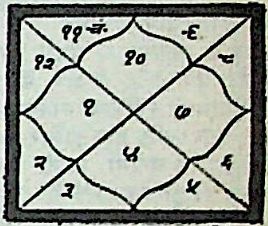
मकरलग्न: प्रथमभाव: चन्द्र



पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौन्दर्य में वृद्धि होती है। वह कोमल, मानी, विनोदी, कार्य-कुशल, लौकिक उन्नति का ध्यान रखने वाला तथा यश प्राप्त करने वाला भी होता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से अपनी ही कर्क राशि में सप्तम-भाव को देखता है' अतः जातक को सुन्दर, सुयोग्य तथा स्वाभिमानी स्त्री मिलती है, साथ ही उसे व्यावसायिक क्षेत्र में भी अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। ऐसे व्यक्ति का जीवन सुखी एवं आनन्दपूर्ण रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: द्वितीयभाव: चन्द्र

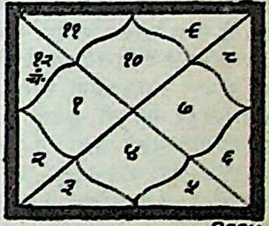


२२२३

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है, परन्तु स्त्री के कारण जातक को कुछ परेशानी का अनुभव होता है। ऐसा व्यक्ति अपने मानसिक बल की सहायता से धन की वृद्धि करता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है तथा उसका रहन-सहन अमीरी ढंग का रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मकरलग्न: तृतीयभाव: चन्द्र

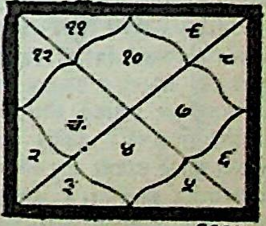


२२२४

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का अच्छा सुख-सहयोग प्राप्त होता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। उसे कुटुम्ब तथा स्त्री का भी श्रेष्ठ सुख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है। उसके घर में प्रसन्नता का वातावरण बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से बुध की कन्या राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की वृद्धि होती है तथा धार्मिक पक्ष भी प्रबल बना रहता है। ऐसा जातक धनी तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: चतुर्थभाव: चन्द्र

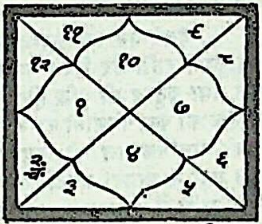


२२२५

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, मकान आदि का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है उसका घरेलू वातावरण उल्लासपूर्ण रहता है। व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है तथा स्त्री के पक्ष में भी सुख एवं सौन्दर्य की प्राप्ति होती है। यहां से चन्द्रमा अपनी सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता से सहयोग, राज्य से प्रतिष्ठा [illegible] की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा प्रतिष्ठित होता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः पंचमभावः चन्द्र

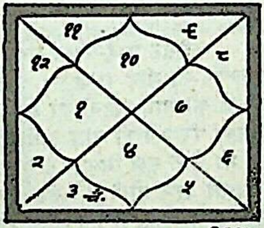


१११६

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। साथ ही स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से भी सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हाजिर-जवाब तथा हंसमुख होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं नीच-दृष्टि से मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में एकादशभाव को देखता है। अतः जातक की आमदनी के मार्ग में रुकावटें आयेंगी, जिसके कारण उसे परेशानी का अनुभव होता रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मकरलग्नः षष्ठभावः चन्द्र

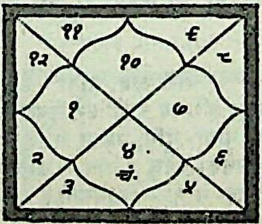


१११७

छठे रोग एवं शत्रु-भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में नरम बनकर अपना काम निकालेगा। साथ ही उसे स्त्री-पक्ष में विरोध एवं व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, जिसके कारण उसकी मानसिक अशान्ति दूर नहीं हो सकेगी। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से गुरु की धनु राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहेगा, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे लाभ भी प्राप्त होता रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः सप्तमभावः चन्द्र

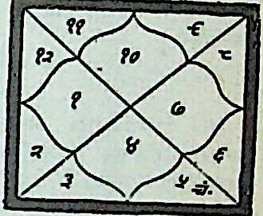


१११८

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी ही कर्क राशि पर स्थित स्वक्षेत्री चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलेगी और उसके द्वारा पर्याप्त सुख भी प्राप्त होता रहेगा। व्यावसायिक क्षेत्र में भी उसे अत्यधिक सफलता मिलेगी, जिसके कारण उसका जीवन सुखी तथा आनन्द व उल्लास से पूर्ण बना रहेगा। ऐसा व्यक्ति शृंगार, सौन्दर्य, भोग तथा अन्य प्रकार के सुखों का उपयोग करने में विशेष अनुरक्त रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रु दृष्टि से शनि की मकर राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक प्रभाव में असंतोष जनक वृद्धि होगी। इसी प्रकार व्यवसाय [illegible] पक्ष से [illegible] की सफलता [illegible] जातक कुछ असंतुष्ट बना रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः अष्टमभावः चन्द्र

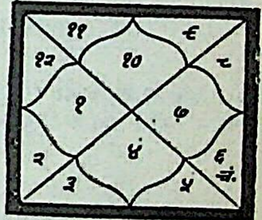


१११९

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व के यथेष्ट सुख की प्राप्ति होगी, परन्तु स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। गृहस्थी के सुख में कमी होने के कारण मन में भी अशांति बनी रहेगी। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख कुछ कठिनाइयों के साथ प्राप्त होगा। ऐसे व्यक्ति का दैनिक जीवन ठाट-बाट का बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः नवमभावः चन्द्र

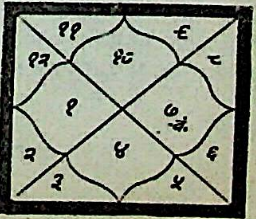


११२०

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है, साथ ही धर्म में भी उसको बहुत रुचि बनी रहती है। ऐसा जातक धनी धार्मिक, यशस्वी तथा न्यायप्रिय होता है। उसकी स्त्री भी सुन्दर तथा भाग्यवान् होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी उसे खूब सफलता मिलती है। यहाँ से चन्दमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से गुरु की मीन राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक का भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा उसके मनोबल एवं पराक्रम में भी वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे के अनुसार समझना चाहिये—

मकरलग्नः दशमभावः चन्द्र



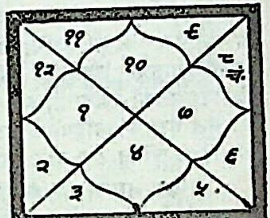
११२१

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा सहयोग, राज्य द्वारा प्रतिष्ठा तथा व्यवसाय द्वारा धन एवं सफलता की प्राप्ति होती है। उसका मनोबल बहुत उन्नत रहता है। उसकी स्त्री सुन्दर तथा स्वाभिमानी होती है। उसके घरेलू वातावरण में भी आमोद-प्रमोद बिखरा रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता

भूमि एवं मकान आदि का सुख भी यथेष्ट मिलता है। कुल मिलाकर ऐसा जातक भाग्य-वान्, धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मकरलग्न: एकादशभाव: चन्द्र

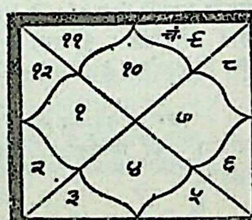


११२२

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में कुछ कमी बनी रहती है। इसी प्रकार स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी अल्प सुख प्राप्त होता है। गृहस्थी के कारण उसे मानसिक चिन्ताओं का शिकार भी बनना पड़ता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान का सुख यथेष्ट मात्रा में प्राप्त होता है। उसका जीवन उल्लासपूर्ण रहता है। संक्षेप में, ऐसा जातक सामान्य सुखी जीवन व्यतीत करने वाला, गुणवान् एवं विद्वान् होता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मकरलग्न: द्वादशभाव: चन्द्र



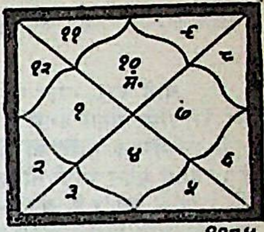
११२३

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे सफलता, शक्ति एवं लाभ की प्राप्ति होती है। स्त्री-पक्ष से सुख में कमी रहती है तथा स्थानीय व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। इन सबके कारण जातक का हृदय चिन्तित एवं अशान्त बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में षष्ठभाव को देखता है, अत: जातक शत्रु-पक्ष एवं झगड़े-झंझट के मामले में विनम्रता से काम निकालता है तथा अपने मनोबल से उन पर अपना प्रभाव भी स्थापित करता है।

'मकर' लग्न में 'मंगल' का फल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मकरलग्न: प्रथमभाव: मंगल

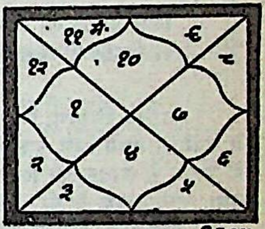


११२४

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं शक्ति में वृद्धि होती है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। उसका रहन-सहन शान-शौकत भरा होता है। सातवीं नीचदृष्टि से मित्र की राशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है तथा व्यवसाय के पक्ष में भी कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति अपना स्वार्थ सिद्ध करने में चतुर, सुखी तथा धनी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: द्वितीयभाव: मंगल

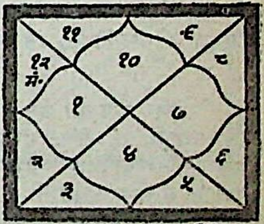


११२५.

दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को कुछ असन्तोष के साथ कुटुम्ब एवं धन का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है, परन्तु माता के सुख में कमी रहती है तथा भूमि, मकान आदि की शक्ति का लाभ होता है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में उन्नति प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक के भाग्य की वृद्धि होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। ऐसा व्यक्ति अपने आर्थिक लाभ का ध्यान अधिक रखता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मकरलग्न: तृतीयभाव: मंगल

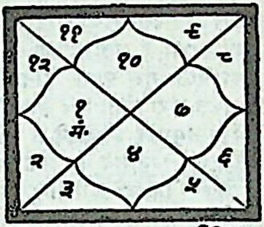


११२६

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों की शक्ति प्राप्त होती है। वह अपने पुरुषार्थ द्वारा आमदनी को बढ़ाता है तथा माता, भूमि, मकान आदि का सुख भी प्राप्त करता है, यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है। अतः जातक का शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है, साथ ही वह हिम्मती और बहादुर होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य की उन्नति तथा धर्म का पालन होता है, जिसके कारण जा[illegible] भी प्राप्त होता है। आठवीं सामान्य शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से कुछ त्रुटि [illegible] पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मकरलग्नः चतुर्थभावः मंगल

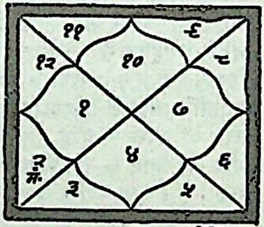


११२७

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपनी ही मेष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का विशेष सुख एवं लाभ मिलता है। यहाँ से मंगल चौथी नीचदृष्टि से सप्तमभाव को मित्र की राशि में देखता है, अतः स्त्री के सुख में कमी रहती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की राशि में दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सफलता, सम्मान एवं सहयोग की प्राप्ति होती है तथा आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है तथा बड़ी सरलता से लाभ के साधन उपलब्ध होते रहते हैं। ऐसी ग्रह-स्थिति वाला व्यक्ति धनी तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः पंचमभावः मंगल

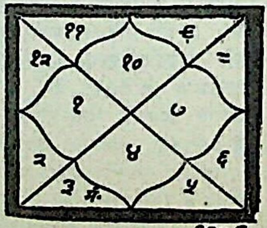


११२८

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि की शक्ति मिलती है तथा सन्तान-पक्ष से भी सुख प्राप्त होता है, साथ ही माता, भूमि, मकान आदि के सुख का लाभ भी होता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ रहता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से द्वादश-भाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख एवं लाभ प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः षष्ठभावः मंगल



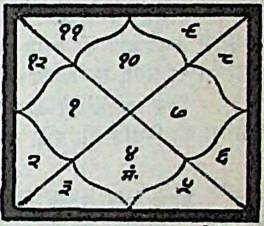
११२९

छठे रोग एवं शत्रु के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपना विशेष प्रभाव रखता है तथा झगड़े के मामलों से लाभ उठाता है। माता, भूमि तथा मकान के सुख में कमी आती है, साथ ही आमदनी के क्षेत्र में भी कठिनाइयां उपस्थित होती रहती हैं। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से

सम्बंधों से लाभ होता है। आठवीं उच्चदृष्टि से शत्रु शनि की राशि से प्रथमभाव को देखने से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है और उसे सुख, स्वास्थ्य तथा समृद्धि की प्राप्ति होती है।

जिस जातक जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः सप्तमभावः मंगल

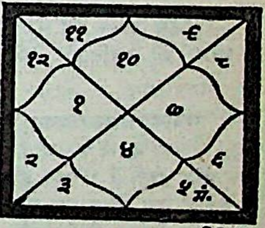


११३०

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष तथा गृहस्थी से सुख प्राप्त करने में बड़ी कमी रहती है। इसी प्रकार व्यवसाय, माता, भूमि तथा मकान का सुख भी बहुत दुर्बल रहता है। यहाँ से मंगल चौथी सामान्य मित्र दृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता द्वारा सुख, राज्य द्वारा सम्मान एवं व्यवसाय द्वारा लाभ प्राप्त होता है। सातवीं उच्चदृष्टि से शत्रु शनि की राशि में प्रथमभाव को देखने से जातक के शारीरिक प्रभाव, सौन्दर्य, सुख एवं गौरव में वृद्धि होती है। आठवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण धन-संचय में कुछ कठिनाइयां आयेंगी तथा कौटुम्बिक सुख सामान्य रूप में प्राप्त होता रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः अष्टमभावः मंगल

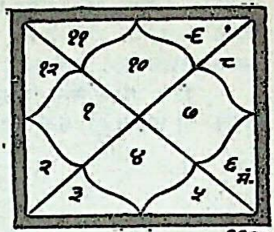


११३१

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी आती है तथा आमदनी के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी खूब अच्छी रहेगी। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण धन-संचय की शक्ति में सामान्य त्रुटियों के साथ सफलता मिलेगी तथा कुटुम्ब का सुख भी सामान्य रहेगा। आठवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होगा तथा पराक्रम में वृद्धि होगी।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः नवमभावः मंगल

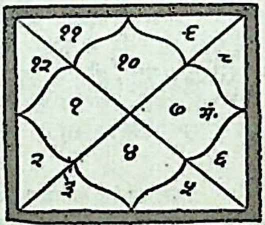


११३२

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है, वह धनी, धर्मात्मा, न्यायी तथा यशस्वी होता है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है एवं आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान का विशेष सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, यशस्वी, विनोदी, पुरुषार्थी तथा पराक्रमी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः दशमभावः मंगल

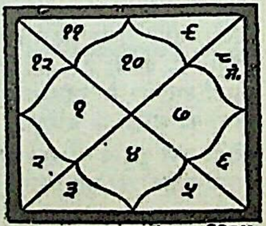


११३३

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता की विशेष शक्ति मिलती है। राजकीय क्षेत्र में सम्मान तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक सफलता प्राप्त होती है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से शत्रु शनि की राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। वह स्वाभिमानी तथा बड़प्पन रखने वाला होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है तथा आठवीं दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि की विशेष वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः एकादशभावः मंगल

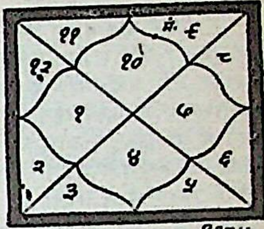


११३४

ग्यारहवें लाभ भवन में अपनी ही वृश्चिक राशि पर स्थित स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। साथ ही उसे माता, भूमि एवं मकान का यथेष्ट सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक को कुछ असन्तोष एवं कमी के साथ धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि में पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है तथा सन्तान का सुख भी मिलता है। आठवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से जातक का शत्रु-पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रहता है और झगड़े के मामलों में उसे लाभ एवं सफलता की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' से 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः द्वादशभावः मंगल



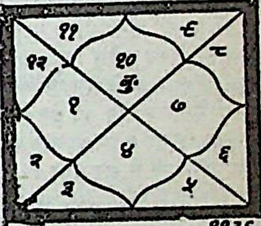
११३५

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है। उसे माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी रहती है तथा मातृ-भूमि का वियोग भी सहन करना पड़ता है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है। अतः भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है तथा झगड़ों से कोई चिन्ता उत्पन्न नहीं होती। आठवीं नीचदृष्टि से मित्र चन्द्रमा की राशि में सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ हानि तथा सुख में कमी आती है।

'मकर' लग्न में 'बुध' का फल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः प्रथमभावः बुध

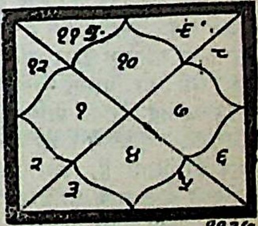


११३६

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित षष्ठेश बुध के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। वह अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित करता है तथा उसकी परेशानियाँ स्वयमेव दूर होती रहती हैं। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री तथा रोजगार के पक्ष में भी सफलता मिलती है, परन्तु बुध के षष्ठेश होने के कारण व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली 'द्वितीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः द्वितीयभावः बुध

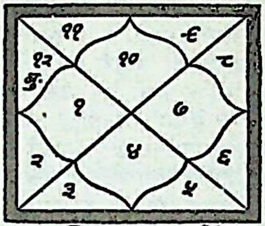


११३७

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब द्वारा भी सहयोग एवं सुख प्राप्त होता है। उसे मान-प्रतिष्ठा भी मिलती है और धर्म में भी उसकी रुचि बनी रहती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में अष्टमभाव को देखता है; अतः आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु बुध के षष्ठेश होने के कारण कभी-कभी भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं। यों, ऐसा जातक भाग्यवान् तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: तृतीयभाव: बुध

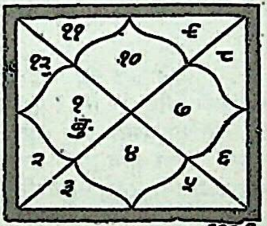


११३८

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है तथा पराक्रम भी अल्प रहता है। भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में भी कुछ कठिनाइयाँ आती हैं एवं शत्रु-पक्ष तथा झगड़ों से भी कुछ परेशानी उठानी पड़ती है। यहाँ से बुध सातवीं उच्चदृष्टि से अपनी ही कन्या राशि में नवमभाव को देखता है। अतः जातक अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा भाग्य तथा धर्म की उन्नति करता है। सामान्यतः ऐसा व्यक्ति भाग्यवान् समझा जाता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: चतुर्थभाव: बुध

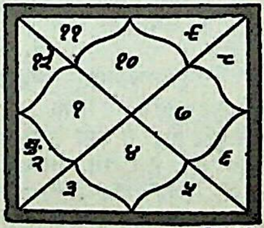


११३९

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है, साथ ही भाग्य की उन्नति भी होती है, परन्तु बुध के षष्ठेश होने के कारण घरेलू सुख-शान्ति में कुछ बाधायें आती रहती हैं। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता से सुख, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ होता है तथा शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती रहती है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: पंचमभाव: बुध

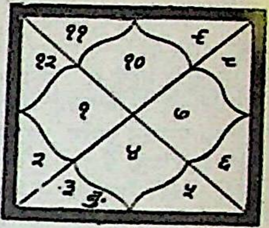


११४०

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित षष्ठेश बुध के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलती है। वह अपने परिश्रम द्वारा आय की विशेष उन्नति करता है तथा धर्म का पालन भी करता है। उसे शत्रु-पक्ष में सफलता एवं यश की प्राप्ति होती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में एकादश-भाव को देखता है, अतः जातक विवेक एवं भाग्य की शक्ति से श्रेष्ठ लाभ का उपार्जन करता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: षष्ठभाव: बुध

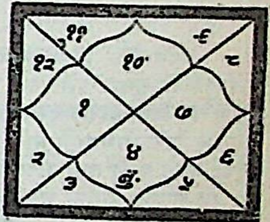


११४१

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपनी ही मिथुन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री बुध के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है। उसकी भाग्योन्नति तथा धार्मिक उन्नति के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं तथा कभी-कभी लाभ के बजाय हानि भी उठानी पड़ती है, परन्तु वह सब बाधाओं को पार करके उन्नतिशील बना रहता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ, सुख तथा शक्ति प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: सप्तमभाव: बुध

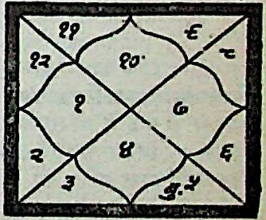


११४२

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने विवेक द्वारा भाग्य की विशेष उन्नति करता है तथा व्यवसाय में सफलता पाता है। उसे स्त्री-पक्ष से कुछ अशान्ति रहती है, परन्तु धर्म का पालन भी यथाविधि होता है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ व्यवसाय में विशेष आर्थिक लाभ भी होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक प्रभाव, स्वाभिमान तथा सम्मान में वृद्धि होती है, परन्तु कभी-कभी उसे बीमारियों का शिकार भी होना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: अष्टमभाव: बुध

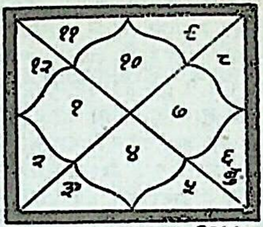


११४३

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। उसकी भाग्योन्नति में विशेष बाधाएं आती हैं तथा यश की भी कमी रहती है। शत्रु-पक्ष की ओर से भी संकट एवं अशान्ति का वातावरण बनता रहता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः कुछ परेशानियों के साथ जातक के धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है, परन्तु ऐसे जातक का दैनिक जीवन प्रभावशाली बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः नवमभावः बुध

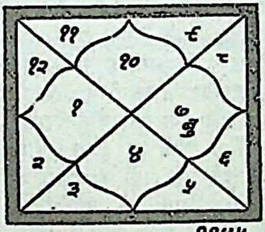


११४४

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपनी ही मकर राशि पर स्थित स्वक्षेत्री तथा उच्च के बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है और वह लोक-दिखावे के लिए धर्म का पालन भी करता है। शत्रु-पक्ष पर उसे विशेष सफलता प्राप्त होती है तथा झगड़े के मामलों से लाभ होता रहता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं नीचदृष्टि से गुरु की मीन राशि में तृतीय-भाव को देखता है, अतः जातक का भाई से विरोध रहता है अथवा भाई-बहिनों के सुख में कमी आती है और वह पुरुषार्थ की अपेक्षा भाग्य को अधिक बड़ा समझता है। इस प्रकार उसका पराक्रम शिथिल रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः दशमभावः बुध

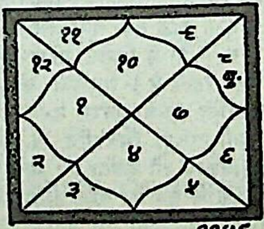


११४५

दसवें केन्द्र, पिता एवं राज्य के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा सुख, राज्य द्वारा सम्मान एवं व्यवसाय द्वारा लाभ तथा मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है, वह अपने भाग्य तथा परिश्रम की सम्मिलित शक्ति से खूब धन कमाता है तथा शत्रु-पक्ष पर विजय पाता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है, परन्तु बुध के षष्ठेश होने के कारण उसकी उन्नति के मार्ग में रुकावटें आती रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः एकादशभावः बुध

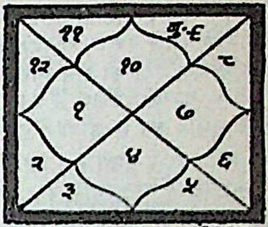


११४६

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता मिलती है। वह शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है तथा परिश्रम एवं विवेक-बुद्धि द्वारा भाग्य की विशेष उन्नति करता है। स्वार्थयुक्त धर्म का पालन करने में भी वह पीछे नहीं रहता। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः उसे सन्तान-पक्ष में सफलता तो मिलती है, परन्तु बुध के षष्ठेश होने के कारण कुछ परेशानी भी रहती है। विद्या और बुद्धि के क्षेत्र में ऐसा जातक विशेष उन्नति करता

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः द्वादशभावः बुध



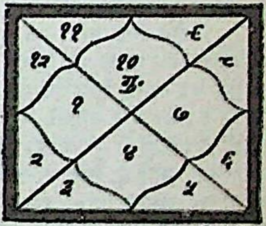
११४७

बारहवें-व्यय भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है परन्तु उसकी पूर्ति में कोई कठिनाई नहीं पड़ती। वह बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से विशेष शक्ति, लाभ एवं सफलता प्राप्त करता है, परन्तु उसकी भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती रहती हैं तथा यश की कमी रहती है। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी ही मिथुन राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक को शत्रु-पक्ष से कुछ कठिनाई रहती है, परन्तु वह अपने भाग्य की शक्ति से उन कठिनाइयों पर सफलता प्राप्त कर लेता है।

'मकर' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः प्रथमभावः गुरु

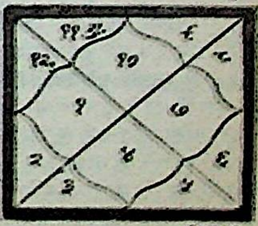


११४८

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक के शरीर में दुर्बलता रहती है, भाई-बहिन के सुख में कमी आती है, पराक्रम न्यून रहता है, खर्च चलाने में कठिनाई पड़ती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बंधों से असंतोष मिलता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः विद्या एवं बुद्धि में कुछ त्रुटि-पूर्ण सफलता मिलती है तथा सन्तान से सुख-दुःख दोनों ही मिलते हैं। सातवीं उच्चदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से सुख तथा सफलता मिलती है एवं नवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति में घट-बढ़ बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः द्वितीयभावः गुरु

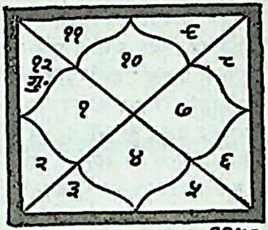


११४९

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक के धन-संचय में कमी आती है तथा कुटुम्ब से भी परेशानी रहती है। ऐसे व्यक्ति का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति मिलती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु-पक्ष में बुद्धिमानी एवं चतुराई से काम निकालता है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की कुछ शक्ति मिलती है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं [illegible] दोनों है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः तृतीयभावः गुरु

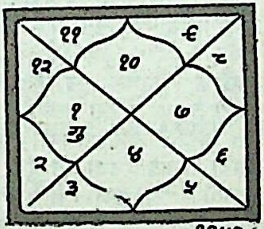


११५०

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपनी ही मीन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है, परन्तु गुरु के व्ययेश होने के कारण पुरुषार्थ में कमी आती है। खर्च का संचालन सुचारु रूप से होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से शक्ति प्राप्त होती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं उच्च तथा मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री सुन्दर मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में न्यूनाधिकता बनी रहती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी अच्छी रहती है। कुल मिलाकर ऐसा व्यक्ति सामान्यतः सुखी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुडण्ली के 'चतुर्थ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः चतुर्थभावः गुरु

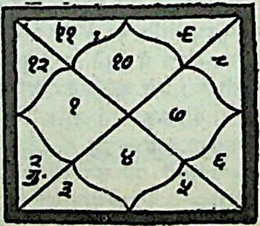


११५१

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी रहती है तथा भाई-बहिनों के सम्बन्ध में भी कुछ कमी रहती है। यहाँ से गुरु अपनी पांचवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का सामान्य लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है तथा नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि के द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे घर-बैठे ही लाभ प्राप्त होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः पंचमभावः गुरु



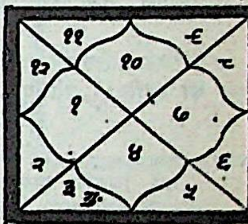
११५२

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से न्यूनाधिक लाभ होता है तथा विद्या के क्षेत्र में भी कुछ कमी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धि-बल से अपने खर्च को चलाता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है। उसे भाई-बहिनों का भी सामान्य सुख मिलता है तथा बुद्धि-बल से उसके पराक्रम की वृद्धि होती है। यहाँ से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य

एवं धर्म की सामान्य वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण पुरुषार्थ द्वारा आमदनी अच्छी रहती है तथा नवीं नीच दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी तथा परेशानी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: षष्ठभाव: गुरु



११४३

छठे रोग तथा शत्रु-भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक खर्च की शक्ति से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित करता है। उसका भाई-बहिनों से सामान्य विरोध रहता है तथा पराक्रम में भी कमी आती है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अत: पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ एवं कमियां बनी रहती हैं। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से शक्ति मिलती है। नवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है। फिर भी कष्ट ही प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: सप्तमभाव: गुरु

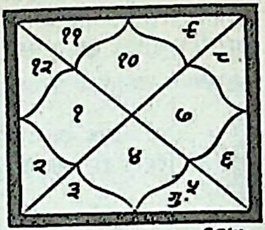


११४४

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक को सुन्दर पत्नी मिलती है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से शक्ति एवं लाभ प्राप्त होता है। खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सफलता मिलती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अत: आमदनी अच्छी रहती है। सातवीं नीच-दृष्टि से शत्रु शनि की राशि में प्रथमभाव को देखने से शारीरिक-सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है तथा चित्त में चिन्ताएं घर किए रहती हैं। नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिनों की शक्ति प्राप्त होती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: अष्टमभाव: गुरु

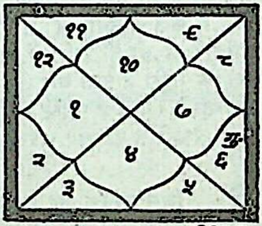


११५५

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व के पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है। यहाँ से गुरु पांचवी दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः बाहरी स्थानों के सम्बंध से खर्च चलता रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के पक्ष मे कुछ कमी रहती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति सामान्य जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्न: नवमभाव: गुरु

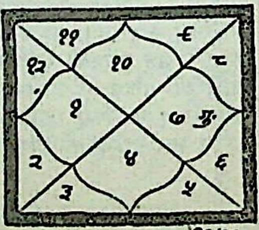


११५६

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कमजोरी रहती है, इसी प्रकार वह धर्म का पालन भी यथोचित नहीं कर पाता। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ शक्ति प्राप्त होती है, जिससे खर्च चलता रहता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं नीच दृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अत; शारीरिक-सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा मन अशान्त बना रहता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन की सामान्य शक्ति मिलती है तथा पराक्रम में भी कुछ वृद्धि होती है। नवीं मित्रदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में विवेक-बुद्धि से सफलता प्राप्त होती है तथा झगड़े के मामलों में कभी हानि और कभी लाभ होता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मकरलग्न: दशमभाव: गुरु



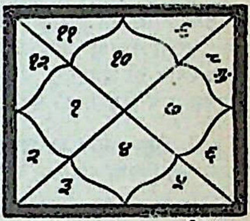
११५७

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष से कमी बनी रहती है। उसे भाई-बहिन की शक्ति मिलती है तथा पुरुषार्थ की भी वृद्धि होती है, जिसके कारण वह अपने खर्च को ठाठ से चलाता रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति एवं लाभ प्राप्त करता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं

मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता का सुख त्रुटिपूर्ण रहता है, परन्तु खर्च के बल पर भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। नवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से जातक शत्रु-पक्ष पर अपनी बुद्धिमानी से प्रभाव स्थापित करता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः एकादशभावः गुरु

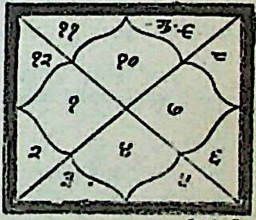


११५८

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब रहती है, परन्तु गुरु के व्ययेश होने के कारण उसमें कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होने के कारण खर्च आराम तथा ठाठ से चलता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं दृष्टि से तृतीयभाव को अपनी ही राशि में देखता है, अतः भाई-बहिन एवं पराक्रम की शक्ति में वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से कुछ असन्तोष रहता है, परन्तु विद्या-बुद्धि एवं वाणी की शक्ति प्राप्त होती है। नवीं उच्चदृष्टि से मित्र चन्द्रमा की राशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः द्वादशभावः गुरु



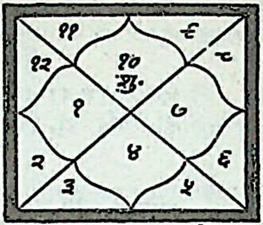
११५९

बारहवें व्यय भवन में अपनी ही धनु राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त होता है। भाई-बहिनों के सुख में कमी रहती है तथा पराक्रम में भी कमी आती है। जिसके कारण कभी-कभी हिम्मत भी जवाब दे जाती है, यहाँ से गुरु अपनी पांचवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता, भूमि एवं मकान आदि का सामान्य सुख प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर युक्तिपूर्वक प्रभाव स्थापित होता है तथा नवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक को कुछ कमी के साथ आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है परन्तु ऐसा व्यक्ति अपने शानदार खर्च के बल पर जीवन को प्रभावशाली बनाये रखता है।

'मकर' लग्न में 'शुक्र' का फल

जिस जातक जन्म 'मकर'लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः प्रथमभावः शुक्र

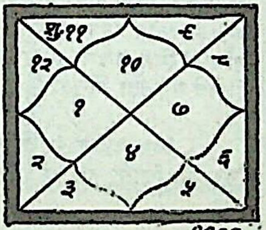


११६०

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शारीरिक-सौन्दर्य, प्रभाव एवं मान की प्राप्ति होती है । उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्रों से भी सहयोग, सम्मान, सफलता एवं सुख प्राप्त होता है । ऐसा व्यक्ति समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करता है तथा बुद्धि-चातुर्य से उन्नति करता है । सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को सुन्दर तथा सुयोग्य स्त्री का सुख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ होता है।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मकरलग्नः द्वितीयभावः शुक्र

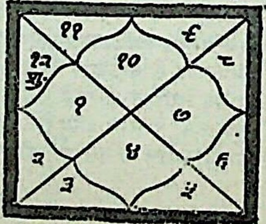


११६१

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है तथा धन का संचय भी खूब होता है । उसे राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्रों से सुख, सफलता तथा सम्मान की प्राप्ति होती है, परन्तु सन्तान-पक्ष से कुछ कठिनाई रहती है। विद्या और बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है । यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक की आयु की शक्ति में कुछ कमी आती है तथा पुरातत्त्व का भी स्वल्प लाभ मिल पाता है । ऐसा व्यक्ति धनी तथा यशस्वी तो होता है, परन्तु उसे विभिन्न प्रकार की चिन्ताएं भी लगी रहती हैं ।

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

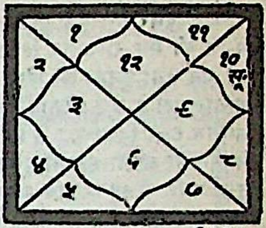
मकरलग्नः तृतीयभावः शुक्र



११६२

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने सामान्य मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है तथा विद्या एवं सन्तानपक्ष से शक्ति प्राप्त होती है । साथ ही पिता का सुख, सहयोग, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है । भाई-बहिन का सुख भी कुछ कमी के साथ मिलता है तथा जातक बड़ा हिम्मती एवं धैर्यवान होता है । यहाँ से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र बुध की कन्या राशि में नवमभाव को देखता है, अतः भाग्य उन्नति तथा धर्म-पालन में कुछ कमी बनी रहती है तथा यश भी कम ही मिल पाता है ।

मीनलग्न: एकादशभाव: सूर्य

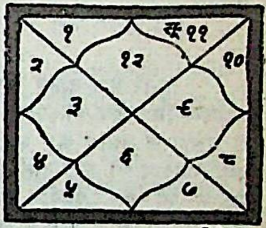


१३३२

ग्यारहवें लाभ-भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम द्वारा अपनी आमदनी में अत्यधिक वृद्धि करता है। साथ ही शत्रु-पक्ष पर विजय भी पाता है। सूर्य के षष्ठेश होने के कारण आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ अवश्य आती हैं, परन्तु अन्ततः सफलता मिलती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान एवं विद्या के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: द्वादशभाव: सूर्य



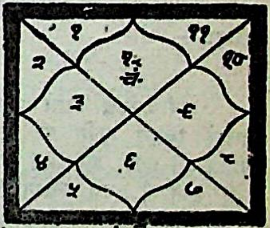
१३३३

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित षष्ठेश सूर्य के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में भी दिक्कतें आती हैं। शत्रु-पक्ष से भी कुछ परेशानी बनी रहती है। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपनी ही सिंह राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक खर्च के बल पर शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है तथा प्रभाव को बढ़ाता है। वह क्रोधी तथा अहंकारी भी होता है।

'मीन' लग्न में 'चन्द्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: प्रथमभाव: चन्द्र

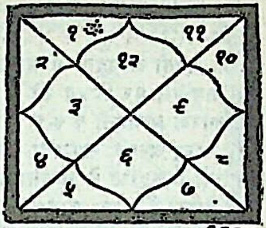


१३३४

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौन्दर्य में वृद्धि होती है। वह कोमल स्वभाव का होता है तथा यश, प्रभाव, सम्मान एवं आत्मिक शांति अर्जित करता है। वह मधुर वाणी बोलने वाला, सर्वप्रिय, आदर्श एवं ज्ञानी होता है। उसे सन्तान-पक्ष से भी अच्छी शक्ति मिलती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से बुध की कन्या राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः उसे सुन्दर स्त्री प्राप्त होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी बुद्धि-बल से अच्छी सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्नः द्वितीयभावः चन्द्र

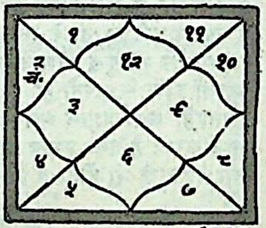


१३३५

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र मंगल की मेप राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु सन्तान-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है। इसके अतिरिक्त सन्तान तथा विद्या-पक्ष से प्रतिष्ठा भी मिलती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से सामान्य-मित्र शुक्र की तुला राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक की आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है तथा उसका दैनिक जीवन उल्लासपूर्ण बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः तृतीयभावः चन्द्र

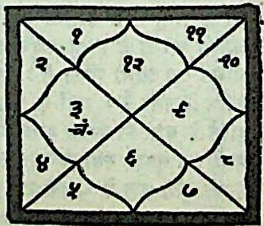


१३३६

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने सामान्य-मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों की शक्ति मिलती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। उसे विद्या एवं सन्तान-पक्ष का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है। वह बड़ा हिम्मती, बातचीत करने में चतुर तथा प्रसन्न रहने वाला होता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक की भाग्योन्नति में रुकावटें आती हैं तथा धर्म का पक्ष भी कमजोर रहता है। ऐसा जातक असहिष्णु होता है, अतः उसे यश भी कम ही मिल पाता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के चतुर्थ-भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः चतुर्थभावः चन्द्र

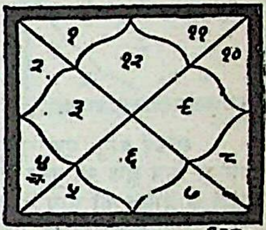


१३३७

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। उसे सन्तान एवं विद्या-पक्ष में भी उन्नति मिलती है। सुख के साधन सहज ही में उपलब्ध होते रहते हैं। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक अपनी बुद्धि के बल पर व्यवसाय की उन्नति करता है, राजकीय क्षेत्र में सम्मान पाता है तथा पिता द्वारा भी सुख प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति अपनी उन्नति अनेक प्रकार से करता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम-भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: पंचमभाव: चन्द्र

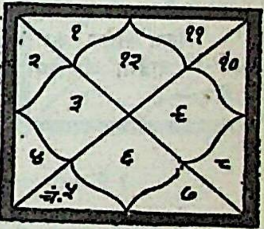


१३३८

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपनी ही कर्क राशि पर स्थित स्वक्षेत्री चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त होती है। वह वाक्पटु होता है तथा उसकी वाणी में कोमलता एवं मधुरता रहती है। वह दूरदर्शी, गम्भीर, स्थिर विचारों वाला तथा प्रसन्न रहने वाला होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से शनि की मकर राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः ऐसा व्यक्ति अपनी बुद्धि के विशेष प्रयोग द्वारा आमदनी की वृद्धि करता है, यद्यपि आमदनी के पक्ष में कुछ असन्तोष बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ-भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: षष्ठभाव: चन्द्र

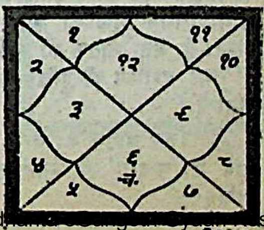


१३३९

छठे रोग एवं शत्रु-भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष एवं झगड़े-झंझटों के कारण अशान्ति का सामना करना पड़ता है। अन्त में वह अपने मनोबल तथा बुद्धि-बल से शत्रु-पक्ष एवं झगड़ों पर प्रभाव स्थापित कर पाता है। उसे सन्तान-पक्ष से भी कष्ट होता है तथा विद्या-ध्ययन में भी परेशानी एवं त्रुटि रहती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में द्वादश-भाव को देखता है, अतः जातक खर्च की अधिकता से दुःखी रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से असन्तोषपूर्ण शक्ति प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम-भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: सप्तमभाव: चन्द्र



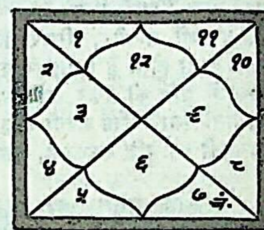
१३४०

सातवें केन्द्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सुन्दर एवं बुद्धिमती स्त्री मिलती है और व्यव-साय के क्षेत्र में सफलता भी प्राप्त होती है। इसके साथ ही जातक को सन्तान-पक्ष से सहयोग मिलता है तथा विद्या-बुद्धि की उन्नति होती है। उसके घरेलू सुख में भी वृद्धि होती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से गुरु की मीन राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक-सौंदर्य, प्रभाव, सम्मान एवं

योग्यता की प्राप्ति होती है। वह घरेलू एवं सामाजिक कार्यों में कुशल तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम-भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: अष्टमभाव: चन्द्र

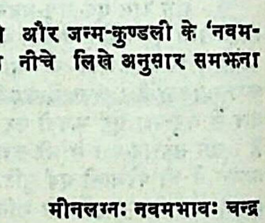


१३४१

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्व का भी लाभ होता है, परन्तु विद्या एवं सन्तान के पक्ष में कमी एवं कष्ट का अनुभव होता है। साथ ही मन तथा मस्तिष्क में अशान्ति बनी रहती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से मंगल की मेष राशि में द्वितीयभाव को देखता है। अतः जातक अनेक साधनों से धन की वृद्धि करता है। वह कौटुम्बिक मामलों में विशेष रुचि रखता है तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम-भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: नवमभाव: चन्द्र

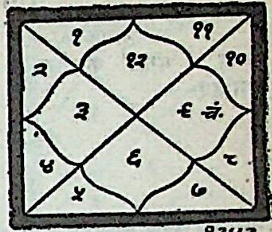


१३४२.

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कुछ रुकावटें आती हैं तथा धर्म का पालन भी यथाविधि नहीं हो पाता। उसे सन्तान के सुख में कमी तथा विद्या के क्षेत्र में कमजोरी रहती है। मन तथा मस्तिष्क में परेशानी भी बनी रहती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं उच्चदृष्टि से अपने सामान्य-मित्र शुक्र की वृषभ राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों की शक्ति मिलती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा पुरुषार्थी, हिम्मती एवं धैर्यवना होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम-भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: दशमभाव: चन्द्र

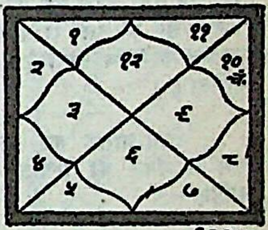


१३४३

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा सहयोग, राज्य द्वारा सम्मान तथा व्यवसाय द्वारा विशेष लाभ होता है। वह कानून को मानने वाला, स्वाभिमानी, विद्वान्, बुद्धिमान् तथा सन्ततिवान् होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता का सुख एवं भूमि, मकान आदि का अच्छा लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान्, धनी, यशस्वी, प्रतिष्ठित विद्वान्, बुद्धिमान् तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश-भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: एकदशभाव: चन्द्र

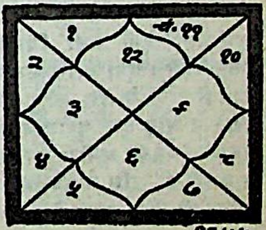


१३४४

ग्यारहवें लाभ-स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपने बुद्धि-बल एवं मनोबल द्वारा आमदनी की खूब वृद्धि करता है। फिर भी उसे कुछ न कुछ असन्तोष बना रहता है। ऐसे व्यक्ति को कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या एवं सन्तान की शक्ति प्राप्त होती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से अपनी ही कर्क राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः वह विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष की उन्नति के लिये निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है ऐसा व्यक्ति स्वार्थपूर्ण बातचीत करने वाला तथा अपनी उन्नति का ध्यान रखने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश-भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: द्वादशभाव: चन्द्र



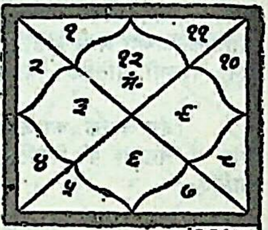
१३४५

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से उसे लाभ भी प्राप्त होता है। उसे सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है, विद्या-पक्ष में कमी रहती है तथा मन एवं मस्तिष्क परेशान बने रहते हैं। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवी मित्र-दृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक अपनी बुद्धि के बल पर शत्रु-पक्ष में काम निकालता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में प्रभाव स्थापित करता है।

'मीन' लग्न में 'मंगल' का फल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम-भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः प्रथमभावः मंगल

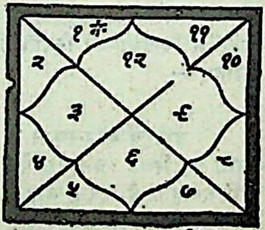


१३४६

पहले केन्द्र एवं शरीर-स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की शारीरिक-शक्ति एवं सम्मान में वृद्धि होती है। साथ ही धन, कुटुम्ब, भाग्य तथा धर्म की उन्नति भी होती है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम-भाव को देखने से स्त्री की शक्ति मिलती है एवं व्यवसाय द्वारा धन तथा घरेलू सुख की वृद्धि भी होती है। आठवीं दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में अष्टमभाव को देखने के कारण आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति कुछ कठिनाइयों के साथ अमीरी ढंग का जीवन बिताता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय-भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः द्वितीयभावः मंगल

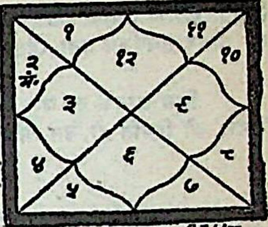


१३४७

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपनी ही मेष राशि पर स्थित स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक के धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि होती है और वह बड़ा धनवान् समझा जाता है। यहाँ से मंगल चौथी नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः विद्या एवं सन्तान के पक्ष में कुछ कमी रहेगी तथा चिन्ता एवं परेशानी के कारण बनते रहेंगे। ऐसा व्यक्ति कटु शब्दों का प्रयोग करता है। सातवीं दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है तथा रहन-सहन अमीरी ढंग का होता है। आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में नवमभाव को देखने से भाग्य की विशेष उन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: तृतीयभाव: मंगल

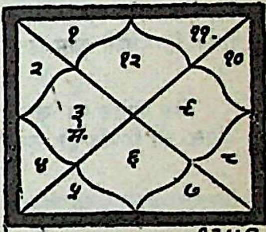


१३४८

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने सामान्य-मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है और उसे भाई-बहिनों का सुख भी प्राप्त होता है। इसके साथ ही धन तथा कुटुम्ब की भी उन्नति होती है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है अतः शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है तथा झगड़ों के मामलों में विजय मिलती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में नवमभाव को देखने से भाग्य की विशेष उन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता द्वारा सुख-सहयोग मिलता है, राज्य से सम्मान प्राप्त होता है तथा व्यवसाय में तरक्की होती है। ऐसा जातक यशस्वी, धर्मात्मा, शत्रुजय तथा भाई-बहिन, कुटुम्ब एवं धन के सुख से सम्पन्न भाग्यशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: चतुर्थभाव: मंगल

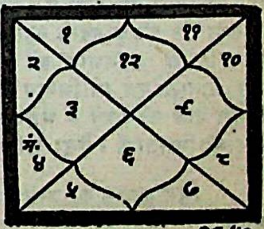


१३४९

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता का सुख एवं भूमि, मकान आदि की शक्ति प्राप्त होती है। उसे धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को भाग्यवान स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। घरेलू सुख भी खूब रहता है। सातवीं मित्र दृष्टि से नवमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय से सुख, सम्मान तथा लाभ मिलता रहता है। आठवीं उच्च दृष्टि से शत्रु की राशि में एकादशभाव को देखने से घर-बैठे ही लाभ का योग बनता रहता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा भाग्यशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: पंचमभाव: मंगल



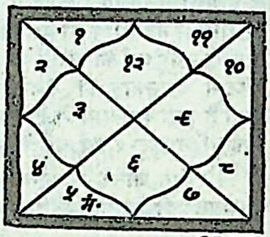
१३५०

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को सन्तान तथा विद्या-पक्ष में कमजोरी रहती है तथा धन एवं कुटुम्ब-पक्ष से भी चिन्ता बनी रहती है। भाग्य एवं धर्म का पक्ष भी दुर्बल रहता है। यहाँ से मंगल चौथी सामान्य मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति की कुछ वृद्धि होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से लाभ-भवन को देखने से जातक आमदनी बढ़ाने के लिये विशेष प्रयत्न करता है

तथा आठवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च के मामले में परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ असन्तोषपूर्ण सहयोग मिलता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन संघर्षमय बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्नः षष्ठभावः मंगल

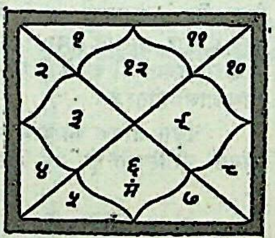


१३५१

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपना बड़ा प्रभाव रखता है। धन की कुछ कमी रहते हुए भी खर्च शान से चलता है तथा कुटुम्ब से भी थोड़ा सुख मिलता है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में नवमभाव को देखता है, अतः कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म का पालन होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च की परेशानी तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से असन्तोष रहता है। आठवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति, प्रभाव एवं सम्मान की वृद्धि होती है तथा झगड़े के मामलों में जातक हिम्मत से काम लेता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली 'सप्तम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्नः सप्तमभावः मंगल

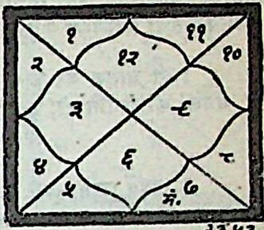


१३५२

सातवें केन्द्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाग्यवान् स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय में भी लाभ होता है। वह धर्म का पालन करता है और भाग्यशाली होता है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा सुख, सहयोग, सम्मान, लाभ एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। विशेषकर रोजगार खूब बढ़ता है तथा धन की आमदनी बहुत अच्छी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, यश, प्रतिष्ठा एवं स्वाभिमान की वृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखने से भाग्य की प्रबल शक्ति से धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, यशस्वी तथा भाग्यशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्नः अष्टमभावः मंगल

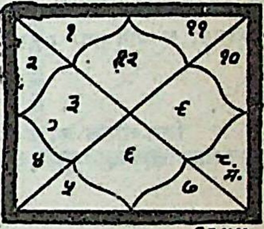


१३५३

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है परन्तु भाग्य, धर्म एवं यश के क्षेत्र में कमी आती है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी उच्चदृष्टि से शत्रु शनि की राशि में एकादशभाव को देखता है अतः आमदनी अच्छी रहती है तथा जातक अधिक मुनाफा खाने का प्रयत्न करता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखने से परिश्रम द्वारा धन का संचय होता है तथा कुटुम्ब का सहयोग भी मिलता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों से कुछ असन्तोष रहता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः नवमभावः मंगल

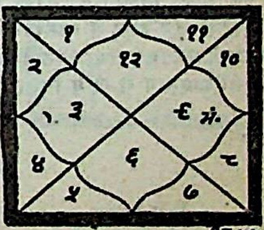


१३५४

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपनी ही वृश्चिक राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा भाग्यशाली, धनी, धर्मात्मा तथा यशस्वी होता है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च के मामले में असन्तोष रहता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी विशेष रुचिकर नहीं होता। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है, परन्तु पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान का सुख यथेष्ट मात्रा में मिलता है। कुल मिलाकर ऐसा जातक भाग्यवान्, सुखी तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्नः दशमभावः मंगल



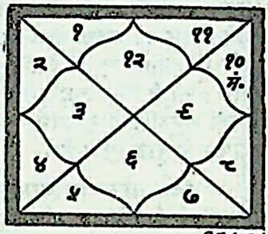
१३५५

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक पिता से बहुत सुख, राज्य से अत्यधिक सम्मान तथा व्यवसाय में बड़ी उन्नति करता है। उसे धन तथा कुटुम्ब का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है तथा धर्म का पालन भी होता है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शाररिक प्रभाव, शक्ति, प्रतिष्ठा, यश एवं स्वाभिमान की वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि,

मकान एवं घरेलू सुख की प्राप्ति होती है। आठवीं नीचदृष्टि से मित्र की राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः सन्तान तथा विद्या के पक्ष में कुछ कमी रहती है। वाणी में रूखापन तथा मस्तिष्क में कुछ परेशानियाँ भी रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये —

मीनलग्नः एकादशभावः मंगल

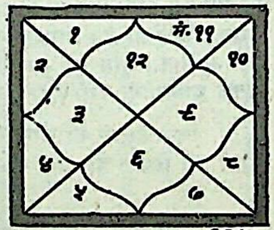


१३५६

ग्यारहवें लाभ-भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। वह बड़ा भाग्यवान् होता है तथा धर्म का पालन भी करता है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः धन तथा कुटुम्ब की उन्नति होती है। सातवीं नीच-दृष्टि से मित्र चन्द्रमा की राशि में पंचमभाव को देखने से विद्या तथा सन्तान के पक्ष में कुछ कमी तथा परेशानी रहती है। आठवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक भाग्य की शक्ति से शत्रु-पक्ष पर विजय एवं प्रभाव प्राप्त करता है तथा झगड़े के मामलों में सफलता पाता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, धनवान् तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः द्वादशभावः मंगल



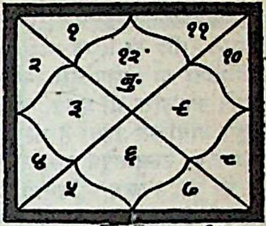
१३५७

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है। धन तथा कुटुम्ब के पक्ष में बहुत कमी रहती है तथा भाग्य, धर्म एवं यश की उन्नति में अनेक कठिनाइयाँ आती रहती हैं। यहाँ से मंगल चौथी शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः भाई-बहिनों की कुछ असन्तोषपूर्ण शक्ति मिलती है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री से सुख तथा व्यवसाय से लाभ मिलता है।

'मीन' लग्न में 'बुध' का फल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

मीनलग्न: प्रथमभाव: बुध

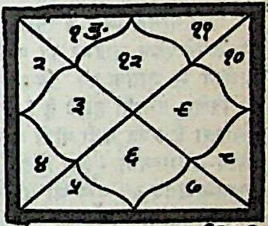


१३५८

पहले केन्द्र एवं शरीर-स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है। साथ ही माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी थोड़ा ही प्राप्त होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं उच्च-दृष्टि से अपनी ही कन्या राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री-पक्ष से सुख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी होता है तथा अपने प्रभाव की एवं व्यवसाय की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: द्वितीयभाव: बुध

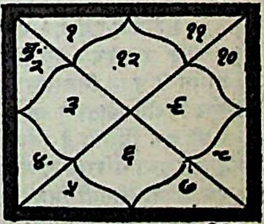


१३५९

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक कुटुम्ब से शक्ति प्राप्त करता है तथा अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा धन का संचय करता है। उसे माता तथा स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है, परन्तु घरेलू सुख अच्छा रहता है तथा भूमि एवं मकान आदि की शक्ति का भी लाभ होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा दैनिक जीवन उल्लासपूर्ण बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: तृतीयभाव: बुध

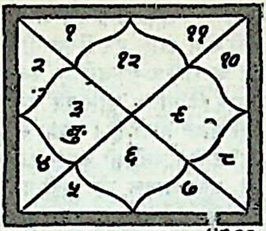


१३६०

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। उसे माता, स्त्री, भूमि, मकान तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। वह बड़ा हिम्मती तथा बहादुर होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में नवमभाव को देखता है। अतः जातक के भाग्य की उन्नति होती है। वह धर्म का पालन करता तथा यशस्वी भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः चतुर्थभावः बुध

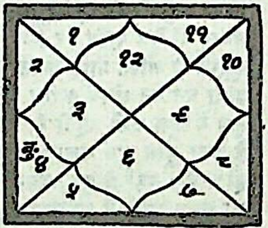


९३६१

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपनी ही मिथुन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री बुध के प्रभाव से जातक को माता का विशेष सुख मिलता है तथा भूमि, मकान आदि की शक्ति भी प्राप्त होती है। वह स्त्री-पक्ष से बहुत आनन्दित रहता है और उसका घरेलू जीवन भी सुख तथा उल्लासपूर्ण बना रहता है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी उसे सफलता मिलती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता से शक्ति, राज्य से प्रतिष्ठा एवं व्यवसाय से लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा भाग्यवान् होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्नः पंचमभावः बुध

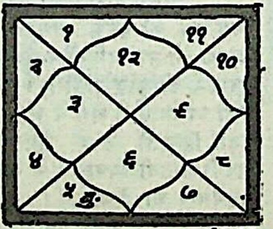


९३६२

पाँचवें त्रिकोण विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की विद्या बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में विशेष उन्नति होती है। उसे प्रसन्नता का सुख भी मिलता है। वह बड़ी मीठी वाणी बोलने वाला तथा ग्रह-कार्य-संचालन में कुशल होता है। उसे माता, स्त्री, भूमि, मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में लाभ-भवन को देखता है, अतः जातक अपनी बुद्धि-बल से आमदनी की वृद्धि करता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, यशस्वी तथा विवेकी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः षष्ठभावः बुध

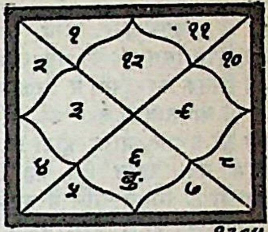


९३६३

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में शान्ति से काम निकालता है। उसका माता तथा स्त्री से कुछ विरोध रहता है तथा भूमि, मकान आदि का सुख भी कम मिलता है। व्यवसाय के क्षेत्र में वह अपने बुद्धि-बल तथा परिश्रम से सफलता प्राप्त करता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: सप्तमभाव: बुध

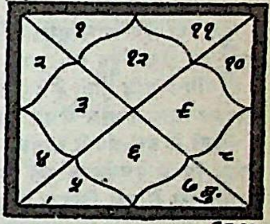


२३६४

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी ही कन्या राशि पर स्थित स्वक्षेत्री तथा उच्च के बुध के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है, घरेलू जीवन प्रभावपूर्ण रहता है तथा व्यवसाय में विशेष सफलता मिलती है। उसे माता, भूमि, मकान आदि का श्रेष्ठ सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से बुध सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र गुरु की मीन राशि में प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक के शारीरिक-स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है तथा गृहस्थी का संचालन करने में अधिक परिश्रम करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: अष्टमभाव: बुध

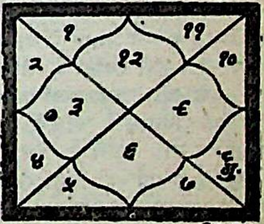


२३६५

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। उसका दैनिक जीवन भी सुखी तथा प्रभावपूर्ण रहता है। परन्तु स्त्री के सुख में विशेष कमी रहती है और माता का सुख भी कम ही मिल पाता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अत: जातक कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त करता है तथा धन की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न-शील बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: नवमभाव: बुध

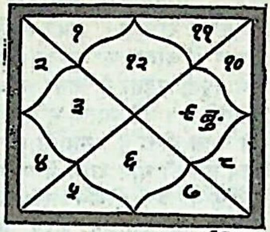


२३६६

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य में वृद्धि होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। उसे माता, स्त्री, भूमि, मकान तथा व्यवसाय का श्रेष्ठ सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: जातक को भाई-बहिनों का श्रेष्ठ सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, यशस्वी, पराक्रमी तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः दशमभावः बुध

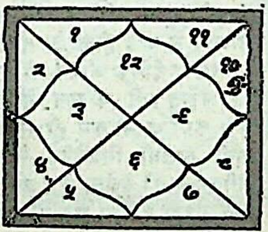


२३६७

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को पिता से सुख-सहयोग, राज्य से प्रतिष्ठा तथा व्यवसाय से लाभ की प्राप्ति होती है। उसे स्त्री-पक्ष से भी प्रभाव प्राप्त होता है तथा गृहस्थ-जीवन सुखपूर्ण बना रहता है। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी ही मिथुन राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि, मकान एवं घरेलू सुख भी पर्याप्त मिलता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, भाग्यवान्, गौरवशाली तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः एकादशभावः बुध

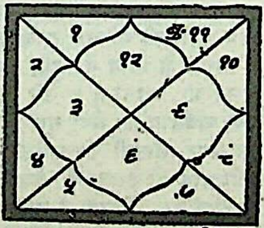


२३६८

ग्यारहवें लाभ-भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। उसे माता, स्त्री, भूमि, मकान तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी अत्यधिक सफलता मिलती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि की विशेष उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति मधुरभाषी, बुद्धिमान्, धनी, सुखी, प्रभावशाली तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः द्वादशभावः बुध



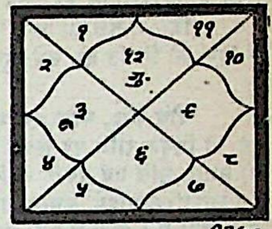
२३६९.

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त होता है। उसे स्त्री, माता, भूमि, मकान, घरेलू सुख तथा स्थानीय व्यवसाय के क्षेत्र में भी हानि तथा कष्टों का सामना करना पड़ता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है। वह धैर्यवान् तथा हिम्मती होता है।

'मीन' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: प्रथमभाव: गुरु

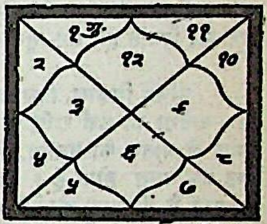


१३६०.

पहले केन्द्र एवं शरीर-स्थान में अपनी ही मीन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। वह राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सम्मान, सहयोग, लाभ एवं यश प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा व्यवसायी तथा धनी होता है। यहाँ से गुरु अपनी पांचवी उच्चदृष्टि से मित्र की राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः विद्या एवं बुद्धि की विशेष उन्नति होती है तथा सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से सुन्दर स्त्री मिलती है तथा स्त्री के सुख एवं व्यवसाय में वृद्धि होती है। नवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की भी उन्नति होती है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: द्वितीयभाव: गुरु

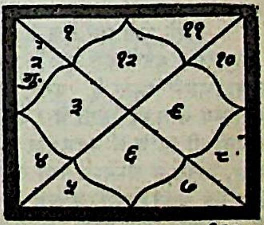


१३६१

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक धन का संचय खूब करता है तथा कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त करता है, परन्तु शारीरिक-स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक धन की शक्ति से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित करता है तथा झगड़े के मामलों में धैर्य से काम लेकर सफलता प्राप्त करता है। सातवीं दृष्टि से शुक्र की राशि में अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति की वृद्धि होती है तथा दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण रहता है। नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में दशमभाव को देखने के कारण पिता से बहुत सहयोग मिलता है, राज्य से प्रतिष्ठा एवं व्यवसाय से प्रचुर लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी सुखी तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: तृतीयभाव: गुरु



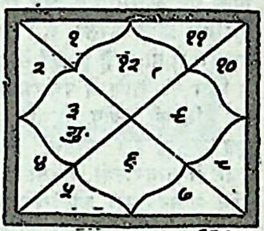
१३६२

तीसरे भाई-बहिनों एवं पराक्रम के भवन में अपने सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाई-बहिनों का सुख कुछ मतभेद के साथ मिलता है तथा पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। उसका पिता से भी कुछ मतभेद रहता है, परन्तु राज्य में प्रभाव बढ़ता है तथा व्यवसाय में उन्नति होती है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री-पक्ष से सुख प्राप्त होता है तथा परिश्रम द्वारा व्यवसाय में सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से

नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है एवं नवीं नीचदृष्टि से शनि की राशि में एकादशभाव को देखने से आमदनी के मार्ग में रुकावटें आती हैं।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: चतुर्थभाव: गुरु

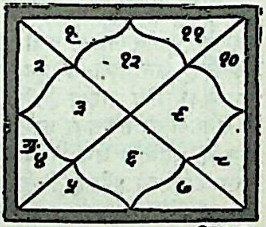


१३६३

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का अच्छा सुख मिलता है। शारीरिक-सौंदर्य, प्रभाव, यश तथा घरेलू सुख में भी वृद्धि होती है। यहाँ से गुरु अपनी पांचवी दृष्टि से शुक्र की राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में दशमभाव को देखने से पिता से शक्ति मिलती है, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ एवं सुख प्राप्त होता है। नवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च के कारण असन्तोष रहता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी अधिक रुचिकर नहीं होता।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: पंचमभाव: गुरु

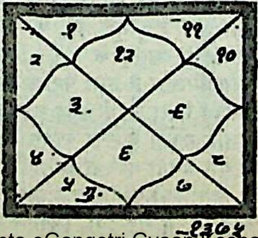


१३६४

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या, बुद्धि एवं वाणी का श्रेष्ठ बल प्राप्त होता है। साथ ही राज्य, पिता एवं व्यवसाय से भी लाभ होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। सातवीं नीचदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं तथा नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक-सौंदर्य, स्वास्थ्य, प्रभाव, स्वाभिमान, गौरव एवं प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है। सामान्यतः ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली होता है तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

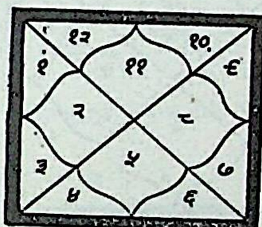
मीनलग्न: षष्ठभाव: गुरु



१३६५

छठे रोग एवं शत्रु के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर प्रभावशाली रहता है, परन्तु उसके शारीरिक-सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में नवमभाव को देखता है, अतः पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है। वह अपने शारीरिक श्रम के बल पर उन्नति करता रहता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से असन्तोष रहता है तथा

कुम्भ-लग्न



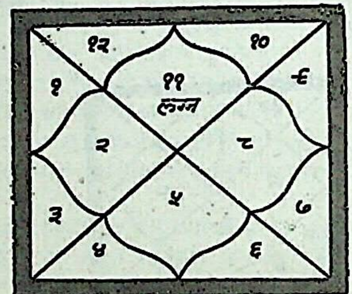
१२०६

[कुम्भ-लग्न वाली कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग फलादेश]

'कुम्भ' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'कुम्भ' लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुस्थिर, वातूनी, पानी का अधिक सेवन करने वाला, सुन्दर भार्या से युक्त, श्रेष्ठ मनुष्यों से संयुक्त, सर्व-प्रिय, चचल-हृदय वाला, अधिक काम, मित्र-प्रिय, दंभा, तेजस्वी शरीर वाला, धीर, वात प्रकृति वाला, स्त्रियों के साथ रहने में अधिक प्रसन्नता पाने वाला, मोटी गरदन वाला, गंजे सिर वाला, लम्बे शरीर वाला, पर-स्त्रियों में आसक्त, अहंकारी, ईर्ष्यालु, द्वेषी तथा भ्रातृ-द्रोही होता है। वह अपनी प्रारम्भिक अवस्था में दुःखी रहता है, मध्यमावस्था में सुख प्राप्त करता है तथा अन्तिम अवस्था में धन, पुत्र, भूमि, मकान आदि का सुख भोगता है। ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय २४ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है।

'कुम्भ' लग्न



१२१०

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव मुख्यतः दो प्रकार से पड़ता है—

(१) ग्रहों की जन्मकालीन स्थिति के अनुसार।
(२) ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के अनुसार।

जातक की जन्मकालीन ग्रह-स्थिति जन्म-कुण्डली में दी गई होती है। उसमें जो ग्रह जिस भाव में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित प्रभाव निरन्तर स्थायी रूप से डालता रहता है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसकी जानकारी पंचाङ्ग द्वारा की जा सकती है। ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के सम्बन्ध में या तो किसी ज्योतिषी से पूछ लेना चाहिए अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिए। इस सम्बन्ध में पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर स्थायी रूप से अपना प्रभाव डालते हैं।

उदाहरण के लिए यदि किसी जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य 'कुम्भ' राशि पर 'प्रथमभाव' में बैठा है, तो उसका स्थायी प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या १२११ के अनुसार पड़ता रहेगा; परन्तु यदि दैनिक ग्रह-गोचर में कुण्डली

देखते समय सूर्य 'मीन' राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा होगा तो उस स्थिति में वह उदाहरण-कुण्डली संख्या १३२३ के अनुसार उतनी अवधि तक जातक के जीवन पर अपना अस्थायी प्रभाव अवश्य डालेगा, जब तक कि वह 'मीन' राशि से हटकर 'मेष' राशि में नहीं चला जाता। 'मेष' राशि में पहुँचकर वह 'मेष' राशि के अनुरूप अपना प्रभाव डालना आरम्भ कर देगा। अतः जिस जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य 'कुम्भ राशि के 'प्रथमभाव' में बैठा हो, उसे उदाहरण-कुण्डली संख्या १२११ में वर्णित फलादेश देखने के पश्चात्, यदि उन दिनों ग्रह-गोचर में सूर्य 'मीन' राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा हो तो उदाहरण-कुण्डली संख्या १३२३ का फलादेश भी देखना चाहिए तथा इन दोनों फलादेशों के समन्वयस्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को अपने वर्तमान समय पर प्रभावकारी समझना चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विषय में जान लेना चाहिए।

'कुम्भ' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदाहरण कुण्डली-संख्या १२११ से १३१८ तक में किया गया है। पंचाङ्ग की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार 'कुम्भ' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों को किन किन उदाहरण-कुण्डलियों के द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना चाहिए—इसका विस्तृत वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है, अतः उनके अनुसार ग्रहों की तात्कालिक स्थिति के सामयिक प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। तदुपरान्त दोनों फलादेशों के समन्वयस्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिए।

इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक जन्म-कुण्डली का ठीक-ठीक फलादेश सहज में ही ज्ञात कर सकता है।

टिप्पणी (१)—पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश से ऊपर अथवा ३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह सूर्य से अस्त होता है, वह भी जातक के ऊपर अपना प्रभाव या तो बहुत कम डालता है या फिर पूर्णतः प्रभावहीन रहता है।

(२) स्थायी जन्म-कुण्डली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा अपनी जन्म-कुण्डली में लिखवा लेने चाहिए, ताकि उनके अंशों के बारे में बार-बार जानकारी प्राप्त करने के झंझट से बचा जा सके। तात्कालिक ग्रह-गोचर के ग्रहों के अंशों की जानकारी पंचांग द्वारा अथवा किसी ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(३) स्थायी जन्म-कुण्डली अथवा तात्कालिक ग्रह-गति-कुण्डली के किसी भाव में यदि एक से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन स्थानों पर उनकी दृष्टियां पड़ती हैं, जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता रहता है। इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में 'ग्रहों की युति का प्रभाव' शीर्षक अध्याय के अन्तर्गत विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन किया गया है, अतः इस विषय की जानकारी वहां से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(४) 'विंशोत्तरी दशा' के सिद्धान्तानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० वर्ष की मानी जाती है। इस आयु-अवधि में जातक नवग्रहों की सभी दशाओं का भोग पूरा कर लेता है। विभिन्न ग्रहों का दशा-काल भिन्न-भिन्न होता है। परन्तु अधिकांश व्यक्ति इतनी लम्बी आयु तक जीवित नहीं रह पाते, अतः वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं भोग का कर पाते हैं। जातक के जीवन के जिस काल में जिस ग्रह की दशा-जिसे 'महादशा' भी कहा जाता है—चल रही होती है, जन्म-कालीन ग्रह-स्थिति के अनुसार उसके जीवन-काल की उतनी अवधि उस ग्रह विशेष के प्रभाव से विशेष रूप से प्रभावित रहती है।

जातक का जन्म किस ग्रह की महादशा में हुआ है और उसके जीवन में किस अवधि से किस अवधि तक किस ग्रह की महादशा चलेगी और वह महादशा जातक के ऊपर अपना क्या विशेष प्रभाव डालेगी—इन सब बातों का उल्लेख भी तीसरे प्रकरण में किया गया है ।

इस प्रकार (१) जन्म-कुण्डली, (२) तात्कालिक ग्रहगोचर-कुण्डली एवं (३) ग्रहों की महादशा—इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है, अतः इन तीनों के समन्वयस्वरूप फलादेश का ठीक-ठीक निर्णय करके अपने भूत, वर्तमान तथा भविष्यत्कालीन जीवन के विषय में सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए ।

कुम्भ (११) लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'सूर्य' का फलादेश

कुम्भ (११) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२११ से १२२२ तक देखना चाहिए।

कुम्भ (११) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२११ के अनुसार समझना चाहिए ।

(२) जिस महीने में 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२१२ के अनुसार समझना चाहिए ।

(३) जिस महीने में 'सूर्य' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२१३ के अनुसार समझना चाहिए ।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२१४ के अनुसार समझना चाहिए ।

(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२१५ के अनुसार समझना चाहिए ।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२१६ के अनुसार समझना चाहिए ।

(७) जिस महीने में 'सूर्य' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२१७ के अनुसार समझना चाहिये ।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२१८ के अनुसार समझना चाहिए ।

(९) जिस महीने में 'सूर्य' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२१९ के अनुसार समझना चाहिए ।

(१०) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२२० के अनुसार समझना चाहिए ।

(११) जिस महीने में 'सूर्य' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुण्डली संख्या १२२१ के अनुसार समझना चाहिए ।

(१२) जिस महीने में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२२२ के अनुसार समझना चाहिए।

कुम्भ (११) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'चन्द्रमा' का फलादेश

कुम्भ (११) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी-फलादेश उदाहरण कुण्डली संख्या १२२३ से १२३४ तक में देखना चाहिए।

कुम्भ (११) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२२३ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मीन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२२४ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मेष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२२५ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस दिन 'चन्द्रमा 'वृष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२२६ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस दिन चन्द्रमा' 'मिथुन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२२७ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२२८ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'सिंह' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२२९ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कन्या' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२३० के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'तुला' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२३१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२३२ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'धनु' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२३३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मकर' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२३४ के अनुसार समझना चाहिए।

कुम्भ (११) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'मंगल' का फलादेश

कुम्भ (११) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२३५ से १२४६ तक में देखना चाहिए।

कुम्भ (११) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'मंगल' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली-संख्या १२३५ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'मंगल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२३६ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'मंगल' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२३७ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'मंगल' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२३८ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'मंगल' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२३९ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२४० के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'मंगल' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२४१ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'मंगल' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२४२ के अनुसार समझना चाहिए!

(९) जिस महीने में 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२४३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'मंगल' वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२४४ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने मे 'मंगल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२४५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'मंगल 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या१२४६ के अनुमार समझना चाहिए।

कुम्भ (११) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'बुध' का फलादेश

कुम्भ (११) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी -फलादेश उदाहरण- कुण्डली संख्या १२४७ से १२५८ तक में देखना चाहिए।

कुम्भ (११) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'बुध' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२४७ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'बुध' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२४८ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'बुध' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२४९ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२५० के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२५१ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२५२ के अनुसार समझना .चाहिए।

(७) जिस महीने में 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२५३ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२५४ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'बुध' 'तुला' राशि पर हो, उह महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२५५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'बुध' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२५६ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'बुध' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२५७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'बुध' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२५८ के अनुसार समझना चाहिए।

कुम्भ (११) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर -कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'गुरु' का फलादेश

कुम्भ (११) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२५९ से १२७० तक में देखना चाहिए।

कुम्भ (११) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२५९ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२६० के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२६१ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२६२ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२६३ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२६४ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'गुरु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२६५ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२६६ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'गुरु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२६७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२६८ के अनुसार समझना चाहिये।

(११) जिस वर्ष में 'गुरु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२६९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२७० के अनुसार समझना चाहिए।

कुम्भ (११) लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'शुक्र' का फलादेश

कुम्भ (११) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२७१ से १२८२ तक में देखना चाहिए।

कुम्भ (११) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये—

(१) जिस महीने में 'शुक्र' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२७१ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस महीने में 'शुक्र' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२७२ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'शुक्र' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२७३ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२७४ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२७५ के अनुसार समझना चाहिये।

(६) जिस महीने में 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२७६ के अनुसार समझना चाहिये।

(७) जिस महीने में 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२७७ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस महीने में 'शुक्र' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२७८ के अनुसार समझना चाहिये।

(९) जिसे महीने में 'शुक्र' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२७९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने मे 'शुक्र' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२८० के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'शुक्र' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२८१ के अनुसार समझना चाहिये।

(१२) जिस महीने में 'शुक्र' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२८२ के अनुसार समझना चाहिये।

कुम्भ (११) लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'शनि' का फलादेश

कुम्भ (११) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२८३ से १२९४ तक में देखना चाहिये।

कुम्भ (११) जन्म लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये—

(१) जिस वर्ष में 'शनि' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२८३ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस वर्ष में 'शनि' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२८४ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'शनि' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२८५ के अनुसार समझना चाहिये।

(४) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२८६ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'शनि' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२८७ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'शनि' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२८८ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'शनि' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२८९ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'शनि' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२९० के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'शनि' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२९१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२९२ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'शनि' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२९३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'शनि' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२९४ के अनुसार समझना चाहिए।

कुम्भ (११) लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

राहु का फलादेश

कुम्भ (११) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण कुण्डली संख्या १२९५ से १३०६ तक में देखना चाहिए।

कुम्भ (११) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'राहु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२९५ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२९६ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'राहु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२९७ के अनुसार समझना चाहिये।

(४) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२९८ के अनुसार समझना चाहिये।

(५) जिस वर्ष में 'राहु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२९९ के अनुसार समझना चाहिये।

(६) जिस वर्ष में 'राहु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३०० के अनुसार समझना चाहिये।

(७) जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३०१ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३०२ के अनुसार समझना चाहिये।

(९) जिस वर्ष में 'राहु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३०३ के अनुसार समझना चाहिये।

(१०) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३०४ के अनुसार समझना चाहिये।

(११) जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३०५ के अनुसार समझना चाहिये।

(१२) जिस वर्ष में 'राहु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३०६ के अनुसार समझना चाहिये।

कुम्भ (११) लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'केतु' का फलादेश

कुम्भ(११) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३०७ से १३१८ तक में देखना चाहिए।

कुम्भ (११) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिये—

(१) जिस वर्ष में 'केतु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३०७ के अनुसार समझना चाहिये।

(२) जिस वर्ष में 'केतु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३०८ के अनुसार समझना चाहिये।

(३) जिस वर्ष में 'केतु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३०९ के अनुसार समझना चाहिये।

(४) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३१० के अनुसार समझना चाहिये।

(५) जिस वर्ष में 'केतु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३११ के अनुसार समझना चाहिये।

(६) जिस वर्ष में 'केतु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३१२ के अनुसार समझना चाहिये।

(७) जिस वर्ष में 'केतु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३१३ के अनुसार समझना चाहिये।

(८) जिस वर्ष में 'केतु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३१४ के अनुसार समझना चाहिये।

(९) जिस वर्ष में 'केतु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३१५ के अनुसार समझना चाहिये।

(१०) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३१६ के अनुसार समझना चाहिये।

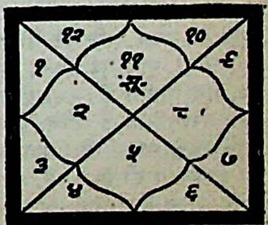
(११) जिस वर्ष में 'केतु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३१७ के अनुसार समझना चाहिये।

(१२) जिस वर्ष में 'केतु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३१८ के अनुसार समझना चाहिये।

'कुम्भ' लग्न में 'सूर्य' का फल

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये।

कुम्भलग्नः प्रथमभावः सूर्य

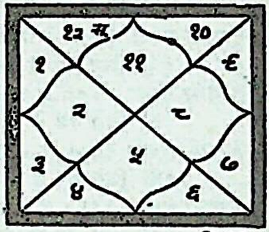


१३१९

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है, परन्तु तेज एवं शक्ति की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ी दौड़-धूप करने वाला तथा तेज स्वभाव का होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपनी ही सिंह राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री-पक्ष से विशेष सुख मिलता है और वह अपने पुरुषार्थ द्वारा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त करता है। उसका गार्हस्थ्य-जीवन आनन्दमय तथा प्रभावशाली बना रहता है

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: द्वितीयभाव: सूर्य

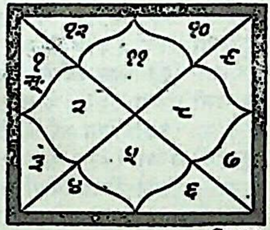


१२१२

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब-पक्ष से भी पर्याप्त सहयोग एवं शक्ति मिलती है। परन्तु स्त्री-पक्ष में जातक को किसी विशेष कमी का अनुभव होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में अष्टम-भाव को देखता है, अतः जातक की आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति में वृद्धि होती है तथा दैनिक जीवन प्रभावशाली बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: तृतीयभाव: सूर्य

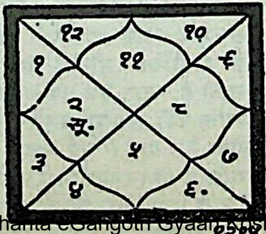


१२१३

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ में अत्यधिक वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी पर्याप्त मिलता है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ द्वारा व्यवसाय तथा अन्य क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु शुक्र की तुला राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक धर्म के विषय में लापरवाह रहता है तथा भाग्योन्नति में भी कुछ कमी का अनुभव करता है। ऐसा व्यक्ति यश-सम्मान भी अधिक प्राप्त नहीं करता।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: चतुर्थभाव: सूर्य

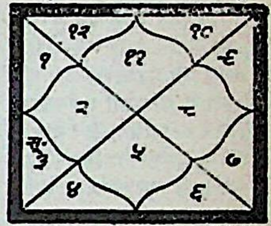


१२१४

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख कुछ कठिनाई के साथ मिलता है। इसी प्रकार व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ परेशानियों के साथ सफलता मिलती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता से सह-योग, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता रहता है। उसकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: पंचमभाव: सूर्य

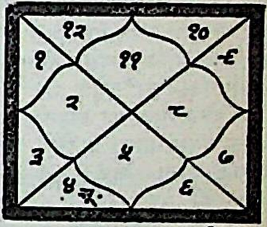


१२१५

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में प्रवीणता प्राप्त होती है तथा सन्तान-पक्ष से भी सहयोग मिलता है। उसे बुद्धिमती स्त्री प्राप्त होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक अपनी बुद्धि के योग से विशेष लाभ प्राप्त करता है तथा अपने जीवन को सुखी, धनी, उन्नत तथा प्रभावशाली बनाता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: षष्ठभाव: सूर्य

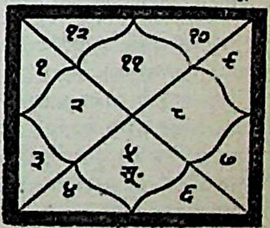


१२१६

छठे रोग एवं शत्रु के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपना अत्यधिक प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से लाभ उठाता है। उसे व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है तथा स्त्री की शक्ति कुछ मतभेद के साथ प्राप्त होती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे कुछ कठिनाइयों के साथ शक्ति प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: सप्तमभाव: सूर्य

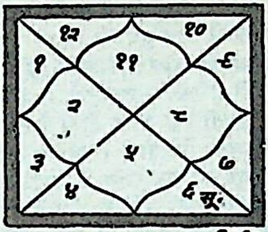


१२१७

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी ही सिंह राशि पर स्थित स्वक्षेत्री सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री का सुख पर्याप्त मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। उसे ससुराल से शक्ति मिलती है तथा गृहस्थ-जीवन आनन्दपूर्ण बना रहता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है। स्त्री-पक्ष से सामान्य मतभेद बने रहने के बावजूद भी व्यावसायिक सफलता से गृहस्थ-जीवन सुखमय बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: अष्टमभाव: सूर्य

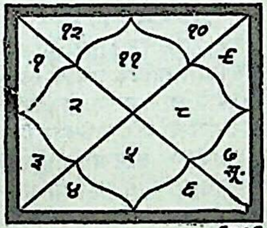


१२२८

आठवें आयु एवं पुरातत्व के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्व की शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु स्त्री-पक्ष में परेशानी एवं व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से व्यवसाय में कुछ सफलता मिलती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक व्यवसाय एवं कठिन परिश्रम द्वारा धन की वृद्धि करता है और उसे अपने कुटुम्ब का सहयोग भी प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: नवमभाव: सूर्य

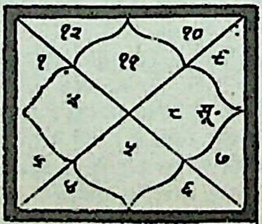


१२२९

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक के भाग्य में कुछ कमी आती है तथा धर्म का पालन भी यथाविधि नहीं होता, उसे स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थ-साधन के लिए उचित-अनुचित का विचार भी नहीं करता। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से मंगल की मेष राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों की शक्ति प्राप्त होती है तथा पराक्रम में भी विशेष वृद्धि होती है ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती तथा धैर्यवान होता है तथा अपने पुरुषार्थ द्वारा सफलताएँ प्राप्त करता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: दशमभाव: सूर्य

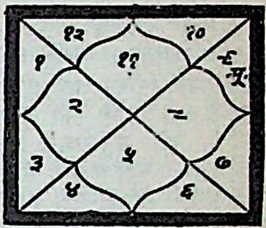


१२३०

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता से सहयोग, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है। वह स्त्री-पक्ष से भी श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त करता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता के सुख में कमी रहती है तथा भूमि एवं मकान आदि का सुख भी कम ही मिल पाता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: एकादशभाव: सूर्य

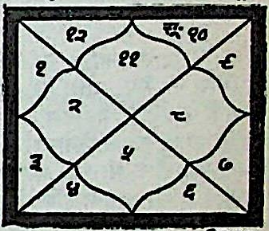


१२२१

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को व्यवसाय के द्वारा श्रेष्ठ आमदनी होती है तथा स्त्री-पक्ष से भी विशेष लाभ मिलता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में विशेष उन्नति होती है तथा सन्तान-पक्ष से भी सुख एवं सन्तोष प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: द्वादशभाव: सूर्य



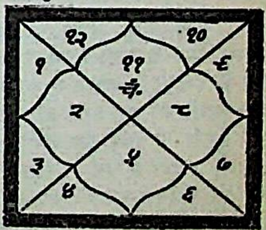
१२२२

बारहवें व्यय-भाव में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने खर्च के कारण कठिनाई उठानी पड़ती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ की शक्ति मिलती है, परन्तु स्थानीय व्यव-साय में नुकसान रहता है तथा स्त्री के सुख में भी बहुत कमी आती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रखता है तथा झगड़े के मामलों में लाभ उठाता है तथा सफलता प्राप्त करता है।

'कुम्भ' लग्न में 'चन्द्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा, का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: प्रथमभाव: चन्द्र

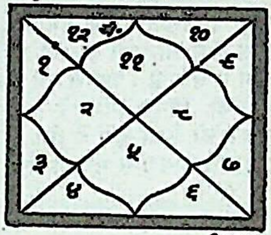


१२२३

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित षष्ठेष चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का शरीर कुछ रोगी रहता है। उसके मन में भय, चिन्ता एवं परेशानियों का निवास रहता है तथा शत्रु-पक्ष से भी उसे कठिनाइयाँ बनी रहती हैं, परन्तु वह अपने मनोबल द्वारा शत्रुओं पर प्रभाव स्थापित करता है तथा झगड़ों पर विजय भी पाता रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक का स्त्री-पक्ष से भी कुछ मतभेद रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी चिन्ताएं एवं परेशानियाँ बनी रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: द्वितीयभाव: चन्द्र

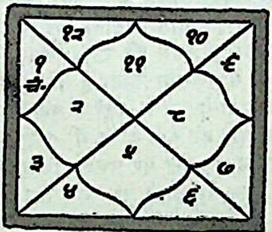


१२२४

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र गुरु की कुम्भ राशि पर स्थित षष्ठेप चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपने मनोबल एवं परिश्रम द्वारा धन का उपार्जन करता है तथा कुटुम्ब की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। उसे शत्रु-पक्ष से कुछ परेशानी भी रहती है, परन्तु झगड़े-झंझटों से लाभ भी होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में अष्टम-भाव को देखता है, अत: जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के विषय में कुछ परेशानी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: तृतीयभाव: चन्द्र

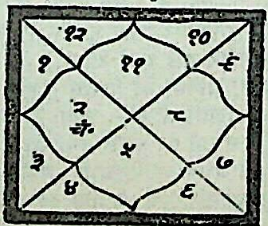


१२२५

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित षष्ठेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के मनोबल तथा पराक्रम की वृद्धि तो होती है, परन्तु कुछ कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं, साथ ही भाई-बहिनों से भी कुछ मतभेद बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि में नवमभाव को देखता है, अत: जातक की भाग्योन्नति तथा धर्म के मार्ग में भी कुछ कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु अन्तत: प्रभाव की वृद्धि होती है और भाग्य की उन्नति भी होती है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: चतुर्थभाव: चन्द्र

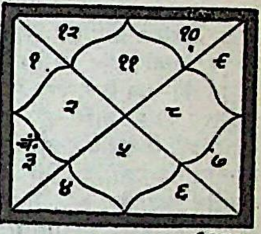


१२२६

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित षष्ठेश एवं उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। वह शत्रुपक्ष पर प्रभाव शाली रहता है तथा झगड़े-झंझटों के मामलों से लाभ उठाता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में दशमभाव को देखता है, अत: जातक को पिता के सुख में कमी आती है, राज्य के क्षेत्र में झंझट तथा व्यवसाय के क्षेत्र में हानि एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न पंचमभाव: चन्द्र

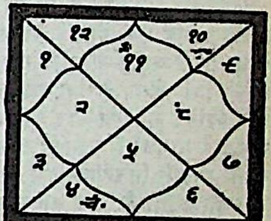


१२२७

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित षष्ठेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपने मनोबल एवं बुद्धिबल द्वारा शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रखता है, परन्तु उसे विद्याध्ययन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है एवं सन्तान-पक्ष से भी परेशानी बनी रहती है। उसके मन में और भी अनेक प्रकार की चिन्ताओं का निवास रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक कुछ परेशानियों से जूझते हुए अपनी आमदनी की वृद्धि करता है तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर लाभ कमाता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: षष्ठभाव: चन्द्र

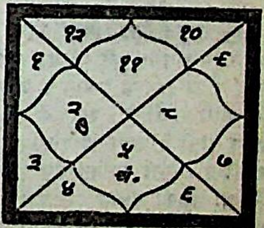


१२२८

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपनी ही कर्क राशि पर स्थित षष्ठेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपना भारी प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में बड़े धैर्य से काम लेकर सफलता प्राप्त करता है, परन्तु उसके मन में चिन्ताएं बनी रहती हैं। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में द्वादश-भाव को देखता है, अतः जातक को अपना खर्च चलाने में कठिनाइयाँ आती हैं तथा बाहरी स्थानों के सम्बंध से भी परेशानी बनी रहती है। वह अनेक प्रकार की युक्तियों का आश्रय लेकर ही अपना खर्च चलाता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: सप्तमभाव: चन्द्र

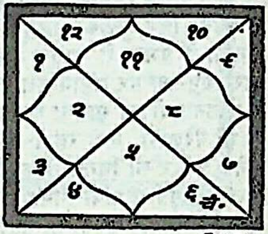


१२२९

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित षष्ठेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से रोग, वैमनस्य तथा परेशानी बनी रहती है एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति शत्रु-पक्ष पर अपना प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से शक्ति प्राप्त करता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक को रोग एवं चिन्ताओं का शिकार बनना पड़ता है, परन्तु उसका मनोबल बढ़ा रहता है। साथ ही उसे दौड़-धूप भी करनी पड़ती है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा, का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: अष्टमभाव: चन्द्र

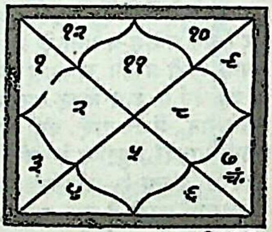


१२३०

आठवें आयु एवं पुरातत्व के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित षष्ठेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आयु के सम्बन्ध में कुछ परेशानी रहती है एवं पुरातत्व की भी हानि होती है। वह शत्रु-पक्ष पर बड़ी कठिनाइयों से प्रभाव स्थापित कर पाता है। उसे हर समय चिन्ताएं घेरे रहती हैं। ऐसे व्यक्ति का ननसाल-पक्ष भी कमजोर रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से गुरु की मीन राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अत: जातक धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: नवमभाव:चन्द्र

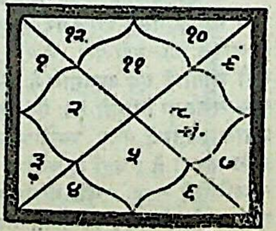


१२३१

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित षष्ठेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की उन्नति में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा यश की भी कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से लाभ प्राप्त करता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: जातक को भाई-बहिन के सम्बंध में कुछ परेशानी का सामना करना पड़ता है, परन्तु उसके पराक्रम एवं मनोबल की वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म कुण्डली के 'दशम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: दशमभाव: चन्द्र

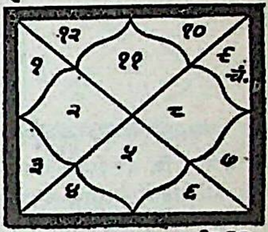


१२३२

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित षष्ठेश एवं नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता-पक्ष से सुख में कमी रहती है। राज्य के क्षेत्र से सम्मान में कुछ हानि प्राप्त होती है, तथा व्यावसायिक उन्नति में रुकावटें आती रहती हैं। ऐसा व्यक्ति शत्रु-पक्ष से परेशान बना रहता है तथा उसका प्रभाव भी कम होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अत: उसे माता, भूमि एवं मकान आदि का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश-भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: एकादशभाव: चन्द्र

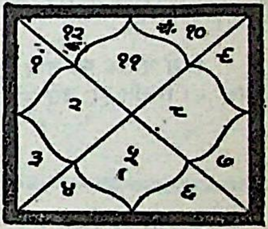


१२३३

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित षष्ठेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपने मनोबल एवं परिश्रम द्वारा आमदनी की वृद्धि करता है। वह शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बनाये रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से लाभ उठाता है। परन्तु उसे अपनी आमदनी बढ़ाने के लिये दौड़-धूप अधिक करनी पड़ती है तथा लाभ के पक्ष से कुछ असन्तोष भी बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध को मिथुन राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: जातक को विद्या, बुद्धि की यथेष्ट शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु सन्तान-पक्ष से कुछ चिन्ता बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली, के 'पंचम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: द्वादशभाव: चन्द्र



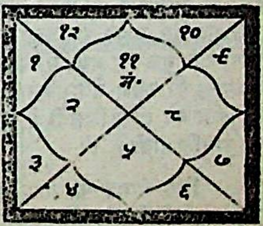
१२३४

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने के लिए कठिनाई बनी रहती है। वह अपने मनोबल तथा परिश्रम द्वारा खर्च चलाता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी परेशानी होती है। शत्रु-पक्ष से मानसिक चिन्ताएं बनी रहती हैं। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से अपनी ही कर्क राशि में षष्ठभाव को देखता है, अत: जातक शत्रु-पक्ष पर नरमाई से काम लेकर अपना प्रभाव स्थापित करता है एवं सफलता प्राप्त करता है।

'कुम्भ' लग्न में 'मंगल' का फल

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: प्रथमभाव: मंगल



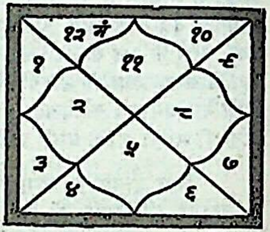
१२३५

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है तथा शारीरिक-सौन्दर्य की प्राप्ति होती है। वह पिता के पक्ष से कुछ असन्तोष-युक्त सहयोग प्राप्त करता है, राज्य के क्षेत्र में प्रभाव को बढ़ाता है तथा व्यवसाय की उन्नति करता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि भी होती है। यहाँ से चन्द्रमा चौथी सामान्य मित्र दृष्टि से शुक्र की वृषराशि में चतुर्थभाव को देखता है अत: माता, भूमि एवं मकान की [illegible] प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को

देखने से स्त्री-पक्ष तथा व्यवसाय के पक्ष से भी सुख एवं शक्ति मिलती है तथा आठवीं मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति भी बढ़ती है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के द्वितीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: द्वितीयभाव: मंगल

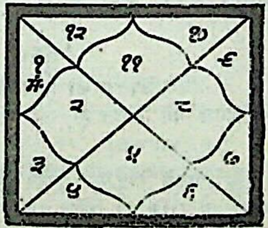


१२३६

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। परन्तु भाई-बहिन एवं पिता के सुख में कमी रहती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है तथा आठवीं सामान्य मित्र दृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य एवं धर्म की विशेष उन्नति होती है तथा यश भी प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: तृतीयभाव: मंगल

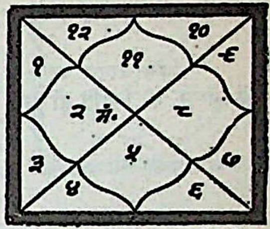


१२३७

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपनी ही मेष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है। यहाँ से मंगल चौथी नीचदृष्टि से षष्ठ-भाव को देखता है, अतः शत्रु-पक्ष से परेशानी रहती है तथा ननसाल के पक्ष में हानि होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ के बल पर बड़ा भाग्यवान् बनता है। आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में दशमभाव को देखने के कारण जातक को पिता की शक्ति मिलती है, राज्य से प्रतिष्ठा प्राप्त होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी उन्नति होती है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: चतुर्थभाव: मंगल

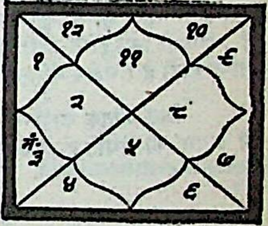


१२२८

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने सामान्य-मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक कुछ कमी के साथ माता, भूमि एवं मकान आदि की शक्ति प्राप्त करता है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में पुरुषार्थ द्वारा सफलता प्राप्त होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, सुख, सम्मान, यश एवं सफलता की प्राप्ति होती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी खूब होती है। ऐसी ग्रह-स्थिति वाला व्यक्ति सुखी, धनी, यशस्वी तथा प्रभावशाली जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: पंचमभाव: मंगल

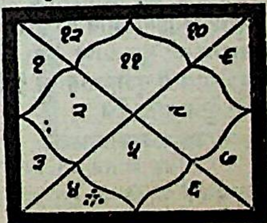


१२३९

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है तथा-सन्तान पक्ष से भी सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति भाई-बहिन एवं पिता से भी शक्ति प्राप्त करता है तथा राज्य से प्रतिष्ठा एवं व्यवसाय से लाभ उठाता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में अधिक सफलता मिलती है तथा आठवीं उच्च दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के श्रेष्ठ सम्बन्ध से लाभ एवं शक्ति की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति कानूनी बातें करने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: षष्ठभाव: मंगल



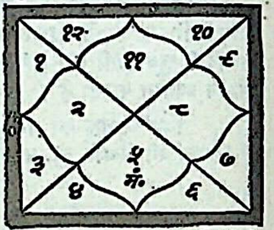
१२४०

छठे रोग एवं शत्रु के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक कुछ कठिनाइयों के साथ शत्रु-पक्ष पर सफलता प्राप्त करता है। भाई-बहिन तथा पिता-पक्ष से कुछ वैमनस्य रहता है तथा राज्य के क्षेत्र में भी कम प्रभाव रहता है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः जातक कठिन परिश्रम द्वारा भाग्य की उन्नति करता है तथा धर्म का भी थोड़ा-बहुत पालन करता है। सातवीं उच्चदृष्टि से द्वादशभाव को शत्रु की

राशि में देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से विशेष सम्बन्ध बनता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक-सौंदर्य में कुछ कमी आती है, परन्तु प्रभाव में वृद्धि होती है और स्वभाव में तेजी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: सप्तमभाव: मंगल

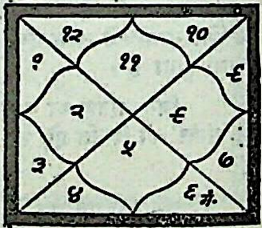


१२४१

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष उन्नति प्राप्त करता है। उसे भाई-बहिन की शक्ति भी मिलती है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में दशमभाव को देखता है; अतः पिता से सहयोग, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ की प्राप्ति होती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक-सौंदर्य में कुछ कमी रहती है, परन्तु मान एवं प्रभाव की वृद्धि होती है। आठवीं मित्र दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक भाग्यवान् तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: अष्टमभाव: मंगल

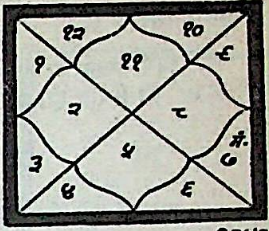


१२४२

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। परन्तु पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं, भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में भी कमी आती है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी अच्छी रहती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से परिश्रम द्वारा धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है तथा आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: नवमभाव: मंगल

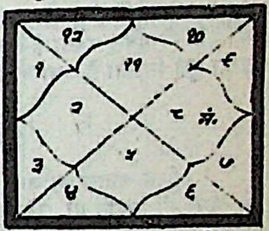


१२४३

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। उसे पिता का सुख, राज्य में सम्मान तथा व्यवसाय में सफलता भी मिलती है। यहाँ से मंगल चौथी उच्चदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों की शक्ति मिलती है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। आठवीं सामान्य-मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान आदि का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान् तथा पुरुषार्थी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: दशमभाव: मंगल

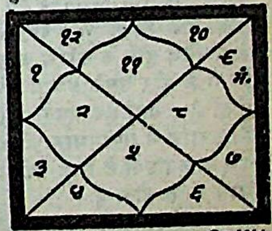


१२४४

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपनी ही वृश्चिक राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता की शक्ति, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय में सफलता प्राप्त होती है। उसे भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है तथा पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः शारीरिक-सौंदर्य में कमी रहते हुये भी प्रभाव, स्वाभिमान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता के सुख में सामान्य कमी रहती है तथा भूमि, मकान आदि की प्राप्ति होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि की विशेष वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: एकादशभाव: मंगल



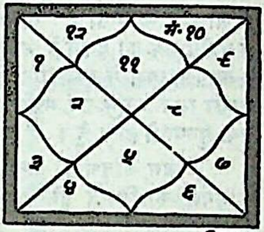
१२४५

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की आमदनी में विशेष वृद्धि होती है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। वह अपने पराक्रम द्वारा खूब धन कमाता है तथा भाई-बहिनों का सुख भी प्राप्त करता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वितीय-भाव को देखता है। अतः धन का संचय खूब होता है तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से शक्ति मिलती है तथा विद्या-बुद्धि का लाभ होता है। आठवीं नीच दृष्टि से

षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा ननसाल का पक्ष भी कमजोर रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: द्वादशभाव: मंगल



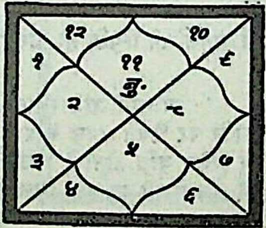
१२४६

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से विशेष लाभ होता है। राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ हानि उठानी पड़ती है। वह अपनी मातृभूमि की अपेक्षा अन्य स्थानों में सफलता प्राप्त करता है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: भाई-बहिनों की शक्ति मिलती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। सातवीं नीच दृष्टि से मित्र चन्द्रमा की राशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा ननसाल का पक्ष भी दुर्बल रहता है। आठवीं मित्र दृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री द्वारा दुख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

'कुम्भ' लग्न में 'बुध' का फल

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: प्रथमभाव: बुध

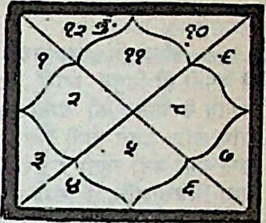


१२४७

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित अष्टमेश बुध के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है। परन्तु उसे आयु, पुरातत्त्व एवं सन्तान-पक्ष की शक्ति प्राप्त होती है। मन में कुछ चिन्तायें भी बनी रहती हैं। बुध के पंचमेश होने के कारण जातक की विवेक शक्ति उत्तम रहती है और उसके प्रभाव तथा सम्मान की वृद्धि भी होती है। यहाँ बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में सप्तमभाव को देखता है, अत: जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ स्त्री-पक्ष से सुख एवं व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: द्वितीयभाव: बुध

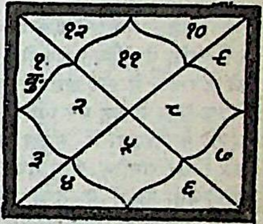


१२४८

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक धन का संचय नहीं कर पाता तथा कुटुम्ब से भी विरोध रहता है। उसका विद्या तथा संतान-पक्ष भी कमजोर रहता है तथा जीवन-यापन के सम्बन्ध में चिन्तायें भी बनी रहती हैं। यहाँ से बुध सातवीं उच्चदृष्टि से अपनी ही कन्या राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु की शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु पुरातत्त्व का लाभ अपूर्ण रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने विवेक एवं विद्या-बुद्धि के बल पर सम्मान तथा लाभ प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये।

कुम्भलग्न: तृतीयभाव: बुध

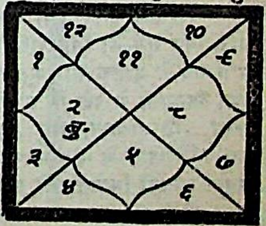


१२४९

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित अष्टमेश बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों से कष्ट मिलता है तथा सन्तान-पक्ष से भी परेशानी रहती है। उसे विद्या-बुद्धि एवं पराक्रम का लाभ तो होता है, परन्तु कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में नवमभाव को देखता है, अतःजातक कुछ कठिनाइयों के साथ अपने भाग्य की उन्नति करता है तथा धर्म-पालन की दिशा में भी सचेष्ट बना रहता है। उसे पुरातत्त्व का भी लाभ होता है, परन्तु प्रत्येक क्षेत्र में सफलता पाने के लिये उसे संघर्ष अवश्य करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म—कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: चतुर्थभाव: बुध

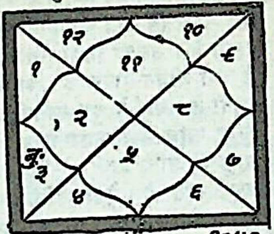


१२५०

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित अष्टमेश बुध के प्रभाव से जातक को कुछ परेशानियों के साथ भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है तथा माता के सुख में भी कुछ कमी रहती है। उसे सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है, पुरातत्त्व एवं आयु की शक्ति में वृद्धि होती है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में दशमभाव को देखता है, अतः पिता के कारण कुछ परेशानी रहती है एवं राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्क 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: पंचमभाव: बुध

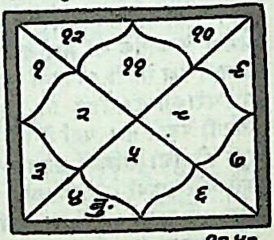


१२५१

पांचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपनी ही मिथुन राशि पर स्थित अष्टमेश बुध के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कुछ कठिनाइयों के साथ शक्ति प्राप्त होती है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कुछ कमी बनी रहती है। वह बुद्धिमान्, वाणी का धनी तथा विवेक-शक्ति से सम्पन्न अवश्य होता है, जिसके कारण अपने प्रभाव का विस्तार करता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में एकादश-भाव को देखता है, अतः जातक अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: षष्ठभाव: बुध

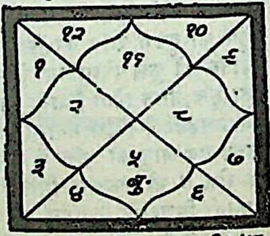


१२५२

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित अष्टमेश बुध के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष से कुछ अशान्ति रहती है, परन्तु वह अपनी विवेक-बुद्धि से उन पर विजय प्राप्त करता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में सफल एवं लाभान्वित होता है। उसे विद्या, सन्तान, आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कमजोरी बनी रहती है तथा परेशानियों का सामना भी करना पड़ता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से वह अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा लाभ उठाता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: सप्तमभाव: बुध

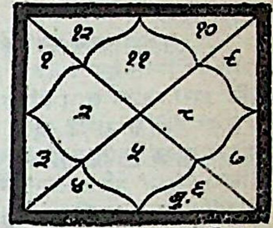


१२५३

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित अष्टमेश के बुध के प्रभाव से जातक को कुछ परेशानियों के बाद स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता प्राप्त होती है। उसे विद्या, बुद्धि, सन्तान, आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति का भी कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ मिलता है। यहाँ से बुध अपना सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में प्रथम-भाव को देखता है, अतः जातक को सामान्य रूप से शारीरिक परेशानी तो रहती है, परन्तु उसके प्रभाव एवं सम्मान की वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: अष्टमभाव: बुध

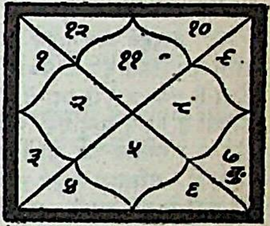


१२५४

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपनी ही कन्या राशि पर स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की विशेप शक्ति प्राप्त होती है। उसका दैनिक जीवन बड़ा प्रभावशाली रहता है। परन्तु विद्या एवं सन्तान के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है, जबकि उसकी विवेक-शक्ति तीव्र होती है और वाणी में विशेप प्रभाव पाया जाता है। यहाँ से बुध सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र गरु की मीन राशि मे द्वितीयभाव को देखता है, अत: जातक को धन-संचय में कठिनाई पड़ती है तथा कुटुम्ब से मी कुछ क्लेश प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: नवमभाव: बुध

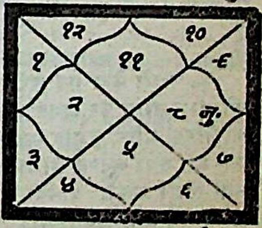


१२५५

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेप वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन मी बना रहता है। बुद्ध के अष्टमेश होने के कारण कमी-कमी कुछ कमियाँ मी आ जाती हैं। सन्तान, विद्या, आयु तथा पुरातत्त्व शक्ति का जातक को पर्याप्त लाम होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेप राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: जातक को माई-बहिनों एवं पराक्रम का कुछ त्रुटिपूर्ण लाम होता है। कुल मिलाकर ऐसा जातक धनी तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: दशमभाव: बुध

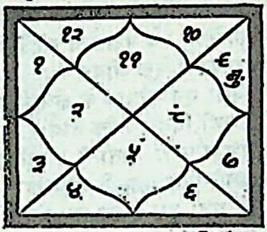


१२५६

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित अष्टमेश बुध के प्रभाव से जातक को पिता से कुछ परेशानी, राज्य से कुछ बाधाएं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ प्राप्त होती हैं, परन्तु जातक को आयु, पुरातत्त्व, सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में यथेष्ट सफलता मिलती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की वृपभ राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अत: जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है तथा यश एवं विवेक की वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: एकादशभाव: बुध

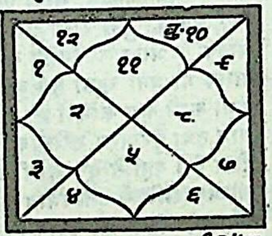


१२५७

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा पर्याप्त लाभ अर्जित करता है, परन्तु बुध के अष्टमेश होने के कारण कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं। उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है तथा दैनिक जीवन भी उल्लासपूर्ण रहता है। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी ही मिथुन राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। ऐसे व्यक्ति की वाणी प्रभावपूर्ण रहती है और वह स्वार्थी भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: द्वादशभाव: बुध



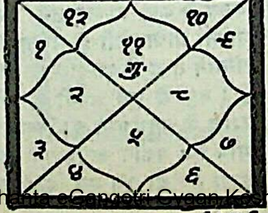
१२५८

बारहवें व्यय-भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे कुछ लाभ मिलता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व-शक्ति की हानि भी होती है। सन्तान-पक्ष से चिन्ता तथा विद्या की कमी रहती है। मस्तिष्क में हर समय चिन्ताएं घर किए रहती हैं। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु-पक्ष में कुछ नरमी से काम निकलता है तथा अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा सफलता प्राप्त करता है।

'कुम्भ' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: प्रथमभाव: गुरु



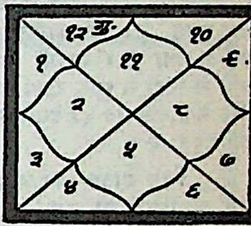
१२५९

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शारीरिक शक्ति, प्रभाव एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। उसे धन तथा कुटुम्ब की शक्ति का भी लाभ होता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में बहुत सफलता मिलती है तथा सन्तान-पक्ष से भी सुख प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-पक्ष में सफलता मिलती है तथा व्यवसाय के द्वारा धन की उन्नति

होती है। नवीं शत्रु दृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण भाग्य की उन्नति भी होती है तथा धन द्वारा धर्म का पालन भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्नः द्वितीयभावः गुरु

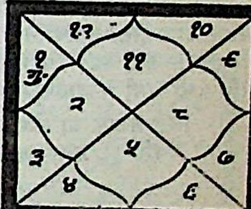


२२६०

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपनी ही मीन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक धन का खूब संचय करता है और उसे कुटुम्ब का सुख भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है। वह अपनी धनोन्नति के लिये निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं उच्च दृष्टि से मित्र की राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है एवं झगड़े-झंझट के मार्ग से लाभ मिलता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्व की वृद्धि होती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता द्वारा सहयोग, राज्य द्वारा सम्मान एवं व्यवसाय द्वारा सफलता तथा लाभ की प्राप्ति भी होती है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उस 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्नः तृतीयभावः गुरु

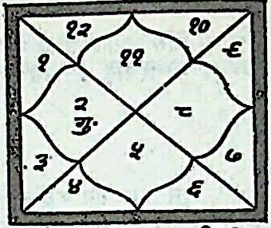


२२६१

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है उसे धन तथा कौटुम्बिक सुख का भी यथेष्ट लाभ होता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखता है। अतः स्त्री के पक्ष में सौन्दर्य एवं सुख-लाभ की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी उसे सफलता मिलती है। उसे अपनी ससुराल से भी कुछ लाभ मिलता है। सातवीं दृष्टि से शत्रु शुक्र की तुला राशि में नवम भाव के देखने से कुछ रुकावटों के साथ भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म की जिज्ञासा रहती है। नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में अत्यधिक वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: चतुर्थभाव: गुरु

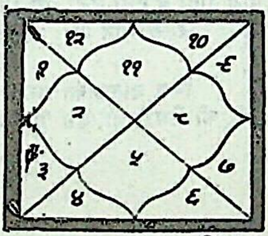


१२६२

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कुछ कमी रहती है, परन्तु माता से लाभ होता है, साथ हीं भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है तथा धन और कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु में वृद्धि तथा पुरातत्व का भी लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन शान-शौकत से व्यतीत होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ मिलता है। नवीं नीच-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च तथा बाहरी स्थान के सम्बन्धों के कारण परेशानी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: पंचमभाव: गुरु

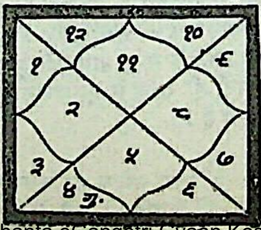


१२६३

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि की विशेष शक्ति प्राप्त होती है। धन, कुटुम्ब तथा सन्तान-पक्ष का भी खूब लाभ होता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं दृष्टि से शुक्र की राशि में नवमभाव को देखता है। अतः कुछ कठिनाइयों के साथ जातक के भाग्य की वृद्धि होती है, और वह धर्म का पालन भी करता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादशभाव को देखने से बुद्धि-योग द्वारा उसे धन का पर्याप्त लाभ होता है तथा नवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक प्रभाव में वृद्धि होती है। स्वार्थ, परमार्थ, प्रभाव, सम्मान, योग्यता, सज्जनता, विनम्रता, सौभाग्य आदि सभी क्षेत्रों में जातक सफल होता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उस 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: षष्ठभाव: गुरु



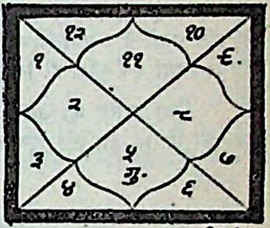
छठे रोग एवं शत्रु भवन अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक धन की शक्ति से शत्रु-पक्ष पर बहुत प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से लाभ प्राप्त करता है। उसका ननसाल पक्ष ऊँचा होता है। कुटुम्ब से कुछ झंझट एवं धन-प्राप्ति के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ भी उपस्थित होती हैं। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्र दृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः उसे पिता से शक्ति, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ होता है। सातवीं नीच दृष्टि से द्वादश-

१२६४

भाव को शत्रुराशि में देखने से खर्च तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से परेशानी रहती है। नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखने के कारण कुछ परिश्रम तथा झंझटों के साथ धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्नः सप्तमभावः गुरु

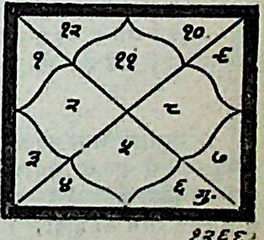


१२६५

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष में सौन्दर्य, धन एवं सुख की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय द्वारा भी पर्याप्त लाभ होता है। घर की प्रतिष्ठा खूब बढ़ती है तथा धन एवं कुटुम्ब का पर्याप्त सहयोग बना रहता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी खूब रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी आ जाती है, परन्तु मान-सम्मान एवं प्रभाव की वृद्धि होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। ऐसा जातक बड़ा बहादुर, यशस्वी, सुखी, धनी तथा सुयोग्य होता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्नः अष्टमभावः गुरु

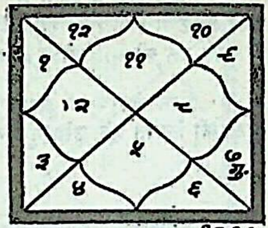


१२६६

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के प्रभाव में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। गुरु के अष्टमेश होने के कारण संचित धन की हानि तथा कुटुम्ब से कष्ट का योग भी बनता है। आमदनी तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ कमी आती है। यहाँ से शनि अपनी पाँचवीं नीच-दृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च तथा बाहरी स्थान के सम्बन्धों के कारण कठिनाई रहती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि के द्वितीयभाव को देखने से जातक धन-वृद्धि के लिये विशेष परिश्रम करता है तथा कुटुम्ब से सहयोग मिलता है। नवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता के सुख में कुछ कमी आती है तथा भूमि एवं मकान आदि की भी सामान्य-शक्ति प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: नवमभाव: गुरु

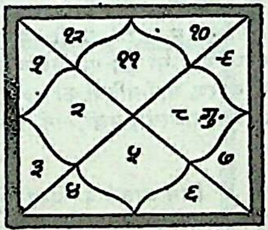


१२६७

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष वृद्धि होती है। वह न्यायोचित मार्ग से प्रचुर धन प्राप्त करता है तथा धर्म का पालन करता है। उसे कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अत: शारीरिक प्रभाव की वृद्धि होती है तथा जातक भाग्यवान् माना जाता है। सातवीं मित्र दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन की शक्ति मिलती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। नवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण सन्तान से सुख मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि की विशेष उन्नति होती है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: दशमभाव: गुरु

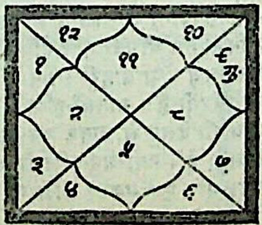


१२६८

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा शक्ति, राज्य द्वारा सम्मान तथा व्यवसाय द्वारा धन एवं सफलता का यथेष्ट लाभ होता है। वह बड़ी शान से रहता है तथा भाग्यवान् माना जाता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीय भाव को देखता है अत: धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि होती है। सातवीं सामान्य शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता का सुख एवं भूमि और भवन का यथेष्ट लाभ होता है। नवीं उच्चदृष्टि से चन्द्रमा की राशि में षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष पर बड़ा भारी प्रभाव रहता तथा झगड़े-झंझटों के मार्ग से सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक बड़ा धनी, यशस्वी, सुखी तथा प्रतापी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: एकादशभाव: गुरु



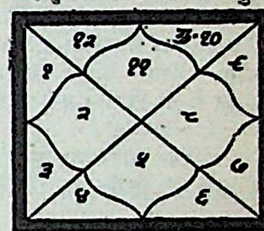
१२६९

ग्यारहवें लाभ भवन में अपनी ही धनु राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक की आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है। कभी-कभी उसे सम्पत्ति का आकस्मिक लाभ भी होता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अत: जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है एवं पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है और नवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री का

पूर्ण सुख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी पर्याप्त सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: द्वादशभाव: गुरु



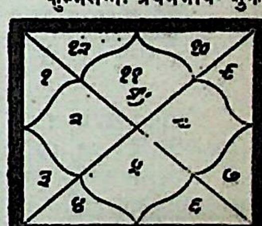
१२६०

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को अपने खर्च तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध के कारण परेशानी बनी रहती है तथा संचित धन का अभाव होता है। साथ ही कुटुम्ब में अशान्ति एवं धन-संचय में कठिनाइयाँ आती हैं। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं शत्रु दृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता और भूमि और मकान आदि के सुख में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है। सातवीं उच्च दृष्टि से मित्र की राशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़ों के मार्ग से लाभ होता है। नवीं मित्र दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति की वृद्धि होती है तथा जीवन बड़े अमीरी ढंग से व्यतीत होता है।

'कुम्भ' लग्न में 'शुक्र' का फल

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: प्रथमभाव: शुक्र

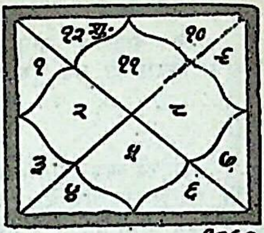


१२६१

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शारीरिक-सुख, सौंदर्य, प्रभाव एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है। साथ ही माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी मिलता है। वह अपने भाग्य की उन्नति करता है, तथा धर्म का पालन करने में भी तत्पर बना रहता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री-पक्ष में सुख तथा सौभाग्य की प्राप्ति होती है, परन्तु व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान् होता है तथा अपने लोक और परलोक को बनाता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: द्वितीयभाव: शुक्र

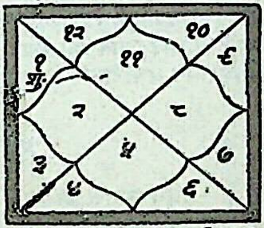


१२७२

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने सामान्य मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के प्रभाव से जातक धन-संचय की विशेष शक्ति प्राप्त करता है तथा कुटुम्ब का सुख भी पर्याप्त पाता है। उसे भूमि, मकान आदि का पर्याप्त लाभ होता है और वह बड़ा धनी, यशस्वी तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति माना जाता है। यहाँ से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र बुध की तुला राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति के सम्बन्ध में कुछ कठिनाई रहती है तथा दैनिक जीवन में भी चिन्तायें बनी रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: तृतीयभाव: शुक्र

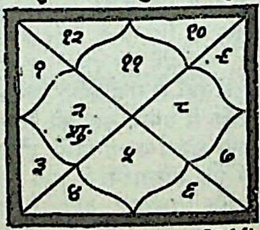


१२७३

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने सामान्य मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का भाई-बहिनों को सुख मिलता है तथा पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है। उसे माता, भूमि, मकान आदि का सुख भी मिलता है तथा घरेलू सुख के साधन भी प्राप्त होते हैं। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही तुला राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। ऐसा जातक धनी, धर्मात्मा, सुखी, यशस्वी, पराक्रमी तथा भाग्यशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: चतुर्थभाव: शुक्र

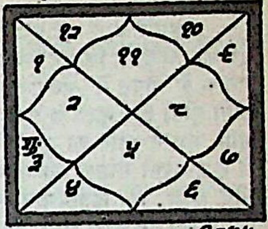


१२७४

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपनी ही वृषभ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है तथा घरेलू सुख में भी वृद्धि होती है। उसकी भाग्योन्नति निरन्तर होती रहती है और वह धर्म का पालन भी करता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपने सामान्य मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: पंचमभाव: शुक्र

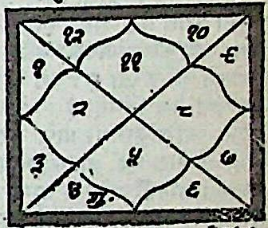


१२७५

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है तथा सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है। वह धर्म का पालन करता है और बुद्धियोग से उसके भाग्य की उन्नति निरन्तर होती रहती है। उसे माता, भूमि, मकान आदि का सुख तथा यश भी यथेष्ट मात्रा में मिलता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं सामान्य मित्र दृष्टि से गुरु की धनु राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक अपनी चतुराई से लाभ कमाता है तथा भाग्य की उन्नति करके सुखी होता है।

जिस जातक का का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: षष्ठभाव: शुक्र

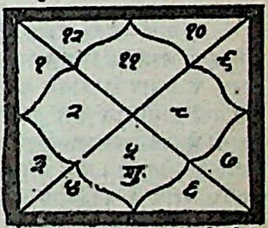


१२७६

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर सफलता प्राप्त करता है तथा झगड़े के मामलों से लाभ उठाता है। उसे माता के सुख में कमी का सामना करना पड़ता है। साथ ही मातृभूमि, भूमि, मकान, भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में भी कमजोरी रहती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्र दृष्टि से शनि की मकर राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सफलता प्राप्त होती है। ऐसा जातक बहुत चतुर तथा बुद्धिमान् होता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: सप्तमभाव: शुक्र

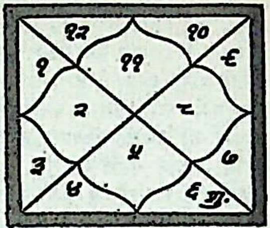


१२७७

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कुछ असन्तोष के साथ सुख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी विशेष परिश्रम करने पर सफलता मिलती है। उसे माता, भूमि, मकान आदि का सुख यथेष्ट प्राप्त होता है तथा घरेलू वातावरण भी आनन्दमय रहता है। वह धर्म का पालन करने वाला तथा भाग्योन्नति के लिए प्रयत्नशील होता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक सौन्दर्य, सुख सौभाग्य, यश, सम्मान एवं प्रभाव की वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: अष्टमभाव: शुक्र

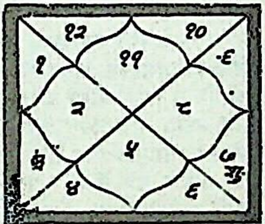


१२७८

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक के जीवन में अशान्ति रहती है तथा पुरातत्त्व की हानि होती है। माता के सुख में बड़ी कमी आती है तथा भूमि, मकान आदि का सुख भी त्रुटिपूर्ण रहता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से सामान्य-मित्र गुरु की मीन राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक विशेष परिश्रम द्वारा अपने धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि एवं उन्नति करता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो, और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: नवमभाव: शुक्र

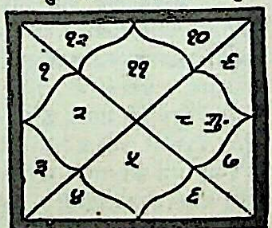


१२७९

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपनी ही तुला राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक क भाग्य की अत्यधिक वृद्धि होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। उसे माता, भूमि, मकान आदि का पर्याप्त सुख मिलता है। अपने गुण एवं चातुर्य के बल पर ऐसा व्यक्ति यश भी प्राप्त करता है। उसका घरेलू जीवन भी उल्लास एवं आनन्दपूर्ण बना रहता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र मंगल की मेष राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: दशमभाव: शुक्र

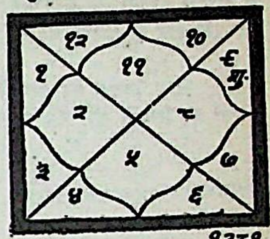


१२८०

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता, एवं व्यवसाय के भवन में अपने सामान्य मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता से विशेष शक्ति, राज्य से पर्याप्त सम्मान तथा व्यवसाय से बड़े लाभ की प्राप्ति होती है। वह समाज में प्रतिष्ठित, धनी, धार्मिक तथा यशस्वी होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृषभ राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि, मकान आदि का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति बड़े ठाट-बाट से रहता है तथा विविध प्रकार से सुखों का उपभोग करता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: एकादशभाव: शुक्र

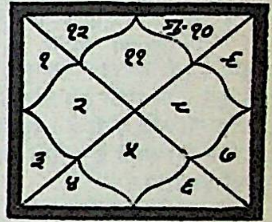


१२८१

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने सामान्य मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति न्यायी, चतुर, धनी, धार्मिक तथा यशस्वी होता है। उसे माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में पंचमभाव को देखता है अतः जातक को सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में विशेष उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति प्रभावशाली वक्ता तथा चतुर भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: द्वादशभाव: शुक्र



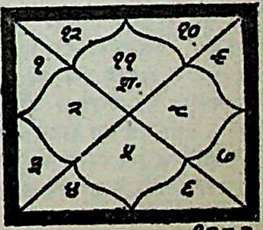
१२८२

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख तथा सफलता प्राप्त होती है। वह धर्म का पालन भलीभाँति नहीं कर पाता, माता का वियोग छोटी आयु में ही हो जाता है तथा यश में भी कमी रहती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं सामान्य शत्रुदृष्टि से चन्द्रमा की कर्कराशि में षष्ठ भाव को देखता है, अतः जातक अपने चातुर्य के बल पर शत्रु-पक्ष में सफलता पाता है तथा झगड़े से लाभ प्राप्त करता है।

'कुम्भ' लग्न में 'शनि' का फल

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: प्रथमभाव: शनि



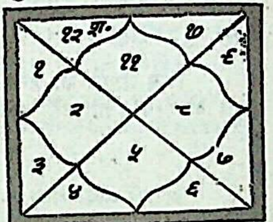
१२८३

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपनी ही कुम्भ राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौन्दर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है, परन्तु शनि व्ययेश होने के कारण शरीर में दुर्बलता भी रहती है। ऐसा व्यक्ति मानी, यशस्वी, शानदार खर्च करने वाला तथा कभी-कभी किसी कठिन रोग का शिकार भी होता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः भाई-बहिनों के सुख में कठिनाई एवं पुरुषार्थ में कमी आती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-पक्ष से असन्तोष रहता है तथा व्यवसाय

के क्षेत्र में परेशानियाँ वनी रहती हैं। दसवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं रोजगार के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्नः द्वितीयभावः शनि

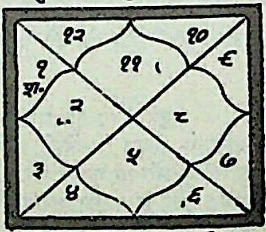


१२८४

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन-संचय के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है, फिर भी धन एवं कुटुम्ब के सुख में कमी वनी रहती है। खर्च अधिक होता है, वाहरी स्थानों में प्रतिष्ठा मिलती है तथा शारीरिक सौन्दर्य एवं सुख त्रुटिपूर्ण वना रहताहै। यहाँ से शनि अपनी तीसरी मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि, एवं मकान का सुख मिलता है। घरेलू सुख में कुछ कमी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति की वृद्धि होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसा जातक अधिक मुनाफा कमाने की इच्छा रखता है, परन्तु सफल नहीं हो पाता।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्नः तृतीयभावः शनि

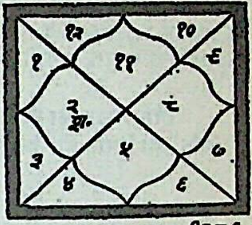


१२८५

तीसरे भाई-वहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को भाई-वहिनों का कष्ट मिलता है तथा पराक्रम में कमी आती है। शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य भी त्रुटिपूर्ण रहता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सुख एवं सफलता प्राप्त होगी। सातवीं उच्चदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य की उन्नति रहेगी तथा धर्म का पालन होगा। दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च के सम्बन्ध में कुछ परेशानी रहेगी तथा वाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त होता रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे शनि फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: चतुर्थभाव: शनि

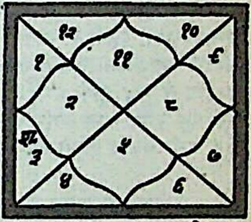


१२८६

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का अपूर्ण सुख प्राप्त होता है तथा घरेलू सुख में भी कुछ कमी रहती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक अपनी शारीरिक शक्ति एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्धों के कारण शत्रु-पक्ष से रक्षा प्राप्त करेगा। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में परेशानियाँ बनी रहेंगी तथा दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखने के कारण जातक को शारीरिक-सौन्दर्य, यश एवं प्रभाव की प्राप्ति होगी, परन्तु चिन्ता एवं कमजोरी भी बनी रहेगी।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: पंचमभाव: शनि

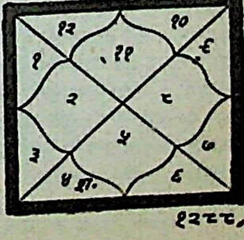


१२८७

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता तथा सन्तान-पक्ष से शक्ति की प्राप्ति होती है। परन्तु शनि के व्ययेश होने के कारण उस शक्ति में कुछ कमी भी अवश्य बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति चिन्ता से ग्रस्त रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करता है तथा यहाँ से शनि तीसरी शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री तथा व्यवसाव के पक्ष में परेशानी का अनुभव होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के संम्बंध में चिन्तित रहना पड़ता है तथा अत्यधिक परिश्रम भी करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: षष्ठभाव: शनि



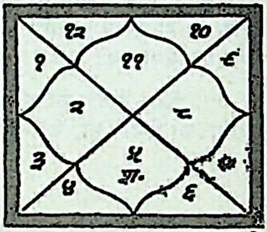
१२८८

छठे रोग एवं शत्रु-स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा अपने प्रभाव की वृद्धि करता है तथा शत्रुओं पर विजय पाता है। उसके शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है। मस्तिष्क में चिन्ताओं का निवास रहता है। खर्च के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्व की शक्ति मिलती है। सातवीं

दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा वाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है। दसवीं नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-वहिनों के सुख में कमी रहेगी तथा पराक्रम में भी कुछ कमजोरी आयेगी।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न सप्तमभाव: शनि

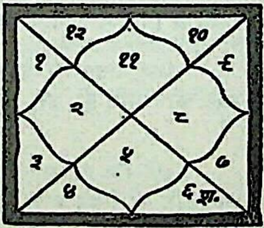


१२८९.

सातवें केन्द्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से परेशानी रहेगी तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों द्वारा सफलता मिलेगी। खर्च अधिक रहेगा तथा वाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होगी। यहाँ से शनि अपनी तीसरी उच्च तथा मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती रहेगी। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखने से शारीरिक-सौंदर्य, यश एवं सम्मान में वृद्धि होगी तथा दसवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता का सुख एवं भूमि, भवन आदि का भी लाभ होगा, परन्तु शनि के व्ययेश होने के कारण उसमें कुछ कमी अवश्य रहेगी तथा घरेलू सुख भी त्रुटिपूर्ण रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: अष्टमभाव: शनि

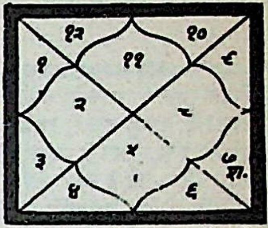


१२९०

आठवें आयु एव पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ हानि रहेगी, परन्तु आयु की वृद्धि होगी। शरीर तथा खर्च के सम्बन्ध में कठिनाइयाँ आती रहेंगी तथा वाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ शक्ति प्राप्त होगी। यहाँ से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता से वैमनस्य रहेगा तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र की उन्नति में बाधायें आयेंगी। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन एवं कुटुम्ब का सुख भी त्रुटिपूर्ण रहेगा। दसवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण सन्तान-पक्ष से कुछ शक्ति मिलेगी तथा विद्या-पक्ष में भी त्रुटिपूर्ण उन्नति प्राप्त होगी।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्नः नवमभावः शनि

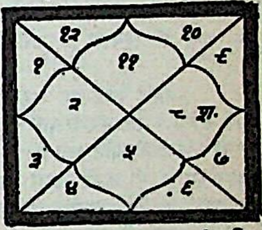


१२६१

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित उच्च के शनि के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की यथेष्ट उन्नति होगी, परन्तु कभी-कभी उसमें अड़चनें भी आ जाया करेंगी। ऐसा व्यक्ति शरीर से सुन्दर, स्वस्थ, धार्मिक, धनी, खर्चीला तथा बाहरी स्थानों के सम्बंध से लाभ उठाने वाला होता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलेगी तथा कभी-कभी आकस्मिक लाभ भी होता रहेगा। सातवीं नीच-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम में कमी आती है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रखने के लिये विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा झगड़ों से लाभ होता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्नः दशमभावः शनि

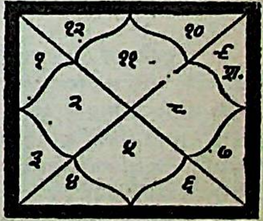


१२६२

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित व्ययेश शनि के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ परेशानियों के साथ सफलता मिलती है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादश-भाव को देखता है अतः जातक का खर्च अधिक तथा शानदार रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-पक्ष में असन्तोष रहता है तथा दैनिक व्यवसाय में कठिनाइयाँ आती हैं।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्नः एकादशभावः शनि

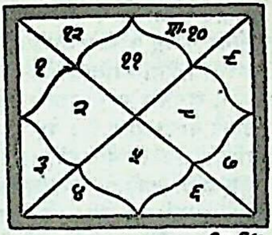


१२६३

ग्यारहवें लाभ-भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। उसका खर्च खूब रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथम-भाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक-प्रभाव तथा यश में वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण सन्तान-पक्ष से कुछ त्रुटिपूर्ण शक्ति प्राप्त होती है तथा विद्या एवं बुद्धि की वृद्धि होती है। दसवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्व का भी लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन अमीरी ढंग से बीतता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्नः द्वादशभाव शनि



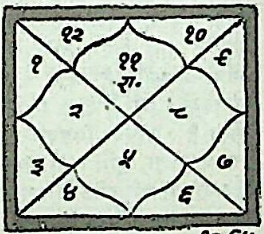
१२६४

बारहवें व्यय-स्थान में अपनी ही मकर राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से विशेष लाभ भी होता है। शनि के व्ययेश होने के कारण शरीर में कमजोरी भी रहती है तथा यात्रायें भी करनी पड़ती हैं। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है अतः जातक को धन एवं कुटुम्ब के सुख की वृद्धि के लिये विशेष परिश्रम एवं चिन्ता करनी पड़ती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है, परन्तु बाद में उस पर प्रभाव स्थापित होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म का पालन होता है तथा भाग्य की वृद्धि होती है। ऐसा जातक भाग्यवान् समझा जाता है।

'कुम्भ' लग्न में 'राहु' का फल

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्नः प्रथमभावः राहु

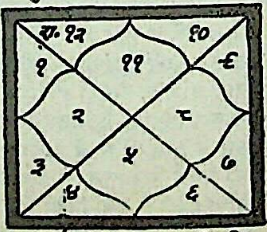


१२६५

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शरीर में कहीं चोट लगती है तथा शारीरिक-सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में भी कमी रहती है। वह गुप्त-चिन्ताओं से ग्रस्त बना रहता है। अपने व्यक्तित्व की उन्नति के लिये विशेष प्रयत्न करता है तथा सफलता भी पाता है, परन्तु कभी-कभी बड़ी परेशानियों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी मस्तिष्क शक्ति तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर प्रभाव एवं शक्ति भी प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्नः द्वितीयभावः राहु

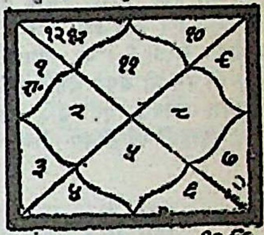


१२६६

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी आती है। कभी-कभी उसे घोर आर्थिक-संकटों का शिकार भी बनना पड़ता है। वह अपनी गुप्त-युक्तियों तथा परिश्रम के बल पर धन भी प्राप्त करता है तथा प्रभावशाली एवं भाग्यवान् समझा जाता है। ऐसा व्यक्ति बड़ी हिम्मत वाला होता है तथा अनेक कठिनाइयों से जूझने के बाद अपने जीवन को सफल और उन्नत भी बना लेता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: तृतीयभाव: राहु

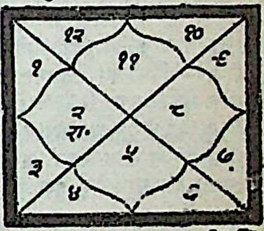


१२६७

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है। परन्तु उसका भाई-बहिनों से विरोध रहता है। ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त—युक्ति, बुद्धि-चातुर्य, परिश्रम तथा हिम्मत के बल पर सुख के साधन तथा सफलतायें प्राप्त करता है और समाज में अपना प्रभावपूर्ण सम्मान भी बना लेता है। वह अपनी गुप्त कमजोरियों तथा चिन्ताओं को छिपाता है और प्रकट रूप में विजयी बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: चतुर्थभाव: राहु

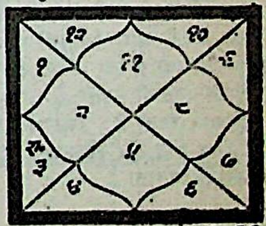


१२६८

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता के पक्ष से बहुत कष्ट प्राप्त होता है, घरेलू जीवन अशांति एवं संकटपूर्ण बना रहता है तथा भूमि एवं मकान आदि के सुख में भी कमी रहती है। परन्तु अनेक संघर्षों से टकराने के बाद ऐसा जातक अन्त में सफलता प्राप्त कर लेता है और वह अपने जीवन को सुखी बनाता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: पंचमभाव: राहु

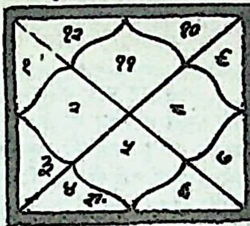


१२६९

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक सन्तान-पक्ष से कुछ कष्ट पाने के उपरान्त उसकी शक्ति भी प्राप्त करता है। वह विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफल होता है। अपनी भीतरी कमजोरी को छिपाने का विशेष गुण उसमें पाया जाता है तथा प्रकट रूप में प्रभावशाली बना रहता है। ऐसा व्यक्ति बहुत अच्छा बोलने वाला, चतुर एवं मस्तिष्क-शक्ति से सम्पन्न होता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: षष्ठभाव: राहु

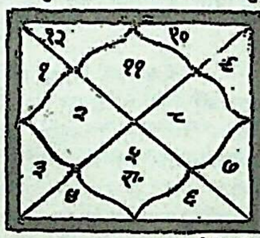


१३००

छठे रोग तथा शत्रु-स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपना बड़ा भारी प्रभाव रखता है तथा गुप्त-युक्तियों, चातुर्य एवं बुद्धि-बल से झगड़े-झंझट के मामलों में सफलता प्राप्त करता है। वह भीतरी रूप से परेशानी का अनुभव करने पर भी अपने धैर्य तथा साहस को नहीं खोता। अपने प्रबल मनोबल एवं बुद्धि-बल से वह अन्त में अपनी सभी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर लेता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: सप्तमभाव: राहु

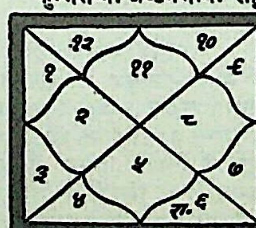


१३०१

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से बहुत कष्ट मिलता है, गृहस्थ-संचालन में कठिनाइयाँ आती हैं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अनेक संकटों तथा निराशाओं से टकराते रहने के बावजूद भी अपना धैर्य नहीं खोता तथा हिम्मत, परिश्रम एवं युक्ति-बल से काम लेकर अन्ततः अपने जीवन को उन्नत बनाता है तथा घरेलू सुख की शक्ति प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: अष्टमभाव: राहु

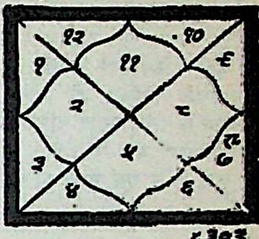


१३०२

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु (जीवन) के सम्बन्ध में अनेक बार संकटों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व शक्ति की भी हानि उठानी पड़ती है। उसके पेट के निचले भाग में विकार रहता है फिर भी वह बड़ी आयु पाता है तथा विवेक-बुद्धि एवं युक्ति-बल पर अपने जीवन को प्रभावशाली ढंग से बिताता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्नः नवमभावः राहु

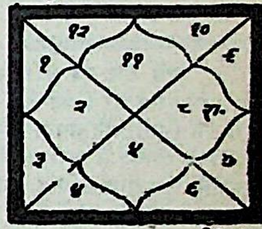


८३०३

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में बाधाएं आती हैं तथा धर्म का पालन भी ठीक प्रकार से नहीं हो पाता परन्तु ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त-युक्तियों, परिश्रम चातुर्य एवं बुद्धि-बल से भाग्य की उन्नति करने में सफल हो जाता है। मन में कमजोरी अनुभव करने पर भी वह अपनी चिन्ताओं एवं त्रुटियों को प्रकट नहीं होने देता। अतः प्रभाव की वृद्धि करता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्नः दशमभावः राहु

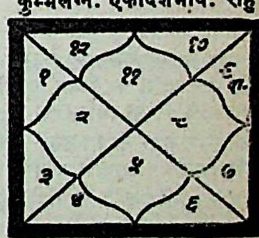


१३०४

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पिता के पक्ष से कष्ट, राज्य के पक्ष से परेशानियाँ तथा व्यवसाय के पक्ष से कठिनाइयाँ प्राप्त होती हैं, परन्तु वह अपनी उन्नति के लिए कठोर परिश्रम करता है एवं अनेक संघर्षों से टकराने के बाद सफलता पा लेता है तथा अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्नः एकादशभावः राहु



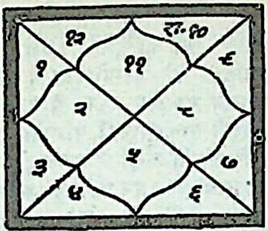
१३०५

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक की आमदनी के मार्ग में बहुत कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु जातक अपनी गुप्त-युक्तियों, चातुर्य एवं बुद्धि-बल से किसी प्रकार उन कठिनाइयों पर थोड़ी-बहुत विजय पा लेता है। फिर भी पूर्ण उन्नति नहीं कर पाता। ऐसा व्यक्ति प्रायः अपनी कठिनाइयों को किसी पर प्रकट नहीं होने देता।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: द्वादशभाव: राहु

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से अपने खर्च के सम्बन्ध में बड़ी कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। कभी-कभी तो उसे अत्यधिक चिन्तित हो जाना पड़ता है। वह अपना खर्च चलाने के लिए कठोर परिश्रम करता है तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय भी लेता है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ शक्ति एवं लाभ की प्राप्ति होती है।



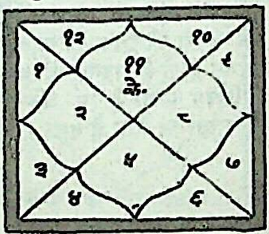
१३०६

'कुम्भ' लग्न में 'केतु' का फल

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये।

कुम्भलग्न: प्रथम भाव: केतु

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शरीर में किसी चोट अथवा घाव का चिह्न बनता है तथा शारीरिक-सौन्दर्य में कमी आती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, गुप्त-युक्ति-सम्पन्न, धैर्यवान् तथा परिश्रमी होता है। वह अपने प्रभाव को स्थिर रखने के लिए अत्यधिक कठिन प्रयत्न करता है और उसके कारण यश तथा सम्मान प्राप्त करता है।

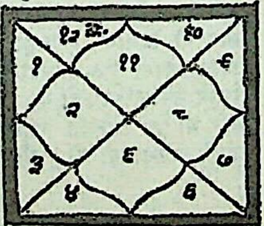


१३०७

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: द्वितीयभाव: केतु

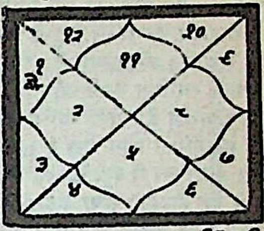
दूसरे धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को धन की कमी का सामना करना पड़ता है तथा उसके कुटुम्ब में भी क्लेश तथा उपद्रव उठते रहते हैं। ऐसा व्यक्ति कठोर परिश्रम तथा न्याय के मार्ग से धनप्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है और अन्त में थोड़ी-बहुत सफलता भी पाता है। वह बड़ा धैर्यवान्, साहसी तथा परिश्रमी होता है।



१३०८

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: तृतीयभाव: केतु

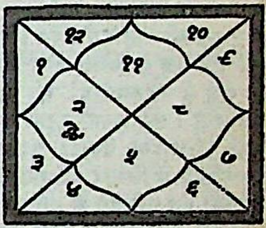


१३०९

तीसरे भाई बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है। वह बड़ा पुरुपार्थी, परिश्रमी, हिम्मतवाला, धैर्यवान् तथा उद्योगी होता है, अतः अपनी उन्नति के लिए विशेष प्रयत्न करता है। परन्तु उसे भाई-बहिनों के सुख में कमी अथवा कष्ट का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त-युक्तियों से काम लेने वाला तथा अनेक संघर्षों से टकराने के बाद अन्त में अपने जीवन को उन्नत बना लेने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: चतुर्थभाव: केतु

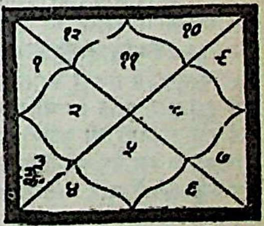


१३१०

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता के पक्ष से हानि अथवा परेशानी उठानी पड़ती है, साथ ही मातृभूमि से वियोग भी होता है। उसे भूमि तथा मकान आदि के सुख की भी कमी रहती है। परन्तु ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त-युक्तियों, परिश्रम तथा बुद्धि-बल से भूमि एवं मकानादि का सुख पाने के लिए प्रयत्न करता रहता है और अन्ततः उसमें थोड़ी-बहुत सफलता भी पा लेता है।

जिस जातक का जन्म, कुम्भ, लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

कुम्भलग्न: पंचमभाव: केतु

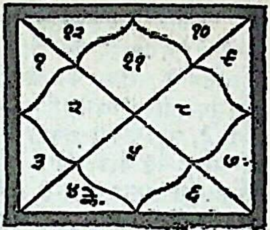


१३११

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन के क्षेत्र में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा सन्तान का सुख प्राप्त करने के लिए भी गुप्त-युक्तियों एवं कष्ट-साध्य प्रयत्नों का आश्रय लेना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति को सन्तान का अल्प सुख ही प्राप्त होता है। उसमें शील तथा विवेक की कमी रहती है तथा मस्तिष्क में अशान्ति एवं चिन्ताएं घर किये रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्नः षष्ठभावः केतु

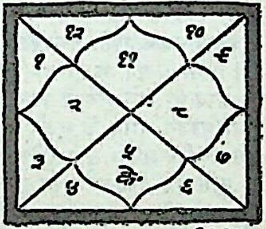


१३१२

छठे रोग एवं शत्रु-भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष से अशान्ति तो मिलती है, परन्तु वह उन पर अपना प्रभाव स्थापित करने और विजय पाने में विशेष सफलता प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति अपने मनोबल एवं युक्ति-बल से शत्रुओं को मात देता है। मन में भयभीत रहने पर भी वह प्रकट रूप में बड़ी हिम्मत एवं बहादुरी का प्रदर्शन करता है। वह धैर्यवान् तथा कठोर परिश्रमी होता है तथा अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्नः सप्तमभावः केतु

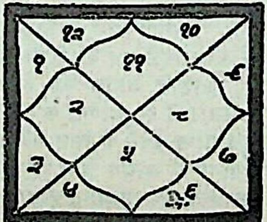


१३१३

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से विशेष कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विफलताओं एवं संकटों का सामना करना पड़ता है। उसे अपनी गृहस्थी का संचालन करने में भी बड़ी कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। साथ ही, उसकी जननेन्द्रिय में विकार भी होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त युक्तियों एवं परिश्रम के बल पर कठिनाइयों का सामना करता है तथा अन्त में थोड़ी-बहुत सफलता भी पा लेता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्नः अष्टमभावः केतु

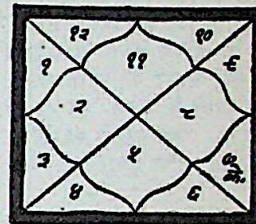


१३१४

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की आयु की वृद्धि होती है, परन्तु उसे जीवन में अनेक बार मृत्यु-तुल्य संकटों का सामना भी करना पड़ता है। उसे पुरातत्त्व शक्ति का भी सामान्य लाभ होता है तथा कई बार हानियाँ भी उठानी पड़ती हैं। ऐसा व्यक्ति गुप्त-युक्तियों के बल पर अपनी कठिनाइयों को दूर करने का प्रयत्न करता है और अन्त में सफलता भी पा लेता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: नवमभाव: केतु

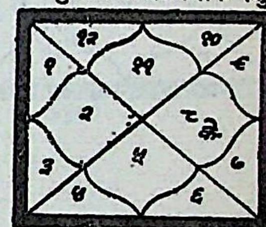


१३१५

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में बाधाएँ आती हैं परन्तु वह गुप्त-युक्तियों के बल पर उन पर विजय प्राप्त करता है तथा कठिन परिश्रम, चातुर्य एवं धैर्य के द्वारा भाग्य की उन्नति करता है। कभी-कभी घोर संकटों तथा असफलताओं का सामना करने पर भी निराश नहीं होता। वह धैर्य और साहस के साथ निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है। उसके धार्मिक-पक्ष की भी विशेष उन्नति नहीं हो पाती।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: दशमभाव: केतु

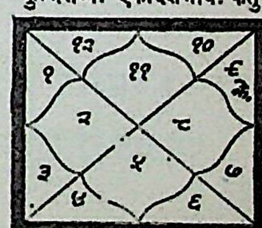


१३१६

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एव व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता पक्ष से अत्यधिक कष्ट प्राप्त होता है, राज्य के क्षेत्र में परेशानियाँ आती हैं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। परन्तु ऐसा व्यक्ति अपने धैर्य, साहस, परिश्रम एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर असफलताओं पर विजय प्राप्त करता है और अन्त में अपनी उन्नति करने में सफल हो जाता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: एकादशभाव: केतु

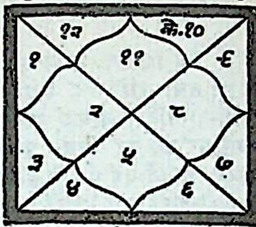


१३१७

ग्यारहवें लाभ भवन में सामान्य मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित उच्च के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है और कभी-कभी उसे आकस्मिक रूप में भी धन का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी उन्नति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है। अनेक बार कठिनाइयों के उपस्थित होने पर भी वह अपना धैर्य नहीं खोता तथा न्याय-मार्ग से बहुत अधिक धन कमाता है और सुखी जीवन व्यतीत करता है।

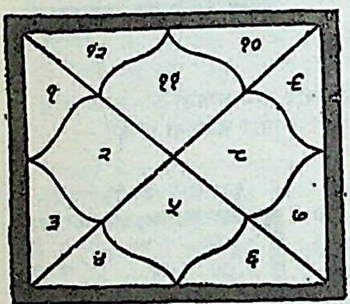
जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुम्भलग्न: द्वादशभाव: केतु



१३१८

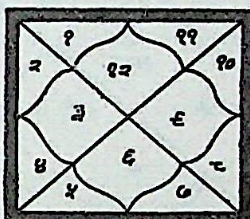
बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण उसे परेशानी का अनुभव होता है। परन्तु वह अपनी गुप्त-युक्तियों एवं परिश्रम के बल पर खर्च चलाने की शक्ति प्राप्त करता है। अनेक बार निराशाओं से जूझने पर भी वह अपने धैर्य को नहीं छोड़ता। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति एवं लाभ की प्राप्ति होती है।



१३१९

'कुम्भ' लग्न का फलादेश समाप्त

मीन-लग्न



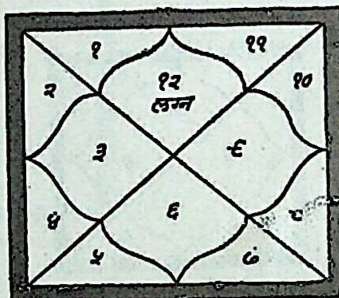
१३२०

[मीन-लग्न वाली कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग फलादेश]

'मीन' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'मीन' लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति जल-क्रीड़ा करने में कुशल, विनम्र, सुरतिवान्, स्त्री-प्रिय, प्रचण्ड, श्रेष्ठ पण्डित, चतुर अल्पभोजी, चंचल, धूर्त, श्रेष्ठ रत्नाभूषणों को धारण करने वाला, अनेक प्रकार की रचनायें करने वाला, पित्त प्रकृति वाला, यशस्वी, सतोगुणी, आलसी, रोगी, अधिक सन्ततिवान्, बड़ी आँखों वाला तथा अकस्मात् हानि उठाने वाला होता है। उसका शरीर सामान्य कद का होता है, ठोढ़ी में गड्ढा होता है तथा मस्तिष्क बड़ा होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी प्रारम्भिक अवस्था में सामान्य जीवन व्यतीत करता है, मध्यमावस्था में दुःखी रहता है तथा अन्तिम अवस्था में सुख भोगता है। उसके भाग्य की वृद्धि २१ अथवा २२ वर्ष की आयु में होती है।

'मीन' लग्न



१३२१

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव मुख्यतः दो प्रकार से पड़ता है—

(१) ग्रहों की जन्मकीलन स्थिति के अनुसार।
(२) ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के अनुसार।

जातक की जन्मकालीन ग्रह-स्थिति जन्म-कुण्डली में दी गई होती है। उसमें जो ग्रह जिस भाव में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित प्रभाव निरन्तर स्थायी रूप से डालता रहता है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसकी जानकारी पंचाङ्ग द्वारा की जा सकती है। ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के सम्बन्ध में या तो किसी ज्योतिषी से पूछ लेना चाहिए अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिए। इस सम्बन्ध में पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर अस्थायी-रूप से अपना प्रभाव डालते हैं।

उदाहरण के लिए यदि किसी जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य 'मीन' राशि पर 'प्रथम भाव' में बैठा है, तो उसका स्थायी प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या १३२२ के अनुसार पड़ता रहेगा; परन्तु यदि दैनिक ग्रह-गोचर में कुण्डली देखते समय सूर्य 'मेष' राशि के 'द्वितीय भाव' में बैठा होगा तो उस स्थिति में वह

उदाहरण-कुण्डली संख्या १०२ के अनुसार उतनी अवधि तक जातक के जीवन पर अपना अस्थायी प्रभाव अवश्य डालेगा, जब तक कि वह 'मेष' राशि से हटकर 'वृष' राशि में नहीं चला जाता। 'वृष' राशि में पहुँच कर वह 'वृष' राशि के अनुरूप अपना प्रभाव डालना आरम्भ कर देगा। अतः जिस जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य 'मीन' राशि के 'प्रथम भाव' में बैठा हो, उसे उदाहरण-कुण्डली संख्या १३२२ में वर्णित फलादेश देखने के पश्चात्, यदि उन दिनों ग्रह-गोचर में सूर्य 'मेष' राशि के 'द्वितीय भाव' में बैठा हो, तो उदाहरण-कुण्डली संख्या १०२ का फलादेश भी देखना चाहिए तथा इन दोनों फलादेशों के समन्वयस्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को अपने वर्तमान समय पर प्रभावकारी समझना चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विषय में जान लेना चाहिए।

'मीन' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदाहरण-कुण्डली संख्या १३२२ से १४२६ तक में किया गया है। पंचाङ्ग की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार 'मीन' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों को किन-किन उदाहरण-कुण्डलियों के द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना चाहिए—इसका विस्तृत वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है, अतः उनके अनुसार ग्रहों की तात्कालिक स्थिति के सामयिक प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। तदुपरान्त दोनों फलादेशों के समन्वयस्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिए।

इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक जन्म-कुण्डली का ठीक-ठीक फलादेश सहज में ही ज्ञात कर सकता है।

टिप्पणी (१)—पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश से ऊपर अथवा ३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह सूर्य से अस्त होता है, वह भी जातक के ऊपर अपना प्रभाव या तो बहुत कम डालता है या फिर पूर्णतः प्रभावहीन रहता है।

(२) स्थायी जन्म-कुण्डली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा अपनी जन्म-कुण्डली में लिखवा लेने चाहिए, ताकि उनके अंशों के बारे में बार-बार जानकारी प्राप्त करने के झंझट से बचा जा सके। तात्कालिक ग्रह-गोचर के ग्रहों के अंशों की जानकारी पंचांग द्वारा अथवा किसी ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(३) स्थायी जन्म-कुण्डली अथवा तात्कालिक ग्रह-गति-कुण्डली के किसी भाव में यदि एक से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन स्थानों पर उनकी दृष्टियाँ पड़ती हैं, जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता रहता है। इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में 'ग्रहों की युति का प्रभाव' शीर्षक अध्याय के अन्तर्गत विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन किया गया है, अतः इस विषय की जानकारी वहाँ से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(४) 'विंशोत्तरी दशा' के सिद्धांतानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० वर्ष की मानी जाती है। इस आयु-अवधि में जातक नवग्रहों की सभी दशाओं का भोग पूरा कर लेता है। विभिन्न ग्रहों का दशा-काल भिन्न-भिन्न होता है। परंतु अधिकांश व्यक्ति इतनी लम्बी आयु तक जीवित नहीं रह पाते, अतः वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं का भोग कर पाते हैं। जातक के जीवन के जिस काल में जिस ग्रह की दशा—जिसे 'महादशा' भी कहा जाता है—चल रही होती है, जन्मकालीन ग्रह-स्थिति के अनुसार उसके जीवन-काल की उतनी अवधि उस ग्रह-विशेष के प्रभाव से विशेष रूप से प्रभावित रहती

है। जातक का जन्म किस ग्रह की महादशा में हुआ है और उसके जीवन में किस अवधि से किस अवधि तक किस ग्रह की महादशा चलेगी और वह महादशा जातक के ऊपर अपना क्या विशेष प्रभाव डालेगी—इन सब बातों का उल्लेख भी तीसरे प्रकरण में किया गया है।

इस प्रकार (१) जन्म-कुण्डली, (२) तात्कालिक ग्रहगोचर-कुण्डली एवं (३) ग्रहों की महादशा—इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है, अतः इन तीनों के समन्वयस्वरूप फलादेश का ठीक-ठीक निर्णय करके अपने भूत, वर्तमान तथा भविष्यत्कालीन जीवन के विषय में सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

मीन (१२) लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'सूर्य' का फलादेश

मीन (१२) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३२२ से १३३३ तक में देखना चाहिए।

मीन (१२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने मे 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३२२ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'सूर्य' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३२३ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३२४ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३२५ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३२६ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३२७ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३२८ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'तुला' पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३२९ के अनुसार समझना चाहिये।

(९) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३३० के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'सूर्य' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३३१ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३३२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुण्डली संख्या १३३३ के अनुसार समझना चाहिए।

मीन (१२) लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'चन्द्रमा' का फलादेश

मीन (१२) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३३४ से १३४५ तक में देखना चाहिए।

मीन (१२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मीन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३३४ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मेष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३३५ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'वृष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३३६ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मिथुन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३३७ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३३८ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'सिंह' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३३९ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कन्या' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३४० के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'तुला' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३४१ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३४२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'धनु' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३४३ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'मकर' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३४४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस दिन 'चन्द्रमा' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३४५ के अनुसार समझना चाहिए।

मीन (१२) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'मंगल' का फलादेश

मीन (१२) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३४६ से १३५७ तक में देखना चाहिए।

मीन (१२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'मंगल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३४६ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'मंगल' 'मेष' राशि पर हो, महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३४७ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'मंगल' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३४८ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'मंगल' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३४९ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३५० के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'मंगल' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३५१ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'मंगल' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३५२ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३५३ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'मंगल' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डला सख्या १३५४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'मंगल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली सख्या १३५५ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'मंगल' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३५६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'मंगल' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३५७ के अनुसार समझना चाहिए।

मीन (१२) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'बुध' का फलादेश

मीन (१२) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३५८ से १३६९ तक में देखना चाहिए।

मीन (१२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'बुध' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३५८ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'बुध' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३५९ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६० के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६१ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६२ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६३ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६४ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'बुध' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६५ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'बुध' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'बुध' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६७ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'बुध' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'बुध' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुण्डली संख्या १३६९ के अनुसार समझना चाहिए।

मीन (१२) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'गुरु' का फलादेश

मीन (१२) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३७० से १३८१ तक में देखना चाहिए।

मीन (१२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३७० के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३७१ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश का उदाहरण-कुण्डली संख्या १३७२ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३७३ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३७४ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'गुरु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३७५ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३७६ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष मे 'गुरु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३७७ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३७८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'गुरु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३७९ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३८० के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३८१ के अनुसार समझना चाहिए।

मीन (१२) लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'शुक्र' का फलादेश

मीन (१२) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी-फलादेश उदाहरण- कुण्डली संख्या १३८२ से १३९३ तक में देखना चाहिए।

मीन (१२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'शुक्र' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३८२ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'शुक्र' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली सख्या १३८३ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'शुक्र 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३८४ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३८५ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३८६ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३८७ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'शुक्र' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३८८ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'शुक्र' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३८९ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३९० के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'शुक्र' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६१ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'शुक्र' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'शुक्र' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६३ के अनुसार समझना चाहिए।

मीन (१२) लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'शनि' का फलादेश

मीन (१२) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी—फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६४ से १४०५ तक में देखना चाहिए।

मीन (१२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी—फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'शनि' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६४ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'शनि' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६५ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६६ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'शनि' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६७ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'शनि' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६८ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'शनि' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६९ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'शनि' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४०० के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'शनि' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४०१ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४०२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'शनि' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४०३ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'शनि' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४०४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'शनि' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४०५ के अनुसार समझना चाहिए।

मीन (१२) लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'राहु' का फलादेश

मीन (१२) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी—फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४०६ से १४१७ तक में देखना चाहिए।

मीन (१२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी—फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४०६ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'राहु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४०७ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४०८ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'राहु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४०९ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'राहु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४१० के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४११ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४१२ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'राहु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४१३ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४१४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४१५ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'राहु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४१६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'राहु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३१७ के अनुसार समझना चाहिए।

मीन (१२) लग्न वालों के लिए

जन्म-कुण्डली तथा ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'केतु' का फलादेश

मीन (१२) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४१८ से १४२९ तक में देखना चाहिए।

मीन (१२) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में

स्थित 'केतु' का अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुण्डलियों में आगे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'केतु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४१८ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'केतु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४१९ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४२० के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'केतु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४२१ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'केतु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४२२ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'केतु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४२३ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'केतु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४२४ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'केतु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४२५ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४२६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'केतु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४२७ के अनुसार समझना चाहिए।

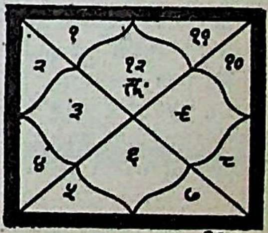
(११) जिस वर्ष में 'केतु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४२८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'केतु' 'कुम्भ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४२९ के अनुसार समझना चाहिए।

'मीन' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः प्रथमभावः सूर्यं

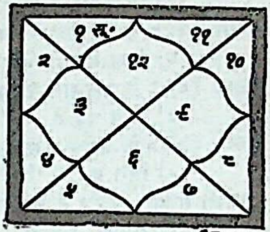


१३२२.

पहले केन्द्र एवं शरीर-स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव एवं शक्ति में वृद्धि होती है, परन्तु रक्त-विकार एवं अन्य प्रकार के रोग होने की सम्भावना भी रहती है। वह शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है तथा अपना सम्मान बढ़ाने के लिए दौड़-धूप भी अधिक करता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में सप्तमभाव को देखता है, स्त्री का सुख कुछ परेशानियों के बाद मिलता है, ग्राहंस्थ्य सुख में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी अधिक परिश्रम करने पर सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः द्वितीयभावः सूर्य

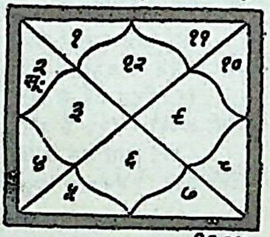


१३२३

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम द्वारा धन एवं प्रभाव की वृद्धि करता है तथा कुटुम्ब का सुख भी पाता है। वह अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए विशेष प्रयत्नशील रहता है। यहां से सूर्य सातवीं नीचदृष्टि से अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक की आयु एवं पुरातत्त्व के पक्ष में कुछ कमी आती है तथा दैनिक जीवन-चर्या में भी कुछ परेशानी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्नः तृतीयभावः सूर्य

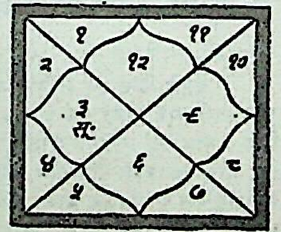


१३२४

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का अपने भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है,। परन्तु पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है। वह शत्रु-पक्ष पर विजय भी प्राप्त करता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में नवमभाव को देखता है. अतः जातक अपने शारीरिक श्रम तथा प्रभाव के बल पर भाग्य की उन्नति तो करता है, परन्तु धर्म की उन्नति नहीं कर पाता। ऐसे व्यक्ति का जीवन सामान्य रूप से व्यतीत होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः चतुर्थभावः सूर्य

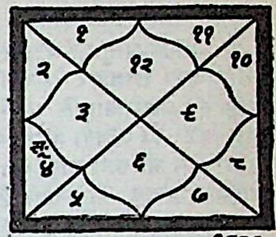


१३२५

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के सुख एवं प्रभाव में वृद्धि होती है, परन्तु माता, भूमि, मकान एवं घरेलू सुख में कुछ कमी और परेशानी बनी रहती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक पिता से सहयोग, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ प्राप्त करता है तथा अपने यश, प्रतिष्ठा एवं प्रभाव की वृद्धि के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: पंचमभाव: सूर्य

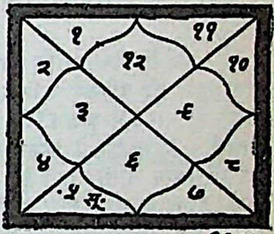


१३२६

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि एवं वाणी की शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु सन्तान-पक्ष से कुछ कष्ट मिलता है। विद्याध्ययन में सामान्य कठिनाइयाँ भी आती हैं। मस्तिष्क में चिन्ता, क्रोध एवं परेशानियों का निवास भी रहता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः लाभ के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ तो आती हैं, परन्तु जातक अपने परिश्रम एवं बुद्धि-बल से लाभ उठाने में सफलता प्राप्त कर लेता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये।

मीनलग्न: षष्ठभाव: सूर्य

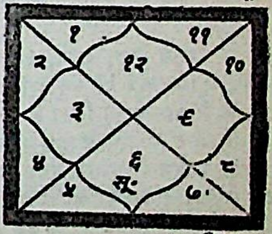


१३२७

छठे रोग एवं शत्रु-भवन में अपनी ही राशि पर स्थित स्वक्षेत्री सूर्य के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। झगड़े-झंझट के मामलों में सफलता पाता है और रोग आदि से भी सुरक्षित रहता है। वह बड़ा हिम्मती, बहादुर, निडर, परिश्रमी तथा धैर्यवान् होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च के कारण कुछ परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी कुछ कष्ट मिलता है। खर्च अधिक होने के कारण मन भी कुछ अशांत-सा रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: सप्तमभाव: सूर्य

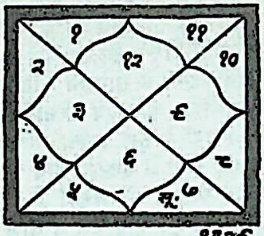


१३२८

सातवें केन्द्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का स्त्री-पक्ष से कुछ वैमनस्य रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक परिश्रम एवं दौड़-धूप के बाद सफलता मिलती है, शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है एवं प्रभाव की वृद्धि होती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः शरीर में कुछ परेशानी तो रहती है, परन्तु प्रभाव एवं सम्मान में वृद्धि भी होती है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: अष्टमभाव: सूर्य

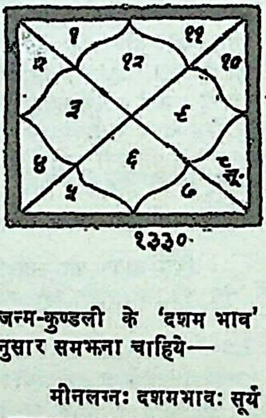


१३२९

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के पक्ष में घोर कठिनाइयों, संघर्षों तथा संकटों का सामना करना पड़ता है साथ ही पुरातत्त्व की शक्ति में भी कमी आती है। शत्रु-पक्ष द्वारा भी परेशानियाँ उत्पन्न की जाती हैं। ननसाल-पक्ष कमजोर रहता है तथा पेट में या पेट के नीचे कोई विकार भी होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से मित्र मंगल की मेष राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक परिश्रम द्वारा धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: नवमभाव: सूर्य

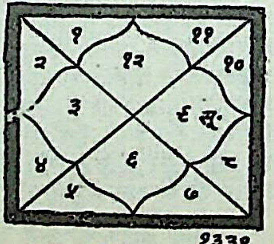


१३३०

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के भाग्य में वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन होता है। परन्तु सूर्य के षष्ठेश होने के कारण कुछ कठिनाइयाँ अवश्य आती रहती हैं। ऐसा व्यक्ति शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है तथा अपने प्रभाव को बढ़ाता है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक का भाई-बहिनों से कुछ विरोध रहता है, परन्तु कुछ कठिनाइयों एवं परिश्रम के साथ हिम्मत, प्रभाव तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: दशमभाव: सूर्य

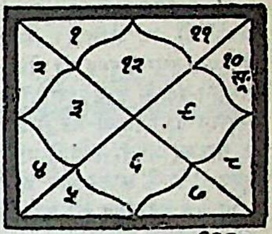


१३३१

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित षष्ठेश सूर्य के प्रभाव से जातक का पिता के साथ कुछ वैमनस्य रहता है, व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु राजकीय क्षेत्र में प्रभाव तथा सम्मान की वृद्धि होती है। वह अपने शत्रु-पक्ष पर भी विजय प्राप्त करता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः कुछ परेशानियों के साथ माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: एकादशभाव: सूर्य

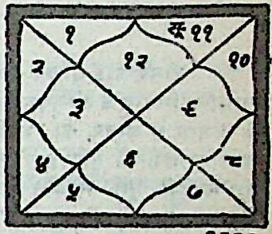


१३३२

ग्यारहवें लाभ-भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम द्वारा अपनी आमदनी में अत्यधिक वृद्धि करता है। साथ ही शत्रु-पक्ष पर विजय भी पाता है। सूर्य के षष्ठेश होने के कारण आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ अवश्य आती हैं, परन्तु अन्ततः सफलता मिलती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान एवं विद्या के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: द्वादशभाव: सूर्य



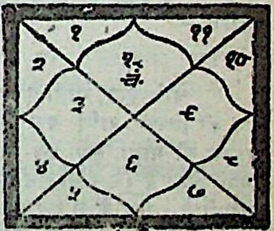
१३३३

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित षष्ठेश सूर्य के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में भी दिक्कतें आती हैं। शत्रु-पक्ष से भी कुछ परेशानी बनी रहती है। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपनी ही सिंह राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक खर्च के बल पर शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है तथा प्रभाव को बढ़ाता है। वह क्रोधी तथा अहंकारी भी होता है।

'मीन' लग्न में 'चन्द्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: प्रथमभाव: चन्द्र

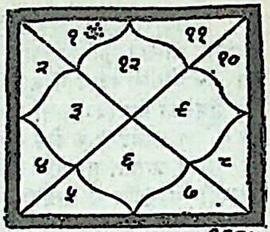


१३३४

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौन्दर्य में वृद्धि होती है। वह कोमल स्वभाव का होता है तथा यश, प्रभाव, सम्मान एवं आत्मिक शक्ति अर्जित करता है। वह मधुर वाणी बोलने वाला, सर्वप्रिय, आदर्श एवं ज्ञानी होता है। उसे सन्तान-पक्ष से भी अच्छी शक्ति मिलती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से बुध की कन्या राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः उसे सुन्दर स्त्री प्राप्त होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी बुद्धि-बल से अच्छी सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्नः द्वितीयभावः चन्द्र

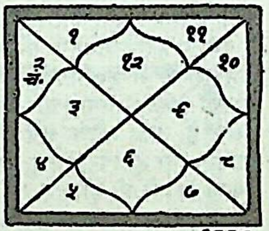


१३३५

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु सन्तान-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है। इसके अतिरिक्त सन्तान तथा विद्या-पक्ष से प्रतिष्ठा भी मिलती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से सामान्य-मित्र शुक्र की तुला राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक की आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है तथा उसका दैनिक जीवन उल्लासपूर्ण बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः तृतीयभावः चन्द्र

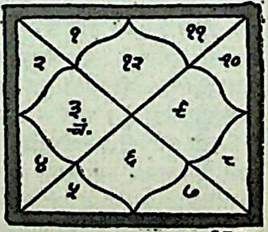


१३३६

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने सामान्य-मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का भाई-बहिनों की शक्ति मिलती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। उसे विद्या एवं सन्तान-पक्ष का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है। वह बड़ा हिम्मती, बातचीत करने में चतुर तथा प्रसन्न रहने वाला होता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक की भाग्योन्नति में रुकावटें आती हैं तथा धर्म का पक्ष भी कमजोर रहता है। ऐसा जातक असहिष्णु होता है, अतः उसे यश भी कम ही मिल पाता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के चतुर्थ-भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः चतुर्थभावः चन्द्र

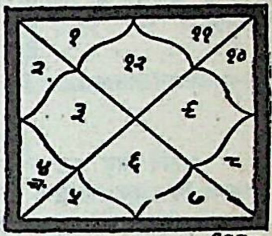


१३३७

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। उसे सन्तान एवं विद्या-पक्ष में भी उन्नति मिलती है। सुख के साधन सहज ही में उपलब्ध होते रहते हैं। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक अपनी बुद्धि के बल पर व्यवसाय की उन्नति करता है, राजकीय क्षेत्र में सम्मान पाता है तथा पिता द्वारा भी सुख प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति अपनी उन्नति अनेक प्रकार से करता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम-भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः पंचमभावः चन्द्र

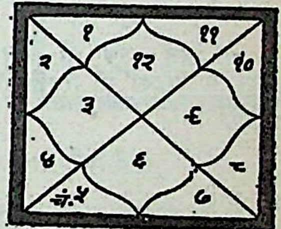


१३३८

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपनी ही कर्क राशि पर स्थित स्वक्षेत्री चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त होती है। वह वाक्पटु होता है तथा उसकी वाणी में कोमलता एवं मधुरता रहती है। वह दूरदर्शी, गम्भीर, स्थिर विचारों वाला तथा प्रसन्न रहने वाला होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से शनि की मकर राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः ऐसा व्यक्ति अपनी बुद्धि के विशेष प्रयोग द्वारा आमदनी की वृद्धि करता है, यद्यपि आमदनी के पक्ष में कुछ असन्तोष बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ-भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः षष्ठभावः चन्द्र

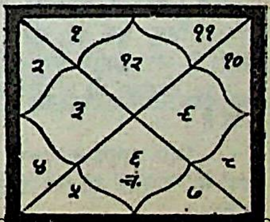


१३३९

छठे रोग एवं शत्रु-भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष एवं झगड़े-झंझटों के कारण अशान्ति का सामना करना पड़ता है। अन्त में वह अपने मनोबल तथा बुद्धि-बल से शत्रु-पक्ष एवं झगड़ों पर प्रभाव स्थापित कर पाता है। उसे सन्तान-पक्ष से भी कष्ट होता है तथा विद्या-ध्ययन में भी परेशानी एवं त्रुटि रहती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में द्वादश-भाव को देखता है, अतः जातक खर्च की अधिकता से दुःखी रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से असन्तोषपूर्ण शक्ति प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम-भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः सप्तमभावः चन्द्र



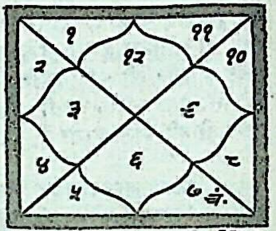
१३४०

सातवें केन्द्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सुन्दर एवं बुद्धिमती स्त्री मिलती है और व्यव-साय के क्षेत्र में सफलता भी प्राप्त होती है। इसके साथ ही जातक को सन्तान-पक्ष से सहयोग मिलता है तथा विद्या-बुद्धि की उन्नति होती है। उसके घरेलू सुख में भी वृद्धि होती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से गुरु की मीन राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक-सौंदर्य, प्रभाव, सम्मान एवं

योग्यता की प्राप्ति होती है। वह घरेलू एवं सामाजिक कार्यों में कुशल तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम-भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: अष्टमभाव: चन्द्र

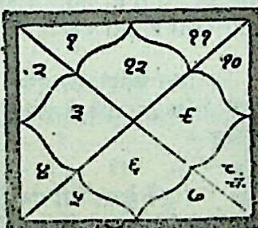


१३४१

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्व का भी लाभ होता है, परन्तु विद्या एवं सन्तान के पक्ष में कमी एवं कष्ट का अनुभव होता है। साथ ही मन तथा मस्तिष्क में अशान्ति बनी रहती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से मंगल की मेष राशि में द्वितीयभाव को देखता है। अतः जातक अनेक साधनों से धन की वृद्धि करता है। वह कौटुम्बिक मामलों में विशेष रुचि रखता है तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम-भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: नवमभाव: चन्द्र

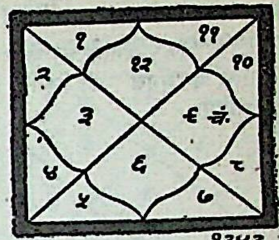


१३४२

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कुछ रुकावटें आती हैं तथा धर्म का पालन भी यथाविधि नहीं हो पाता। उसे सन्तान के सुख में कमी तथा विद्या के क्षेत्र में कमजोरी रहती है। मन तथा मस्तिष्क में परेशानी भी बनी रहती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं उच्चदृष्टि से अपने सामान्य-मित्र शुक्र की वृषभ राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों की शक्ति मिलती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा पुरुषार्थी, हिम्मती एवं धैर्यवना होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम-भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः दशमभावः चन्द्र

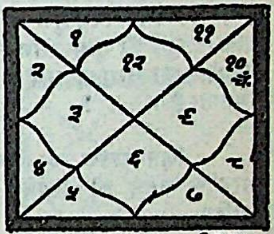


१३४३

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा सहयोग, राज्य द्वारा सम्मान तथा व्यवसाय द्वारा विशेष लाभ होता है। वह कानून को मानने वाला, स्वाभिमानी, विद्वान्, बुद्धिमान् तथा सन्ततिवान् होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता का सुख एवं भूमि, मकान आदि का अच्छा लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान्, धनी, यशस्वी, प्रतिष्ठित विद्वान्, बुद्धिमान् तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश-भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः एकदशभावः चन्द्र

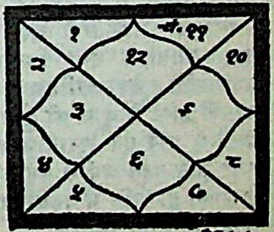


१३४४

ग्यारहवें लाभ-स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपने बुद्धि-बल एवं मनोबल द्वारा आमदनी की खूब वृद्धि करता है। फिर भी उसे कुछ न कुछ असन्तोष बना रहता है। ऐसे व्यक्ति को कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या एवं सन्तान की शक्ति प्राप्त होती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से अपनी ही कर्क राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः वह विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष की उन्नति के लिये निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है ऐसा व्यक्ति स्वार्थपूर्ण बातचीत करने वाला तथा अपनी उन्नति का ध्यान रखने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश-भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः द्वादशभावः चन्द्र



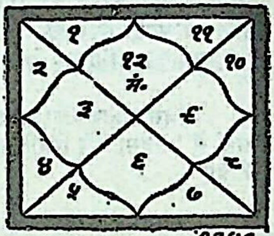
१३४५

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से उसे लाभ भी प्राप्त होता है। उसे सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है, विद्या-पक्ष में कमी रहती है तथा मन एवं मस्तिष्क परेशान बने रहते हैं। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवी मित्र-दृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक अपनी बुद्धि के बल पर शत्रु-पक्ष में काम निकालता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में प्रभाव स्थापित करता है।

'मीन' लग्न में 'मंगल' का फल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम-भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः प्रथमभावः मंगल

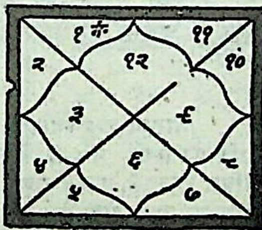


१३४६

पहले केन्द्र एवं शरीर-स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की शारीरिक-शक्ति एवं सम्मान में वृद्धि होती है। साथ ही धन, कुटुम्ब, भाग्य तथा धर्म की उन्नति भी होती है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम-भाव को देखने से स्त्री की शक्ति मिलती है एवं व्यवसाय द्वारा धन तथा घरेलू सुख की वृद्धि भी होती है। आठवीं दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में अष्टमभाव को देखने के कारण आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति कुछ कठिनाइयों के साथ अमीरी ढंग का जीवन बिताता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय-भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः द्वितीयभावः मंगल

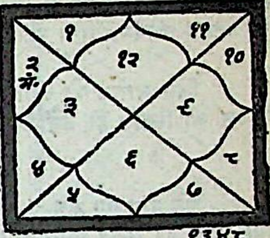


१३४७

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपनी ही मेष राशि पर स्थित स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक के धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि होती है और वह बड़ा धनवान् समझा जाता है। यहाँ से मंगल चौथी नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः विद्या एवं सन्तान के पक्ष में कुछ कमी रहेगी तथा चिन्ता एवं परेशानी के कारण बनते रहेंगे। ऐसा व्यक्ति कटु शब्दों का प्रयोग करता है। सातवीं दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है तथा रहन-सहन अमीरी ढंग का होता है। आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में नवमभाव को देखने से भाग्य की विशेष उन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्नः तृतीयभावः मंगल

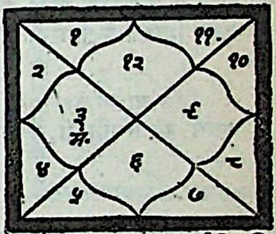


१३४८

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने सामान्य-मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है और उसे भाई-बहिनों का सुख भी प्राप्त होता है। इसके साथ ही धन तथा कुटुम्ब की भी उन्नति होती है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है अतः शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है तथा झगड़ों के मामलों में विजय मिलती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में नवमभाव को देखने से भाग्य की विशेष उन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता द्वारा सुख-सहयोग मिलता है, राज्य से सम्मान प्राप्त होता है तथा व्यवसाय में तरक्की होती है। ऐसा जातक यशस्वी, धर्मात्मा,शत्रुजय तथा भाई-बहिन, कुटुम्ब एवं धन के सुख से सम्पन्न भाग्यशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मगल' का फलादेश नीचें लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्नः चतुर्थभावः मंगल

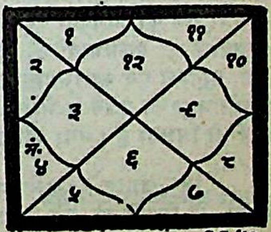


१३४६

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता का सुख एवं भूमि, मकान आदि की शक्ति प्राप्त होती है। उसे धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को भाग्यवान स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। घरेलू सुख भी खूब रहता है। सातवीं मित्र दृष्टि से नवमभाव को देखने से पिता,राज्य एवं व्यवसाय से सुख, सम्मान तथा लाभ मिलता रहता है। आठवीं उच्च दृष्टि से शत्रु की राशि में एकादशभाव को देखने से घर-बैठे ही लाभ का योग बनता रहता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा भाग्यशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्नः पंचमभावः मंगल



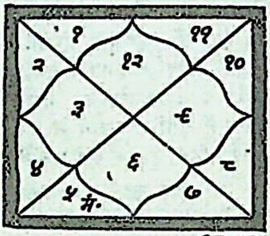
१३५०

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को सन्तान तथा विद्या-पक्ष में कमजोरी रहती है तथा धन एवं कुटुम्ब-पक्ष से भी चिन्ता बनी रहती है। भाग्य एव धर्म का पक्ष भी दुर्बल रहता है। यहाँ से मंगल चौथी सामान्य मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति की कुछ वृद्धि होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से लाभ-भवन को देखने से जातक आमदनी बढ़ाने के लिये विशेष प्रयत्न करता है

तथा आठवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च के मामले में परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ असन्तोषपूर्ण सहयोग मिलता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन संघर्षमय बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: षष्ठभाव: मंगल

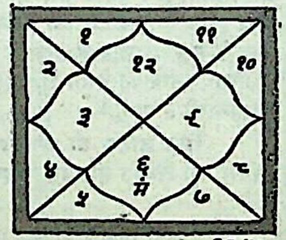


१३५१

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपना बड़ा प्रभाव रखता है। धन की कुछ कमी रहते हुए भी खर्च शान से चलता है तथा कुटुम्ब से भी थोड़ा सुख मिलता है। यहाँ से मगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में नवमभाव को देखता है, अतः कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म का पालन होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च की परेशानी तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से असन्तोष रहता है। आठवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति, प्रभाव एवं सम्मान की वृद्धि होती है तथा झगड़े के मामलों में जातक हिम्मत से काम लेता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली 'सप्तम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: सप्तमभाव: मंगल

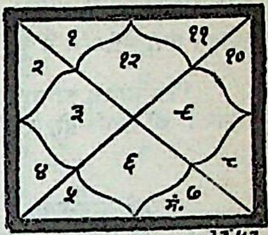


१३५२

सातवें केन्द्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाग्यवान् स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय में भी लाभ होता है। वह धर्म का पालन करता है और भाग्यशाली होता है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा सुख, सहयोग, सम्मान, लाभ एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। विशेषकर रोजगार खूब बढ़ता है तथा धन की आमदनी बहुत अच्छी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, यश, प्रतिष्ठा एवं स्वाभिमान की वृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखने से भाग्य की प्रबल शक्ति से धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, यशस्वी तथा भाग्यशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: अष्टमभाव: मंगल

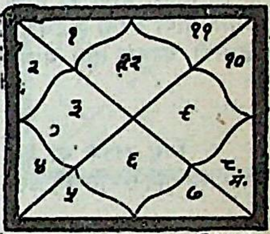


१३५३

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है परन्तु भाग्य, धर्म एवं यश के क्षेत्र में कमी आती है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी उच्चदृष्टि से शत्रु शनि की राशि में एकादशभाव को देखता है अतः आमदनी अच्छी रहती है तथा जातक अधिक मुनाफा खाने का प्रयत्न करता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखने से परिश्रम द्वारा धन का संचय होता है तथा कुटुम्ब का सहयोग भी मिलता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों से कुछ असन्तोष रहता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: नवमभाव: मंगल

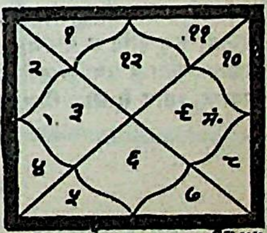


१३५४

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपनी ही वृश्चिक राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा भाग्यशाली, धनी, धर्मात्मा तथा यशस्वी होता है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च के मामले में असन्तोष रहता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी विशेष रुचिकर नहीं होता। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है, परन्तु पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान का सुख यथेष्ट मात्रा में मिलता है। कुल मिलाकर ऐसा जातक भाग्यवान्, सुखी तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: दशमभाव: मंगल



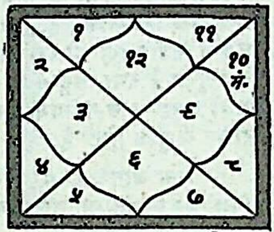
१३५५

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक पिता से बहुत सुख, राज्य से अत्यधिक सम्मान तथा व्यवसाय में बड़ी उन्नति करता है। उसे धन तथा कुटुम्ब का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है तथा धर्म का पालन भी होता है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शारिरिक प्रभाव, शक्ति, प्रतिष्ठा, यश एवं स्वाभिमान की वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि,

मकान एवं घरेलू सुख की प्राप्ति होती है। आठवीं नीचदृष्टि से मित्र की राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः सन्तान तथा विद्या के पक्ष में कुछ कमी रहती है। वाणी में रूखापन तथा मस्तिष्क में कुछ परेशानियाँ भी रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्नः एकादशभावः मंगल

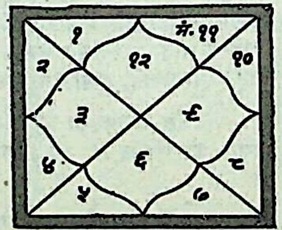


१३२६

ग्यारहवें लाभ-भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। वह बड़ा भाग्यवान् होता है तथा धर्म का पालन भी करता है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः धन तथा कुटुम्ब की उन्नति होती है। सातवीं नीच-दृष्टि से मित्र चन्द्रमा की राशि में पंचमभाव को देखने से विद्या तथा सन्तान के पक्ष में कुछ कमी तथा परेशानी रहती है। आठवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक भाग्य की शक्ति से शत्रु-पक्ष पर विजय एवं प्रभाव प्राप्त करता है तथा झगड़े के मामलों में सफलता पाता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, धनवान् तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः द्वादशभावः मंगल



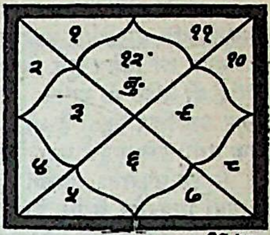
१३२७

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है। धन तथा कुटुम्ब के पक्ष में बहुत कमी रहती है तथा भाग्य, धर्म एवं यश की उन्नति में अनेक कठिनाइयाँ आती रहती हैं। यहाँ से मंगल चौथी शत्रु-दृष्टि से तृतीय-भाव को देखता है, अतः भाई-बहिनों की कुछ असन्तोष-पूर्ण शक्ति मिलती है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री से सुख तथा व्यवसाय से लाभ मिलता है।

'मीन' लग्न में 'बुध' का फल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: प्रथमभाव: बुध

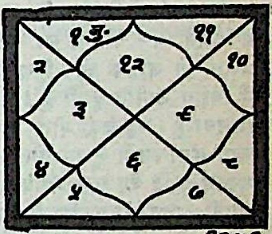


१३५८

पहले केन्द्र एवं शरीर-स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है। साथ ही माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी थोड़ा ही प्राप्त होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं उच्च-दृष्टि से अपनी ही कन्या राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री-पक्ष से सुख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी होता है तथा अपने प्रभाव की एवं व्यवसाय की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: द्वितीयभाव: बुध

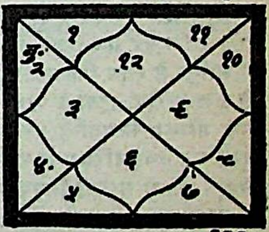


१३५९

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक कुटुम्ब से शक्ति प्राप्त करता है तथा अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा धन का संचय करता है। उसे माता तथा स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है, परन्तु घरेलू सुख अच्छा रहता है तथा भूमि एवं मकान आदि की शक्ति का भी लाभ होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा दैनिक जीवन उल्लासपूर्ण बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: तृतीयभाव: बुध

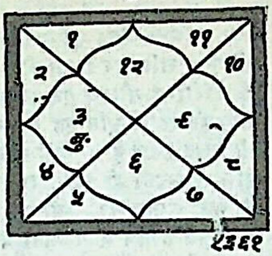


१३६०

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। उसे माता, स्त्री, भूमि, मकान तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। वह बड़ा हिम्मती तथा बहादुर होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में नवमभाव को देखता है। अतः जातक के भाग्य की उन्नति होती है। वह धर्म का पालन करता तथा यशस्वी भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: चतुर्थभाव: बुध

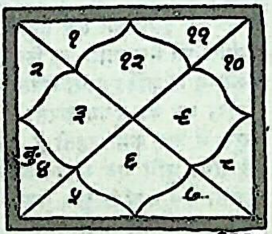


१३६१

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपनी ही मिथुन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री बुध के प्रभाव से जातक को माता का विशेष सुख मिलता है तथा भूमि, मकान आदि की शक्ति भी प्राप्त होती है। वह स्त्री-पक्ष से बहुत आनन्दित रहता है और उसका घरेलू जीवन भी सुख तथा उल्लासपूर्ण बना रहता है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी उसे सफलता मिलती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता से शक्ति, राज्य से प्रतिष्ठा एवं व्यवसाय से लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा भाग्यवान् होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: पंचमभाव: बुध

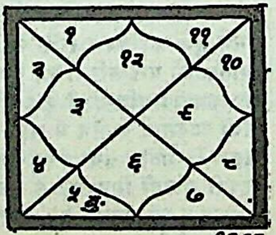


१३६२

पाँचवें त्रिकोण विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की विद्या बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में विशेष उन्नति होती है। उसे प्रसन्नता का सुख भी मिलता है। वह बड़ी मीठी वाणी बोलने वाला तथा ग्रह-कार्य-संचालन में कुशल होता है। उसे माता, स्त्री, भूमि, मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में लाभ-भवन को देखता है, अतः जातक अपनी बुद्धि-बल से आमदनी की वृद्धि करता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, यशस्वी तथा विवेकी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: षष्ठभाव: बुध

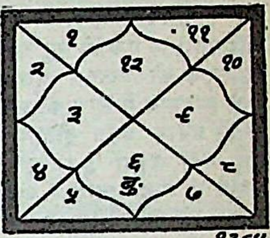


१३६३

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में शान्ति से काम निकालता है। उसका माता तथा स्त्री से कुछ विरोध रहता है तथा भूमि, मकान आदि का सुख भी कम मिलता है। व्यवसाय के क्षेत्र में वह अपने बुद्धि-बल तथा परिश्रम से सफलता प्राप्त करता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: सप्तमभाव: बुध

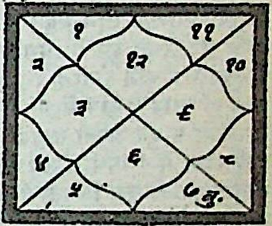


२३६४

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी ही कन्या राशि पर स्थित स्वक्षेत्री तथा उच्च के बुध के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है, घरेलू जीवन प्रभावपूर्ण रहता है तथा व्यवसाय में विशेष सफलता मिलती है। उसे माता, भूमि, मकान आदि का श्रेष्ठ सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से बुध सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र गुरु की मीन राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक-स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है तथा गृहस्थी का संचालन करने में अधिक परिश्रम करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: अष्टमभाव: बुध

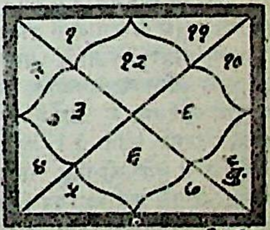


२३६५

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। उसका दैनिक जीवन भी सुखी तथा प्रभावपूर्ण रहता है। परन्तु स्त्री के सुख में विशेष कमी रहती है और माता का सुख भी कम ही मिल पाता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त करता है तथा धन की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्नशील बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: नवमभाव: बुध

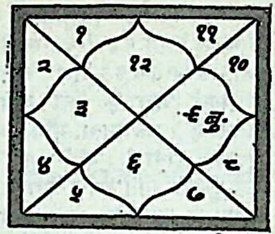


२३६६

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य में वृद्धि होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। उसे माता, स्त्री, भूमि, मकान तथा व्यवसाय का श्रेष्ठ सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों का श्रेष्ठ सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, यशस्वी, पराक्रमी तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: दशमभाव: बुध

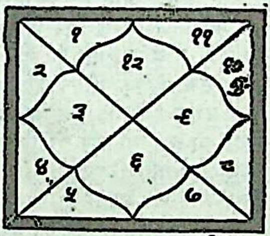


२३६७

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को पिता से सुख-सहयोग, राज्य से प्रतिष्ठा तथा व्यवसाय से लाभ की प्राप्ति होती है। उसे स्त्री-पक्ष से भी प्रभाव प्राप्त होता है तथा गृहस्थ-जीवन सुख-पूर्ण बना रहता है। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी ही मिथुन राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अत: जातक को माता, भूमि, मकान एवं घरेलू सुख भी पर्याप्त मिलता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, भाग्यवान्, गौरवशाली तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: एकादशभाव: बुध

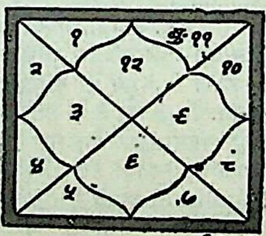


२३६८

ग्यारहवें लाभ-भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। उसे माता, स्त्री, भूमि, मकान तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी अत्यधिक सफलता मिलती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: जातक को सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि की विशेष उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति मधुरभाषी, बुद्धिमान्, धनी, सुखी, प्रभावशाली तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: द्वादशभाव: बुध



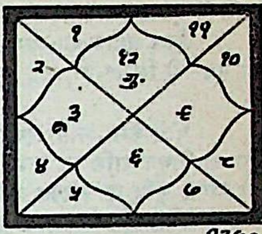
२३६९.

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त होता है। उसे स्त्री, माता, भूमि, मकान, घरेलू सुख तथा स्थानीय व्यवसाय के क्षेत्र में भी हानि तथा कष्टों का सामना करना पड़ता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में षष्ठभाव को देखता है, अत: जातक शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है। वह धैर्यवान् तथा हिम्मती होता है।

'मीन' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: प्रथमभाव: गुरु

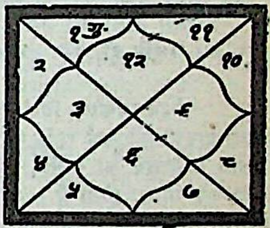


१३६०.

पहले केन्द्र एवं शरीर-स्थान में अपनी ही मीन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। वह राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सम्मान, सहयोग, लाभ एवं यश प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा व्यवसायी तथा धनी होता है। यहाँ से गुरु अपनी पांचवी उच्चदृष्टि से मित्र की राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः विद्या एवं बुद्धि की विशेष उन्नति होती है तथा सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से सुन्दर स्त्री मिलती है तथा स्त्री के सुख एवं व्यवसाय में वृद्धि होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की भी उन्नति होती है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: द्वितीयभाव: गुरु

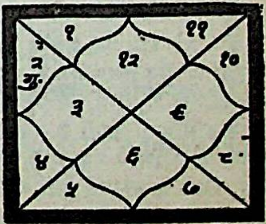


१३६१

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक धन का संचय खूब करता है तथा कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त करता है, परन्तु शारीरिक-स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक धन की शक्ति से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित करता है तथा झगड़े के मामलों में धैर्य से काम लेकर सफलता प्राप्त करता है। सातवीं दृष्टि से शुक्र की राशि में अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति की वृद्धि होती है तथा दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण रहता है। नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में दशमभाव को देखने के कारण पिता से बहुत सहयोग मिलता है, राज्य से प्रतिष्ठा एवं व्यवसाय से प्रचुर लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी सुखी तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: तृतीयभाव: गुरु



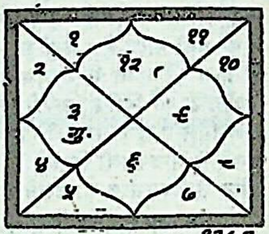
१३६२

तीसरे भाई-बहिनों एवं पराक्रम के भवन में अपने सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाई-बहिनों का सुख कुछ मतभेद के साथ मिलता है तथा पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। उसका पिता से भी कुछ मतभेद रहता है, परन्तु राज्य में प्रभाव बढ़ता है तथा व्यवसाय में उन्नति होती है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री-पक्ष से सुख प्राप्त होता है तथा परिश्रम द्वारा व्यवसाय में सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से

नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है एवं नवीं नीचदृष्टि से शनि की राशि में एकादशभाव को देखने से आमदनी के मार्ग में रुकावटें आती हैं।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः चतुर्थभावः गुरु

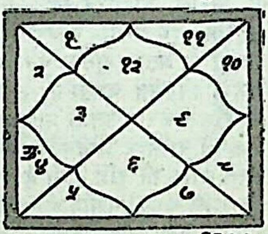


१३६३

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का अच्छा सुख मिलता है। शारीरिक-सौंदर्य, प्रभाव, यश तथा घरेलू सुख में भी वृद्धि होती है। यहाँ से गुरु अपनी पांचवी दृष्टि से शुक्र की राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में दशमभाव को देखने से पिता से शक्ति मिलती है, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ एवं सुख प्राप्त होता है। नवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च के कारण असन्तोष रहता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी अधिक रुचिकर नहीं होता।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः पंचमभावः गुरु



१३६४

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या, बुद्धि एवं वाणी का श्रेष्ठ बल प्राप्त होता है। साथ ही राज्य, पिता एवं व्यवसाय से भी लाभ होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। सातवीं नीचदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं तथा नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक-सौंदर्य, स्वास्थ्य, प्रभाव, स्वाभिमान, गौरव एवं प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है। सामान्यतः ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली होता है तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः षष्ठभावः गुरु



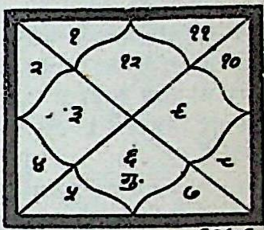
१३६५

छठे रोग एवं शत्रु के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर प्रभावशाली रहता है, परन्तु उसके शारीरिक-सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में नवमभाव को देखता है, अतः पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है। वह अपने शारीरिक श्रम के बल पर उन्नति करता रहता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से असन्तोष रहता है तथा

नवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन की वृद्धि होती है और कुटुम्ब का सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति परिश्रम द्वारा धन तथा यश प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः सप्तमभावः गुरु

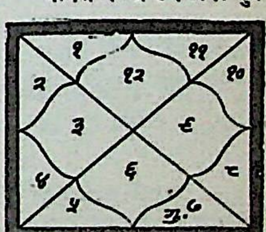


१३७६

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्याराशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है तथा स्त्री-पक्ष से सुख एवं शक्ति प्राप्त होती है। साथ ही व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। उसे पिता तथा राज्य के पक्ष से प्राप्त होता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं नीचदृष्टि से शत्रु शनि की राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी का पक्ष कमजोर रहता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, प्रतिष्ठा, यश, स्वाभिमान एवं प्रभाव में वृद्धि होती है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों की शक्ति अच्छी मिलती है, परन्तु उनसे कुछ असन्तोष रहता है। साथ ही पराक्रम में अधिक वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः अष्टमभावः गुरु

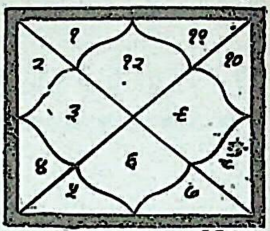


१३७७

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से हानि तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में भी कमी रहती है। यहाँ से गुरु अपनी पांचवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से असन्तोष बना रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय-भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है एवं नवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: नवमभाव: गुरु

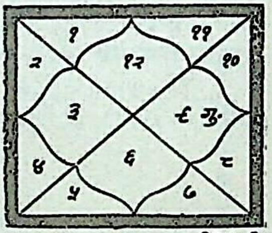


१३०८

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है। वह राज्य, पिता एवं व्यवसाय के पक्ष में भी अत्यधिक सफलता, यश, सम्मान, लाभ तथा सुख प्राप्त करता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, यश तथा स्वाभिमान में वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से शुक्र की राशि में तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। नवीं उच्च-दृष्टि से मित्र की राशि में पंचम-भाव को देखने के कारण विद्या-बुद्धि की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है तथा सन्तान-पक्ष से भी सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति कलात्मक रुचि का, प्रभावशाली तथा वाणी का धनी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: दशमभाव: गुरु

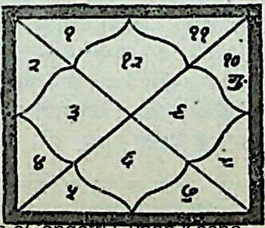


१३०९

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपनी ही धनु राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक को पिता से बड़ी शक्ति, राज्य से बड़ा सम्मान तथा व्यापार से बड़ा लाभ प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा प्रतिष्ठित, धनी, यशस्वी तथा प्रभावशाली होता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय-भाव को देखता है, अतः धन की उन्नति होती है तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ-भाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है तथा नवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष पर भारी प्रभाव रहता है तथा झगड़े के मामलों में सफलता एवं विजय प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, यशस्वी, सुखी, बहादुर, हिम्मती तथा हुकूमत करने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: एकादशभाव: गुरु



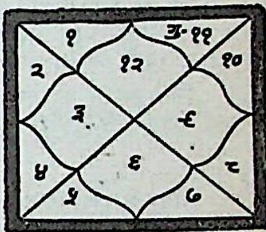
१३१०

ग्यारहवें लाभ-भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी में बहुत कमी आती है। साथ ही राज्य, पिता एवं व्यवसाय के पक्ष से भी कष्ट प्राप्त होता है तथा भाग्योन्नति में रुकावटें आती हैं। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं दृष्टि से शुक्र की राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः भाई-बहिनों का थोड़ा सुख मिलता है तथा पराक्रम में भी कुछ वृद्धि होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से उन्नति प्राप्त होती है तथा विद्या-

वृद्धि का विशेष लाभ होता है। नवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री सुन्दर मिलती है, उससे सुख तथा सहयोग प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः द्वादशभावः गुरु



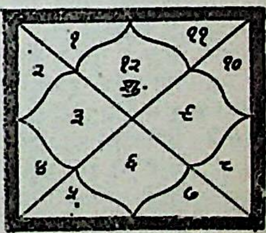
१३८१

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण उसे परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी असन्तोष रहता है। शारीरिक-सौंदर्य, स्वास्थ्य एवं प्रभाव में कमी आती है तथा पिता के सुख की हानि होती है। राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता, भूमि, मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठ-भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है तथा नवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्व शक्ति का लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति का दैनिक जीवन प्रभावशाली बना रहता है।

'मीन' लग्न में 'शुक्र' का फल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्नः प्रथमभावः शुक्र

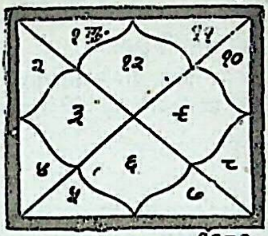


१३८२

पहले केन्द्र एवं शरीर-स्थान में अपने सामान्य मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में वृद्धि होती है। वह अच्छी आयु पाता है। भाई-बहिनों का सुख रहता है, पराक्रम की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है। उसका दैनिक जीवन उल्लासपूर्ण बना रहता है। यहाँ से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र बुध की कन्या राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री के सुख में कमी आती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं। उसका गृहस्थ जीवन असन्तोषपूर्ण बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्नः द्वितीयभावः शुक्र

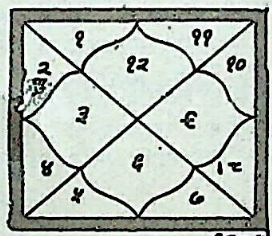


१३८३

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने सामान्य मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक अपने पुरुषार्थ द्वारा धन की वृद्धि करने का प्रयत्न करता है, परन्तु उसे पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं होती। कुटुम्ब के सुख में भी कुछ कमी बनी रहती है तथा भाई-बहिनों के सुख में भी कमी आती है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही तुला राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति पुरुषार्थ तथा होशियारी द्वारा रईसी ढंग का जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः तृतीयभावः शुक्र

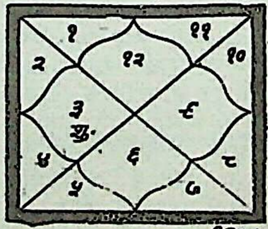


१३८४

तीसरे भाई-बहिन तथा पराक्रम के भवन में अपनी ही वृषभ राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों की शक्ति तो मिलती है, परन्तु शुक्र के अष्टमेश होने के कारण उनसे कुछ परेशानी भी रहती है। पराक्रम की वृद्धि के साथ-साथ उसे आयु एवं पुरातत्त्व के पक्ष में भी लाभ होता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि मे नवमभाव को देखता है, अतः जातक की भाग्योन्नति तथा धार्मिक उन्नति में कुछ रुकावटें आती हैं। फिर भी ऐसा व्यक्ति अपने परिश्रम के बल पर सुखी तथा समृद्ध जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्नः चतुर्थभावः शुक्र

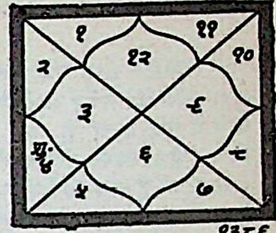


१३८५

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से माता के सुख में कुछ कमी रहती है तथा भूमि एवं मकानादि की भी त्रुटिपूर्ण शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु उसकी आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति को भाई-बहिनों का सुख मिलता है एवं पराक्रम में भी वृद्धि होती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र गुरु की धनु राशि में नवमभाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय के द्वारा प्राप्त सुख, सहयोग, प्रतिष्ठा एवं लाभ में कुछ कमी रहेगी, परन्तु जातक अपने चातुर्य एवं परिश्रम द्वारा लाभ उठाता रहेगा तथा उन्नति करता रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: पंचमभाव: शुक्र

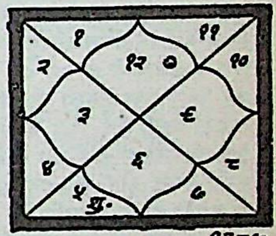


१३८६

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने सामान्य शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि की विशेष शक्ति प्राप्त होती है। वह कला के क्षेत्र में उन्नति करता है तथा वाणी का भी धनी होता है। उसे सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है। भाई-बहिनों की शक्ति प्राप्त होती है, पुरुषार्थ की वृद्धि होती है तथा दीर्घायु भी मिलती है। परन्तु शुक्र के अष्टमेश होने के कारण सभी क्षेत्रों में कुछ-न-कुछ कमी अथवा असन्तोष की झलक भी अवश्य बनी रहती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से शनि की मकर राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है और वह अपने प्रत्येक स्वार्थ की सिद्धि करता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: षष्ठभाव: शुक्र

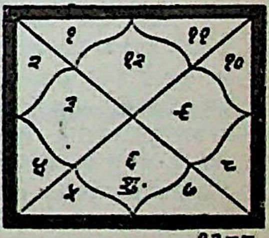


१३८७

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष से कठिनाइयाँ प्राप्त होती हैं, परन्तु अपनी चतुराई के बल पर वह उन पर विजय प्राप्त करता रहता है। साथ ही जातक को भाई-बहिनों से कष्ट, आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में हानि तथा पुरुषार्थ में कमी का सामना भी करना पड़ता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से कुछ शक्ति प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: सप्तमभाव: शुक्र

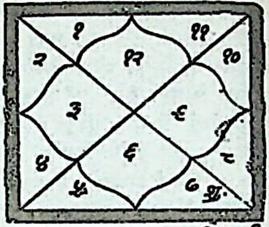


१३८८

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित अष्टमेश तथा नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियों का सामना करना पड़ता है। साथ ही भाई-बहिनों की कमी तथा पराक्रम में कमजोरी भी रहती है। पुरातत्त्व, आयु एवं दैनिक जीवन की ओर से भी असन्तोष बना रहता है। यहाँ से शुक्र सातवीं उच्च दृष्टि से अपने सामान्य मित्र गुरु की मीन राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक का शरीर स्वस्थ, सुडौल, विशाल तथा प्रभावशाली होता है। वह स्वाभिमानी तथा प्रतिष्ठित भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: अष्टमभाव: शुक्र

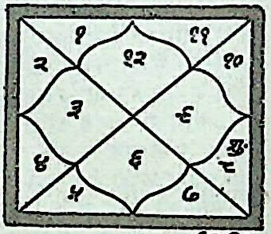


१३८९

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपनी ही तुला राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ मिलता है। उसका दैनिक जीवन भी बड़ा प्रभावशाली बना रहता है तथा भाई-बहिनों से असन्तोष एवं पराक्रम में कमी का सामना भी करना होता है। ऐसा व्यक्ति लापरवाह किस्म का होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपने सामान्य मित्र मंगल की मेष राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक को कुटुम्ब से परेशानी रहती है, परन्तु चतुराई के बल पर धन की वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: नवमभाव: शुक्र

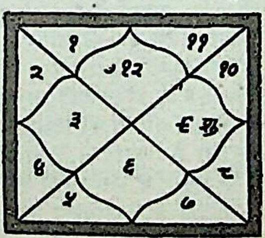


१३९०

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने सामान्य मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक धर्म का यथाविधि पालन नहीं कर पाता तथा उसकी भाग्योन्नति एवं यश-वृद्धि में कठिनाइयाँ आती हैं। फिर भी उसका दैनिक जीवन आनन्दपूर्ण बना रहता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है। यहाँ से अष्टमेश शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृषभ राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों का त्रुटिपूर्ण सुख प्राप्त होता है, परन्तु पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति पुरुषार्थ के बल पर ही अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: दशमभाव: शुक्र



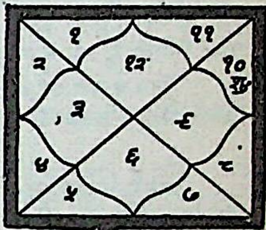
१३९१

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एव व्यवसाय के भवन में अपने सामान्य मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता के सुख में कुछ कमी रहती है। साथ ही राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष से भी असन्तोष रहता है अथवा त्रुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है, परन्तु जातक की आयु एव पुरातत्त्व शक्ति की वृद्धि होती है और वह अपने पुरुषार्थ द्वारा सफलता एवं यश प्राप्त करता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख तो प्राप्त होता है, परन्तु उसमें

कुछ कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपने चातुर्य एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर उन्नति करता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः एकादशभावः शुक्र



१३६२

ग्यारहवें लाभ-भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित अष्टमेश के प्रभाव से जातक कुछ कठिनाइयों के साथ अपनी आमदनी को बढ़ाता है। उसे पुरातत्त्व शक्ति एवं आयु का श्रेष्ठ लाभ प्राप्त होता है तथा पराक्रम की भी विशेष वृद्धि होती है, भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है, वह परिश्रम द्वारा उन्नति करता है तथा अपना स्वार्थ सिद्ध करने में चतुर होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को प्रयत्नपूर्वक सन्तान-पक्ष से शक्ति मिलती है तथा विद्या-बुद्धि का भी लाभ होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः द्वादशभावः शुक्र



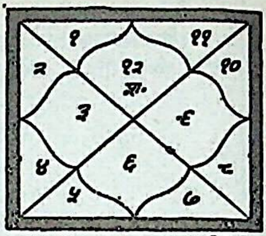
१३६३

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बंधों से भी कठिनाइयों के साथ लाभ प्राप्त होता है। उसकी आयु तथा पुरातत्त्व शक्ति की भी हानि होती है तथा भाई-बहिनों के सुख एवं पराक्रम में भी कमी रहती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक अपनी चतुराई के बल पर शत्रु-पक्ष में सफलता प्राप्त करता है तथा झगड़ों से बचे रहने का प्रयत्न करता है।

'मीन' लग्न में 'शनि' का फल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: प्रथमभाव: शनि

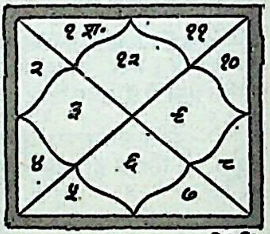


१३६४

पहले केन्द्र एवं शरीर-स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित व्ययेश शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है, परन्तु वाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में उतार-चढ़ाव आता रहता है। सातवीं मित्र दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-पक्ष से सुख-दुःख तथा व्यवसाय-पक्ष से हानि-लाभ की प्राप्ति होती रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण पिता से वैमनस्य रहता है, राज्य से परेशानी मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में संघर्ष का सामना करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: द्वितीयभाव: शनि

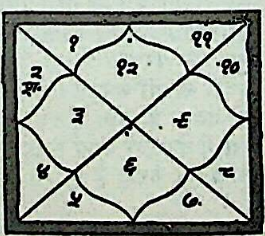


१३६५

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित व्ययेश तथा नीच के शनि के प्रभाव से जातक के धन-संचय में कठिनाइयाँ आती हैं तथा हानि भी उठानी पड़ती है। साथ ही उसे कुटुम्ब का सुख भी थोड़ा ही मिल पाता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध हानिकारक सिद्ध होते हैं। यहां से शनि अपनी तीसरी मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। सातवीं उच्च तथा मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है तथा दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी खूब रहती है, परन्तु धन का संचय नहीं हो पाता।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: तृतीयभाव: शनि

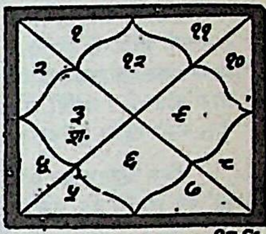


१३६६

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थिति व्ययेश शनि के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों के द्वारा सुख-दुःख दोनों की ही प्राप्ति होती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। वह बड़ा पुरुषार्थी, हिम्मत वाला तथा परिश्रमी होता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः सन्तान-पक्ष से कठिनाई रहती है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कमी बनी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्योन्नति में कुछ कमी रहती है तथा दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है। परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: चतुर्थभाव: शनि

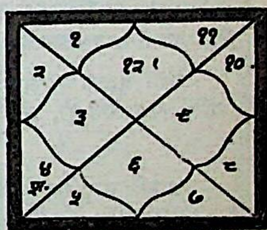


१२६७.

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में हानि-लाभ युक्त शक्ति प्राप्त होती है घरेलू सुख में भी कुछ कमी रहती है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी शत्रु दृष्टि से षष्ठ भाव को देखता है। अतः शत्रु-पक्ष से परेशानी रहती है तथा झगड़े के मामलों में कभी हानि उठानी पड़ती है और कभी लाभ भी होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है, परन्तु बाहरी स्थानों से लाभ तथा सुख मिलता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: पंचमभाव: शनि

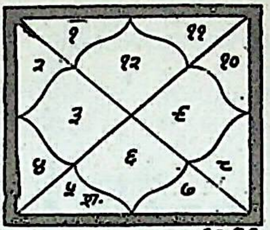


१२६८

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से हानि-लाभ दोनों ही प्राप्त होते हैं तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयों के साथ उन्नति होती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ अच्छा रहता है, तथा बुद्धि-बल से खर्च चलाने की शक्ति भी मिलती है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से सप्तम-भाव को देखता है। अतः स्त्री-पक्ष से सुख-दुःख तथा व्यवसाय से हानि-लाभ दोनों का मिश्रित योग प्राप्त होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादशभाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता रहता है। दसवीं नीच दृष्टि से शत्रु की राशि में तृतीयभाव को देखने के कारण धन-संचय की शक्ति में तो वृद्धि होती है, परन्तु कुटुम्ब द्वारा क्लेश प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: षष्ठभाव: शनि

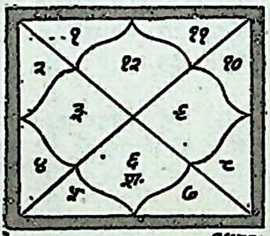


१३९९

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में खर्च करके लाभ प्राप्त करता है। उसे बीमारी आदि में भी खर्च करना पड़ता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी उच्चदृष्टि से मित्र की राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक की आयु तथा पुरातत्त्व शक्ति की वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती हैं, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: सप्तमभाव: शनि

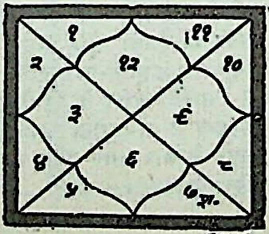


१४००

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित व्ययेश तथा लाभेश शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सुख-दुःख एवं हानि-लाभ दोनों की ही प्राप्ति होती है। खर्च अधिक रहने से परेशानी होती है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः भाग्योन्नति एव धर्मोन्नति में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। सातवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से जातक के शरीर में कुछ कमजोरी रहती है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता के सुख में हानि-लाभ दोनों का ही योग रहता है तथा भूमि एवं मकान आदि का सुख भी कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: अष्टमभाव: शनि



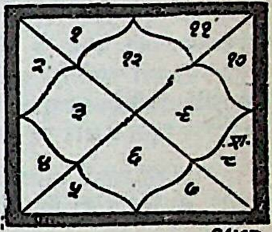
१४०१

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित उच्च के शनि के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से विशेष आमदनी होती है, परन्तु उसके लिए दौड़-धूप अधिक करनी पड़ती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से दशम-भाव को देखता है, अतः पिता-पक्ष से असन्तोष, राज्य-पक्ष से सामान्य सम्पर्क तथा व्यवसाय-पक्ष से सामान्य लाभ होता है। सातवीं नीचदृष्टि से शत्रुकी राशि में द्वितीय-भाव का देखने से धनसंचय का अभाव रहता है तथा

कुटुम्ब से परेशानी प्राप्त होती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण सन्तान-पक्ष में हानि तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है। ऐसे व्यक्ति के मस्तिष्क में चिन्तायें घर किये रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः नवमभावः शनि

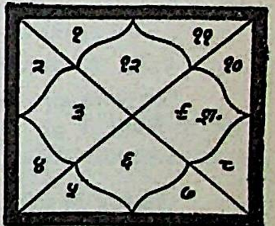


१४०२

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अपने भाग्य की उन्नति तो करता है, परन्तु उससे कुछ कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं। इसी प्रकार धर्म-पालन में भी कमी रहती है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक की आमदनी अच्छी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है एवं दसवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में लाभ एवं सफलता की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्नः दशमभावः शनि

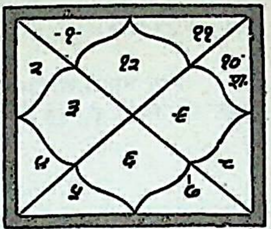


१४०३

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित व्ययेश शनि के प्रभाव से जातक को पिता के सुख में हानि, व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाई एवं राज्य के पक्ष में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ता है, परन्तु उसकी आमदनी अच्छी रहती है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च शानदार रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा मकान आदि का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा स्थानीय व्यवसाय में हानि-लाभ दोनों का ही योग बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: एकादशभाव: शनि

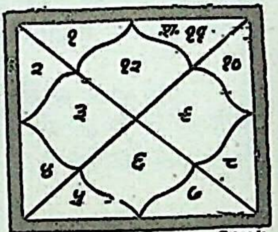


१४०४

ग्यारहवें लाभ-भवन में अपनी ही मकर राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है और वह बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से खूब धन पैदा करता है। खर्च भी शानदार रहता है, परन्तु आमदनी बढ़ाने के लिए उसे कुछ कठिनाइयाँ भी उठानी पड़ती हैं। यहाँ से शनि अपनी तीसरी शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है तथा धन कमाने के लिए बहुत दौड़-धूप करनी पड़ती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष की कुछ हानि होती है तथा विद्या के क्षेत्र में भी कुछ कमी बनी रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व की शक्ति भी मिलती है। ऐसे व्यक्ति की वाणी में कुछ रूखापन रहता है और वह अधिक स्वार्थी भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: द्वादशभाव: शनि



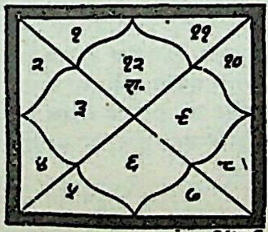
१४०५

बारहवें व्यय-स्थान में अपनी ही कुम्भ राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक का खर्च खूब रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उस खर्च को चलाने की शक्ति प्राप्त होती है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी नीचदृष्टि से द्वितीयभाव को शत्रु की राशि में देखता है, अतः धन तथा कुटुम्ब की ओर से जातक चिन्तित बना रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता प्राप्त करता है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं तथा धर्म और यश की उन्नति कम ही हो पाती है।

'मीन' लग्न में 'राहु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: प्रथमभाव: राहु

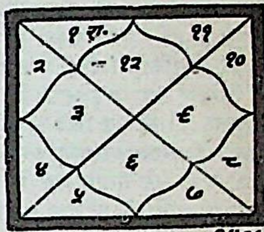


१४०६

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है, परन्तु वह विशेष युक्तियों द्वारा सम्मान तथा प्रभाव को अवश्य प्राप्त कर लेता है। मन के भीतर कुछ कमी का अनुभव होने पर भी वह गुप्त-युक्तियों, चातुर्य तथा बुद्धि-बल से अपनी उन्नति के लिये प्रयत्नशील बना रहता है तथा अन्त में अपनी सभी कठिनाइयों पर विजय भी प्राप्त कर लेता है और जीवन को उन्नत तथा प्रभावशाली बनाता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: द्वितीयभाव: राहु

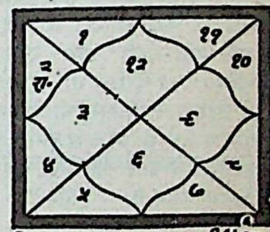


१४०७

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव जातक धन की कमी का विशेष रूप से अनुभव करता है और उसे कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त नहीं होता। वह गुप्त-युक्तियों के बल पर धन की उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है तथा बड़ी कठिनाइयों के बाद थोड़ी बहुत सफलता भी पा लेता है, परन्तु उसे कभी-कभी आर्थिक कष्ट अत्यधिक परेशान करते रहते हैं।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: तृतीयभाव: राहु

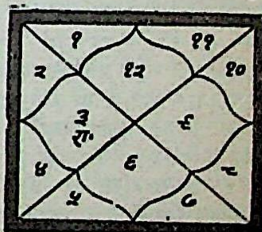


१४०८

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। वह अपनी गुप्त-कमजोरियों को छिपाने में कुशल होता है तथा पुरुषार्थ की वृद्धि एवं जीवन के लिये आवश्यक सफलताओं को प्राप्त करने के लिये बड़ी हिम्मत तथा बहादुरी से काम लेता है। उसे भाई-बहिनों की ओर से कुछ कमी तथा कष्ट का अनुभव भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: चतुर्थभाव: राहु

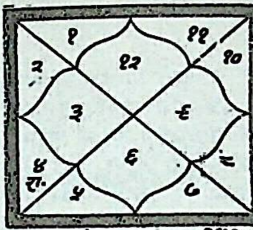


१४०९

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक अपनी माता का विशेष सुख एवं सहयोग प्राप्त करता है तथा भूमि, मकान एवं घरेलू सुख की अपनी गुप्त-युक्तियों एवं परिश्रम के बल पर उन्नति करता है। कभी-कभी से सुख के साधनों की आकस्मिक प्राप्ति भी हो जाती है। वह बड़ी शान-शौकत का जीवन बिताता है, परन्तु मन के भीतर कभी-कभी अशान्ति का अनुभव भी करता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: पंचमभाव: राहु

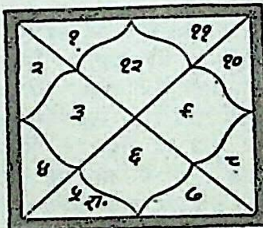


१४१०

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं, तथा सन्तान-पक्ष से भी कष्ट का अनुभव होता है। ऐसे व्यक्ति की बोली में रूखापन होता है तथा मस्तिष्क में चिन्ताएं घर किए रहती हैं। वह सत्यासत्य एवं उचित-अनुचित का विचार किये बिना अपनी सुख-वृद्धि का प्रयत्न करता है तथा मन को प्रसन्न रखना चाहता है, परन्तु कभी-कभी उसे सन्तान-पक्ष से विशेष कष्ट प्राप्त होता है तथा चिन्तायें भी परेशान करती हैं।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: षष्ठभाव: राहु

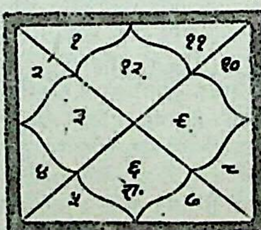


१४११

छठे रोग एवं शत्रु-भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपना बड़ा भारी भाव रखता है। वह अपने युक्ति-बल से शत्रुओं को परास्त तो करता है, परन्तु शत्रु-पक्ष द्वारा उसे बार-बार परेशान भी किया जाता है। ऐसे व्यक्ति को ननसाल-पक्ष से भी कुछ हानि होती है। प्रत्येक स्थिति में ऐसा जातक बड़ा हिम्मती, धैर्यवान्, साहसी, चतुर तथा सावधान रहने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: सप्तमभाव: राहु



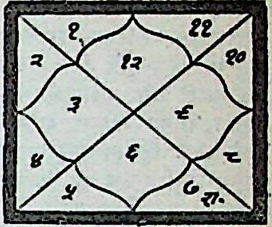
१४१२

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कुछ कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का अनुभव होता है, परन्तु अपनी गुप्त-युक्तियों, चातुर्य एवं बुद्धि के बल से ऐसा व्यक्ति उन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता है। उसके गृहस्थ-जीवन में अनेक बार संकट के अवसर उपस्थित होते हैं, परन्तु वह बार-बार उन सब पर विजय पाकर अपनी उन्नति करता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: अष्टमभाव: राहु

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु(जीवन) के सम्बन्ध में अनेक बार चिन्ताओं तथा कष्टों का सामना करना पड़ता है, परन्तु उसकी आयु में वृद्धि होती रहती है। इसी प्रकार उसे पुरातत्त्व में भी हानि एवं कठिनाई के योग उपस्थित होते हैं, परन्तु वह अपनी चतुराई के बल पर उन सबका निराकरण कर लाभ उठाता है।

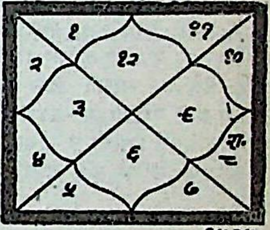


१४१३

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: नवमभाव: राहु

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति तथा धर्मोन्नति में बाधायें आती रहती हैं तथा यश की प्राप्ति नहीं हो पाती। परन्तु ऐसा व्यक्ति अपनी हिम्मत, गुप्त-युक्ति बल, बुद्धि बल तथा परिश्रम द्वारा भाग्योन्नति के लिए कठिन प्रयत्न करता है। कभी-कभी उसे आकस्मिक-लाभ भी हो जाता है तो कभी-कभी अत्यधिक कष्ट का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अनेक संघर्षों को पार करने के बाद ही अपनी भाग्योन्नति कर पाता है।

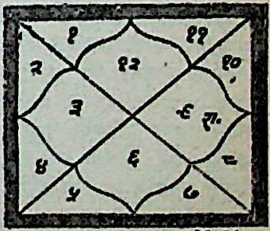


१४१४

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: दशमभाव: राहु

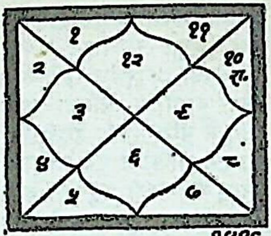
दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को पिता के पक्ष में महान् कष्ट, राज्य से परेशानी तथा व्यवसाय में बारम्बार हानि का सामना करना पड़ता है, उसके मान-सम्मान में भी कमी बनी रहती है। परन्तु ऐसा व्यक्ति अपने युक्ति-बल तथा परिश्रम द्वारा कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता रहता है तथा संघर्षों के बावजूद भी अपनी उन्नति करने में कुछ सफलता प्राप्त कर लेता है।



१४१५

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: एकादशभाव: राहु

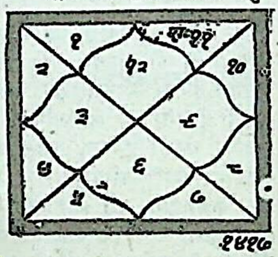


१४१६

ग्यारहवें लाभ-भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आमदनी में विशेष वृद्धि होती है। वह अधिक मुनाफा कमाता है। यद्यपि उसे धनोपार्जन के क्षेत्र में अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, फिर भी वह उनसे अपनी हिम्मत नहीं हारता तथा धैर्य, परिश्रम एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर सफलता प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे आकस्मिक लाभ भी होता है। वह बड़ी पैनी सूझ-बूझ तथा हिम्मत वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश-भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: द्वादशभाव: राहु



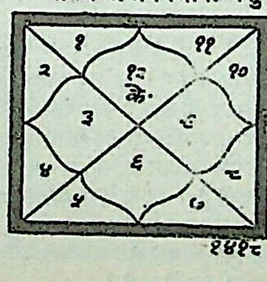
१४१७

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक अपना खर्च चलाने के लिए कठिन परिश्रम, गुप्त युक्ति-बल तथा बुद्धि-बल का आश्रय लेता है। कभी-कभी उसे खर्च के कारण बड़ी कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं, परन्तु वह उन सब पर अपने प्रयत्नों से विजय पाता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी उसे परेशानियों का अनुभव होता है।

'मीन' लग्न में 'केतु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: प्रथमभाव: केतु

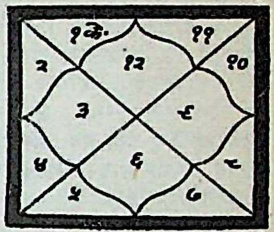


१४१८

पहले केन्द्र एवं शरीर-स्थान में अपने गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शरीर पर सांघातिक चोट लगती है और किसी समय उसे मृत्यु-तुल्य कष्ट का सामना भी करना पड़ता है। उसके शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त-युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर व्यक्तित्व एवं प्रभाव का विकास करता है तथा बड़ी हिम्मत के साथ अपने संघर्षपूर्ण जीवन को बिताता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे के अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: द्वितीयभाव: केतु

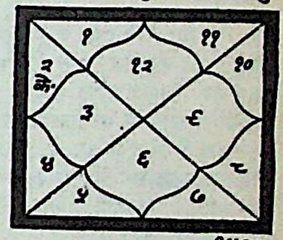


१४१९

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक धन का संग्रह कर पाने में सफल नहीं हो पाता तथा कुटुम्ब-पक्ष की ओर से भी उसे कष्ट का अनुभव होता रहता है। ऐसा व्यक्ति कठिन परिश्रम, हिम्मत तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर अपनी परेशानियों पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करता है तथा थोड़ी-बहुत सफलता भी पा लेता है। कभी कभी उसे आकस्मिक रूप में भी धन का लाभ हो जाता है, परन्तु अन्य लोगों की दृष्टि में ऐसा व्यक्ति धनवान् तथा कौटुम्बिक सुख से सम्पन्न प्रतीत होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

मीनलग्न: तृतीयभाव: केतु

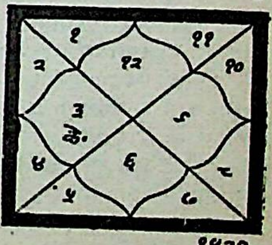


१४२०

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है। वह बड़ा हिम्मती, बहादुर, परिश्रमी, चतुर तथा गुप्त-युक्तियों का माहिर होता है। उसे अपने भाई-बहिनों की ओर से कुछ कष्ट मिलता है, जिसके कारण वह अपने मन में दुःख एवं चिन्ताओं का अनुभव करता है, परन्तु बाहरी लोगों के समक्ष वह अपनी परेशानियों को प्रकट नहीं होने देता तथा अपने पुरुषार्थ द्वारा जीवन में अनेक प्रकार की सफलतायें प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिय—

मीनलग्न: चतुर्थभव: केतु

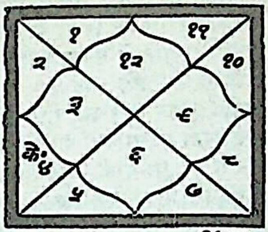


१४२१

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक को माता के पक्ष में बहुत कष्ट प्राप्त होता है, तथा भूमि, मकान एवं घरेलू सुख में भी कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त-युक्तियों, धैर्य, साहस तथा चतुराई के बल पर सुख के साधनों को प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। कभी-कभी घोर संकट उपस्थित हो जाने पर भी वह विचलित नहीं होता और हिम्मत के साथ उसका मुकाबला करके सफलता प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: पंचमभाव: केतु

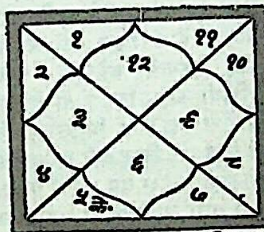


१४२२

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से बड़े कष्ट तथा कमी का योग प्राप्त होता है। उसके मस्तिष्क में चिन्ताएं घर किये रहती हैं तथा मन अशान्त बना रहता है। विद्याध्ययन के क्षेत्र में उसे अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। परन्तु वह अपनी गुप्त-युक्तियों, परिश्रम एवं हिम्मत के बल पर विद्या तथा सन्तान पक्ष की कमियों को दूर करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: षष्ठभाव: केतु

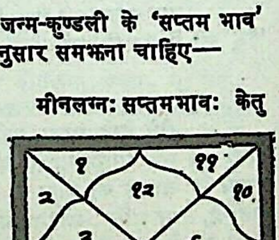


१४२३

छठे रोग एवं शत्रु-भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर निरन्तर विजय प्राप्त करने वाला होता है तथा झगड़े झंझट के मामलों में सफलता एवं लाभ प्राप्त करता है। शत्रु-पक्ष से भीतरी रूप में परेशानी का अनुभव करने पर भी वह प्रकट रूप में अपना हौसला बनाए रखता है तथा हिम्मत एवं बहादुरी से काम लेकर उन सब पर प्रभाव स्थापित करता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: सप्तमभाव: केतु

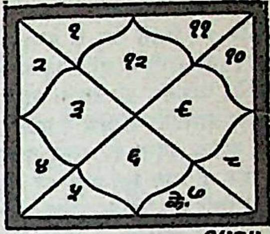


१४२४

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ अशान्ति एवं कठिनाइयों के साथ सफलता प्राप्त होती है। कभी कभी वह स्त्री-पक्ष से घोर कष्ट का अनुभव भी करता है, परन्तु फिर उसी से सुख तथा आनन्द भी पाता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा धैर्यवान्, साहसी तथा गुप्त-युक्तियों वाला चतुर होता है। वह अपनी उन्नति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है तथा परिश्रम द्वारा सफलता भी प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: अष्टमभाव: केतु

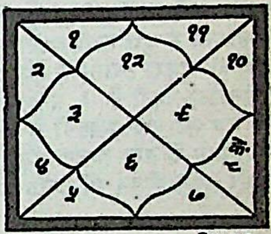


१४२५

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के पक्ष में अनेक बार मृत्यु-तुल्य संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु जीवन की रक्षा हो जाती है। उसके पुरातत्त्व के पक्ष में भी हानि के योग उपस्थित होतेरहते हैं, परन्तु वह अपनी गुप्त युक्तियों परिश्रम एवं चतुराई के बल पर लाभ उठाता है। वह चिन्ता, संघर्ष एवं परेशानियों का मुकाबला करता हुआ धैर्यपूर्वक अपनी उन्नति करता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: नवमभाव: केतु

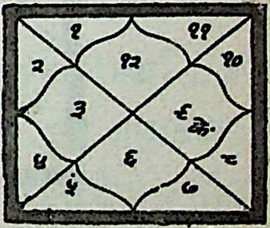


१४२६

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाग्य के पक्ष में कठिनाइयों का अनुभव होता है तथा धर्म का पालन भी ठीक ढंग से नहीं हो पाता, परन्तु ऐसा व्यक्ति अपने गुप्त-युक्ति बल, परिश्रम, चातुर्य एवं साहस के द्वारा कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता हुआ अपनी उन्नति का मार्ग बनाता है। अनेक बार घोर संकट उपस्थित होने पर भी वह विचलित नहीं होता तथा भाग्य एवं धर्म की थोड़ी-बहुत उन्नति करता है। फिर भी उसके यश में कुछ कमी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म कुण्डली के 'दशम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्न: दशमभाव: केतु

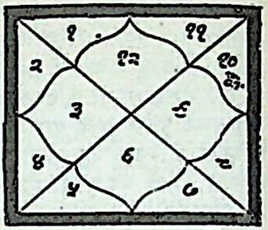


१४२७

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक को पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति अपनी उन्नति के लिए कठोर परिश्रम करता है तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय भी लेता है। कभी कभी घोर संकट उपस्थित हो जाने पर भी वह विचलित नहीं होता तथा धैर्य और साहस के साथ उसका निराकरण करता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीनलग्नः एकादशभावः केतु

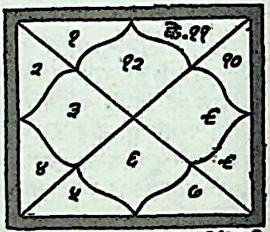


१४२८

ग्यारहवें लाभ-भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को बहुत अच्छी आमदनी होती है और वह अपने लाभ को बढ़ाने के लिए कठोर परिश्रम भी करता रहता है। ऐसे व्यक्ति को कभी कभी आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों एवं कष्टों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु वह उनसे घबराता नहीं है तथा साहस के साथ मुसीबतों को पार करता हुआ आगे बढ़ता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक स्वार्थी, हिम्मती, धैर्यवान् तथा बहादुर भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

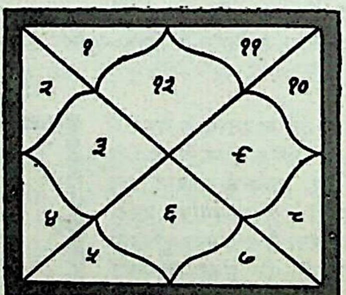
मीनलग्नः द्वादशभावः केतु



१४२९

बारहवें व्यय-भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपने खर्च के सम्बन्ध में कुछ कमी तथा कष्टों का अनुभव होता है। साथ ही बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी असन्तोष एवं कठिनाइयाँ रहती हैं। परन्तु ऐसा व्यक्ति अपने धैर्य, परिश्रम एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर उन सब कठिनाइयों का साहस के साथ सामना करता है, तथा उन पर विजय पाकर अपने जीवन को उन्नत बनाता है।

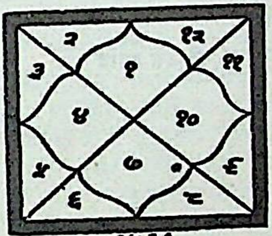
'मीन'लग्न का फलादेश समाप्त



१४३०

भृगु-संहिता

फलित-प्रकाश



१४३१

तृतीय प्रकरण

[ग्रहों की युति, उच्च-नीच आदि की स्थिति, भावेश की स्थिति, स्त्री-जातक, ग्रहों की महादशा एवं विशिष्ट—योग–सम्बन्धी फलादेश आदि]

विषय

(१) ग्रहों की युति का फल ।

(२) उच्च, नीच, स्वराशिस्थ, मूल त्रिकोणस्थ, मित्रक्षेत्रस्थित तथा शत्रु गृहक्षेत्रस्थित ग्रहों का फल ।

(३) राशीश्वर की विभिन्न भावों में स्थिति का प्रभाव।

(४) स्त्री–जातक ।

(५) विंशोत्तरी महादशा के अनुसार विभिन्न ग्रहों की दशा तथा अन्तर्दशाओं का फलादेश ।

(६) विशिष्ट योग ।

(७) आवश्यक चक्र एवं कोष्ठक आदि ।

ग्रहों की युति का फल

किस जन्म-लग्न के किस भाव में, किस राशि पर कौन-सा ग्रह स्थित हो तो उसका क्या फलादेश होता है—इसका विस्तृत वर्णन किया जा चुका है। अब हम विविध ज्योतिष ग्रन्थों के आधार पर ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन करते हैं। अर्थात् जन्म-कुण्डली के एक ही भाव में यदि दो, तीन, चार, पाँच, छै अथवा सात ग्रह एक साथ बैठे हों, तो वे जातक के जीवन पर अपना क्या विशेष प्रभाव डालते हैं—इसकी जानकारी प्रस्तुत प्रकरण में दी जा रही है।

स्मरणीय है कि यहाँ ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन करते समय विभिन्न भावों अथवा राशियों में उनकी स्थिति का वर्णन नहीं किया गया है, केवल उनके विशिष्ट प्रभाव के विषय में ही लिखा गया है। अस्तु, ग्रहों की युति के विशिष्ट प्रभाव सम्बन्धी फलादेश की जानकारी करने के साथ ही, जन्म-कुण्डली के जिस भाव में ग्रहों की युति हो, उस भाव पर किन-किन ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हैं, वे ग्रह उच्च के हैं अथवा नीच के, मित्र की राशि में बैठे हैं अथवा शत्रु की राशि में, वे किस भाव के स्वामी होकर कहाँ बैठे हैं—आदि बातों का ध्यान भी अवश्य रखना चाहिए, तभी यथार्थ फलादेश का ज्ञान हो सकेगा। इन सब विषयों पर इस पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला जा चुका है।

ग्रहों की युति से सम्बन्धित आगे जो उदाहरण-कुण्डलियाँ दी गई हैं, वे सभी मेष लग्न की हैं, अतः उन्हें केवल उदाहरण के रूप में ही समझना चाहिए। विभिन्न व्यक्तियों की जन्म-कुण्डलियाँ विभिन्न लग्नों की होती हैं, इसी प्रकार विभिन्न ग्रहों की युति भी विभिन्न भावों में होती है। अस्तु, इन उदाहरण-कुण्डलियों को मात्र आधार मानकर अपनी जन्म-कुण्डली की लग्न, भाव तथा राशि का विचार करते हुये युति के प्रभाव का निष्कर्ष निकालना चाहिये।

दो ग्रह, तीन ग्रह, चार ग्रह, पाँच ग्रह, छै ग्रह तथा सात ग्रहों की युति के प्रभाव का वर्णन क्रमशः अलग–अलग किया गया है। स्मरणीय है कि युति वाले ग्रहों में राहु-केतु को स्थान नहीं दिया गया है। इन दोनों ग्रहों के सम्बन्ध मे सामान्य सिद्धान्त यह है कि ये ग्रह यदि अपने मित्र-ग्रह के साथ बैठे होते हैं तो उसके प्रभाव को बढ़ाते हैं और शत्रु-ग्रह के साथ बैठते हैं, तो उसके प्रभाव को घटाते हैं। राहु-केतु स्वयं कभी एक साथ नहीं बैठते -ये सदैव एक-दूसरे से सातवें स्थान पर ही रहते हैं।

दो ग्रहों की युति

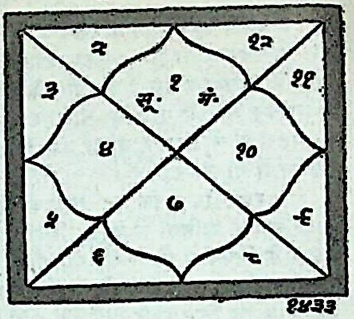
दो ग्रहों की युति का प्रभाव नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सूर्य और चन्द्रमा

यदि जन्म–काल में सूर्य और चन्द्रमा की युति हो (अर्थात् ये दोनों ग्रह किसी एक ही भाव में बैठे हों), तो ऐसा जातक अभिमानी, दुष्ट-क्रियाओं को करने में चतुर, कपटी, विनय-रहित, पराक्रमी, क्षुद्र-हृदयवाला, कार्य करने में दक्ष, स्त्री के वश में रहने वाला, विषयासक्त तथा पत्थर की वस्तुओं का क्रय-विक्रय करने वाला होता है।



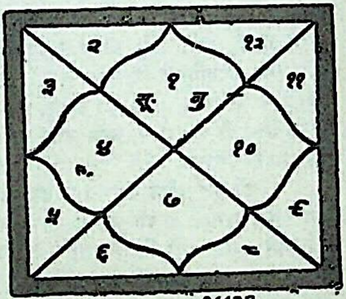
सूर्य और मंगल



१४३३

यदि जन्म-काल में, सूर्य और मंगल की युति हो तो जातक तेजस्वी, श्रेष्ठ कर्म, धर्म तथा धन से रहित, सदैव क्लेश करने वाला, क्रोधी, पापबुद्धि, मिथ्यावादी, मूर्ख, बलवान् परन्तु अपने बन्धु-बान्धवों से प्रेम रखने वाला होता है।

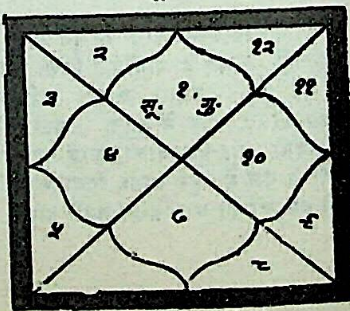
सूर्य और बुध



१४३३

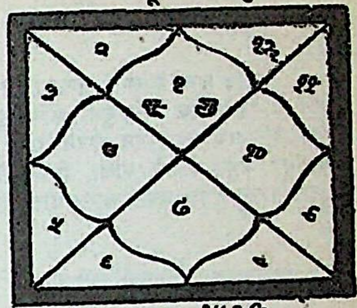
यदि जन्म-काल में सूर्य और बुध की युति हो तो जातक श्रेष्ठ, बुद्धिमान्, विद्वान्, यशस्वी, राज्य द्वारा सम्मान-प्राप्त, स्थिर-धन वाला, सेवा-कर्म करने में पटु, प्रियवादी, मंत्री तथा राजा की सेवा द्वारा धन कमाने वाला, वेदज्ञ, गीति-वाद्य तथा काव्य-आदि कलाओं में कुशल होता है।

सूर्य और गुरु



यदि जन्म-काल में सूर्य और बुध की युति हो तो जातक धर्मात्मा, धनवान्, शास्त्रज्ञ, लोक में प्रसिद्ध, मित्रवान्, राज-मान्य, राजा का मंत्री, पुरोहित कर्म करने में कुशल, चतुर तथा परोपकारी होता है।

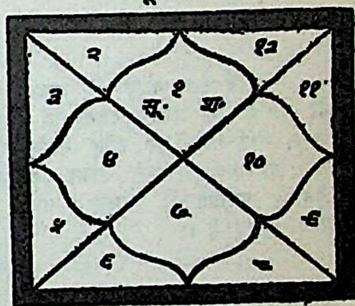
सूर्य और शुक्र



१४३६

यदि जन्म-काल में सूर्य और शुक्र की युति हो, तो जातक बुद्धिमान्, मनुष्यों में श्रेष्ठ, बलवान्, नाट्यकार, संगीत-वाद्य तथा शस्त्र-विद्या में कुशल, स्त्रियों का प्रिय, मित्रवान्, क्षीण-दृष्टि वाला, कार्यक्षम तथा स्त्री द्वारा धन प्राप्त करने वाला होता है।

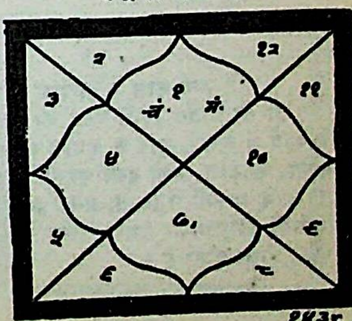
सूर्य और शनि



१४३७

यदि जन्म-काल में सूर्य और शनि की युति हो तो जातक विद्वान्, कार्य-कुशल, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, गुणवान्, धातु का काम करने में कुशल, धर्म में प्रीति रखने वाला तथा वृद्ध के समान आचरण करने वाला होता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसा व्यक्ति स्त्री-पुत्रों का सुख पाने वाला तथा कुछ के मत से स्त्री-पुत्रों के सुख से रहित होता है।

चन्द्रमा और मंगल

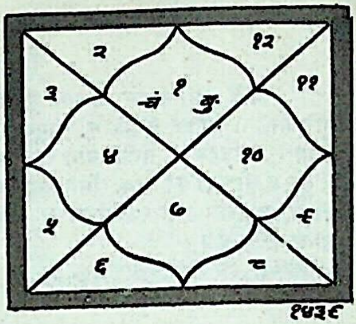


यदि जन्म-काल में चन्द्रमा और मंगल की युति हो तो जातक मिट्टी, चमड़ा अथवा धातुओं के शिल्प में कुशल (कारीगर), धनी, युद्ध-कुशल, प्रतापी, आचारहीन, कलह-प्रेमी, माता से शत्रुता रखने वाला, व्यवसाय द्वारा जीविकोपार्जन करने वाला तथा रक्त-विकार आदि रोगों से ग्रस्त रहता है।

१४३८

चन्द्रमा और बुध

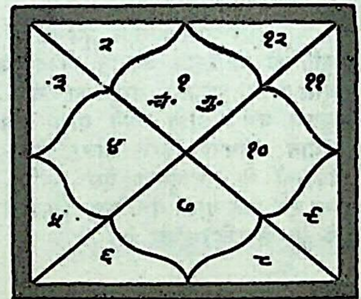
यदि जन्म-काल में चन्द्रमा और बुध की युति हो तो जातक धनी, गुणी, कवि, सुन्दर, हँस-मुख, कुल-धर्म का पालन करने वाला, स्त्री में आसक्त, बहुत बोलने वाला, प्रियवादी, दयालु-हृदय परन्तु दुर्बल शरीर वाला होता है।



१४३९

चन्द्रमा और गुरु

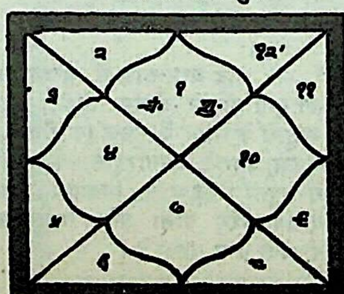
यदि जन्म काल में चन्द्रमा और गुरु की युति हो तो जातक देवता एवं ब्राह्मणों का भक्त, भाई-बहिनों से स्नेह रखने वाला, दृढ़ मैत्री का निर्वाह करने वाला, सुशील, धनी, विनम्र, परोपकारी, धर्मात्मा तथा गुप्त-मन्त्र वाला होता है।



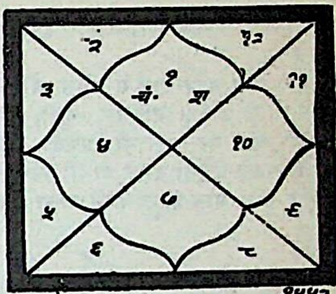
१४४०

चन्द्रमा और शुक्र

यदि जन्म-काल में चन्द्रमा और शुक्र की युति हो तो जातक किसी वस्तु की बिक्री करने के कार्य में कुशल, शूद्रों के समान आचरण करने वाला, झगड़ालू, अल्प वस्त्राभूषणों वाला, अनेक प्रकार के व्यसनों में लिप्त, अनेक प्रकार की कार्य-विधियों का जानकर तथा सुगंधित वस्तुओं में रुचि रखने वाला होता है।



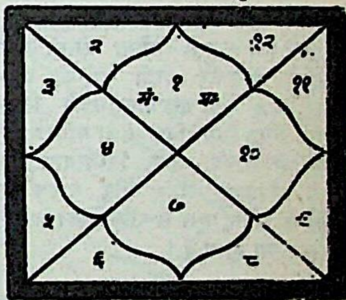
चन्द्रमा और शनि



१४४२

यदि जन्म-काल में चन्द्र और शनि की युति हो तो जातक व्यवसाय द्वारा आजीविका का उपार्जन करने वाला, पर-स्त्रियों से प्रेम करने वाला, आचारहीन, पुरुषार्थहीन, हाथी-घोड़ों को पालने वाला, वृद्धास्त्री में आसक्त, अल्प सन्तति-वान् तथा वेश्या द्वारा धन प्राप्त करने वाला होता है।

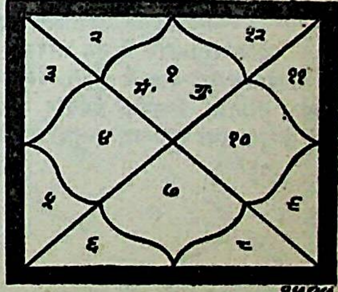
मंगलऔर बुध



१४४३

यदि जन्म-काल में मंगल और बुध की युति हो तो जातक धनहीन, कुरूप, कृपण, सोने अथवा लोहे का व्यवसाय करने वाला, विधवा स्त्री से विवाह करने वाला, मल्लयुद्ध में कुशल, अनेक स्त्रियों से प्रेम करने वाला तथा अनेक प्रकार की औषधियों का सेवन करने वाला होता है।

मंगल और गुरु

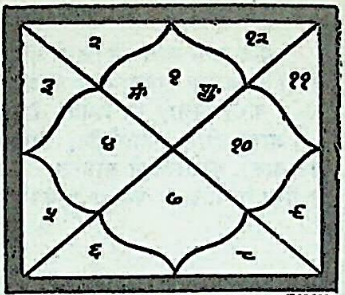


१४४४

यदि जन्म-काल में मंगल और गुरु की युति हो तो जातक शिल्प-शास्त्रज्ञ, घोड़ों से प्रीति रखने वाला, बोलने में चतुर, मेधावी, मनुष्य-समाज में प्रधान पद पाने वाला, मंत्रज्ञ, शास्त्रज्ञ, शस्त्रज्ञ, अर्थ-साधन करने में निपुण, चतुर, शील-वान्, सेना का अधिकारी अथवा कोई अन्य उच्च पद प्राप्त करने वाला होता है।

मंगल और शुक्र

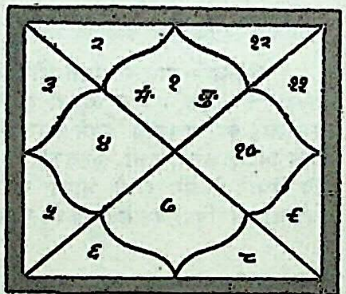
यदि जन्म-काल में मंगल और शुक्र की युति हो तो जातक गणितज्ञ, गुणी, मिथ्यावादी, जुआरी, शठ, पर-स्त्रीगामी, प्रपंची पापी, अभिमानी, सबसे शत्रुता रखने वाला, भोगी परंतु जन-समाज में सम्मान प्राप्त करने वाला होता है।



१४४२

मंगल और शनि

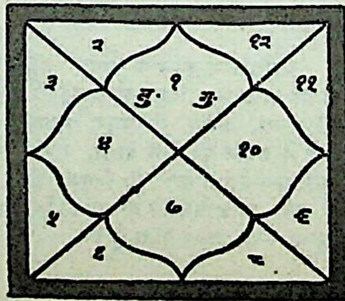
यदि जन्म-काल में मंगल और शनि की युति हो तो जातक उचित बोलने वाला, अपने धर्म को छोड़कर पराये धर्म को ग्रहण करने वाला, जादू एवं इन्द्रजाल आदि विद्याओं का ज्ञाता, कलह-प्रिय, विष तथा मदिरा बनाने एवं बेचने में तत्पर, चोर, मिथ्यावादी, अल्प धन वाला, झगड़ालू, शस्त्र और शास्त्र का ज्ञाता, मित्रों से रहित, सुख से रहित तथा अपयश प्राप्त करने वाला होता है।



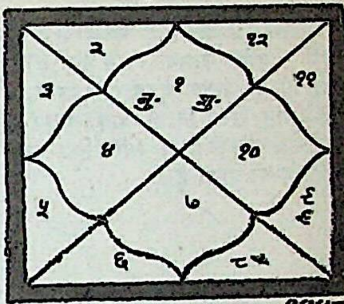
१४४३

बुध और गुरु

यदि जन्म-काल में बुध और गुरु की युति हो तो जातक नृत्य-वाद्य में कुशल धैर्यवान, सुखी, पण्डित, नीतिज्ञ, विनयी, धैर्यवान्, उदार, श्रेष्ठ गुणों से युक्त तथा सुगन्धित वस्तुओं से प्रेम रखने वाला होता है।



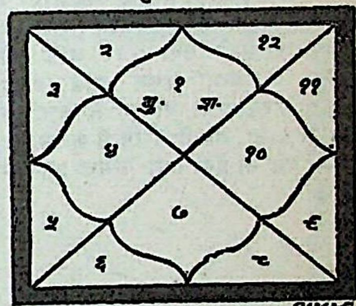
बुध और शुक्र



१४४८

यदि जन्मकाल में बुध और शुक्र की युति हो तो जातक शिल्पकला में कुशल, वेदज्ञ, संगोतज्ञ, नीतिज्ञ, धनी, प्रियवादी, हास्य-प्रिय, सुखी प्रतापी, चतुर, सदैव, आनन्दित रहने वाला, श्रेष्ठ स्वरूप वाला तथा अनेक मनुष्यों का स्वामी होता है।

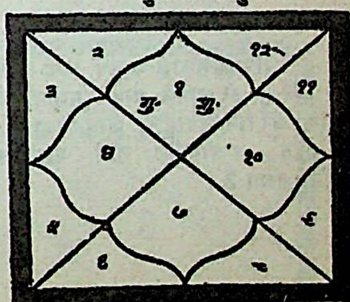
बुध और शनि



१४४९

यदि जन्म-काल में बुध और शनि की युति हो तो जातक कलह-प्रिय, चंचल चित्तावृत्ति वाला, संगीत, काव्य आदि में कुशल, भ्रमणशील, उद्योगहीन, उचित बात बोलने वाला तथा दुर्बल शरीर वाला होता है।

गुरु और शुक्र

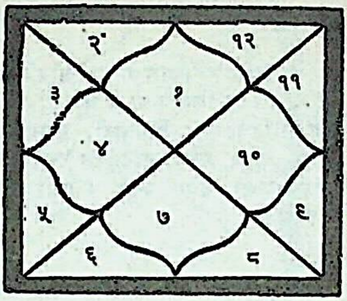


१४५०

यदि जन्म-काल में गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक धन, मित्र, पुत्र, स्त्री आदि के सुख से युक्त, विद्वान, बुद्धिमान् गुणवान्, धर्मात्मा, विद्या द्वारा जीविकोपार्जन करने वाला, सुन्दरी स्त्री का पति, शास्त्रज्ञ तथा पण्डित जनों से शास्त्रार्थ करने वाला, बड़ा सुखी और यशस्वी होता है।

गुरु और शनि

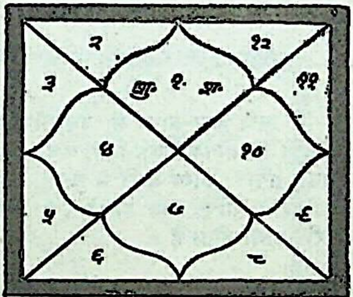
यदि जन्मकाल में गुरु और शनि की युति हो तो जातक शूरवीर, यशस्वी, जन्म-समूह का प्रधान, सेनापति, धनवान्, सम्पूर्ण कलाओं में कुशल तथा स्त्री द्वारा मनोवांछित फल को प्राप्त करने वाला होता है।



१४५१

शुक्र और शनि

यदि जन्मकाल में शुक्र और शनि की युति हो तो जातक शिल्प-लेख (मकान आदि पर चित्रकारी करने तथा पत्थर आदि की वस्तुयें बनाने में कुशल, चंचल बुद्धि वाला, दारुण संग्राम करने वाला, आनन्द से युक्त, पशुओं को पालने वाला, लकड़ी चीरने में कुशल, लवण तथा अम्ल रस का प्रेमी तथा उन्मत्त प्रकृति का होता है।



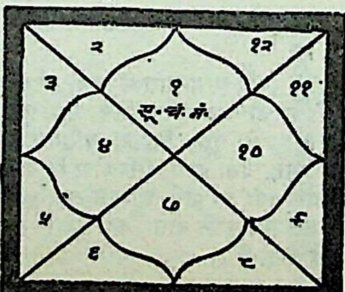
१४५२

तीनों ग्रहों की युति

तीनों ग्रहों की युति का प्रभाव नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

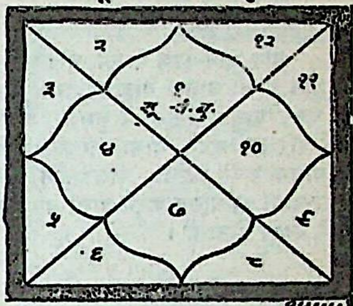
सूर्य, चन्द्र और मंगल

यदि जन्मकाल में सूर्य, चन्द्र और मंगल की युति हो तो जातक यन्त्र (मशीन) बनाने में कुशल, शूरवीर, दयाहीन, अश्व-विद्या में निपुण, स्त्री-हीन, सन्तानहीन, तथा रक्त-विकार से पीड़ित होता है।



सूर्य, चन्द्र और बुध

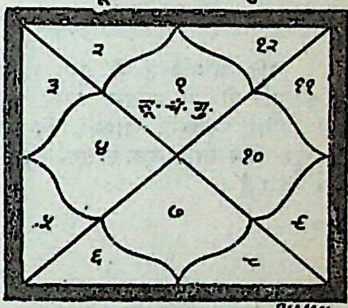
यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र और बुध की युति होतो जातक धनवान, विद्वान्, श्रेष्ठ कवि अथवा कथाकार, सभा-प्रिय, चतुर, प्रिय-वादी, राजा का सेवक, प्रतापी, अच्छे कामों को करने वाला, वार्तालाप करने में पटु तथा समस्त शास्त्रों एवं कलाओं का जानकार होता है।



१४५४

सूर्य, चन्द्र और गुरु

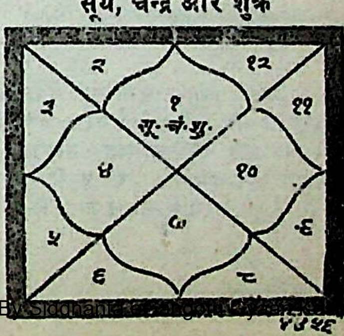
यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र और गुरु की युति हो तो जातक राजा का मन्त्री, स्थिर बुद्धि वाला, धर्मात्मा, बन्धु-बान्धवों का आदर करने वाला, देवता तथा ब्राह्मणों का पूजक, चंचल, चतुर, धूर्त, पर्यटन-प्रेमी, सेवा करने में कुशल तथा विद्वान् होता है।



१४५५

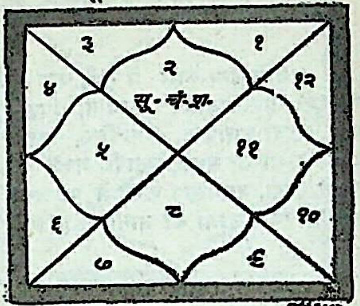
सूर्य, चन्द्र और शुक्र

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र और शुक्र की युति हो तो जातक सुन्दर शरीर वाला, शत्रुओं को नष्ट करने वाला, परम तेजस्वी, राजा के समान प्रतापी और भाग्यवान्, धर्म में प्रीति न रखने वाला, पराये धन का अपहरण करने वाला, व्यसनी तथा दाँतों में विकार वाला होता है।



४३५६

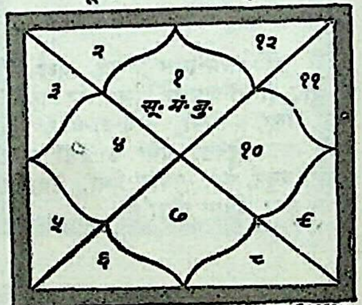
सूर्य, चन्द्र और शनि



१४५७

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र और शनि की युति हो तो जातक ब्राह्मणों तथा देवताओं का भक्त, धातु-कर्म करने में कुशल, वेश्याप्रेमी, व्यर्थ परिश्रम करने वाला, अत्यन्त धूर्त, धर्म का पालन करने वाला, शीलविहीन, धनहीन, हाथी-घोड़ों का पालन करने वाला तथा सत्कर्म करने वाला होता है।

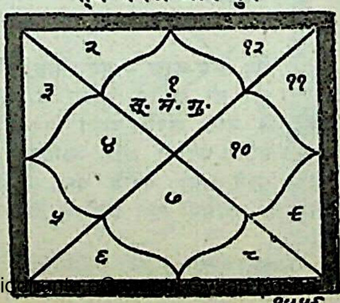
सूर्य, मंगल और बुध



१४५८

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल और बुध की युति हो तो जातक कठोर चित्तवृत्ति वाला, प्रसिद्ध पराक्रमी, साहसी, निर्लज्ज, धन, स्त्री, पुत्र, मित्र आदि युक्त से तथा सलाह देने में चतुर होता है।

सूर्य मंगल और गुरु

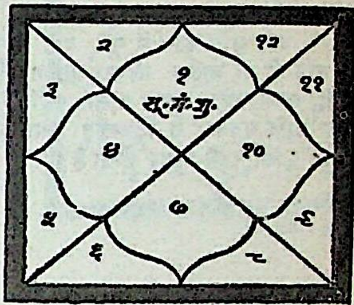


१४५९

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल और गुरु की युनि हो तो जातक श्रेष्ठ वक्ता, धनी राजा का मन्त्री, सेनापति, नीतिशास्त्रज्ञ, सत्यवादी, उदार हृदय वाला प्रियभाषी, उग्र प्रकृति वाला तथा सब कार्यों को करने में कुशल होता है।

सूर्य, मंगल और शुक्र

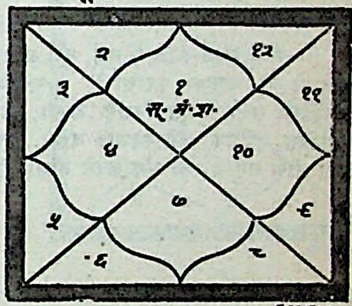
यदि जन्म-काल में सूर्य-मंगल और शुक्र की युति हो तो जातक सुन्दर, नेत्ररोगी, दयालु, विषयासक्त, कार्यकुशल, धनी, विनम्र, अत्यन्त चतुर, बहुत बोलने वाला, गुणवान्, अपने कुल में श्रेष्ठ, सुशील अथवा कुशीलवान् होता है।



१४६०

सूर्य, मंगल और शनि

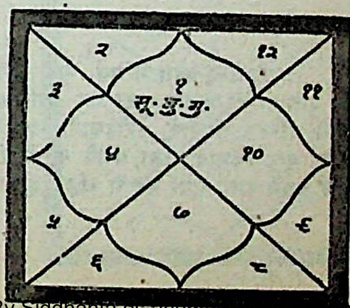
यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल और शनि की युति हो तो जातक मूर्ख, धन तथा पशुओं से रहित, रोगी, स्वजनों से तिरस्कृत अथवा स्वजन-विहीन, विकल, कलह से व्याकुल तथा सघन रोमों वाला होता है।



१४६१

सूर्य, बुध और गुरु

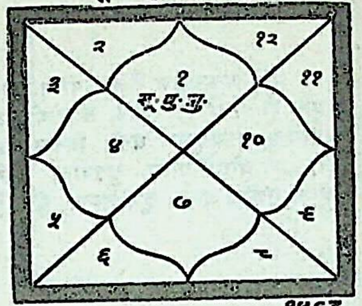
यदि जन्म-काल में सूय, बुध और गुरु की युति हो तो जातक नेत्र रोगी, बड़ा धनी, शास्त्रज्ञ, शस्त्र-विद्या का ज्ञाता, लेखक तथा संग्रहशील स्वभाव का चतुर व्यक्ति होता है।



१४६२

सूर्य, बुध और शुक्र

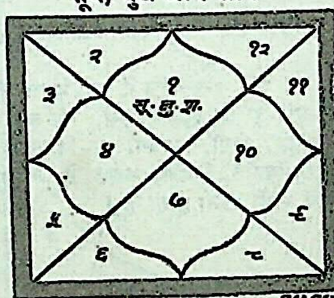
यदि जन्म-काल में सूर्य बुध और शुक्र की युति हो तो जातक आचार-विहीन, विदेश-वासी, सबसे शत्रुता रखने वाला, दुर्बुद्धि, माता-पिता आदि गुरुजनों से तिरस्कृत तथा स्त्री के कारण दुःखी रहने वाला होता है।



१४६३

सूर्य, बुध और शनि

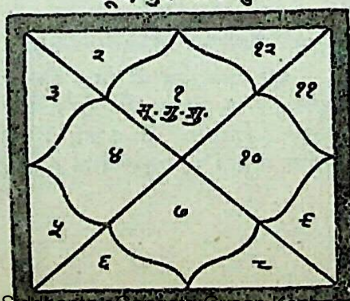
यदि जन्म-काल में सूर्य, बुध और शनि की युति हो तो जातक दुराचारी, बन्धु-बान्धवों से परित्यक्त, सबसे शत्रुता रखने वाला, शत्रु द्वारा पराजित, नपुंसकों-जैसे स्वभाव वाला, परम दुष्ट तथा नीच मनुष्यों का संग करने वाला होता है।



१४६४

सूर्य, गुरु और शुक्र

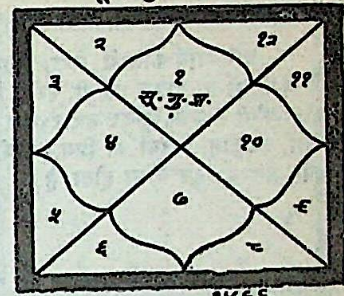
यदि जन्म-काल में सूर्य, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक राजा का आश्रित, नेत्र-रोगी, पण्डित, शरवीर, परोपकारी, कम बोलने वाला दुष्ट स्वभाव वाला, पराये कामों में अधिक रुचि रखने वाला तथा धन से रहित होता है।



१४६५

सूर्य, गुरु और शनि

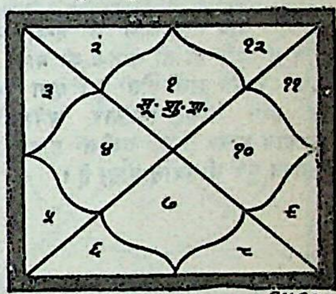
यदि जन्म-काल में सूर्य, गुरु और शनि की युति हो तो जातक राजाओं को प्रिय, मित्र, स्त्री तथा पुत्रादि से युक्त, सुन्दर शरीर वाला, प्रगल्भ, बहुत सोच-विचार कर खर्च करने वाला, निर्भय, अपने बन्धुओं का हित करने वाला तथा मित्रों से युक्त होता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसी ग्रह-स्थिति वाला व्यक्ति राजाओं से द्वेष रखता है।



१४६६

सूर्य, शुक्र और शनि

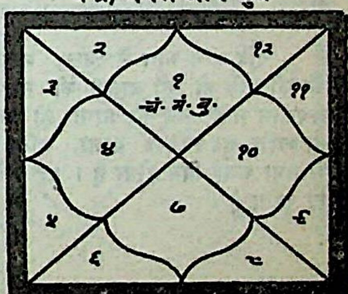
यदि जन्म-काल में सूर्य, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक कला-विहीन, मान-हीन, खुजली अथवा कुष्ठ-रोग का रोगी, शत्रुओं से भयभीत रहने वाला, दुराचारी, भाई-बन्धुओं से रहित तथा अनेक प्रकार के कुकर्म करने वाला होता है।



१४६७

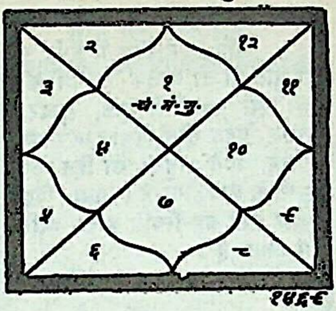
चन्द्र, मंगल और बुध

यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल और बुध की युति हो तो जातक दुराचारी, पापी, बन्धु-बांधवों से हीन, जीविका-विहीन, अपमानित, अत्यन्त दीन तथा नीच मनुष्यों की संगति करने वाला होता है।



१४६८

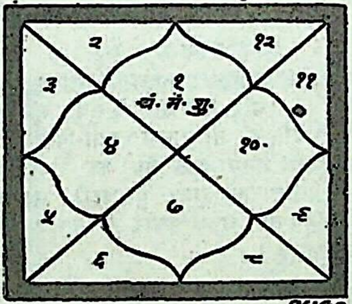
चन्द्र, मंगल और गुरु



१४५६९

यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल और गुरु की युति हो तो जातक क्रोधी, स्त्री में आसक्त, फोड़ा-फुंसी से युक्त, सुन्दर शरीर वाला, अपहरण-कर्त्ता, बलवान्, स्त्रियों को प्रिय, परस्त्री-गामी तथा सदैव प्रसन्न रहने वाला होता है।

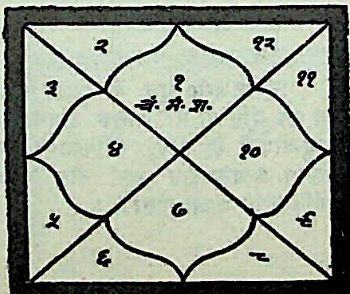
चन्द्र, मंगल और शुक्र



१४५७०

यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल और शुक्र की युति हो तो जातक की माता और स्त्री दुष्ट स्वभाव वाली होती है। ऐसा व्यक्ति शीत से डरने वाला, निरन्तर भ्रमणशील, चंचल स्वभाव वाला तथा कुशील होता है, परन्तु उसका पुत्र शीलवान् होता है।

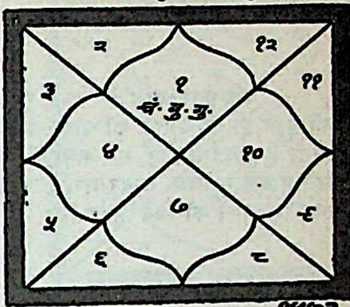
चन्द्र, मंगल और शनि



१४५७१

यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल और शनि की युति हो तो जातक की माता उसके बाल्यकाल में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। ऐसा व्यक्ति क्षुद्र स्वभाव वाला, कुटिल, लोक-द्वेषी तथा कलह-प्रिय होता है। वह सदैव दुःखी बना रहता है।

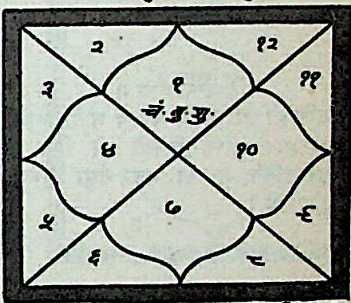
चन्द्र, बुध और गुरु



१४७२

यदि जन्म-काल में चन्द्र, बुध और गुरु की युति हो तो जातक बुद्धिमान्, भाग्यवान् श्रेष्ठ मनोवृत्ति वाला, यशस्वी, परम प्रसिद्ध, श्रेष्ठ मित्रों वाला, तेजस्वी, धनवान्, पुत्र, मित्र, स्त्री आदि के सुख से युक्त तथा कुशल-वक्ता होता है।

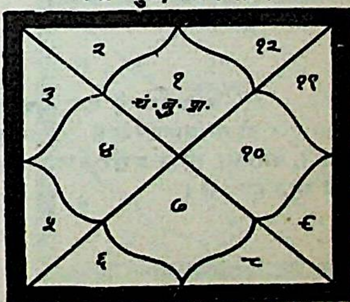
चन्द्र, बुध और शुक्र



१४७३

यदि जन्म-काल में चन्द्र, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक बड़ा विद्वान् होता है, ईर्ष्यालु, धन का लोभी, दुराचारी तथा नीच-वृत्ति द्वारा आजीविका का उपार्जन करने वाला होता है। वह श्राद्ध के सम्बन्ध में विशेष श्रद्धालु रहता है।

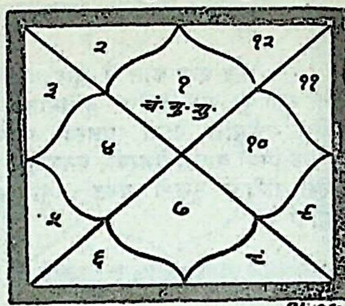
चन्द्र बुध, और शनि



१४७४

यदि जन्म-काल में चन्द्र, बुध और शनि की युति हो तो जातक विनम्र, सम्पूर्ण कलाओं में कुशल, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, विश्व-प्रसिद्ध, राजाओं को प्रिय, नगर अथवा ग्राम पर आधि-पत्य रखने वाला, महा विद्वान्, प्रियवादी, पंडित तथा लम्बे शरीर वाला होता है।

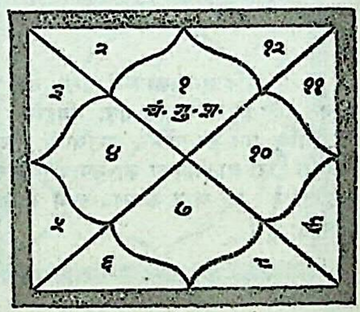
चन्द्र, गुरु और शुक्र



१५७५

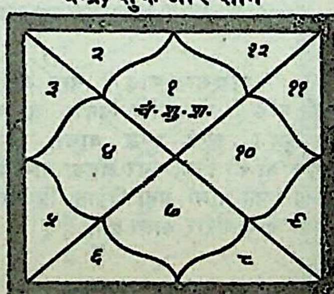
यदि जन्म-काल में चन्द्र, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक की माता अत्यन्त सुशील होती है। वह विद्वान्, सब कलाओं का ज्ञाता, मन्त्रज्ञ एवं शास्त्रज्ञ, सुन्दर शरीर वाला, चतुर तथा राजाओं को प्रिय होता है।

चन्द्र, गुरु और शनि



यदि जन्म-काल में चन्द्र, गुरु और शनि की युति हो तो जातक स्वस्थ शरीर वाला, शास्त्रज्ञ, व्यवहार-कुशल, स्त्रियों को प्रिय, राजा द्वारा सम्मानित, अत्यन्त चतुर तथा उच्च अधिकारी होता है।

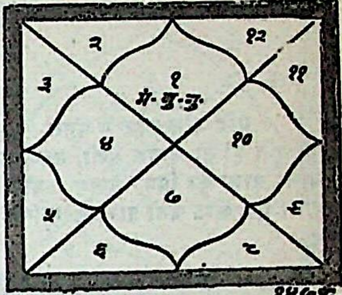
चन्द्र, शुक्र और शनि



१५७७

यदि जन्म-काल में चन्द्र, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक वेदज्ञ, चित्रकार, लेखक, धनी, धर्मात्मा, सुन्दर शरीर वाला तथा पुरोहितों में श्रेष्ठ होता है।

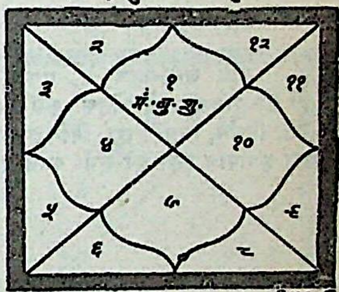
मंगल, बुध और गुरु



१४७८.

यदि जन्म-काल में मंगल, बुध और गुरु की युति हो तो जातक प्रतापी, संगीतज्ञ, परोपकारी, श्रेष्ठ कवि, चतुर, स्त्रियों को प्रिय, परहित साधन करने वाला तथा अपने कुल में राजा के समान होता है ।

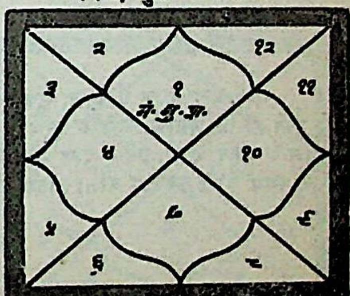
मंगल, बुध और शुक्र



१४७९

यदि जन्म-काल में मंगल, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक दुर्बल शरीर वाला, अत्यन्त उत्साही, बहुत बोलने वाला, ढीठ, धनी, चचल, हीन-कुल में उत्पन्न, सन्तुष्ट तथा अंगहीन होता है ।

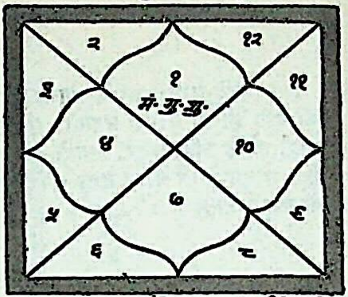
मंगल, बुध और शनि



१४८०

यदि जन्म-काल में मंगल, बुध और शनि की युति हो तो जातक डरपोक एवं दुर्बल-शरीर, परदेश में रहने वाला, वन में रहने की इच्छा रखने वाला, बुरे नेत्रों वाला, सहिष्णु, अत्यधिक कष्ट भोगने वाला, नेत्र-रोगी, मुख-रोगी. हास्य-प्रिय तथा दूतकर्म करने वाला होता है ।

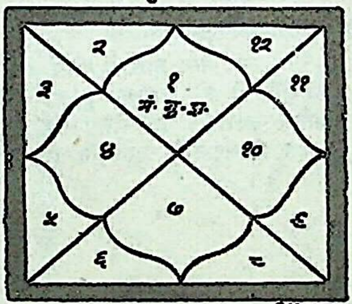
मंगल गुरु और शुक्र



१४८१

यदि जन्म-काल में मंगल, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक सुखी, सबको प्रसन्न करने वाला, राजा का प्रिय, उत्तम स्त्री तथा पुत्रों वाला एवं श्रेष्ठ जनों द्वारा सम्मानित होता है।

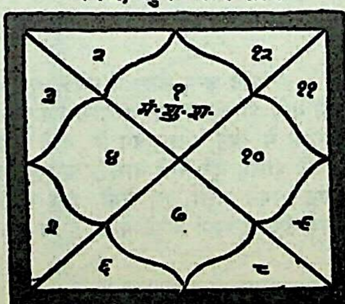
मंगल, गुरु और शनि



१४८२

यदि जन्म-काल में मंगल, गुरु और शनि की युति हो तो जातक कृश-शरीर, दुराचारी, निर्धन, मित्रों द्वारा निन्दित परन्तु राज्य द्वारा कृपापात्र तथा बुरे कर्म करने वाला होता है।

मंगल, शुक्र और शनि

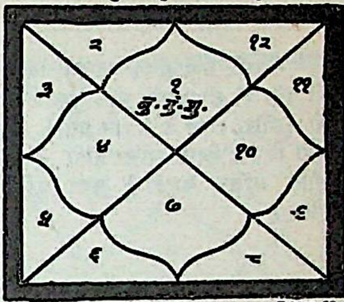


१४८३

यदि जन्म-काल में मंगल, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक स्त्री के सुख से रहित, परदेश में रहने वाला, सदैव दुःख भोगने वाला, परन्तु स्वयं अच्छे स्वभाव वाला होता है।

बुध, गुरु और शुक्र

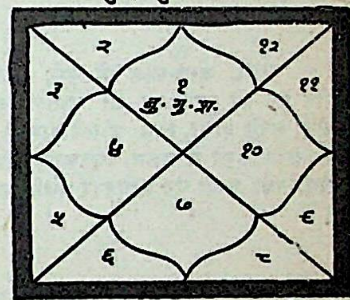
यदि जन्म-काल में बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक सुन्दर शरीर वाला, राजा द्वारा सम्मानित, शत्रुओं को परास्त करने वाला, परम यशस्वी, सत्यवादी तथा सदैव प्रसन्न रहने वाला होता है।



१४८४

बुध, गुरु और शनि

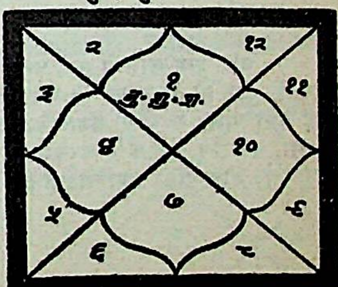
यदि जन्म-काल में बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक बड़ा धनी, शीलवान्, श्रेष्ठ वस्त्राभूषणवाला सेवक एवं वाहनों से युक्त, भाग्यवान्, पण्डित, सुखी, धैर्यवान् तथा उत्तम स्त्री का पति होता है।



१४८५

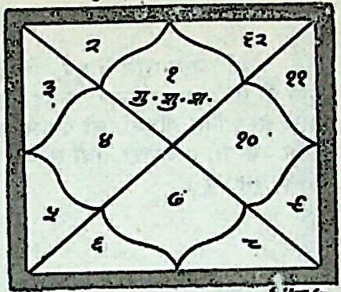
बुध, शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक चुगलखोर, नीच लोगों के साथ रहने वाला, पर-स्त्री गामी, कलाओं का जानकार, मिथ्यावादी, धूर्त, आचार-रहित, दूर देशों की यात्रा करने वाला, धैर्यवान् तथा स्वदेश-प्रेमी होता है।



१४८६

गुरु, शुक्र और शनि



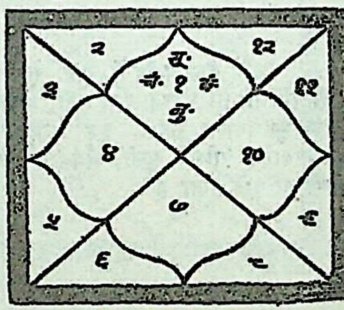
१४८७

यदि जन्म-काल में गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक नीच कुल में जन्म लेने पर भी सुशील, राजा के समान प्रतापी, धनी, यशस्वी तथा निर्मल चित्त वाला होता है। वह अत्यन्त कीर्ति अर्जित करता है तथा भूमि का स्वामी होता है।

चार ग्रहों की युति

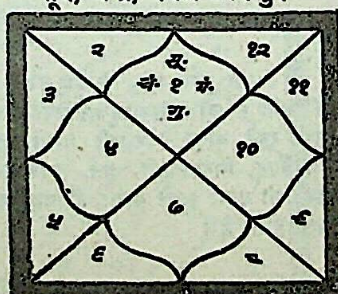
चार ग्रहों की युति का प्रभाव नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सूर्य, चन्द्र, मंगल और बुध



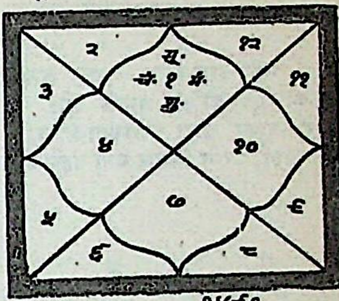
यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल और बुध की युति हो तो जातक चुगलखोर, चोरी करने वाला, व्यर्थ बोलने वाला, मायावी, सब काम करने में सक्षम, चित्रकार, लेखक, मुख-रोगी तथा भाषा पर अधिकार रखने वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र, मंगल और गुरु



यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल और गुरु की युति हो तो जातक शिल्प-शास्त्र का ज्ञाता, बड़े नेत्रों वाला, स्वर्ण के समान कान्तिमान् शरीर वाला, बलवान्, सब काम करने में कुशल, तेजस्वी, धनवान्, शोक-रहित तथा नीतिज्ञ होता है।

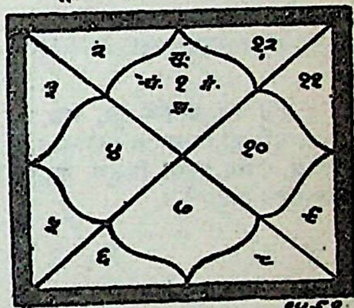
सूर्य, चन्द्र, मंगल और शुक्र



१४९०

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल और शुक्र की युति हो तो जातक शास्त्र के अर्थ का जानने वाला, पुत्र तथा स्त्री के सुख से सम्पन्न, बहुत बोलने वाला, विद्वान्, धनवान् तथा भाषण, वाक्पटुता, वकालत आदि वाणी से सम्बन्धित कार्यों द्वारा जीविकोपार्जन करने वाला होता है। परन्तु कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसा व्यक्ति चोर, खोटे चित्त वाला, निर्लज्ज, परस्त्री-गामी तथा धन-हीन होता है।

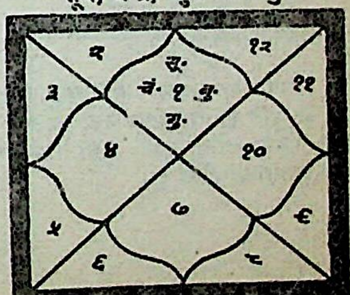
यंसू, चन्द्र, मंगल और शनि



१४९१

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल और शनि की युति हो तो जातक बौने अथवा विषम शरीर वाला, धनहीन, मूर्ख, भिक्षा द्वारा आजीविका करने वाला, दुर्बल शरीर वाला तथा दरिद्र होता है।

सूर्य, चन्द्र, बुध और गुरु

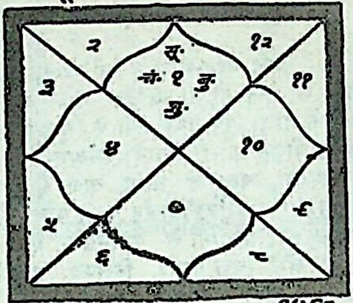


१४९२

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, बुध और गुरु की युति हो तो जातक शोक-रहित, तेजस्वी, परमधनी, नीतिशास्त्र में कुशल, शिल्पज्ञ, रोग-हीन, सुन्दर नेत्रों वाला तथा गौर वर्ण शरीर वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र, बुध और शुक्र

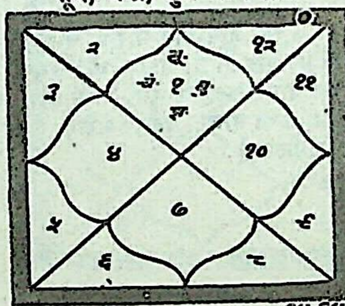
यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक छोटे कद वाला, सुन्दर, राज्य द्वारा सम्मान-प्राप्त, सुवक्ता, कान्तिमान्, परन्तु विकल बना रहने वाला होता है।



१५६३

सूर्य, चन्द्र, बुध और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, बुध और शनि की युति हो तो जातक माता-पिता से हीन, विकलाक्ष, निर्धन, दरिद्र, भिक्षुक, नेत्र-रोगी तथा कुटुम्ब-रहित होता है।



१५६४

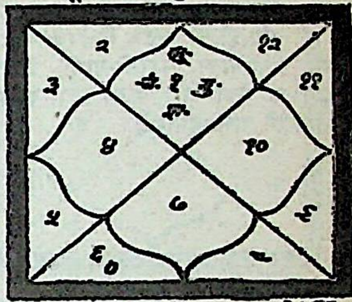
सूर्य, चन्द्र, गुरु और शुक्र

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक जल, मृग एवं वन में प्रीति रखने वाला, सुखी, गुणी तथा राजाओं द्वारा सम्मानित होता है।



१४८५

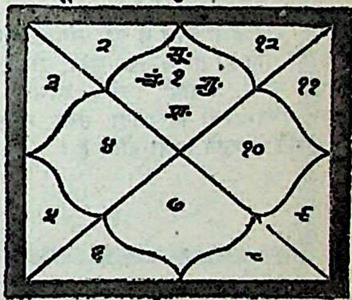
सूर्य, चन्द्र, गुरु और शनि



१४८६

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, गुरु और शनि की युति हो तो जातक बहुत पुत्रों वाला, पतले शरीर तथा सुन्दर नेत्रों वाला, धनी, स्त्री का प्रिय यशस्वी, प्रतापी तथा सर्वत्र सम्मान प्राप्त करने वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र, शुक्र और शनि



१४८७

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक अत्यन्त दुर्बल शरीर वाला, स्त्रियों के समान आचरण करने वाला, डरपोक, परन्तु लोगों का अगुआ होता है।

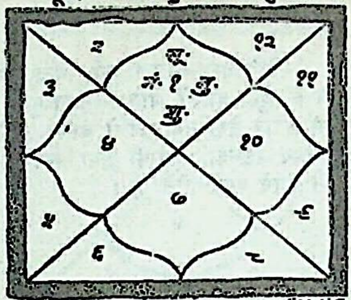
सूर्य, मंगल, बुध और गुरु



१४८८

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, बुध और गुरु की युति हो तो जातक पराई स्त्रियों से रमण करने वाला, देवता तथा ब्राह्मणों का सेवक, विजयी, शूर-वीर, चक्रधारी तथा सूत बनाने में कुशल अथवा सूत का व्यवसाय करने वाला होता है।

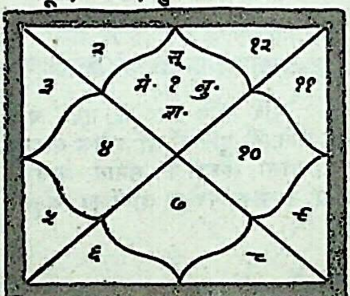
सूर्य, मंगल, बुध और शुक्र



१४९९

यदि जन्मकाल में सूर्य, मंगल, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक निर्लज्ज, चोर, दुर्जन, विषम अंगों वाला, परस्त्री-गामी, देवता तथा ब्राह्मणों की सेवा करने वाला तथा सदैव विजय प्राप्त करने वाला होता है।

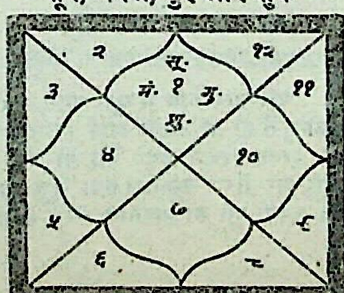
सूर्य, मंगल, बुध और शनि



१५००

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, बुध और शनि की युति हो तो जातक कवि, योद्धा, राजा अथवा मन्त्री, प्रतापी, नीच आचरण करने वाला, अस्त्र-शस्त्रों का ज्ञाता तथा नीच पुरुषों की संगति में रहने वाला होता है।

सूर्य, मंगल, गुरु और शुक्र

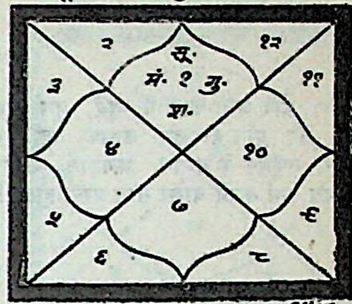


१५०१

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, गुरु और और शुक्र की युति हो तो जातक राजा द्वारा सम्मान प्राप्त, अत्यन्त धनी, यशस्वी, सुन्दर शरीर वाला, नीतिज्ञ तथा मनुष्यों का पालन करने वाला होता है।

सूर्य, मंगल, गुरु और शनि

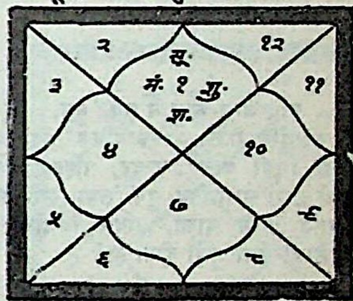
यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, गुरु और शनि की युति हो तो जातक मनुष्यों में श्रेष्ठ, राजा द्वारा पूजित, सब कामों में सफलता पाने वाला, सुप्रसिद्ध सेनापति, मन्त्री, धनी, अन्न का संचय करने वाला तथा दयालु स्वभाव का होता है।



१५०२

सूर्य, मंगल, शुक्र और शनि

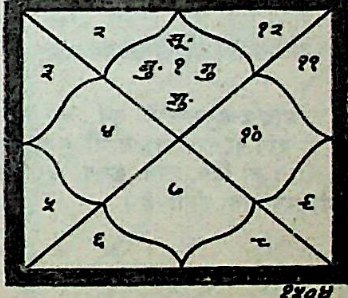
यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक नीच जाति के मनुष्यों को अपने साथ रखने वाला, जनद्रोही, दुराचारी, मूर्ख, कटुभाषी, मांसाहारी तथा नीच कर्म करने वाला होता है।



१५०३

सूर्य, बुध, गुरु और शुक्र

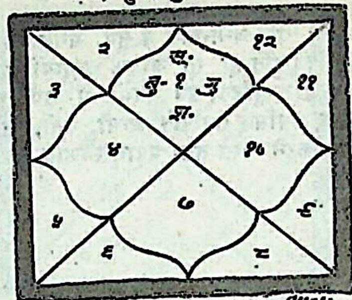
यदि जन्म काल में सूर्य, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक धनवान्, सुखी, प्रसन्न रहने वाला, बुद्धिमान्, सब कामों में सफलता पाने वाला, विनयी, मानी, राजा के समान सुख भोगने वाला तथा स्त्री-पुत्रादि से युक्त होता है।



१५०४

सूर्य, बुध, गुरु और शनि

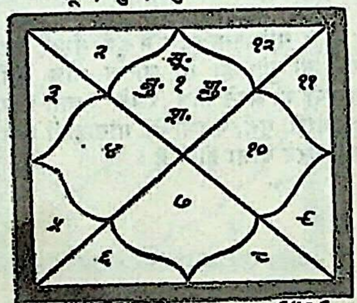
यदि जन्म-काल में सूर्य, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक बहुत भाइयों वाला, नपुंसक के समान, झगड़ालू, उद्योगहीन, निन्दित कर्म करने वाला तथा मानी होता है।



१५०५

सूर्य, बुध, शुक्र और शनि

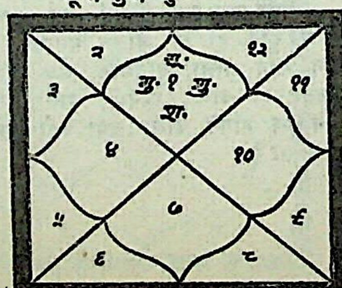
यदि जन्म-काल में सूर्य, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक पवित्र हृदय वाला, सवक्ता, मित्रों वाला, सुन्दर, पण्डित, विद्वान्, भाइयों द्वारा सम्मानित, पुत्र तथा स्त्री के सुख को प्राप्त करने वाला, पवित्र विचारों वाला, भाग्यशाली तथा सुखी होता है।



१५०६

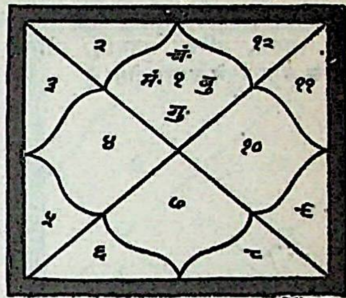
सूर्य, गुरु, शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक लोभी, सुखी, शिल्पज्ञ, कवि, राजा का प्रिय, परम कृपण, परन्तु करुणा से पूर्ण हृदय वाला होता है।



१५०७

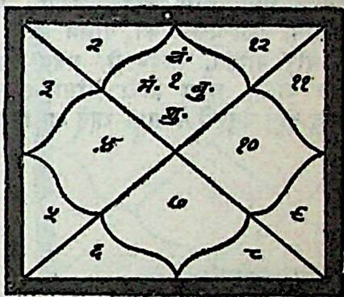
चन्द्र, मंगल, बुध और गुरु



१२०८

यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल, बुध और गुरु की युति हो तो जातक शास्त्रज्ञ, मनुष्यों में श्रेष्ठ, परम विद्वान्, बुद्धिमान्, लोकपूजित, सत्यवादी, राजा का कृपा-पात्र तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

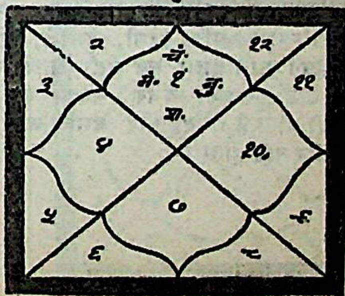
चन्द्र, मंगल, बुध और शक्र



१२०९

यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक की स्त्री कुलटा होती है, वह नींद में समय विताने वाला, झगड़ालू, नीच-प्रकृति का, बन्धु-द्वेषी, वेद तथा शास्त्रों का निन्दक, भाइयों से द्रोह करने वाला तथा नीच मनुष्यों से प्रेम करने वाला होता है।

चन्द्र, मंगल, बुध और शनि

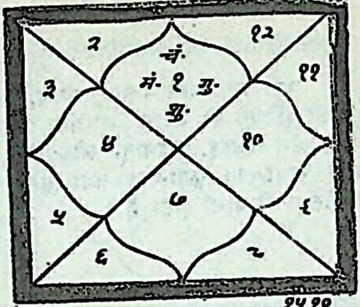


यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल, बुध और शनि की युति हो तो जातक वीर-वंश में जन्म लेने वाला, दो माताओं वाला, स्त्री-पुत्र तथा मित्रादि से युक्त, सुखी जीवन व्यतीत करने वाला तथा साहसी होता है।

१२१०

चन्द्र, मंगल, गुरु और शुक्र

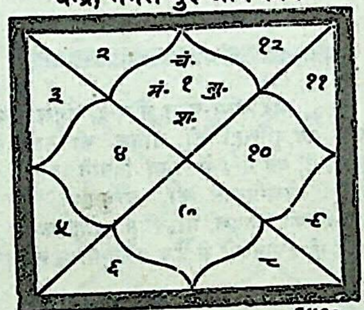
यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक अंग हीन, साहसी, धनी, मानी, पण्डित, पुत्रवान्, नीतिज्ञ परन्तु विकल बना रहने वाला होता है



१५११

चन्द्र, मंगल गुरु और शनि

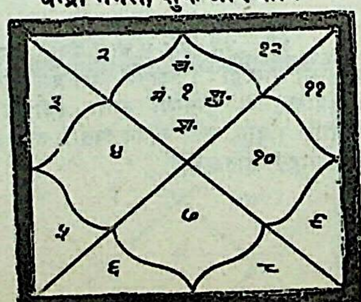
धदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल, गुरु और शनि की युति हो तो जातक बहरा, उन्मादी, धनवान्, अपने वचन का पालन करने वाला, शूर-वीर, पण्डित, सत्यवादी, सदैव आनन्दित रहने वाला, राज्य द्वारा सम्मानित दयालु, परन्तु नीच मनुष्यों के साथ रहने वाला होता है।



१५१२

चन्द्र, मंगल, शुक्र और शनि

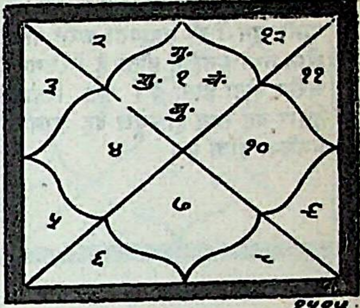
यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक मलिन, कुलटा स्त्री का पति, उद्वेगी, जुआरी, मद्य-मांस का सेवन करने वाला, सर्प जैसी आंखों वाला, महा ढीठ, कुल का वंचक, सबका शत्रु तथा दरिद्री होता है। वह वीर वंशमें जन्म लेकर भी वीर नहीं होता।



१५१३

चन्द्र, गुरु, शुक्र और बुध

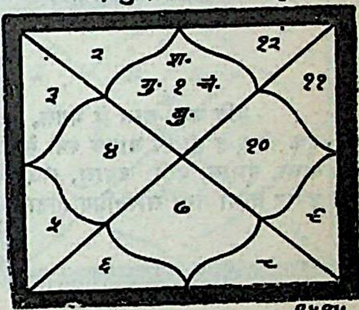
यदि जन्म-काल में चन्द्र, गुरु, शुक्र और बुध की युति हो तो जातक सुन्दर शरीर वाला, धनी, माता-पिता से रहित, शत्रु-विहीन, पण्डित, दयालु, चतुर, दानी तथा शास्त्रज्ञ होता है।



१५१४

चन्द्र, गुरु, शनि और बुध

यदि जन्म-काल में चन्द्र, गुरु, शनि और वुध की युति हो तो जातक कवि, तेजस्वी, वन्धु-वान्धवों का प्रिय, राज्य-मंत्री, धर्मात्मा, यशस्वी, ज्ञानी, इन्द्रियजित् तथा सव लोगों को प्रिय होता है।



१५१५

चन्द्र, बुध, शुक्र और शनि

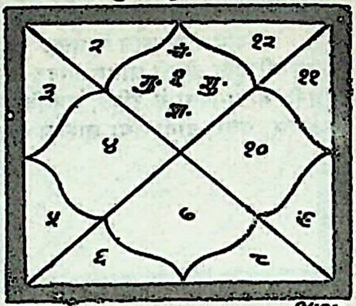
यदि जन्म-काल में चन्द्र, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक नेत्र-रोगी, राजा द्वारा सम्मानित, धनी, गांव का स्वामी तथा अनेक पत्नियों वाला होता है।



१५१६

चन्द्र, गुरु, शुक्र और शनि

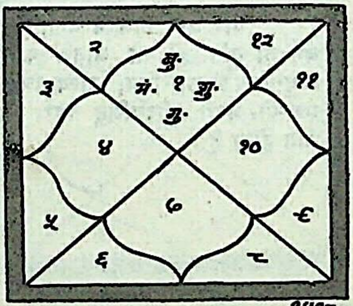
यदि जन्म-काल में चन्द्र, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक पण्डित, पर-स्त्री-गामी, दूसरों की सहायता करने वाला पुरुषों में श्रेष्ठ तथा धनहीन होता है। उसकी पत्नी का शरीर मोटा होता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार वह स्वयं ही स्थूल देह वाला, चतुर तथा धर्मात्मा होता है।



१५१७

मंगल बुध, गुरु और शुक्र

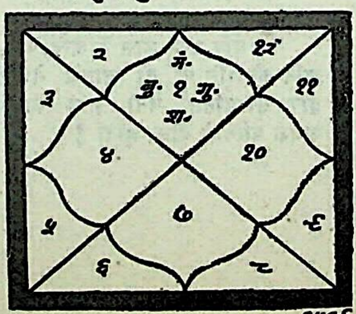
यदि जन्म-काल में मंगल, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक स्त्री से कलह करने वाला, सुशील, धनी, दयालु, राजमान्य, स्वस्थ शरीर वाला तथा लोक-प्रिय होता है।



१५१८

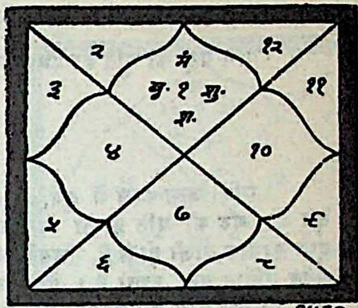
मंगल, बुध, गुरु और शनि

यदि जन्म-काल में मंगल, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक शूर-वीर, सत्यवादी, पवित्र हृदय वाला, धैर्यवान, सुवक्ता, विद्वान्, विनम्र, परन्तु धन-हीन होता है।



१५१९

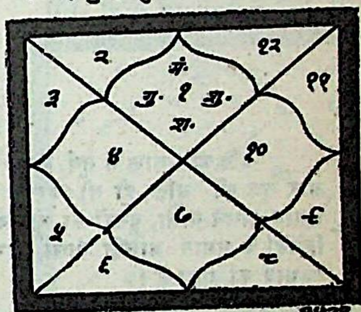
मंगल, बुध, शुक्र और शनि



१५२०

यदि जन्म-काल में मंगल, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक पुष्ट शरीर वाला, मधुर-भाषी, मल्ल-विद्या में निपुण, धन-हीन, कुत्तों को पालने वाला तथा लोक में प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला होता है।

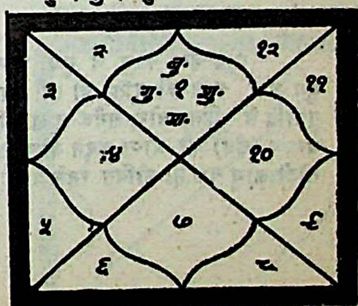
मंगल, गुरु, शुक्र और शनि



१५२१

यदि जन्म-काल में मंगल, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक मानी, धूर्त, विषयी, पर-स्त्री-गामी, धनी, विनम्र, साहसी, विद्वान् तथा श्रेष्ठ मनुष्यों का प्रिय होता है।

बुध, गुरु, शुक्र और शनि



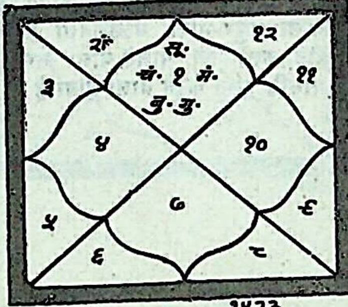
यदि जन्म-काल में बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक वेद-वेदांग का ज्ञाता मेधावी, शस्त्र-विद्या में स्नेह रखने वाला तथा विषय-वासना में लीन रहने वाला कामी पुरुष होता है।

पाँचों ग्रहों की युति

पाँच ग्रहों की युति का प्रभाव नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध और गुरु

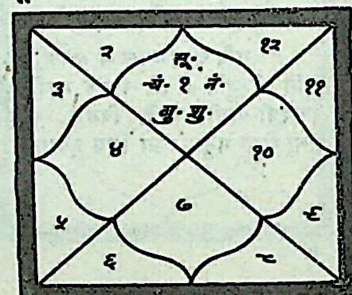
यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध और गुरु की युति हो तो जातक की पत्नी दुष्ट स्वभाव वाली होती है, जिसके कारण वह सदैव उद्विग्न बना रहता है। ऐसा व्यक्ति स्त्री-हीन भी हो सकता है। साथ ही वह दुष्ट, क्रोधी, छली तथा सदैव दुःखी रहने वाला होता है।



१५२३

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध और शुक्र

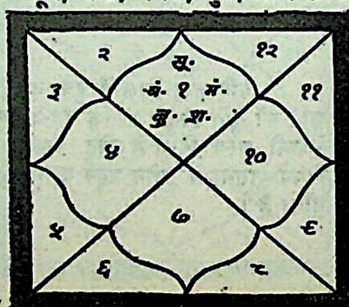
यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक बन्धु-हीन, असत्य बोलने वाला, दूसरों का काम करने वाला, हिजड़ों के समान आकृति वाला, परन्तु दयालु स्वभाव का होता है।



१५२४

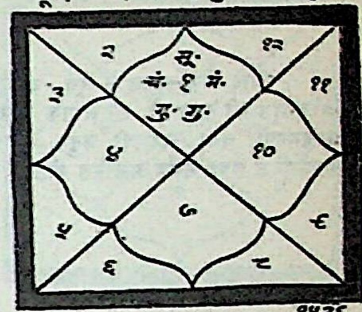
सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध और शनि की युति हो तो जातक स्त्री-पुत्रादि से रहित, चोर, सदैव दुःख भोगने वाला, बन्धन (कैद) को प्राप्त करने वाला और प्रायः थोड़ी आयु तक ही जीवित रहने वाला होता है।



१५२५

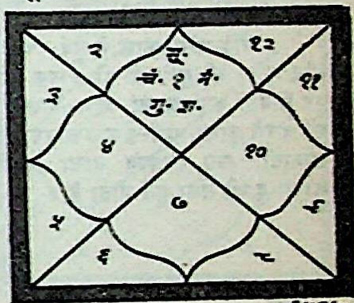
सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु और शुक्र



१५२६

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक माता-पिता के सुख से रहित, नेत्र रोगी, दुःखी, हाथी से प्रेम रखने वाला, संगीतज्ञ अथवा जन्मान्ध होता है।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, शुक्र और शनि



१५२७

यदि जन्म-काल में सूर्य चन्द्र, मंगल, गुरु और शनि की युति हो तो जातक पराये धन का अपहरण करने वाला, व्यसनी, सज्जनों का वैरी, वृक्ष के समान आकृति वाला, दुष्ट, झगड़ालू, डरपोक तथा दूसरों को दुःख देने वाला होता है।

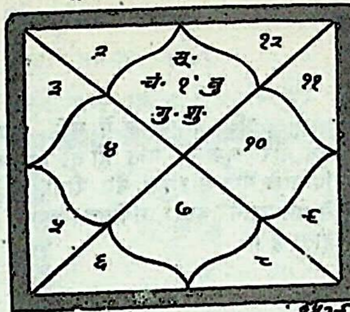
सूर्य, चन्द्र, मंगल शुक्र और शनि



यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक सबका द्वेषी, धन-हीन, अधर्मी, आचार-विचार-रहित तथा पर-स्त्री-गामी होता है।

१५२८

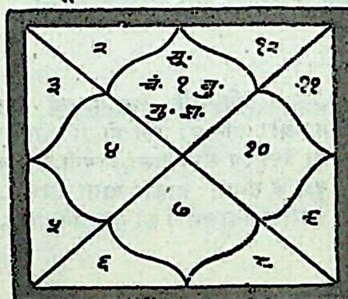
सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र



१५२९

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक न्यायाधीश, राजमन्त्री, धनी, यशस्वी, चतुर, राजा द्वारा सम्मानित तथा सर्वत्र प्रशंसित होता है।

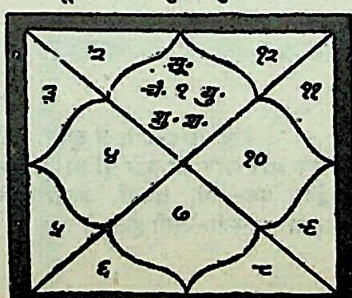
सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु और शनि



१५३०

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक पराए अन्न पर निर्वाह करने वाला, ऋण-ग्रस्त, दुष्ट-कर्मों को करने वाला, धर्म-द्वेष, कायर, वेश्यागामी, उन्मादी, उग्र, स्वभाव वाला, अपने मित्रों के कारण दुःखी तथा धूर्त होता है।

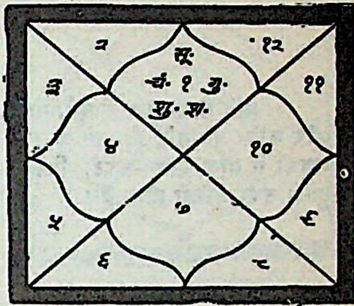
सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र और शनि



यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक धन, सन्तान मित्र तथा सुख से हीन, उत्साही तथा रोगी शरीर वाला होता है। उसका कद लम्बा होता है तथा शरीर पर रोयें अधिक होते हैं।

१५३१

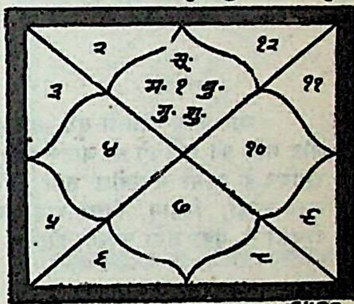
सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र और शनि



१५३२

यदि जन्म–काल में सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक इन्द्रजाल–विद्या का जानकार, पण्डित, समर्थ, निर्भय, चंचल स्वभाव वाला, सुवक्ता, स्त्रियों का प्रिय, पापी, वाक्छल में प्रवीण तथा शत्रुओं द्वारा पीड़ित होता है।

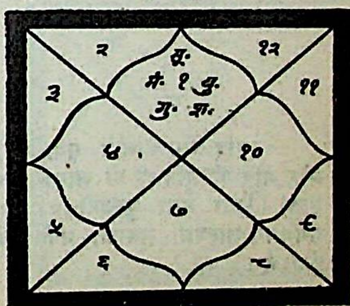
सर्य,मंगल, बुध गुरु और शुक्र



१५३३

यदि जन्म–काल में सूर्य, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक स्वच्छ एवं सुन्दर शरीर वाला, समर्थ, कामी, धीर, राजा का प्रिय, सेनापति, बहुत से घोड़े रखने वाला, यशस्वी, धन-धान्य तथा सेवकों से युक्त होता है।

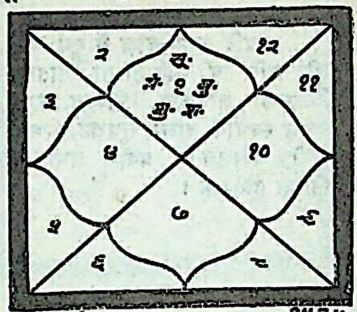
सूर्य, मंगल, बुध, गुरु और शनि



१५३४

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक रोगी, मलिन, उद्विग्न चित्त वाला, जर्जर शरीर वाला, भिक्षुक, जड़, पुत्रवान् तथा अल्प धन वाला होता है।

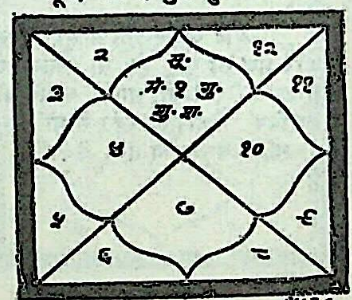
सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र और शनि



१५३५

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक रोग तथा शत्रुओं से ग्रस्त, स्थान-भ्रष्ट, विकल, बुभुक्षित, दुःखी तथा दरिद्री होता है।

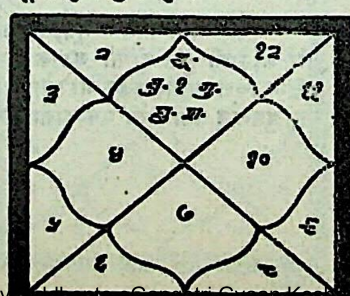
सूर्य, मंगल, गुरु शुक्र और शनि



१५३६

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक धातु, यन्त्र एवं रसायन के कामों में प्रवीण तथा प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला, विद्वान्, विचारवान्, धनी, भाई-बन्धुओं से युक्त तथा तपस्वी होता है।

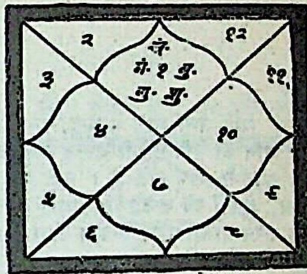
सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, और शनि



यदि जन्म-काल में सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक मित्रों का प्रिय, माता, पिता तथा गुरुजनों का भक्त, दयालु, धर्मात्मा, शास्त्रज्ञ, सुवक्ता, धनी तथा सेनापति होता है।

१५३७

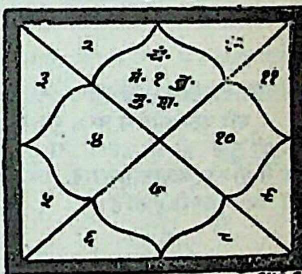
चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि



१५३८

यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक सज्जन, विद्वान्, बहुत पुत्रों वाला, मित्रवान्, धनवान्, अच्छे स्वभाव वाला, निष्पाप तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

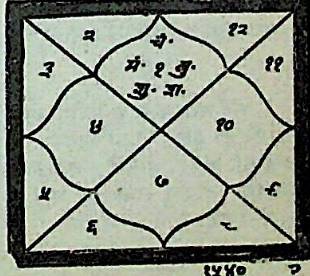
चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि



१५३९

यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक दूसरों से अन्न की याचना करने वाला, मलिन, पराई सेवा करने वाला ब्राह्मण तथा रतौंधी रोग से युक्त होता है।

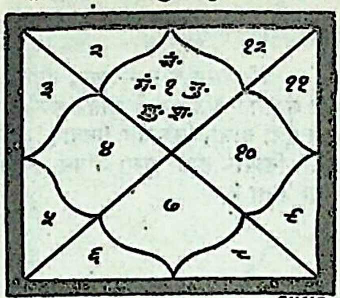
चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र और शनि



१५४०

यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक कुरूप, मलिन, मूर्ख, नपुंसक, निर्धन, मित्रों से वैर रखने वाला, दुष्टकर्म तथा पराई निन्दा करने वाला तथा कठोर हृदय वाला होता है।

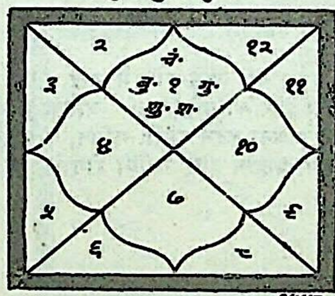
चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि



१५४१

यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक के बहुत-से मित्र तथा बहुत-से शत्रु होते हैं। वह दुष्ट स्वभाव वाला, दूसरों को कष्ट देने वाला, मलिन, पराई सेवा करने वाला, परन्तु विद्वान् होता है।

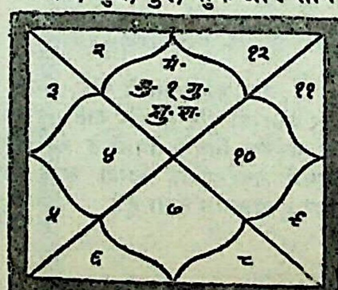
चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, औरशनि



१५४२

यदि जन्म-काल में चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक राजा का मन्त्री, लोक में पूजित, अत्यन्त गुणवान्, गणाधीश, धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि

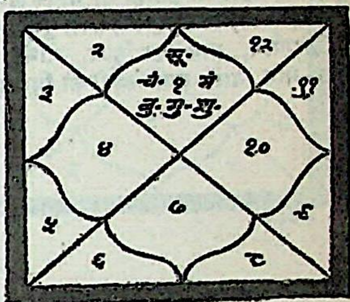


यदि जन्म-काल में मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक तामसी स्वभाव वाला, चंचल, आलसी, अधिक सोने वाला, पवित्र-वक्ता, दीर्घायु राजा तथा अन्य मनुष्यों को प्रिय, धनी तथा सुखी होता है।

छः ग्रहों की युति

छः ग्रहों की युति का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

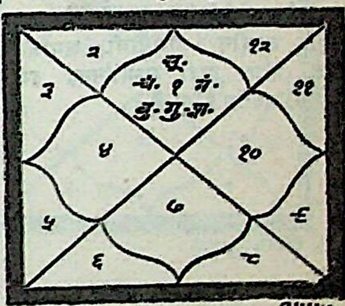
सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र



१५४४

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र मंगल, बुध गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक धन-धान्य, विद्या तथा धर्म से युक्त, कम बोलने वाला, अत्यन्त भोगी, भाग्यवान्, यशस्वी तथा सुखी-जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

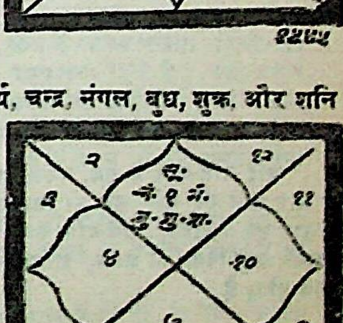
सूर्य, चन्द्र, मंगल बुध, गुरु और शनि



१५४५

यदि, जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, और शनि की युति हो तो जातक दयालु, चंचल स्वभाव का, शुद्ध अन्तः-करण वाला, परोपकारी, वन में विचरण करने वाला तथा विवाद में विजय प्राप्त करने वाला होता है।

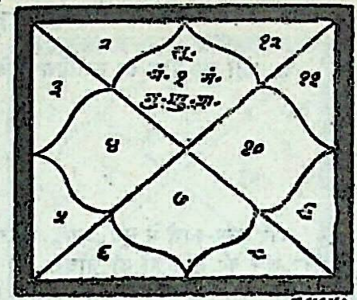
सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र, और शनि



यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक प्रत्येक काम में संशय करने वाला, मानी, सुप्रसिद्ध, संग्राम अथवा विवाद में विजय प्राप्त करने वाला, चिन्तित, वनों तथा पर्वतों में विचरण करने वाला एवं घातक स्वभाव वाला होता है।

१५४६

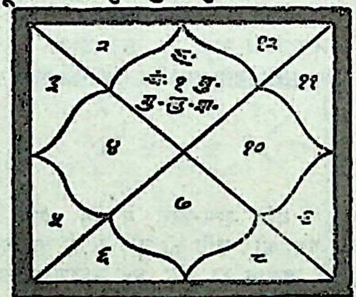
सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र, और शनि



१५५७

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक युद्ध, करने के लिए उद्यत, क्रोधी, कृपण, धनी, सुखी, राजाओं का कृपापात्र, ग्राम का पूज्य, लोभी, सुन्दर, भ्रत -मति वाला तथा स्त्रियों को प्रिय होता है।

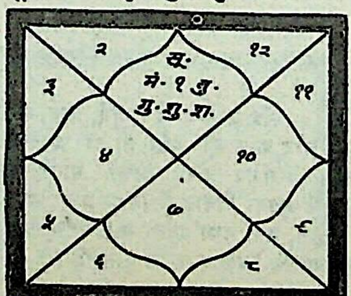
सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, और शनि



१५५८

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक स्त्री-विहीन, धनहीन, राजमन्त्री, क्षमाशील, धर्मज्ञ, वेदज्ञ, राजा द्वारा सम्मानित, दयालु तथा सुप्रसिद्ध व्यक्ति होता है।

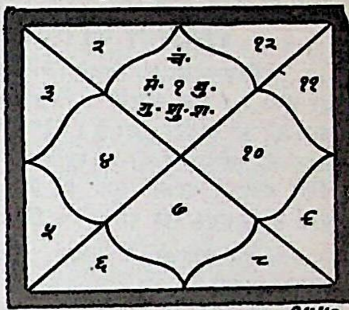
सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि



१५५९

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक धन, स्त्री तथा पुत्र से रहित, तीर्थ-यात्रा करने वाला, वनवासी, ब्रह्म-विद्या का ज्ञाता, क्षमाशील तथा भिक्षुक होता है।

चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, और शनि

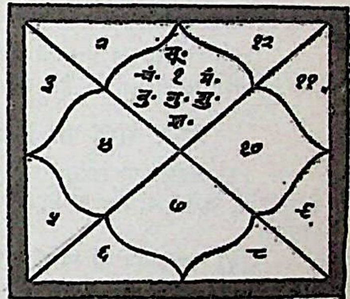


यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक राज-मान्य, धनी, गुणवान्, विश्वप्रसिद्ध, अनेक स्त्रियों वाला, राजा का मन्त्री, पवित्र हृदय वाला, आलसी तथा यशस्वी होता है।

१५५०.

सात ग्रहों की युति

सात ग्रहों की युति का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—



यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि इन सातों ग्रहों की युति हो, तो जातक सूर्य के समान तेजस्वी, राजाओं द्वारा सम्मानित, दानी, धनी तथा शिवजी का भक्त होता है।

१५५१ १५२८

विशेष ज्ञातव्य

(१) तीन ग्रहों की युति वाली जन्म-कुण्डली में, जन्म के समय चन्द्रमा किसी पाप ग्रह के साथ हो तो जातक की माता की मृत्यु होने की सम्भावना रहती है। इसी प्रकार यदि सूर्य पाप ग्रहों से युक्त हो तो पिता की मृत्यु की सम्भावना रहती है। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहों के साथ बैठा हो तो वह शुभ फल देता है और यदि शुभ ग्रह तथा पाप-ग्रह दोनों के साथ बैठा हो तो मिश्रित फल देता है। यही बात सूर्य के विषय में भी समझ लेनी चाहिए।

(२) यदि जन्म के समय तीन शुभ ग्रहों की युति हो तो जातक सुखी जीवन व्यतीत करता है। परन्तु यदि तीन पापग्रह एक साथ बैठे हों तो जातक का सम्पूर्ण जीवन दुःखी बना रहता है और वह सर्वत्र निन्दित होता है।

(३) जन्म-समय में यदि ५ अथवा ६ ग्रह एक ही भाव में बैठे हों तो ऐसा जातक प्रायः दरिद्र और मूर्ख होता है।

(४) जिस प्रकार दो-तीन आदि ग्रहों की युति का फलादेश कहा गया है, उसी प्रकार यदि जन्म-कुण्डली के किसी भाव में बैठे हुए ग्रह को दो-तीन अथवा अधिक ग्रह एक

साथ देख रहे हों, अर्थात् उन सबकी दृष्टि उस ग्रह पर पड़ रही हो, तो वह ग्रह भी युति वाले ग्रह के समान ही अपना फल देने लगता है।

राशीश्वर की विभिन्न भावों में स्थिति का प्रभाव

किस राशि का स्वामी कौन-सा ग्रह होता है—यह बात पहले प्रकरण में बताई जा चुकी है। जन्म-कुण्डली के जिस भाव में जो राशि हो, उस राशि का स्वामी ही उस भाव का भी स्वामी होता है। जैसे तृतीयभाव में 'वृष' राशि हो तो 'वृष' राशि का स्वामी 'शुक्र' ही तृतीयभाव का भी स्वामी माना जायगा। यदि तृतीयभाव मे 'सिंह' राशि हो तो 'सिंह' राशि के स्वामी 'सूर्य' को ही तृतीयभाव का स्वामी माना जायेगा। इसी प्रकार अन्य भावों तथा अन्य राशियों के विषय में भी समझ लेना चाहिए।

जन्म-कुण्डली में प्रत्येक राशि का स्वामी अपनी ही राशि पर स्थित हो—यह आवश्यक नहीं है। वह किसी भी अन्य राशि पर स्थित हो सकता है। जैसे तृतीयभाव में स्थित 'वृष' राशि के स्वामी 'शुक्र' की स्थिति जन्म-कुण्डली के प्रथम से लेकर द्वादश तक किसी भी भाव में हो सकती है। यदि तृतीयभाव मे 'वृष' राशि हो और उसका स्वामी अर्थात् तृतीयेश जन्म-कुण्डली के पंचमभाव में बैठा हो तो उस स्थिति में 'तृतीयेश पंचमभाव में बैठा है'—यह कहा जायेगा। इसी प्रकार अन्य प्रत्येक ग्रह, राशि एव भावों के संबन्ध में समझ लेना चाहिए।

यहाँ पर विभिन्न भावों के स्वामियों की विभिन्न भावों में स्थिति सम्बन्धी फलादेश का वर्णन किया जा रहा है। उसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

प्रथम भाव का स्वामी 'लग्नेश' अथवा 'प्रथमेश'

(१) प्रथमभाव अर्थात् लग्न का स्वामी लग्नेश यदि लग्न अर्थात् प्रथमभाव में ही बैठा हो तो जातक दीर्घायु, स्वस्थ, नीरोग, अत्यन्त बलवान, राजा अथवा भूमि का स्वामी होता है।

(२) प्रथमभाव का स्वामी लग्नेश यदि द्वितीयभाव में बैठा हो तो जातक स्थूल शरीर वाला, बलवान्, दीर्घजीवी, धनवान्, अत्यन्त धर्मात्मा, राजा अथवा भूस्वामी होता है।

(३) प्रथमभाव का स्वामी लग्नेश यदि तृतीयभाव में बैठा हो तो जातक शूर-वीर, बलवान्, श्रेष्ठ मित्रों वाला, दानी, धर्मात्मा तथा अच्छे भाई-बहिनों वाला होता है।

(४) प्रथमभाव का स्वामी लग्नेश यदि चतुर्थभाव में बैठा हो तो जातक अल्पभोजी, दीर्घायु, माता-पिता का भक्त, पिता द्वारा धन प्राप्त करने वाला, धनी, सुखी तथा राजा का प्रिय होता है।

(५) प्रथमभाव का स्वामी लग्नेश यदि पंचमभाव में हो तो जातक दानी, दीर्घजीवी, धर्मात्मा, यशस्वी, सुखी, धनी, श्रेष्ठ पुत्रों वाला, राजा अथवा राजा के ही समान ऐश्वर्यशाली होता है।

(६) प्रथमभाव का स्वामी लग्नेश यदि षष्ठभाव में हो तो जातक स्वस्थ, बलवान्, धनी, श्रेष्ठ कर्म करने वाला, भूमि का स्वामी, प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

(७) प्रथमभाव का स्वामी लग्नेश यदि सप्तमभाव में हो तो जातक तेजस्वी, परन्तु शोकाकुल होता है। उसकी पत्नी अत्यन्त सुन्दरी, तेजस्विनी तथा सुशीला होती है। ऐसे व्यक्ति के गार्हस्थ्य जीवन में कुछ परेशानियाँ आती रहती हैं।

(८) प्रथमभाव का स्वामी लग्नेश यदि अष्टमभाव में हो तो, जातक, दीर्घायु, कृपण तथा धन का संचय करने वाला होता है। यदि अष्टमभाव में स्थित लग्नेश स्वयं पापग्रह हो अथवा किसी पापग्रह के साथ बैठा हो तो जातक एक आँख का काना होता है। यदि शुभग्रह हो अथवा शुभ ग्रह के साथ बैठा हो तो जातक सौम्य-पुरुष होता है।

(९) प्रथमभाव का स्वामी लग्नेश यदि नवमभाव में हो तो जातक अधिक कुटुम्ब-वाला, सामान्य मित्रों वाला, विद्वान्, यशस्वी तथा सुखी एवं सम्मानित जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

(१०) प्रथमभाव का स्वामी लग्नेश यदि दशमभाव में हो तो जातक राजा द्वारा धन एवं सम्मान का लाभ प्राप्त करने वाला, विद्वान, सुशील, गुरु एवं माता-पिता का भक्त, यशस्वी तथा प्रसिद्ध पुरुष होता है।

(११) प्रथमभाव का स्वामी लग्नेश यदि एकादशभाव में होते जातक तेजस्वी, प्रसिद्ध-प्राप्त, पुत्रवान्, बलवान्, दीर्घायु, श्रेष्ठ वाहन रखने वाला, धनी तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

(१२) प्रथमभाव का स्वामी लग्नेश यदि द्वादशभाव में हो तो जातक पापी, नीच प्रकृति वाला, लोगों के विरुद्ध आचरण करने वाला, विदेशवासी, मानी तथा अधिक खर्च करने वाला होता है।

द्वितीय भाव का स्वामी 'धनेश' अथवा 'द्वितीयेश'

(१) द्वितीयभाव अर्थात्, धन एवं कुटुम्ब-स्थान का स्वामी धनेश अथवा द्वितीयेश यदि लग्न अर्थात् प्रथमभाव में बैठा हो तो जातक कृपण, व्यवसायी, धनी, सुखी, यशस्वी, भोगी तथा सत्कर्म करने वाला होता है।

(२) द्वितीयभाव का स्वामी धनेश यदि द्वितीयभाव अर्थात् अपने ही भवन में बैठा हो तो जातक व्यवसाय द्वारा लाभ कमाने वाला, सुखी, प्रसिद्ध उद्वेगयुक्त, नीच प्रकृति वाला तथा अप्रिय-कार्य करनेवाला होता है।

(३) द्वितीयभाव का स्वामी धनेश यदि तृतीयभाव में बैठा हो तो यदि वह शुभ ग्रह हो जातक अपने भाइयों से मिलकर रहने वाला होता है। यदि पापग्रह हो तो वह उद्वेगी एवं राजा का विरोधी होता है। धनेश यदि मंगल हो और वह तृतीयभाव में बैठा हो तो जातक चोर होता है।

(४) द्वितीयभाव का स्वामी धनेश यदि चतुर्थभाव में बैठा हो और वह शुभ ग्रह हो तो जातक पिता से लाभ प्राप्त करने वाला, सत्य-वक्ता, दयालु एवं दीर्घायु होता है। यदि पापग्रह हो तो जातक की माता की मृत्यु शीघ्र हो जाती है।

(५) द्वितीयभाव का स्वामी धनेश यदि पंचमभाव में बैठा हो तो जातक अपने पुत्रों द्वारा उपार्जित धन का उपभोग करने वाला, कृपण, दुःखी तथा कठिन कार्यों को करने में कुशल एवं प्रसिद्ध होता है।

(६) द्वितीयभाव का स्वामी धनेश यदि षष्ठभाव में बैठा हो तो जातक धन का संचय करने वाला, शत्रुओं पर विजय पाने वाला तथा भूमि का उपार्जन करने वाला होता है। यदि धनेश पापग्रह हो तो जातक धनहीन होता है।

(७) द्वितीयभाव का स्वामी धनेश यदि सप्तम भाव में बैठा हो तो जातक की पत्नी बुद्धिमती, विलासिनी, भोगवती तथा धन का संचय करने वाली होती है। यदि धनेश पापग्रह हो तो वह बन्ध्या होती है।

(८) द्वितीयभाव का स्वामी धनेश यदि अष्टम भाव में बैठा हो तो जातक आत्मघाती, भिक्षुक, अपने तथा पराये धन को नष्ट करने वाला, दरिद्र तथा भाग्यवादी होता है।

(९) द्वितीयभाव का स्वामी धनेश यदि नवम भाव में बैठा हो और वह शुभ ग्रह हो तो जातक दानी एवं प्रशस्त वचन बोलने वाला होता है। यदि वह पापग्रह हो तो भिक्षुक तथा विडम्बना से पूर्ण होता है।

(१०) द्वितीयभाव का स्वामी धनेश यदि दशमभाव में बैठा हो तो जातक राजा द्वारा सम्मानित और राज्य से सम्पत्ति प्राप्त करने वाला होता है। यदि धनेश शुभग्रह हो तो जातक माता-पिता का पालन करने वाला भी होता है।

(११) द्वितीयभाव का स्वामी धनेश यदि एकादश भाव में बैठा हो तो जातक पक्षियों के व्यवसाय से धन कमाने वाला, बहुत से लोगों का पालन करने वाला तथा प्रसिद्धि पाने वाला यशस्वी पुरुष होता है।

(१२) द्वितीयभाव का स्वामी धनेश यदि द्वादशभाव में बैठा हो तो जातक कृपण और धनहीन होता है। यदि वह शुभ ग्रह हो तो कभी लाभ तथा कभी हानि प्राप्त करने वाला प्रसिद्ध पुरुष होता है।

तृतीयभाव का स्वामी 'पराक्रमेश' अथवा 'तृतीयेश'

(१) तृतीयभाव अर्थात् भाई-बन्धु एवं पराक्रम स्थान का स्वामी पराक्रमेश अथवा तृतीयेश यदि लग्न अर्थात् प्रथमभाव में बैठा हो तो जातक वाद-विवाद करने वाला, कामी, सेवावृत्ति करने वाला, अपने लोगों से मतभेद रखने वाला, दुष्ट मित्रों वाला, कूटनीतिज्ञ तथा झगड़ालू प्रकृति का होता है।

(२) तृतीयभाव का स्वामी पराक्रमेश यदि द्वितीयभाव में बैठा हो और वह पापग्रह हो तो जातक अल्पायु, दरिद्री, भिक्षुक, निर्धन तथा भाई-बन्धुओं का विरोधी होता है। यदि पराक्रमेश शुभग्रह हो तो जातक राजा अथवा राजा के समान ऐश्वर्यशाली होता है।

(३) तृतीयभाव का स्वामी पराक्रमेश यदि तृतीयभाव में बैठा हो तो जातक मध्यम बल वाला, श्रेष्ठ मित्र तथा बन्धु-बान्धवों वाला, देवता एवं गुरु का भक्त तथा राजा द्वारा लाभ एवं सम्मान प्राप्त करने वाला होता है।

(४) तृतीयभाव का स्वामी पराक्रमेश यदि चतुर्थभाव में बैठा हो तो जातक अपने पिता, भाई-बहिन एवं कुटुम्बियों द्वारा सुख प्राप्त करने वाला, माता का विरोधी एवं पैतृक-धन को नष्ट करने वाला होता है।

(५) तृतीयभाव का स्वामी पराक्रमेश यदि पंचमभाव में बैठा हो तो जातक अपने पुत्र, भ्रातृ-पुत्र (भतीजे) अथवा भाइयों द्वारा पालित, दीर्घायु तथा परोपकारी होता है।

(६) तृतीयभाव का स्वामी पराक्रमेश यदि षष्ठभाव में बैठा हो तो जातक नेत्र-रोगी, भूमि का लाभ प्राप्त करने वाला, भाई-बन्धुओं का विरोधी तथा किसी रोग विशेष से पीड़ित रहने वाला होता है।

(७) तृतीयभाव का स्वामी पराक्रमेश यदि सप्तम भाव में बैठा हो तो जातक की स्त्री सौभाग्यवती, सुशीला तथा पतिव्रता होती है। यदि तृतीयेश पापग्रह हो तो जातक की स्त्री अपने देवर से प्रेम करने वाली होती है।

(८) तृतीयभाव का स्वामी पराक्रमेश यदि अष्टमभाव में बैठा हो तो जातक भाई-बहिनों से रहित होता है। यदि तृतीयेश पापग्रह हो तो वह बाहु-हीन होता है और यदि जीवित रहता है तो उसकी आयु केवल आठ वर्ष की होती है।

(९) तृतीयभाव का स्वामी पराक्रमेश यदि नवमभाव में बैठा हो और यदि वह शुभग्रह हो तो जातक विद्वान तथा भाई-बहिनों से प्रेम रखने वाला होता है। यदि पराक्रमेश पापग्रह हो तो जातक अपने बन्धुओं से परित्यक्त होता है।

(१०) तृतीयभाव का स्वामी पराक्रमेश यदि दशम भाव में बैठा हो तो जातक माता-पिता का भक्त, भाइयों से विशेष प्रेम रखने वाला तथा राजा द्वारा सम्मानित होता है।

(११) तृतीयभाव का स्वामी पराक्रमेश यदि एकादशभाव में बैठा हो तो जातक श्रेष्ठ बन्धुओं वाला, भाई-बहिनों का पालन करने वाला, भोगी तथा राजा के समान ऐश्वर्यशाली होता है।

(१२) तृतीयभाव का स्वामी पराक्रमेश यदि द्वादश भाव में बैठा हो तो जातक मित्रों का विरोधी, भाई-बहिनों को सन्ताप देने वाला, आलसी तथा उद्योग-हीन होता है।

चतुर्थभाव का स्वामी 'सुखेश' अथवा 'चतुर्थेश'

(१) चतुर्थभाव अर्थात् माता, भूमि एवं सुख-स्थान का स्वामी सुखेश अथवा चतुर्थेश यदि लग्न अर्थात् प्रथमभाव में बैठा हो तो जातक पिता से स्नेह रखने वाला, मातृकुल से शत्रुता रखने वाला तथा पिता के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला होता है।

(२) चतुर्थभाव का स्वामी सुखेश यदि पापग्रह हो और द्वितीयभाव में बैठा हो तो जातक पिता का विरोधी होता है; परन्तु यदि शुभग्रह हो तो पिता का पालन करने वाला होता है और उसके द्वारा उपार्जित धन से पिता को सुख प्राप्त होता है।

(३) चतुर्थभाव का स्वामी सुखेश यदि तृतीयभाव में बैठा हो तो जातक माता-पिता को कष्ट देने वाला, अन्य लोगों से भी कलह करने वाला तथा पिता के बन्धुओं को हानि पहुँचाने वाला होता है।

(४) चतुर्थभाव का स्वामी सुखेश यदि अपने चतुर्थभाव में ही बैठा हो तो जातक भूमि, भवन तथा वाहनों से युक्त, पिता-माता को सुख देने वाला, धर्मात्मा, सुखी, धनी तथा प्रसिद्ध पुरुष होता है।

(५) चतुर्थभाव का स्वामी सुखेश यदि पंचमभाव में बैठा हो तो जातक पिता द्वारा सुख प्राप्त करने वाला, दीर्घजीवी, शुभकर्म करने वाला, यशस्वी, सन्ततिवान् एवं पुत्रों को सुख देने वाला होता है।

(६) चतुर्थभाव का स्वामी सुखेश यदि षष्ठभाव में बैठा हो और वह पापग्रह हो तो जातक माता के धन को नष्ट करने वाला एवं पिता के दोषों को देखने वाला होता है। यदि सुखेश शुभग्रह हो तो वह धन का संचय करने वाला व्यक्ति होता है।

(७) चतुर्थभाव का स्वामी सुखेश यदि सप्तमभाव में बैठा हो और वह पापग्रह हो तो जातक की पत्नी अपने श्वसुर (जातक के पिता) की सेवा नहीं करती। परन्तु यदि सुखेश शुभग्रह हो तो वह सास-श्वसुर की सेवा करने वाली होती है। यदि मंगल अथवा शुक्र चतुर्थेश होकर सप्तमभाव में बैठा हो तो जातक की पत्नी विविध कलाओं की जानकार होती है।

(८) चतुर्थभाव का स्वामी सुखेश यदि अष्टमभाव में बैठा हो तो जातक क्रूर स्वभाव वाला, रोगी अथवा दरिद्र, कुकर्म करने वाला तथा निरन्तर मृत्यु की इच्छा रखने वाला होता है।

(९) चतुर्थभाव का स्वामी सुखेश यदि नवमभाव में बैठा हो तो जातक पिता से अलग रहने वाला, सब विद्याओं का जानकर, कुल-धर्म का पालन करने वाला तथा पिता की अपेक्षा न रखने वाला होता है।

(१०) चतुर्थभाव का स्वामी सुखेश यदि दशमभाव में बैठा हो और वह पापग्रह हो तो उसका पिता उसकी माता को छोड़कर दूसरी पत्नी कर लेता है और यदि सुखेश शुभ-ग्रह हो तो जातक परोपकारी होती है।

(११) चतुर्थभाव का स्वामी सुखेश यदि एकादशभाव में बैठा हो तो जातक पिता का भक्त, सत्कर्म करने वाला, धर्मात्मा, स्वस्थ एवं दीर्घायु प्राप्त करने वाला होता है।

(१२) चतुर्थभाव का स्वामी सुखेश यदि द्वादशभाव में हो तो जातक का पिता शीघ्र ही मर जाता है अथवा वह परदेश में रहने वाला होता है। यदि वह पापग्रह हो तो जातक को अपने पिता के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष से उत्पन्न (जारज) समझना चाहिए।

पंचमभाव का स्वामी 'सन्तानेश' अथवा 'पंचमेश'

(१) पंचमभाव अर्थात् सन्तान, विद्या एवं बुद्धि-स्थान का स्वामी सन्तानेश अथवा पंचमेश यदि लग्न अर्थात् प्रथम भाव में बैठा हो तो जातक अल्पसन्ततिवान्, लोक प्रसिद्ध, सत्कर्म करने वाला तथा वेद-शास्त्रों का ज्ञाता होता है।

(२) पंचमभाव का स्वामी पंचमेश यदि द्वितीयभाव में बैठा हो और वह पापग्रह हो तो जातक धनहीन, दरिद्री होता है, परन्तु यदि वह शुभग्रह हो तो जातक धनवान् होता है।

(३) पंचमभाव का स्वामी पंचमेश यदि तृतीयभाव में बैठा हो तो जातक प्रिय वचन बोलने वाला और अपने भाइयों में प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला होता है। उसके पुत्र उसके परिवार का पालन पोषण करने वाले होते हैं।

(४) पंचमभाव का स्वामी पंचमेश यदि चतुर्थभाव में बैठा हो तो जातक अपने पैतृक कर्म को करने वाला, पिता द्वारा पालित और माता का भक्त होता है। यदि पंचमेश पापग्रह हो तो जातक अपने माता-पिता का विरोधी होता है।

(५) पंचमभाव का स्वामी पंचमेश यदि अपने ही घर पंचमभाव में बैठा हो तो जातक बुद्धिमान्, गुणवान्, मानी, सन्ततिवान् तथा प्रसिद्ध पुरुषों में भी प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला, लोक विख्यात तथा यशस्वी होता है।

(६) पंचमभाव का स्वामी पंचमेश यदि षष्ठभाव में बैठा हो तो जातक मान-हीन, रोगी, धनहीन तथा शत्रुओं द्वारा पीड़ित रहने वाला होता है। यदि पंचमेश पापग्रह हो तो यह अशुभ-फल और भी अधिक होगा ऐसा समझना चाहिए।

(७) पंचमभाव का स्वामी पंचमेश यदि सप्तमभाव में बैठा हो तो जातक के पुत्र सुन्दर, सुशील, देवता एवं गुरु के भक्त होते हैं। साथ ही उसकी पत्नी भी सुशीला होती है।

(८) पंचमभाव का स्वामी पंचमेश यदि अष्टमभाव में बैठा हो तो जातक विद्या-विवेक से हीन तथा कटुभाषी होता है। उसकी स्त्री भी क्रूर स्वभाव वाली होती है और भाई तथा पुत्र भी वैसे ही दुष्ट स्वभाव के होते हैं।

(९) पंचमभाव का स्वामी पंचमेश यदि नवमभाव में बैठा हो तो जातक कवि, संगीतज्ञ, नाटककार, विद्वान्, बुद्धिमान् राजमान्य तथा सुन्दर स्वरूप वाला होता है।

(१०) पंचमभाव का स्वामी पंचमेश यदि दशमभाव में बैठा हो तो जातक राजा का प्रिय, राजा का काम करने वाला, सत्कर्म करने वाला, माता को सुख पहुँचाने वाला तथा सज्जनों में श्रेष्ठ होता है।

(११) पंचमभाव का स्वामी पंचमेश यदि एकादशभाव में बैठा हो तो जातक पुत्र-सन्ततिवान्, सत्यवादी, शूरवीर, संगीत आदि कलाओं का जानकार तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

(१२) पंचमभाव का स्वामी पंचमेश यदि द्वादशभाव में बैठा हो और वह पापग्रह हो तो जातक सन्तानहीन होता है। यदि शुभग्रह हो तो पुत्रवान् होता है, परन्तु वह पुत्र-सुख से हीन तथा विदेशवासी होता है।

षष्ठभाव का स्वामी रोगेश अथवा 'षष्ठेश'

(१) षष्ठभाव अर्थात् रोग एवं शत्रु-स्थान का स्वामी 'रोगेश' अथवा षष्ठेश यदि लग्न अर्थात् प्रथमभाव में बैठा हो तो जातक स्वस्थ, बलवान्, शत्रुजयी, स्वच्छन्द प्रकृति का अधिक बोलने वाला, धनी, कुटुम्बियों को कष्ट देने वाला तथा अनेक व्यक्तियों से अपेक्षा रखने वाला होता है।

(२) षष्ठभाव का स्वामी षष्ठेश यदि द्वितीयभाव में बैठा हो तो जातक चतुर, रोगी, धन-संचयी, प्रसिद्ध, अच्छे स्थान में रहने वाला, दुष्ट प्रकृति का तथा मित्रों के धन को नष्ट करने वाला होता है।

(३) षष्ठभाव का स्वामी षष्ठेश यदि तृतीयभाव में बैठा हो तो जातक लोगों को कष्ट देने वाला, अपने परिजनों को मारने वाला तथा युद्ध एवं झगड़ों के मामले में स्वयं दुःख भोगने वाला होता है।

(४) षष्ठभाव का स्वामी षष्ठेश यदि चतुर्थभाव में बैठा हो तो जातक अपने पिता से शत्रुता रखता है और उसका पिता चिर-रोगी होता है। ऐसा व्यक्ति स्थिर-सम्पत्ति प्राप्त करने वाला होता है।

(५) षष्ठभाव का स्वामी षष्ठेश यदि पंचमभाव में बैठा हो और वह पापग्रह हो तो पिता-पुत्र में शत्रुता रहती है तथा जातक की मृत्यु पुत्र के द्वारा होती है। परन्तु यदि षष्ठेश शुभग्रह हो तो पिता-पुत्र में शत्रुता नहीं होती, परन्तु ऐसा जातक दूसरों से द्वेष रखने वाला एवं कपटी स्वभाव का होता है।

(६) षष्ठभाव का स्वामी षष्ठेश यदि अपने ही घर षष्ठभाव में बैठा हो तो जातक रोग तथा शत्रुओं से रहित होता है। वह कृपण, सुखी, धैर्यवान् परन्तु खराब जगह में रहने वाला होता है।

(७) षष्ठभाव का स्वामी षष्ठेश यदि सप्तमभाव में बैठा हो और वह पाप-ग्रह हो तो जातक की स्त्री दुष्ट, पति से विरोध रखने वाली तथा सन्ताप देने वाली होती है। यदि षष्ठेश शुभग्रह हो तो स्त्री दुष्टा तो नहीं होती, अपितु वह बन्ध्या अथवा नष्टगर्भा होती है।

(८) षष्ठभाव का स्वामी षष्ठेश यदि शनि हो और वह अष्टमभाव में बैठा हो तो जातक की संग्रहणी रोग से, मंगल हो तो सर्प के काटने से, बुध हो तो विषदोष से, चन्द्रमा हो तो बालारिष्ट दोष से, सूर्य हो तो सिंह-व्याघ्र आदि से, गुरु हो तो कुबुद्धि से और शुक्र हो तो नेत्र-रोग से मृत्यु होती है।

(९) षष्ठभाव का स्वामी षष्ठेश यदि नवमभाव में बैठा हो और वह पापग्रह हो तो जातक लंगड़ा, बन्धु-विरोधी, क्रूर शास्त्र-पुराणादि को न मानने वाला तथा भिक्षुक होता है।

(१०) षष्ठभाव का स्वामी षष्ठेश यदि दशमभाव में बैठा हो और वह पापग्रह हो तो जातक अपनी माता का शत्रु तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है। यदि शुभ ग्रह हो तो पिता का पालन करने वाला, परन्तु अन्य परिवारी जनों का शत्रु होता है।

(११) षष्ठभाव का स्वामी षष्ठेश यदि एकादशभाव में बैठा हो और वह पापग्रह हो तो जातक की मृत्यु शत्रु के द्वारा होती है। यदि शुभ ग्रह हो तो चोरों के द्वारा धन की हानि होती है तथा चतुष्पदों (जानवरों) के द्वारा लाभ होता है।

(१२) षष्ठभाव का स्वामी षष्ठेश यदि द्वादशभाव में बैठा हो तो जातक को पशुओं से धन की हानि होती है। ऐसा व्यक्ति विदेश के आवागमन से धन प्राप्त करता है तथा भाग्यवादी होता है।

सप्तमभाव का स्वामी 'सप्त मेश'

(१) सप्तमभाव अर्थात् स्त्री एवं दैनिक व्यवसाय के स्थान का स्वामी सप्तमेश यदि लग्न अर्थात् प्रथमभाव में बैठा हो तो जातक अपनी स्त्री में विशेष स्नेह रखने वाला, परन्तु अन्य स्त्रियों में भी कुछ स्नेह रखने वाला, भोगी तथा स्वरूपवान् होता है।

(२) सप्तमभाव का स्वामी सप्तमेश यदि द्वितीयभाव में बैठा हो तो जातक की स्त्री दुष्ट-स्वभाव वाली तथा पुत्र की इच्छा रखने वाली होती है। उसे स्त्री के द्वारा धन का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति स्वयं एकान्तवास का प्रेमी होता है।

(३) सप्तमभाव का स्वामी सप्तमेश यदि तृतीयभाव में बैठा हो तो जातक आत्मबली, भाई-बन्धुओं से प्रेम रखने वाला तथा स्वयं दुःखी रहने वाला होता है। यदि सप्तमेश पापग्रह हो तो उसकी स्त्री अपने देवर तथा पति के मित्रों से प्रेम करने वाली होती है।

(४) सप्तमभाव का स्वामी सप्तमेश यदि चतुर्थभाव में बैठा हो तो जातक चंचल स्वभाव का, अपने पिता के शत्रुओं से प्रेम रखने वाला होता है। उसका पिता कटुभाषी होता है। उसकी स्त्री का पालन-पोषण पिता के घर (जातक की ससुराल) में होता है।

(५) सप्तमभाव का स्वामी सप्तमेश यदि पंचमभाव में बैठा हो तो जातक भाग्यवान्, पुत्रवान्, साहसी तथा दुष्ट स्वभाव का होता है। उसकी स्त्री का पालन उसके पुत्र द्वारा होता है।

(६) सप्तमभाव का स्वामी सप्तमेश यदि षष्ठभाव में बैठा हो तो जातक अपनी स्त्री से वैर रखने वाला, रोगिणी स्त्री वाला तथा स्त्री-संग से क्षय-रोग का शिकार बनने वाला होता है। यदि सप्तमेश पापग्रह हो तो स्त्री-संगजन्य दोष के कारण जातक की मृत्यु हो जाती है।

(७) सप्तमभाव का स्वामी सप्तमेश यदि अपने ही घर अर्थात् सप्तमभाव में बैठा हो तो जातक दीर्घायु, तेजस्वी निर्मल स्वभाव का तथा सबसे प्रेम रखने वाला होता है।

(८) सप्तमभाव का स्वामी सप्तमेश यदि अष्टमभाव में बैठा हो तो जातक अपना विवाह न करके वेश्याओं के साथ रमण करता है और प्रतिदिन चिन्तायुक्त एवं दुःखी बना रहता है।

(९) सप्तमभाव का स्वामी सप्तमेश यदि नवमभाव में बैठा हो तो जातक सुशील और तेजस्वी होता है। उसकी पत्नी भी सुशीला होती है। यदि सप्तमेश पापग्रह हो तो

जातक नपुंसक और कुरूप होता है। यदि उसके ऊपर लग्नेश की दृष्टि हो तो वह नीतिशास्त्र का विशेषज्ञ होता है।

(१०) सप्तमभाव का स्वामी सप्तमेश यदि दशमभाव में बैठा हो तो जातक कपटी, लम्पट, राजदोष से युक्त होता है। यदि सप्तमेश पाप-ग्रह हो तो वह दुःख से पीड़ित एवं शत्रुओं के वश में रहने वाला होता है।

(११) सप्तमभाव का स्वामी सप्तमेश यदि एकादशभाव में बैठा हो तो जातक की पत्नी सुन्दर,पतिव्रता एवं श्रेष्ठ स्वभाव वाली होती है।

(१२) सप्तमभाव का स्वामी सप्तमेश यदि द्वादशभाव में बैठा हो तो जातक की पत्नी उसके भाइयों तथा मित्रों से प्रेम करती है। वह दुष्ट लोगों से प्रेम करने वाली, पति से दूर रहने वाली तथा चंचल स्वभाव वाली होती है।

अष्टमभाव का स्वामी 'अष्टमेश'

(१) अष्टमभाव अर्थात् आयु, मृत्यु एवं पुरातत्त्व-स्थान का स्वामी अष्टमेश यदि लग्न अर्थात् प्रथमभाव मे बैठा हो तो जातक दीर्घकालीन रोगी, विद्वान्, अपने हित की बात करने वाला, राजा की आज्ञा का पालन करके धन प्राप्त करने वाला तथा अनेक प्रकार के विघ्नों में पड़ने वाला होता है।

(२) अष्टमभाव का स्वामी अष्टमेश यदि द्वितीयभाव में बैठा हो और वह पाप-ग्रह हो तो जातक अल्पायु, चोर तथा शत्रुओं से पीड़ित होता है। यदि शुभ ग्रह हो तो वह शुभ फल देने वाला होता है, परन्तु उसकी मृत्यु राजा द्वारा होती है।

(३) अष्टमभाव का स्वामी अष्टमेश यदि तृतीयभाव में बैठा हो तो जातक मित्रों तथा भाइयों का विरोधी, कटुभाषी अंगहीन, चंचल स्वभाव का अथवा भाइयों से रहित होता है।

(४) अष्टमभाव का स्वामी अष्टमेश यदि चतुर्थभाव में बैठा हो तो जातक अपने पिता का शत्रु होता है। पिता-पुत्र में झगड़ा होता है तथा पिता रोगी भी बना रहता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति अपनी माता से धन प्राप्त करता है।

(५) अष्टमभाव का स्वामी अष्टमेश यदि पंचमभाव में बैठा हो और वह पाप-ग्रह हो तो जातक पुत्रहीन होता है। यदि शुभ ग्रह हो तो पुत्रवान् होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति प्रायः जीवित नहीं रहता और यदि जीवित रहता है, तो वह महाधूर्त होता है।

(६) अष्टमभाव का स्वामी अष्टमेश यदि षष्ठभाव में बैठा हो तो जातक राजा का विरोधी होता है, गुरु हो तो अंगहीन, शुक्र हो तो नेत्र-रोगी, चन्द्रमा हो तो रोगी, मंगल हो तो क्रोधी; बुध हो तो कायर, शनि हो तो तृष्णाकुल एवं कष्ट पाने वाला होता है। यदि चन्द्रमा पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो उक्त अशुभ फल नहीं होता।

(७) अष्टमभाव का स्वामी अष्टमेश यदि सप्तमभाव में हो तो जातक उदर-रोग से युक्त, दुष्ट स्वभाव वाला तथा कुशीला स्त्री का पति होता है। अष्टमेश यदि पाप-ग्रह हो तो जातक स्त्री का द्वेषी होता है और स्त्री के द्वारा ही उसकी मृत्यु होती है।

(८) अष्टमभाव का स्वामी अष्टमेश यदि अपने ही घर अष्टमभाव में हो तो जातक बलवान्, निरोग, कपटी तथा व्यवसायी होता है। वह कपटी तथा कुल में अत्यन्त प्रसिद्ध होता है।

(९) अष्टमभाव का स्वामी अष्टमेश यदि नवमभाव में हो तो जातक सहायकों से हीन, जीवघातक, पापी, बन्धु-हीन, स्नेह-हीन, कुल के शत्रुओं द्वारा पूज्य तथा कान्तिहीन मुख वाला होता है।

(१०) अष्टमभाव का स्वामी अष्टमेश यदि दशमभाव में हो तो जातक राज्य-कर्मचारी, नीच कर्म करने वाला तथा आलसी होता है। यदि अष्टमेश पाप-ग्रह हो तो जातक पुत्र-हीन तथा मातृहीन होता है।

(११) अष्टमभाव का स्वामी अष्टमेश यदि एकादशभाव में हो तो जातक बाल्यावस्था में दुःखी, परन्तु बाद में सुखी और दीर्घायु होता है। यदि अष्टमेश पाप-ग्रह हो तो जातक अल्पायु होता है।

(१२) अष्टमभाव का स्वामी अष्टमेश यदि द्वादशभाव में हो तो जातक कटुभाषी चोर, शठ निर्दय इच्छागामी तथा अंगहीन होता है। मृत्यु के उपरान्त उसका शरीर कौआ-गिद्ध आदि पक्षियों का भक्ष्य बनता है।

नवमभाव का स्वामी भाग्येश अथवा 'नवमेश'

(१) नवमभाव अर्थात् भाग्य एव धर्म-स्थान का स्वामी भाग्येश अथवा नवमेश यदि लग्न अर्थात् प्रथमभाव में बैठा हो तो जातक अत्यन्त शूर-वीर, कृपण, अल्पभोजी, बुद्धिमान्, राज-कर्मचारी एवं देवता तथा ब्राह्मणों को न मानने वाला होता है।

(२) नवमभाव का स्वामी भाग्येश यदि द्वितीयभाव में बैठा हो तो जातक सुशील, पुण्यात्मा, कान्तिहीन मुख-वाला, वात्सल्ययुक्त, बैलों का व्यवसाय करने में चतुर तथा चतुष्पदों से पीड़ा पाने वाला होता है।

(३) नवमभाव का स्वामी भाग्येश यदि तृतीयभाव में बैठा हो तो जातक की पत्नी सुन्दर होती है। वह भाई-बन्धुओं से युक्त तथा उनसे स्नेह रखने वाला होता है।

(४) नवमभाव का स्वामी भाग्येश यदि चतुर्थभाव में बैठा हो तो जातक पिता का भक्त, माता का पालन करने वाला, पिता के कार्य में लगा रहने वाला, पुण्यात्मा तथा लोक में प्रसिद्ध व्यक्ति होता है।

(५) नवमभाव का स्वामी भाग्येश यदि पंचमभाव में बैठा हो तो जातक पुण्यात्मा, सुन्दर स्वरूप वाला एवं देवताओं तथा ब्राह्मणों की पूजा करने वाला होता है। उसके पुत्र भी पुण्यात्मा होते हैं।

(६) नवमभाव का स्वामी भाग्येश यदि षष्ठभाव में बैठा हो तो जातक अधूरा काम करने वाला, शत्रुओं के प्रति भी विनम्र बना रहने वाला एवं वेदान्त आदि दर्शन-शास्त्रों की निन्दा करने वाला होता है!

(७) नवमभाव का स्वामी भाग्येश यदि सप्तमभाव में बैठा हो तो जातक की पत्नी सत्य बोलने वाली, सुशील, सुन्दर स्वरूपवती तथा लक्ष्मीवती होती है।

(८) नवमभाव का स्वामी भाग्येश यदि अष्टमभाव में बैठा हो जातक दुष्ट स्वभाव वाला, जीवों का हिंसक, पुण्यहीन, ग्रह-विहीन तथा बन्धु-विहीन होता है। यदि भाग्येश पाप-ग्रह हो तो जातक नपुंसक होता है।

(९) नवमभाव का स्वामी भाग्येश यदि नवभभाव में बैठा हो तो जातक अपने भाई-बन्धुओं से अत्यधिक प्रेम रखने वाला, दानी, देवता, गुरु, कुटुम्बी तथा पत्नी आदि से स्नेह करने वाला होता है।

(१०) नवमभाव का स्वामी भाग्येश यदि दशमभाव में बैठा हो तो जातक राज्य-कर्मचारी, माता-पिता का भक्त, शूर-वीर, धर्मात्मा तथा प्रसिद्ध-पुरुष होता है।

(११) नवमभाव का स्वामी भाग्येश यदि एकादशभाव में बैठा हो तो जातक धर्मात्मा, धनी, दीर्घायु, सबसे प्रेम रखने वाला, सुपुत्रवान्, पुण्यात्मा तथा राजा द्वारा धन प्राप्त करने वाला होता है।

(१२) नवमभाव का भाग्येश यदि द्वादशभाव में बैठा हो तो जातक सुन्दर शरीर वाला, विद्वान् तथा विदेशों में आदर प्राप्त करने वाला होता है। यदि नवमेश पाप-ग्रह हो तो जातक धूर्त होता है।

दशमभाव का स्वामी 'राज्येश' अथवा 'दशमेश'

(१) दशमभाव अर्थात् पिता, राज्य एवं व्यवसाय-स्थान का स्वामी 'राज्येश' अथवा 'दशमेश' यदि लग्न अर्थात् प्रथमभाव में बैठा हो तो जातक अपनी माता का शत्रु, परन्तु पिता का भक्त होता है। यदि दशमेश पापग्रह हो तो जातक के पिता के मरने के बाद उसकी माता दूसरे पुरुष के साथ रहने लगती है।

(२) दशमभाव का स्वामी राज्येश यदि द्वितीयभाव में बैठा हो तो जातक माता का भक्त, माता का स्नेह प्राप्त करने वाला, स्वल्पभोजी तथा शास्त्र-विहित कार्यों को करने वाला होता है।

(३) दशमभाव का स्वामी राज्येश यदि तृतीयभाव में बैठा हो तो जातक माता, गुरुजनों एवं परिजनों की सेवा करने वाला, सत्कर्म करने में कुशल, पराक्रमी तथा शत्रुओं पर विजय पाने वाला होता है।

(४) दशमभाव का स्वामी राज्येश यदि चतुर्थभाव में बैठा हो तो जातक सदाचारी, माता-पिता का भक्त, राजमान्य एवं सदैव सुख भोगने वाला होता है।

(५) दशमभाव का स्वामी राज्येश यदि पंचमभाव में बैठा हो तो जातक शुभ कर्म करने वाला, गीति-वाद्य आदि कलाओं में निपुण, राज द्वारा लाभ प्राप्त करने वाला तथा विडम्बना में पड़ने वाला होता है। उसकी सन्तान का पालन-पोषण भी उसकी माता ही करती है।

(६) दशमभाव का स्वामी राज्येश यदि षष्ठभाव में बैठा हो तो जातक शत्रुओं से भयभीत रहने वाला, कायर, दयाहीन, रोगी तथा झगड़ालू स्वभाव का होता है।

(७) दशमभाव का स्वामी राज्येश यदि सप्तमभाव में बैठा हो तो जातक की स्त्री सुन्दर, पुत्रवती, पतिव्रता तथा अपने पति को सदैव सुख देने वाली होती है।

(८) दशमभाव का स्वामी राज्येश यदि अष्टमभाव में बैठा हो तो जातक शूर-वीर, क्रूर, मिथ्यावादी, दुष्ट स्वभाव वाला, धूर्त, अल्पायु एवं अपनी माता को सन्ताप देने वाला होता है।

(९) दशमभाव का स्वामी राज्येश यदि नवमभाव में बैठा हो तो जातक सुशील स्वभाव का एवं अच्छे मित्रों तथा भाइयों वाला होता है। उसकी माता पुण्यवती, परम सुशीला तथा सदैव सत्य बोलने वाली होती है।

(१०) दशमभाव का स्वामी राज्येश यदि अपने ही घर में अर्थात् दशमभाव में बैठा हो तो जातक माता को सुख देने वाला, मातृकुल से अनेक प्रकार के सुख पाने वाला तथा समयानुकूल प्रासंगिक वचन बोलने वाला चतुर व्यक्ति होता है।

(११) दशमभाव का स्वामी राज्येश यदि एकादशभाव में बैठा हो तो जातक धनवान्, मानी, दीर्घायु तथा माता से सुख पाने वाला होता है। उसकी माता सुखभागिनी तथा उसकी रक्षा करने वाली होती है।

(१२) दशमभाव का स्वामी राज्येश यदि द्वादशभाव में बैठा हो तो जातक अपनी माता द्वारा परित्यक्त, आत्मबली, राज्य-कर्मचारी तथा शुभ कर्म करने वाला होता है। यदि राज्येश पापग्रह हो तो वह परदेश में निवास करने वाला होता है।

एकादशभाव का स्वामी 'लाभेश' अथवा 'एकादशेश

(१) एकादशभाव अर्थात् लाभ-स्थान का स्वामी लाभेश अथवा एकादशेश यदि लग्न अर्थात् प्रथमभाव में बैठा हो तो जातक शूर-वीर, बलवान्, दानी, सुन्दर तथा सबका प्रिय होता है। तृष्णा-दोष से उसकी अल्पायु में ही मृत्यु हो जाती है।

(२) एकादशभाव का स्वामी लाभेश यदि द्वितीयभाव में बैठा हो और वह पापग्रह हो तो जातक अल्पभोगी, अल्पायु, अल्पसुखी, रोगी तथा खोटे भाग्य वाला होता है। लाभेश शुभग्रह हो तो जातक धनी होता है।

(३) एकादशभाव का स्वामी लाभेश यदि तृतीयभाव में बैठा हो तो जातक भाई तथा स्त्री का पालक, उनमें प्रेम रखने वाला, भाई के शत्रुओं का नाशक तथा सुन्दर स्वरूप वाला होता है।

(४) एकादशभाव का स्वामी लाभेश यदि चतुर्थभाव में बैठा हो तो जातक दीर्घजीवी, पिता में भक्ति रखने वाला, अपने धर्म का पालन करने वाला, समयानुसार कार्य करने वाला तथा सब कामों से लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

(५) एकादशभाव का स्वामी लाभेश यदि पंचमभाव में बैठा हो तो जातक पिता-पुत्र में प्रेम रखने वाला, समान गुणों वाला तथा अल्पायु होता है।

(६) एकादशभाव का स्वामी लाभेश यदि षष्ठभाव में बैठा हो तो जातक शत्रुओं से युक्त एवं दीर्घ रोगी होता है। यदि लाभेश पाप-ग्रह हो तो उसकी मृत्यु परदेश में शत्रुओं के हाथ से होती है।

(७) एकादशभाव का स्वामी लाभेश यदि सप्तमभाव में बैठा हो तो जातक सुशील, धनी, तेजस्वी, अधिकार-सम्पन्न, दीर्घायु तथा एक पत्नी वाला होता है।

(८) एकादशभाव का स्वामी लाभेश यदि अष्टमभाव में बैठा हो तो जातक रोगी, मृतप्राय, दुःखी तथा अल्पायु होता है। यदि लाभेश शुभग्रह हो तो जातक स्वस्थ बना रहता है।

(९) एकादशभाव का स्वामी लाभेश यदि नवमभाव में बैठा होता हो तो जातक अनेक विषयों तथा अनेक शास्त्रों का जानकार, धर्म-कार्य करने में प्रसिद्ध और देवता तथा गुरुजनों का भक्त होता है। यदि लाभेश पापग्रह हो तो जातक बन्धु-विहीन होता है।

(१०) एकादशभाव का स्वामी लाभेश यदि दशमभाव में बैठा हो तो जातक माता का भक्त, परन्तु पिता से द्वेष रखने वाला, धनी, पण्डित, दीर्घायु एवं परिजनों का पालन करने वाला होता है।

(११) एकादशभाव का स्वामी लाभेश यदि अपने ही घर अर्थात् एकादशभाव में बैठा हो तो जातक दीर्घायु, बहुत से पुत्र-पौत्रों वाला, सत्कर्म करने वाला, सुन्दर, सुशील, लोगों में प्रधान पद प्राप्त करने वाला, पुष्ट शरीर वाला तथा मनोवैज्ञानिक होता है।

(१२) एकादशभाव का स्वामी लाभेश यदि द्वादशभाव में बैठा हो तो जातक उपलब्ध वस्तुओं का भोग करने वाला, स्थिर चित्त वाला, उत्पाती, रोगी, मानी तथा सुखी-जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

द्वादशभाव का स्वामी 'व्ययेश' अथवा 'द्वादशेश'

(१) द्वादशभाव अर्थात् व्यय-स्थान का स्वामी 'व्ययेश' अथवा 'द्वादशेश' यदि लग्न अर्थात् प्रथमभाव में बैठा हो तो जातक प्रियभाषी, सुन्दर शरीर वाला, विदेश में रहने वाला, अपव्ययी, सदैव अविवाहित रहने वाला अथवा नपुंसक होता है।

(२) द्वादशभाव का स्वामी व्ययेश यदि द्वितीयभाव में बैठा हो तो जातक कटु-भाषी, कृपण, धन-धान्य-विहीन, राजा, चोर तथा अग्नि से भय पाने वाला तथा किसी तीर्थस्थान में मृत्यु प्राप्त करने वाला होता है।

(३) द्वादशभाव का स्वामी व्ययेश यदि तृतीयभाव में बैठा हो और वह पापग्रह हो तो जातक बन्धुहीन होता है। यदि शुभग्रह हो तो जातक धनी, थोड़े भाइयों वाला तथा भाइयों से दूर रहने वाला होता है।

(४) द्वादशभाव का स्वामी व्ययेश यदि चतुर्थभाव में बैठा हो तो जातक रोगी, कृपण, दुःखी, सत्कर्म करने वाला तथा पुत्रों द्वारा मृत्यु पाने वाला होता है।

(५) द्वादशभाव का स्वामी व्ययेश यदि पंचमभाव में बैठा हो और वह पापग्रह हो तो जातक सन्तति-विहीन होता है। यदि शुभग्रह हो तो पिता के धन से धनी, पुत्रवान् एवं स्वयं की सामर्थ्य से रहित होता है।

(६) द्वादशभाव का स्वामी व्ययेश यदि षष्ठभाव में बैठा हो और वह पापग्रह हो तो जातक नेत्र-रोगी, कृपण तथा किसी निन्द्य स्थान में मृत्यु प्राप्त करने वाला होता है। यदि द्वादशेश शुक्र हो तो जातक नेत्रविहीन होता है।

(७) द्वादशभाव का स्वामी व्ययेश यदि सप्तमभाव में बैठा हो तो जातक दुराचारी, दुष्ट एवं बोलने में चतुर होता है। यदि द्वादशेश पापग्रह हो तो उसकी मृत्यु अपनी स्त्री के द्वारा होती है और यदि शुभग्रह हो तो वह वेश्या के द्वारा मृत्यु प्राप्त करता है।

(८) द्वादशभाव का स्वामी व्ययेश यदि अष्टमभाव में बैठा हो और वह पापग्रह हो तो जातक अल्पायु, लोगों का द्वेषी तथा कार्य-साधनों से रहित होता है। यदि द्वादशेश शुभग्रह हो तो धन का संग्रह करने वाला होता है।

(९) द्वादशभाव का स्वामी व्ययेश यदि नवमभाव में बैठा हो और वह शुभग्रह हो तो जातक तीर्थाटन करने वाला होता है। यदि द्वादशेश पापग्रह हो तो उसका सम्पूर्ण धन व्यर्थ चला जाता है।

(१०) द्वादशभाव का स्वामी व्ययेश यदि दशमभाव में बैठा हो तो जातक पवित्रात्मा, पुण्य की कमाई करने वाला तथा पर-स्त्रियों से दूर रहने वाला होता है। उसकी माता कटुभाषिणी होती है।

(११) द्वादशभाव का स्वामी व्ययेश यदि एकादशभाव में बैठा हो तो जातक धनी, दीर्घजीवी, श्रेष्ठ स्थान का स्वामी, दानी, सत्यवादी तथा प्रसिद्ध पुरुष होता है।

(१२) द्वादशभाव का स्वामी व्ययेश यदि अपने ही घर द्वादशभाव में बैठा हो तो जातक धनवान्, कृपण, पशुओं का संग्रह करने वाला तथा अल्पायु होता है। यदि वह जीवित रह जाय तो ग्राम का स्वामी होता है।

स्त्री-जातक

यों तो पुरुष अथवा स्त्री की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का फलादेश लगभग एक जैसा ही माना जाता है, परन्तु स्त्री की जन्म-कुण्डली में कुछ ग्रहों के विभिन्न भावों में स्थित होने से उनके फलादेश में भी भिन्नता आ जाती है। इस अध्याय में उन्हीं का वर्णन किया जा रहा है।

स्त्री-जातक में कई स्थानों पर नवांश एवं त्रिशांश का वर्णन आया है। अस्तु, 'नवांश' एवं त्रिशांश' के विषय में पहले नीचे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिये—

नवांश-ज्ञान

चिर राशियों में उसी राशि से, स्थिर राशियों में उस राशि से आरम्भ करके नवम राशि से तथा द्विस्वभाव राशियों में उस राशि से आरम्भ करके राशि से नवांश की गणना की जाती है। चिर, स्थिर तथा द्विस्वभाव राशियों के देव, मनुष्य तथा राक्षस—ये क्रमशः स्वामी होते हैं।

एक राशि का नवांश ३ अंश २० कला का होता है। इसका हिसाब मेषादि राशियों की टेबिल में सामने दिये गये नवांश चक्र के अनुसार समझना चाहिए—

—:नवांश चक्रः—

खण्ड		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन.
३	२०	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४
६	४०	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५
१०	०	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६
१३	२०	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७
१६	४०	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८
२०	०	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९
२३	२०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०
२६	४०	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११
३०	०	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२

नवांश का फल

राशि के किस नवांश में जन्म लेने वाले जातक के सम्बन्ध में नवांश का फलादेश क्या होता है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये—

(१) राशि के प्रथम नवांश (चरण) में जन्म लेने वाला जातक चंचल स्वभाव वाला, दुष्ट, पापी, कुरूप, चुगलखोर तथा व्यसनी होता है।

(२) राशि के द्वितीय नवाँश में जन्म लेने वाला जातक धनी, भोगी, कलह से विमुख तथा नर्तकियों से प्रेम करने वाला होता है।

(३) राशि के तृतीय नवांश में जन्म लेने वाला जातक धर्मात्मा, गुणी, देवभक्त, सब पदार्थों के तत्त्वों का जानकार तथा चिर-रोगी होता है।

(४) राशि के चतुर्थ नवांश में जन्म लेने वाला जातक गुरु का भक्त, दीक्षा ग्रहण करने वाला तथा सभी पदार्थों को प्राप्त करने वाला होता है।

(५) राशि के पंचम नवांश में जन्म लेने वाला जातक दीर्घायु, बहुसन्ततिवान्, समस्त राजलक्षणों से युक्त तथा प्रसिद्ध राजा होता है।

(६) राशि के षष्ठ नवांश में जन्म लेने वाला जातक सत्कर्म-विहिन, अभिमानी, धन को नष्ट करने वाला, कामी, स्त्री से पराजित तथा नपुंसक होता है।

(७) राशि के सप्तम नवांश में जन्म वाला जातक शूर-वीर, साहसी, सग्रामजयी, पराक्रमी, बुद्धिमान, उत्साही, सन्तोषी तथा विजयी होता है।

(८) राशि के अष्टम नवाँश में जन्म लेने वाला जातक परद्वेषी, क्रूर, कुटिल, कृतघ्न, कष्ट भोगने वाला, बहुसन्ततिवान् तथा कार्य के फल से वंचित रहने वाला होता है।

(९) राशि के नवम नवांश में जन्म लेने वाला जातक प्रतापी, जितेन्द्रिय, समर्थ, कार्यकुशल तथा अनेक सेवकों को रखने वाला होता है।

त्रिशांश ज्ञान

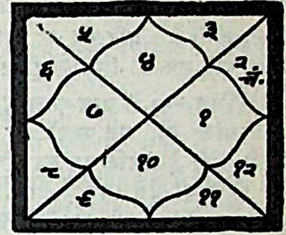
मेष, मिथुन आदि विषम राशियों में ५, ५, ८, ७, ५ अंश क्रम से मंगल, शनि, गुरु, बुध तथा शुक्र के त्रिशांश होते हैं एवं वृष, कर्क आदि समराशियों में ५, ७, ८, ५, ५ के क्रम से शुक्र, बुध, गुरु, शनि और मंगल के त्रिशांश होते हैं।

पृष्ठ ७३८ पर दिये गये चक्र के आधार पर त्रिशांश का ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए।

—: त्रिशांश चक्र :—

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
५ मं०	५ शु०	५ मं०	५ शु०	५ मं०	५ शु०	५मं०	५ शु०	५ मं०	५ शु०	५ मं०	५ शु०
१० श०	१२ बु०	१० श०	१२ बु०	१० श०	१२ बु०	१० श०	१२ बु०	१० श०	१२ बु०	१० श०	१२ बु०
१८ गु०	२० गु०	१८ गु०	२० गु०	१८ गु०	२० गु०	१८ गु०	२० गु०	१८ गु०	२० गु०	१८ गु०	२० गु०
२५ बु०	२५ श०	२५ बु०	२५ श०	२५ बु०	२५ श०	२५ बु०	२५ श०	१५ बु०	२५ श०	२५ बु०	२५ श०
३० शु०	३० मं०	३० शु०	३० मं०	३० शु०	३० मं०	३० शु०	३० मं०	३० शु०	३० मं०	३० शु०	३० मं०

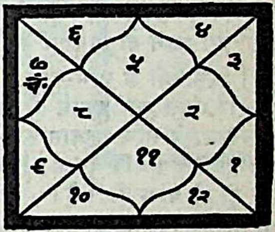
स्त्री–जातक



१५५२

जिस स्त्री के जन्म समय में लग्न और चन्द्रमा सम राशि में हों, (चित्र संख्या १५५२) वह स्त्री, स्त्रियों के आकार वाली होती है।

यदि उसी लग्न और चन्द्रमा को शुभ ग्रह देख रहे हों, तो वह स्त्री सुन्दर वस्त्राभूषणों को धारण करने वाली तथा श्रेष्ठ शीलवती होती है।



१५५३

जिस स्त्री के जन्म समय में लग्न और चन्द्रमा विषम राशि में हों (चित्र संख्या १५५३) वह स्त्री पुरुषों के समान आकार वाली होती है।

यदि वे ही लग्न और चन्द्रमा पापग्रहों से दृष्ट हों तो वह स्त्री पापिनी तथा बुरे कर्म करने वाली होती है। यदि लग्न और चन्द्रमा विषम राशि में हों और उन्हें शुभ ग्रह देखते हों तो मध्यम स्वभाव समझना चाहिए। यदि लग्न और चन्द्रमा सम राशि में हों तथा पापग्रह देखते हों तो भी मध्यम स्वभाव कहना चाहिए। जो ग्रह अधिक बली हों, उन्हीं के अनुसार स्त्री का स्वभाव समझना चाहिए।

त्रिशांशानुसार स्त्रियों के सम्बन्ध में ग्रहों का विशेष फलादेश

(१) जिस स्त्री के जन्म-काल में लग्न अथवा चन्द्रमा मेष अथवा वृश्चिक राशि में हो और उसमें इन्हीं राशियों का त्रिशांश भी हो तो ऐसी कन्या अपने विवाह से पहले ही पर-पुरुष गमन करती है।

(२) जिस स्त्री के पूर्वोक्त (मेष अथवा वृश्चिक) राशि में स्थित लग्न अथवा चन्द्रमा हो और शनिश्चर का त्रिशांश हो, वह दासी होती है। यदि बुध का त्रिशांश हो तो माया-विनी होती है और यदि शुक्र का त्रिशांश हो तो दुष्ट कर्म करने वाली होती है।

(३) जिस स्त्री के जन्म-काल में वृष अथवा तुला, इन दोनों में से किसी में लग्न अथवा चन्द्रमा हो तथा मंगल का त्रिशांश हो तो वह स्त्री दुष्ट स्वभाव वाली होती है। यदि शनि का त्रिशांश हो तो स्त्री विवाह के बाद किसी दूसरे पुरुष के घर में जाकर रहती है। यदि गुरु का त्रिशांश हो तो गुणवती होती है। यदि बुध का त्रिशांश हो तो संगीत-वादन की कला में निपुण होती है और यदि शुक्र का त्रिशांश हो तो गुणवती होती है।

(४) जिस स्त्री के जन्म-काल में मिथुन अथवा कन्या राशि में स्थित लग्न अथवा चन्द्रमा हो और मंगल का त्रिशांश हो तो वह कपट करने वाली होती है। यदि शनि का त्रिशांश हो तो हिजड़ी होती है। यदि गुरु का त्रिशांश हो तो पतिव्रता होती है। यदि बुध का त्रिशांश हो तो गुणवती होती है और यदि शुक्र का त्रिशांश हो तो अनेक पुरुषों के साथ गमन करती है।

(५) जिस स्त्री के जन्म-काल में लग्न अथवा चन्द्रमा कर्क राशि मे स्थित हो और मंगल का त्रिशांश हो तो वह स्वेच्छाचारिणी एवं पर-पुरुष-गमन करने वाली होती है। यदि शनि का त्रिशांश हो तो पति को मारने वाली होती है। यदि गुरु का त्रिशांश हो तो अत्यधिक गुणवती होती है। यदि बुध का त्रिशांश हो तो चित्रकारी अथवा शिल्पकारी में कुशल होती है और यदि शुक्र का त्रिशांश हो तो व्यभिचारिणी होती है।

(६) जिस स्त्री के जन्म-काल में लग्न अथवा चन्द्रमा सिंह राशि में स्थित हो और मंगल का त्रिशांश हो, वह पुरुषों जैसे काम करती है। यदि शनि का त्रिशांश हो तो पर-पुरुष-गामिनी होती है। यदि गुरु का त्रिशांश हो तो राजरानी होती है। यदि बुध का त्रिशांश हो तो पुरुषों जैसे स्वभाव वाली होती है और यदि शुक्र का त्रिशांश हो तो वह पिता, भाई, जेठ, देवर आदि पुरुषों के साथ सहवास करती है।

(७) जिस स्त्री के जन्म-काल में धनु अथवा मीन राशि में लग्न अथवा चन्द्रमा की स्थिति हो और मंगल का त्रिशांश हो, वह स्त्री बड़ी गुणवती होती है। यदि शनि का त्रिशांश हो ता अल्परति करने वाली होती है। यदि गुरु का त्रिशांश हो तो अनेक गुणों से युक्त होती है। यदि बुध का त्रिशांश हो तो ज्ञानवती होती है और यदि शुक्र का त्रिशांश हो तो पर-पुरुषों से प्रेम करने वाली होती है।

(८) जिस स्त्री के जन्म-काल में मकर अथवा कुम्भ राशि में लग्न अथवा चन्द्रमा की स्थिति हो और मंगल का त्रिशांश हो, वह स्त्री दासी होती है। यदि शनि का त्रिशांश हो तो वह नीच पुरुष के साथ सहवास करती है। यदि गुरु का त्रिशांश हो तो अपने पति से प्रेम करने वाली होती है। यदि बुध का त्रिशांश हो तो खोटी बुद्धि वाली होती है और यदि शुक्र का त्रिशांश हो तो बांझ होती है।

टिप्पणी—त्रिशांश का फल लग्न तथा चन्द्रमा इन दोनों से कहा गया है। लग्न अथवा चन्द्रमा में जो भी बलवान् हो, उसके बलाबल का विचार करके तदनुसार ही फलादेश समझना चाहिए।

नवांशानुसार स्त्रियों के सम्बन्ध में ग्रहों का विशेष फलादेश

(१) जिस स्त्री के जन्म-काल में शनि शुक्र के नवांश में हो, शुक्र शनि के नवांश में हो और दोनों एक-दूसरे को देखते हों अथवा जन्म लग्न वृष या तुला हो और उसमें कुम्भ के नवांश का उदय हो, तो ऐसी स्त्री किसी अन्य स्त्री के साथ ही पुरुषाकार जननेन्द्रिय बनाकर अपनी कामाग्नि को शान्त करती है।

(२) यदि स्त्री की जन्म-कुण्डली के किसी घर में शुक्र के नवांश में मंगल हो और मंगल के नवांश में शुक्र हो तो वह पर-पुरुष-गमन करती है।

(३) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सातवें घर में मंगल का नवांश हो और उसे शनि देखता हो तो उस स्त्री के गुप्तांग में रोग होता है।

(४) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सातवें घर में शुभग्रह का नवांश हो और उसे शुभ ग्रह देखते हों तो उस स्त्री का गुप्तांग अत्यन्त सुन्दर होता है और वह पति को विशेष प्रिय होती है।

(५) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली में जन्म-लग्न से सातवें घर में मकर, कुम्भ के नवांश का उदय हो तथा सातवें घर में मकर, कुम्भ राशि ही हो, उसका पति वृद्ध अथवा मूर्ख होता है।

(७) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली में सातवें घर में वृष अथवा तुला राशि हो और शुक्र के नवांश का उदय हो, उस स्त्री का पति सुन्दर तथा सबको प्रिय होता है।

(८) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली में सातवें घर में मिथुन अथवा कन्या राशि हो और बुध का नवांश हो, उस स्त्री का पति विद्वान् अथवा अत्यन्त चतुर होता है।

(८) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली में, सातवें घर में कर्क राशि हो और कर्क का ही नवांश हो, उसका पतिं अत्यन्त कामी तथा कोमल स्वभाव का होता है।

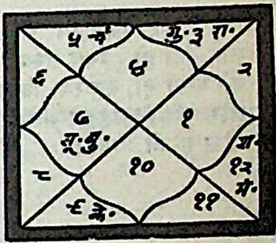
(९) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली में, सातवें घर में धनु अथवा मीन राशि हो और गुरु का नवांश हो, उसका पति गुणवान् तथा जितेन्द्रिय होत। है।

(१०) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली में, सातवें घर में सिंह राशि हो और सिंह का ही नवांश हो उसका पति अत्यन्त कोमल स्वभाव वाला व्यवसायी होता है।

(११) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली में आठवें घर में पापग्रह बैठे हों, तो आठवें घर का स्वामी जिस ग्रह के नवांश में बैठा हो, उस ग्रह की दशा अथवा अन्तर्दशा में ही वह स्त्री विधवा होती है।

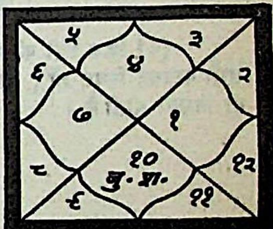
विविध योग

(१) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली में जन्म-लग्न अथवा चन्द्रमा से सातवें घर में कोई भी ग्रह नहीं बैठा हो (चित्र संख्या १५५४) अथवा निर्बल ग्रह बैठा हो अथवा सातवें घर पर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो, उसका पति निरुद्यमी होता है।



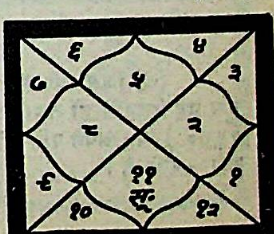
१५५४

(२) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सातवें घर में बुध तथा शनि बैठे हों (चित्र संख्या १५५५), उसका पति नपुंसक होता है। यदि सातवें घर में चर राशि हो तो उस स्त्री का पति सदैव परदेश में रहता है। यदि स्थिर राशि हो तो घर में ही रहता है और यदि द्विस्वभाव राशि हो तो वह घर तथा परदेश—दोनों ही स्थानों में रहता है।



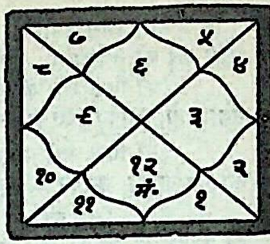
१५५५

(३) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सातवें घर में सूर्य की स्थिति हो (चित्र संख्या १५५६), वह स्त्री अपने पति द्वारा त्याग दी जाती है।



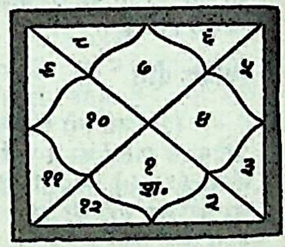
१५५६

(४) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सातवें घर में मंगल बैठा हो (चित्र संख्या १५५७), वह बाल-विधवा होती है।



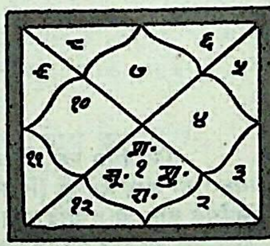
१५५७

(५) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सातवें घर में शनि बैठा हो (चित्र संख्या १५५८) तथा सभी पापीग्रह उसे देखते हों, वह स्त्री बिना विवाह के ही रह जाती है, और यदि विवाह हो भी जाता है तो उसके पति की मृत्यु शीघ्र ही हो जाती है।



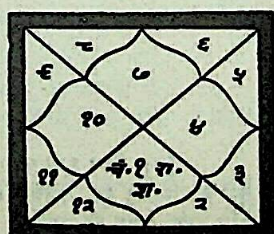
१५५८

(६) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सातवें घर में सभी पापग्रह स्थित हों (चित्र संख्या १५५९) वह अवश्य ही विधवा होती है।



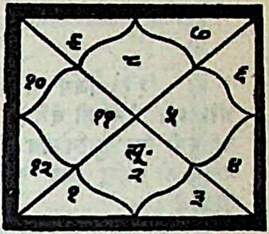
१५५९

(७) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सातवें घर में शुभ ग्रह बलहीन हों तथा पापग्रह भी हों (चित्र संख्या १५६०), वह अपने पति को छोड़कर दूसरे पति को अंगीकार करती है।



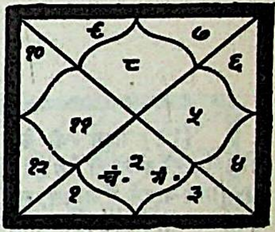
१५६०

(८) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सातवें घर में एक पापग्रह बलहीन बैठा हो (चित्र संख्या १५६१) और उसे कोई शुभ ग्रह न देखता हो, तो ऐसी स्त्री को भी उसका पति त्याग देता है ।



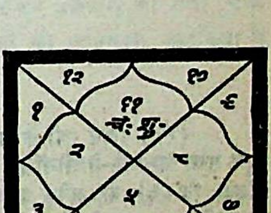
१५६१

(९) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सातवें घर में चन्द्रमा के साथ मंगल बैठा हुआ हो (चित्र संख्या १५६२), वह स्त्री अपने पति की आज्ञा से पर-पुरुष-गमन करती है ।

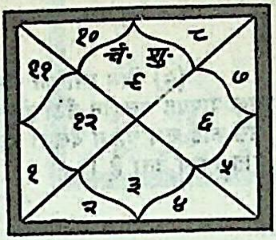


१५६२

(१०) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली में मकर, कुम्भ, मेष अथवा वृश्चिक में से कोई लग्न हो और वहाँ चन्द्रमा तथा शुक्र दोनों ही बैठे हों (चित्र संख्या १५६३) और उन पर पाप-ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो तो ऐसी स्त्री अपनी माता के साथ पर-पुरुष-गमन करती है ।

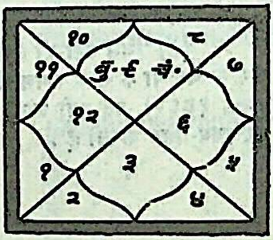


१५६३



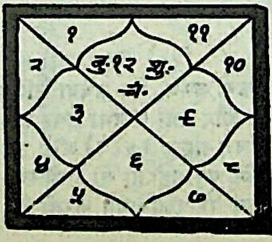
(११) जिस स्त्री के जन्म-लग्न में चन्द्रमा और शुक्र दोनों ही बैठे हों (चित्र संख्या १५६४) वह स्त्री ईर्ष्यालु स्वभाव की, दूसरों को सन्ताप देने वाली परन्तु स्वयं सदैव सुखी रहने वाली होती है।

१५६४



(१२) जिस स्त्री के जन्म-लग्न में बुध और चन्द्रमा दोनों ही बैठे हों (चित्र संख्या १५६५), वह गायन-वादन में कुशल, सुखी, गुणवती, सुन्दरी तथा सब लोगों को प्रिय होती है।

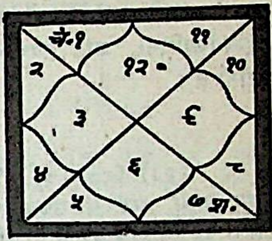
१५६५



(१३) जिस स्त्री के जन्म-लग्न में बुध, शुक्र तथा चन्द्रमा—ये तीनों ही ग्रह बैठे हों (चित्र संख्या १५६६), वह अनेक प्रकार के सुखों से युक्त, धनवती एवं गुणवती होती है।

१५६६

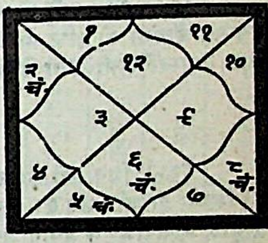
(१४) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली में लग्न से आठवें स्थान में कोई पाप ग्रह बैठा हुआ हो और दूसरे स्थान में कोई शुभ ग्रह बैठा हुआ हो (चित्र संख्या १५६७), वह अपने पति से पहले स्वयं मृत्यु को प्राप्त हो जाती है।



१५६७

(१५) जिस स्त्री के जन्मकाल में शनि मध्यवली हो, चन्द्रमा, शुक्र तथा बुध बल-हीन हों, सूर्य, मंगल, बृहस्पति बलवान् हों तथा लग्न में विषम राशि हो, वह बहु-पुरुष-गामिनी होती है।

(१६) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली में वृष, वृश्चिक, सिंह अथवा कन्या—इनमें से किसी भी राशि पर चन्द्रमा बैठा हो (चित्र संख्या १५६८) वह अल्प पुत्रवती होती है।



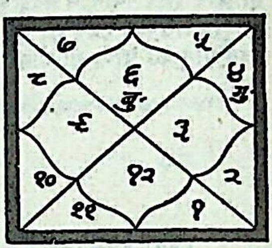
१५६८

(१७) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली में मंगल, शुक्र और बुध बलवान् हों तथा लग्न में सम राशि हो, वह पृथ्वी पर विख्यात, अनेक शास्त्रों की जानकार, ब्रह्मविद्या में प्रवीण ब्रह्मवादिनी होती है।

(१८) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सातवें घर में पापग्रह बैठा हो और नवें घर में कोई अन्य ग्रह बैठा हो तो वह स्त्री संन्यासिनी होती है। नवें घर में जो ग्रह बैठा हो, उसी की प्रव्रज्या समझनी चाहिए अर्थात् यदि सूर्य बली हो तो वह स्त्री तपस्विनी होती है, चन्द्रमा से कपालिनी, मंगल से लाल वस्त्र धारण करने वाली, शुक्र से चक्र धारण करने वाली, शनि से नग्ना, बुध से दण्ड धारण करने वाली तथा गुरु से यति होती है।

(१६) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली में केन्द्र में शुभग्रह बैठे हों तथा पापग्रह ६, ६ १२वें घर में हों तथा सातवें घर में पुरुप राशि हो, वह बड़ी धनवती, ऐश्वर्यशालिनी, शांत स्वभाव वाली, पुत्रवती तथा रानी अथवा रानी के समान होती है।

(२०) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली में, बुध जन्म लग्न में उच्च का होकर बैठा हो तथा गुरु ग्यारहवें घर में हो (चित्र संख्या १५७२) वह राजपत्नी अथवा रानी के समान ऐश्वर्य-शालिनी होती है और उसकी गणना संसार की प्रसिद्ध स्त्रियों में की जाती है।



१५६६

(२१) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली में, केवल पड्वर्ग में शुक्र केन्द्र में बैठा हो और उस पर चन्द्रमा की दृष्टि पड़ रही हो तो वह स्त्री धन-पुत्रादि से सम्पन्न, सौन्दर्यवती, स्थूल नितम्बों वाली रानी के समान होती है।

(२२) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली में कर्क लग्न का उदय हो, सातवें घर में सूर्य की स्थिति हो और उस पर गुरु की दृष्टि पड़ रही हो तो ऐसी स्त्री रोग-रहित, पुत्र-पौत्रों से युक्त, अप्सराओं में प्रधान अथवा रानी के समान सुन्दरी तथा ऐश्वर्यशालिनी होती है।

(२३) जिस स्त्री के पड्वर्ग में शुद्ध होकर तीन ग्रह केन्द्र में हों, वह रानी होती है। जिसके चार ग्रह नवांश में शुद्ध होकर केन्द्रवर्ती हों, वह महारानी होती है और पांच ग्रह शुद्ध होकर केन्द्रवर्ती हों तो वह विमान पर चढ़ने वाली, त्रिभुवन-पति की पत्नी होती है।

विंशोत्तरी महादशा के अनुसार विभिन्न ग्रहों की दशाओं एवं अन्तर्दशाओं का फलादेश

ज्योतिपशास्त्र के आचार्यों ने कलियुग में मनुष्यों की पूर्णायु १२० वर्ष की मानी है। इस आयु-अवधि में नवग्रहों की महादशाएं विभिन्न समय में भोग करती हैं और वे जातक के ऊपर उस अवधि तक अपना विशेष प्रभाव डालती हैं।

ज्योतिषी लोग जन्मपत्रियों में विंशोत्तरी महादशा का चक्र लगा दिया करते हैं। यदि किसी जातक की जन्म-कुण्डली में विंशोत्तरी महादशा का चक्र न लगा हो तो उसे किसी ज्योतिषी द्वारा लगवा लेना चाहिए।

सामान्यतः महादशाओं का निर्धारण इस प्रकार किया जाता है—

कृत्तिका नक्षत्र से आरम्भ करके क्रमशः सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु और शुक्र-ये ग्रह तीन आवृत्ति-क्रम से दशाओं के स्वामी होते हैं। अतः कृत्तिका नक्षत्र से जन्म-नक्षत्र तक जो संख्या हो, उसमें ९ का भाग देकर जो संख्या शेष बचे, उससे आरम्भ करके उक्त क्रम से ग्रहों की महादशा होती है। किस नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक किस ग्रह की महादशा में उत्पन्न हुआ माना जाता है, इसे सामने दिये गये चक्र के अनुसार समझ लेना चाहिए—

नक्षत्रों द्वारा ग्रहों की महादशा जानने का चक्र

दशाओं के स्वामी	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०
	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वा फाल्गुनी
नक्षत्र	उत्तरा फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा
	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
दशाओं की अवधि	६ वर्ष	१० वर्ष	७ वर्ष	१८ वर्ष	१६ वर्ष	१९ वर्ष	१७ वर्ष	७ वर्ष	२० वर्ष

इस प्रकार प्रत्येक जातक के जीवन में सूर्य की महादशा ६ वर्ष, चन्द्रमा की महादशा १० वर्ष, मंगल की महादशा ७ वर्ष, राहु की महादशा १८ वर्ष, गुरु की महादशा १६ वर्ष, शनि की महादशा १९ वर्ष, बुध की महादशा १७ वर्ष, केतु की महादशा ७ वर्ष तथा शुक्र की महादशा २० वर्ष तक रहती है। परन्तु इन सभी ग्रहों की महादशाएं प्रत्येक जातक के जीवन में भोग करें ही, यह आवश्यक नहीं है। जातक का जन्म जिस ग्रह की महादशा में होता है, वहां से आरम्भ करके जितनी अवधि तक वह जीवित रहता है, उतनी अवधि में जितने ग्रहों की महादशा का भोग संभव होता है, उतने ही ग्रहों की महादशा का भोग वह कर पाता है। शेष ग्रहों की महादशाओं का भोग जातक को अपने पूर्व अथवा बाद के जन्म में करना पड़ता है।

जिस समय जिस ग्रह की महादशा चल रही होती है, उस ग्रह की महादशा की अवधि में भी नौ ग्रहों की दशायें विभिन्न कालावधि में अपना भोग करतीं तथा जातक के जीवन पर प्रभाव डालती रहती हैं। उन दशाओं को 'अन्तरदशा' कहा जाता है। अन्तर-दशाओं में भी नौ ग्रहों की दशाएं क्रमशः भोग करती हैं, उन्हें 'प्रत्यन्तरदशा' कहा जाता है। प्रत्यन्तरदशा में भी नौ ग्रहों की दशाओं का भोग होता है, उन्हें 'सूक्ष्मान्तरदशा' कहा जाता है और सूक्ष्मान्तरदशा में भी नौ ग्रहों की दशाओं का भोग होता है, उन्हें 'प्राणदशा' के नाम से सम्बोन्धित किया जाता है। इस प्रकार प्रत्येक ग्रह की महादशा में प्रत्येक ग्रह की अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मान्तरदशा एवं प्राणदशा का क्रमशः निरन्तर भोग होता रहता है और वे सभी जातक के जीवन पर अपना विशिष्ट प्रभाव डालती रहती हैं। गणित के आधार पर इन सभी अन्तर, प्रत्यन्तर, सूक्ष्मान्तर आदि दशाओं को निकाल कर, उनके आधार पर जातक के प्रतिदिन के जीवन में घटने वाली घटनाओं की यथार्थ जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

ग्रहों की महादशा अन्तर-प्रयन्तरदशा आदि के गणित का वर्णन इस पुस्तक का विषय नहीं है। उसका ज्ञान ज्योतिष-सम्बन्धी एतद्विषयक पुस्तकों एवं विद्वानों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। यहाँ पर हम केवल महादशा एवं अन्तरदशा के ग्रहों का जातक के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है, उसके फलादेश मात्र का ही वर्णन कर रहे हैं। किस ग्रह का महादशा में किन-किन ग्रहों की अन्तरदशा कितनी कालावधि तक रहती है, इसे सामने दिए गए चक्रों के अनुसार समझ लेना चाहिए—

विंशोत्तरी 'सूर्य' की महादशा में अन्तर्दशाः

अवधि	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मास	३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
दिन	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०

विंशोत्तरी 'चन्द्रमा' की महादशा में अन्तर्दशा

अवधि	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	सू०
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

विंशोत्तरी 'मंगल' की महादशा में अन्तर्दशा

अवधि	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२१	२७	०	६	०

विंशोत्तरी 'राहु' की महादशा में अन्तर्दशा

अवधि	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

विंशोत्तरी 'गुरु' की महादशा में अन्तर्दशा

अवधि	गु०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०
वर्ष	२	२	२	०	२	०	१	०	२
मास	१	६	३	११	८	९	४	११	४
दिन	१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४

विंशोत्तरी 'शनि' की महादशा में अन्तर्दशा

अवधि	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

विंशोत्तरी 'बुध' की महादशा में अन्तर्दशा

अवधि	बु०	के०	शु०	सू०	च०	मं०	रा०	गु०	श०
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	६
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	३	९

विंशोत्तरी 'केतु' की महादशा में अन्तर्दशा

अवधि	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०
वर्ष	०	१	०	०	०	१	०	१	०
मास	४	२	४	७	४	०	११	१	११
दिन	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७

विंशोत्तरी 'शुक्र' की महादशा में अन्तर्दशा

अवधि।	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	३
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

विंशोत्तरी महादशा के ग्रहों का फलादेश

(१) 'सूर्य' की महादशा में जातक का चित्त उद्विग्न बना रहता है। उसे परदेश-वास, चोट, अनेक प्रकार के क्लेश, क्षोभ, धन का नाश, भाई-बन्धुओं से वियोग तथा राज-कुल से भय आदि कष्टों का सामना करना पड़ता है।

(२) 'चन्द्रमा' की महादशा में जातक के बल, वीर्य, प्रताप, सुख, धन, भोजन आदि की वृद्धि होती है। उसे मिष्टान्न-भोजन, दिव्य-शय्या, आसन, छत्र, वाहन, स्वर्ण, भूमि तथा अन्य अनेक प्रकार के ऐश्वर्यों की प्राप्ति होती है।

(३) 'मंगल' की महादशा में जातक को शस्त्र के द्वारा चोट, अग्नि अथवा रोगों का भय, धन की हानि, चोरी, व्यवसाय में हानि, दैन्य, दुःख आदि कष्ट उठाने पड़ते हैं।

(४) 'राहु' की महादशा में जातक को मति-भ्रम, सर्व-शून्य, विपत्ति, कष्ट, रोग, धन-नाश, प्रिय-वियोग, मृत्यु-तुल्य कष्ट तथा अन्य अनेक प्रकार के दुःखों का सामना करना पड़ता है।

(५) 'गुरु' की महादशा में जातक को राजा से सम्मान, मित्र एवं रत्नों का लाभ, शत्रुओं पर विजय, आरोग्य, शारीरिक बल तथा अनेक प्रकार के सुखों का लाभ होता है। उसके सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं।

(६) 'शनि' की महादशा में जातक को मिथ्या-अपवाद, बन्धन, आश्रय का नाश, धन-धान्य तथा स्त्री से दुःख, सब कामों में हानि तथा असफलताओं का सामना करना पड़ता है।

(७) 'बुध' की महादशा में जातक को अनेक प्रकार के भोग, सुख, धन, वैभव तथा दिव्य-स्त्रियों की प्राप्ति होती है। उसके आनन्द तथा ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

(८) 'केतु' की महादशा में जातक को अनेक प्रकार की आपत्ति-विपत्ति, भय, रोग, संकट, हानि, विषाद एवं अनर्थों का सामना करना पड़ता है। उसके प्राणों पर भी संकट बना रहता है।

(९) 'शुक्र' की महादशा में जातक को मित्रों द्वारा उत्तम वस्तुओं की प्राप्ति, स्त्रियों द्वारा विलास, धन, हाथी, घोड़ा, वाहन, छत्र, राज्य, सम्पत्ति आदि की प्राप्ति होती है तथा उसके सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं।

आवश्यक टिप्पणी—ग्रहों की महादशा का उक्त फलादेश सामान्य स्थिति में समझना चाहिए। यदि जन्म-कुण्डली में राहु, केतु, शनि, मंगल आदि क्रूर अथवा अशुभ फल देने वाले ग्रह उच्च राशि में स्वक्षेत्रगत अथवा शुभ फल देने की स्थिति में बैठे हों तो उस परिस्थिति में इन अशुभ फल देने वाले ग्रहों की महादशा भी शुभ फलदायक बन जाती है। इसी प्रकार यदि जन्म-कुण्डली में चन्द्रमा, गुरु, शुक्र आदि शुभ फल देने वाले ग्रह नीच के शत्रु की राशि में अथवा अशुभ फल देने की स्थिति में बैठे हों, तो उस परिस्थिति में इन शुभ फल देने वाले ग्रहों की महादशा में भी अशुभ फल प्राप्त होता है। अन्तर केवल यही है कि जन्म-कुण्डली स्थित शुभ फलदायक क्रूर ग्रहों की महादशा में अशुभ फल कम मात्रा में मिलता है। इसी प्रकार जन्म-कुण्डली स्थित अशुभ फलदायक शुभ ग्रहों की महादशा में जातक को शुभ फल भी कम मात्रा में ही प्राप्त होता है। यही बात अन्तरदशा एवं प्रत्यन्तरदशा आदि में ग्रहों के फलादेश का निर्णय करते समय भी ध्यान में रखनी चाहिए।

ग्रहों की महादशा के सामान्य फलादेश के सम्बन्ध में ऊपर कहा जा चुका है। महादशाओं के अन्तर्गत विभिन्न ग्रहों की अन्तर्दशाओं के फलादेश को आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सूर्य की महादशा में 'सूर्य' के अन्तर का फल

सूर्य की महादशा में 'सूर्य' की ही अन्तर्दशा हो तो जातक को राजकुल से लाभ प्राप्त होता है, परन्तु भाई-बन्धुओं से विपत्ति, पित्त के प्रकोप से पीड़ा एवं सदैव खर्च का सामना भी करना पड़ता है।

सूर्य की महादशा में 'चन्द्रमा' के अन्तर का फल

सूर्य की महादशा में 'चन्द्रमा' की अन्तर्दशा हो तो जातक को सुख-प्राप्ति, धन-लाभ, विदेश-गमन तथा शत्रु से सन्धि आदि की प्राप्ति होती है।

सूर्य की महादशा में 'मंगल' के अन्तर का फल

सूर्य की महादशा में 'मंगल' की अन्तर्दशा हो तो जातक को स्वर्ण, मणि, रत्न, सवारी, धन तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

सूर्य की महादशा में 'राहु' के अन्तर का फल

सूर्य की महादशा में 'राहु' की अन्तर्दशा हो तो जातक को व्याधि, अपमान, शंका, धन-नाश, जन-हानि आदि अनेक प्रकार के कष्ट उठाने पड़ते हैं।

सूर्य की महादशा में 'गुरु' के अन्तर का फल

सूर्य की महादशा में 'गुरु' की अन्तर्दशा हो तो जातक को धन, धर्म एवं पद की प्राप्ति होती है तथा शारीरिक व्याधियाँ दूर हो जाती हैं।

सूर्य की महादशा में 'शनि' के अन्तर का फल

सूर्य की महादशा में 'शनि' की अन्तर्दशा हो तो जातक को राज्य-भंग, भाई-बन्धुओं का वियोग तथा शारीरिक-विकलता आदि कष्ट उठाने पड़ते हैं।

सूर्य की महादशा में 'बुध' के अन्तर का फल

सूर्य की महादशा में 'बुध' की अन्तर्दशा हो तो जातक को दरिद्रता, क्षुद्रकुष्ठ, खुजली, शिरोरोग आदि कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा उसके शरद्कालीन अन्न का नाश होता है।

सूर्य की महादशा में 'केतु' के अन्तर का फल

सूर्य की महादशा में 'केतु' की अन्तर्दशा हो तो जातक को देश-त्याग, धन-नाश, बन्धु-नाश आदि विपत्तियाँ घेर लेती हैं। ऐसा व्यक्ति भ्रमण अधिक करता है और लाभ के स्थान पर हानि अधिक होती है।

सूर्य की महादशा में 'शुक्र' के अन्तर का फल

सूर्य की महादशा में 'शुक्र' की अन्तर्दशा हो तो जातक शिरोरोग, अतिसार, ज्वर, शूल आदि रोगों का शिकार बनता है। उसे अन्य प्रकार के शारीरिक कष्ट भी उठाने पड़ते हैं।

चन्द्रमा की महादशा में 'चन्द्रमा' के अन्तर का फल

चन्द्रमा की महादशा में 'चन्द्रमा' की ही अन्तर्दशा हो तो जातक को वस्त्राभूषण, स्त्री-पुत्र, आदि का लाभ होता है। उसे नींद अधिक आती है तथा उसे आत्म-पक्ष में लाभ एवं कल्याण की प्राप्ति होती है।

चन्द्रमा की महादशा में 'मंगल' के अन्तर का फल

चन्द्रमा की महादशा में 'मंगल' की अन्तर्दशा हो तो जातक मन्दाग्नि एवं पित्त-जन्य व्याधियों से पीड़ित होता है। उसे अग्नि-भय, पदावनति तथा अन्य प्रकार के कष्ट भी उठाने पड़ते हैं।

चन्द्रमा की महादशा में 'राहु' के अन्तर का फल

चन्द्रमा की महादशा में 'राहु' की अन्तर्दशा हो तो जातक को शत्रु, रोग, अग्नि आदि का भय, धन का नाश, बन्धु-बान्धवों का नाश आदि दुःखों का सामना करना पड़ता है। उसके लिये सुख प्राप्त करना कठिन हो जाता है।

चन्द्रमा की महादशा में 'गुरु' के अन्तर का फल

चन्द्रमा की महादशा में 'गुरु' की अन्तर्दशा हो तो जातक को वस्त्राभूषण की प्राप्ति होती है। वह धर्माधर्म का विचार रखता है तथा सब प्रकार से सुखी रहता है।

चन्द्रमा की महादशा में 'शनि' के अन्तर का फल

चन्द्रमा की महादशा में 'शनि' की अन्तर्दशा हो तो जातक को भाई-बन्धुओं से उद्वेग, हानि, भय, शोक तथा संदेह की प्राप्ति होती है। व्यसनों के कारण उसे कष्ट उठाना पड़ता है तथा और भी अनेक प्रकार के दोष उपस्थित हो जाते हैं।

चन्द्रमा की महादशा में 'बुध' के अन्तर का फल

चन्द्रमा की महादशा में 'बुध' की अन्तर्दशा हो तो जातक को हाथी, घोड़ा, गाय, वाहन, धन आदि अनेक प्रकार की वस्तुयें प्राप्त होती हैं तथा सुख मिलता है।

चन्द्रमा की महादशा में 'केतु' के अन्तर का फल

चन्द्रमा की महादशा में 'केतु' की अन्तर्दशा हो तो जातक को मनोद्वेग, चपलता, धन-हानि, जन-हानि आदि का शिकार बनना पड़ता है।

चन्द्रमा की महादशा में 'शुक्र' के अन्तर का फल

चन्द्रमा की महादशा में 'शुक्र' की अन्तर्दशा हो तो जातक के घर में कन्या का जन्म होता है। उसे मणि-मुक्ताहार आदि की प्राप्ति होती है तथा अनेक स्त्रियों के साथ सम्पर्क रहता है।

चन्द्रमा की महादशा में 'सूर्य' के अन्तर का फल

चन्द्रमा की महादशा में 'सूर्य' की अन्तर्दशा हो तो जातक के शत्रुओं का नाश होता है, रोग नष्ट होते हैं, मनुष्यों में प्रभाव बढ़ता है तथा अनेक प्रकार के सुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

मंगल की महादशा में 'मंगल' के अन्तर का फल

मंगल की महादशा में 'मंगल' की ही अन्तर्दशा हो तो जातक का भाइयों से विरोध, शत्रुओं से संग्राम एवं पर-स्त्री का साथ होता है। उसे रक्त-पित्त की पीड़ा से भी पीड़ित रहना पड़ता है।

मंगल की महादशा में 'राहु' के अन्तर का फल

मंगल की महादशा में 'राहु' की अन्तर्दशा हो तो जातक को अग्नि, शस्त्र चोर, शत्रु तथा अनेक प्रकार की विपत्तियों से भय, धन-नाश एवं रोग के कारण शारीरिक पीड़ा का सामना करना पड़ता है।

मंगल की महादशा में 'गुरु' के अन्तर का फल

मंगल की महादशा में 'गुरु' की अन्तर्दशा हो तो जातक देवता, ब्राह्मण आद का पूजन करता है। उसे तीर्थ-यात्रा का लाभ मिलता है, परन्तु राजा के द्वारा कुछ भय भी होता है।

मंगल की महादशा में 'शनि' के अन्तर का फल

मंगल की महादशा में 'शनि' की अन्तर्दशा हो तो जातक के परिवारी जनों का नाश होता है तथा सहस्रों प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है।

मंगल की महादशा में 'बुध' के अन्तर का फल

मंगल की महादशा में 'बुध' की अन्तर्दशा हो तो जातक को शत्रु, चोर तथा अग्नि आदि से भय होता है तथा किसी अत्यन्त क्रूर मनुष्य के द्वारा कष्ट भी उठाना पड़ता है।

मंगल की महादशा में 'केतु' के अन्तर का फल

मंगल की महादशा में 'केतु' की अन्तर्दशा हो तो जातक को बादल, बिजली, अग्नि, शस्त्र, चोर आदि से भय तथा कष्ट प्राप्त होता है।

मंगल की महादशा में 'शुक्र' के अन्तर का फल

मंगल की महादशा में 'शुक्र' की अन्तर्दशा हो तो जातक को शस्त्र-भय, शारीरिक-व्याधि, उपद्रव, धन-नाश आदि संकटों का सामना करना पड़ता है तथा परदेश की यात्रा करनी पड़ती है।

मंगल की महादशा में 'सूर्य' के अन्तर का फल

मंगल की महादशा में 'सूर्य' की अन्तर्दशा हो तो जातक का प्रताप एवं प्रभाव प्रचण्ड बना रहता है। वह अनर्थकर कार्यों को करता है तथा राजा के साथ शर्त्त लगाकर विजय प्राप्त करता है।

मंगल की महादशा में 'चन्द्रमा' के अन्तर का फल

मंगल की महादशा में 'चन्द्रमा' की अन्तर्दशा हो तो जातक को मणि-माणिक्य, धन, मित्र, राजा द्वारा सम्मान तथा धन एवं विविध प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है।

राहु की महादशा में 'राहु' के अन्तर का फल

राहु की महादशा में 'राहु' की ही अन्तर्दशा हो तो जातक के भाई अथवा पिता की मृत्यु, शरीर में रोग, धन का नाश, विदेश-गमन तथा सम्मान की हानि होती है तथा अन्य प्रकार के दुःख भी भोगने पड़ते हैं।

राहु की महादशा में 'गुरु' के अन्तर का फल

राहु की महादशा में 'गुरु' की अन्तर्दशा हो तो जातक देवताओं एवं ब्राह्मणों की सेवा करने वाला, धनी तथा व्याधियों से रहित होता है।

राहु की महादशा में 'शनि' के अन्तर का फल

राहु की महादशा में 'शनि' की अन्तर्दशा हो तो जातक को रक्तपित्त की पीड़ा, हाथ-पाँव आदि शरीर के किसी अंग का टूट जाना, स्वजनों से कलह तथा मूर्खता के कारण किए हुए कर्मों को त्याग देना आदि कष्ट उठाने पड़ते हैं।

राहु की महादशा में 'बुध' के अन्तर का फल

राहु की महादशा में 'बुध' की अन्तर्दशा हो तो जातक का मित्र एवं भाइयों के साथ स्नेह बढ़ता है। बुद्धि, धन तथा भोग की वृद्धि होती है, परन्तु इसके साथ ही किसी मामले में थोड़ा सा क्लेश भी भोगना पड़ता है।

राहु की महादशा में 'केतु' के अन्तर का फल

राहु की महादशा में 'केतु' की अन्तर्दशा हो तो जातक को ज्वर, अग्नि, शस्त्र तथा शत्रुओं से पीड़ा होती है और उसके प्राण चले जाने का भय भी उपस्थित होता है।

राहु की महादशा में 'शुक्र' के अन्तर का फल

राहु की महादशा में 'शुक्र' की अन्तर्दशा हो तो जातक को मित्र के कारण सन्ताप तथा भाई-बन्धुओं से कलह एवं कष्ट को भोगना पड़ता है। उसे स्त्री, भोग तथा धन का लाभ भी होता है।

राहु की महादशा में 'सूर्य' के अन्तर का फल

राहु की महादशा में 'सूर्य' की अन्तर्दशा हो तो जातक को शस्त्र, रोग, चोर, अग्नि तथा राजा से भय होता है। उसके धन का भी नाश होता है।

राहु की महादशा में 'चन्द्रमा' के अन्तर का फल

राहु की महादशा में 'चन्द्रमा' की अन्तर्दशा हो तो जातक को कलह, धन-नाश, बंधु-विरोध तथा अन्य अनेक प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है। साथ ही स्त्री का लाभ भी होता है।

राहु की महादशा में 'मंगल' के अन्तर का फल

राहु की महादशा में 'मंगल' की अन्तर्दशा हो तो जातक को शत्रु, शस्त्र, अग्नि तथा चोरों का भय निरन्तर बना रहता है। उसे अन्य अनेक प्रकार के कष्ट भी प्राप्त होते हैं।

गुरु की महादशा में 'गुरु' के अन्तर का फल

गुरु की महादशा में 'गुरु' की ही अन्तर्दशा हो तो जातक को पुत्र की प्राप्ति तथा धन एवं धर्म की वृद्धि का लाभ होता है। उसे सब वर्ण के लोगों से धन प्राप्त होता है तथा अन्य प्रकार के लाभ होते हैं।

गुरु की महादशा में 'शनि' के अन्तर का फल

गुरु की महादशा में 'शनि' की अन्तर्दशा हो तो जातक वेश्या के साथ समागम करता है। वह मद्य-पान करता है तथा धन, धर्म, वस्त्र एवं सुख से हीन हो जाता है।

गुरु की महादशा में 'बुध' के अन्तर का फल

गुरु की महादशा में 'बुध' की अन्तर्दशा हो तो जातक शरीर से स्वस्थ रहता है। वह गुरु, देवता तथा अग्नि-पूजन आदि सत्कर्म करता है। उसे मित्रों का तथा धन आदि अनेक प्रकार के सुखों का लाभ होता है।

गुरु की महादशा में 'केतु' के अन्तर का फल

गुरु की महादशा में 'केतु' की अन्तर्दशा हो तो जातक के पुत्र तथा भाइयों को चोट लगती है। वह स्थान-भ्रष्ट, इधर-उधर भ्रमण करने वाला तथा भोग-रहित होता है।

गुरु की महादशा में 'शुक्र' के अन्तर का फल

गुरु की महादशा में 'शुक्र' की अन्तर्दशा हो तो जातक को शत्रु से भय, परिवार में कलह, स्त्रियों से पीड़ा, धन की हानि तथा मानसिक चिन्ताओं का सामना करना पड़ता है।

गुरु की महादशा में 'सूर्य' के अन्तर का फल

गुरु की महादशा में 'सूर्य' की अन्तर्दशा हो तो जातक को शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है तथा राजा से सम्मान मिलता है। उसके तेज-प्रताप तथा साहस में अत्यधिक वृद्धि होती है और वह अनेक प्रकार के सुख प्राप्त करता है।

गुरु की महादशा में 'चन्द्रमा' के अन्तर का फल

गुरु की महादशा में 'चन्द्रमा' की अन्तर्दशा हो तो जातक अनेक स्त्रियों के साथ भोग करता है। उसके शत्रु नष्ट हो जाते हैं। वह राजा के समान प्रतापी, सुख और ऐश्वर्य-शाली होता है।

गुरु की महादशा में 'मंगल' के अन्तर का फल

गुरु की महादशा में 'मंगल' की अन्तर्दशा हो तो जातक अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है और उसे धन, कीर्ति, स्वास्थ्य, यश एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

गुरु की महादशा में 'राहु' के अन्तर का फल

गुरु की महादशा में 'राहु' की अन्तर्दशा हो तो जातक को भाई-बन्धुओं से घबराहट, रोग-मृत्यु एवं कलह की प्राप्ति होती है। उसके अपने स्थान का भी नाश होता है।

शनि की महादशा में 'शनि' के अन्तर का फल

शनि की महादशा में 'शनि' की ही अन्तर्दशा हो तो जातक के शरीर में पीड़ा होती है। पुत्र से कलह, स्त्री के कारण बुद्धि का नाश, विदेश-गमन तथा अन्य अनेक प्रकार के कष्ट उठाने पड़ते हैं।

शनि की महादशा में 'बुध' के अन्तर का फल

शनि की महादशा में 'बुध' की अन्तर्दशा हो तो जातक को विजय, सफलता, यश, सम्मान, सुख, सौभाग्य तथा मित्रों का लाभ होता है। उसे स्थान, भूमि तथा धन की प्राप्ति भी होती है।

शनि की महादशा में 'केतु' के अन्तर का फल

शनि की महादशा में 'केतु' की अन्तर्दशा हो तो जातक को रक्तपित्त-सम्बन्धी पीड़ा, धन-हानि, बन्धन, दुःस्वप्न, चिन्ता आदि अनेक प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है।

शनि की महादशा में 'शुक्र' के अन्तर का फल

शनि की महादशा में 'शुक्र' की अन्तर्दशा हो तो जातक को अपने भाई-बन्धु तथा मित्रों से स्नेह, पत्नी से प्रेम, वात्सल्य सुख, सौभाग्य, धन, विजय आदि सभी प्रकार के ऐश्वर्यों की प्राप्ति होती है।

शनि की महादशा में 'सूर्य' के अन्तर का फल

शनि की महादशा में 'सूर्य' की अन्तर्दशा हो तो जातक के स्त्री, पुत्र तथा धन का नाश होता है एवं प्राण बचने का भी सन्देह बना रहता है। जातक को अनेक प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक कष्टों का सामना करना पड़ता है।

शनि की महादशा में 'चन्द्रमा' के अन्तर का फल

शनि की महादशा में 'चन्द्रमा' की अन्तर्दशा हो तो जातक को मृत्यु-तुल्य कष्ट, स्त्री-वियोग तथा भाइयों से विरोध आदि दुःख प्राप्त होते हैं। साथ ही उसे क्रोध, वातरोग, उद्वेग, चिन्ता आदि का शिकार भी बनना पड़ता है।

शनि की महादशा में 'मंगल' के अन्तर का फल

शनि की महादशा में 'मंगल' की अन्तर्दशा हो तो जातक अपने देश को त्याग देता है। उसे अनेक प्रकार के रोग एवं दुःखों का सामना करना होता है तथा मृत्यु-तुल्य कष्ट भी उठाना पड़ता है।

शनि की महादशा में 'राहु' के अन्तर का फल

शनि की महादशा में 'राहु' की अन्तर्दशा हो तो जातक के शरीर में वातपीड़ा, ज्वर, अतिसार आदि विकार उत्पन्न होते हैं। वह शत्रुओं से पराजित होता है। उसके धन का नाश होता है तथा अन्य प्रकारों से भी पतन के गड्ढे में गिरता है।

शनि की महादशा में 'गुरु' के अन्तर का फल

शनि की महादशा में 'गुरु' की अन्तर्दशा हो तो जातक ब्राह्मणों तथा देवताओं की पूजा करने वाला, स्थान, मूल्य, गुण एवं अनेक प्रकार के सुख प्राप्त करने वाला, धनी तथा यशस्वी होता है।

बुध की महादशा में 'बुध' के अन्तर का फल

बुध की महादशा में 'बुध' की ही अन्तर्दशा हो तो जातक की बुद्धि तथा धर्म की वृद्धि होती है। मित्रों तथा बन्धुजनों से स्नेह प्राप्त होता है। ज्ञान एवं धर्म का लाभ होता है, परन्तु शरीर में कुछ पीड़ा बनी रहती है।

बुध की महादशा में 'केतु' के अन्तर का फल

बुध की महादशा में 'केतु' की अन्तर्दशा हो तो जातक को अनेक प्रकार के दुःख, शोक, क्लेश एवं शारीरिक कष्टों का सामना करना पड़ता है।

बुध की महादशा में 'शुक्र' के अन्तर का फल

बुध की महादशा में 'शुक्र' की अन्तर्दशा हो तो जातक को श्रेष्ठ वस्त्र, आभूषण एवं धन आदि की प्राप्ति होती है तथा धर्म-कर्म में रुचि बढ़ती है।

बुध की महादशा में 'सूर्य' के अन्तर का फल

बुध की महादशा में 'सूर्य' की अन्तर्दशा हो तो जातक को उत्तम वस्त्र, स्वर्ण, धन, आभूषण, यश आदि की प्राप्ति होती है, परन्तु अपनी स्त्री के कारण उसके मन में उद्वेग की वृद्धि होती है।

बुध की महादशा में 'चन्द्रमा' के अन्तर का फल

बुध की महादशा में 'चन्द्रमा' की अन्तर्दशा हो तो जातक को कुष्ठ, गण्डमाला, क्षय, भगन्दर आदि रोगों का शिकार बनना पड़ता है। हाथी आदि से गिरने का भय बना रहता है तथा अन्य प्रकार के कष्ट भी होते हैं।

बुध की महादशा में 'मंगल' के अन्तर का फल

बुध की महादशा में 'मंगल' की अन्तर्दशा हो तो जातक के मस्तक तथा कण्ठ में रोग होता है। उसे चोरों से भय तथा अनेक प्रकार के क्लेशों का सामना करना पड़ता है।

बुध की महादशा में 'राहु' के अन्तर का फल

बुध की महादशा में 'राहु' की अन्तर्दशा हो तो जातक को शत्रु से पीड़ा तथा अग्नि से भय प्राप्त होता है। साथ ही आकस्मिक रूप से धन का नाश भी होता है।

बुध की महादशा में 'गुरु' के अन्तर का फल

बुध की महादशा में 'गुरु' की अन्तर्दशा हो तो जातक को व्याधि एवं शत्रुओं के भय से छुटकारा मिल जाता है। उसे राजा द्वारा सम्मान प्राप्त होता है। धर्म में प्रवृत्ति होती है। आध्यात्म की वृद्धि होती है तथा स्नेह, पवित्रता आदि सभी सद्गुणों की प्राप्ति होती है।

बुध की महादशा में 'शनि' के अन्तर का फल

बुध की महादशा में 'शनि' की अन्तर्दशा हो तो जातक धन तथा धर्म का उपभोग करता है। उसे मित्रों द्वारा भी धन का लाभ होता है। वह बड़ा गम्भीर, धन का उपभोग करने वाला, किसी भी काम को करने में उत्साह न रखने वाला तथा नपुंसक होता है।

केतु की महादशा में 'केतु' के अन्तर का फल

केतु की महादशा में 'केतु' की ही अन्तर्दशा हो तो जातक को पुत्र-पुत्री की मृत्यु, धन का नाश, अग्नि का भय, दुष्ट स्त्रियों से कलह, रोग आदि अनेक प्रकार के संकटों का सामना करना पड़ता है।

केतु की महादशा में 'शुक्र' के अन्तर का फल

केतु की महादशा में 'शुक्र' की अन्तर्दशा हो तो जातक को अग्नि से दाह, तीव्र ज्वर, स्त्री से कलह, स्त्री-त्याग आदि के दुःख भोगने पड़ते हैं और उसके मन में [illegible] का भाव होता है।

केतु की महादशा में 'सूर्य' के अन्तर का फल

केतु की महादशा में 'सूर्य' की अन्तर्दशा हो तो जातक को राजा द्वारा पीड़ा, शत्रुओं से विरोध, अग्नि-दाह, तीव्र ज्वर, विदेश-गमन आदि कष्टों का सामना करना पड़ता है।

केतु की महादशा में 'चन्द्रमा' के अन्तर का फल

केतु की महादशा में 'चन्द्रमा' की अन्तर्दशा हो तो जातक को धन की लाभ-हानि, सुख-दुःख की प्राप्ति, स्त्री का लाभ, यश का नाश आदि दोनों ही प्रकार के शुभ एवं अशुभ फल प्राप्त होते हैं।

केतु की महादशा में 'मंगल' के अन्तर का फल

केतु की महादशा में 'मंगल' की अन्तर्दशा हो तो जातक का अपने गाँव के लोगों से झगड़ा होता है। उसे चोरों के भय तथा शारीरिक पीड़ा का सामना भी करना पड़ता है।

केतु की महादशा में 'राहु' के अन्तर का फल

केतु की महादशा में 'राहु' की अन्तर्दशा हो तो जातक को चोरों का भय, शत्रुओं से विरोध तथा अन्य प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है। उसके अंग-भंग हो जाने की सम्भावना भी रहती है।

केतु की महादशा में 'गुरु' के अन्तर का फल

केतु की महादशा में 'गुरु' की अन्तर्दशा हो तो जातक का दुर्जनों अथवा राजमान्य लोगों से सम्पर्क होता है। उसके घर में पुत्र का जन्म होता है तथा भूमि, धन आदि का लाभ भी होता है।

केतु की महादशा में 'शनि' के अन्तर का फल

केतु की महादशा में 'शनि' की अन्तर्दशा हो तो जातक को स्वजनों से कलह तथा वात-पित्त की पीड़ा का शिकार होना पड़ता है तथा परदेश-गमन भी करना होता है।

केतु की महादशा में 'बुध' के अन्तर का फल

केतु की महादशा में 'बुध' की अन्तर्दशा हो तो जातक को भाई-बन्धुओं का स्नेह-संयोग, बुद्धि-लाभ, धन-प्राप्ति आदि अनेक प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं और किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं उठाना पड़ता है।

शुक्र की महादशा में 'शुक्र' के अन्तर का फल

शुक्र की महादशा में 'शुक्र' की ही अन्तर्दशा हो तो जातक को निधि, स्त्री-समागम, धर्म, अर्थ, यश, काम तथा अनेक प्रकार के लाभ होते हैं।

शुक्र की महादशा में 'सूर्य' के अन्तर का फल

शुक्र की महादशा में 'सूर्य' की अन्तर्दशा हो तो जातक को उदर रोग, क्षय तथा गण्ड-रोग आदि का शिकार बनना पड़ता है। उसे राजा, वंध्या-स्त्री तथा कपटी-मनुष्यों द्वारा भी दुःख भोगना पड़ता है।

शुक्र की महादशा में 'चन्द्रमा' के अन्तर का फल

शुक्र की महादशा में 'चन्द्रमा' की अन्तर्दशा हो तो जातक को पाण्डुरोग, शिरोरोग, नखरोग तथा अस्थि-सम्बन्धी रोगों का शिकार होना पड़ता है तथा स्वास्थ्य की हानि होती है।

शुक्र की महादशा में 'मंगल' के अन्तर का फल

शुक्र की महादशा में 'मंगल' की अन्तर्दशा हो तो जातक को क्षयरोग तथा पितजन्य रोग होते हैं। उसे धन, सन्तान एवं भूमि का लाभ होता है।

शुक्र की महादशा में 'राहु' के अन्तर का फल

शुक्र की महादशा में 'राहु' की अन्तर्दशा हो तो जातक को चाण्डाल मनुष्यों से क्लेश, भाई-बन्धओं से उद्वेग तथा आकस्मिक रूप से भय की प्राप्ति होती है। उसके सुहृद्-जनों के वध की संभावना भी रहती है।

शुक्र की महादशा में 'गुरु' के अन्तर का फल

शुक्र की महादशा में 'गुरु' की अन्तर्दशा हो तो जातक को धन, धान्य, रत्न, भूमि, पुत्र, स्त्री, ऐश्वर्य एवं प्रभुत्व का लाभ होता है और वह सब प्रकार से सुखी रहता है।

शुक्र की महादशा में 'शनि' के अन्तर का फल

शुक्र की महादशा में 'शनि' की अन्तर्दशा हो तो जातक वृद्धा-स्त्रियों के साथ मैथुन करता है। उसके पुत्रों एवं शत्रुओं का नाश होता है तथा अनेक प्रकार की विपत्तियाँ उठ खड़ी होती हैं। अन्त में जाकर उसे सुख भी प्राप्त होता है।

शुक्र की महादशा में 'बुध' के अन्तर का फल

शुक्र की महादशा में 'बुध' की अन्तर्दशा हो तो जातक को धनागम, राजा द्वारा स्नेह, सम्मान, शौर्य, तेजस्विता, लक्ष्मी, सुख-सम्पत्ति आदि की प्राप्ति होती है तथा उसके सभी मनोरथ पूरे होते हैं।

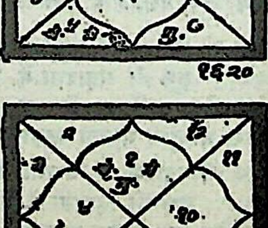
शुक्र की महादशा में 'केतु' के अन्तर का फल

शुक्र की महादशा में 'केतु' की अन्तर्दशा हो तो जातक भाइयों से कलह एवं शत्रुओं का नाश करता है। कभी-कभी उसे शत्रुओं द्वारा पीड़ित भी होना पड़ता है। इस प्रकार उसे सुख-दुःख, हानि-लाभ, जय एवं पराजय, दोनों की ही प्राप्ति होती रहती है।

विशिष्ट योग

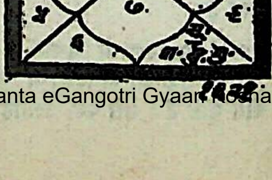
जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में विभिन्न ग्रहों की विशिष्ट-स्थिति के कारण कुछ विशेष प्रकार के योग बनते हैं, जो जातक के जीवन पर अपना विशिष्ट प्रभाव डालते हैं। इस अध्याय में उन्हीं विशिष्ट योगों का वर्णन किया जा रहा है।

सिंहासन योग—यदि जन्म-कुण्डली के छठे, आठवें दूसरे, तीसरे तथा बारहवें घर में सभी ग्रह विद्यमान हों (चित्र-संख्या १६२०) तो ऐसी ग्रह-स्थिति वाला जातक राजसिंहासन पर बैठता है। इसे 'सिंहासन-योग' कहा जाता है।



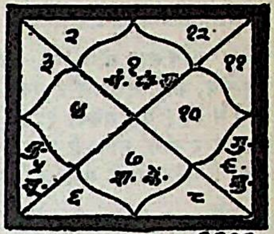
१६२०

ध्वज योग—यदि जन्म-कुण्डली के अष्टमभाव में पापग्रह हों तथा अन्य शुभग्रह लग्न में हों (चित्र-संख्या १६२१) तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला जातक समाज का नेता होता है। इसे 'ध्वज-योग' कहा जाता है।



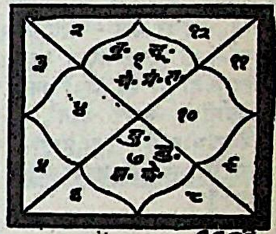
१६२१

हंस योग (१)—यदि जन्म-कुण्डली के पाँचवें, नवें, सातवें तथा लग्न में सभी ग्रह हों (चित्र-संख्या, १६२२), तो ऐसा जातक अपने कुल को पालने वाला होता है। इसे 'हंस-योग' कहा जाता है।



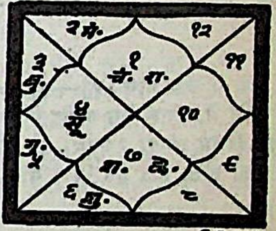
१६२२

कारिका योग—यदि सूर्य आदि सातों ग्रह जन्म-कुण्डली के दसवें तथा ग्यारहवें भाव में हों अथवा लग्न और सप्तम भाव में हों तो (चित्र-संख्या १६२३) ऐसा जातक यदि नीच कुल में जन्मा हो तो भी राजा होता है। इसे 'कारिका योग' कहा जाता है।



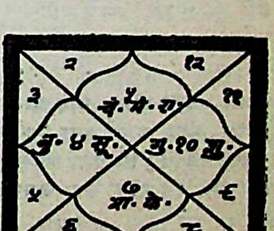
१६२३

एकावली योग—यदि जन्म-कुण्डली में लग्न से अथवा किसी स्थान से प्रारम्भ करके क्रम से सात भावों में सातों ग्रह हों (चित्र संख्या १६२४), तो ऐसा जातक महाराजा होता है। इसे 'एकावली योग' कहा जाता है।



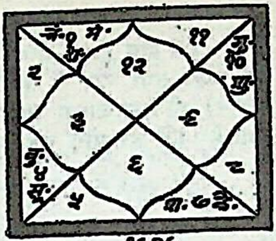
१६२४

चतुःसार योग (१)—यदि जन्म-कुण्डली में सभी ग्रह चारों केन्द्रों में हों (चित्र संख्या १६२५) तो ऐसा जातक महाधनी राजा होता है। इसे 'चतुःसार योग' कहा जाता है।



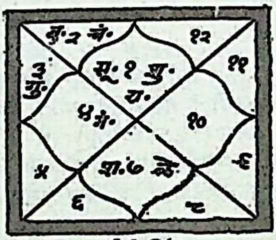
१६२५

चतु:सार योग (२)—यदि जन्म-कुण्डली में सभी ग्रह मेष, कर्क, तुला और मकर—इन चारों राशियों वाले घरों में हों (चित्र संख्या १६२६) तो द्वितीय प्रकार का 'चतु:सार योग' होता है। ऐसा जातक महाधनी राजा होता है और उसके सभी अनिष्ट नष्ट हो जाते हैं।



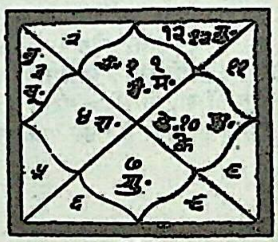
१६२६

अमर योग—यदि जन्म-कुण्डली में सभी पापग्रह केन्द्र में हों (चित्र संख्या १६२७) अथवा सभी शुभ ग्रह केन्द्र में हों तो इन दोनों प्रकार से 'अमर योग' होता है। पापग्रहों के 'अमर योग' में जन्म लेने वाला व्यक्ति क्रूर-स्वभाव का राजा होता है तथा शुभ ग्रहों के 'अमर योग' में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य-स्वभाव वाला राजा होता है।



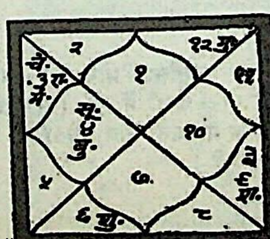
१६२७

चाप योग (१)—यदि जन्म-कुण्डली में शुक्र तुला राशि में, मंगल मेष राशि में तथा गुरु अपनी राशि में हों (चित्र संख्या १६२८), तो ऐसे योग में उत्पन्न जातक राजा होता है। इसे 'चाप योग' कहा जाता है।

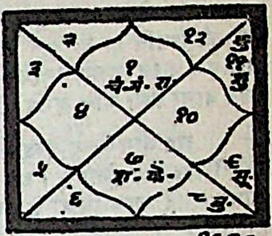


१६२८

दण्ड योग—यदि जन्म-कुण्डली में सभी ग्रह कर्क, मिथुन मीन, कन्या तथा धनु राशि में स्थित हों (चित्र संख्या १६२९) तो ऐसा व्यक्ति राज्य-सिंहासन पर बैठता है। इसे 'दंड योग' कहा जाता है।

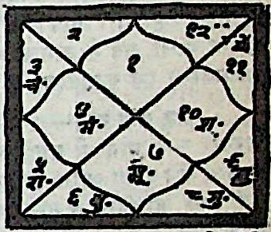


१६२९



१६३०

हंस योग (२)—यदि जन्म-कुण्डली में सभी ग्रह मेष, कुम्भ, धनु, तुला, मकर तथा वृश्चिक राशि में हों (चित्र संख्या १६३०) तो ऐसा जातक राजा अथवा राजा द्वारा पूजित, सब प्रकार के सुखों एवं ऐश्वर्यों का स्वामी होता है। यह भी द्वितीय प्रकार का 'हंस योग' कहा जाता है।



१६३१

वापी योग—यदि जन्म-कुण्डली में पहले, दूसरे और बारहवें भावों को छोड़कर अन्य स्थानों में सभी ग्रहों की स्थिति हो (चित्र संख्या १६३१), तो ऐसा जातक अपने कुल में प्रधान, दीर्घायु, गुणी, प्रियवादी, अत्यन्त प्रतापी, धैर्यवान्, धनी तथा सुखी होता है। इसे 'वापी योग' कहा जाता है। ऐसा जातक वापी-तड़ाग आदि का निर्माण भी करता है।

अमर योग (२)—मेष अथवा सिंह लग्न हो, सूर्य केन्द्र अथवा त्रिकोण में हो अथवा चन्द्रमा वृष या कर्क का होकर बारहवें या आठवें भाव में बैठा हो और इन पर गुरु तथा शुक्र की दृष्टि पड़ रही हो, तो यह दूसरा 'अमर योग' होता है। इस योग के प्रभाव से समस्त अरिष्ट दूर होते हैं तथा जातक दीर्घायु प्राप्त करता है।

यूप योग—सूर्य आदि सातों ग्रह यदि लग्न, दूसरे, तीसरे तथा चौथे भाव में ही स्थित हों तो उसे 'यूप योग' समझना चाहिए। 'यूप योग' में जन्म लेने वाला व्यक्ति धैर्यवान् उदार, यज्ञ करने वाला, विद्वान्, धनवान् तथा मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है।

शर योग—सूर्य आदि सातों ग्रह यदि चौथे, पाँचवें, छठे एवं सातवें भाव में ही स्थित हों तो उसे 'शर योग' समझना चाहिए। 'शर योग' में जन्म लेने वाला व्यक्ति बाण-विद्या में निपुण, वन-विहार में आनन्द प्राप्त करने वाला, सुन्दर-स्त्री पाकर भी सुखी न रहने वाला, दुःख से तप्त तथा महाहिंसक होता है।

शक्ति योग—सूर्य आदि सातों ग्रह यदि सातवें, आठवें, नवें और दसवें भाव में ही स्थित हों तो उसे 'शक्ति योग' समझना चाहिए। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति युद्ध-विद्या में कुशल, आलसी, सुखहीन, वाद-विवाद, करने वाला, छोटे-बड़े सब लोगों से प्रेम रखने वाला तथा घर का अल्प सुख भोगने वाला होता है।

दण्ड योग (२)—सूर्य आदि सातों ग्रह यदि दसवें, ग्यारहवें, बारहवें तथा पहले—इन चार भावों में ही स्थित हों तो उसे दूसरे प्रकार का 'दण्ड योग' समझना चाहिए। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति दीन, दरिद्र, नीच, उन्मत्त, लोगों से सुख प्राप्त करने वाला, उद्वेगी, स्त्री, पुत्र, मित्र, धन, विद्या, बुद्धि आदि से रहित तथा अपने कुल के लोगों से शत्रुता रखने, वाला होता है।

नौका योग—लग्न से आरम्भ करके लगातार सात भावों में सातों ग्रह हों तो 'नौका योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति लोक-प्रसिद्ध, जल से उत्पन्न धन-धान्य से युक्त, परन्तु सुख-भोग-हीन, लोभी और चंचल स्वभाव का होता है।

कूट योग—जन्म-कुण्डली में चौथे घर से आरम्भ करके अगले सात घरों में सातों ग्रहों की स्थिति हो तो 'कूट योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति धनहीन, नीच कर्म करने वाला, धर्माधर्म का विचार न करने वाला, दुष्ट, वन में वसने की इच्छा रखने वाला तथा भील आदि नीच जनों से प्रेम करने वाला होता है।

छत्र योग—जन्म-कुण्डली में सप्तम घर से आरम्भ करके अगले सातों ग्रहों की स्थिति हो तो छत्र योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति दयालु, पण्डित, धनी, छत्र-चामर आदि राज्य-चिह्नों से युक्त, राजकर्मचारी तथा बाल्यावस्था एवं वृद्धावस्था में सुखी होता है।

चाप योग (२)—जन्म-कुण्डली में दशम भाव से आरम्भ करके सात भावों में सातों ग्रह स्थित हों तो 'चाप योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यन्त दुष्ट स्वभाव वाला, गर्व से उन्मत्त, धनुष-विद्या में निपुण, वन-पर्वतों में भ्रमण करने वाला तथा बाल्यावस्था एवं वृद्धावस्था में सुखी होता है।

अर्द्धचन्द्र योग—जन्म-कुण्डली में केन्द्र से भिन्न किसी भी स्थान से आरम्भ करके निरन्तर सात भावों में सातों ग्रहों की स्थिति हो, तो 'अर्द्धचन्द्र' योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति सेनापति, जननायक, राजा द्वारा उच्च सम्मान प्राप्त करने वाला, धन, वस्त्र, आभूषणों से युक्त तथा चन्द्रमा के समान अन्य लोगों के नेत्रों को आनन्द देने वाला होता है।

चक्र योग—लग्न से आरम्भ करके एक-एक घर को छोड़कर अर्थात् १, ३, ५, ७, ९, ११ भाव में लगातार सातों ग्रहों की स्थिति हो तो उसे 'चक्र योग' कहा जाता है। इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य रूपवान्, श्रीमान्, अत्यन्त प्रतापी, राजाओं से मान्य तथा ऐश्वर्यशाली होता है। और उसकी कीर्ति सम्पूर्ण पृथ्वी पर फैलती है।

समुद्र योग—जन्म-कुण्डली में द्वितीयभाव से आरम्भ करके एक-एक घर को छोड़ कर अर्थात् २, ४, ६, ८, १० भावों में लगातार सातों ग्रहों की स्थिति हो तो 'समुद्र योग' कहा जाता है। इस योग में उत्पन्न जातक दयावान्, कीर्तिवान्, धैर्यवान्, दानी, यशस्वी तथा ऐश्वर्यवान् होता है। वह राजा के समान कीर्तिवान् होता है और अपने कुल को धन्य करता है।

गोल योग—यदि जन्म-कुण्डली के एक ही घर में सातों ग्रहों की स्थिति हो तो 'गोल योग' होता है। इस योग में उत्पन्न जातक विद्या, बल, बुद्धि, सामर्थ्य, उदारता आदि से हीन, मिथ्यावादी, अनीति में प्रेम रखने वाला तथा दरिद्र होता है।

युग योग—यदि जन्म-कुण्डली के दोनों घरों में सातों ग्रहों की स्थिति हो तो 'युग योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक निर्लज्ज, धन, पुत्र, धर्म-कर्म आदि से हीन तथा उचित-अनुचित का विचार न करने वाला होता है।

शूल योग—यदि जन्म-कुण्डली के तीन घरों में सातों ग्रहों की स्थिति हो तो 'शूल योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक निन्दित कर्म करने वाला, खल, निष्ठुर, निर्धन, विवाद में तत्पर, झगड़ालू स्वभाव का तथा अन्य लोगों के मन में काँटे की भाँति चुभने वाला होता है।

केदार योग—यदि जन्म-कुण्डली के चार घरों में सातों ग्रहों की स्थिति हो तो 'केदार योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक सत्यवादी, धनी, विजयी, कृतज्ञ, धीर, सदाचारी, कृषि-कर्म करने में चतुर तथा उपकार को मानने वाला होता है।

पाश योग—यदि जन्म-कुण्डली के पाँचों घरों में सातों ग्रहों की स्थिति हो तो 'पाश योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक दीन आकृति वाला, अपकारी, बन्धन से दुःखी, दम्भी, व्यर्थ बोलने वाला, अनेक प्रकार के अनर्थों से युक्त तथा वन से प्रेम रखने वाला होता है।

दामिनी योग—यदि जन्म-कुण्डली के छै घरों में सातों ग्रहों की स्थिति हो तो 'दामिनी योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति धीर, विद्वान्, उदार, यशस्वी, सन्ततिवान्, सदा सुखी, शीलवान् तथा क्रोधी होता है।

वीणा योग—यदि जन्म-कुण्डली के सात घरों में सातों ग्रहों की स्थिति हो तो 'वीणा योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक धनी, शास्त्रज्ञ, सब कर्मों में कुशल, अनेक लोगों का पालन-पोषण करने वाला तथा सब प्रकार के सुखों का उपभोग करने वाला होता है।

दारिद्र्य योग—यदि जन्म-कुण्डली के वामभाग में (१२ वें से ८ वें भाग तक), सूर्य से शनि पर्यन्त सातों ग्रहों की स्थिति हो तो 'दारिद्र्य योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य दरिद्री होता है।

शकट योग—यदि सूर्यादि सातों ग्रह लग्न तथा सप्तम दो ही स्थानों में हों तो 'शकट योग' होता है। इस याग में जन्म लेने वाला मनुष्य गाड़ी चलाकर अपनी आजीविका का उपार्जन करता है।

नन्दा योग—यदि सूर्य आदि नवग्रह जन्म-कुण्डली में तीन स्थानों में दो-दो की संख्या में तथा तीन स्थानों में एक-एक की संख्या में हों तो 'नन्दा योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुखी तथा दीर्घायु होता है।

सर्वार्थदातृ योग—यदि गुरु लग्न में, शुक्र चतुर्थ में, बुध सप्तम में और मंगल दशम-भाव में हो तो वह 'सर्वार्थदातृ योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाले व्यक्ति की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

राजहंस योग—यदि सभी ग्रह कुम्भ, मेष, मिथुन, सिंह, तुला और धनु राशि में हों तो वह 'राजहंस योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति राज्य तथा सुख को प्राप्त करता है।

महापातक योग—यदि चन्द्रमा राहु से युक्त हो और उस पर पापग्रह के साथ बैठे हुए गुरु की दृष्टि पड़ रही हो तो वह 'महापातक योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति चाहे इन्द्र के कुल में ही क्यों न उत्पन्न हुआ हो, तो भी वह महापापी होता है।

बलीवर्दहन्तृ योग—यदि जन्म-लग्न पर मंगल, सूर्य, गुरु अथवा शुक्र की दृष्टि न पड़ती हो तो वह 'बलीवर्दहन्तृ योग' होता है। ऐसे जातक की मृत्यु बैल के द्वारा होता है।

हठहन्तृ योग—यदि लग्न से ग्यारहवें स्थान में चन्द्रमा हो और सूर्य कर्क राशि में हो तो जातक की मृत्यु किसी काम में हठ करने के कारण होती है। यदि चन्द्रमा पर किसी पाप ग्रह की दृष्टि भी पड़ रही हो तो किसी विशेष हठ के कारण मृत्यु होती है।

वृक्षहन्तृ योग—यदि लग्न पर राहु की दृष्टि हो तो 'मदन' नामक योग होता है। इसी को 'वृक्षहन्तृ योग' भी कहते हैं। ऐसे जातक की मृत्यु वृक्ष से गिर कर होती है।

नासाच्छेद योग—लग्न से षष्ठभाग में शुक्र हो और लग्न में मंगल हो तो 'नासाच्छेद योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक की नाक पर किसी शस्त्र का आघात लगता है।

कर्णच्छेद योग—यदि चन्द्रमा पर शनि की दृष्टि हो और लग्न में सूर्य तथा शुक्र दोनों ही हों तो 'कर्णच्छेद योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक के कान में किसी शस्त्र का आघात लगता है।

पादखञ्ज योग—यदि शनि अथवा बृहस्पति के साथ शुक्र बैठा हो और उस पर किसी शुभग्रह की दृष्टि न पड़ती हो तो 'पादखञ्ज योग' होता। इस योग में जन्म लेने वाला जातक लंगड़ा होता है।

सर्पभय योग—यदि लग्न से सप्तमभाव में राहु के साथ शनि और सूर्य बैठे हों तो 'सर्पभय योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक को निद्रित अवस्था में अन्य प्रकार से सर्प द्वारा डँसे जाने का भय होता है।

व्याघ्रहन्तृ योग—गुरु के स्थान में बुध अथवा शनि के स्थान में मंगल की स्थिति हो तो 'व्याघ्रहन्तृ योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक को अपनी आयु के पच्चीसवें वर्ष में बाघ का भय उपस्थित होता है।

असिघात योग—शुक्र के स्थान में चन्द्रमा और चन्द्रमा के स्थान में शनि की स्थिति हो तो 'असिघात योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक को आयु अपनी के अट्ठाईसवें वर्ष में तलवार से चोट लगने की सम्भावना रहती है।

शरहन्तृ योग—यदि नवमभाव में मंगल हो और शनि, सूर्य तथा राहु तीनों एक साथ बैठे हों और उन पर किसी शुभ-ग्रह की दृष्टि न पड़ रही हो तो 'शरहन्तृ योग' होता है। ऐसे जातक की मृत्यु बाण लगने के कारण होने की सम्भावना रहती है।

ब्रह्महन्तृ योग—यदि सूर्य और मंगल एक साथ बैठे हों और बृहस्पति के साथ शनि बैठा हो तथा उस पर किसी शुभग्रह की दृष्टि न हो तो 'ब्रह्मन्तृ योग' होता है। ऐसे जातक द्वारा अपनी आयु के अट्ठाईसवें वर्ष में ब्रह्महत्या होने की संभावना रहती है।

सफल दोला योग—यदि जन्म-कुण्डली में स्त्री-ग्रह मीन, मेष तथा धनु—इन तीन राशियों में हों तो 'दोला योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक राज्य प्राप्त करता है।

राजमन्त्रित्व योग—यदि पापग्रह से रहित बृहस्पति केन्द्र में हो तो वह 'राजमन्त्रित्व योग' होता है। ऐसे योग में जन्म लेने वाला जातक दानी, मानी, गुणी, कलाकार, संगीतज्ञ, नृत्य कुशल, धनी, सुखी, नीतिज्ञ तथा राजा का मन्त्री होता है।

पद विच्छेद योग—यदि लग्न में मंगल हो और उस पर राहु, शनि तथा सूर्य तीनों ही दृष्टि पड़ रही हो तो वह 'पद विच्छेद योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक का पद (स्थान) विच्छेद होता है।

स्वेच्छामृत्यु योग—यदि जन्म-कुण्डली में किसी केन्द्र में मंगल हो और सप्तम स्थान में राहु हो तो 'स्वेच्छामृत्यु योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक की मृत्यु अपनी इच्छानुसार होती है।

बालारिष्ट योग—यदि लग्न से सप्तम स्थान में चन्द्रमा, अष्टम स्थान में पापग्रह, लग्न में शुभ ग्रह तथा सूर्य हो तो 'बालारिष्ट योग होता है। ऐसे जातक की मृत्यु जन्म से एक वर्ष के भीतर होती है।

अनफा योग—यदि जन्म-कुण्डली में चन्द्रमा से बारहवें स्थान पर सूर्य को छोड़कर, कोई अन्य ग्रह स्थित हो तो 'अनफा योग' होता है। अनफा योग का प्रभाव इस प्रकार

समझना चाहिए—यदि चन्द्रमा से बारहवें स्थान में मंगल हो तो जातक चोरों का सरदार, मानी, अभिमानी, स्वतन्त्र, क्रोधी, झगड़ालू, युद्धकुशल, स्वस्थ तथा सुन्दर शरीर वाला, ढीठ एवं संपत्ति को बढ़ाने वाला होता।

यदि चन्द्रमा से बारहवें स्थान पर बुध हो तो जातक संगीतज्ञ, लेखनकार्य में चतुर, कवि, प्रवचनकर्त्ता, कान्तिमान, सुन्दर, राजा द्वारा सम्मानित, यशस्वी एवं प्रसिद्ध कर्म करने वाला होता है।

यदि चन्द्रमा से बारहवें स्थान पर गुरु हो तो जाताक मेधावी, बुद्धिमान, श्रेष्ठ कवि एवं राजा द्वारा सम्मान प्राप्त करने वाला यशस्वी व्यक्ति होता है।

यदि चन्द्रमा से बारहवें स्थान पर शुक्र हो तो जातक युवतियों का अत्यन्त प्रिय, बुद्धिमान, सुन्दर, धनी, स्वर्ण से सम्पन्न, राजा का प्रेमी तथा चतुर व्यक्ति होता है।

यदि चन्द्रमा से बारहवें स्थान पर शनि हो तो जातक सुन्दर स्वरूपवान, पशु-धन से धनी, अपने वचन का पालन करने वाला, लम्बी भुजाओं वाला, गुणी, पुत्रवान तथा कुशीला स्त्रियों के साथ सहवास करने वाला होता।

सुनफा योग—यदि जन्म-कुण्डली में चन्द्रमा से दूसरे स्थान पर, सूर्य को छोड़कर, कोई अन्य ग्रह स्थित हो तो 'सुनफा योग' होता है। सुनफा योग का प्रभाव इस प्रकार समझना चाहिए—

यदि चन्द्रमा से दूसरे स्थान में मंगल हो तो जातक अपने पराक्रम द्वारा धनोपार्जन करने वाला, कठोर वचन बोलने वाला, हिंसक, बहुत से लोगों का विरोधी, राजा अथवा प्रतापी पुरुष होता है।

यदि चन्द्रमा से दूसरे स्थान पर बुध हो तो जातक धर्मात्मा, कवि, संगीतज्ञ, शास्त्रज्ञ, मानस्वी, सबका हित चाहने वाला तथा सुन्दर शरीर वाला होता है।

यदि चन्द्रमा से दूसरे स्थान पर गुरु हो तो जातक अनेक प्रकार की विद्याओं का आचार्य, राजा अथवा राजा का प्रिय एवं जन-धन सम्पन्न होता है।

यदि चन्द्रमा से दूसरे स्थान पर शुक्र हो तो जातक स्त्री, खेत, भूमि एवं भवन का का स्वामी, पशुओं से धनी, पराक्रमी, तेजस्वी सब कार्यों में समर्थ तथा राजा द्वारा सम्मानित होता।

यदि चन्द्रमा से दूसरे स्थान पर शनि हो तो जातक विवेकी, अत्यन्त धनी, यशस्वी, कार्य को गुप्त रखने वाला, नगर एवं ग्राम वासियों से पूजित, परन्तु मलिन हृदय वाला होता है।

दुरुधरा योग—यदि जन्म-कुण्डली में चन्द्रमा से बारहवें तथा दूसरे दोनों ही स्थानों में सूर्य को छोड़कर कोई अन्य ग्रह हो तो 'दुरुधरा योग' होता है। दुरुधरा योग का प्रभाव इस प्रकार समझना चाहिए—

यदि मंगल और बुध की स्थिति से दुरुधरा योग बनता हो तो जातक मिथ्या-वादी, महाशठ, लोभी, कुल में श्रेष्ठ, कार्य-कुशल, अत्यन्त गुणी तथा अत्यधिक धनवान् होता है।

यदि मंगल और गुरु की स्थिति से दुरुधरा योग बनता हो तो जातक कपटी, ढीठ, धन-संचयी, बहुतों से शत्रुता रखने वाला, अपने लोगों की रक्षा करने वाला, परन्तु सत्कर्म करने में प्रसिद्ध व्यक्ति होता है।

यदि मंगल और शुक्र की स्थिति से दुरुधरा योग बनता हो तो जातक सुन्दर स्वरूप वाला, शूर-वीर, व्यायामी, युद्ध में उत्साही, अस्त्र-शस्त्र विद्या का जानकार, विवादी तथा सुशीला एवं पतिव्रता पत्नी का पति होता है।

यदि मंगल और शनि की स्थिति से दुरुधरा योग बनता हो तो जातक रतिक्रिया में प्रवीण, व्यसनी, क्रोधी, चुगलखोर, अधिक शत्रुओं वाला तथा बहुत धन संचय करने वाला होता है।

यदि बुध और गुरु की स्थिति से दुरुधरा योग बनता हो तो जातक शास्त्रज्ञ, धर्मज्ञ, वाणी का धनी, दानी, सम्पत्ति को बढ़ाने वाला तथा लोक में प्रसिद्ध होता है।

यदि बुध और शुक्र की स्थिति से दुरुधरा योग बनता हो तो जातक पुण्यात्मा, सुखी, शूर-वीर, राजमन्त्री, कान्तिमान्, प्रियवादी, प्रवृत्तिमार्ग में रत तथा यशस्वी होता है।'

यदि बुध और शनि की स्थिति से दुरुधरा योग बनता हो तो जातक अनेक देशों में भ्रमण करने वाला, धन को तुच्छ समझने वाला, विद्वान्, स्वजनों द्वारा अनादृत, परन्तु अन्य जनों द्वारा सम्मानित होता है।

यदि गुरु और शुक्र की स्थिति से दुरुधरा योग बनता हो तो जातक नीतिज्ञ, मेधावी, धीर, गम्भीर, स्थिर, स्वर्ण-रत्नादि से परिपूर्ण, लोक-विश्रुति, सम्मानित तथा राजकर्मचारी होता है।

यदि गुरु और शनि की स्थिति से दुरुधरा योग बनता हो तो जातक नीतिज्ञ, वैज्ञानिक, सुखी, प्रियवादी, सन्ततिवान्, धनी, सुन्दर स्वरूपवान्, विद्वान् तथा सब कामों के करने में समर्थ एवं कुशल होता है।

यदि शुक्र और शनि की स्थिति से दुरुधरा योग बनता हो तो जातक धनी, अनेक विषयों का ज्ञाता, राजा के द्वारा सम्मान प्राप्त करने वाला, सब कामों को करने में चतुर, कुलीन स्त्रियों का प्रिय तथा अपने से अधिक आयु वाली स्त्री का पति होता है।

संक्षेप में, दुरुधरा योग में उत्पन्न जातक सुखी, धनी, भृत्य-वाहनादि से युक्त तथा गुणवान् होता है।

केमद्रुम योग—यदि जन्म-कुण्डली में चन्द्रमा से दूसरे तथा बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह न हो तो 'केमद्रुम' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य स्त्री-पुत्र से हीन, दुःखी, अपने कुटुम्बियों के सुख से हीन, व्यर्थ बोलने वाला, मलिन वस्त्रधारी, नीच, डरपोक, कुत्सित आचार-विचारों वाला, निर्धन, दूत कर्म करने वाला, परन्तु दीर्घायु होता है। ऐसा जातक चाहे राजा के घर में ही जन्म क्यों न ले, फिर भी उसमें उपर्युक्त सभी कुलक्षण पाये जाते हैं। यदि चन्द्रमा केन्द्र में हो अथवा किसी अन्य ग्रह से युक्त हो तो 'केमद्रुम योग' भंग हो जाता है—ऐसा समझना चाहिये। यदि चन्द्रमा पर सभी ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो तो केमद्रुम योग-जनित अशुभ फल नष्ट हो जाता है और जातक दीर्घायु, शत्रुओं को जीतने वाला तथा सार्वभौम राजा के पद को प्राप्त करने वाला होता है।

इसी प्रकार यदि केमद्रुम योग में चन्द्रमा पूर्ण बिम्ब होकर शुभ ग्रह की राशि पर बैठा हो अथवा उस पर बुध, बृहस्पति और शुक्र की दृष्टि पड़ रही हो तो भी अशुभ फल नष्ट हो जाता है तथा जातक धन-पुत्रादि से सुखी होकर लोक में यश, प्रसिद्धि तथा सम्मान प्राप्त करता है।

वोशि योग—यदि जन्म-कुण्डली में सूर्य से बारहवें स्थान में चन्द्रमा को छोड़कर कोई अन्य ग्रह हो तो 'वोशि योग' होता है। वोशियोग का फल इस प्रकार समझना चाहिये—

यदि सूर्य से बारहवें स्थान पर गुरु की स्थिति हो तो जातक धन का संचय करने वाला प्रसिद्ध पुरुष होता है।

यदि सूर्य से बारहवें स्थान पर शुक्र की स्थिति हो तो जातक डरपोक, कामी, थोड़ा काम करने वाला तथा पराधीन होता है।

यदि सूर्य से बारहवें स्थान पर बुध हो तो जातक कोमल स्वभाव वाला, विनम्र, परन्तु लज्जा-विहीन, दरिद्र तथा अन्य जनों की आलोचना का पात्र होता है।

यदि सूर्य से बारहवें स्थान पर मंगल हो तो जातक परोपकारी, परन्तु अपनी माता का अहित करने वाला होता है।

यदि सूर्य से बारहवें स्थान पर शनि हो तो जातक दयालु, तन्द्रायुक्त स्वभाव वाला, वृद्ध के समान आकृति वाला तथा पर-स्त्री-गामी होता है।

वेशि योग—यदि जन्म-कुण्डली में सूर्य से दूसरे स्थान में चन्द्रमा को छोड़कर कोई अन्य ग्रह हो तो 'वेशि योग' होता है। वेशि योग का फल इस प्रकार समझना चाहिए—

यदि सूर्य से दूसरे स्थान पर गुरु हो तो जातक धैर्यवान्, सत्यवादी, बुद्धिमान्, संग्राम में वीरता दिखाने वाला होता है।

यदि सूर्य से दूसरे स्थान पर शुक्र हो तो जातक लोक में विख्यात, गुणवान् तथा श्रेष्ठ पुरुष होता है।

यदि सूर्य से दूसरे स्थान पर बुध हो तो जातक प्रियवादी, सुन्दर, परन्तु दूसरों का अपकार करने वाला होता है।

यदि सूर्य से दूसरे स्थान पर मंगल हो तो जातक वाहन चलाने में कुशल तथा युद्ध-क्षेत्र में प्रसिद्धि पाने वाला होता है।

यदि सूर्य से दूसरे स्थान पर शनि हो तो जातक वाणिज्य-कला में कुशल, दूसरों के धन का अपहरण करने वाला तथा गुरुजनों का द्वेषी होता है।

संक्षेप में, 'वेशि योग' में जन्म लेने वाला जातक अच्छी स्मरण-शक्ति वाला, श्रेष्ठ वचन बोलने वाला, कमर से ऊपर पुष्ट शरीर वाला, सत्त्वगुणी, मन्द गति से चलने वाला तथा भोगी होता है।

उभयचरी योग—यदि सूर्य से दूसरे तथा बारहवें दोनों ही स्थानों पर चन्द्रमा को छोड़ कर कोई अन्य ग्रह स्थित हों तो 'उभयचरी योग' होता है। उभयचरी योग में जन्म लेने वाला जातक कष्ट-सहिष्णु, समदर्शी, मध्यम शरीर वाला, स्थिर, गम्भीर, सतोगुणी, कार्यकुशल, पुष्ट ग्रीवा वाला, सुन्दर, बहुत से नौकर रखने वाला, बन्धुजनों को आश्रय देने वाला, हृष्ट-पुष्ट, भोगी, धनी तथा राजा के समान सुखी तथा उत्साही होता है।

पुत्रहीन योग—(१) जन्म-कुण्डली में पाँचवें घर का स्वामी छठे, आठवें अथवा बारहवें घर में बैठा हो जातक पुत्रहीन होता है।

(२) जन्म-कुण्डली में पाँचवें घर का स्वामी किसी स्थान में अस्त होकर सूर्य के साथ बैठा हो तो जातक पुत्रहीन होता है।

(३) जन्म-कुण्डली के पाँचवें घर में सूर्य, मंगल, राहु और शनि इनमें से कोई भी एक, दो, तीन-अथवा चारों ग्रहों में स्थित हों तो जातक पुत्रहीन होता है।

(४) जन्म-कुण्डली के पाँचवें घर में चन्द्रमा राहु के साथ बैठा हो तो जातक पुत्र-हीन होता है।

(५) जन्म-कुण्डली के पाँचवें, दूसरे अथवा दसवें घर में मंगल बैठा हो तो जातक पुत्रहीन होता है।

(६) जन्म-कुण्डली के आठवें अथवा तीसरे घर में शनि बैठा हो तो जातक पुत्रहीन होता है।

(७) जन्म-कुण्डली के पाँचवें घर में अकेला चन्द्रमा हो, परन्तु वह वृद्ध (मृतकावस्था) में हो तो भी जातक पुत्रहीन होता है ।

(८) पाँचवें घर का स्वामी स्त्री-ग्रह हो और वह पहले, चौथे, सातवें अथवा दसवें घर में चन्द्रमा, बुध, शनि अथवा राहु के साथ बैठा हो तो जातक पुत्रहीन होता है। यदि पुत्र होना भी है तो वह मर जाता है ।

सन्तान मृत्यु-योग—(१) पाँचवें घर में सूर्य राहु, शनि अथवा केतु के साथ बैठा हो तो जातक की सन्तान जन्म लेने के बाद मर जाती है ।

(२) पाँचवें घर में राहु मंगल के साथ बैठा हो तो जातक की सन्तान जन्म लेने के बाद मर जाती है । ऐसे जातक की स्वयं की मृत्यु किसी अच्छे तीर्थ-स्थान में होती है । यदि एक पुत्र जीवित बच भी जाय तो अन्त में उसके द्वारा दुःख प्राप्त होता है ।

महासागर योग—लग्न, चतुर्थ, सप्तम और दशम— इन चारों केन्द्र-स्थानों में बुध गुरु, शुक्र तथा चन्द्रमा बैठे हों, राहु तृतीय भाव में बैठा हो, मंगल छठे घर में हो तथा शनि ग्यारहवें घर में हो तो 'महासागर योग' होता है। ऐसे योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति राजा अथवा राजमन्त्री होता है । वह देवता तथा ब्राह्मणों से प्रीति रखता है, परन्तु उसका शरीर किसी राजरोग (यक्ष्मा आदि) से दुःखी बना रहता है ।

यमाकृति योग—जन्म-लग्न में राहु, मेष अथवा वृश्चिक राशि का होकर बैठा हो, तीसरे घर में सूर्य की स्थिति हो तथा आठवें घर में बुध और शुक्र के साथ शनि तथा मंगल बैठे हों तो 'यमाकृति योग' होता है । इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य अत्यन्त दरिद्री तथा सन्तान-हीन होता है ।

महिपाकृति योग—जन्म-कुण्डली में शनि और राहु चौथे घर में बैठे हों, केतु और मंगल दशम भाव में हों तथा चन्द्रमा, शुक्र और सूर्य छठे भाव में हों तो 'महिपाकृति योग' होता है । इस योग में जन्म लेने वाले जातक के बड़े भाई के सन्तान नहीं होती, माता को अत्यन्त कष्ट प्राप्त होता है तथा स्वयं का शरीर भी बार-बार रोगी हो जाता है।

मातृघातक योग—(१) यदि जन्म-लग्न में बृहस्पति, धन-स्थान में शनि तथा तीसरे स्थान में राहु बैठा हो तो ऐसे जातक की माता जीवित नहीं रहती ।

(२) यदि आठवें घर में बृहस्पति, दसवें घर में मंगल और सिंह राशि में शनि हो, उस जातक की माता भी जीवित नहीं रहती ।

दारिद्र्य योग—(१) यदि जन्म-कुण्डली के चारों केन्द्रों में पापग्रह बैठे हों तो जातक दरिद्री होता है।

(२) यदि धन-स्थान (द्वितीय भाव) में सभी पापग्रह बैठे हों तो जातक दरिद्री होता है ।

त्रिघात-योग—(१) यदि जन्म-कुण्डली में लग्न अथवा ग्यारहवें घर में शनिश्चर, छठे घर में चन्द्रमा तथा सातवें घर में मंगल की स्थिति हो, तो जातक के माता-पिता जीवित नहीं रहते ।

(२) यदि जन्म-कुण्डली में लग्न तथा सप्तम भाव में पाप ग्रह बैठे हों तो जातक के माता-पिता को अत्यन्त कष्ट प्राप्त होता है और उसकी स्त्री जीवित नहीं रहती ।

(३) यदि जन्म-कुण्डली में लग्न छठे, आठवें तथा बारहवें इन सभी स्थानों में पापग्रह बैठे हों तो उसकी सन्तान जीवित नहीं रहती ।

(४) जिस जातक की जन्म-कुण्डली में लग्न अथवा पंचम भाव में सूर्य, राहु, मंगल तथा शनि स्थित हों, वह अपने माता-पिता का नाश करता है और सन्तानहीन भी होता है।

पुत्र-नाश योग—(१) सूर्य की सिंह राशि में शनि बैठा हो, मंगल की मेष अथवा वृश्चिक राशि में राहु बैठा हो, कन्या राशि में सूर्य बैठा हो तथा शनि की मकर अथवा कुम्भ राशि में मंगल बैठा हो तो जातक के पुत्र की मृत्यु हो जाती है।

(२) लग्न में, चौथे घर में अथवा पाँचवें घर में शनि, राहु और मंगल बैठे हों तो भी जातक के पुत्र की मृत्यु हो जाती है।

(३) तीसरे, छठे, दसवें अथवा ग्यारहवें घर में शनि, राहु और मंगल बैठे हों तो भी जातक के पुत्र की मृत्यु हो जाती है।

शक्र योग—मेष राशि का सूर्य ग्यारहवें घर में बैठा हो, कर्क राशि का बृहस्पति दूसरे घर में बैठा हो तथा दसवें घर में शुक्र बैठा हो तो 'शक्र योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति ब्राह्मणों एवं देवताओं का पूजक, श्रेष्ठ स्मरण शक्ति वाला, कान्तिमान, नेमी, धर्मात्मा, पराक्रमी तथा यशस्वी होता है। उसके घर में धन नहीं टिक पाता। वह सदैव चिन्तातुर बना रहता है। वह साधुजनों की सेवा करने वाला, लोगों में प्रसिद्ध, सम्माननीय, राजा के समान यशस्वी तथा कीर्तिमान् होता है।

विलास हानि योग—(१) सातवें घर का स्वामी पाप ग्रहों से युक्त होकर मिथुन, सिंह, कन्या, तुला अथवा कुम्भ राशि में स्थित हो तो जातक को स्त्री द्वारा दुःख प्राप्त होता है।

(२) मंगल और राहु सातवें घर में बैठे हों और उन पर शनि तथा सूर्य की दृष्टि पड़ रही हो तो जातक को स्त्री से दुःख होता है।

(३) सातवें घर में राहु और शनि बैठे हों तो जातक को स्त्री से दुःख होता है।

(४) सातवें घर का स्वामी पापग्रहों के साथ छठे, आठवें अथवा बारहवें स्थान में बैठा हो तो जातक को स्त्री से दुःख प्राप्त होता है।

शून्य योग—लग्न का स्वामी पापग्रह के साथ छठे, आठवें अथवा बारहवें स्थान में बैठा हो और मंगल से राहु तीसरे घर में हो तो 'शून्य' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक का चित्त सदैव भ्रमित एवं चिन्तित बना रहता है। रात्रि के समय उसका सन्ताप अधिक बढ़ जाता है तथा बीस से तीस वर्ष की आयु के बीच उसे अनेक प्रकार के रोगों का शिकार बनना पड़ता है।

इलाख्यसर्प योग—यदि तीन केन्द्रों में पाप-ग्रह बैठे हों तो 'इलाख्य सर्प योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य दुष्टात्मा, पापी, परस्त्री-गामी, ब्राह्मणों तथा देवताओं का निन्दक होता है।

विफल योग—यदि चारों केन्द्रों में पापग्रह बैठे हों और छठे अथवा आठवें घर में चन्द्रमा हो तो 'विफल' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य बत्तीस वर्ष की आयु तक तो सुख भोगता है, उसके बाद वह अनेक प्रकार के दुःख भोगता है तथा दरिद्र हो जाता है।

आम योग—यदि लग्न में शनि, आठवें घर में राहु और चौथे घर में सूर्य तथा मंगल बैठे हों तो 'आम' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति कोढ़ी, धनहीन तथा दुःखी होता है और छत्तीस वर्ष की आयु में दरिद्री हो जाता है।

दारुण योग—यदि लग्न अथवा आठवें घर में सूर्य हो, छठे तथा बारहवें घर में पाप ग्रह हों और शुभ ग्रह केन्द्र तथा त्रिकोण में बैठे हों तो 'दारुण' नामक योग होता है। ऐसा व्यक्ति शास्त्रज्ञ, धनवान्, धर्मात्मा, बहुत से नौकरों वाला, गुणी तथा सभा में बोलने वाला होता है। उसे सोलह वर्ष तक बहुत कष्ट मिलता है, तत्पश्चात छत्तीस वर्ष की आयु में वह दुःखी होता है। [illegible] वर्ष की आयु तक उसे रोग, शत्रु एवं राजा से भी भय रहता है।

चन्द्रयोग—लग्न से पाँचवें घर तक सभी पाप-ग्रह तथा शुभग्रह बैठे हों तो 'चन्द्र योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति धन-वाहन से सम्पन्न, भोगी तथा धनी होता है, परन्तु वह वात-कफ का रोगी होता है और उसे पुत्र की चिन्ता रहती है।

अर्घाद्भुत योग—जन्म-लग्न में चन्द्रमा हो तथा शेष शुभ ग्रह केन्द्र में हों तो 'अर्घाद्भुत योग' होता है। ऐसे योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति सेना का मर्दन करने वाला परम पराक्रमी होता है।

सागर योग—मंगल से शनि तक कोई भी एक ग्रह केन्द्र में बैठा हो तो 'सागर' नामक योग होता है। ऐसे योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति अपनी चवालीस वर्ष की आयु तक में धन-अन्न आदि से सुखी तथा प्रतापी बना रहता है, परन्तु बाद में दुःख प्राप्त करता है।

विपाक योग—यदि चारों केन्द्र शून्य हों और नौवें, पाँचवें तथा आठवें घर में सभी पाप-ग्रह बैठे हों तो 'विपाक' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति राजा के समान प्रतापी, परन्तु म्लेच्छ-बुद्धि का होता है। उसे पुत्रों तथा भाइयों का सुख तो खूब मिलता है, परन्तु बाद में धन, शत्रु तथा राजा के कारण चिन्ता एवं सन्ताप का शिकार बनना पड़ता है।

पात योग—लग्न में अथवा आठवें स्थान में अथवा छठे स्थान में शनि, राहु और मंगल हों तो 'पात' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक का धन और अन्न नष्ठ हो जाता है।

नन्द योग—यदि जन्म-कुण्डली में दो-दो ग्रह तीन जगह हों और तीन ग्रह एक जगह हों तो 'नन्द' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति दीर्घायु तथा राजाओं द्वारा पूजित एवं सम्मानित होता है।

ऐन्द्रबाहु योग—जन्म-लग्न से चौथे घर तक यदि सभी ग्रहों की स्थिति हो तो 'ऐन्द्रबाहु योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक धनी-मानी, सुखी तथा पराक्रमी होता है।

श्रीनन्द योग—मीन राशि में चन्द्रमा तथा शुक्र हो, कर्क राशि में बृहस्पति हो तथा तीसरे और ग्यारहवें घर में पाप-ग्रह हों तो 'श्रीनन्द' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक धनी-मानी सुखी, भोगी, शान्त, धीर, गंभीर मन्त्रोपासना में तत्पर तथा गुणवान् होता है।

विपत्ति योग—ग्यारहवें घर में राहु, पाँचवें घर में शनि और दसवें घर में मंगल बैठा हो और सूर्य तथा शुक्र की इन पर दृष्टि हो तो 'विपत्ति' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाले व्यक्ति को अनेक प्रकार की विपत्तियों का सामना करना पड़ता है।

चक्रदामिनी योग—बुध के घर में बृहस्पति बैठा हो, बृहस्पति के घर में शुक्र बैठा हो तथा शुक्र के घर में चन्दमा बैठा हो तो 'चक्रदामिनी योग' होता है। योग में जन्म लेने वाला जातक कमल के समान नेत्रों वाला, दीर्घायु, प्रतापी, चतुर, निपुण, बुद्धिमान्, पृथ्वी का स्वामी तथा अल्प-कामी होता है।

सन्ताननाश योग—चौथे घर में राहु बैठा हो और पाँचवें घर का स्वामी शनि के साथ हो तो 'सन्ताननाश योग' होता है। इस योग में जातक के घर में पहले दो-तीन कन्याओं का जन्म होता है। उसके बाद पुत्र का जन्म होता है। ऐसा व्यक्ति क्षीणकान्ति, कुटिल, प्रपंची, चतुर, यशस्वी, अनेक नौकर रखने वाला, पर-स्त्रियों से रमण करने वाला, दानी, मोटे शरीर वाला तथा लज्जावान होता है, परन्तु उसका एक भी पुत्र जीवित नहीं रहता। जप, दान, पुण्य आदि से इस अरिष्ट का निवारण किया जा सकता है।

विपरीत योग—बृहस्पति के घर में सूर्य हो, सूर्य के घर में शुक्र हो, शनि, मंगल और चन्द्रमा मेष राशि के होकर छठे अथवा आठवें हों तो 'विपरीत' नामक योग होता है। इसमें जन्म लेने वाला मनुष्य दुःखी तथा सन्तानहीन होता है। उसके तीन पुत्र नष्ट हो जाते हैं। दान-पुण्य, धर्म-कर्मादि करने से बाद की सन्तानें बच सकती हैं।

कूट योग—पाँचवें घर का स्वामी और मंगल छठे, आठवें अथवा बारहवें घर में बैठा हो तो 'कूट' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाले व्यक्ति के पुत्रों की भी मृत्यु हो जाती है। इस अरिष्ट के निवारणार्थ दान-पुण्य धर्म आदि करना आवश्यक है।

राज योग—कर्क राशि में बृहस्पति, नवें घर में शुक्र तथा सातवें घर में मंगल और शनि बैठे हों तो ऐसे 'राज योग' में जन्म लेने वाला जातक राजा या महाराजा के समान ऐश्वर्य-शाली, प्रतापी, सुखी तथा धनी होता है।

अनुभाव योग—यदि जन्म-कुण्डली के ग्यारहवें भाव में राहु, पाँचवें में शनि, दसवें में मंगल, आठवें में चन्द्रमा तथा छठे में सूर्य-बुध की स्थिति हो तो 'अनुभाव' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाले व्यक्ति के भी पुत्र जीवित नहीं रहते तथा पत्नी का गर्भ स्राव हो जाता है। दान-पुण्य करने से लाभ होता है।

श्रीमुख योग—यदि जन्म-लग्न में गुरु, नवम, स्थान में शुक्र और दशमभाव में सूर्य हो तो 'श्रीमुख' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक बीस वर्ष की आयु तक राजा द्वारा सम्मान प्राप्त करता है। वह हाथी, घोड़ा, धन आदि से सम्पन्न तथा अत्यत पराक्रमी होता है।

कपाल योग—पाँचवें घर का स्वामी चतुर्थभाव में हो, छठे घर का स्वामी लग्नेश सहित छठे, आठवें अथवा बारहवें भाव में हो और पाँचवें घर को शनि, मंगल अथवा सूर्य देखते हों तो उसे 'कपाल योग' का जाता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक के सभी पुत्र नष्ट हो जाते हैं। यदि कोई पुत्र जीवित भी रह जाय तो वह बुरे कर्म करने वाला होता है।

पिशाच योग—सूर्य के घर में बृहस्पति, बृहस्पति के घर में सूर्य, बुध तथा पाँचवें घर में शुक्र सहित मंगल और राहु हों तो 'पिशाच' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक के घर में पूर्वजन्मकृत पापों के कारण सन्तान का जन्म नहीं होता।

विनाश योग--यदि तीसरे घर का स्वामी तीसरे घर में पापग्रहों के साथ बैठा हो अथवा वह पापग्रहों द्वारा दृष्ट हो तथा शनि की राशि में बृहस्पति बैठा हो तो 'विनाश' नामक योग होता है। ऐसे योग में जन्म लेने वाले व्यक्ति को भी पुत्र, सन्तान, धन आदि की हानि उठानी पड़ती है।

वाग्भव योग-यदि चौथे, पाँचवें, नौवें, ग्यारहवें तथा बारहवें इन घरों में ही सब ग्रहों की स्थिति हो तो वह 'वाग्भव योग' होता है। ऐसे योग में जन्म लेने वाला जातक धनी, यशस्वी तथा विद्वान् होता है।

आनन्द योग—यदि शनि के घर में गुरु और गुरु के घर में शनि हो, शेष शुभ ग्रह तथा पापग्रह ग्यारहवें घर में बैठे हों तो 'आनन्द' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक बाल्यावस्था में दुःखी और युवावस्था से चवालीस वर्ष की आयु तक बहुत सुख भोगता है।

अनुज्ञात योग—यदि मंगल के घर में शुक्र, शुक्र के घर में मंगल, चौथे घर में चन्द्रमा तथा मेष राशि पर बुध और गुरु हों तो 'अनुज्ञात योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक सोलह वर्ष की आयु तक अन्न-धन से सम्पन्न, सामान्य जीवन तथा तीस वर्ष की आयु के बाद राजा के समान वैभव एवं ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत करता है।

दरिद्र योग—(१) चारों केन्द्रों में शुभ-ग्रह बैठे हों परन्तु धन-स्थान में पाप ग्रह बैठे हों तो ऐसा जातक सदैव दरिद्र बना रहता है।

(२) जन्म-लग्न का स्वामी बारहवें घर में बैठा हो तथा दसवें घर में पाप-ग्रह बैठा हो और चन्द्रमा उसे देखता हो तो ऐसा जातक सदैव दरिद्र बना रहता है।

(३) सूर्य के नवांश में चन्द्रमा और चन्द्रमा के नवांश में सूर्य हो तथा सूर्य और चन्द्रमा दोनों ही एक राशि पर बैठे हों तो ऐसा मनुष्य निरन्तर दरिद्र तथा दु:खी बना रहता है।

स्त्री-मरण योग—(१) जन्म-कुण्डली में शुक्र से चौथे अथवा आठवें स्थान पर पाप-ग्रह स्थित हों तो जातक की पत्नी अग्नि से जलकर मरती है।

(२) जन्म-कुण्डली में शुक्र पापग्रहों के बीच में बैठा हो तो जातक की पत्नी ऊपर से गिरकर मरती है।

(३) यदि शुक्र को कोई शुभ ग्रह देखता न हो और उसके साथ भी कोई शुभ ग्रह न हो तो जातक की पत्नी की मृत्यु फाँसी से होती है।

स्त्री सहित काण योग—जिस जातक की जन्म-कुण्डली में जन्म-लग्न से बारहवें तथा छठे में चन्द्रमा और सूर्य बैठे हों तो वह अपनी पत्नी सहित काना होता है अर्थात् पति-पत्नी दोनों ही काने होते हैं।

अंगहीन योग—जिस जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य तथा शुक्र दोनों ही लग्न से सातवें, नवें अथवा पाँचवें स्थान में बैठे हों, वह अंगहीन स्त्री वाला होता है; अर्थात् उसकी स्त्री विकलांग होती है।

जितेन्द्रिय योग—यदि जन्म-कुण्डली में लग्न में अथवा पंचमभाव में बृहस्पति और दशमभाव में चन्द्रमा बैठा हो तो ऐसा व्यक्ति सत्यवादी, जितेन्द्रिय, सुन्दर, शोभायमान तथा राजा जैसे लक्षणों वाला होता है। वह अपना जीवन सुखी तथा ऐश्वर्यपूर्ण ढंग से व्यतीत करता है।

कुलश्रेष्ठ योग—यदि जन्म-कुण्डली में बृहस्पति तुला राशि पर स्थित हो, शुक्र कन्याराशि पर स्थित हो एवं बुध वृषराशि पर स्थित होकर दशमभाव में हो तथा वृश्चिक राशि को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो ऐसा जातक अपने कुल में श्रेष्ठ. उदार, गुणवान, बुद्धिमान्, धनी. सुखी, चतुर तथा प्रतिदिन आनन्द का उपभोग करने वाला होता है।

वंध्यापति योग—यदि लग्न में शनिश्चर बैठा हो और कर्क, वृश्चिक तथा मीन के नवांश में प्राप्त शुक्र सातवें घर में स्थित हो तथा पाँचवें घर में कोई भी शुभग्रह न हो तो ऐसा व्यक्ति वन्ध्या स्त्री का पति होता है। यह योग मकर, वृष तथा कन्या लग्न वालों पर ही प्रभाव डालता है।

स्त्री-पुत्र-विहीन योग—यदि जन्म-कुण्डली के लग्न, सातवें और बारहवें घर में पाप ग्रह बैठे हों और पंचमभाव में चन्द्रमा की क्षीण स्थिति हो तो ऐसा जातक स्त्री तथा पुत्र से रहित होता है।

तीर्थकृत् योग—यदि जन्म-कुण्डली के अष्टमभाव में शुभ-ग्रह स्थित हों और उन पर शुभ ग्रहों की दृष्टि भी पड़ रही हो तो ऐसा व्यक्ति अनेक तीर्थों की यात्रा करता है।

जल-योग—यदि केन्द्र में सूर्य, चन्द्रमा और शनि बैठे हों अथवा ये ही ग्रह हीन तथा निर्बल स्थिति में हों तो 'जल योग' होता है। इस योग में उत्पन्न मनुष्य ऐश्वर्य, धन तथा चातुर्य से हीन, पराये अन्न की इच्छा रखने वाला, चपल और अत्यधिक दु:खी होता है। उसकी प्रकृति जलीय होती है।

चौर योग—(१) यदि छठे घर में बलवान् बुध और मंगल बैठा हो तो जातक चोर होता है। वह अपना कार्य करने में कुशल होता है। हाथ-पाँव खंडित होते हैं तथा शत्रु नष्ट होते हैं।

(२) जिसके जन्म-काल में कर्क का शनि तथा मकर का मंगल हो वह व्यक्ति चोर होता है।

(३) जन्म-कुण्डली के तीसरे घर में क्रूर ग्रह हों अथवा ग्यारहवें भवन में क्रूर ग्रह हों और उन पर नीच ग्रह की दृष्टि हो तो जातक चोर होता है।

(४) तीसरे घर में पापग्रह, विशेषकर शनि हो और उन पर किसी नीच ग्रह की दृष्टि भी पड़ रही हो तो जातक चोर होता है।

(५) तीसरे घर में नीच ग्रह हो, मंगल राहु, और शनि सहित लग्नेश भी नीच का हो तो भी जातक चोर होता है।

(६) बारहवें घर में अन्य पापग्रह हों तथा तीसरे घर में विशेप रूप से कोई पाप-ग्रह बैठा हो तथा इन भावों का स्वामी नीच में बैठा हो तो ऐसा जातक चोर पिता की सन्तान होता है और स्वयं भी चोर होता है।

(७) यदि लग्नेश पापग्रह के साथ हो, लग्न में नीच ग्रह बैठा हो और तीसरे घर का स्वामी भी नीच का हो, तो जातक चोरों का राजा होता है।

(८) जन्म-लग्न का स्वामी और लाभेश नीच के होकर पाप-ग्रह के साथ बैठे हों तथा एकादश भवन का स्वामी तीसरे घर में बैठा हो तो ऐसा जातक भी चोरों का राजा होता है।

भिक्षुक योग—(१) सम्पूर्ण ग्रह शत्रु के नवांश में अथवा छठे घर में नीच के हों तो फिर वे जन्म-कुण्डली में अपने उच्च के ही क्यों न हों, फिर भी ऐसा जातक भीख माँगने वाला, श्रेष्ठ कर्मों से हीन तथा नीच मनुष्यों के साथ रहने वाला होता है।

(२) सम्पूर्ण ग्रह सप्तांश में नीच के हों अथवा दसवें घर में बैठे हों तो ऐसा जातक भिक्षुक होता है।

(३) लग्न का स्वामी बारहवें घर में बैठा हो तथा दसवें घर में मंगल एव पाप-ग्रह सहित चन्द्रमा बैठा हुआ हो तो जातक भीख माँगने वाला होता है।

(४) केन्द्र में शनि हो, जन्म लग्न में चन्द्रमा हो तथा बारहवें घर में गुरु हो, तो जातक घर से निकला हुआ, गुणहीन, जड़ तथा भिक्षुक होता है।

(५) जन्म-कुण्डली में मेष का चन्द्रमा हो और उस पर शनि की दृष्टि पड़ रही हो तो मनुष्य भीख माँगकर भोजन करने वाला होता है।

(६) मेष के चन्द्रमा पर मंगल की दृष्टि पड़ रही हो, तो जातक धनहीन एवं दरिद्र होता है।

कृपण योग—मेष का चन्द्रमा लग्न में बैठा हो और उस पर शनि की दृष्टि पड़ रही हो, तो ऐसा जातक कृपण होता है।

नीचवृत्ति योग—(१) मेष लग्न में शनि द्रेष्काण में हो और केन्द्र पर चन्द्रमा की दृष्टि पड़ रही हो तो ऐसा जातक चाहे राजकुल में ही उत्पन्न क्यों न हो, नीच कर्मों को करने वाला होता है।

(२) नवम स्थान का स्वामी तथा शनि दूसरे अथवा पाँचवें घर में बैठे हों और उन पर किसी पापग्रह की दृष्टि पड़ रही हो अथवा वे किसी पाप-ग्रह के साथ छठे घर में बैठे हों तो उस मनुष्य का जीवन नीचवृत्ति से पूर्ण रहता है।

(३) चन्द्रमा दसवें घर में हो और लग्न से पाँचवें, नवें अथवा दूसरे स्थान में शनि स्थित हो, साथ ही आठवें घर में पापग्रह बैठे हों तो ऐसे मनुष्य का जीवन भी नीचवृत्ति से परिपूर्ण रहता है।

स्त्री-सह पुंश्चली योग—(१) यदि जन्म-काल में शनि और मंगल के षड्वर्ग में स्थित शुक्र सातवें घर में बैठा हो और उन पर शनि और मंगल में से किसी एक की दृष्टि पड़ रही हो, तो ऐसा पुरुष पर-स्त्री-गामी होता है तथा उसकी स्त्री पर-पुरुष-गामिनी होती है।

(२) यदि शनि और मंगल एक ही राशि में चन्द्रमा के साथ बैठे हों और शनि अथवा मंगल के नवांशादि वर्ग में शुक्र सातवें स्थान में स्थित हो और शनि अथवा मंगल दोनों में से कोई उसे देखता हो, तो ऐसा मनुष्य पर-स्त्री-गामी होता है तथा उसकी स्त्री पर-पुरुष-गामिनी होती है।

भार्या-पुत्र-विहीन योग—यदि जन्म लग्न में चन्द्रमा से सातवें स्थान पर शनि और मंगल हों, तो ऐसा व्यक्ति स्त्री तथा पुत्र से हीन होता है।

वृद्धा-स्त्री वृद्ध-पुरुष योग—यदि जन्म-काल में स्त्री-पुरुष ग्रह एक ही राशि में बैठे हों और उनसे सातवें स्थान में शुभ ग्रहों से दृष्ट शनि तथा मंगल बैठे हों, तो ऐसा पुरुष वृद्धावस्था में वृद्धा स्त्री को प्राप्त करता है।

दुःखी योग—(१) शुक्ल-पक्ष में बली चन्द्रमा लग्न के स्वामी को देखता हो तो ऐसा जातक तपस्वी, दुर्बल, दीन, दुःखी, धनहीन, शोक-सन्तप्त तथा परजनहीन होता है।

(२) चन्द्रमा बुध के नवांश में अधिक बली होकर बैठा हो, शेष सभी ग्रह उच्च राशि में हों तथा चन्द्रमा के ऊपर बली शनि की दृष्टि पड़ रही हो तो ऐसा जातक दुःखी, तपस्वी तथा दुःख भोगने वाला होता है।

वंशध्वंसी योग—(१) यदि जन्म-काल में नवें घर का स्वामी बारहवें घर में स्थित हो और जन्म-राशि का स्वामी पाप-ग्रह सहित हो तथा लग्नेश अस्त हो, तो ऐसा जातक वंश का नाश करने वाला, पुत्र और स्त्री से रहित होता है।

(२) यदि जन्म-काल में चन्द्रमा, शुक्र, सूर्य, मंगल और शनि दसवें, चौथे तथा सातवें घर में स्थित हों, तो जातक अपने वंश का नाश करने वाला होता है।

शिल्पी योग—जिस राशि सम्बन्धी त्रिशांश में बुध की स्थिति हो और वह राशि केन्द्र में स्थित तथा शनि द्वारा दृष्ट हो, तो जातक चित्रकारी, शिल्प-कला आदि से अपनी आजीविका उपार्जित करता है।

दासी जात योग—यदि जन्म-काल में शनि के नवांश में शुक्र लग्न से बारहवें स्थान में स्थित हो, तो ऐसे जातक को दासी-पुत्र समझना चाहिये।

नीच-कर्म-कृत् योग—लग्न से सातवें घर में सूर्य और चन्द्रमा दोनों हों तथा शनि की दृष्टि उन पर पड़ रही हो, तो ऐसा जातक नीच कर्म करने वाला होता है।

चाण्डाल योग—(१) शुक्र और बुध केन्द्र में एकत्र बैठे हों तथा चन्द्रमा राहु के साथ लग्न में बैठा हो, तो ऐसे योग में उत्पन्न जातक अपने कर्म से हीन चाण्डाल होता है।

(२) बृहस्पति, केतु, राहु के साथ किसी भाव में बैठा हो और किसी पापग्रह की उस पर दृष्टि हो, तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति भी चाण्डाल होता है।

(३) बृहस्पति नीच राशि अथवा नीच नवांश में किसी पापग्रह के साथ बैठा हुआ हो, तो ऐसा व्यक्ति ब्राह्मण के घर में भी जन्म लेकर चाण्डाल होता है।

कलमांस योग—यदि जन्म-कुण्डली में केन्द्र में शुभ तथा अशुभ ग्रह बैठे हुये हों और

लग्नेश दशम स्थान में हो तथा चन्द्रमा की उस पर दृष्टि न हो अथवा धनु राशि के नवांश

में शुभग्रह प्राप्त हो तो 'कुलपांसु योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति परदेश में रहने वाला, अपने घर से च्युत अथवा बहिष्कृत, स्त्री-पुत्रादि से रहित, दोषों का समूह तथा दरिद्री होता है।

पिशाच योग— यदि जन्म-काल में राहु द्वारा ग्रस्त चन्द्रमा लग्न में बैठा हो और नवें तथा पाँचवें स्थान में शनि अथवा मंगल बैठा हो, तो जातक पिशाचवृत्ति का होता है और पिशाच ही उसका इष्टदेव होता है।

अन्ध योग—(१) सूर्य राहु के साथ लग्न में बैठा हो और नवें अथवा पाँचवें घर में शनि अथवा मंगल की स्थिति हो तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला जातक अन्धा होता है।

(२) जन्म समय में सिंह लग्न हो और उसमें सूर्य, चन्द्रमा स्थित हों तथा उन पर शनि और मंगल की दृष्टि पड़ रही हो, तो भी जातक अंधा होता है। यदि दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो आँखें छोटी होती हैं और जातक को कम दिखाई देता है। यदि बारहवें स्थान में सूर्य, चन्द्रमा बैठे हों तो जातक बाईं आँख से हीन होता है।

(३) जन्म-कुण्डली में दूसरे, छठे, आठवें तथा बारहवें घर में सूर्य, मंगल, शनि और चन्द्रमा बैठे हों तो ये ग्रह अपने बलाबल के अनुसार अन्य ग्रहों के दोष से जातक को अंधा अथवा नेत्रज्योति-विहीन करते हैं।

(४) यदि सूर्य, चन्द्रमा तीसरे भाव में अथवा केन्द्र में बैठे हों और पापग्रह की राशि में मंगल केन्द्र में स्थित हो तथा आठवें, छठे और बारहवें घर में शुभग्रह बैठे हों और दसवें स्थान में सूर्य हो, तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला जातक भी अंधा होता है।

(५) जन्म-काल में शुक्र और बुध एक साथ छठे, आठवें अथवा बारहवें भाव में स्थित हों, तो जातक को रतौंधी आती है।

(६) शुक्र और सूर्य लग्न के स्वामी के साथ छठे, आठवें अथवा बारहवें भाव में बैठे हों तो जातक जन्म से ही अंधा होता है।

(७) जिस मनुष्य के जन्म-काल में छठे घर का स्वामी मंगल की राशि में अथवा मंगल के साथ स्थित हो, वह नेत्ररोगी होता है।

म्लेच्छ योग – (१) जन्म-लग्न में शनि तथा सातवें घर में सूर्य की स्थिति हो अथवा ये दोनों ग्रह नवम स्थान में एक ही राशि पर बैठे हों, तो जातक नीच स्त्रियों के संसर्ग से म्लेच्छ हो जाता है।

(२) जिस व्यक्ति के जन्म-काल में सूर्य और शनि द्रेष्काण अथवा नवांश अथवा त्रिशांश में पूर्वोक्त स्थानों में एक राशि में स्थित हों, वह मनुष्य श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न होकर भी, नीच स्त्रियों के संग से म्लेच्छ (मुसलमान आदि) हो जाता है।

कास्त्री संयोग योग—(१) जिस जातक की जन्म-कुण्डली के सप्तमभाव में सूर्य की स्थिति हो, उसका वन्ध्या स्त्री से संयोग होता है।

(२) यदि सप्तमभाव में मंगल की स्थिति हो तो रजस्वला अथवा बाँझ स्त्री से संयोग होता है।

(३) यदि सप्तमभाव में बुध की स्थिति हो तो धन-हीन-वेश्या अथवा वैश्य वर्ण की स्त्री से संयोग होता है।

(४) यदि सप्तमभाव में गुरु की स्थिति हो तो ब्राह्मण की स्त्री से संयोग होता है।

(५) यदि सप्तमभाव में शुक्र की स्थिति हो तो ब्राह्मण की गर्भवती स्त्री से संयोग होता है।

(६) यदि सप्तमभाव में शनि, राहु अथवा केतु की स्थिति हो तो जातक का हीन-वर्ण की स्त्री अथवा रजस्वला स्त्री से संयोग होता है।

(७) यदि सप्तमभाव में शनि हो तो साँवले रंग की अथवा कुवड़ी स्त्री से संयोग होता है।

(८) यदि सप्तमभाव में राहु हो तो गर्भवती स्त्री से संयोग होता है।

(९) यदि सप्तममभाव में केतु हो तो हीन वर्ण की अथवा रजस्वला स्त्री से संयोग होता है।

उच्चपद योग—यदि जन्म-काल में बृहस्पति मकर राशि में बैठा हो और उस पर शुक्र अथवा बुध की दृष्टि पड़ रही हो तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति चाहे शूद्र के घर में ही क्यों न उत्पन्न हुआ हो, वह सम्पूर्ण विद्याओं को जानने वाला तथा श्रेष्ठ ब्राह्मण के समान होता है।

विप्रघाती योग—नीच राशि का शुक्र नवें स्थान में पापग्रह के साथ बैठा हो और पापग्रहों की उस पर दृष्टि पड़ रही हो तो ऐसा जातक विप्रघाती होता है।

बालघाती योग—(१) यदि सूर्य, मंगल और राहु के साथ दसवें घर में बैठा हो तो ऐसा जातक बालघाती (बालकों की हत्या करने वाला) होता है।

(२) यदि नीच का बृहस्पति सूर्य के साथ तथा पापग्रहों के साथ बैठा हो तो ऐसा मनुष्य बालघाती होता है।

मृगादिघाती योग–यदि केन्द्र में पापग्रह बैठे हों और उन पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तथा शुक्र अष्टम स्थान में बैठा हो तो ऐसा मनुष्य गाय, हिरण आदि चतुष्पदों की हिंसा करने वाला होता है।

पक्षिहंता योग—यदि जन्म-कुण्डली में चन्द्रमा और बुध दसवें स्थान में बैठे हों, उन पर ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो अथवा उनके साथ पापग्रह भी हों या नीच के नवांश में बैठे हों, और शुभ ग्रहों की दृष्टि न पड़ती हो, तो ऐसा व्यक्ति पक्षियों को मारने वाला होता है और पक्षियों को मारकर ही अपनी आजीविका का उपार्जन करता है।

दास योग—(१) जन्म-काल में चन्द्रमा जिस नवांश में बैठा हो, उस राशि का स्वामी सूर्य, चन्द्रमा,मंगल और बृहस्पति अपनी नीच राशि के नवांश में अथवा शत्रु के नवांश में स्थित हों तो वह मनुष्य दास-वृत्ति करता है। इन चारों ग्रहों में से कोई एक हो तो जातक अपनी आजीविका के लिए दास-वृत्ति करता है। दो ग्रह हों तो वह खरीदा हुआ दास (गुलाम) होता है और जो चारों ग्रह में पूर्वोक्त रीति के अनुसार हों, तो जातक दासी का पुत्र दास होता है।

(२) जिस मनुष्य के जन्म-काल में सूर्य, शनि और मंगल दसवें स्थान में स्थित हों और कोई शुभ ग्रह न देखता हो तो मनुष्य दास होता है। यदि इन तीनों ग्रहों में से कोई एक हो तो मनुष्य दासों में भी श्रेष्ठ (प्रधान) होता है। यदि दो हों तो मध्यम श्रेणी का दास होता है।

धनी योग—(१) लग्नेश जिस नवांश में स्थित हो, उस नवांश का स्वामी गोपुरांश में स्थित हो और उस पर दशमेश की दृष्टि पड़ रही हो तो मनुष्य सहस्राधिपति होता है।

(२) जिसके जन्म-काल में दशमभाव का स्वामी, नवांशपति और सप्तांशपति—तीनों एकत्र होकर बलवान् हों और शुक्र, बृहस्पति देखते हों तो जातक सहस्राधिपति होता है।

(३) जन्म-काल में बुध के षष्ठांश में दूसरे, ग्यारहवें युक्त हो और उन स्थानों के स्वामी भी उन्हीं स्थानों में स्थित हों तो जातक सहस्राधिपति होता है।

(४) जन्म-काल में दूसरे घर का स्वामी, द्रेष्काण का स्वामी और सप्तांशपति तीनों एकत्र होकर सम्पूर्ण बल-सहित हों तो भी जातक सहस्राधिपति होता है।

(५) जिसके जन्म-काल में लग्नेश, द्रेष्काणेश तथा सप्तांशपति—ये तीनों एकत्र होकर वैशेषिकांश में प्राप्त हों तो वह मनुष्य दस सहस्र रुपयों का स्वामी होता है।

(६) कर्मेश, दृकाणेश तथा सप्तांशपति—ये तीनों ऐरावतांश में बैठे हों तो ऐसा जातक लक्षपति होता है।

(७) यदि जन्म-काल में चारों केन्द्रों में शुभ ग्रह सिंहासनांश अथवा पारावतांश में हों तो भी वह जातक लक्षपति होता है।

(८) जन्म-काल में लाभ, लग्न और धन—इन तीनों स्थानों के स्वामी वैशेपिकांश में प्राप्त हों, तो ऐसा जातक सुशील, बुद्धिमान् तथा लखपती होता है।

(९) जन्म-काल में दूसरे और ग्यारहवें घर के स्वामी वृद्धिकेन्द्र में स्थित हों और नवें घर का स्वामी बली हो, तो जातक तीन लाख रुपयों से भी अधिक का स्वामी होता है।

(१०) भाग्य स्थानाधिपति केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठा हो तथा ग्यारहवें स्थान के स्वामी के साथ वैशेपिकांश में स्थित हो तो ऐसा जातक भी तीन लाख रुपये से अधिक का स्वामी होता है।

(११) जन्म-काल में लग्नपति, नवांशपति और भाग्येश परमोच्चांश में स्थित हों तथा ग्यारहवें घर का स्वामी वैशेपिकांश में प्राप्त हो तो ऐसा जातक करोड़पति होता है।

(१२) यदि लग्न का स्वामी और नवांशपति दोनों ही एक साथ केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित हों और बृहस्पति उन्हें देखता हो तो ऐसा जातक ऋण देने वाला (साहूकार) होता है।

(१३) दूसरे और ग्यारहवें घर के स्वामी के साथ त्रिशांशपति और नवांशपति—दोनों ही केन्द्र या त्रिकोण में वैशेषिकांश में प्राप्त हों, तो ऐसा जातक ऋण देने वाला (साहूकार) होता है।

ऋणी योग—(१) यदि धन-स्थान में पापग्रह बैठा हो, लग्नेश बारहवें घर में हो और वह कर्मेश अथवा लाभेश द्वारा दृष्ट अथवा उसके साथ हो, तो जातक ऋणी (कर्ज लेने वाला) होता है।

(२) यदि धन-स्थान का स्वामी नीच राशि में बैठा हो और पापग्रहों के षष्ठांश में स्थित हो तथा लाभ स्थानपति उसी षष्ठांश में हो तो भी मनुष्य ऋणी होता है।

(३) सूर्य द्वारा अस्त धन-स्थान का स्वामी नीचराशि में पापग्रह के साथ दूसरे या आठवें स्थान में बैठा हो, तो जातक ऋणी होता है।

ज्योतिर्विद योग—बुध केन्द्र में बैठा हो, गुरु बली हो, शुक्र धन-स्थान में हो तथा तीसरे घर में शुभ ग्रह हो अथवा धन-स्थान में उच्चराशि का शुक्र बैठा हो, तो ऐसा व्यक्ति श्रेष्ठ ज्योतिषी होता है।

गणितज्ञ योग—(१) पाँचवें घर में मंगल हो और चन्द्रमा सहित बुध की उस पर दृष्टि पड़ रही हो अथवा बुध केन्द्र में स्थित हो, तो जातक गणित-शास्त्र का जानकार होता है।

(२) पाँचवें घर का स्वामी और बुध उच्चराशि में स्थित हों, लग्न में गुरु हो तथा अष्टमभाव में शनि बैठा हो तो जातक गणितशास्त्र का विद्वान् होता है।

(३) केन्द्र अथवा त्रिकोण में गुरु हो, शुक्र उच्च राशि का होकर त्रिकोण में स्थित हो अथवा पंचमभाव का स्वामी और बुध दोनो त्रिकोण में स्थित हों, तो भी मनुष्य गणित-शास्त्र का ज्ञाता होता है।

न्यायशास्त्रज्ञ योग—जन्मकाल में गुरु, शुक्र और धनेश मूल त्रिकोण अथवा उच्चराशि में स्थित केन्द्र-त्रिकोणवर्ती हों और सूर्य, मंगल इन्हें देखते हों तो जातक न्यायशास्त्र के जानकारों में श्रेष्ठ होता है।

व्याकरणशास्त्रज्ञ योग—जन्म के समय गुरु बली और पंचम घर का स्वामी हो तथा सूर्य और शुक्र की उस पर दृष्टि पड़ती हो तो जातक व्याकरणशास्त्र का जानकार होता है।

वेदान्तज्ञ योग—यदि केन्द्र अथवा त्रिकोण में वृहस्पति हो तो जातक वेदान्तशास्त्र का जानकार होता है।

काव्यशास्त्रज्ञ योग—(१) यदि केन्द्र अथवा त्रिकोण में बुध शुक्र के साथ बैठा हो तो मनुष्य काव्य-शास्त्र का पण्डित होता है।

(२) यदि पंचम घर में शुक्र स्थित हो और पंचमेश केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित हो एवं चन्द्रमा सहित गुरु की उस पर दृष्टि पड़ रही हो तो जातक काव्य-शास्त्र का विद्वान् होता है।

विविध विद्या योग—(१) यदि जन्म-कुण्डली में केन्द्र में गुरु और शुक्र बैठे हों तो मनुष्य छहों शास्त्रों को जानने वाला होता है।

(२) यदि पंचम घर में सूर्य और मंगल स्थित हों तो ऐसा मनुष्य वैद्य-विद्या को जानने वाला होता है।

(३) यदि वृहस्पति केन्द्र में हो अथवा पापग्रह के साथ त्रिकोण में बैठा हो तो मनुष्य तन्त्रशास्त्र का ज्ञाता होता है। यदि मंगल पापग्रहों के साथ केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठा हो तो वह जातक भी तन्त्रशास्त्र का जानकार होता है।

(४) यदि जन्म-लग्न में चन्द्रमा बैठा हो तथा पंचमेश पापग्रहों के साथ बैठा हो अथवा पंचम भवन में पापग्रह बैठा हो तो जातक अरबी व फारसी आदि का जानकार होता है।

(५) यदि पाँचवें घर में सूर्य और मंगल हों अथवा राहु, शनि और शुक्र में से कोई ग्रह बैठा हो, साथ ही इन पर पापग्रहों की दृष्टि भी पड़ती हो, तो जातक अंग्रेजी भाषा का जानकार होता है।

(६) यदि त्रिकोण में सूर्य या शुक्र बैठे हों और वे राहु, शनि अथवा केतु के साथ हों तो ऐसा व्यक्ति जैनशास्त्र का जानकार होता है।

(७) यदि लग्न में शनि व मंगल हों, गुरु चन्द्रमा के नवांश में हो और राहु अथवा केतु के साथ बैठा हो, तो ऐसा जातक सर्प पकड़ने की विद्या में प्रवीण होता है।

धर्माध्यक्ष योग—वृहस्पति अथवा शुक्र अपनी उच्च राशि में बैठे हों, शुभग्रह अपने मित्र के नवांश में स्थित हो तथा नवम घर का स्वामी बली हो, तो ऐसा जातक धर्माधिकारी होता है।

दानाध्यक्ष योग—(१) वृहस्पति अथवा शुक्र केन्द्र में बैठे हों और उन पर नवमभाव के स्वामी की दृष्टि पड़ रही हो तो जातक दानाध्यक्ष होता है।

(२) नवमभाव का स्वामी लग्न में बैठा हो और गुरु अथवा शुक्र केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति दानाध्यक्ष का पद प्राप्त करता है।

(३) यदि नवें घर का स्वामी चौथे घर में बैठा हो तथा बारहवें घर के स्वामी को वृहस्पति देखता हो तो ऐसा जातक महादानी होता है।

(४) यदि भाग्येश द्वारा दृष्ट गुरु उच्च राशि में स्थित हो तथा लग्नेश केन्द्र में बैठा हुआ हो, तो ऐसा जातक भी महादानी होता है।

गुरु-भक्ति योग—(१) नवें भाव का स्वामी नवांश के स्वामी के साथ हो और शुक्र तथा बृहस्पति उसे देखते हों, तो ऐसा जातक भी गुरु-भक्त होता है।

(२) नवें घर में कोई शुभ ग्रह बैठा हो, बृहस्पति सम्बन्ध करता हो तथा नवें भाव का स्वामी लग्न में स्थित हो तो ऐसा जातक भी गुरु-भक्त होता है।

गुरु-पत्नी-गमन योग—(१) चन्द्रमा पाप ग्रह सहित नवें स्थान में बैठा हो, तो ऐसा जातक गुरु-पत्नी के साथ रमण करने वाला होता है।

(२) शुक्र पापग्रह के साथ नवें स्थान में बैठा हो तो ऐसा व्यक्ति भी गुरु-पत्नी-गामी होता है।

(३) नवम स्थान का स्वामी और नवांशपति पापग्रह हों तो ऐसा जातक गुरु-पत्नी-सदृश स्त्रियों के साथ रमण करने वाला होता है।

(४) चन्द्रमा नवम स्थान में किसी पापग्रह के साथ बैठा हो तो ऐसा जातक अपने से अधिक आयु वाली स्त्रियों के साथ रमण करता है।

काण योग—(१) यदि जन्म-कुण्डली के दूसरे घर में शुक्र किसी पापग्रह के साथ बैठा हो तो जातक काना होता है या उसकी आँखें छोटी होती हैं।

(२) धन-स्थान में सूर्य, राहु अथवा शनि बैठा हो तथा धन-स्थान का स्वामी अस्त हो, पापग्रह के साथ हो और धन-स्थान को देखता भी न हो तो जातक काना होता है।

(३) बारहवें घर में सूर्य तथा राहु बैठे हों और धन-स्थान का स्वामी अस्त हो या शनि के साथ बैठा हो, तो जातक काना होता है।

मूक योग—यदि शुक्र किसी पापग्रह के साथ नवांशगत द्वितीयभाव में बैठा हो तो जातक गूँगा होता है।

तुतला योग—यदि शुक्र किसी पाप-ग्रह के साथ तीसरे घर में तीसरे नवांश में बैठा हो तो जातक तोतला होता है।

बधिर योग—यदि जन्मकाल में तीसरे, नवें, पाँचवें तथा ग्यारहवें स्थान में पापग्रह हो और वे शुभ ग्रहों से दृष्ट भी न हों तो जातक बहरा होता है।

दन्तरोगी योग—(१) यदि जन्म-कुण्डली के दूसरे घर में राहु की स्थिति हो तो ऐसा मनुष्य बड़े दाँतों वाला तथा दन्तरोगी होता है।

(२) यदि मंगल की राशि में छठे घर का स्वामी बैठा हो, मंगल लग्न में बैठा हो, लग्नेश और शनि की उस पर दृष्टि हो, तो भी जातक दन्तरोगी होता है।

(३) अष्टमभाव में शुक्र और शनि बैठे हों तथा अष्टमेश सप्तमभाव में बैठा हो तो भी जातक दन्तरोगी होता है।

कुष्ठी योग—(१) मेष, मकर, मीन और कर्क—इन नवांशों में चन्द्रमा पापग्रहों के बीच बैठा हो तथा शनि के ऊपर मंगल की दृष्टि हो तो जातक कुष्ठी होता है।

(२) जन्म-काल में नवें, पांचवें घर में वृष, कर्क, वृश्चिक अथवा मकर में से कोई राशि हो, इन घरों में पापग्रह बैठे हों अथवा पापग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो तो जातक अवश्यमेव कोढ़ी होता है।

उन्माद योग—(१) लग्न, नवें अथवा पाँचवें घर में सूर्य और चन्द्रमा स्थित हों और शनि तथा गुरु केन्द्र में बैठे हों तो ऐसा मनुष्य विक्षिप्त अथवा उन्मादी होता है।

(२) शनि अथवा मंगल लग्न में हों, बुध और चन्द्रमा केन्द्र में हों और वे सौम्यांश-हीन हों, तो भी ऐसा जातक उन्माद रोग से युक्त होता है।

(३) चन्द्रमा पापग्रह के साथ तथा राहु के साथ बारहवें घर में बैठा हो तथा शुभ ग्रह आठवें घर में बैठा हो तो ऐसा मनुष्य क्रोधी, कलह-प्रिय तथा विक्षिप्त होता है।

(४) लग्न, नवम तथा पंचम स्थान में सूर्य और चन्द्रमा बैठे हों, केन्द्र में अथवा तीसरे घर मे गुरु, शनि और मंगल बैठे हों तथा दिन के समय का जन्म हो तो जातक विक्षिप्त मनुष्य-जैसा होता है।

राजमान्य योग—(१) वृष-लग्न में जन्म हुआ हो और लग्न में चन्द्रमा बैठा हो तथा छै ग्रह उच्च के किसी भी भाव में स्थित हों, तो ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं प्रतापी होता है।

(२) सब ग्रह मूल त्रिकोण राशि में बैठे हों अथवा मंगल के साथ मित्र-राशि में हों अथवा किसी घर में उच्च के हों परन्तु नवांश में नीचगत न हों, तो ऐसा जातक राजा के समान होता है।

(३) लग्न मे चन्द्रमा और गुरु, दसवें भाव में शुक्र और तुला, मकर अथवा कुम्भ में शनि हो तो मनुष्य राजा के समान होता है।

(४) दसवें, ग्यारवें, लग्न, दूसरे तथा तीसरे भाव में सम्पूर्ण शुभ ग्रह बैठे हों तो जातक राजा के समान होता है।

(५) केन्द्र अथवा त्रिकोण में शुभ ग्रह हों, तीसरे, छठे तथा ग्यारहवें में पापग्रह हों और लग्न का स्वामी बलवान् हो, तो मनुष्य राजा के समान होता है।

(६) गुरु बुध के साथ बैठा हो अथवा बुध के द्वारा दृष्ट हो, तथा गुरु मीन का अथवा धनु राशि होकर केन्द्र में हो तो ऐसा जातक की आज्ञा को राजागण भी अपने मस्तक पर धारण करते हैं।

(७) चन्द्रमा केन्द्र में हो और गुरु लग्न को छोड़कर नवम अथवा पंचम दृष्टि से केन्द्र को देखता हो, साथ ही बलवान् दृष्टि से शुक्र भी देखता हो तो जातक राजा के समान भाग्यशाली होता है।

(८) जो जन्म लग्न में नीच के ग्रह बैठे हों तथा नवांश में उच्च के हों तो भी जातक राजा के समान भाग्यशाली होता है। परन्तु यदि जन्म-कुण्डली में उच्च के हों और नवांश में नीच के हों तो जातक भाग्यहीन होता है।

(९) लग्न में गुरु हो तथा बुध केन्द्र में बैठा हो और वह नवें घर के स्वामी द्वारा दृष्ट हो, तो जातक राजमान्य होता है।

(१०) सातवें, नवें अथवा पांचवें भाव में गुरु बैठा हो और लग्नेश की उस पर दृष्टि हो तो जातक राजमान्य होता है।

(११) केन्द्र, नवें अथवा पाँचवें घर में शनि हो और वह अपनी उच्च राशि अथवा मूल त्रिकोण राशि में हो तथा दशमभाव पर शनि की दृष्टि हो तो जातक राजमान्य होता है।

(१२) नीच का बृहस्पति लग्न में बैठा हो तथा नवें घर का स्वामी आठवें चन्द्रमा के नवांश में हों तो जातक राजमान्य होता है।

(१३) लग्न से छठे घर तक सभी ग्रह बैठे हों तो जातक राजमान्य होता है।

(१४) नवें घर का स्वामी चन्द्रमा के साथ दूसरे घर में बैठा हो तो जातक राजमान्य होता है।

(१५) पापग्रह दशमेश सहित क्रमशः लग्न से छठे घर तक ये बैठे हों तो जातक राजमान्य होता है।

(१६) चन्द्रमा जिस राशि में बैठा हो, उस राशि के नवांश का स्वामी केन्द्र, त्रिकोण अथवा ग्यारहवें घर में अथवा बुध के साथ बैठा हो तो जातक राजमान्य होता है।

(१७) चन्द्रमा मंगल के साथ दूसरे अथवा तीसरे घर में हो अथवा राहु के साथ पाँचवें घर में हो तो जातक राजमान्य होता है।

(१८) नवें घर के स्वामी के साथ नवांशपति चौथे घर में हो अथवा पाँचवें भाव के स्वामी के साथ हो तो जातक राजमान्य होता है।

(१९) मीन का राहु शनि के साथ बैठा हो और नवमेश की उस पर दृष्टि हो तथा लग्नेश नीच ग्रह के साथ हो, तो जातक राजा के समान होता है।

(२०) मंगल, शनि, सूर्य और गुरु—ये चारों ग्रह अपनी उच्च राशियों में एक-एक के सामने केन्द्र में बैठे हों तो चार राजयोग होते हैं। शेष ग्रह चाहे जहाँ बैठे हों, परन्तु इन्हीं चार ग्रहों में से तीन ग्रह अपनी उच्च राशियों में बैठकर सम्मुख केन्द्रवर्ती हों तो बारह राजयोग होते हैं। ऐसे पहले के चार मिलकर सोलह राजयोग होते हैं। इन्हीं चारो ग्रहों में से दो ग्रह अपनी उच्च राशियों में बैठ कर केन्द्र में हों तथा चन्द्रमा कर्कराशि में बैठा हो तो बारह राजयोग होते हैं। उन्हीं चार ग्रहों में से एक ग्रह अपनी उच्च राशि का होकर लग्न में बैठा हो, चन्द्रमा कर्क में हो तथा शेष ग्रह कहीं भी बैठे हों तो चार राजयोग होते हैं। पहले के बारह योग मिलकर सोलह और सब मिला कर कुल बत्तीस राजयोग होते हैं।

(२१) जन्म का लग्न मेष, कर्क, तुला अथवा मकर हो तथा इनके पहले नवांश में जन्म हो; यदि वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ लग्न हो और इनके पाँचवें नवांश में जन्म हो; यदि मिथुन, कन्या, धनु, मीन लग्न हो और इनके नौवें नवांश में जन्म हो; चन्द्रमा लग्न में हो या न हो, चन्द्रमा को छोड़कर चार, पाँच अथवा छह ग्रह लग्न को देखते हों तो चवालीस राजयोग होते हैं। यही योग, चन्द्रमा लग्न में हो और ये ग्रह देखते हों तो बाईस राजयोग होते हैं। चन्द्रमा लग्न में न हो और यही ग्रह देखते हों तो भी बाईस राजयोग होते हैं। परन्तु यदि चन्द्रमा देखता हो तो योग भंग हो जाता है।

(२२) यदि जन्म-काल में पाँच ग्रह उच्च के हों तो मनुष्य चक्रवर्ती राजा होता है अथवा मंत्री तो होता ही है।

(२३) जन्म-काल में बुध उच्च राशि का हो, मंगल व शनि मकर राशि में हों और बृहस्पति, चन्द्रमा तथा शुक्र मिलकर धनु राशि में बैठे हों, तो ऐसा व्यक्ति महाराजधिराज होता है।

(२४) सूर्य सिंहराशि में हो, मंगल मकर में, शनि कुम्भ में तथा चन्द्रमा मीन में हो और लग्न भी मीन ही हो, तो जातक महाराजा होता है।

(२५) मंगल मेष राशि का होकर लग्न में बैठा हो, तो जातक राजा होता है।

(२६) गुरु कर्क लग्न में हो तथा मंगल मेष राशि का होकर दशमभाव में बैठा हो तो ऐसा जातक शत्रुजयी, राजनीतिज्ञ तथा राजा होता है।

(२७) बृहस्पति उच्च का होकर लग्न में बैठा हो, दशमभाव में मेष का सूर्य हो तथा शनि, शुक्र और बुध ग्यारहवें भाव में बैठे हों तो ऐसा व्यक्ति बड़ा पराक्रमी राजा होता है।

(२८) शनि मकर राशि का होकर लग्न में बैठा हो, सूर्य सिंह राशि का, बुध मिथुन का, मंगल मेष का, शुक्र तुला का तथा चन्द्रमा कर्क का हो तो ऐसे योग में उत्पन्न जातक समुद्र-पर्यन्त पृथ्वी का स्वामी होता है।

(२९) शुक्र मिथुन का हो, बुध कन्याराशि का होकर लग्न में बैठा हो, मंगल तथा शनि मकर राशि में हों तथा चन्द्रमा और गुरु मीन राशि में हों तो ऐसे योग में उत्पन्न जातक शत्रुओं का नाश करने वाला, बड़ा पराक्रमी तथा ऐश्वर्यशाली राजा होता है।

(३०) सिंह का सूर्य लग्न में हो, मेष में चन्द्रमा, कुम्भ में शनि, धनु में गुरु तथा मकर में मंगल हो, तो ऐसे योग में उत्पन्न जातक राजाओं का राजा होता है।

(३१) मेष का गुरु लग्न में हो, चन्द्रमा चौथे तथा शुक्र दशमभाव में हो, तो ऐसा व्यक्ति बड़ा भारी राजा होता है।

(३२) कर्क का गुरु लग्न में हो, सातवें, चौथे अथवा दसवें स्थान में शुक्र, शनि और मंगल हों तो ऐसा व्यक्ति बड़ा प्रतापी राजा होता है।

(३३) वृष का चन्द्रमा लग्न में बैठा हो, चौथे, सातवें तथा दसवें भाव में सूर्य, गुरु तथा शनि बैठे हों, तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त प्रतापी एवं यशस्वी राजा होता है।

(३४) गुरु, चन्द्र, बुध और शुक्र लग्न, तीसरे, नवें तथा ग्यारहवें भाव में बैठे हों तथा मकर का शनि लग्न में बैठा हो, तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति राजाधिराज होता है।

(३५) जन्म-काल में मीन राशि का शुक्र बुध के साथ लग्न में बैठा हो, मंगल मकर राशि का और गुरु तथा चन्द्रमा धनु राशि के हों तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति सम्पूर्ण पृथ्वी का स्वामी होता है।

(३६) जन्म-काल में गुरु उच्च कर्क का होकर केन्द्र में बैठा हो और शुक्र दसवें घर में हो, तो ऐसा व्यक्ति बड़ा यशस्वी राजा होता है।

(३७) गुरु और सूर्य मेष राशि में स्थित होकर लग्न में बैठे हों, मंगल दसवें घर में हो, शुक्र, बुध तथा चन्द्रमा नवें घर में हों, तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति दिग्विजयी एवं सम्पूर्ण पृथ्वी का स्वामी होता है।

(३८) मेष में सूर्य, कर्क मे गुरु और तुला में शनि तथा चन्द्रमा हों तो ऐसा व्यक्ति बहुत बड़ा राजा होता है।

(३९) मीन राशि का चन्द्रमा लग्न में बैठा हो, लग्न वर्गोत्तम हो, चन्द्रमा बलवान् हो तथा सम्पूर्ण ग्रहों की उस पर दृष्टि हो तो ऐसा जातक समस्त पृथ्वी का स्वामी तथा इन्द्र के समान पराक्रमी होता है।

(४०) धन-स्थान में सूर्य हो तथा शुक्र, गुरु और चन्द्रमा केन्द्र में हों परन्तु न तो वे अस्त हों और न शत्रु-ग्रहों द्वारा दृष्ट ही हों, तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला जातक शत्रुजयी एवं बड़ा यशस्वी राजा होता है।

(४१) कर्क में गुरु, मेष में सूर्य, मीन में शुक्र तथा वृष में चन्द्रमा हो और वह शनि द्वारा दृष्ट हो तो ऐसा व्यक्ति बड़ा प्रतापी राजा होता है।

(४२) पाँचवें घर में बुध, शुक्र और गुरु हों, परन्तु वे अस्त न हों, मकर का मंगल सूर्य से रहित हो तथा नवें घर में शनि बैठा हो तो ऐसे योग मे जन्म लेने वाला जातक राजा-धिराज होता है।

(४३) गुरु और शुक्र चौथे घर में हों तो जातक पराक्रमी, धनी एवं पृथ्वीपति होता है।

(४४) कर्क राशि में गुरु के साथ चन्द्रमा बैठा हो तो ऐसा व्यक्ति कश्मीर देश का राजा होता है।

(४५) गुरु को बुध देखता हो तो ऐसा व्यक्ति महाधनी राजा होता है।

(४६) जन्म-काल में एक ग्रह पाँचवें नवांश में बैठा हो तो वह राजयोग-कारक होता है।

(४७) चन्द्रमा अपने अधिमित्र के नवांश में बैठा हो और उस पर शुक्र की दृष्टि हो तो राजयोग-कारक होता है ।

(४८) चन्द्रमा अपने नवांश में अथवा मित्र के नवांश में हो और गुरु उसे देखता हो तो जातक के लिए राजयोग-कारक होता है ।

(४९) उच्च वृष राशि में चन्द्रमा बुध के साथ बैठा हो तो वह जातक को मगध देश का राजा बनाता है । यदि चन्द्रमा बलवान् हो तो किसी भी अन्य अच्छे स्थान का राजा बनाता है ।

(५०) जन्म-राशि का स्वामी लग्न में हो और लग्नेश बली होकर केन्द्र में बैठा हो तो नीच कुल में उत्पन्न व्यक्ति भी राजा होता है ।

(५१) मेष का सूर्य चन्द्रमा के साथ बैठा हो तो ऐसा जातक भी राजा होता है ।

(५२) गुरु और शुक्र उच्च राशिस्थ होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठे हों तो ऐसा जातक राजा अथवा राजमन्त्री होता है ।

(५३) सातवें, दूसरे, बारहवें तथा लग्न में सभी ग्रह बैठे हों तो ऐसा व्यक्ति बड़ा भाग्यशाली तथा राजा होता है ।

(५४) जन्म-काल में पापग्रह लग्न में हो, उस पर गुरु की दृष्टि हो और गुरु कर्क का हो, तो ऐसा व्यक्ति बड़ा धनी तथा यशस्वी होता है ।

(५५) बृहस्पति मकर राशि के अतिरिक्त लग्न में बैठा हो अथवा कर्क राशिगत कर्क के नवांश में हो, तो जातक राजा होता है ।

(५६) बृहस्पति चन्द्रमा के साथ केन्द्र में बैठा हो और उस पर शुक्र की दृष्टि हो, तथा कोई ग्रह नीच का न हो, तो ऐसा व्यक्ति यशस्वी राजा होता है ।

(५७) यदि जन्म-काल में दूसरे घर में बुध, शुक्र और गुरु बैठे हों तथा मंगल और चन्द्रमा सातवें घर में हों, तो ऐसा व्यक्ति शत्रुओं पर विजय पाने वाला तथा अत्यन्त प्रतापी राजा होता है ।

(५८) शुक्र भाग्य-भवन में बैठा हो, चन्द्रमा दसवें घर में हो तथा अन्य सभी ग्रह लाभ-भवन में हों, तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति राजा होता है ।

(५९) सभी ग्रह तीसरे, छठे, दसवें तथा ग्यारहवें स्थान में बैठे हों तो जातक राजा होता है ।

(६०) सभी ग्रह सूर्य, गुरु, चन्द्रमा और मंगल से तीसरे, पाँचवें और नवें स्थान में बैठे हों, तो ऐसा जातक ऐश्वर्यशाली राजा होता है ।

(६१) बुध कर्क में हो और गुरु धनु राशि में हो तथा बुध को सूर्य और गुरु को मंगल देखते हों, तो जातक राजा होता है ।

(६२) छठे घर में राहु और मंगल हों तथा दसवें घर में बुध व सूर्य हों तो जातक राजा होता है ।

(६३) गुरु और शनि के बीच में सभी ग्रह बैठे हों तो ऐसा जातक भी हाथी-घोड़े से युक्त पृथ्वी का स्वामी (राजा) होता है ।

(६४) तीसरे घर में गुरु और आठवें घर में शुक्र हो तथा अन्य सभी ग्रह इनके बीच में बैठे हों, तो जातक पराक्रमी राजा होता है ।

(६५) वृष में गुरु, मिथुन में चन्द्रमा, मकर में मंगल, सिंह में शनि, कन्या में सूर्य और बुध तथा तुला में शुक्र हो तो जातक महाराजा होता है ।

(६६) वृहस्पति कर्क उच्च का होकर लग्न में स्थित हो और अन्य सभी ग्रह बुरे हों, तो भी जातक दीर्घायु, सेनापति, राजमान्य, धनी तथा सुखी होता है।

(६७) धनु का मंगल और शुक्र, मीन का वृहस्पति, तुला का बुध तथा नीच के शनि और चन्द्र हों, तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला जातक धनहीन राजा होता है।

(६८) मीन का शुक्र या बुध हो, राहु दूसरे भाव में हो तथा सूर्य लग्न में हो तो जातक भोगी, दानी, यशस्वी, राजमान्य एवं भूस्वामी होता है।

(६९) तीसरे घर में गुरु और ग्यारहवें घर में चन्द्रमा हो तो जातक सुप्रसिद्ध भूपति एवं राजाओं में विख्यात होता है।

(७०) सभी शुभ ग्रह उच्च के होकर केन्द्र में बैठे हों तो जातक अपने वंश का पालन करने वाला तथा अचल राज्य का स्वामी होता है।

(७१) पाँचवें घर में गुरु और दसवें घर में चन्द्रमा हो तो ऐसा जातक बड़ा बुद्धिमान्, तपस्वी तथा जितेन्द्रिय राजा होता है।

(७२) सिंह का गुरु हो और तुला, कर्क, धनु एवं मकर— इन राशियों में अन्य सभी ग्रहों की स्थिति हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त धनी, सुखी तथा राजा होता है।

(७३) तुला, धनु अथवा मीन राशि का शनि लग्न में स्थित हो तो ऐसा व्यक्ति पृथ्वीपति होता है।

(७४) कर्क राशि में गुरु, ग्यारहवें घर में चन्द्रमा, बुध और शुक्र तथा मेष राशि में सूर्य हो तो जातक पृथ्वी- पति होता है।

(७५) लग्न में शनि और चन्द्रमा हों तथा आठवें घर में शुक्र हो, तो ऐसा जातक वेश्याओं से प्रीति रखने वाला मानो राजा होता है।

(७६) दूसरे घर में शुक्र, दसवें में गुरु तथा छठे स्थान में राहु की स्थिति हो तो ऐसा जातक पराक्रमी राजा होता है।

(७७) मिथुन में राहु और सिंह में मंगल हो तो जातक अपने पिता का सम्पूर्ण धन प्राप्त करता है। यदि सूर्य उच्चाभिलाषी होकर त्रिकोण में हो तो जातक धन-धान्य से पूर्ण राजा होता है।

(७८) सिंह में गुरु, कन्या में शुक्र, मिथुन में शनि तथा स्वक्षेत्री मंगल चौथे घर में हो तो जातक राजा होता है।

(७९) शनि और चन्द्रमा कन्या राशि में, शुक्र मीन में तथा मंगल मकर राशि में हो तो जातक सबको पालने वाला बड़ा राजा होता है।

(८०) चौथे घर में शुक्र, गुरु, मंगल, सूर्य तथा शनि एक साथ बैठे हों तो जातक बड़ा प्रतापी राजा होता है।

(८१) आठवें और बारहवें घर में पापग्रह हों तथा अन्य सभी शुभ ग्रह इनके बीच में बैठे हों तो ऐसा व्यक्ति बड़ा कामी, मद्यप परन्तु धनवान् और प्रतापी राजा होता है।

(८२) लग्न में शनि और चन्द्रमा, पाँचवें, तथा नवें घर में गुरु और सूर्य तथा दसवें घर में मंगल हो तो जातक बड़ा राजा होता है।

(८३) दूसरे, तीसरे, चौथे, पाँचवें, छठे और दसवें-इन्हीं घरों में यदि सभी ग्रह बैठे हों तो जातक राजा होता है।

(८४) धनु में शनि और चन्द्रमा, मेष में गुरु तथा दसवें घर में राहु और शुक्र हों तो जातक राजा होता है।

(८५) चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य सभी ग्रह वृश्चिक राशि को देखते हों और वे छठे, सातवें तथा आठवें घर में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति दीर्घायु तथा राजा होता है।

(८६) छठे, आठवें, बारहवें तथा दूसरे भाव में सभी ग्रह बैठे हों तो जातक राज्य-सिंहासन को प्राप्त करता है।

(८७) मेष में सूर्य हो, बृहस्पति चौथे घर में तथा मंगल दशवें घर में हो तो जातक विश्वपति होता है।

(८८) केन्द्र में उच्च के शुभ ग्रह बैठे हों तो जातक लक्ष्मीपति होता है।

(८९) केन्द्र में उच्च के पापग्रह बैठे हों तो ऐसा जातक धनहीन राजा होता है।

(९०) चारों केन्द्रों में शुभ ग्रह हों और बारहवें तथा आठवें पापग्रह हों तो जातक छत्रधारी राजा होता है।

(९१) सूर्य केन्द्र में हो तो जातक राजा की सेवा करता है, चन्द्रमा केन्द्र में हो तो वणिक्वृत्ति करता है, मंगल केन्द्र में हो तो शस्त्र-वृत्ति करता है, बुध केन्द्र में हो तो अध्यापन कार्य करता है, गुरु केन्द्र में हो तो अनुष्ठानरत रहता है, शुक्र केन्द्र में हो तो विद्या और धन से पूर्ण होता है तथा शनि केन्द्र में हो जातक नीच जनों की सेवा करके अपनी आजीविका का उपार्जन करता है।

विशेष टिप्पणी—वर्तमान काल में राजा-महाराजा नहीं होते, अतः यदि किसी जातक की कुण्डली में उक्त प्रकार के राजयोग हों तो ग्रहों के बलाबल के अनुसार उसका मन्त्री, राज्यपाल, राष्ट्रपति, राजदूत आदि होना समझना चाहिए।

आवश्यक चक्र एवं कोष्ठक आदि

जन्मकुण्डली का फलादेश देखते समय ग्रहों की पारस्परिक मैत्री-शत्रुता तथा अन्य विषयों की जानकारी प्राप्त करने के लिए आवश्यक चक्रों एवं कोष्ठकों को पाठकों के लाभार्थ यहां एकत्र दिया जा रहा है—

भावों के कारक ग्रहों का चक्र

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तनु	धन	सहज	सुख	पुत्र	रिपु	स्त्री	आयु	धर्म	कर्म	लाभ	व्यय
सूर्य	गुरु	मंगल	चन्द्र बुध	गुरु	मंगल	शुक्र	शनि	सूर्य गुरु	बुध गुरु शुक्र शनि	गुरु	शनि

तात्कालिक मैत्री-चक्र

ग्रह	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०
मित्र	चन्द्र मंगल शुक्र	मंगल सूर्य शुक्र बुध	सूर्य चन्द्र बुध शनि	चन्द्र मंगल शुक्र	शनि	चन्द्र सूर्य बुध	मंगल गुरु
शत्रु	बुध गुरु शनि	गुरु शनि	शुक्र गुरु	सूर्य गुरु शनि	चन्द्र सर्य मंगल बुध शुक्र	मंगल गुरु शुक्र	सूर्य चन्द्र बुध शुक्र

पञ्चधा मैत्री-चक्र

	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०
अधि-मित्र	चन्द्र मंगल	सूर्य बुध	सूर्य चन्द्र	शुक्र चन्द्र		बुध	
मित्र	गुरु	मंगल शुक्र	शनि		शनि		गुरु
सम	शुक्र		गुरु बुध	सूर्य मंगल	शुक्र चन्द्र मंगल	सूर्य चन्द्र शनि	बुध मंगल शुक्र
शत्रु	बुध	गुरु शनि	शुक्र	गुरु शनि		मंगल गुरु	
अधि-शत्रु	शनि				बुध शुक्र		सूर्य चन्द्र

होरा ज्ञानार्थ चक्र

	१ से १५	१५ से ३०
मेष	सू०	चं०
वृष	चं०	सू०
मिथुन	सू०	चं०
कर्क	चं०	सू०
सिंह	सू०	चं०
कन्या	चं०	सू०
तुला	सू०	चं०
वृश्चिक	च	सू०
धनु	सू०	चं०
मकर	चं०	सू०
कुम्भ	सू०	चं०
मीन	चं०	सू०

स्पष्ट ज्ञानार्थ देष्काण चक्र

	१ से १०	११ से २०	२१ से ३०
मेष	मेष	सिंह	धनु
वृष	वृष	कन्या	मकर
मिथुन	मिथुन	तुला	कुम्भ
कर्क	कर्क	वृश्चिक	मीन
सिंह	सिंह	धनु	मेष
कन्या	कन्या	मकर	वृष
तुला	तुला	कुम्भ	मिथुन
वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	कर्क
धनु	धनु	मेष	सिंह
मकर	मकर	वृष	कन्या
कुम्भ	कुम्भ	मिथुन	तुला
मीन	मीन	कर्क	वृश्चिक

राशि-चक्र

राशीश्वर	नक्षत्र									राशि
मंगल	अ	लो	ले	लू	ली	ला	चो	चे	चू	मेष
शुक्र	वो	वे	वू	वी	वा	ओ	ए	उ	इ	वृष
बुध	ह	को	के	छ	ङ	घ	कु	की	क	मिथुन
चन्द्र	डो	डे	डू	डी	डा	हो	हे	हू	ही	कर्क
सूर्य	टे	टू	टी	टा	मो	मे	मू	मी	म	सिंह
बुध	पो	पे	ठ	ण	ष	पू	पी	प	टो	कन्या
शुक्र	ते	तू	ती	ता	रो	रे	रू	री	रा	तुला
मंगल	यू	यी	या	नो	ने	नू	नी	ना	तो	वृश्चिक
गुरु	भे	ढ	फ	ध	भू	भी	भ	यो	ये	धनु
शनि	गी	गा	खो	खे	खू	खी	जी	ज	भो	मकर
शनि	द	सो	से	सू	सी	सा	गो	गे	गू	कुम्भ
गुरु	ची	च	दो	दे	ञ	झ	थ	दू	दी	मीन

—: नवमांश चक्र :—

खण्ड		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
३	२०	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४
६	४०	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५
१०	०	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६
१३	२०	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७
१६	४०	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८
२०	०	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९
२३	२०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०
२६	४०	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११
३०	०	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२

द्वादशांश चक्र

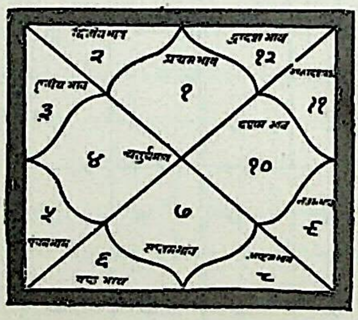
स्वामी	अंश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
गणेश	२।३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अश्विनीकुमार	५।००	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१
यम	७।३०	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
सर्प	१०।००	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३
गणेश	१२।३०	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
अश्विनीकुमार	१५।००	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५
यम	१७।३०	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६
सर्प	२०।००	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७
गणेश	२२।३०		१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८
अश्विनीकुमार	२५।००	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९
यम	२७।३०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
सर्प	३०।००	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११

—: स्पष्ट ज्ञानार्थं सप्तमांश चक्र :—

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
४।१७।८	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६
८।३४	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७
	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८
	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९
	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०
	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११
	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२

नैसर्गिक मैत्री-चक्र

ग्रह	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	रा०	के०
मित्र	गुरु चन्द्र मंगल	सूर्य बुध	गुरु चन्द्र सूर्य	सूर्य शुक्र	सूर्य चन्द्र मंगल	बुध राहु शनि	बुध शुक्र राहु	बुध शुक्र शनि	शनि बुध शुक्र
सम	गुरु बुध	गुरु मंगल शुक्र शनि	शुक्र शनि राहु	मंगल गुरु राहु शनि	शनि राहु	मंगल गुरु	गुरु	गुरु	गुरु
शत्रु	शुक्र शनि राहु		बुध	चन्द्र	बुध शुक्र	सूर्य चन्द्र	सूर्य चन्द्र मंगल	सूर्य चन्द्र मंगल	सूर्य चन्द्र मंगल



१५८२

॥ समाप्त ॥

लिखने की सुविधा के लिए

लिखने की सुविधा के लिए

लिखने की सुविधा के लिए

लिखने की सुविधा के लिए

लिखने को सुविधा के लिए

लिखने की सुविधा के लिए

मकर लग्न की शु. श. रा. के. कुन ग्रहों
का फलित नहीं है। पृष्ठ संख्या ५६० के बाद
पृष्ठ संख्या ६४१ है इसके पृष्ठ नहीं है
कुम्भ लग्न पृष्ठ संख्या ५७८ में देखना।
पृष्ठ गलत जुड़े हैं।

हिन्द पुस्तक भण्डार

हिन्द पुस्तक भण्डार
खारी बावली, दिल्ली 110006

थोक बिक्री केन्द्र
10-बी नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज
नई दिल्ली 110002
☎ 3268292
3268293
239314